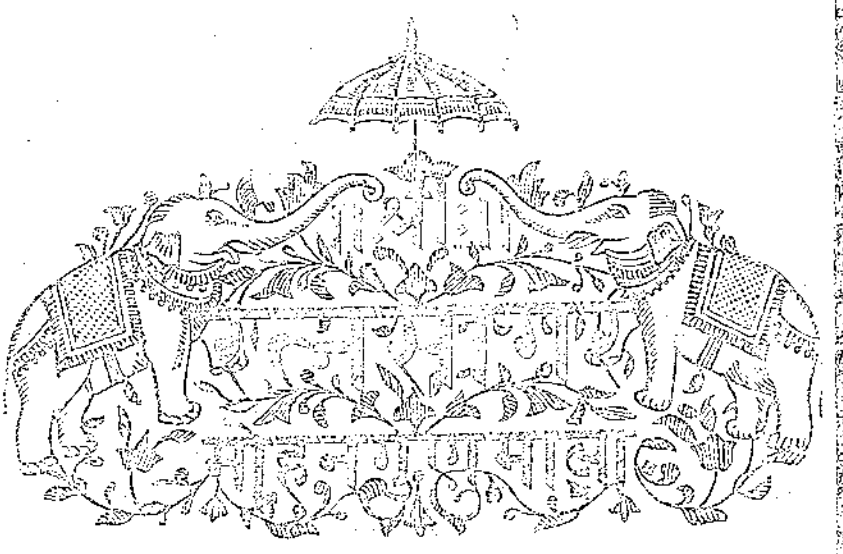


विक्रमपुरवास्तव्य बृहत्खरतरभट्टारकगच्छे पुज्य
महो पाध्यायजी श्री १०८ श्री श्री श्री श्री
लक्ष्मी प्रधानजी गणिः ।

(तत्शिष्य मुख्य)

उपाध्याय श्रीसुखिकलाल गणिना

बहु पुस्तकात् संग्रहकृत्वा

(शुधीकृतं)

॥ ❀ ॥ कलकत्ता बीकानेर मुंबई ॥ ❀ ॥

तत्वदीपक मोहनमंजरी सहायेन प्रकाशितं

॥ ❀ ॥ जैनलक्ष्मीमोहनशाला ॥ ❀ ॥

वीरसं । २५६० वि । सं । १९९० सन १९०३

श्री ज्ञानसागर प्रेस मुंबई

॥ ❀ ॥ प्रशस्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री-अर्हद्भिः सिद्धैः सीमंधरादिकैः सद्गुरुभिः संयमिभिः सर्वज्ञोक्तः सुधर्मः सदा सेव्यः । सुधर्मोपदेशेन भव्यप्रबोधिते पंडितवीरविजयेन । सेव्यः श्रीमान् श्रीमती सुमतिः सद्गुरुश्चिरं नंदतात् ॥ १ ॥ अनंतरपट्टपंकजैक सहस्रकृत् श्री वृद्धिमाणिक्यः । सूरिस्तस्य जिनेश्वरस्य गणभृज्जातो जिनेषु वरः । यः संवत् नन्दि रिद्धि संधि वरदि (१७८७) श्री पत्तनेऽधिष्ठितो । जित्वा मल्लिवरं कुसी खरतरे ख्यातिं गतो हेलया ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ तद्वंशे वाचनैर्वरे सुखकरे श्री वृद्ध श्रीश्वरः । राजेन्द्र सूरिवरः । श्रीमान् गणीश्वरः । सत्यविजय पंन्यास पंन्यास गणिप्रधानवरः । सद्दीक्षादि सुशिष्यता सुखकरः संविग्न संक्रीयरः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेषां शिष्येण सुशिष्येण । गच्छस्य पूजादि विचार गर्भा । संक्षिप्तितिर्यं लघु चात्मशिक्षा । निर्वाणसारार्थं लिखा सुबोधं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥







कलकत्ता

मुंबई



जैनलक्ष्मी विद्याशाला.

॥ प्रथम भाग सूचीपत्र ॥

मोहन पाठ शाला.

॥❀॥ संख्या ॥❀॥	॥❀॥ प्रकरण ॥❀॥	॥ पत्रांक ॥
॥ १ ॥	ॐकार वर्णन पंच परमेष्टी नमस्कार।	१
॥ २ ॥	गुरु नमस्कार, दीर्घाक्षरे सरस्वती नमस्कार।	२
॥ ३ ॥	स्वर, व्यंजन, युक्तादि वर्ण माला।	३
॥ ५ ॥	शिख्यावाक्य दूहा.(वाक्यमंजरी)	४
॥ ६ ॥	संधिसुत्र, सिद्धोवर्णः समाम्नायः।	५
॥ ७ ॥	हितोपदेश, अर्हंतो भगवंत० अर्थसहित	६
॥ ८ ॥	ब्रिन्नु जिन नाम।	८
॥ ९ ॥	श्री नवकार मंत्र, जयउसामि० प्रतिक्रमण सर्वपाठ	९
॥ १० ॥	साधु प्रतिक्रमण, चत्तारि मंगल सूत्र।	२०
॥ ११ ॥	श्रावक प्रतिक्रमण, बंदित्तू सूत्र।	२५
॥ १२ ॥	नवकारस्यादि १० पच्चक्खाण।	२८

॥ १३ ॥ दश पच्चक्खाण आगारार्थः। ३३
॥ १४ ॥ दश पच्चक्खाण आगारसंख्या गाथा ३६
॥ १५ ॥ मुहपत्ती पडिलेहण, सुत्र अर्थ साचो सरदहुं। ३६
॥ १६ ॥ थापनाचार्यकी १३ पडिलेहण बोल। ३७
॥ १७ ॥ आलोयण, आजूणा चौपहर रात्री तथा दिवश। ३७
॥ १८ ॥ पक्खी, चौमासी, संवछरी, वृह अतीचार। ३८
॥ १९ ॥ जयतिहुण वत्तीशी, श्रीअभय देवसूरी कृत।.... .... ४९
॥ २० ॥ परकीसूत्र, तित्थंकरेय तित्थे।.... .... ५३
॥ २१ ॥ पाक्षिक खामणा पाठ। ६९
॥ २२ ॥ (साते स्मरण) अजियंजिय सव्वभयं १ .... ७१
॥ २३ ॥ उव्वासिकम नक्ख निग्गय पहा० २.... .... ७४
॥ २४ ॥ नमिऊण पणय सुरगण, स्तोत्र ३। ७५
॥ २५ ॥ तंजयउ जए तित्थं० ॥ ४ ॥ ७६
॥ २६ ॥ मय रहियं गुण गण रयण सायरं ५ .... ७८
॥ २७ ॥ सिग्घ मवहरउ विग्घं० स्तोत्र ६ । ७९
॥ २८ ॥ उवसग्ग हरं पासं० स्तोत्र ७।.... .... ७९
॥ २९ ॥ लघुशांति, शांतिं शांति निशांतं। ८०
॥ ३० ॥ बडी शांति, ओम्नो भव्याः शृणुतवचनं०। ८१
॥ ३१ ॥ दूजकीथुई, (महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं) ८४
॥ ३२ ॥ पंचमीस्तुतिः, (पंचानंतकसु प्रपंच०)। ८४
॥ ३३ ॥ अष्टमी स्तुतिः, (चउवीशे जिनवर०)। ८५
॥ ३४ ॥ सर्वदिन स्तुतिः (मूरति मनमोहन०)। ८५
॥ ३५ ॥ दशमीस्तुतिः, (अश्वशेन नरेसर०)। ८५
॥ ३६ ॥ एकादशी स्तुतिः, (अरस्य प्रव्रज्या०)। ८६
॥ ३७ ॥ चतुर्दशी स्तुतिः, (द्रें द्रें कि धपमप०)। ८६
॥ ३८ ॥ चैत्री पूनम स्तुतिः, (सेत्रुंजगिरिनामियै०)।.... .... ८७

॥ ३९ ॥ नवपदनुंजी स्तुतिः, (निरुपम सुखदायक०) । ८७
॥ ४० ॥ पर्यूषणापर्व स्तुतिः, (बलि बलि हुंध्यानुं०) । ८८

॥ ❀ ॥ तिथींकास्तवन (सरू) ॥ ❀ ॥

॥ ४१ ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधरस्वामि । ८८
॥ ४२ ॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेसर भेटियै) ।.... .... ८९
॥ ४३ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । ९०
॥ ४४ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय (पंचमी वृहस्तवन) । ९१
॥ ४५ ॥ पांचमि तप तुमे करो रे प्राणी । ९३
॥ ४६ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजे । ९३
॥ ४७ ॥ पास जिनेसर जगति लोए । ९४
॥ ४८ ॥ समवसरण बैठा भगवंत । ९५
॥ ४९ ॥ तुं मेरे मनमें प्रभु तुं मेरे दिलमें । ९६
॥ ५० ॥ सास्वता असाश्वता जिन बिंबनमस्कारस्तवन ९६
॥ ५१ ॥ भूलो मन भमराकांइभमें (सिझाय) ९८
॥ ५२ ॥ कम्वा फलछे क्रोधना (क्रोध शिझाय ९८
॥ ५३ ॥ जगचूडामणिभूत (पोसह सिझाय) । ९९
॥ ५४ ॥ निस्सिही२ (राई संथारा सिझाय) । १०१

॥ ❀ ॥ सामायक पोशादि श्राद्ध अहोरात्रकृत्य ॥ ❀ ॥

॥ ५५ ॥ प्रभात सामायक विधिः । १०२
॥ ५६ ॥ राई प्रतिक्रमण विधिः । १०३
॥ ५७ ॥ सामायक पारण विधिः । १०७
॥ ५८ ॥ संध्याकाल सामायक ग्रहण विधिः ।.... .... १०८
॥ ५९ ॥ देवशी प्रतिक्रमण विधिः । १०९
॥ ६० ॥ अठ पुहरी पोशह विधिः । १११
॥ ६१ ॥ पांचशक्रस्तवे देव वंदन विधिः । ११३
॥ ६२ ॥ पच्चक्काण पारण विधिः । ११४
॥ ६३ ॥ राई संथारा विधिः । ११७

॥ ६४ ॥ पोसह पारण विधि। ११७
॥ ३५ ॥ दिवश चौपुहरी पोसह विधिः। ११८
॥ ६६ ॥ रात्रि संबंधी चौपुहरी पोसह विधिः ११०
॥ ६७ ॥ चौवीश२४ थुंमिजा पहिजेहण पाठ। १२१
॥ ६८ ॥ चौवीश थुंमिजा कहां २ करना। १२१
॥ ६९ ॥ परकी (चौमाशी) संवछरी प्रतिक्रमण विधिः १२२
॥ ७० ॥ राई प्रतिक्रमणमें अम्माशीतप चिंतवन विधिः १२४
॥ ७१ ॥ साधू श्रावक (प्रतिक्रमणहेतू) अर्थ (कारण) १२६
॥ ७२ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्यवंदन (जय२त्रिजुवन)। १२९
॥ ७३ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तवन (पूर्व विदेह पुख लावती)। १२९
॥ ७४ ॥ श्री सीमंधर साहिबा वीनतमी० स्तवन १२९
॥ ७५ ॥ जय जय नाभिनरिंदनंद। सिद्ध गिरी चैत्य० .... १३०
॥ ७६ ॥ आज पुंमर गिरि भेटिया (सिद्धगिरीस्त० .... १३०
॥ ७७ ॥ सिद्धाचल गिरी भेट्यारे) धन्यभागहमारा १३०
॥ ७८ ॥ श्री आदिजिन चैत्यवंदन १३१
॥ ७९ ॥ श्री शांतिजिन दोचैत्यवंदन १३१
॥ ८० ॥ श्री नेमिजिन चैत्यवंदन १३१
॥ ८४ ॥ श्री पार्श्वजिनका चार चैत्यवंदनजूदा २ .... १३२
॥ ८६ ॥ श्री महावीरस्वामीका दोचैत्यवंदन १३३

॥ ❀ ॥ अथ तपगछ विशेष विधिसंग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ८७ ॥ पंचेंदियसंबरणो० स्थापनागाथा। १३३
॥ ८९ ॥ इछामि खमासमणो (इछकारसुहराई)। १३३
॥ ९० ॥ सामाइय वयजुत्तो। सामायक पारवागाथा। १३३
॥ ९१ ॥ जगचिंतामणिचैत्यबंदन (जयवीयराय) १३४
॥ ९४ ॥ कल्लाणकंदं (विशाल लोचन) (भगवानहं) १३५
॥ ९५ ॥ अतीचारकी आठगाथा। १३५
॥ ९८ ॥ सुत्रदेवता (खेत्रदेवता) (स्तुति) (अड्ढाईजेसु)। १३६

॥१००॥ वरकनक (सागरचंदो०) पोसहपारवागाथा १३६
॥१०१॥ नरहेसर बाहुबली, अभैकुमारो० सिझाय। १३७
॥१०२॥ मन्ह जिणाणं आणं, सिझाय। १३७
॥१०३॥ सकल तीर्थ वंदुं कर जोम०। १३८
॥१०४॥ सकलार्हत् प्रतिष्टान, (पख्खी वृह स्तोत्र)। १३९
॥१०५॥ शांतिकरं शांतिजिणं० (शांतिकरस्तोत्र)।.... .... १४०
॥१०६॥ सीमंधर परमातमा० (श्री सीमंधर जगधणी)। १४१
॥१०९॥ श्री परमात्मा० (विमल कमल) श्रीशेत्रुंजय चैत्य०। १४२
॥१११॥ सुणो चंदाजी सीमंधर० (आंखमियै रेमें आज)।.... १४३
॥११३॥ सेत्रुंजा द्रितीय स्तवन (पंचतीर्थ स्तुति)। १४४
॥ ११४ ॥ पिनजी२ रै नाम जपुंदिनरातियां, नेमराजुल सि०। १४५
॥ ११५ ॥ आनखो तूटानें सांधोको नही रे, सि०। १४५
॥ ११७ ॥ पंचतीर्थ चै० (२ तिथको चै०)।.... .... १४६
॥ १२० ॥ पंचमी अष्टमी (तथा) एकादशीको चैत्यवंदन।.... १४७
॥ १२२ ॥ श्रीसीमंधर जिनकी (२) दोय स्तुति। १४८
॥ १२३ ॥ दिन सकल मनोहर०, बीजकीस्तुति। १४९
॥ १२४ ॥ श्रावण सुदि दिन०, पंचमी स्तुति। १४९
॥ १२५ ॥ मंगल आठकरी०, (८) अष्टमी स्तुति।.... .... १५०
॥ १२६ ॥ एकादशी अतिरूवमी। (११) एकादशी स्तुति।.... १५०
॥ १२७ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे०, (१४) स्तुति।.... १५१
॥ १२८ ॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, स्तुति। १५१
॥ १२९ ॥ महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी०, स्तुति।.... .... १५२
॥ १३० ॥ सत्तर भेदी जिनपूजा०, पर्यूषण स्तुति। १९२
॥ १३१ ॥ सामायक लेवा विधि। १५२
॥ १३२ ॥ सामायक पारवा विधि। १५३
॥ १३३ ॥ संध्याकाल, देवशी प्रतिक्रमण विधि १ ।.... .... १५३
॥ १३४ ॥ प्रभातकाले रात्रीप्रतिक्रमण विधि २। १५५

॥ १३५ ॥ पक्खी प्रतिक्रमण विधि ३ । १५७
॥ १३७ ॥ चौमाशी ४ (संबछरी प्रतिक्रमण विधि).... .... १५८
॥ १३८ ॥ पडिलेहण करवानो विधि । १५९
॥ १३९ ॥ पच्चक्खाण पारवानो विधि । १५९
॥ १४० ॥ पांच शक्रस्तवे देववंदन विधि । १७३
॥ १४१ ॥ (२४) जिनचै०, थुई, स्त०, (चोमाशी देव वंदन) १७३

॥ ❀ ॥ अथ ढंद स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १४२ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां० । महावीर ढंद । १५९
॥ १४३ ॥ वंछित पूरे विविधपरें, श्री नवकार ढंद । १६१
॥ १४४ ॥ सुखकारण भवियण०, श्री नवकारढंद । १६२
॥ १४५ ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं, आत्मरक्षाढंद । १६३
॥ १४६ ॥ सेवो पास शंखेसरो ० । श्री पार्श्व जिन ढंद । १६३
॥ १४७ ॥ वीरजिनेसर केरोसीस, श्री गौतम ढंद । १६४
॥ १४८ ॥ आदिनाथ आदै०, शोलसतीनो ढंद । १६४
॥ १४९ ॥ शेत्रुंजरुषभ समो सरया (तीर्थमाला स्त०) । १६५
॥ १५० ॥ श्री राणपुरो रलियामणोरे राणपुरास्त० ।.... .... १६६
॥ १५१ ॥ पुष्खलवइ विजये जयोरे० सीमंधर स्त० । १६७
॥ १५२ ॥ माता त्रिशला झूलावे पुत्र पालणे (हालरियो) । १६७
॥ १५३ ॥ निंदा मकरजो कोईनी पारकीरे (सि०) । १६९

॥ ❀ ॥ आनंद घनजी कृत स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १५५ ॥ रुषभ जिनेसर प्रीतम० (पंथडो निहालुं वीजा ०) । १६९
॥ १५७ ॥ संभव देवत धुर० (अभिनंदन जिन०) । १७०
॥ १५९ ॥ सुमति चरणकज० (शीतल जिनपति ०) । १७१
॥ १६० ॥ मनडुं किमही न बाजैहो कुंथुजिन म० । १७२
॥ १६१ ॥ शाश्वता अशाश्वता जिन वृद्ध चैत्य० । १८६
॥ १६२ ॥ शाश्वता २ जिनस्तुति (तथा) विधि । १८८
॥ १६४ ॥ श्रीसिद्धगिरी स्त० (श्री गिरनारजी स्तवन) । १८९

॥ १६५ ॥ आवो २ नें राज श्री अर्बुद गिरवर जइयै । १९०
॥ १६७ ॥ श्री अष्टापदजी स्त० (समेत सिखरजी स्त०)। १९१
॥ १६८ ॥ तोरणथी रथ फेरियोरे लाल (बारमासो) । १९२
॥ १६९ ॥ (अजीमगंजे) श्रीनेमी नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन। १९३
॥ १७० ॥ जीया चतुर सुजाण, नवपदके गुणगायरे । १९४
॥ १७१ ॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशि० । शाश्वता० । १९४
॥ १७२ ॥ अपछराकरती आरती जिन आगै । १९५
॥ १७३ ॥ मंदर जाणेंकी पूजन करनेंकी विधिः १९६
॥ १७४ ॥ बम्हो नवकार, किंकप्पत्तरु रेअयाण० .... २०१
॥ १७५ ॥ तिजयपहुत्त पयासं० स्तोत्र । २०३
॥ १७६ ॥ दोसा वहार दक्खो०, स्तोत्र । २०४
॥ १७७ ॥ जगद्गुरु, ९ ग्रह शांति स्तोत्र । २०४
॥ १७८ ॥ धम्मोमंगल मुक्किठं० स्वाध्याय । २०५
॥ १७९ ॥ जिन पंजर, आत्मरक्षास्तोत्र । २०५
॥ १८० ॥ लघु जिनसहस्रनाम, स्तोत्र । २०७
॥ १८१ ॥ सकल मंगल केलिनिवेशनं०, स्तोत्र । २०९
॥ १८२ ॥ पार्श्वजिनस्तोत्र, बिशदगुण विचित्रं । २०९
॥ १८३ ॥ यस्यज्ञानदया सिंधो, शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र । २०९
॥ १८४ ॥ लक्ष्मीनिदानं० । श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र । २१०
॥ १८५ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र । २१०
॥ १८६ ॥ विशद सद्गुण० श्री पार्श्वजिनस्तोत्र । २१०
॥ १८७ ॥ श्री गोमी पार्श्वजिन स्तोत्र । २११
॥ १८८ ॥ आद्यश्री ऋषभः०, २४ जिनस्तोत्र । २११
॥ १८९ ॥ श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्र० । मंगलाष्टकस्तोत्र । २१२
॥ १९० ॥ शिवंशुद्धबुद्धं० । परमात्मास्तोत्र । २१३
॥ १९१ ॥ दर्शनंदेवदेवस्य० । नमस्कारस्तोत्र । २१३
॥ १९२ ॥ आद्यंताक्षर संलक्ष्य० । ऋषिमंडलस्तोत्र । २१४

॥ १९३ ॥ भक्तामर प्रणतमौलि मणिप्रभाणा० स्तोत्र । २१७
॥ १९४ ॥ कल्याण मंदिर मुदार मवद्यभेदी० स्तोत्र । २२०
॥ १९५ ॥ वृक्षसेत्रुंजरास; श्रीरिसहेसर पायनमी० । २२३
॥ १९६ ॥ श्री शिखरजी को मोटो रास । २२९
॥ १९७ ॥ श्री गौतम स्वामीको रास । २३७
॥ १९८ ॥ श्री गौतम स्वामीके श्लोक । २४२

॥ ❀ ॥ पनरेतिथकी थुई सरू ॥ ❀ ॥

॥ २०१ ॥ पंच विदेह (समदमोत्तम०) वर मुत्तिय० । २४२
॥ २०२ ॥ (यदंघ्रि नमनादेव;) २४३
॥ २०३ ॥ विश्वनायक जायक०, अजितजिन स्तुति । २४३
॥ २०४ ॥ सुखसमकित दायक कामित सुरतरुकंद । २४४
॥ २०५ ॥ मिल चौविह सुरवर विरचै त्रिगमोसार । २४४
॥ २०६ ॥ सुरअसुर वंदिय पायपंकज नेमिजिन स्तुति । २४५
॥ २०७ ॥ श्री देवार्य (विश्वेवर्यं पूर्णानंदं) । २४५
॥ २०८ ॥ त्रिभुवन जन नायक दायक । २४५
॥ २०९ ॥ श्री सर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीशं देवेंद्रं । २४६
॥ २१० ॥ पापायां पुरिचारु; दीपमाला स्तुति । २४६
॥ २११ ॥ सिद्धारथताता० दीपमाला स्तुति । २४७

॥ ❀ ॥ मोटे गोटे स्तवन सरू ॥ ❀ ॥

॥ २१३ ॥ मनमोहन महाराज । तीन भुवन शिरताज । २४७
॥ २१३ ॥ जय २ श्री जिनराज । जगजनअंतरजामी । २४८
॥ २१४ ॥ भविका श्री जिन बिंब भुहारो । २४८
॥ २१५ ॥ अंतर जामी सुण अलवेसर । २४९
॥ २१६ ॥ जयकारी जिनराज पुरसा दानीरे । २४९
॥ २१७ ॥ सुण सुण शेत्रुंजागिर स्वामी । २५०
॥ २१८ ॥ घर अंगण सुरतरु फल्योजी । २५१
॥ २१९ ॥ मोरा साहिबहो श्री शीतलनाथकि । २५१

॥श्रीः॥

॥ रत्नसागर ॥

(वा)

॥ मोहनगुणमाला ॥





॥ प्रथम भाग ॥

॥ मंगलाचरण ॥

॥ ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ ॐकार उदार अगम्म अपार संसारमें सार पदारथ नामी, सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपन्नयो सबही सिरभूप सुधामी, मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-इष्ट वसे परमिष्ट सदा ध्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥ नमो निसदीश नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता, जाकी जगत्तमें कीरति जागत न्नागतिहे सब ईति असाता इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे ध्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्व्वारिष्टप्रणाशाय । सर्व्वान्नीष्टार्थ दायिने ।
सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ १ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा इक ग्यान नगीनो, दूरभग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नाहिं खजीनो, ऐसो पसाय कियो गुरुराय तिणें भ्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥

॥ सरस्वती महाभागे । बरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी बिशालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । बीणापुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । बिद्या दान बरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा रागे आए लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी वीणा वावे रागे सारे रागे गावे हावे भावै सोभापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी कैसी चाली चाले पूजी बंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले सुद्धी बुद्धी दाई है, सोहेवानी नीकी बानी जाकुंग्यानी प्राणी जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

(स्वरवर्णः)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ ऩ औ अं अः

(व्यञ्जनवर्णः)

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड
ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ल व । श ष स ह । ह्रः ज्ञः
क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
कृ गृ तृ दृ पृ मृ वृ शृ सृ हृ
क्य ख्य ग्य घ्य च्य ज्य ट्य ठ्य ण्य त्य द्य
ध्य न्य प्य भ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य
क्र ग्र ब्र ज्र त्र द्र प्र भ्र म्र ब्र श्र स्र ज्ञ
क्क ग्व ण्व त्व ह्व ध्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व क्र
ह्न घ्न त्न प्न म्न श्न ष्ण स्न क्म ग्म घ्म च्म
ण्म ह्म न्म श्म ष्म स्म ह्म क्ष्म ॥ र्क र्ख र्ग र्घ
अङ्क ङ्ख श्च ञ्छ ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ ण्ण न्त न्थ न्द
न्ध न्न म्म ष्क स्क स्ख श्च श्छ ष्ट ष्ठ स्त स्थ स्प
ष्प स्फ क्क क्त्व ग्ग च्च च्छ ड्ड ज्ज ज्ञ ट्ट त्त
त्थ द्द ड्ड प्प ल्क ल्प ल्म ल्ल ङ्ग ह्व ग्द न्ध ब्द
ब्ध ल्ग्म क्त ष्ट त्क त्प त्स ॥
न्त्य न्द्य न्ध्य न्य ह्न्य न्ह्य म्ल्य ल्क्य ष्ट्य व्द्य
ह्व्य स्त्य स्ल्य न्ल्य क्त्य त्र्य स्त्व ।
त्क च्छ्र न्त्र न्द्र ष्ट्र स्त्र त्प्र ज्व ष्ट्व त्त्व स्त्व
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ (१० १०० १००० १००००)
॥ स्वस्तिश्री कृष्णब्रह्मस्था, एिंवद्राव्हा स्युश्च स्वस्करा,
पृथ्वीभृद्दलगु श्रेष्टात्म, ब्रम्पास्ते हृद्यज्ञप्तिदा ॥ १ ॥

(शिक्षा वाक्य)

॥ गुरु शुश्रूषयाविद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥ विप्रत्वंच नृपत्वंच । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे पूज्यते राजा । विप्रान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे

दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥ नक्षत्रभूषणं चंन्द्रो । नारीणां भूषणं पतिः । पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्यभूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः । न शोभते सभा मध्ये । हंस मध्ये बको यथा ॥ ५ ॥ लालयेत्पंच वर्षाणि । दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्तेतु षोडशेवर्षे । पुत्रं मित्र वदाचरेत् ॥ ६ ॥ वरमेको गुणी पुत्रो । नच मूर्ख शतान्यपि । एकचन्द्र स्तमो हन्ति । नच तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा । पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्व शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ नच विद्या समो बंधु र्नचव्याधि समो रिपुः । नचापत्य समः स्नेहो । नच दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥ किं तया क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये । पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारां-श्च । परद्रव्याणि लोष्ट्रवत् । आत्मवत् सर्वभूतानि । विद्वंते धर्मबुद्धयः॥१२॥

॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिन्यैं नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं । परमेश्वरस्य पूजा विधेया (देवः पूज्यः) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्त्तते । धर्मशास्त्र मत्यंतं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं सवीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः प्रत्यय कारकं भवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरु-समीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति । तस्मादादौछंदो ज्ञानं सम्पादनीयं । सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य प्रियो भवति । विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभायश्रमो यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामा-करः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां चिरमेव दुःखं । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति ।

सोऽस्माकं परम गुरुः । सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता जन्मदाताच द्वावेव समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् । क्रोधवशेन परुषं भाषते । ततः प्रहरेत् । क्रोधोहि महान् शत्रुः ॥ सर्वं परवशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ परहिंसायां परापकारेच बुद्धिर्नकार्य्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्तिपरेषा मुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्म्म ॥ अहंकारं परिहरेत् । नाहंकारात् परोरिपुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विछेत् । सन्तोषमूलंहि सुखम् ॥

॥ अथ सन्धिसुत्र ॥

सिद्धो वर्णः । समाम्नायः । तत्र चतुर्दशादौ स्वराः दशसमाना । तेषां द्वौ द्वावन्यो । ऽन्यस्य सवर्णौ । पुर्व्वौ ह्रस्वः । परो दीर्घः । स्वरोवर्णः वर्ज्जोनामी । एकारादीनि संध्यक्षराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गाः । पंच पंच । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शषसाश्च घोषाः । घोषवंतोऽन्ये । अनुनासिकाः ङञणनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः । उष्माणः शषसहाः । अः इति विसर्ज्जनीयः । कः इति जिव्हा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इत्यनुस्वारः । पूर्वपरयो रर्थोपलबधौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् । अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहण सिद्धिः ॥ इति संधौसूत्रतः प्रथमश्चरणः समाप्तः ॥

॥ हितोपदेसः ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता । आचार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसिद्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधकाः । पंचैते परमेष्टिनः प्रति दिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

॥ अर्थः ॥

(एते पंचपरमेष्टिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्व्वन्तु) । यह पंचपरमेष्टि निरन्तर श्रीसंघप्रतें मंगलकरो । (कैसे है पंचपरमेष्टि) (अ-

र्हन्तो भगवंत इंद्रमहिता)। प्रथम परमेष्टि । श्रीअरिहंत देवः । अष्ट-कर्म शत्रुकुंहणें (सो) अरिहंत कहियै । अरिहंत कैसे है । (भगवंत-ज्ञानवंत है । केवल ज्ञान कैवल दर्शन संयुक्त है । (तथा) भगशब्द-के १४ अर्थ है ॥ भगोऽर्क (सूर्य) १। ज्ञान २। महात्म ३। यश ४। वैराग्य ५। मुक्ति ६। रूप ७। वीर्य ८। प्रयत्न ९। इछा १०। श्रीलक्ष्मी ११। धर्म १२। ऐश्वर्य १३। योनि १४। यह चवदै अर्थोमेंसें। सूर्य १ योनि २। दो अर्थ वर्जकर। १२ अर्थ भग शब्दका मिलै (जि-ससे) भगवंत कहियै (पुनः किंविशिष्ट) फेर अरिहंत कैसे है (इंद्र-महिता (चौसठ इंद्रोंकै पूजनीक । द्वादशगुणैं करी विराजमांन है (सो द्वादश गुण कैसे) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रोगादि रहित । प्र-स्वेद मलादि रहित । सुगंध शरीर होय ॥ १ ॥ सासोस्वासकी कमलजैसी सुगन्ध होय ॥ २ ॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय ॥ ३ ॥ आ-हारनीहारकी विधि अदृश्यहोय । प्राणी देख सक्ते नहिं ॥ ४ ॥ ए च्यार अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय । (शेषआठगुण) केवल ज्ञान उत्पन्न होणेसें प्रगट होय । (अशोकवृक्षः) भगवन्तके शरीरसें । बारै गुणो उंचो अशोकवृक्ष होय । जिसकी छायांबैठणेंसें रोगसोकादिक दूर होय ॥ १ ॥ (सुरपुष्पवृष्टिः) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै । आका-ससें पडता सीधापडै विंटनींचै रहै । पंषडी ऊपर रहै ॥ २ ॥ (दिव्य-ध्वनि) योजनपर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यंच । सब जीव । अपणी २ भाषामें । यथावस्थित समझै (जाणें) भगवंत मेरी भाषामें उपदेस देते है ॥ (कहावी है) एगाइं गिराणेगे । संदेह देहिणं समंछित्ता । तिहुअण मणुंसा संता । अरिहंता हुंतिमे सरणं ॥ १ ॥ ३ ॥ (श्चामर ४) भग-वंतके दोनुं पासे इंद्रचामर ढालता रहे ॥ ४ ॥ (आसनंच ५) भगव-न्तके बेठणेंको । इंद्रादिक रचित । फिटक रत्नमई सिंहासण रहे ॥ ५ ॥ (भामंडलं ६) भगवन्तके पिछाडी भामंडल रहे (जिसमें) भगवंतके च्यार मुख । च्यारुंदिश तरफ मालुम होय भगवंत तो पूर्वदिशा मुख कर बेठे । आरे तीन दिशमे । भगवन्तके प्रतिबिंब इंद्रादिक स्थापन

करै। परंतु भगवन्तके अतिशयसें । च्यारुंदिशे । बारैई परषदाकों। अपणेसन्मुख उपदेश देता मालुम होय ॥ ६ ॥ (दुंदुभी ७) आकाशमें देव दुंदुभी बाजित्र बाजे ॥ ७ ॥ (रातपत्रं) भगवन्तके विहार कालै। वा स्थिति कालै । हमेसां मस्तकपर । तीन छत्र रहै ॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये होय) ऐसे अरिहंत। देवाधिदेव। चौतीस अतिशय विराजमान । पेंतीस वचनगुण शोभित । एक हजार आठ लक्षणालंकृत। अठारै दूषण रहत। शांत दांत। कृपासागर । त्रैलोक्यनाथ। जगत्रयके गुरु (वर्त्तमानकालै) महाविदेह खेत्रे। केवलज्ञान। केवलदर्शनसें। लोकालोकका भाव देखते थके । पृथ्वीमंडलपर भव्य जीवोंके मनोरथ पूरण करते थके । विचरते है (ऐसे) अनंतगुणें सुसोभित । अरिहंत देव श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरै पदै) सिद्ध महाराजको नमस्कार हुवो । (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टकों । शुक्लध्यान रूप अग्निसें भस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तभये (ऐसे) अनंत ग्यान। अनंतदर्शन। अनंत चारित्र। अनंत तप। अनंत वीर्यसंयुक्त । जन्म जरा मरण रोग सोक भयादिकसे विप्रमुक्त। चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत भाव । एक समयमें जाणते थके । देखते थके पिण आत्मगुणां में मग्न रहे है (ऐसे) सिद्ध महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति कराः) (तीसरा परमेष्टि) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो। (सो कैसे है) (छत्तीस गुण करी विराजमान। मुक्तिमार्गके साधक। कर्म शत्रूके विराधक । अबुध जीव प्रतिबोधक । क्षमागुण भंडार। समदृष्टी। तरण तारण। धर्मके धोरी । जिन सासनकी उन्नतिके करण हार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका (चौथा परमेष्टि। श्रीउपाध्याय महाराजकों नमस्कार हुवो। (सोकैसे है) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार। नय निक्षेपा गमां पर्याय युक्त। सिद्धांतको पढाणेंवाले। ज्ञानचक्षु देणेंवाले। (ऐसे) २५ गुण करी विराजमान । श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें

सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ (मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः) (पंचम परमेष्टि) सब साधु मुनिराज (सो कैसे है) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन रत्नके आराधक है। पांचे सुमते सुमता । तीने गुप्तेगुप्ता। छक्कायके पीहर कुक्खी संबल । चारित्रपात्र । मोक्षमार्गके साधक । (ऐसे) सब साधु मुनिराज। सत्ताईस गुणें करी सोभित। श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥ इति हितोपदेशः सुखाय श्रेयार्थम् ॥

॥ ओंनमो जिन नामः ॥

(अतीत चौबीसी.)

१॥ श्रीकेवलज्ञानीजी। ९॥ श्रीदामोदरजी। १७॥ श्रीअनिलनाथजी।
२॥ श्रीनिर्व्वाणीजी। १०॥ श्रीसुतेजनाथजी। १८॥ श्रीयशोधरजी।
३॥ श्रीसागरजी। ११॥ श्रीस्वामीजी। १९॥ श्रीकृतार्थजी।
४॥ श्रीमहायशजी। १२॥ श्रीमुनिसुव्रतजी। २०॥ श्रीजिनेश्वरजी।
५॥ श्रीविमलदेवजी। १३॥ श्रीसुमतिनाथजी। २१॥ श्रीशुद्धमतीजी।
६॥ श्रीसर्व्वानुभूतिजी। १४॥ श्रीशिवगतीजी। २२॥ श्रीशिवकरजी।
७॥ श्रीश्रीधरजी। १५॥ श्रीअस्तागजी। २३॥ श्रीस्पन्दनजी।
८॥ श्रीदत्तस्वामीजी। १६॥ श्रीनमीश्वरजी। २४॥ श्रीसंप्रतिजी।

॥ इति अतीत चतुर्विंशति तिर्थ करेभ्यो नमः ॥

(वर्त्तमान चौबीसी)

१॥ श्रीऋषभदेवजी। ९॥ श्रीसुविधिनाथजी। १७॥ श्रीकुंथुनाथजी।
२॥ श्रीअजितनाथजी। १०॥ श्रीशीतलनाथजी। १८॥ श्रीअरनाथजी।
३॥ श्रीसंभवनाथजी। ११॥ श्रीश्रेयांसजी। १९॥ श्रीमल्लिनाथजी।
४॥ श्रीअभिनन्दनजी। १२॥ श्रीवासुपुज्यजी। २०॥ श्रीमुनिसुव्रतजी।
५॥ श्रीसुमतिनाथजी। १३॥ श्रीविमलनाथजी। २१॥ श्रीनमिनाथजी।
६॥ श्रीपद्मप्रभुजी। १४॥ श्रीअनन्तनाथजी। २२॥ श्रीनेमनाथजी।
७॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी। १५॥ श्रीधर्मनाथजी। २३॥ श्रीपार्श्वनाथजी।
८॥ श्रीचंद्रप्रभुजी। १६॥ श्रीशान्तिनाथजी। २४॥ श्रीमहावीरजी।

(अनागत चौवीसी)

१॥ श्रीपद्मनाभजी । ९॥ श्रीपोट्टिल प्रभुजी । १७॥ श्रीसमाधिनाथजी ।
२॥ श्रीसूरदेवजी । १०॥ श्रीशतकीर्त्तिजी । १८॥ श्रीसंवरनाथजी ।
३॥ श्रीसुपार्श्वजी । ११॥ श्रीसुव्रतनाथजी । १९॥ श्रीयशोधरजी ।
४॥ श्रीस्वयंप्रभुजी । १२॥ श्रीअममनाथजी । २०॥ श्रीविजयनाथजी ।
५॥ श्रीसर्व्वानुभूतिजी॥१३॥ श्रीनिष्कषायजी । २१॥ श्रीमल्लिप्रभुजी ।
६॥ श्रीदेवश्रुतजी । १४॥ श्रीनिष्पुलाकजी । २२॥ श्रीदेवप्रभुजी ।
७॥ श्रीउदयप्रभुजी । १५॥ श्रीनिर्ममनाथजी । २३॥ श्रीअनन्तजी ।
८॥ श्रीपेढालप्रभुजी । १६॥ श्रीचित्रगुप्तिजी । २४॥ श्रीभद्रंकरजी ।

॥ इति भविष्यच्चतुर्विंशति तिर्थंकरेभ्योनमः ॥

(बीसविहरमांन नामानि)

१॥ श्रीसीमन्धरजी । ८॥ श्रीअनन्तबीर्यजी । १५॥ श्रीनेमप्रभुजी ।
२॥ श्रीयुगमन्धरजी । ९॥ श्रीसूरप्रभुजी । १६॥ श्रीईश्वरजी ।
३॥ श्रीबाहुजी । १०॥ श्रीविमलजी । १७॥ श्रीवयरसेनजी ।
४॥ श्रीसुबाहुजी । ११॥ श्रीवज्रधरजी । १८॥ श्रीमहाभद्रजी ।
५॥ श्रीसुजातजी । १२॥ श्रीचंद्राननजी । १९॥ श्रीदेवजसजी ।
६॥ श्रीस्वयंप्रभुजी । १३॥ श्रीचंद्रबाहूजी । २०॥ श्रीअजितवीर्यजी ।
७॥ श्रीऋषभाननजी । १४॥ श्रीभुजंगजी ।

॥ इति विंशति विहरमानतिर्थंकरेभ्योनमः ॥

(च्यार सास्वतानामः)

१॥ श्रीऋषभाननजी । ३॥ श्रीवारिषेणजी ।
२॥ श्रीचंद्राननजी । ४॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवरेभ्योनमः ॥

॥ पांच प्रतिक्रमणसूत्र विधि ॥

श्रीपंचपरमेष्टिने नमः ॥ णमो अरिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए सव्व-साहूणं ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ सव्वपाव प्पणासणो ॥ मंग-लाणंच सव्वेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ पद ९ ॥ संपदा ८ ॥ अक्षर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६१

॥ अथ सकल तिर्थंकर नमस्कार लि० ॥

॥ ❀ ॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ ❀ ॥ जयउसामिहि ॥ २ ॥ रिस-ह सेत्तुंजि उज्जिंत पहू नेमिजिण । जयउ बीर सच्चउरमंमण । भरवइहि मुणि सुव्वय । महुरिपास दुह दुरिअ खंमण । अवर विदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपयं । वंदुं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥ कम्मभूमिहि ॥ २ ॥ पढम संघयण उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणवराण विहरंतलब्भइ । नव-कोडी केवलिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवर वीसमुणि । दुइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसदुइ । थुणिजइ निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लक्खा छप्पन्न अट्ठको-डीओ । चउसय बायासीआ । तिहुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव-कोडिसयं । पणवीसंकोडि लक्खतेवन्ना । अट्ठावीससहस्सा चउसय अट्ठासिआ पडिमा ॥ ३ ॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपा-यालेमाणुसेलोए । जाइंजिणबिंबाइं । ताइं सव्वाइं वंदामि ❀ ॥ ४ ॥ णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थग-राणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर पुंडरीआणं पुरसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहि-
दयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं।
धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिह-
यवरणाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जा-
वयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअ-
गाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिव मयल मरुअ मणंत
मक्खय मव्वावाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणंसंपत्ताणं
णमोजिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ
भविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण
वंदामि ❀ ॥ १ ॥ ❀ पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ९ ॥ अक्षर ॥ २९७ ॥
गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४ ॥ ❀ ॥ जावंति चेइआइं । उड्ढेअ अ-
हेअतिरिअलोएय । सव्वाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥
इच्छामिखमा० इच्छाका० भगवन् । जावंति केविसाहू । भरहे
रवए महाविदेहेअ । सव्वेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंड
विरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ९२ ॥ ❀ नमो र्हत सिद्धाचार्योपा
ध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ ❀ ॥ उवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि
कम्मघण मुक्कं । विसहर विसनिन्नासं । मंगल कल्लाण
आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया
मणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुठ्ठजराजन्ति उवसामं ॥२॥ चिठ्ठउ
दूरे मंतो । तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिए सुवि जीवा ।
पावंति नदुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते लद्धे । चिंतामणि क-
प्पपाय वब्भहिए । पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस । भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । तादेव दिज्ज
बोहिं । भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥

❀ ॥ जय वीयराय जगगुरु । होउममं तुहपन्नावओ । नयवं नवनिब्बेओ । मग्गाणुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोग विरुद्ध च्चाओ । गुरुजण पूआ परत्थकरणंच सुह गुरुजोगो तब्बयण सेवणा आन्नवमखंमा ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ अरिहंत चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोका-वसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहै ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ❀ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणदंमकः ॥ गुरु ३ लघु २५ ॥ (इच्छाकारेण संदिसह नगवन्) इरिआवहिआं पमिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पमिक्कमिउं । इरिआवहियाए विराहणाए । गमणा गमणे पाण क्कमणे वीआक्कमणे हरिआ क्कमणे । उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा विराहिआ । एगिंदिआ वेइंदिआ तेइंदिआ चनरिंदिआ पं-चिंदिआ अनिहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्टिआ । परिआविया किलामिआ उद्दविआ गाणा उठाण संकामिआ जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिदुक्कमं ❀ ॥ ७ ॥ ❀ तस्स उत्तरी करणेणं । पायच्छित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणठाए । गामिकाउसग्गं ॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५ ॥ एवं ॥ १९९ ॥ ❀ ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंनाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं नमलिए पितमुछाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारेहिं । अनग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमोक्कारेणं नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणंवोसरामि ❀ ॥ ४ ॥ ❀ लोगस्स उज्जोअगरे । धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइसं । चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च बंदे । संभव मभिनंदणं च । सुमइअ पउमप्पहं सुपासं । जिणंच चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिंच पुप्फदंतं । सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरंच मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणंच । वंदामि रिट्ठनेमिं । पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ । बिहुअ रयमला पहीण जर मरणा । चउवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ वंदिअ महिआ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग बोहि लाभं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा । आइच्चेसु अहिअं पयासयरा । सागर वर गंभीरा । सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥❀॥७॥❀ पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८ [एवंसर्वअक्षर ॥ २५६] सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमिकाउस्सग्गं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ पुक्खरवर दीवड्ढे । धायइ संडेअ जंबुदीवेअ । भरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम तिमिर पडल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिंद महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोमिअ मोह जालस्स ॥ २ ॥ जाई जरा मरण सोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंद गणाच्चिअस्स । धम्मस्ससार मुवल भ्भकरेपमायं ॥३॥ सिद्धेभोपयओ णमोजिणमए नंदीसयासंजमे । देव भाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भुअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पयट्टिओ

जगमणं तेलोक्क मच्चासुरं। धम्मो वड्ढउसासओ विजयउ धम्मो तरं वड्ढओ ॥ ४ ॥ सुअस्सभगवउ करेमि काउसग्गं ॥ ❀ ॥ (पद १६संपदा १६ गुरुअ ३४ लघुअ १८२ एवं २१६)॥ ❀ ॥ वंदणवत्ति आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामिकाउसग्गं ॥ १ ॥ अन्न त्थऊससिएणं नीससिएणं इत्यादि ॥ ❀ ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोगग्ग मुवगयाणं। णमो सया सव्व सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणविदेवो जंदेवा पंजली नमंसंति। तं देव देवमहिअं। सिरसावंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि णमुक्कारो। जिणवर वसहस्स वड्ढमाणस्स । संसार सागराओ। तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे। दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्म चक्कवट्टिं । अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दोअ वंदिआ। जिणवरा चउवीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा । सिद्धा सिद्धिं ममदिसंतु ॥ ५ ॥ ❀ ॥ वेयाबच्चगराणं । संतिगराणं । सम्मद्दिट्ठि समाहिगराणं । करेमिकाउसग्गं ॥ १ ॥ अणत्थऊससिएणं इत्यादि (संपदा २० पद २० गुरु अक्षर ३१ लघु १६७ एवं १९८) ॥ ❀ ॥ संसार दावानल दाह नीरं । समोहधूली हरणे समीरं। मायारसा दारण सार सीरं। नमामि वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुर दानव मानवेन । चूला विलोल कमलावलि मालितानि। संपूरिता भिनत लोक समीहि तानि । कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधा गाधं सुपद पदवी नीर पूराभिरामं। जीवा

हिंसाविरल लहरी संग मागाहदेहं । चूलावेलं गुरु गम मणी संकुलं दूरपारं । सारं वीरागम जलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढ लोलालिमाला । ऊंकारा राव सारा मलदलकमला गारभूमी निवासे । गाया संभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे । वांणीसंदोहदेहे भव-विरहवरं देहिमे देविसारं ॥ ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

॥ वांदणां ॥

॥❀॥ इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मेमिउग्गहं निसीही । अहो कायं काय । संफासं खमणिज्जो भेकिलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेणभे दिवसो-वइक्कंतो । जत्ताभे जवणि जंचभे । खामेमि खमासमणो देव-सिअं वइक्कमं । आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं । देव सिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचिमिछाए । मणदुक्क-डाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए । कोहाए माणाए मायाए लोभाए । सव्वकालिआए सव्वमिछोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसाय णाए । जोमेअईयारोकओ तस्सखमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥❀॥ ॥ अक्षर ॥ १९८ ॥

॥ साध्वालोयणा ॥

॥❀॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोएमि । इछंआलोएमि । जोमेदेवसिओ अईआरोकओ । काईओ वा ईओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुविचिंतिओ । अणायारो अणिछियव्वो । असम-णपावग्गो । नाणेतहदंसणेचरित्ते । सुएसामाइए तिएहंगुत्तीणं-चउएहंकसायाणं । पंचएहं महव्वयाणं । छएहं जीवनिकायाणं ।

सत्तएहंपिंडेसणाणं अट्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहं बंभचेर गुत्तीणं दसविहेसमणधम्मे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिओ जं विराहिओ । तस्समिछामिडुक्कडं ॥❀॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥❀॥ इछाकारेण संदिसह नगवन् । देवसियं आलोएमि इछं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ वाईओ माणसिओ । नस्सुत्तो नम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो डुज्झाओ डुविचिंतिओ । अणायारो अणिछियव्वो । असावग-पावग्गो । नाणेतह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए तिएहंगुत्तीणं । चनएहंकसायाणं । पंचएहंमणुव्वयाणं । तिएहं गुणव्वयाणं । चनएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-म्मस्स । जंखंमिओ जंविराहिओ । तस्स मिछामिडुक्कडं ॥❀॥

॥❀॥ गणेकमणे चंकमणे आनत्ते । अणानत्ते हरिओकाय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे नप्पइयासंघट्टे । सव्वस्स वि देवसिओ । डुचिंतिय डुब्भासिय डुचिट्ठिओ । इछाकारेण संदिसह । इछंतस्समिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥❀॥ संथारानवट्टण-की । आनट्टणकी । परिओट्टणकी । पसारणकी । नप्पइयासं घट्टणकी । अचक्खु विसयकायकी । सव्वस्सविराइओ । डुचिं तिओ डुब्भासिओ डुचिट्ठिओ । इछाकारेणसंदिसह । इछं-तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥❀॥ इछाकारेणसंदिसह नगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर । देवसिअंखामेनं । इछंखामेमि देव-सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । नत्ते पाणे विणए वेया-वच्चे । आलावे संलावे । नच्चासणे । समासणे अंतरनासाए नवरिनासाए । जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुब्भेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिछामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ ॥ इति गुरुवंदणा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करेमि भंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि । निंदामि गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥❀ ॥ करेमि भंते पोसहं । आहार पोसहं, देसउ । सबउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सबउ बंभचेर पोसहं । सवउ अबावार पोसहं । सबउ चउव्विहे पोसहे । साव ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ❀॥ आयरियउवज्झाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-कसाया । सबे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सबस्स समणसंघस्स । भग वउ अंजलिं करिय सीसे। सब्बं खमावइत्ता ।खमामि सबस्स अहि-यंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीव रासिस्स । भावउ धम्मनिहियनिय-चित्तो । सब्वं खमावइत्ता । खमामि सब्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥❀॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी भवन-बासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमक्षतं ॥ २ ॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय महायश २ जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु गरिम गुरु । जय दुहत्तसत्ताणताणय । थंभणयठिय पासजिण ।

नवियहनीमनवत्थु । नय अवणिंताणंतगुण । तुज्झतिसंऊ नमोत्थु ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सामायक पोसहपारवागाथा ॥

॥ ❀ ॥ नयवं दसन्ननद्दो । सुदंसणो थूलनद्दवयरोय । सफलीकय गिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं । नासइ पावं असंकियानावा । फासुअदाणे निज्जर । अनिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ उत्तमत्थो मूढ मणो । कित्तियमित्तंपि संनरइजीवो । जंचन संनरामि अहं । मिछामेदुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चिंतिय । मसुहं वायाइन्नासियं किंचि । असुहं काएणकयं । मिछामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो बोधवो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ सामायकविधै लीधी विधै कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय दसमनका दस वचनका बारै कायाका । बत्तीस दूषणां मांह जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंकरी मिछामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरिथंनणयठियपाससामिणो । सेसतित्थसामीणं । तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसमहं सरणत्थं । काउसग्गं करेमि । सत्तीए नत्तीए गुणसुठियस्स । संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ ❀ ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय । स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा । तज्जया व्याप्त मोक्षाय । परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशै रिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दित जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः । सशुक्रमासोद्भव वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रंविभ्रती याविभर्त्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा । सकल सुखविधात्री । प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ❀ इति वीरस्तुतीः ॥

॥ ❀ ॥ परसमयतिमिरतरणिं । भवसागरवारितरणवरतरणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध संसारविहारकारी । दुरन्तभावारिगणानिकामं । निरन्तरं केवलि सत्तमावो । भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि कुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३॥ परिमलभरलोभा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हारनीहारहासे । अविरलभवकारा गारविध्वित्तिकारं । कुरुकमलकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी । कमलेस्थिता भगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां । विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्याःक्षेत्रं समाश्रित्य । साधुभिःसाध्यतेक्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं । भूयान्नःसुखदायिनी ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंभनेस्वर्गिरौ । श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा धीशैःसमारोपितः । संसक्तःस्तुति निर्जलैः शिवफल स्फूर्यत्फणापल्लवः । पार्श्वःकल्पतरुःसमे

प्रथयतां नित्यंमनोवांछितं ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरोदेवो । जीरावल्लिसिरोमणिः पार्श्वनाथोजगन्नाथो । नतुनाथोनृणां-श्रिये ॥ २ ॥ ❀ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ कल्याणकमलागेहं । नीलदेहंमहासहं । नवखंमाविधं-पार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ चउ कसाय पमिमल्ल सूरण । दूज्जयमयणमाण मसमूरण । सरसपियंगु वन्नगयगामिय । जयउपास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसत-णुकंतिकप्पसिणिद्धउ सोहइफणमणिकिरणालिद्धउ । नंनवज-लहरतडिलयलंछिय । सोजिणपासपयन्नउवंछिय ॥ १ ॥ ❀ ॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्वधर्म्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो । मङ्गलं गौतमःप्रभुः । मङ्गलं स्थूलभद्राद्या । जैनोधर्म्मो-स्तु मङ्गलं ॥ २ ॥ ❀ ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परिहितनि-रता भवंतु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ ३ ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदीय पादाब्जतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात् । युग-प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ४ ॥ ❀ ॥ सिद्धांतसिंधुर्जगदेकबंधु । युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटी प्रकटीकरोतु । सूरीश्वरो श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ अथ साधुप्रतिक्रमण सूत्र ॥

॥ ❀ ॥ चत्तारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं । साहूमङ्गलं । केवलिपणत्तो धम्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्तारि लो-गुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो-

गुत्तमा। केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारिसरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जामि। साहूसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ३ ॥ इछामि पम्हिक्कमिउं ॥ पगामसिज्झाए । निगामसिज्झाए । संथारा उवट्टणाए । परियट्टणाए । आउट्टणाए । पसारणाए । छप्पइया संघट्टणाए । कुइए कक्कराइए । बीएजंभाइए। आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए । सोअणवत्तिआए। इत्थी विप्परियासिआए । दिठी विप्परियासिआए । मण विप्परियासिआए । पाण भोयण विप्परियासिआए । जोमे देवसियो अइआरोकउ । तस्समिछामि दुक्कडं ॥ पडिक्कमामिगोअरचरिआए । निरुखायरिआए । उग्घाडकवाड उग्घाडणाए । साणावछादारा संघट्टणाए । मंमीपाहुडिआए बलिपाहुडिआए । ठवणापाहुडिआए । संकिए सहस्सागारे । आणेसणाए । पाणेसणाए। आणभोयणाए । पाणभोयणाए। बीअभोयणाए । हरिअभोयणाए पछाकम्मिआए । पुराकम्मिआए। अदिठहडाए । दगसंसठहडाए। रयसंसठहडाए । पारिसाठणिआए पारिठावणिआए उहा सणनिक्खाए। जंउग्ग मेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गाहिअं । परिभुत्तंवा जंनपरिठवणिअं । तस्समिछामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं । सिज्झायस्स अकरणयाए उभउ कालं भंमोवगरणस्स । अप्पडिलेहणाए । दुप्पडिलेहणाए अप्पमजणाए दुप्पमजणाए। अइक्कमे। वइक्कमे अइयारे अणायारे । जोमेदेवसिउ अइआरोकउ। तस्समिछामि दुक्कडं ॥ ❀ ॥ पडिक्कमामि एगविहेअसंजमे। पडिक्कमामि दोहिंबंधणेहिं। रागबं-

धणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि तिहिंदंमेहिं । मणदंमेणं वयदंमेणं कायदंमेणं । पडिक्कमामि तिहिंगुत्तीहिं । मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामितिहिंसल्लेहिं । मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं । मिछादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि तिहिंगारवेहिं । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं । पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं । नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाए । पडिक्कमामि चउहिंकसाएहिं । कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं । पडिक्कमामि चउहिंसन्नाहिं । आहारसन्नाए नयसन्नाए मेहुणसन्नाए परिग्गहसन्नाए । पडिक्कमामि चउहिंविगहाहिं । इत्थिकहाए नत्तकहाए देसकहाए रायकहाए । पडिक्कमामि चउहिंझाणेहिं । अट्टेणंझाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं । पडिक्कमामि पंचहिं किरिआहिं । काइयाए । अहिगरणियाए पाउसिआए पारितावणीआए पाणाइवायकिरिआए । पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं । सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं । पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं । पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पडिक्कमामि पंचहिंसमईएहिं । इरिआसमिईए नासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंमत्तनिक्खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाण पारिठ्ठावणिआसमिईए । पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं । पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सइकाएणं तसकाएणं । पडिक्कमामिछहिंलेसाहिं । किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए सुक्कलेसाए । पडिक्कमामिसत्तहिं

भयठाणेहिं । अठ्ठहिं मयठाणेहिं । नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं । दसविहेसमणधम्मे । एगारसहिं उवासगपडिमाहिं । बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं । तेरसहिंकिरिआठाणेहिं । चउदसहिं भूयगामेहिं । पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं । सोलसएहिंगाहाहिं सतरसविहे असंजमे । अठारसविहे अबंभे । इगुणवीसाए-नायज्झयणेहिं । वीसाए असमाहिठाणेहिं । इकवीसाएस-बलेहिं । बावीसाएपरीसहेहिं । तेवीसाएसुअगडज्झयणेहिं । चउवीसाएअरिहंतेहिं । पचवीसाएभावणाहिं । छव्वीसाएदसा-कप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं । सत्तावीसाएअणगारगुणेहिं । अठावीसाए आयारपकप्पेहिं । एगुणतीसाए पावसुअप्पसं गेहिं । तीसाएमोहणिअ ठाणेहिं । इगतीसाएसिद्धाइगुणेहिं । बत्तीसाएजोगसंगहेहिं । तित्तीसाएआसायणाए । अरिहंता-णंआसायणाए । सिद्धाणंआसायणाए । आयरिआणंआसाय-णाए । उवज्झायाणंआसा० । साहुणंआसा० । साहुणीणंआ-सा० । सावयाणंआ० । सावियाणंआ० । देवाणंआसा० । देवीणंआ० । इहलोगस्सआ० । परलोगस्सआसायणाए । केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ० । सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० । सव्व पाण भूअ जीव सत्ताणं आसायणाए । कालस्सआ० । सुअस्सआसा० । सुयदेवयाएआसा० । वायणारिअस्सआ० । जंवाइद्धं । वच्चामेलिअं । हीणक्खरिअं । अच्चक्खरिअं । पयहीणं । विणयहीणं । जोगहीणं । घोसहीणं । सुट्ठुदिन्नं । दुट्ठुपडिच्छियं । अकाले कओ सज्झाओ । कालेनकओ सज्झाओ । असज्झाइए । सज्झाइअं । सज्झाइए नसज्झाइयं । तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ णमोचउवीसाए तित्थयराणं । उसभाइ महावीरपज्जवसाणाणं ।

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पडिपुन्नं । नेआउयं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । निज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सव्वदुक्खपहीणमग्गं । इत्थठिआजीवा । सिज्झंति । बुज्झंति मुच्चंति । परिनिव्वायंति । सव्वदुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सद्दहामि । पत्तिआमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तंधम्मंसद्दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालिंतो अणुपालिंतो । तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अब्भुठिओमि । आराहणाए । विरओमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसंपज्जामि । अबंभं परिआणामि । बंभं उवसंपज्जामि । अकप्पं परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिआणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिछत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परिआणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंभरामि । जंचन संभरामि । जं पडिक्कमामि । जंचन पडिक्कमामि । तस्ससव्वस्स । देवसिअस्स । अइआरस्स पडिक्कमामि । समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिठि संपन्नो । मायामोसविवज्जिउ । अढाइज्जेसु दीव समुद्देसु । पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुछपडिग्गहधारा । पंचमहव्वयधारा । अठारसहस्स सीलांगधारा । अक्खयायारचरित्ता । तेसव्वे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वेरंमज्झ न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पमिक्कंतो । वंदामि जिणे चउवीसं ॥ २ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सचित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंबोल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विलेवण १० ॥ बंभ ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ इति चउद्द नियम गाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वंदित्तू सुत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदित्तु सव्वसिद्धे । धम्मायरिएअ सव्वसाहूअ । इच्छामि पमिक्कमिउं । सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इआरो । नाणे तह दंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ बायरोवा । तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहेअ आरंभे । कारावणे अकरणे । पमिक्कमे देसिअंसव्वं ॥ ३ ॥ जंबद्ध मिंदिएहिं । चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेणव दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे ठाणेचंकमणे अणाभोगे । अभिउंगे अनिउंगे । पमिक्कमे ॥ ५ ॥ संकाकंखविगंछा । पसंसतहसंथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइ आरे । पमिक्क० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे ॥ पयणेअ पयावणेअ जेदोसा । अत्तठाय परठा । उभयठाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव्वयाणं । गुणव्वयाणंचतिएहमइआरे । सिक्खाणंच चउएहं ॥ पमिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी । थूलगपाणाइवायविरईउ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंधछविच्छेए । अइभारेभत्तपाणवुच्छेए । पढम वयस्स इआरे । पमिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुवयम्मी । परिथूलग अलिअवयण विरइओ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमाय

प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे । मोसुवएसेअ कूलेहे-
अ ॥ बीअवयस्सइआरे । पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइएअणुव्वय
म्मी । थूलगपरदव्वहरणविरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे । तप्पडिरूवे विरुद्ध
गमणेअ । कूडतुलकूडमाणे । पडि० ॥ १४ ॥ चउत्थेअणुव्वय
म्मी । निच्चं परदारगमण विरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ-
पमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिव्व-
अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे । पडिक्क० ॥ १६ ॥ इत्तोअ-
णुव्वए पंचमम्मी । आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए ।
इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु रुप्पसुवण्णेअ कुविअ परि
माणे । डुप्पएचउप्पयम्मी पडि० ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-
माणे । दिसासुउड्ढं अहेयतिरिअंच । वुड्ढिस्सइ अंतरद्धा ।
पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-
अ फलेअ गंधमल्लेअ । उवभोग परीभोगे । बीअम्मिगुणव्वए
निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबुद्धे । अप्पोलडुप्पोलिएअ आहारे ।
तुच्छोसहिभक्खणया । पडि० ॥ २१ ॥ इंगालीं वणसाडी ।
भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस
केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुजंतपिल्लणंकम्मं । निल्लंछ-
णंच दवदाणं । सरदह तलावसोसं । असईपोसंच वज्जिज्जा
॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तणकट्ठेमंतमूलभेसिज्जे ।
दिणेदिवावएवा । पडि० ॥ २४ ॥ एहाणुवट्टण वन्नगविलेवणे
सद्दरूवरसगंधे । वत्थासणआभरणे । पडि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे
कुक्कइए । मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडंमिअणट्ठाए
तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । अणवट्ठा

णेतहासइ विहुणे । सामाइय वितहकए । पढमे सिक्खा वएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सद्देरूवेअ पुग्गलक्खेवे । देसाविगासिअम्मी । बीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-विही । पमायतह चेव नोयणाभोए पोसहविहिविवरीए । तइ एसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्तेनिक्खमणे ॥ पिहणेववएस-मन्नरेचेव । कालायक्कमदाणे । चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेणव-दोसेणव । तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविभागो । नक उ तव चरण करण गुत्तीसु । संतेफासुअदाणे । तंनिंदे तंचगरिहा-मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअ आससपउगे । पंचविहो अइआरो । मामझं हुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स । पडिक्कमे वाइअस्सवायाए । मणसा माणसिअस्स । सव्वस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सण्णा कसाय दंडेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरो तंनिंदे ॥ ॥ ३५ ॥ सम्मदिठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिंचि । अप्पो सिहोइवंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥ ३६ ॥ तंपिहुसपडिक्कमणं । सप्पारिआवंस उत्तरगुणंच । खिप्पं उवसामेई । वाहिव सुसि क्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया । विज्जाहणंत मंतेहिं । तोतं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं । राग दोस समाजिअं । आलोअंतोअ निंदंतो । खिप्पं हणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणुस्सो । आलोइअनिंदिअ गुरुसगासे । होइअइरेगलहुउ । ओहरिअभरुव्वभारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण । सावउ जइवि बहुरउ होइ । पुक्खाणमंत किरिअं । काही अचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा

नयसंन्नारिआपम्मिक्कमणंकाले । मूलगुण उत्तरगुणे । तंनिंदेतंच गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवलिपणत्तस्स । अब्भुठिउ मिआराहणाए । विरउमिविराहणाए । तिविहेणपम्मिक्कंतो । वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं । उड्ढेअअहेअ तिरिआलोएअ । सव्वाइंताइंवंदे । इहसंतोतत्थसंताइं ॥ ४४ ॥ (नगवन्) जावंति केविसाहू । नरहेरवए महाविदेहेअ । सव्वे सितेसिपणउ । तिविहेणतिदंमविरिआणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचि य पाव पणासणीए । नव सय सहस्स महणीए । चउवीसजिण विणिग्गयकहा । वउलंतुमेदीआहा ॥ ४६ ॥ मममंगलमरिहंता सिद्धासाहूसुअंचधम्मोअ । सम्मद्दिठीदेवा । दिंतुसमाहिंचबो हिंच ॥ ४७ पम्मिसिद्धाणं करणे । किच्चाण मकरणेहिं पम्मि क्कमणं । असद्दहणेअतहा । विवरीअ परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खा मेमिसव्वजीवे । सव्वेजीवाखमंतुमे । मित्तीमेसव्वभूएसु । वैरंमज्झ नकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइअनिंदिअ । गरहिअदुगुंछियंस म्मं । तिविहेणपम्मिक्कंतो । वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ इति श्री श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र समाप्तः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ दशपच्चक्खाणविचार लिख्यते ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तहां प्रथम चउदै नियमसंन्नारै सो विगय देसावगा सीयुक्तइसतरै पच्चक्खाणकरै ॥ ❀ ॥ उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं (मुंठसीं) पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइ मं । साइमं । अणत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारे णं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । विगइउपच्चक्खाइ । अणत्थणा भोगेणं । सहस्सागारेणं । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खि त्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारिठावणियागारेणं । महत्तरा-

गारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ । असणत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसरइ ॥ इति नवकारसीपच्च क्खाणं विगय देशावगासीयुक्तं ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा जो श्रावक नियम संभारै नही । सो विगइका (अर) देसावगासीका आगार नपचखै । निकेवल । नवकारसी आदिक पच्चक्खाण करै ॥ यथा ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उग्गएसूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह । वोसरइ । इति नवकारसी पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं (मूंठसिं) पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे चउव्वि हंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणत्थ० । सहस्सा० । पच्छण्णकालेणं । दिसामोहेणं । साहुवयणेणं । सव्व० । वोसरइ ॥ विगइउ पच्चक्खाइ । इत्यादि पुर्व्वकीपरेकहणा ॥ इति पोरसी पच्चक्खाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीमाफक साढपोरसीका पच्चक्खाण जाणना । इतना बिशेष है । पोरसिं पच्चक्खाइ (इहां) साढपोरसिंपच्चक्खाइ कहणो ॥ इति साढपोरसीपच्चक्खाण आगार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ सूरे उग्गए । पुरमड्ढं अवड्ढं (वा) पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । पच्छ० । दिसा० । साहु० । मह० । सव्व० । विगइउ पच्चक्खाइ । इत्यादि पूर्व्ववत । इति पुरमड्ढपच्चक्खाण ॥ ३ आगार ७ ॥ ❀ ॥ ॥ श्री ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० ।

सह० । पड्ड० । दिसा० । साहु० । सव्व० । एकासणं व्यासणं (वा) पच्चक्खाइ । तुविहं । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । सागारि आगारेणं । आउंटणपसारेणं । गुरुअब्भुठाणेणं । पारि० । मह० । सव्व० । बो० देसावगासियं । इत्यादिपूर्व्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण व्यासण पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउ विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । पड्ड० । दिसा० । साहु० । सव्व० । एकासणं एगठाणं पच्चक्खाइ । तुविहं । तिविहं । चउविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । सागारि आगारेणं । गुरुअ ब्भुठाणेणं । पारि० । मह० । सव्व० । वोस० । देसाव० । इत्यादि पूर्व्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकठाणा पच्चक्खाण । आगार ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउ विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । पड्ड० । दिसामो० । साहु० । सव्व० । आयंबिलं पच्चक्खाइ । अणत्थ० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खित्तवि वेगेणं । पडुच्चमक्खियेणं पारिठा० । मह० । सव्व० । एकासणं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । सागारिआगारेणं । आउंटणपसारेणं । गुरुअब्भु ठाणेणं । पारिठा० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ ६ ॥ ❀ ॥

इति आंबिल पच्चक्खाण । आगार ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ उग्गएसूरे । च उव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण

त्थ० । सह० । पच्च० । दिसा० । साहु० । सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चक्खाइ । अन्न० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिट्ठेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारि० । मह० । सव्व० ॥ एकासणं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अन्न । सह । सागा० । आउट्ट० । गुरु० । पा० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥

इति निवीपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥

इति चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । पाणहार पोरसिं । साढपोरसिं । पुरमड्ढं । अवड्ढंवा । पच्चक्खाइ । अण्ण० । सह० । पच्चण० । दिसा० । साहु० । सव्व० । वोसरइ । देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ ❀ ॥ इति तिविहार उपवास पच्चक्खाण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसिं पुरमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ । उग्ग एसूरे चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । पच्च० । दिसा० । साहु० । सव्व० । एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ तिविहं चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । सागा० । गुरु० । मह० । सव्व० । वोसरइ । विगइउ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चक्खाण ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । असं

णं। पाणं। खाइमं । साइमं। अण०। सह० मह० । सव्व०। वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं । असणं। खाइमं। अण०। सह०। मह०। सव्व०। वोसरइ ॥
इति दिवसचरमदुविहार पच्चक्खाण॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ ❀ ॥ इति पाणहार पच्चक्खाण० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवचरमं पच्चक्खाइ । तिविहं चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं। अण० । सह० । मह० । सव्व। वोसरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ (नवचरम दोआगार का पिण होय) ॥ इति नवचरमपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा गंठसहि । मुंठसहि । अंगुठसहि । प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार । अण०। सह०। मह०। सव्व०। वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके होय ॥ ❀ ॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अहणं भंते। तुम्माणं समीवे । देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्वउ। खित्तउ । कालउ । भावउ। दव्वउणं देसावगासियं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं महुत्तधारणापमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि । उलेणं नउलिज्जामि । अणेणकेविरायंकेणवा । एसो परिणामो नपम्विज्जइ । ताअभिग्गह । अणत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। वोसराइ ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा साधु पच्चखाणकरै । तबदेसावगासी नहिं

पचखै। अरुतिविहार उपवासमें । आबिलमें निवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपच्चखै (सो दिखावेहै) पाणस्स॥ लेवाडेणवा । अलेवाडेणवा अत्थेणवा वहुलेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसरइ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं। (अर्थ) इहां गुरु कहै पच्चक्खाइ शिष्य कहै पच्चक्खामि ॥ पच्चक्खाइका अर्थ सर्व-ठिकाणें अंगीकार वाचक। जाणनो (जैसें) सूरज उदय हुवांवाद। नवका रसी व्रत अंगीकार करुं। यह पच्चक्खाण (महुर्त्त) दोघडी काल उपरांत। जहां तक नवकार गुणकर पारुं नहिं। तहां तक (चउव्वि०) चारुं आहारनो त्यागरूप व्रत अंगीकार करुं ॥ (चार प्रकारको आहार लिखते हैं) । असणं ॥ पाणं ॥ खाइमं ॥ साइमं। (असणं व्याख्या) असण कहतां अन्न । चोषा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहुं प्रमुख सर्वधान । सत्तु गहुंकों आदिलेके सर्व तरैको आटो ॥ सर्व तरैका साग । लाडू प्रमुख सर्वपकवान । सूरणादिक सर्वकंद । दूध दही मांनादिक। सर्वक-वली वस्तु । हींग विरहाली । लूण सैंधवादिक । इत्यादिक सर्व अशणमांहि जाणना ॥ १ (पाणं । व्याख्या) आउण जवोदक तुषोदक तंदुलोदक उष्णोदक शुद्धोदक सर्वतरेकाजल पाण आगारमें जाणना ॥ २ ॥ (खाइमं । व्याख्या) खादिम । सूंखमी नालेर खजूर द्राख सेक्योधांन आंबा केला काकमी अखरोट खारक बिदाम प्रमुख सर्व जातनोमेवो । सर्व जातनाफल ॥ खादमजाणना ॥ ३ ॥ (साइमं। व्याख्या) स्वादिम। तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमै बहेमा तुलछी कसेलो काथो जेष्ठीमधु तज तमालपत्र इलायची लवंग वायवि-डंग अजमो अजमोद कुलिंजण चिणकबोबा कचूर नागरमोथ पांन सुपारी पुहकरमूल जवासामूल बावची बांउलछालि धवछालि खेजरु छाल खयरसार ए सर्वस्वादिम जांणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार लिखतेहैं ॥ नींबछालि मूल पांन सिली गोमुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडउ सुक

डिराख रोहिणीछाल पींपलामूल वच धमासन रीगणी एलियो चिणोठी कयर बोरिनामूल (इत्यादि) अणाहार पिण इच्छासंयुक्त जोगना (यहजो) इच्छा विना अनिष्ट पणें लीजै । जवतो अनाहारहै । जो इच्छासंयुक्त भावता लीजै तो आहार को दूषण लगै । (अबपच्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते हैं) जिस पच्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पच्चक्खाण नियम करै ॥ अन्नत्थणा भोगेणं ॥ १ ॥ (व्याख्या) अनाभोगटाली । अनाभोग कहियै अत्यन्त विस्मृत होणेंसें) किया जो (पच्चक्खाण यादनरहै । भूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेमें आई होय पिण जाण्यां पीछे तत्काल नाख देवै तो पच्चक्खांण भाजै नही । जाण्यां पछै भक्षण करै तो पच्चक्खाण भाजै ॥ १ ॥ पछन्न कालेणं । (व्याख्या) कालकी प्रछन्नता । आकाशै गर्द उडतीहोय । वा आकाशै वदलछाया होय । तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे । सूरज न दीसै । तब भरमसुं पच्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं । (व्याख्या) सहसाकार कहीयै अत्यन्त उतावलकै जोगे । अथवा । अकस्मात् विलोवतां तोलतां घृत प्रमुखनो छांटो मुखमें । पडे तो । व्रतभंग न होय ॥ २ ॥ दिसा मोहेणं (व्या०) दिशकों अजाणतो वैसे । जो दिशा भूल मनुष्य । पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जांणें । इस कारणसें । पच्चक्खाण काल पूर्णहुवा विनां भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं (व्याख्या) साधूके बचनसे उग्घाडा पोरिसी आदिक भरमसंयुक्त सुणके । पच्चक्खाण काल पूरण हुवो जाणि कर भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ५ ॥ सव्व समाहि वत्तिया गारेणं (व्याख्या०) पच्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम हीज अकस्मात् शूलादिक रोग उपजै । तिससें कदास परिणामोंकी थिरता नरहै । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तब उसरोगीकुं रोग मिटावन वावत औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पच्चक्खाण भंग नही होय ॥ ६ ॥ महत्तरागारेणं (व्या०) पच्चक्खाण पालणेंसें । जितनी कर्मोकी निर्जरा होती है । उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होनेका कारण । और कोई

पुरुषसें वन नहीआवै । अैसा जो । चैत्यसंघादि प्रयोजन होनेंसें । पच्चक्खाण काल पूरण हुवा विनां भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ७ ॥ सागारी आगारेणं (व्या०) गृहस्थ देखतां साधु भोजन न करै । अैसी जिनराजकी आज्ञाहै । इसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पच्चक्खाण किया है । भोजन करनेंकुं बैठाहै । तिस वखत कोईक गृहस्थ साधु पास आय बैठे । तब साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर ओर ठिकाणें जायके भोजन करै तो व्रत भंग नहोय ॥ और गृहस्थकों यह आगार ऐसें है) कि जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि कर ओर ठिकाणें भोजन करै तो पच्चक्खाण भंग नहोय ॥ ८ ॥ आउंटण पसारेणं (व्या०) पगप्रमुख जो एकठे करनेंसें । तथा पसारनेंसें । थोडासा आसन चल जाय । तो व्रतभंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अब्भुट्ठाणेणं (व्या०) आपका गुरु आणेंसें । तथा । आपसें । कोई वडा पुरुष आणेंसें । विनय निमित्तै । एकासणादि व्रतमें । भोजन करतो पिण आसन छोड उठ खडो होय । तोपिण व्रत भंग नहोय ॥ १० ॥ पारिट्ठावणियागारेणं (व्या०) (सर्व पच्चक्खाणां मे यह आगार साधुका है) जो आहार नाखणेंसें बहुत जीव विराधना होती जांण कर (गुरु कहै) वह सरस आहार है परठोमति । ऐसी आज्ञा देवे (तो) एकासणादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो पिण व्रतभंग नहोय ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं (व्या०) भोजन करनेंका थाल प्रमुख भाजन । तिसकै मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंछगेरा । परंतु किंचित वेमालुमसा रह गया होय । उस भाजनमें आयंबिलादि व्रतधारी भोजन कर लेवे । तो व्रत भंग नहोय ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेणं (व्याख्या) आयंबिलादि पच्चक्खाणमें ॥ नही खाणें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । (तिसका फरस) खाणें जोग्य द्रव्यसें किंचित् होगया होय । वहखाणें में आजावै । तो व्रत भंग नहोय । ॥ १३ ॥ गिहत्थ संसिट्ठेणं (व्या) भोजन पुरुषै जिस सेती । अैसा कुडछा आदि भाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडा होय । प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालुम न होय । जो उस वासणसें भोजन पुरसै

तो व्रत भंग न हो ॥ १४ ॥ पडुच्चमुक्खिएणं (व्या०) सर्वथा लूखी रोटी खाखरादप्रमुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं वेमालुम चोपडनें में आया होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो (नीवी) पच्चक्खाण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आजावेतो व्रतभंग न होय ॥ १५ ॥

॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽर्थ संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो । आगाराऽच्चहुंति पोरसिए । सत्तेवय पुरमड्ढे । एगास णंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग ठाणस्सओ । अठ वय आयंबिलंमि आगारा । पंचे वयऽन्नत्थ । ऽप्पाणे चरिमचत्तारी ॥ २ ॥ पंचचऊरो अभिग्गहे । निवीए अठ नवय आगारा । अप्पावरणे पंचऽ । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥ ❀ ॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥ मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥ (यहच्यार पम्लिेहण मुहपत्तीखोलतीवखत कहीं जै) काम राग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं (यह सातेबोल प्रथम कही जै) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सुधर्म्म ३ ॥ आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधर्म्म ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥ आदरुं । (यहनवपम्लिेहणमावै हाथे करीजै) । ज्ञानविराधना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंम १ ॥ वचनदंम २ ॥ कायदंम ३ ॥ परिहरुं ॥ (यह नव पम्लिेहण जीमणै हाथे करीजै । यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पम्लिेहण अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ माथै निलाडै ॥ रुद्धिगारव १ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिछादंशणशल्य ३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मांन २ ॥ (जीमणैकांधै काखे परि०) ॥ माया १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ (डावे कांधै वगले परि०) । हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥) डावे हाथेपरिहरुं) ॥ भय १ ॥ शोक २ ॥ दुगंछा ३ ॥ (जीमणे हाथे परिहरुं) ॥ पृथ्वीकाय १ ॥ अप्पकाय २ ॥ तेऊकाय ३ ॥ (डावे पगे परि हरुं) । वाऊकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ त्रसकाय ३ ॥ (जी मणेंपगे परिहरुं) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थापनाचार्यनी पडिलेहणाकरतां ॥ १३ ॥ बोल चिंतवी जै सो लिखिते हैं ॥ सुद्धस्वरूपधारूं १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन ३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५ ॥ प्ररूपणासुद्धि ६ ॥ दर्शनसुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालूं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनु मोडुं १० ॥ मनोगुप्त ११ ॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥ एवं १३ ॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें । जोमें जीव विराध्या होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप्पकाय । सातला ख ते ऊकाय । सातलाख बाऊ काय । दशलाख प्रत्येक वनस्प ती काय । चवदैलाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख बेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिंद्री । चारलाख देव ता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यंच । चवदैला ख मनुष्य । एवं चारगती । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहएयो होय । हणायो होय । हणतां प्रतें नलोजा एयो होय । तेसहू । मन । वचन । कायाइंकरी । मिछामिडुक्कडं ॥ प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादांन ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोन्न ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरीवा द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ । मिथात्वशल्य १८ । एअट्ठारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा या होय । सेवतांप्रते नलाजाएयां होय । ते सहू मन वचन कायाइं करी । मिछामि डुक्कडं ॥ ❀ ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधर्म्म नी आसातनाकरी होय । पनरेकर्मादाननी आसेवनाकरी होय राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । नोक्तकथा । करी होय । और जो कोई परनिंदा यें करी । पाप कियो होय । करायो होय करतांप्रते अणुमोद्युं होय । ते सर्व । मन । वचन । कायायें करी । दिवसअतीचार आलोयणेंकरी । पम्हिक्कमणा माहें आलोउं । तस्स मिछामि डुक्कडं । इति लघुअतीचार ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाखी चौमासी संवछरी वृद्धअतीचार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि । आयरणंआयारो । इह एसो पंचहान्नणिउ ॥ १ ॥ अर्थः ॥ ज्ञाना चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥ वीर्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर । जांणतां अजांणतां । हुओ होय तेसहू मन बचन कायाइंकरी मिछामिडुक्कडं ॥ ❀ ॥ (तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे तहयनिन्नवणे । वंजण अत्थतदुभए । अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिउंगुणिउं नही । अकालेपढिउं । विनयहीन । बहुमानहीन । उपधानहीन । श्रीउपाध्यायकनें । नहीपढिउं । अथवा अनेराकनें पढिउं । अनेरो गुरु कह्यो । ब्यंजन अर्थ तदुभय कूडोपढ्यो । देववांदणें । पडिक्कमणें । सिज्झाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअक्षर कानेंमात्रें । अधिको उणो । आगलपाछलनएयो । सूत्र अर्थ कूडानएया । भणीनें वीसारयो । तपोधनतणेंधर्मे । काजो अणऊधरयै । दांमीअण पम्लिेही । वसती अणसोधी । असिझाई अणोझाकालवेला मांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतनएयो गुएयो । योगव ह्यांपखै नएयो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाटी पोथी ठवणी कवली सांपडा सांपडी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें । आसातना हुई । पगलागो । थूकलागो । उसीसैमूंक्यो कनेंउतां आहार नीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य भक्षणउपेक्षणकीधो । प्रज्ञापराधे विणास्यो । विणसतोउवेख्यो । उतीसक्तें सार संभाल नकीधी । ज्ञांन वंत प्रतें मछरवह्यो । अवज्ञा आसातना कीधी । कोईप्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान । श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच ज्ञानतणी । असद्दहणाकीधी । कोई तोतलो वोवमोहस्यो वितक्यों । आपणा जाणपणातणो गर्वचिंतव्यो ॥ ❀ ॥ अष्टविधज्ञा नाचारविषय जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मवादर जाणतां अजांणतां हुवोहोय । तेसहू मन वचन कायाइंकरी मिछामिउक्कडं ॥ ❀ ॥ दर्शनाचारनाआठअतीचार ॥ ❀ ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठीअ । उववू हथिरीकरणे । वच्छल्लपन्नावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषे निस्संकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधरयो नही । सगलाई मत भलाछे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषे । निःसंदेहबुद्धिधरीनही । चारित्रिया साधु साधवीतणा मलिमली नगात्रदेखी । दुगंछानउपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रन्नावना देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहि गुणवंततणी । अनुप बृंहणा । अस्थिरीकरणं । अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी । संघमांहि थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिछतें प्रन्नावनानकीधी । देवद्रव्यविणासिउ । विणसतुं उवेषीउ । छतीशक्तें सारसं भाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनभवनतणी चौरासी आसातनाकीधी । गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी । अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंगामपाखे देवपूज्या । वासकूंपी कलसतणो उबकोलागो । मुखतणीवाफलागो । उवणारिय हाथ थकी पडिउ । पडिलेहवो वीसारयो । नवकरवालीनें पगलागो ॥ ❀ ॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचार० ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुत्तो । पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ नायव्वो १ ॥ इरियासुमती १ ॥ भाषासुमती २ ॥ एषणासुमती ३ ॥ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे लजल्लसंघाणपारिठावणियासुमती ५ ॥ मनोगुप्ती १ ॥ वचनगुप्ती २ ॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूडीपरें पाली नही ॥ ❀ ॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउजिको अतीचार० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विसेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारहव्रत श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संका कंख विगंछा । पसंत तहसंथवो कुलिंगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणी । बल अति सय ज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारित्रि याना चारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । (आकांक्षा) ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विणायग । हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ । देव देहराना प्रभावदेखी । रोगि आतंकै । इहलोक । परलोकार्थे पू ज्या मान्या । बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी । भरमा । भगत । लिंगिया । योगी । दरवेश । अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्र चमत्कारदेखी । परमार्थ जाण्यांविन भूल्या । अनुमोद्या । कुशास्त्रसीख्या । सांभल्या । सराध । संवछरी । होली । बलेव । माहीपूनिम । अजापडिवा । भ्रेतबीज । गोरबीज । विनायगचोथ । नागपांचम । झूलणाछठ । शीलसातम । डो आठम । नवली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वछ बारस । धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराइण । नवोदक । ज्यागभोगउतारणा कीधा । पींपलपाणीघाल्या । घ लाव्या । घरबाहिर । कूई तलाव नदी समुद्र कुंभपुन्यहेतु स्नानकीधा । दांनदीधा । ग्रहण शनीश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा कराव्या विचिकिछा । धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिणअरि हंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग दातार । देवाधिदेववुद्धै सुद्धभावै नपूज्या नमान्या । महातमाना भात पाणीतणी दुगंछाकीधी । कुचारित्रिया देखी । चारित्रियाऊप

रि अन्नावहुउ । मिथ्यात्वीतणी प्रन्नावना देखी । प्रसंसाकीधी । प्रीतिमांमी । दाक्षिणलगें तेहनोधर्म मान्युं ॥ ❀ ॥ श्रीसमकित विषय । जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि न्नामिदुक्कडं ॥ १ ॥ ❀ ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ ❀ ॥ वह बंध गविछेए । अइन्नारेन्नत्तपाणवुछेए० । द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघाउ प्रहारघाल्यो । गाढे बंध नबांध्या । घणें न्नारपीडया । निर्लांछन कर्मकीधा । चारपांणी तणी वेला सारसंन्नालनकीधी । लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा व्युं । तेणें नूखे आपणजीम्या । अणगलपाणी वावरयो । रूमै गल्यो नही । गलाव्योनही । अणगलपांणीझील्या । लूगमा धोया । ईंधण अणसोध्योजाल्युं । साप कानखजूरा । सुलह ला । माकम । जूआं । गोगिंमा । साहतां मूआंदूषव्यां । रूडै थानकनमूंक्या । कीडी । मकोमी । नदेही । घीवेली । कातरा चूमेलि । पतंगिया । रुरुका । अलसिया । ईली । कूंति । मांस । मसा । बगतरा । माखीप्रमुख । जेकेईजीव । विणठा चांपिया । दूहव्या । माला हलावतां । पंखी काग चिमकला ना ईमा फूटा । अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव । विणठा । चांप्या । दूहव्या । हालतां । चालतां । अनेरुं कांइकामकाज करतां विहंसपणुं कीधूं । जीवरक्षारूडै नकीधी । संखारोसूक व्यो । सुल्याधान तावडैदीधा । दलाव्या । नरडाव्या । खाट लातावमैझाटक्या । मूंक्या । मूंकाव्या । जीवाकुलन्नूमिनीपावी । बासीगार राखी । रखावी । दलणें खांडणें नीपणै । रूडी जय णा नकीधी । आठमचउदसना नियमन्नागा । धूणीकरावी ॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषईञ । अनेरो० ॥ १ ॥ ❀ ॥ बीजो थूल मृषावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ❀ ॥ सहस्सारहस्स दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें । अयुक्तोआलदीधो । किणाएकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखी । तुह्मे तो राजविरुद्धचिंतवोगो । इत्यादिक कह्युं । स्वदारमंत्र भेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो । किणहीनें कूडी बुद्धिदीधी । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखञ री । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । भूमि । संबंधि या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको झूठ वोल्युं । हाथ पग भणी गालदीधी । करभकामोड्या । अधर्म्मवचन बोल्या ॥ ❀ ॥ बीजे मृषावादव्रत० ॥ २ ॥ ❀ ॥ तीजे अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्प ञगे । घरबाहिर खेत्र खलेपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधी दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोलजीधी । चोरधामीत प्रतें संबलदीधुं । संकेतकह्युं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा भेलसंभेल कीधा खोटे तोल मान माप वुहत्था । माणचोरीकीधी । साटे लांच लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांठ कीधी । किणहीनें लेखेपलेखे भूलव्युं । पडीवस्तु भेलवीलीधी तीजे अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ चौथे स्वदारसंतोषमैथुनव्रते पांच अतीचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्वर परिगृहीतागमन । विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विषै । दृष्टिविपर्यासकीधी । सरागवचन वोल्या । आठम चउदस

अनेराई पर्व तिथितणा नियमन्नागा। घरघरणा कीधा । करा व्या। अनुमोदीया। कुविकल्प चिंतव्या । अनंगक्रीमा कीधी । परायाविवाहजोड्या । कामन्नोग तणे विषे तीव्राभिलाषकीधो। कुस्वप्नलाधा । नटविटपुरुषसुं हासुंकीधुं ॥ ❀ ॥ चौथेमै थुनव्रतवि० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ पांचमेंपरिग्रह परिमांणव्रतेपांचअति चार । धण धन्नखित्तवत्थु । धनधान्य खेत्र वस्तु रुप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रहतणा । नियम उपरांत वृद्धिदेखी । मूर्छालगे संक्षेपनकीधो । माता पिता पुत्र कलत्रा दिकतणें लेखैकीधो । परिग्रहपरिमाणलेई पढ्यो नही । पढी वीसारिउ । नियम वीसारिया ॥ पांचमै परिग्रहपरिमाण ब्र० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ छठेदिगविरमणव्रते पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ गमण स्सय परिमाणे । ऊर्द्धदिसि । अधोदिसि। तिर्यग्दिसि। जाय वाआयवातणो नियम जे कोई अजाणेन्नागो । एकगमा संको डी। बीजी गमावधारी । विस्मृतिलगे । अधिकन्नूमिगया। पा ठवणी आधी मोकली ॥ ❀ ॥ छठैदिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ सातमें न्नोगो पन्नोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना न्नोजनआश्री पांचअ तीचार॥ अनें कर्म हुंती १५ ॥ एवं २० अतीचार ॥ ❀ ॥ सचि त्ते पम्हिबुद्धे । अपोलडुपोलयंचआहारे ० ॥ सचित्ततणें नियम लीधै अधिक सचित्तलीधुं । तथा सचित्तमिलीवस्तु । अपक्का हार । डुपक्काहार । तुछोषधीतणोन्नक्षणकीधुं । होलाउंबी पहुं क काकडीनमथाकीधा । सुल्याधानप्रमुख नक्षण कीधा ॥ स चित्तदव्वविगइ। पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु । वाहणसयणविले वण । बंनदिसिएहाणन्नत्तेसु ॥ १ ॥ एचवदै नियम । दिनप्रतें संन्नारयासंक्षेप्यानही। लेईनियम न्नांग्या । बावीस अन्नक्ष। ब

त्तीस अनंतकायमांहि। आदो मूला गाजर पींमालू सूरण सेल रा। काचीआंबली। गोल्हांखाधा। चोमासा प्रमुखमांहें। वा सो कठोलनीरोटी खाधी। त्रिहुंदिवसनो दहीलीधुं। मधु म हुडा माखण माटी। वेंगण पीलू पीचू पपोटा। पींपी विष। हीम। करहा। घोलवमा। अणजाएयाफल ठीवरुं। अथा णूं। आमण बोर काचुं मीठुं। तिल। खसखस। काचाकोठ वडाखाधा। रात्रीन्नोजन कीधुं। लगवगतीवेलाइं व्यालूकीधुं। दिवसनग्यांविणसीराव्या। तथा पनरैकर्म्मा दान। इंगालीक म्मे। वणकम्मे सामीकम्मे। न्नामीकम्मे। फोमीकम्मे। दंत वाणिज्ये। रसवाणिज्ये। केशवाणिज्ये। विषवाणिज्ये। जंत पीलणकम्मे। निर्लंछणकम्मे। दवग्गिदावणया। सरदहतलावसो सणया। असईपोसणया। पांचवाणिज्य। पांचकर्म्म। पांचसा मान्य। महारंन्न लीहाला कराव्या। ईंटवाहनीवाहपचाव्या। धाणी चिणा पकवान करीवेच्या। वासीमाखणतपाव्या। अं गीठाकीधा। कराव्या। तिलादिकसंचीया। फागुणमासनपरां तराख्या। कूकमा। सूडाप्रमुखपोस्या। अनेरुंजेकोईबहुसाव द्य कठोर कर्म्मादिक समाचरयो॥ ❀॥ सातमान्नोगोपन्नोगव्रत विष०॥ ❀॥ ७॥ ❀॥ आठमा अनर्थ दंम विरमणव्रतना पांच अतीचार॥ कंदप्पे कुक्कइए०। कंदर्प्पलगैविटनीपरै। हास्यकुतू हल मुखादि अंगकुचेष्टाकीधी। मूरखपणालगै। किणहीनैअ संबद्धवाक्य बोल्या। खांडा। कटारी। कुसि। कुहामा। रथ। ऊखल। मूसल। अगन। घरटीआदिक। सजकरी मेल्या। मांग्या आप्या। कनकवस्तुढोरलेवराव्या। अनेरुंकांइ पापोपदेसदीधुं। अंघोल नाहण दांतण पगधोअणपाणी।

तेलअधिकआएया । हींडोलेहीच्या । राजकथा । देसकथा । भुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त्त रोद्र ध्यान ध्याया । कर्कसबचन बोल्या । करडकामोडया । संन्नेडालाया नेंसा सांढकूकड मींढा श्वानादिफूफता कलहकरताजोया खा धिलगै अदेखाई चिंतवी । माटी । मीठुं । कण कपासिआ । काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयठा । आलेवनस्यतीखुंदी । ठाठ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक तणा भाजनभघाडा मूंक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ माखी भंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागद्वेष लगै । एकनेंरिद्धि परिवारबांढी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थ दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ ❀ ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती चार ॥ ❀ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । सामायकलीधै । मनआहट दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यवोल्युं । कायअणपडिलेह्युंहलाव्युं । ठतीवेलाइं सामायकभलीधुं । सामायकलेई भघाडेमुखबोल्या । ऊंघआवीकीधी । बीजदीवातणी भजोहीलागी । कण कपासी या माटी मीठुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यंची आभडी । मुहपत्तीभसंघट्टी । सामायकअणपूरभंपारिभं । पारभंवीसारिभं ॥ नवमैसामायकव्रतविषय० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ दशमैदेशावकासिक व्रतै पांचअतीचार ॥ ❀ ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पभगे । पेसवणप्पभगे । सद्दाणुवाए । रूवाणुवाए । बहियापुग्गलपक्खेवे । नियमितभूमिकामांहि । वाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हाथी बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनाखी

आपणपुं उतुं जणाव्युं ॥ ❀ ॥ दशमें देशावकासिकव्रत० ॥ १० ॥ इग्यारमेपोषधोपवासव्रतें पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संथारुच्चार विही । पमायतहचेव ञोअणाञोए० ॥ पोसहलीधै । संथारात णीञूमी बाहिरलाथंमिला । दिवसै सोध्यापडिलेह्या नही । मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं । अणपुंजी ञूमिकाइं परठ विउं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन कह्युं । परठ्यांपूठै बारत्रिणि बोसिरामि २ नकह्युं । पोसहशा लामांहिं । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेऊकाय । वाऊकाय । वनस्पतीकाय । त्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप ञपद्रवहुआ संथारा पोरसितणो । विधि ञणउ वीसारिउ । पोरसिमांहिउं ध्या । अविधिसंथारुंपाथरयुं । कालवेलायें पडिक्कमणुं नकीधुं पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवाबीसारि या । पोसहअसूरोलियो । सवारोपारियो । पर्व्वतिथि आवी पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्र० ॥ ११ ॥ ❀ ॥ वारमै अतिथि संविभागव्रतै पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठै । ऊपरिथकै । महातमाप्रतेंअसुझतूं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धै सूझतुं फेडी असूझतुंकीधुं । देवातणीबुद्धै असूझतुं फेडी । सूझतुंकीधुं । आ पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा तमातेड्या । मन्नरलगैदांनदीधुं । गुणवंत आव्यै ञगति नसाचवी । उतीसक्तिसाधर्मिक वात्सल्यनकीधुं । अनेराईधर्म्मक्षेत्रसी दाता । उतीशक्तैऊधस्यानही ॥ ❀ ॥ बारमेंअतिथिसंविभागव्र० ॥ १२ ॥ ❀ ॥ संलेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए०

इहलोकासंसप्पउगे । परलोगासंसप्पउगे । जीविआसंसप्पउगे । मरणासंसप्पउगे । कामभोगासंसप्पउगे । इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पदवांछ्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी । सुखआये जीववातणी वांछाकीधी । दुखआये मर वातणी वांछा कीधी । काम भोग तणीइछा कीधी ॥ ❀ ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥ ❀ ॥ तपाचारबारेभेदै ॥ छअभ्यंतर । छबाहिर । अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पर्व्वति थि छतीशक्तिकीधुं नही । (उणोदरी) कवल पांचसातऊणार ह्यानही । (द्रव्यसंक्षेप) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही । आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । (संलीणता) अंगोपांगसंकोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूंठसी । साढपोरसी । पुरमुड्ढ । एकासणो । बैआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख पच्चक्खाण पारवावीसारखा । बैसतां नवकारभणयुनही । ऊठतां दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । काचोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ ❀ ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ ❀ ॥ अभ्यंतरतप ॥ ❀ ॥ पायछित्तंविणउ० । गुरुकनें मनसुद्धै आलोयण लीधीनही । गुरुदत्तप्रायछित्ततप लेखासुद्ध पुहचाड्युं नही । देवगुरु संघसाहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनही । वाचना पृछना परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झायकीधोनही । धर्म्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कर्म्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनुं काउसग्गकनकीधो ॥ ❀ ॥ अभ्यंतरतपविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ ❀ ॥ अणगुहियबलविरिउ । परक्कमइजोजहुंतउगाणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यव्वोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा सामायक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्मकृत्य तणे विषै। मन वचन कायातणो जतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा समण नदीधा वैतांपडिक्कमणांकीधुं ॥ ❀ ॥ वीर्याचारविष० ॥ ॥ ❀ ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मेसु । बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पमिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअभक्ष । बत्तीसअनंतकाय । बहुबीजभक्षण । महाआरंभ महापरिग्रहादि क कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रा दिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्दहियानही । आपणी कुम तिलगै उतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २ अद त्तादांन ३ मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषाबाद १७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअट्ठारहपापस्थानकमांहि । जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्म्मै । श्री सम्यक्त मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाण तां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिछामिउक्कडं । इति श्री श्रावकूंकैवारहव्रतका अतीचार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीलि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधन्नंतरि । जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ क्कारि केसरि । तिहुअण जण

अविलंघियाण नुवणत्तय सामिअ । कुणसु सहाइ जिणेसपास थंनणयपुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंतिजत्ति वर पुत्त कलत्तहि ॥ धण सुवण्ण हिरण्ण पुण्ण जण नुंजहि रज्जहि । पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प रुक्ख सुक्खहि कुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्ण नट्ठठ सुकुठिण । चक्खुक्खीण खएणखुण्ण नरसल्लिअ सूलिण । तुहजिणसरण रसायणेण लहुहुंति पुणण्णव । जयधणंतरिपास महवि तुहुं रोगहरोन्नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिउ अपयत्तिण । नुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुहनामिण । तुह नामिण अपवित्तउवि जणहोइ पवित्तउ । तंतिहुअण क ल्लाणकोस तुहुंपासनिरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ । चर थिर गरल गहुग्गखग्ग रिउवग्ग विगंजइ । डुत्थि यसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । डुरिअइं हरउ सुपा सदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंनेइनीम दप्पुद्धर सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलथल चारि रउद्दखुद्द पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआ णजयपास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थ अणत्थहित्थ नत्ति भ्रनिब्भर । रोमंचंचिअ चारुकाय किण्णरनर सुरवर । जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु । सोन्नवणत्तय सामिपास महमद्दउरिउवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअ मणकमलन्न सल नयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदनवणत्तय दि णयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंनणय ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवणुअवणु सु णुबणिउउप्पणहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंजायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्धउ । सोजोइअम णकमलनसल सुहपासपवद्धउ ॥ ९ ॥ नयबिप्फुरणऊणिर दसण थरहरिअ सरीरय । तरलिअनयण विसुणसुण गग्गर गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर । महविज्जवि सिझसइपास नयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवि विअसंतनित्त पत्तंतपवत्तिय । वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु लिय । मणहिमणसउणपुणअप्पाणंसुरनर । इयतिहुअण आ णंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंट टंका रवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लनत्तिसुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ लिअ पवत्तयंतिनवणेहिमहूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज यपास सुहुभ्नव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियर विहुरिय तमपयहर । दंसिअसयल पयत्थसत्थ वित्थारिअपहानर । क लिकलुसिअ जणघूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु हरपासनाह नुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुहसमरणजल वरि ससित्त माणवमइमेइणि । अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेइ णि । जायइफलनर नरियहरिय दुहदाहअणोवम । इयमइ मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ १४ ॥ कयअविकल क ल्लाणवल्लि उल्लूरिअउहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइग मवारणुं । जयजंतुहजणएणतुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मध म्मसोजयउपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवा सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुरपसु वय । तुहउत्तछसुनछसुट्ठु अविसंवुलचिछहि । इयतिहुअण व णसींहपास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरय ण कररंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निल्लुप्पल

सामल । कमठासुरउवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ । जयपच्च क्खजिणेसपास थंभणयपुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरलुपमा णुनेय वायाविविसंठल । नियतणुरविअविणयसहाव आलस विहिलंघल । तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तन । इयमइमा अवहीरपासपालहिविलवंतन ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिनणेयकलुण किंकिंवनजंपिन । किंवनचिठिनकिठदेव दीणयमविलंबिन । कासनकियनिप्फलललल अम्हहिंदुहत्तइं । तहविनपत्तनताणकिं पि पइंपहुपरिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिहुतुहुं मायवप्प तुहुं मि त्तपियंकरु । तुहुंगइतुहुंमइतुंहिजताणतुहुंगुरुखेमंकरु । हनंदु म्नरन्नारिअवरानरानलनिम्नग्गन । लीणनतुहकमकमल स रण जिणपालहिचंगन ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा वियसुहसय । किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय । किविगंजिअरिनवग्गकेवि जसधवलिअभूअल । मइंअवहीर हिकेणपाससरणागयवछल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्पण्ण पनअण । तुहुंजिणपासपरोवयार करुणिक्कपरायण । सत्तुमित्त समचित्तवित्तिनयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गनवि म इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हनंबहुविहदुहतत्तगत्ततुहुंदुहनासणप रु । हनंसुयणहकरुणिक्कठाणतुहुंनिरुकरुणाकरु । हनंजिणपा सअसामिसालतुहंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंझखंत इयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविन्नागनाहनहुजोअणतु हसम । नवणुवयारसहावनाव करुणारससत्तम । समविसमइ किंघणनिएइ नुविदाहसमंतन । इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथु णंतन ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुणविअणविकिविजुग्गय । जंजोइय नवयारुकरइ नवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइंनाहिणाचित्तन । तोजुग्गनअहमेवपास पालाहिमइं चंगन ॥ ॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेसकिविमणहिदीणह । जंपा सविनवयारुकरइ तुहुंनाह समग्गह । सुचिअकिलकल्लाणजेण जिणतुह्मपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ ॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणन किंपुण । हनंदुक्खिन निरु सत्तचत्त दुक्कनन्नस्सुयमण । तंमणन निमि सेणएण एन विजाइ लभ्भइ । सच्चंजंभुक्खियवसेण किं नंबरुप च्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पपयासिन । किजनजंनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपिन । अणुणाजिणजगतुह समोविदरिखणदयासन । जइअवगिणसितुंहिजअहहकिहहो सुहयासन ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणाकिणविपेअ पाइणवेलविन तनजाणुंजिणपासतुह्म हनंअंगीकरिअन । इयमहयन्निअजंन होइसातुहनहावण । रक्खंतहनियकित्तिणेयजुजाइअवहीरण ॥ ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइअणवणमहूसन । जंअणलिय गुणगहण तुम्हमुणिजणआणिसिद्धन । इयमइंपसियसु पासना हथंनणयपुरट्ठिअ । इयमुणिवर सिरिअनयदेव विणवइआणिं दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंनक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परकीसुत्र लि० ॥ ❀ ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेयतित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे यरिसी । महरिसिनाणंचवंदामि ॥ १ जेयइमंगुणरयणसायर । मविराहिऊणतिन्नसंसारा । तेमंगलंकरित्ता । अहमविआराह णानिमुहो ॥ २ ॥ ममंगलमरिहंता । सिद्धासाहूसुयंचधम्मो यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अजवयामद्दवंचेव ॥ ३ ॥ लोगंमिसंज

याजंकरंति । परमरिसिदेसियमुयारं । अहमविन्नवहिन्नतं । म हव्वयन्नच्चारणंकान्नं ॥ ४ ॥ सेकिंतंमहव्वयन्नच्चारणा । महव्वयन्नच्चा रणापंचविहापन्नत्ता ॥ राईन्नोयणवेरमणन्नछा (तंजहा) सव्वा न्नपाणाइवायान्नवेरमणं । सव्वान्नमुसावायान्नवेरमणं । सव्वान्नअ दन्नादाणान्नवेरमणं । सव्वान्नमेहुणान्नवेरमणं । सव्वान्नपरिग्गहा न्नवेरमणं । सव्वान्नराईन्नोयणान्नवेरमणं । तत्थइखलु पढमेन्नंतेम हव्वए पाणाइवायान्नवेरमणं ॥ सव्वंन्नंतेपाणाइवायंपच्चरकामि । सेसुहुमंवा बायरंवा तसंवा थावरंवा नेवसयं पाणेअइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणेअइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणु जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का एणं नकरोमि नकारवेमी करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्सन्नंतेपडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥ सेपाणाइवायाएचन्नविहेपन्नत्ते ॥ (तंजहा) दव्वन्न खित्तन्न कालन्न न्नावन्न दव्वन्नणंपाणाइवाए न्नसुजीवनिकाएसु खित्तन्नणं पाणा इवाए सयलल्लोए कालन्नणं पाणाइवाए दियावा रान्नवा न्नावन्नणं पाणाइवाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमएइमस्सधम्मस्स केव लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरणसोवणियस्स न्नवसमप्प न्नवस्स नवबं न्नचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पारगामियस्स निव्वाणगमण पज्जवसाण फलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अवोहि ए अणन्निगमेणं अन्निगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिव

ह्यए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डुयाए तिगारव गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नइारीयाए सायासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवान्नवे अन्नेसुवान्नवग्गहणेसु पाणाइवाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामी गरिहामी तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्कामि सव्वंपाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्खूवा निक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्ते वा जागरमाणेवा एसखलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणचिन्ने परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मरकयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्ज त्ताणं विहरामि पढमेभंते महव्वए उवठ्ठिउमि सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चेभंतेमहव्वए मुसावायाउवेरमणं । सव्वंभंतेमुसावायंपच्चक्खामि । सेकोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिंमुसं वायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु

जाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा णंवोसरामि । सेमुसावाएचउव्विहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं मुसावाएसव्वदव्वेसु खित्तउणंमूसावाए लोए वा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा रात्तवा भावउणंमुसावा ए रागेणवादोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाण स्स अहिरणसुवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिस रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्विया रस्स निव्वित्ती लक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण पज्जवशाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणाभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किट्ठयाए तिगारवगरुयाए चउ क्कसाओवगएणं पचेंदियवसट्टेणं पंचिपुन्नंनारियाए सायासोक्ख मणु पालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविउवा भासिज्जंतोवा परेहिंसुमणुन्नाउ तंनिं दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चक्खामि सव्वंमुसावायं जा वज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया विज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतस क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्खूवानिक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मेदियावा रात्तवा एगउवा परसागउवा सुत्तेवा जागरमांणे

वा एसखलुमुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणु गामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अति प्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारु त्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेभंतेमहव्वए उव ठ्ठिमिसव्वाउमुसावायाउवेरमणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेभंतेमहव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वंभंते अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगा मेवा नगरेवा रण्णेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अ चित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिण्हियज्जा नेवन्नेहिंअदिन्नंगिण्हावि ज्जा अदिन्नंगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिवि हं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंन समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहा मि अप्पाणंवोसरामि सेअदिन्नादाणेचउव्विहे पन्नत्ते (तंजहा) दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वउणं अदिन्नादाणे गहण धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रण्णेवा कालउणं अदिन्नादाणे दियावा राउवा भावउणं अदिन्नादाणे रा गेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अ हिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरण्ण सुवण्णियस्स उवसमप्पधनस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्प यमाणस्स निरकावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स नि व्वित्ति लक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि

संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफल स्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणन्निगमेणं अ न्निगमेणवा पमाएणं रागदोसपरिवड्ढयाए वाउलयाए मोहयाए मं दयाए किड्डुयाए तिगारवगरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदिय वसट्टेणं पडिपुन्न नारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवान्नवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहाविय॑वा घिप्पं तंवा परेहिंसमणुन्नाउतंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयंपच्च क्खामि सव्वंनंतेअदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवस यंअदिन्नंगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिएहाविज्जा अदिएहंगि एहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस क्खियं साहुसाक्खियं देवसाक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्खू वा निक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा मिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी डणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे म हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुक्ख क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणा ए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ तच्चेभंतेमहव्वएअब्भुट्ठिउ मिसव्वाउ अदिन्नादाणाउवेरमणं॥ ३ ॥ अहावरेचउत्थेभंतेमहव्वए मेहुणाउवेरमणं सव्वंभंतेमेहुणं पच्चक्खामि । सेदिव्वंवा माणुसं वा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं

सेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपी अन्नंन समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥ सेमेहुणेचउविहेपन्नत्ते (तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणंमेहुणे रूवेसुवा रूवसहग एसुवा खित्तउणंमेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालउणं मेहुणे दियावा रावा भावउणं मेहुणे रागेणवा दोसे णवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर न सुवणियस्स उवसमप्प भवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पय माणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवि त्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण पज्जवसाण फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोषपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचें दियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा से विज्जंतंवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिवि हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अ णागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अन्नेन समणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस

क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ नि क्खूवा निक्खूणीवा संजयविरयपम्हिय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राइवा एगोवा परिसागइवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागु णे महाणुभावे महापुरिसाणुचिणे परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदु क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारु त्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ चउत्थेभंते महव्वए उवठ्ठिउमिसव्वाउ मेहुणाउ वेरमणं ॥ ४ ॥ अहावरेपंचमेभंतेमहव्व ए परिग्गहाउ वेरमणं सव्वंभंतेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा ब हुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परि ग्गहं गिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि । सेपरिग्गहेचउव्विहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खि त्तउ कालउ भावउ दव्वउणंपरिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खि त्तउणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रण्णेसुवा कालउणं परिग्गहे दियावा राइवा भावउणंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्न सुवन्नियस्स उवसमप्पहाणस्स नवबंभ० अप्पय० निक्खावित्तिय

स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस स्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिय स्स निव्वांणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवण याए अबोहिए अणन्निगमेणं अन्निगमेणवा पमाएणं रागदोसप डिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डुयाए तिगारव गरु आए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्न नारियाए सा यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवान्नवेअन्नेसुवा नवग्गहणेसु परि ग्गहो गहिउवा गहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदा मि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिंदा मि पडुप न्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जी वाए अणिस्सिउहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंप रिग्गहं परिगिएहाविज्जा परिग्गहं परिगिएहंतेवि अन्नेनसमणु जाणामि (तंजहा) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुस क्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइनिक्खूवा निक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवे रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स ब्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदु क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीड णयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महा णुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंउक्खक्ख याए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि ॥ पंचमेभंतेमहव्वए उवठ्ठिउमि

सव्वाउ परिग्गहाउवेरमणं ॥ ५ ॥ अहावरे छठ्ठेभंतेवए राईभोयणा उ वेरमणं सव्वंभंतेराईभोयणं पच्चक्खामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा नेवसयं राईं भुंजिजा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविजा राइंभुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि । सेराईभोयणेचउव्विहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे समयखित्ते कालउणं राईभोयणे दियावा रायवा भावउणं राईभोयणे तिक्खेवा कडुएवा कसाइलेवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसुवण्णियस्स उवसमप्पन्नवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपभिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डुयाए तिगारव गरुआए चउक्कसायवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुंजंतंवा परेहिंस मणुन्नाउ तंभिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि स
वं राईन्नोयणं जावज्जीवाए अणिस्सन्नेहिं नेवसयं राइंन्नुंजि
ज्जा नेवन्नेहिंराइंन्नुंजाविज्जा राइंन्नुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा
मि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं दे
वसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ निक्खूवा निरकूणीवा संज
य विरय पमिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा रान्नवा एगोवा प
रसागन्नवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु राईन्नोयणस्सवेरमणे
हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणा
णं सव्वेसिंन्नूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि
यावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुन्नावे महापु
रिसाणुचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मरक
याए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु नवसंप
ज्जत्ताणं विरामि ॥ गच्छन्नंतेवए नवठिन्नमि सव्वान्न राईन्नोयणान्नवे
रमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइंपंचमहव्वयाइं । राईन्नोयणवेरमणछट्ठाइं । अत्त
हियट्ठाए नवसंपज्जित्ताणंविहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्थायजेजोगा । प
रिणामायदारुणा । पाणाइवायस्स वेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥
तिव्व रागायजान्नासा । तिव्वदोसातहेवय । मुसावायस्सवेरमणे ।
एसवुत्ते अइक्कमे ॥३॥ नग्गहंचअजाइत्ता । अविदिन्नेवनग्गहे ।
अदिन्नादाणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ४ ॥ सद्दारूवारसागं
धा । फासाणंपवियारणा । मेहुणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे
॥ ५ ॥ इन्नामुन्नायगेहीय । कंखालोन्नेयदारुणे । परिग्गहस्सवे
रमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ अयमत्तेआहारे । सूरखित्तेयसं
किए । राईन्नोयणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ दंसणना

णचरित्ते । अविराहित्ताछिन्नसमणधम्मे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायाउ ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ता छिन्नसमणधम्मे । बीयंवयमणुरक्खे । विरयामोमुसावायाउ ॥ २ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ताछिन्नसमणधम्मे । तइयंवयमणु रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणाउ ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ विराहित्ताछिन्नसमणधम्मे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे हुणाउ ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ताछिन्नसमणधम्मे । पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहाउ ॥ ५ ॥ दंसणनाणच रित्ते । अविराहित्ताछिन्नसमणधम्मे । छठंवयमणुरक्खे । विर यामोराईभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोछि न्नसमणधम्मे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायाउ ॥ १ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्मे । बीयंवयमणु रक्खे । विरयामोमुसावायाउ ॥ २ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्मे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि न्नादाणाउ ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमण धम्मे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेहुणाउ ॥ ४ ॥ आल यविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्मे पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहाउ ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तो छिन्नसमणधम्मे । छठंवयमणुरक्खे । विरयामोराईभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्मे । ति विहेणपडिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ७ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्चत्तंएगमेवअन्नाणं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १ ॥ अणवज्जजोगमेगं । सम्मत्तंएगमेवनाणंतु । छवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २ ॥ दोचेवरागदोसे । दुन्नियझाणाइअट्टरु

हाइं । परिवजंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३ ॥ उविहंचरित्तध म्मं । उन्नियऊणाइधम्मसुक्काइं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्व एपंच ॥ ४ ॥ किन्हानीलाकाउ । तिन्निअलेसाउअप्पसत्थाउ । परि वजंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ५ ॥ तेऊपद्मासुक्का । तिन्नि यलेसाउसुप्पसत्थाउ । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविऊ । वायासच्चेणकरणसच्चेण । तिबि हेणविसच्चविऊ । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियउहसि ज्जा । चउरोसन्नातहकसायाय । परिवजंतोगुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा । चउविहंसंबरंसमाहिं च । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ९ ॥ पंचेवयकामगु णे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परवजंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्व एपंच ॥ १० ॥ पंचेंदियसंवरणं । तत्तोपंचविहसंवसज्ञायं । उव संपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ११ ॥ उजीवनिकायवहं उप्पियन्नासाउ अप्पसत्थाउ । परिवजंतो गुत्तो । रक्खामि मह व्वएपंच ॥ १२ ॥ उविहमभिंतरयं । वज्झंपियउविहंतवोकम्मं । उवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तभयठाणाइं । सत्तविहंचेवनाणविभंगं । परिवजंतो गुत्तो । रक्खामिमहव्व एपंच ॥ १४ ॥ पिंमेसणपाणेसण । उग्गहसतिक्या महज्झय णा । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमय ठाणाइं । अठयकम्माइतेसिवंधंच । परिवजंतो गुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिठाअठविहनिठि अठेहिं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १७ ॥ नवपाव नियाणाइं । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवजंतोगुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १८ ॥ नवबंभचेरगुत्तो । दुनवविहंबं

नचेरपम्मिसुद्धं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ उवघायंचदसविहं । असंवरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिठाणा । दसचेवदसा उसमणधम्मंच । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ आसायणंचसव्वं । तिगुणंइक्कारसंविवज्जंतो । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥एवंतिदंमविरउ । तिगरणसुद्धोतिसल्ल निसल्लो । तिविहेणपम्मिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥ इच्चेयं महव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलंवसाउ साहणठो पाव निवारणं निकायणा नावविसोही पसग्गहणं निज्जुहणाराह णागुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणोवउत्तया जुत्तयानाणे परमठो उत्तमठो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसिउपवयणस्ससारो छजीवनिकायसंजमं उवसंवसिउ तिखुक्कसक्कयंठाणं अछुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर मणंतमप्पमे नमोत्थू ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थू ते अरिहउ नमोत्थूते नगवउ (तिकट्टु) इच्चेसा खलुमहव्वय उच्चा रणाकया इछामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं इमंवाइयं छव्विहमावस्सयंनगवंतं (तंजहा) सामाइयं १ चउवीस त्थउ २ वंदणयं ३ पम्मिक्कमणं ४ कावसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६ सव्वेहंपिएयंमि छव्विहे आवस्सए नगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा नावावा अरिहंतेहिं नग वंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेनावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणपालेमो तेनावेसद्दहंतेहिं पत्तयंतेहिं रोयं तेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्ख

क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तार णाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामी (अंतोपक्खस्स) जंनवाइ यं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा मो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो ॥ तस्समिछामिदुक्क डं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का लियं नगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवाभिगमो पन्नव णा महापन्नवणा नंदीअणुउगदाराइं देविंदछउ तंडुलवेयालियं चंदाविज्जयं पमायप्पमायं पोरसिमंडलं मंडलप्पवेसो गणिवि ज्जा विज्जाचरणविणिछउ झाणविभत्ती आणविभत्ती आयवि सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरागसुयं विहारकप्पो च रणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिएयंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए नगवंते ससुत्ते सअत्थेसग्गंथे सनिज्जुत्ती ए ससंगहणीए जेगुणावा नावावा अरिहंतेहिं नगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूवियावा तेनावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा लेमो अणुपालेमो ते नावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोइंतेहिं फा संतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (अंतोपक्खस्स) जंनवाईअं नपढियं न परियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदा

मो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुठेमो अहा रिहंतवोकम्मं पायछित्तंपमिवज्जामो ॥ तस्समिछामिदुक्कडं ॥ ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं कालियं नगवंतं (तंजहा) उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पो ववहारो इसिनासियाइं निसीहं महानिसीहं जंबूद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंद पन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविन्नत्ती महल्लियाविमाणपविन्नत्ती अंगचूलीयाए वंगचूलीयाए विवाहचूलीयाए अरणोविवाए वरुणोविवाए गरुलोविवाए वेसमणोविवाए वेलंधरोविवाए देविंदोविवाए उठाणसुए समुठाणसुए नागपरियावलियाणं निरयावलीयाणं कप्पियाउ कप्पवडिंसियाउ पुप्फियाउ पुप्फचूलियाउ वण्हीदसाउ आसीविसनावणाउ दिठीविसनावणाउ चारणसमणनावणाउ महासुविणनावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहिंपिएयंमि अंगवाहिरए कालिए नगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहिणीए जेगुणावा नावावा अरिहंतेहिं नगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेनावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेनावेसद्दहंतेहिं पत्तहिंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतो पक्खस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए वोहिलानाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (अंतोपक्खस्स) जंनवाइयं नपढियं नपरिट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पम्हिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायछित्तं पमिवज्जा

मो तस्समिछामिडुक्कडं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवा इयं डुवालसंगं गणिंपिडगं नगवंतं (तंजहा) आयारो सूअग डो ठाणांग समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ नवासगदसा उ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइदसाउ पन्हावागरणं विवागसु यं दिठिवाउ सव्वेहिंपि एयंमि डुवालसंगं गणिंपिडगं नगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेन्नावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फा सेमो पालेमो अणुपालेमो तेन्नावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंते हिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपक्खस्स) जंवाइ यं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंडुक्ख क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणा ए तिकट्टु नवसंपजित्ताणंविहरामि (अंतोपक्खस्स) जं नवाइयं न पढियं न परियट्टियं न पुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेव ले संतेवीरिए संतेपुरसक्कार परिक्कमे तस्सअलोएमो पडि क्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अ ब्भुठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायछित्तंपडिवजामो तस्समिछा मि डुक्कडं ॥ नमो तेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं डुवाल संगं गणिपिडगं नगवंतं सम्मं काएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहोमि त स्समिछामि डुक्कडं ॥ सुयदेवया नगवई । नाणावरणीय क म्मसंघायं । तेसंखवेउसययं । जेसंसुयसायरेभत्ति १ इतिश्री पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाक्षिकखामणा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इछामिखमासमणो पियंचमे जंन्ने हठाणं तुठाणं

अप्पायंकाणं अन्नग्ग जोगाणं सुव्वयाणं सायरिय नवझायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअप्पाणं भावेमाणाणं वहुसुभेणभे दिवसो पक्खो चोमासियो संवछरिओ वइक्कंतो अन्नोयन्नेकल्लाणेणं पज्जु वठिउ सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुम्भेहिंसम्मं । इतिगुरु वचनं ॥ इछामिखमासमणो पुव्विंचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुम्भेणं पायमूले विहरमाणेणं जेकेई बहुदेवसिया साहुणोदिठा सम णावा गामाणुगामडुइज्ज माणावा रायणिया संपुछंति नमराय णिया वंदंति अज्जयावंदंति अज्जयाउवंदंति सावयावंदंति सावयाउवंदंति अहंपिनिसल्लो निक्कसाउ तिकट्टु सिरसा मण सा मत्थएणवंदामि ॥ इतिशिष्यसाधू वचनं ॥ इहां गुरुववचन अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ २ ॥ अब्भुठिउमि तुम्भेणं संतियं अहाकप्पंवा वत्थंवा पडिग्गहंवा कंबलंवा पायपुछणंवा रजहर णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिलोगंवा अठंवा हेउंवा पसि णंवा वागरणंवा तुम्भेवि यत्तेणंदिन्नं मएअविणए अपडिछियं ॥ तस्समिछामि डुक्कडं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं ॥ २ ॥ इछामि खमासमणो अहमविपुव्वाइं कयाइंच मेकियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं तरे सेविउ सेवाविउ अवग्रहिउ सारिउ वारिउ चोइउ पडिचो इउ वियत्तामे पडिचोयणा नवठिउहिं तुम्भेणं तवतेयसिरिए इमाउचाउरंतसंसारकंताराउसाहट्टु नित्थारिस्सामि तिकट्टु सिर सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव चनं नित्थारगपारगाहोह ॥ इति श्रीपाक्षिकखामणकानि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रभाविक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजियंजिअसव्वभयं । संतिंच पसंत सव्वगयपावं । जयगुरुसं तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ वरगयमंगुलभावे । तेहंविउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे । थोसामिसुदिठसब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्वदुक्खप्पसंतिणं । सव्वपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो अजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम कित्तणं । तहयधिइमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिय कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियंच गुणेहि महामुणिसिद्धिगयं । अजियस्सय संति महामुणिणोविअ संतिअरं । सययं म णिव्वुइकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिंगणिअं ॥ पुरिसाजइ दु क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च भावउ । अभ यकरे सरणंपवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । मुव रय जरमरणं । सुर असुर गरुड भुअगवइ । पयय पणिवइयं । अजिय महमविय सुनयनयनिउण मभयकरं । सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं तिमुणीममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवंचवर हत्थि मत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं थिरसरिच्छवच्छं । मयगलललीलाय माणव रगंधहत्थिपत्थाणपत्थिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थबाहुं । धंतकणगरुअगनि रुवहयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं । सुइसुहमणाभिराम परम रमणिज्जवरदेवदुंदुहि । निनायमहुरयरयसुहगिरं ॥९॥ वेढउ ॥ अजिअंजिआ रिगणं । जिअसव्वभयंभवोहरिउ । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेउमेभयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउर । नरीसरोपढमं । तउमहा चक्कवट्टिभोए । महप्पभावो । जोबावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगरणिगमजण वयवई । बत्तीसारायवरसहस्साणजायमग्गो । चउदसवररयण नवमहानिहि चउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई । चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी छन्न वइगामकोडिसामी । आसी जो भारहम्मिभयवं ॥ ११ ॥ वेढउ ॥ तंसंतिंसंति

अरं । संतिएहं सव्वजया । संतिंथुणामिजिणं संतिंविहेजमे ॥१२॥ रासाणंदियअं इख्खागुविदेहनरीसर नरवसहासुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण विग यतमा विहुअरया । अजियजत्तमतेअगुणेहिमहासुणि अमिअबला विजलक्क ला । पणमामितेजवजयसूरण जगसरणाममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणबिंदचंदसूर वंदहठतुठजिठपरम । लठरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुघनिघिधव ल । दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर। दित्ततेयबिंदधेयसव्वलोय जाविअप्पजावणे । पइअसमेसमाहिं ॥ १४ ॥ नारायजा ॥ विमजससिक लाइरेअ सोमं । वितिमिरसूरकलाइरेअ तेयं । तिअसवईगणाइरेअ रूवं । धर णीधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजियं । सारीरेय बले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥ जुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससि । तेय गुणेहिं पावइ नतं नवसरयरवि । रूव गुणेहिं पावइनतं तियसगणवई । सारगुणेहिं पावइन तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं । धीरजण थुअचिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयज । संतिमहंमहामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ जलियअं ॥ विणजणय सिरर इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं । विबुहाहिव धणवइनरवइ । थुअमहि अचिअंबहुसो । अइरुग्गय सरयदिवायर । समहिअ सप्पजंतवसा । गयणं गणविअरण । समुइअ चारण वंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोडिसयसंथुअं । समण संघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं अरुअं । अजियं अजियं पयजपणमे ॥ २१ ॥ बिज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिव्वकणग रहतुरय पहकरसइहिंहुलिअं । ससंजमोरयणखुजिअजुलिअचलकुंडलं । गयतिरीड सोहंतमजलिमाला॥२२॥ वेढज ॥ जंसुरसंघासासुरसंघा । वेरविजत्ताजत्तिसुजु त्ता । आयरजूसिअसंजमपिंडिअ । सुहसुविहिअ सव्वबलोघा । जत्तमकंचणर यणपरूविअ । जासुरजूसणजासुरिअंगा । गायसमोणयजत्तिवसागय । पंज लिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सजवणाइ

तोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसभयमोहवज्जि
अं । देवदाणवनरिंदवंदिअं । संतिमुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवर
रंतर बियारणिआहिं । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्थणसालणि
आहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतरथणभर
विणमिअगायलयाहिं । मणिकंचणपसिढिलमेहल सोहियसोणितडाहिं । वर
खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणिआहिं । रयकर चउर मनोहर सुंदर
दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआयज
स्सतेसुविक्कमाक्कमा । अप्पणोनिलाडएहिं मंरुणोड्डणप्पगारएहिं केहिंकेहिंवी ।
अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं । भत्तिसन्निविठ्ठिवंदणाग
याहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं
जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउपणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदि
अस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेवबहुहिं । पयउपणमिअस्सा । जस्सजगुत्त
मसासणयस्सा । भत्तिवसागयपिंमियआहिं । देववरच्छरसाबहुआहिं । सुरवररइ
गुणपंमिअयाहिं ॥ ३० ॥ भासुरिअं ॥ वंससद्दतंतितालमेलए । तिउक्खराभि
राम सद्दमीसएकएअ । सुइसमाणणे असुरुसज्जगीअपायजालघंटिआहिं ।
वलयमेहला कलावनेउरा भिराम सद्दमीसएकएय । देवनट्टिआहिं । हावभाव
विब्भमप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंगहारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविक्कमाक्कमा ।
तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसव्वपावदोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमं
जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥ छत्तचामर पडागजुअजव मंछिआ । झयवर मगर तुरग
सिरिवच्छसुलंछणा । दीव समुद्द मंदिर दिसागय सोहिआ । सत्थिअ वसहसीह
सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहावलठ्ठा समपइठ्ठा । अदोसदुट्ठा
गुणोहिजिठ्ठा । पसायसिठ्ठा तवेणपुठ्ठा सिरीइइठ्ठा रिसीहिंजुठ्ठा ॥ ३३ ॥
बाण वासिआ ॥ तेतवेण धुअसव्वपावया । सव्वलोअहिअभूलपावया । संथु-
आ अजिअसंति पावया । हुंतुमेसिवसुहाण दावया ॥ ३४ ॥ अपरंतिका ॥
एवंतवबल विउलं ॥ थुअंमए अजियसंति जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं ।
गयंगयं सासयंविमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तंबहुगुणप्पसायं । मुक्खसुहेणपरमेण
अविसायं । नासेउमे विसायं । कुणउअपरिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

तंमोएउअ नंदिं । पावेउअ नंदिसेणमजिनंदिं । परसाविय सुहनंदिं । ममय दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासे । संवछर राइएय-दिअहेअ । सोअव्वो सव्वेहिं । उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो निसुणइ । उभउकालंपि अजिअ संति थुअं । नहु हुंति तस्सरोगा । पुव्वुप्पणा विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइछह परमपयं । अहवाकित्तीसु वित्थमा जवणे तातिल्लु-कुछरणे । जिणवयणे आयरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उल्लासिकम नक्खनिग्गयपहादंछलेणंगिणं । वंदा रूण दिसंतइ ब्वपयमं निव्वाण मग्गावलिं । कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंतनाणंकुरु । केरेदोवि दुइज्जासोलसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमि-णिजं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिजा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसमत्थोथुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु उल्लासिअत्तिप्पेरेण । गुणकणमिवकित्ते हामिचिंतामणिव्व । अलमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं । फलहइ लहुसव्वं वंछिअं णिछिअंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहि आणं नामिमित्तेणआणं । विहडइलहुठा । निठदोवट्टवट्टं । नमिरसुरकिरीट्ठ घठपायारविंदे । सययमजिअसंती ते जिणिं देअविंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्टएदेहदित्ती । विलसइ नुविमित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइसंसारछित्ती । जिणजुअपयभत्ती हीअचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं नूरिदिव्वंगहारं । फुडवणरसभावो दारसिंगारसारं । अणिमिसरमणिज्ज दंसण-छेअजीया । इवपणमणमंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंती । तेकयासेससंती । कणयरयपसंगा उज्जएजाणमुत्ती । सरअसपरिरंभा रंभनिव्वा णलछी । घणथणघुसिणंकु पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं । सदसदणभिलप्पा लप्पमेगंअणेगं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धंचजेसिं । वयणमवयणिजं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंधयारं । नमइजय मसणं ताव मिछत्तगणं । फुरइफुरु फलंता णंतणाणं सुपूरो । पयरु मजिअसंती ऊाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिएहु एहंवुचोराहि वाही । समरुमर मारी रुद्दखुद्दोवसग्गा । पलयमजिअसंती कित्तणेऊत्तिजंती । निवि

डतरतमोहा नक्खरा लंखिअब्ब ॥१०॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझाणग्गिजाला। परिगय मिव गोरं चिंतिअं झाण रूवं । कणयनिहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा । चरथिर मिह लद्धिं गाढसं थंनिअब्ब ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं । जलहिलहरिहीरं ताणगुत्तिठियाणं । जलिअ जलणजाला लिंगिआणं चझाणं । जणयइ लहुसंतिं संतिनाहाजिआणं ॥१२॥ हरिकरिपरिकिण्णं पक्कपाइक्कपुण्णं । सयलपुहवि रज्जं छड्डिउंआणसज्जं । तणमिव पम्मिलग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं । चरण मणुपवणा हुंतुतेमे पसणा ॥१३॥ जणसासिवयणाहिं । फुल्लनिचुप्पलाहिं थणजरन मिरीहिं मुट्ठिगिज्झोदरीहिं । ललिअनुअलयाहिं पीणसोणित्थलीहिं । सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किमिन कुठ गंठि का साइसार । खयजर वणलूआ सासससोसोदराणि । नहमुह दसणछी कुछिकणाइरोगे । महजिण जुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इयगुरुदुहतासे पक्खि ए चाउमासे। जिणवरदुगथुत्तं वन्नरेवा पवित्तं । पढह सुणह सिज्झाएहझाएहचित्ते कुणह मुणह विग्घं जेण घाएहसिग्घं ॥ १६ ॥ इयविजया जियसत्तुपुत्त सिरि अजिअ जिणेसर। तहअइरा विससेण तणय पंचमचक्कीसर। तित्थंकरसोल समसंति जिणवन्नहसंतह । कुरुमंगल ममहरसुदुरिअ मखिलंपि थुणंतह ॥१७॥इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिऊणपणयसुरगण । चूडामणिकिरणरंजिअंमुणिणो। चलणजुअलं महानय। पणासणंसंथवंवुच्छं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह । निवुड्डनासा विवणलावणा । कुठमहारोगानल । फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥ तेतुहचलणा राहण। सलिलंजलिसेअवड्ढियन्नाया। वणदवदड्ढागिरिपायपुव्व पत्तापुणोलद्धिं ॥ ३ ॥ डुव्वायखुनिअजलनिहि । नन्नमकल्लोलभीसणारावे । संभंतभयविसंवुल । निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवदलिअजाणवत्ता । खणेणपावंतिइच्छियंकूलं । पासजिणचलणजुअलं । निच्चंचिअजेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धअवणदव । जालावलिमिलिअसयल डुमगहणे । मज्झंतमुच्चमयवहु । भीसणरवभीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमजुअलं । निव्वावियसयलतिहुअणाभोयं । जेसंभरंतिमणुआ नकुणइजलणोभयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीषण । फुरिआरुणनयणतरलजीहालं । नग्गजु अंगंनवजलय । सद्दहंभीसणा-

यारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिच्चूढविसमविसवेगा । तुहनामक्खरफुड-सिद्ध । मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥ अडवीसुनिल्लतक्कर । पुलिंदसद्दूलसद्दनी-मासु । नयविहलुवणकायर । नल्लूरिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहव-सारा । तुहनाहपणाम मित्तवावारा । ववगयविग्घासिग्घं । पत्ताहियइछियंठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघाय-विअलिय । गयंदकुंभत्थलाओयं ॥ १२ ॥ पणयससंभमपत्थिव । नहमणिमा-णिक्कपडिअपम्मिस्स । तुहवयण पहरणधरा । सीहंकुद्धंपि नगिणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं । दीहकरूल्लालवट्टि नट्ठाहं । महुपिंगनयणजुअलं । स-सलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ नीमं महागइंदं । अद्धासन्नंपितेनविगिणंति । जेतुल्लचलणजुअलं मुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिक्खखग्गा । निघायपविद्धनद्धुअकबंदे । कुंतविणिन्निन्न करिकलह । मुक्कसिकारपनरम्मि ॥ ॥ १६ ॥ निज्जिअदप्पुद्धरिनरिंद । निवहानडाजसंधवलं । पावंतिपावपस-मण । पासजिणतुहप्पनावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदग-यरणनयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसव्वाइं ॥ १८ ॥ एवंमहानय हरं । पासजिणिंदस्ससंथवमुआरं । नवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ रायनयजक्खरक्खस्स । कुसुमिणदुस्सनणरिक्खपीडासु । संझासु-दोसुपंथे नवसग्गेतहयरयणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो यमाणतुंगस्स । पासोपावंपसमेन । सयलनुवणच्चिअचलणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तंजयनजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंन-बसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिलेसा निहयकुलेसापसत्थ सुहलेसा । सिरिवद्धमाणतित्थस्स । मंगलंदिंतुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म-बीआ । बीआपरमेठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजयपसिद्धा । हणंतुदुत्थाणि-तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारं सयापयासंता । आयरिआत-हतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगाय । सिअ-वायवायगावाए । पवयणपम्मिणीयकए । वण्णंतुसव्वस्ससंघस्स ॥ ५ ॥ निव्वा-णसाहुणुज्जअ । साहूणंजणिअसव्वसाहज्जा । तित्थप्पनावगाते । हवंतुपरमे

ठिणोजइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयंनाणं । निव्वाणफलंचचरणमविहवइ । तित्थ
स्सदंसणंतं । मंगुलमवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्हम्मोसुअधम्मो । समग्गनब्बंगि
वग्गकयसम्मो । गुणसुट्ठिअस्ससंघस्स । मंगलंसम्ममिहदिसउ ॥ ८ ॥ रम्मोच
रित्तधम्मो संपाविअनवसत्तसिवसम्मो । नीसेसकिलेसहरो । हवउसयासयल
संघस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि
वद्धमाणपहुपयप्पिअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥ जियपप्पिवक्खाजक्खा ।
गोमुहमायंगगयमुहपमुक्खा । सिरिबंभसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवंदिंतु
॥ ११ ॥ अंबापडिहयकंबा । सिद्धासिद्धाइआपवयणस्स । चक्केसरिवइरुट्टा ।
संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ दिंतुसंघस्समंगलंविजयं ।
अबुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदेवयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकय रक्खा ।
जक्खाचउवीससासणसुरावि । सुहभावासंतावं । तित्थस्ससयावणासंतु ॥ १४ ॥
जिणपवयणंमिनिरया । विरहाकुपहाउसव्वहासब्बे । बेयावच्चकराविअ । तित्थ
स्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग । वहिअनवाण जणिअसाह
ज्जो । गीयरई गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तज
लथल । वणपब्बयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणट्ठिआणं । कुहाणिसव्वाणिनि
हणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासक्खित्तपालया नवग्गहासनक्खत्ता । जोइणि
राहुग्गहकालपास कुलिअदुपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं । सविट्ठिवत्थेहिं
कालवेलाहिं । सवेसव्वत्थसुहं । दिसंतुसव्वस्ससंघस्स ॥ १९ ॥ नवणवइवाण
मंतर । जोइसवेमाणिआयजेदेवा । धरणिंदसक्कसहिआ । दलंतुदुरिआइंति
त्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गच्छइ पुरउपणासिअतमोहं । तंतित्थस्स
नगवउ । नमोनमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणोवीरो । जस्सजाविसा
सणंजएजयइ । सिद्धिप्पहसाहणंकुपह । नासणंसव्वनयमहणं ॥ २२ ॥ सिरिउस
भसेणपमुहा । हयनय निवहा दिसंतुतित्थस्स । सव्वजिणाणंगणिहारिणो ।
णहंवंछिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरिवद्धमाणतित्थाहिवेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स ।
सम्मंसुहम्मसामी । दिसउसुहं सयलसंघस्स ॥ २४ ॥ पयइएनहिआजे । नहा
णदिसंतुसयलसंघस्स इयरसुराविहुसम्मं । जिणगणहरकहियकारिस्स ॥ २५ ॥

इयजोपढइतिसंझं। दुस्सज्झंतस्सनत्थिकिंपिजए। जिणदत्ताणाएठिन। सुनि-ठिअठोसुहीहोइ ॥२६॥❀॥ इतिगणधरदेवस्तुतिः। चतुर्थस्मरणं ॥४॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मयरहिअंगुणगणरयण । सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरुजण पारतंतं। जहिव्व थुणामितंचेव ॥ १ ॥ निम्महियमोहजोहा। निहयविरोहाप णट्ठिसंदेहा। पणयंगिवग्गदाविअ। सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुज इत्तसोहा। समत्तपरतित्थजाणियसंखोहा। पम्हिअग्गमोहजोहा । दंसिअसुम हत्थसत्थोवा ॥ ३ ॥ परिहरिअसत्थवाहा। हयदुहदाहासिवंबतरुसाहा। संपा विअसुहलाहा। खीरोदहिणुव्वअग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा । सज्जोनिरवज्जगहिअपव्वज्जा। सिवसुहसाहणसज्जा। जवगिरिगुरुचूरणेवज्जा ॥ ॥ ५ ॥ अज्जासुहम्मप्पमुहा। गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा । ताणतिसंझं नामं। नामंनपणासइजियाणं ॥ ६ ॥ पम्हिवज्जिअजिणदेवो। देवायरिउदुरंत जवहारी। सिरिनेमचंदसूरि । उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवद्धमा णसूरी। पयडीकयसूरिमंतमाहप्पो। पम्हिहयकसायपसरो । सरयससंकुव्वसुह जणउ ॥८॥ सुहसीलचोरधप्परण। पच्चलोनिच्चलोजिणमयंमि। जुगपवरसुद्ध सिद्धंत। जाणउपणयसुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरउदुल्लह महिवल्लहस्स । अणहि ल्लवाडएपयडं। मुक्काविआरिऊणं। सीहेणवदव्वलिंगिगया ॥ १० ॥ दसमच्छेर-यनिसिविप्फुरंत। सद्धंदसूरिमयतिमिरं । सूरेणवसूरीजिणेसरेण। हयमहिअ-दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती। पयडिअगुत्ती पसंतसुहमुत्ती। पहयपर-वाइदित्ती। जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तत्थ। रयणुको-सोपणासिअपउसो। जवत्रीअजविअजणमण। कयसंतोसोविगयदोसो ॥१३॥ जुगपवरागमसारपरूवणा। करणबंधुरोधणिअं। सिरिअभयदेवसूरी। मुणिप-वरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावय संतासो। हरिव्वसारंगजग्गसंदेहो। गय समयदप्पदलणो । आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ जीमजवकाणणम्मिअ। दंसिअगुरुवयणरयणसंदेहो। नीससंसत्तगुरुउ। सुरीजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअसच्चरणो। चउरणुउगप्पहाणसच्चरणो। असममयरायमहणो । उद्दसु-होसहइजस्सकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिम्मलनिच्चल। दंतगणोगणिअसावउत्थ-जउ। गुरुगिरिगरुउसरहुव्व। सूरिजिणवल्लहोहोत्था ॥१८॥ जुगपवरागमपी-

नसपाण । पीणियमणाकयान्नवा । जेणजिणवल्लहेणं। गुरुणातंसव्वहावंदे ॥१९॥ विप्फुरिअपवरपवयण । सिरोमणी वूढउवह खमोय जोसेसाणंसेसुव्व । सहइ-सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं । सुगुरूणंपारतंतमुव्वहइ जयइ-जिणदत्तसूरी । सिरिनिलउपणयमुणितिलउ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यं पंचमस्मरणं ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिग्घमवहरउविग्घं । जिणवीराणाणु गामिसंघस्स । सिरिपास जि-णोथंभण । पुरठिउनिठिआनिठो ॥ १ गोयमसुहम्मपमुहा । गणवइ णोविहि-अन्नवसत्तसुहा । सिरिवद्धमाणजिणतित्थ । सुत्थयंतेकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्काइ णोसुराजे । जिणवेयावच्चकारिणोसंति । अवहरिअविग्घसंघा । हवंतु तेसंघसंति-करा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणयठियपाससामि । पयपउमपणयपाणीणं । निद्दलिअ-दुरिआविंदो । धरणिंदोहरउदुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्खजक्खा । पडिहय पम्हिक्खपक्खउक्खाते । कयसगुणसंघरक्खा । हवंतुसंपत्तिसिवसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्कापमुहा । जिणसासण देवयाउजिणपणिआ । सिद्धाइआ समेया । हवंतुसंघस्सविग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसासच्चउरपुरठिउ । वद्धमाण जिणभत्तो । सिरिबंभसंतिजक्खो । रक्खउसंघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्तसंताण । देस देवाहिदेवयाताउ । निव्वइपुरपहियाणं । भव्वाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के सरिचक्कधरा । विहिपहरिउठिणकंधराधणिआं । सिवसरणलग्गसंघस्स । सव्व हाहरउविग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइवद्धमाणो । जिणेसरोसंगउसुसंघेण । जिण चंदोभयदेवो । रक्खउजिण वल्लहपहुमं ॥ १० ॥ सोजयउवद्धमाणो । जिणेसरो णेसरुव्वहयतिमिरो । जिणचंदाभयदेवा । प हुणो जिणवल्लहाजेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लहपाए भयदेवपहुत्तदायगेवंदे । जिणचंदाजिणेसरवद्धमाण । तित्थस्स बुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणंसम्मं । मन्नंतिकुणंतिजेयकारंति । मणसावयसा वउसा । जयंतु साहम्मिआतेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्तगुणेनाणाइणो । सयाजेध-रंतिधारंति । दंसिअसियवायपए । नमामिसाहम्मिआतेवि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति षष्टं स्मरणं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ नवसग्गहरंपासं । पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिण्णासं । मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ भवेभवेपास-जिणचंद ॥ २ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लघुशांतिलि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनिमित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ ॐमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोऽनगवतेर्हतेपूजां । शांतिजिनायजयवते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकलातिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्व्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । जुवन जनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥सर्व्वदुरितौघ नाशन कराय । सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रहभूत पिशाच शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित । मिति चनुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ अवतु नमस्ते अगवति । विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे अवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापिच संघस्य । अद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टिपुष्टिप्रदेजीयाः ॥८॥ अव्यानां कृतसिद्धे । निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां । अनयप्रदाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ अक्तानां जंतुनां । शुअावहे नित्यमुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपतकीर्तियशो । वर्द्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रह राजरोग रणअयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं । कुरु २ शान्तिच कुरु कुरु सदेति । तुष्टिंकुरु २ पुष्टिं । कुरु २ स्वस्तिच कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ अगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह । कुरु २ जनानां । ॐमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रः । यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरुस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते शांन्ति निमित्तं । नमो नमः शांन्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्व्वसूरिदर्शित । मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः । सलिलादिअयविनाशी । शांत्यादिकरश्च अक्ति मतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा । श्रयणोति अावयतिवा यथायोगं । सहि शान्तिपदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ❀ ॥

इति लघुशान्तिस्तोत्रं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वृद्धशांति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नो नो नव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवन-गुरोरार्हता नक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ नोनोभव्यलोकाइहहि भरतै रावत विदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनान्तरं । सकलसुरा सुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्माभिषेकः । शान्ति मुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वामहाजनो येन गतस्स पंथाः । इति भव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रंविधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णे दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ भगवंन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । त्रैलोक्यनाथा । त्रैलोक्यमहिता । त्रैलोक्यपूज्या । त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी ॥ १ ॥ निर्वाणी । २ । सागर । ३ । महायश । ४ । विमल ।५। सर्वानुभूति । ६ । श्रीधर ।७। दत्त ।८। दामोदर ।९। सुतेजा । १० । स्वामी । ११ । मुनिसुव्रत ।१२। सुमति ।१३। शिवगति । १४। अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ । यशोधर ।१८। कृतार्थ ।१९। जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति । २४ ॥ ❀ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थकराः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीऋषभ । १ । अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रभ । ६ । सुपार्श्व । ७ । चंद्रप्रभ । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ । वासुपूज्य । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म । १५ । शान्ति । १६ । कुंथु । १७ । अर । १८ । मल्लि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ । नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रमुखावर्त्तमानजिनाः ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्वानुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । पोट्टिल । ९ । शतकीर्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशो-

धर । १९ । विजय । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ । भद्रंकर । २४ ॥ ❀ ॥ एते भावितीर्थंकराजिनाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शान्ताः शान्तिकराः भवंतु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाभि । १ । जितशत्रु । २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ट । ७ । महसेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ । कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । भानु । १५ । विश्वसेन । १६ । शूर । १७ । सुदर्शन । १८ । कुंभ । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ । समुद्रविजय । २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ । ॥ ❀ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिननजनकाः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्था । ४ । मुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ । रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । स्यामा । १३ । सुयशा । १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रभावती । १९ । पद्मा । २० । वप्रा । २१ । शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिशला । २४ । ॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ❀ ॐ श्री गो मुख । १ । महायक्ष । २ । त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंबरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय । ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख । १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ । यक्षराज । १८ । कुबेर । १९ । वरुण । २० । भृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व । २३ । ब्रह्मशांति । २४ । ॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥ ❀ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ । अजितबला । २ । दुरितारी । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा । ६ । शांता । ७ । भृगुटी । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी । ११ । चंडा । १२ । विदिता । १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ । निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारणी । १८ । धरणप्रिया । १९ । नरदत्ता । २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती २३ । सिद्धायिका । २४ । ॥ ❀ ॥ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशाशनदेव्यः ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीधृति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतना-

मानो जयंति ते जिनेंद्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृंखला । ३ । वज्रांकुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ । गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वास्त्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोट्या । १३ । अच्छुप्ता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतुमे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रवृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्या गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्ते सर्वे प्रीयंतां २ अक्षीणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो भवंतु । अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः भवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः । शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । मुकुटाभ्यर्चितां ह्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ दुन्मृष्टरिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयतुशांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराज संनिवेशानां । गोष्टीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिं ॥४॥ श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु । श्रीगोष्टिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिःप्रतिष्टा यात्रास्नात्रावसानेषु । शांतिकलशं गृहीत्वा । कुंकुम चंदन कर्पूरा गुरुधूप वास कुसुमांजलिसमेतः । स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि वस्त्र श्रंदना भरणालंकृतः । पुष्पमाला कंठेकृत्वा । शांतिमुदघोषायित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंति गायंतिच मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् । कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके

॥ १ ॥ अहंतित्थयरमाया शिवादेवी । तुह्म नयरनिवासिनी अह्म शिवं तुह्म शिवं । असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहित-निरताभवंतु भूतगणाः । दोषाःप्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति । छिद्यंते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीबृहच्छांतिः समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ अथ दूजकी स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ महीमंडणं पुन्न सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल न्नाण गेहं । महा नंद लछी बहु बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया । भवस्संति ते सव्व भवाणताया । तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुवारपोयं । कलंका-वली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंछियत्थे सुमंदार कप्पं । जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणं भोजलीणा । कला रूव लावण सोहग्ग पीणा । वहंतस्स चित्तंमि णिच्चंपि झाणं । सिरी भारही देहिमे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुती ॥

॥ ❀ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान क्षमं । पंचानुत्तर सीम दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्वल पंचमी वरतपो व्याहारि तत्का रिणां । श्रीपंचानन लांछनः सतनुतां श्री वर्द्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रव रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः कृत्वा पंचरुषीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमी संतु सुपंचमी व्रतनृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंच ज्ञान विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाभंगुर पंचमार तिमिरे ष्वेकाः दशी रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ २ ॥ पंचानां परमेष्टिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां । भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंच-दिव्यं व्यधात् । ब्रह्मे पंचजने मनोमृत कृतौ स्वारत्नपंचालिका । पंचम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥४॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ वीरं । देवं । नित्यं वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् पांतु

॥२॥ जैनं । वाक्यं । चूया । हुत्यै ॥३॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥ ४॥
॥ ❀ ॥ इति लघ्वीस्त्रीजिंदसि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ चन्वीसे जिनवर प्रणमुंहुं नितमेव । आठम दिनकरियै चंद्राप्रनुनी सेव । मूरति मनमोहै जाणें पूनिमचंद । दीठां दुख जायै पामेंपरमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजै प्रनुजीना पाय । इंद्राणी अपछराकरजोमी गुणगाय । नंदीश्वर द्वीपैं मिल सुरवरनी कोड । अठाही महोछवकरतां होमा होम ॥ २ ॥ सेत्रुंजा सिखरैं जाणी लाभ अपार । चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । नवियणनें तारै देइ धरम नपदेश । दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेस ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करियै व्रतपचखाण । आठम तप करतां आठकरमनी हाण। आठमंगल थायें दिन २ कोडि कट्याण । जिन सुखसूरि कहै इम जीवत जनम प्रमाण ॥ ❀ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ सर्वादिन स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । सिद्धारथ नंदन त्रिसला देवि सुमाय । मृगनायक लंछन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सुख दायक स्वामी श्रीवर्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरिविंद । कामित नर पूरण अभिनव सुरतरुकंद । नवियणनें तारै प्रवहण समनिसि दीस । चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथैं करि आगम नाष्या श्रीभगवंत । गणधर तेगुंथ्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहिनसके एकन्त । समरूं सुखदायक मनसुध सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघनविशेष । सहु संकट चूरै पूरै आस असेष । अहनिसि करजोडी सेवै सुर नर इंद । जंपई गुणगण इम श्रीजिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ❀॥
॥ ❀ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ दशमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अश्वसेन नरेसर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नील वरण सुखकंद । आहिलंछण सेवित पउमावइ धरणिंद । प्रहनठी प्रणमुं नि-

तप्रति पासजिणिंद ॥ १ ॥ कुलगिरि वेयड्ढइ कणयाचल अभिराम । मानुषोत्तर नंदी रुचिक कुंमल सुखग्राम । भवणेसर व्यंतर जोइस वेमाणीय धाम । वरतै जेजिनवर पूरो मुझ मनकाम ॥ २ ॥ जिहां अंगइग्यारै बारैउपांग छहेद । दसपइन्ना दाख्या मूलसूत्र चउभेद । जिन आगम षटद्रव्य सत्तपदारथ जुत्त । सांभलि सरदहतां तूटै करम तुरत्त ॥ ३ ॥ पउमावइदेवी पार्श्वयक्ष परतक्ष । सहु संघना संकट दूरकरेवा दक्ष । तेसमरो जिनभक्ति सूरि कहै इकचित्त । सुख सुजस समांपो पुत्र कलत्र बहुवित्त ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ अथ एकादशी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं । तथा मल्ले र्जन्म व्रत मपमलं केवलमलं । बलक्ष्मै कादश्यां सहसिलस पुद्दाम महसि ॥ क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्र श्रेएया गमन गमनै र्भूमिवलयं । सदा स्वर्गत्यैवा हमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापुक्षण मति सुखं नारकसदः ॥ (क्षितौ ०) ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजग दुरात्मीय समये । फलं यत्कर्त्तृणा मितिच विदितं सुद्धसमये । अनिष्टा रिष्टानां क्षिति रनुभवेयु र्बहुमुदः ॥ (क्षितौ ०) ॥ ३ ॥ सुरास्सेंद्रा स्सर्वे सकल जिन चंद्र प्रमुदिताः तथाच ज्योतिष्का खिल भवननाथा समुदिताः । तपो यत्कर्त्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः (क्षितौ ०) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति मौनै कादशीस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ चतुर्दशी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ द्रेंद्रेंकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धर धप धोरवं । दोंदोंकि दोंदों दाग्गिदि दाग्गिदिकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवं । झंझिंझेंकि झें झें झ्र णण रण रण निजकि निज जन रंजनं । सुरशैल सिखरे भवति सुखदं पार्श्वजिनपति मज्जनं ॥ १ ॥ कट रेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि धुट नट पाटवं । गुण गुणण गुण गण रणकिर्णेणें गुणण गुण गण गौरवं । झ झ्रि झोंकि झेंझें झ्रणण रण रण निजाकि निज जन सज्जना । कलयंति कमला

कलित कलमल मुकलमीस महेजिनाः ॥ २॥ ठाकि ठ्रेंकि ठ्रें ठ्रें ठक्कि ठक्किक ठक्किपट्टा ताड्यते । तललोंकि लों लों त्रेंषि त्रेंषिनि मेंषि मेंषिनि वाद्यते । उँ उँकिउँ उँ थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे । जिन मत मनंतं महिम तनुता नमति सुर नर मुद्भवे ॥ ३ ॥ धुदांकि धुंदां धुधुडदि धुंदां धुधुडदि दोंदों अंबरे । चाचपट चचपट रणकि णेंणें रणण मेंमें रंबरे । तिहां सरग मपधुनि निधप मगरस सस ससस सुर सेवता । जिन नाट्यरंगें कुशलमुनिसं दिसतु शासन देवता॥४॥ इति श्रीजिन कुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन स्तुतिः॥१४॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ सेत्रुंज गिरि नमियै रुषन्न देव पुंमरीक। शुन्नतपनी महिमा सुणि गुरु मुख निरन्नीक । शुधमन उपवासै विधिसुं चैत्यवंदनीक। करियै जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दश वीस । अक्षत गिण तीसे चढता तिम चालीस । पंचासनी पूजा न्ना षइ इम जगदीस । तेहीज नितप्रणमुं स्वामी जिन चन्नवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चैत्रमास शुन्नवार । विधिसेती लहीयै आगमसाख विचार । इम सोलवरस लग धरियै न्यान उदार । करतां नरनारी पामे नवनोपार ॥ ३ ॥ सोवन तनचरणे नयणे तिम अरिविंद । चक्केसरी देविय सेविय नर सुर वृंद । कामितसुखदायक पूरयमन आणंद । जंपै गणनायक श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्री पूनिमस्तुतिः ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ नवपदस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी । करुणासागर निजगुण आगर सुन्न समता रस धामी जी । श्री सिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावै जे मन रंगै जी । ते मानव श्रीपाल तणी परि पामें सुख सुर संगे जी । ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु महा गुणवंता जी । दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जय वंता जी । एहनो ध्यान धरंता लहीये अविचल पद अविनासी जी । तेसगला जिननायक नमीयै जिनए नीति प्रकासी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिमवलि चैत्रकमास जगीसै जी । उजवाली सातमथी करिये नव आंबिल नव दिवसे जी । तेर-

सहस वालि गुणिये गुणणो नवपदकेरो सारो जी । इण परि निरमल तप आदरिये आगम साख उदारो जी ॥३॥ बिमल कमलदल लोयण सुंदर श्री चक्केसरि देवी जी । नवपद सेवक भविजन केरा विघनहरो सुर सेवीजी । श्रीखरतरगछ नायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति मुणिंदाजी । तासु पसायें इणपरि पभणें श्रीजिनलाभ सुरिंदा जी॥४॥ ❀ ॥इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥❀॥॥१६॥

॥ अथ पर्युषणस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ वालि वलिहुं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण परव पजूसण दाख्या धरमनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिनपंचास । पडीक्कमणो संवछरी करियें त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार । करियें भलभावें भरिये पुण्यभंडार । वलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाभ अनंत । इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचना यें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उक्खेवो । इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ वलि साहमी वछल करियें वारंवार । केइ भावना भावे केइ तपसी सीलधार । अमदीह पजूसण इम सेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलाभ-सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपर्जूषणापर्व्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पनरैतिथोंका स्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि । अरज सुणो इक जग गुरु मुझ आसा विसराम । पूरवविदेहें विजयभली पुष्कलावई नाम । जिहां विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणै जे जोजनगामनी वाणि । धनते महीयल चरणधरै जिहां जिनवर भाण । धनते भविजन जे रहै प्रभुताहरे परसंग । वदनकमल निरखी नितमाणै उछवअंग ॥२॥ सुगुरु मुखै प्रभु सुजस तुह्मीणो सांभलकान । मिलवानें उलसै मनमाहरो धरुं इक ध्यान । भगति जुगति करवानी छै मुझसगली जोग । पिण प्रभु लग पुहची जे तेहनही पगदोग ॥ ३ ॥ आभा डुंगर अतिघणा विचवहै नदियांपूरि किम मुझथी अवरायै प्रभुजी एतलीदूर । आंखडली उलझों करै जोयवा मुख जिनराज । पांखडली पाई नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाट

डली वहतो कोई न मिलै सेंगूसाथ । कागलियो लिख आपूंहुं जिम तेहनें हाथ । जाणूं ससिहर साथे कहुं संदेशाजेह । पिण अलगो थई ऊपरि वाम्है निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रभुजी तुमथी एथ अवाय । तो इण भरतनावासी भविजन पावन थाय । साहिबनीतो सुनिजर सगलै सरिषी होय । पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोहुं पिणमाहरै तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवै हीयरै खिण २ चीत । हुंहुं सेवक तुंहे माहरो आतमराम । नहिंय विसारूं जीवुं जांलगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥ साचै दिलथी मुझसुं धरज्यो धरमस्नेह । करुणाकर प्रभु कर जो मोपरि महिर अछेह । दूसमकाल तणो दुखटालो दीनदयाल । पालो विरुद संभालो निज सेवकसुं कृपाल ॥ ८ ॥ आसविलूधा अलग थकी पिण करै अरदास । पिण मोटानी महिरछतां नविथाय निरास । केईवसै प्रभु पासे केइ वसैछे दूर । राजमहिरनी रीते सकलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुख दायक नायक लायक स्वामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आत्मछमंग । सहिजे एक पलक जोथायै प्रभु तुझसंग । लाभछदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अभंग १०॥

॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसंखेश्वरपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै । भवना संचित पाप परा सब मेटियै । मनधर भाव अनंत चरणयुग सेवता । अणहुंतें इककोमि चतुरविध देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरूं प्रभुदूरथकी हुं ताहरो । जल जिमलीनो मीन सदा मनमाहरो । भव २ तुमहीजदेव चरणहूं सिरधरूं । भवसायरथी तार अरज आहीजकरूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतम एनविसहै । तप जप संयम भारतणो नविनिरवहै । पिण जिणवरना नामतणी आसतघणी । एहिज छै आधार जगतगुरु अहभणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसामि भवो दधि हुं फिरयो । सहिया दुक्ख अनेक न कारज कोसरयो । मिलिया हिव प्रभु मुझ सदासुख दीजीयै । चउगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्ण तणी आरति हरी । सेनाकीध सचेत जरा दूरैकरी । परचा पूरण पास

रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ द्वितियादिन सीमंधरस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह्म नगतै नणुं । नेटवा पायकमल नाव हीयमै घणो । करीय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अछै तिसो कर जोमि करि नाषियै । अति सवल मुऊ हियै मोह माया घणी । एक मन नगति किमकरूं त्रिनुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी परिगडै । रीसचटको चढे लोन वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनें राति हियडै अनेरो धरूं । मूढमन रींझवा वलिय माया करूं । तूंहीज अरिहंत जाणें जिसो आचरूं । तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुक्खनें दुक्ख जेहुंसहुं । मनतणी वात अरिहंत किणनें कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा । दुक्ख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म नकराय प्रनुपाप पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव बीजो नही । एह आधार जग जाणज्यो अह्म सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू । हस्यो बोल्यो रम्यो रंगरातो बहू । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह्म समवरु नही अवर वाल्हे सरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वांणि जाणुं सदा सांनलुं । वार वर परषदा मांहि आवी मिलुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायनलगुं । किम करूं गाम पुंम्फर गिरि वेगलूं ॥ ८ ॥ नोलडा नगतितूं चित्तहारै किस्यै । पुण्यसंयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्यै । जेहनें नांम मन वयण तन नल्लस्यै । दूरथी ढूकडा जेम हियडै वसै ॥ ९ ॥ नल नलो एणि संसार सहु ए अछै । सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछै । ध्यान करतां सुपन मांहि आवीमिलै । देखियै नयण तो चित्त आरति टलै ॥ १० ॥ सामि सोहा मणा नाम मन गह गहै । तेहसुं नेह जे वात तुह्मची कहै । तुह्म पाय नेटवा अति घणुं टलवलुं । पंख जो होयतो साहिय आवीमिलुं ॥११॥ मेरुगिर लेखणी आनकागल करूं । खीर सागर तणा दूध खडिया नरूं । तुह्म मिलवा तणा सामि संदेसडा । इंद्र

पिण लिखिय नसके अछे एवमा ॥ १२ ॥ आपणें रंग अरि वात सुण जेतली। अयजे सामि न कहाय मुख तेतली। सुणो सीमंधरा राज राजेसरा। लाभनें कोकि प्रभुपूरि सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व अवि मोह वासि नेह हुवै जेहनें। समरिये एणि संसार नित तेहनें। मेहनें मोर जिम कमल अमरोरमें। तेम अरिहंततूं चित्त मोरै गमें ॥१४॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियमें वस्युं। वापको पापहिव रहिय करस्यै किसुं। गामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही। ततखिण सर्पनी जाति नसके रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहु परिहरी। सामि सीमंधरा तुझ पाय अणु सरी। सुद्ध चारित्र कहियें प्रभू पालसुं। दुक्ख अंसार संसार अय टालसुं ॥ १६ ॥ तुझ हुंदास हुं तुझ सेवकसही। एहमें बात अरिहंत आगलिकही। एवडी माहरी अगति जाणी करी। आप ज्यो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुद्धि वृद्धि समृद्धि कारण दुरित वारण सहुकरो। नवज्झाय वर श्री अक्तिलाभै थुएयो श्रीसीमंधरो। जयजयो जगत गुरु जीव जीवन करो सामि मया घणी। करजोडि वलि वलि वीनवुं प्रभु पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्ण ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय। निरमल न्यानउपाय। पांचमि तप अणुंए। जन्म सफल गिणुंए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद। केवल न्यान दिणंद। त्रिगरै गहगह्योए। अवियणनें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वमो संसार। न्यान मुगति दातार। न्यान दीवो कह्योए। साचो सरदह्योए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविलास। लोकालोक प्रकास। न्यान विना पसुए। नर जाणें किसुंए ॥४॥ अधिक आराधक जाण। अगवती सूत्रप्रमाण। न्यानी सर्वतुए। किरिया देशतुए ॥ ५ ॥ न्यानी सासोसास। करम करै जेनास। नारकिने सहीए। कोड बरस कहीए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार। वोल्या सूत्र मझार। किरिया छै सही ए। पिण पाछै कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान। हुवैतो अति परधान। सोनेानें सुरो ए। संख दूधै भरयो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मझार। पांचमि अक्षर सार। अगवंत भाषीयोए। गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥ (ढाल १

पहिली काल हरानी) ॥ ❀ ॥ पांचमि तप विधि सांभलो । जिम पामो भव पारोरे । श्रीअरिहंत इम उपदिसै । भवियणनें हित कारोरे ॥ पां० ॥ १० ॥ मिगसर माह फागुण भला । जेठ आसाढ वैसाखोरे । इण षटमासै लीजियै । शुभदिन सद्गुरु साखोरे ॥ पां० ॥ ११ ॥ देव जुहारी देहरे । गीता रथ गुरु वंदीरे । पोथी पूजो न्याननी । सगति हुवै तो नंदीरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ बेकर जोगी भावसुं । गुरु मुख करो उपवासोरे । पांचमि पडिक्कमणो करै । पढो पंडित गुरु पासोरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो । तिण दिन आरंभ टालोरे । पांचमि तवन थुई कहो । ब्रह्म चारिज पिण पालोरे ॥ ॥ पां० ॥ १४ ॥ पांचमास लघुपंचमी । जाव जीव उत्कृष्टीरे । पांच वरस पांच मासनी । पांचमि करो शुभ दृष्टीरे ॥ पां० ॥ १५ ॥ (ढाल २ उल्लालानी) ॥ ❀ ॥ हिव भवियणरे पांचमि नुजमणो सुणो । घर सारूरे वारू धन खरचो घणो । ए अवसररे आवंतां वलि दोहिलो । पुण्य जोगैरे धनपामंता सोहिलो । (उल्लालो) सोहिलो वलीय धन पामतां पिण धर्म काज किहां वली । पंचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै कावसग्ग वली । त्रिण न्यान दरसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीयै । थापना पहिली पूजकेसर सुगुरु सेवा कीजीयै ॥ १६ ॥ सिद्धांतनीरे पांच परत वीटांगणा । पांच पूठारे मुख मल सूत्र प्रमुख तणा । पांच गोरारे लेखण पांच मजी सणा । वासकुंपारे कांबी वारू वरतणा । (उल्लालो) वरतणा वारू वलिय कमली पांच झिल मिल अति भली । थापना चारिज पांच ठवणी मुहपती पण पाटली । पट सूत्र पाटी पंचकोथल पंच नव कर वालियां । इण परै श्रावक करै पांचमि उजमणो उजवालियां ॥ १७ ॥ वलि देहरैरे स्नात्र महोछव कीजियै । घर सारूरे दानवली तिहां दीजियै । प्रतिमानेरे आगलि ढोवणो ढोइयै । पूजानारे जे जे उपगरण जोइयै । (उल्लालो) जोइयै उप गरण देव पूजा काज कलशशृंगार ए । आरती मङ्गल थालदीवो धूपधाणो सारए । घनसार केसर अगर सूकम अंगुलुहणो दीसए । पंचपंच सगली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीस ए ॥ १८ ॥ पांचमीतारे साहमी सर्व जीमाडियै । रात्री जोगेरे गीत रसाल गवाडियै । इण करणीरे करता न्यान आराधियै । न्यान दरसणरे उत्तम मारग साधियै ।

(उल्हालो) साधियें मारग एह करणी न्यान लहीये निरमलो । सुर लोकनें नरलोक माहें न्यान वंतते आगलो । अनुक्रमें केवल न्यान पामी सासता सुख जेलहै । जे करें पांचमी तप अखंमित वीर जिणवर इम कहै ॥ १९ ॥ कलश ॥ इम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान जिणेसरो । मेंथुएयो श्रीअरिहंत भगवंत अतुल बल अलवेसरो । जयवंत श्रीजिनचंद सूरिज सकल चंद नमुंसीयो । वाचना चारिज समय सुंदर भगति भाव प्रसंसीयो ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ २० ॥ इति श्रीपंचमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी लघुस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी । निरमल पामो न्यानरे । पहिली न्याननें पछे किरिया । नही कोई न्यान समानरे ॥ पां० ॥ १ ॥ नंदी सूत्रमें न्यान वखाएयो । न्याननां पंच प्रकाररे । मति श्रुत अवधि अनें मनपर्यव । केवल न्यान श्रीकाररे ॥ पां० ॥ २ ॥ मति अठावीस श्रुति चवदैवीस । अवधि छ असंख प्रकाररे । दोय भेद मन पर्यव दाख्यो । केवल एक प्रकाररे ॥ पां० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेस्युं तेज आकासरे । केवल न्यान समो नही कोई । लोका लोक प्रकासरे ॥ पां० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीनें । महारीपूरो उमेदरे । समय सुंदर कहै हुंपिण पामुं । न्याननो पंचमों भेदरे ॥ पां० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ अष्टमी लघुस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजै । गाजै गोमी पास । सेवा सारै जेहनी । सुर नर मन धरिय उलास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरावे । अरिहां सुग्यानी पास जिणंदावे । (आंकणी) सुंदर सूरति मूरति सोहै । मोमन अधिक सुहाय । पलक २ में पेखतां । मानुं नव नवी छवीय देखाय ॥ २ ॥ सोभागी० अ० ॥ भवदुख भंजण जनम निरंजन । खंजन नयन सुरंग । श्रवण सुणी गुण ताहरा । माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहनें । दे वहलो दीदार । प्रारथियां पहिडेनही । साहिबा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सोभागी० अ० ॥ प्रभु मुख चंद विलोकित हरखित । नाचत नयन चकोर । कमल हसै रवि दे

खनें। जिम जलधर आगम मोर॥ सो० ॥ ५ ॥ किसकै हरि हर किसकै ब्रह्मा। किसकै दिलमें रांम। मेरै मनमें तूं वसै । साहिब सिव सुखनो ठाम ॥ सो० अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु । श्रीअश्वसेन नरेश। जनम पुरी वणारसी। धन धन काशीनो देस॥ सो० अ० ॥ ७ ॥ संवत सतरैसै वावीसै। वदि वैसाख वखाण । आठम दिन चवै आवसुं। मोरी जात्र चढी परिमाण॥ सो० अ० ॥ ८ ॥ सानिध कारी विघन नि वारी। पर उपगारी पास । श्रीजिनचंद जुहारतां । मोरी सफलफली सहु आस॥ सो० अ० ॥ ९ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ दशमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ पास जिनेसर जगति लोए। गवडी पुर मंरुण गुण निलोए। तवन करिस प्रभु ताहरो ए। मन वंछित पूरो माहरो ए॥ १ ॥ नयरी नाम वणारसि ए। सुर नयरी जिन रिद्धै वंसी ए। तेण पुरीहुं दीपतो ए। अस्वसेन राजा रिपु जीपतो ए॥ २ ॥ वामा तसुघरि नार ए। तसु गुणहि नलभ्रै पार ए। तासु उयर अवतार ए। तसु अतिसय रूप उदार ए॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्याए। अनुक्रम करि तेसहु मन ग्रह्याए। पूछै नूपतिनें कह्या ए। करजोरि कह्या जे जिम लह्या ए॥ ४ ॥ (ढाल २)। प्रथम सुपनगज नि-रख्यो। मायतणोमन हरख्यो। बीजै वृषभ उदार। धरणी जिण धरयो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान। जसुबल कोयनमान । चउथै देखी श्री देवी। कमल वसै सुर सेवी॥ ६ ॥ पांचमै पुष्फनी माला । पंचवरण सुविशाला। छठे दीठोएचंद। ग्रहगण केरोएइंद॥ ७॥ सातमें सूरज सार । दूरकियो अंधकार। आठमें धजलहकंती । वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंभ। भरियो निरमल अंभ। देखि सरोवर दसमें । मनह थयो अति विशमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें। खीर जलधि जसु नामें। बारम देव विमान। वाजित्र ध्वनि गीत गान॥१०॥ तेरम रतननी राशि। दहदिसि ज्योति प्रकाशि। सुपन चवदमें ए दीठो। पावक धूमथी मीठो॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार। हरष्यो नृपउदार। पुत्ररतन होस्यै ताहरै। थास्यै उदय हमारै॥ १२ ॥ (दुहा) चवदसुपन श्रवणेसुणी। हरषकियो सुविचार। सुंदर सुत तुमे जनमस्यो। कुल

दीपक आधार॥ १३ ॥ वामाप्रीतम वचन सुणि। आवी मंदर झत्ति। देव सुगु रुकीरत करी। जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रमि ऊग्यो दिवस कीधा सुपन विचार। ते घरि पहुता आपणै। दीधा दान अपार ॥ १५ ॥ (ढाल) ३ ॥❀॥ हिवजनम्या जगगुरु जगत्रहुउ जयकार। खिण इक नार कियै पायो सुक्ख अपार। दिशिकमरी मिलकर सूत्रकरम निशिकीध। करि थानक पुहती बंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निशि चौसठ इंद्रमिली तिहां आवै। लेई निज ऊगतै सुरगिर स्नात्र करावै। करि जनम महोछव जननी पासे ठावै। तिहांथी सुर सबमिली दीप नंदीसर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार। घर२ गाईजै कीजै मङ्गलच्यार। इग्या रम दिवसै मिली सहू परिवार। तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन २ कलाकरी जिम चंद। त्रिहुं न्यान विराजित रूप जिसो देविंद। गुणकला विचक्षण विद्या तणोय निधान। योवन वय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥ (ढाल ४) ॥ ❀ ॥ कुमर पदै प्रभु रहितां काल सुखै गमें ए। आयो मन वैराग संयम लेवासमें ए। तव लो गंतिय देव जणावै अवसरू ए। देई संवछरी दान याचक जन सुख करू ए॥ २० ॥ स्वामी संयमलेइ इंद्रादिक सब मिल्या ए। देश बिदेश विहार करी क्रम निरदल्या ए। पामीय केवल न्यान सुरै महिमा करी ए। थापिय चउविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥ (ढाल) ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ इम श्रीगौमी पास तणा गुण जे नर गावै। ते नर नारी इह पर लोगसु बंछित पावै। संघ करी संघ पत्ति जिके गवमी पुर जावै। चोर धाड संकट टलै विघन वुराई न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय पउमावइ जास वहै सिर आण। सांवल वरण सुशोभित नवकर काय प्रमाण। कल्पवृक्ष चिन्तामणि काम गवी सम तोलै। श्री गुणशेखर सीस समय रंग इण परिवोलै ॥२३) ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तवनं ॥ १० ॥ ॥❀॥

॥ अथ एकादशी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ समवसरण बैठा भगवंत। धरम प्रकासै श्री अरिहंत। बारे परषदा बैठी जुडी। मिगसर सुदि इग्यारस वमी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना ती

न कल्याण । जनम दिक्षानें केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी रूवमी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें अपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति पर धान । ए तिथिनी महिमा ए वमी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इम हीज । पांच कल्याणक हुवै तिम हीज । पंचासनी संझा परगमी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै तेम । कुण तिथडै एतिथ जे वमी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि गिणो । लाभ अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सहु तिथि सिर राखमी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणें रह्या श्री मल्लिनाथ । एक दिवस संयम व्रत सा थ । मोनतणी परि व्रत इम पमी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै । चौविहार विधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजै घमी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोक्ष त णी पावमी ॥ ॥ मि० ॥ ९ ॥ ऊजमणो कीजै श्रीकार न्याननना उपगरण इ ग्यार २ ॥ करो कायसग्ग गुरुपाये पमी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । सुगति पुरी कीजै ढूकमी ॥ मि० ॥ ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । व्रत पचक्खा ण करो आखमी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन सहू मन गमै । समय सुंदर कहे करो व्याहमी ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री एकादसी वृद्ध स्तवनं संपूर्ण ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमेरे मनमें प्रभु तुंमेरे दिलमें । ध्यान धरुं पल २ में । पास जिणेसर अन्तर जामी । सेवकरुं छिन २ में ॥ (तुं० १) ॥ काहू को मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रभु तुमहीसुं रा च्यो । ज्युं चातक चितघनमें । (तुं० २) जोगीसर तेरी गति जाणें । अलख निरंजण छिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिब तीन भवनमें ॥ (तुं ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन बिंब नमस्कार स्तवन ॥

॥❀॥ (देशी सूरती) प्रहनठी प्रभु ध्यांनधरुं नसुं सिद्ध अनन्त । त्रिभुवन मांहै नमणकरुं जेबिंबरहंत । भुवन पति व्यन्तर योतषि वैमानिक मांह । अ-

दनुत सास्वता बिंबनमुं मनधरि उछाह ॥१॥ पंचमेरु वेताढ्य हिमाचल निषध प्रमांण । नीलवंत चित्रसेल कुंमल गजदंत वखांण ॥ रुचक नंदीसर मानु षोत्तर आदि सास्वता जांण । रिषभानन चंद्रानन वारिषेण ब्रधमाण ॥ २ ॥ आठकोम अरुलप्पन लाख सत्ताणुं हजार ॥ चवसै ब्यासी चैत्य सास्वता मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोम मिलाय । तेपन लख चवसै अठ्यासी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मतें आठकोम सत्ता वन लाख । दोयसै अठाणुं त्रिनुवनमां सहुचैत्यनी साख । अठावन लख पनरैसै वयालीसकोम । अमतीस सहस बिंबसहु सतअसीकी जोम ॥ ४ ॥ मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुरुदेस । सोरठ कछ विदेह जां गल कुसावर्त्त कहेस । नंग सोबीर वैराट मलय सांमिल सूरसेन । वरण पंचाल दशार्ण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससहु केकइ अर्द्ध जांण । साढा पचवीस देश नरतमें आर्य प्रधांन । दोय कोम अठावन लाख ब्यासी हजार । नवसै तिहुत्तर ग्रांम नगर मांहै बिंब अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्रीप सहु आर्य होय । धातकी खंम सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्द्ध पुष्करमांहें देस गिणाय । ग्रांम नगर मांहै बिंब अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धशेल उर्जि त शिखरगिरि मोटाधांम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठांम । तारंगा अर्बुद राजग्रही क्षेत्र प्रमांण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगनांण ॥ ८ ॥ द्रीप असंख्या जल थल पर्वत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण सहु बिंबरहाय । इम त्रिहुंलोक असास्वती सास्वती थांपना देख । त्रि करण सुद्धै नित प्रति प्रणमुं सहु गुण लेख ॥ ९ ॥ थापना नगवंते कही आगम मांह प्रमांण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखो सुजांण । जे उतसुत्र वचनके नाषक जासी निगोद । अनंत काल नमतां क्षणनर नहिं पांमें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रनुनी देखी नविपांमें वोध । आद्र कु मरकी रीते देखो आगम सोध । द्रव्यनाव विधिसंयुक्त सुर नर पूजै जेय । गुण पिंमस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषनादिक चौवीस तिर्थंकर नमुं मन लाय । गणधर सहु संघ मंगलकारी नित प्रति थाय ।

जन्म मरण सहु दुख दूरै करो दीनदयाल । गछ खरतर गुरु लक्ष्मीप्रधां न मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति त्रिभुवन मंमण सर्व जिन बिंब नमस्कार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ वैराग्य सिज्झाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ भूलो मन भमरा कांइभमें । भमियो दिवसनें रात । माया रोवांध्यो प्राणीयो । भमीयो परभल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी । जेहना करोरे जतन । विणसतां वार लागै नही । निरम ल राखोरे मन ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू । केहनां मा यनैं बाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आ स्यातोफूंगर जेवडी । मरवो पगलां रै हेठ । धन संची संच कांई करो । करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लख पति छत्र पति सबगए । गएलाखोंके लाख । गरभ करीरे गोखे वैसता । भए जलबल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भव सायर जल दुख भरयो । तिरवो छैरे जेह । विचमें बीह सबलो अछै । क रमें वायनें मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो । जायवो पहिलै रे पार । आगलि नही हटवाणीयो । संबल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ भू० ॥ मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाय । वस्त्रविना जाय पोढवो । ल ख पति लाकरु मांय ॥ ८ ॥ भू० ॥ महमंद कहै वस्तु वोरीयै । जे कुछआ वैरे साथ । अपणो लाभ उवारीयै । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ ॥ भू० ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सिज्झाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ कडुवारे फलछे क्रोधना । ग्यानी इम बोलै । रीसतणो रस जा णिइं । हलाहल तोलै ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोभि पूरवतणो । संजम फ ल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥ साधु घणो तपियो हुं तो । धरतो मन वैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो । चंभ कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि छै जे घर थकी । ते पहलुं घरबालें । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोध तणी गति एहवी । कहे केवल नांणी । हांणि करे जे हेतनी । जा

लवजो इमजाणी ॥ क० ॥ ५॥ उदय रतन कहे क्रोधनें । काढजो गलें सा ही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति क्रोधसिज्झाय सं० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिज्झाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ जगचूडामणि चूनं । उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ । एगो लोगा इचो । एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवछर मुसभ जिणो । छम्मासे वछमाण जिणचंदो । इइ विहरिया निरसणा । जएऊए उव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो । विसहइ बहुयाइं असरिस जणस्स । इय जीयंत कराइं । एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइऊइ चालेउ । महइ महा वछमाण जिण चंदो । उवसग्ग सहस्सेहिवि । मेरु जहा वाय गुंजा हिं ॥ ४ ॥ उद्दो विणीय विणउ । पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो वि तमत्थं । विहिय हियउ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आण वेइ राया । पयइउ तं सिरेण इछंति । इय गुरुजण मुह भणियं । कयं जलिउ डेहिं सोयव्वं ॥६॥ जह सुर गणाण इंदो । गह गण तारागणाण जहचंदो । जहय पयाण नरींदो । गण स्सावि गुरू तहा णंदो ॥ ७॥ बाहुत्ति मही पालो । न पया परि हवइ एस गुरु उव मा । जंवापुरउ कासं । विहरंति मुणी तहा सोवि ॥८॥ पडिरूवो तेयस्सी । जुग प्पहाणा गमो महुर वक्को । गंभीरो धिईमंतो । उवएस परोय आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमो । संगह सीलो अभिग्गह मईय । अविकत्थणो अ चवलो । पसंत हियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिंदा । पत्ता अयरामरं पहं दासं । आयरिएहिं पवयणं । धारिऊइ संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई । राय सुयऊा सहस्स बंदेहिं । तहवि न करेइ माणं । परियछइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स । अभिमुहा अऊचंदणा अऊा । नेछइ आसण गहणं । सो विणउ सव्व अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए । अऊाए अऊ दिक्खिउ साहू । अभिगमण बंदण नमंसणेण । विणएण सो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस प्पभवो । पुरस वर देसिउ पुरस जिठो । लोएवि पहू पुरसो । किंपुण लोगु त्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संबाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना

सहस्स माहियं । आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहवियं सा रायसिरी । न छट्टंती न ताइया ताहिं । नयरठिएण इक्केण । ताइया अंगबीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाणवि । मज्झान इह समत्त घर सारो । रायपुरिसेहिं निज्झइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणावणाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह भरह चक्कवट्टी । प्रसन्न चंदोय दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पएसु वट्टमाणस्स । किं परियत्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण दिक्खितामि अहं । नम्मग्गेण पमंतं । रक्खइ राया जणवन्य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा । जहठिन अप्पसक्खिन धम्मो । अप्पा करेइ तं तह । जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण जेण भावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो । तोनवि सी नन्ह वाय विज्झडिन । संवछर मणसीन । बाहुबलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण । सद्धं द बुद्धि चरिएण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थक्को निरोवयारी । अविणीन गविन निरवणामो । साहुजणस्स गरहिन । जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सप्पुरिसा । सणं कुमारुब्ब केइबुज्झंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७ ॥ जइ ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवमंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेमं । संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स दुक्ख मल्लि हियए । जंच मरणावसाणे । भव संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ नवएस सहस्से हिवि । बोहिज्ज तो न बुज्झई कोई । जह बंभदत्त राया । नदाइ निव मारन चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिच्चत्ताइ राय लछीए । जीवा सकम्म कलिमल । भरिय भरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ बोत्तूणवि जीवाणं । सदुक्कराइंति पावचरियाइं । नयवं जा सा सा सा । पच्चाए सो हू इणमो ते ॥ ३२ ॥ पमि वज्जि क्रुण दोसे । नियए सम्मंच पायवम्मियाए । तो किर मिगावईए । नप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति पोसह सिज्झाय समाप्ता नपदेश माला ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राईसंथारा पोसह सिज्झाय ॥ ❀ ॥

॥❀॥ निस्सिही २ णमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महामुणीणं। (नवकार ३ करेमिभंते ३ कहीयै)। अणुजाणह चिठिज्जा । अणुजाणह परमगुरू। गुण गण रयणे हिं मंडिअ सरीरा । बहु पडिपुन्ना पोरिसी । राई संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संथारं। बाहु वहाणेण वामपासेणं। कुक्कुड पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संडासं । उवट्टंतेय काय पडिलेहा । दव्वाई उवओगं । ऊसास निरुंभणा लोयं जइमे हुज्ज पमाउ। इमस्स देहस्सि माइरयणीए । आहार मुवहि देहं । सव्वं तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण । कलहा भक्खाण पर परीवाउ । अरइ रई पैसुन्नं । माया मोसंच मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु इमाइं मुक्खमग्ग । संसग्ग विग्घ भूआइं । दुग्गइ निबंधणाइं । अठारस पाव ठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मन्नस्स कस्सवि । एवं अदीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा । नाणदं सण संजुउ। सेसामे बाहिरा भावा । सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ सं जोग मूला जीवेणं । पत्ता दुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सव्वं तिवि हेण वोसरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो । जाव जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं। अरि हंता मंगलं । सिद्धामंगलं । साहू मंगलं । केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो गुत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पवज्जामि । साहू सरणं पवज्जा मि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ । अरिहंता मज्झ देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ । सिद्धाय मझ देवया । सिद्धाय कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ। आयरिया मज्झदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं। वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उव ज्झाया मंगलं मज्झ । उवज्झाया मज्झ देवया । उवज्झाया कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ । साहूणो मज्झ देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुअ । इक्किके सत्त जोणि लक्खाउ । वण पत्तेय अणंते । दस चउ दस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सु रेसु । तिरिएसु हुंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्व भूएसु । वैरं मज्झ न केणवि ॥३॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सव्वहजीव निकाय । सिरुह साख आलोयणह । मज्झह वैर नभाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु । चउदह राज भमंतु । तेमइं सव्व खमाविआ । मज्झवि तेह खमंतु इति राई संथारा गाथा समाप्ता ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्त्तव्य । सामायक, पम्हिकमणा अठपुहरी (तथा) चौ पुहरी पोसा, । देववांदणा, पच्चक्खाण पारणा, छ म्मासी तप चिंतना, सर्वकी अनुक्रमें शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणम्य श्रीजिनार्धीशं । सदगुरुं च विशेषतः । श्राद्धाहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकभाषया ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम प्रभात सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्यां पोशहशालायै । अथवा गुरुकनें । अथवा घरनें एक प्रदेशें (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पम्हिलेह्या वस्त्र पहिरी । (जो) गुरूरो योग न हुवै (तो) आप प्रमार्जित थानकै । खमासमण पूर्व क तीन नवकार गुणी थापनाजी थापै (पछै) खमासमण देई कहै । इछा कारेण संदिस्सह भगवन् । सामायक मुहपत्ती पम्हिलेहुं (गुरुकहै पम्हि लेह) पछै इछंकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पम्हिलेहै । भूमो हो य खमा० कहै । इछा० सं० भ० । सामायक संदिस्सावूं (गुरु कहै संदि स्सावेह) पछै इछंकही । वलेख० देनें कहै । इछाका० सं० भ० । सामायि क ठाउं (गुरु कहै ठाएह) पछै इछं कही । खमासमण देई । अर्द्धावन तकाय भूमो थको । तीन नवकार गुणी कहैं । इछकार भगवन पसाउकरी

सामायिकदंम उच्चरावोजी (गुरु कहे उच्चरावेमो) पछै । करेमिभंते सामाइयं (इत्यादि) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो थको । तीनवार उच्चरी । खमासमण देई । इछाका०सं०ज० । इरियावहियं पडिक्कमामि (गुरुकहै पडिक्कमह) पछै इछं कही । इछामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए (इत्यादि पाठकहै) इरियावही पडिक्कमी । एक लोगस्सनो काउसग्गकरी । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्गपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई इछा० सं० ज० । वैसणो संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछे इछं कही । वले खमासमण देई । इछाका० सं० ज० । बैसणो ठाउं (गुरु कहै ठाएह) पछे इछं कही । खमासमण देई । इछाका० सं० ज० । सिज्झाय संदिस्साउं (गुरुकहै संदिस्सावेह) पछै इछं कही । वलेखमासमण देई । इछाका० सं० ज० । सिज्झाय करूं (गुरुकहै करेह) इछं कही । वले खमासमण देई । ऊभो थको, आठ नवकार सिज्झाय करै । तथा शीतकालादि हुवै (तो) खमासमण देई । इछाका०सं०ज० । पांगरणो संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इछं कही । खमासमण देई । इछा० सं० ज० । पांगरणो पडिग्घाउं (गुरु कहै पडिग्घाएह) पछे इछं कही वस्त्रग्रहण करे । तथा सामायकवंत (अथवा) पोसहीता श्रावकप्रतें (कोई) सामायकवंत (अथवा) पोसहीतो श्रावक वांदै (तो) वंदामो एहवुं कहै । जो कोई बीजो वांदै (तो) सिज्झायं करेह । एहवो कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति प्रज्ञात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ (हिवै) एक खमा समण देई । इछाका० सं० ज० । चैत्यवंदन करुं (गुरुकहै करेह) पछै इछं कही । जयउ सामी २ (इत्यादि जय वीय राय सूधी चैत्यवंदन करै । पछैं खमासमण देई । इछाका०सं० ज० । कुसुमिण डुस्सुमिण राई प्रायछित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं (गुरु कहै करेह) पछै इछंकही । कुसुमिण डुस्सुमिण राई प्रायछित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू ससिएणं (इत्यादिकही) (४) लोगस्सनो काउसग्ग । चंदेसु निम्मलयरा ॥ सूधी चिंतवी । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग

पारी। मुखै लोगस्स कहै (जो) रात्रें मोटको गुण संबंधी दूसण लागो हुवै (तो) काउसग्ग मांहें। सागरवरगंभीरा। सूधी चिंतवीयै (इतिसंप्रदायः।

॥ ❀ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण दुस्समिण काउसग्ग करी। पछै चैत्यवंदन करवो कह्योछै। पिण परमार्थ एकहीजछै। पछै। पमिक्कमण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करै॥ ❀ ॥ हिवै पमिक्कमण ठाववानो अवसर हुवां

॥ १ खमासमण देई (श्री आचार्यजी मिश्र) कही वांदीयै॥ २ खमासमण देई (श्री उपाध्यायजी मिश्र) कही वांदीयै॥ ३ खमासमणें। जंगम युग प्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपुज्यजी का नाम कही वांदीयै॥ ४ खमासमणें। सर्व साधूजीकुं वांदीयै॥ इम च्यार खमासमणें पडि क्कमणो ठावी। इच्छकार समस्त श्रावको वांदूं (कही) गोडा लीयै वैसी मस्तक नमावी। दोय हाथे। मुहपत्ती मुखें देई। सव्वस्सवि राइय (इत्यादि कहै) पिण इच्छा कारेण संदिस्सह इच्छं (इसोन कहै) पछै शक्रस्तव कही। ऊभो थई। करेमि भंते सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि कही) इच्छामि ठाउं काउसग्गं। जोमे राइउ (इत्यादि पाठ कही) तस्सुत्तरी। अन्नत्थू ससिएणं कही। चारित्र शुद्धि निमित्तें॥ १ लोगस्सनों काउसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें। लोगस्स कही। सव्वलो ए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं। वंदण वत्तिआ ए (इत्यादि कही) १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धि निमत्तें। पुक्खर वर दीवड्ढे। (कही) सुयस्स भगवउ करेमि काउसग्गं। वंदणव त्तिआए (इत्यादि कही) काउसग्ग करै। काउसग्ग मांहें। आजूणा चौपुहरी रात्रि मांहें। इत्यादि आलोयण पाठ चिंतवे॥ ❀ ॥ ॥ (अनें एनावैतो) आठ नव कार चिंतवीयै। पछै काउसग्ग पारी। सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) संघासा प्रमार्जन पूर्वक बैसी (मुहपत्ती पमिलेहै) पछै दो वांद णादै (ते इम) अविग्रह बाहिर ऊभो थको। आधो नमी॥ इच्छामि खमा स। वंदि० जाव०। नि०। अणुजाणह मेमिउग्गहं (इतरो कही) भूमि प्रमार्जतो थको। निस्सही कही। कांइक अवग्रह मांहि पैसी। संघा सा प्रमार्जी। ऊकडू वैसी। जावै हाथ मुहपत्ती लेई। जावे कान थी जी

मणा कान लगें निलाम पूंजी। मुहपत्ती आगै मेल्ही। तेहनें मध्यभागै गुरुचरण कल्पना करी। अहो कायं (इत्यादि आवर्त्त करी) क्युं हिक ऊंचो नमी। मस्तकै अंजली करी। गुरुसांझी दृष्टिराखी। खमणिज्जो भे किलामो (इत्यादि पाठ कहै) पछै। फेर जत्ताभे। (इत्यादि आवर्त्तन कर) ऊभो थई। पाछै पगे भूमि पुंजतो। अवग्रह बाहिर स्वस्थानें आवी। आवस्सियाए (इत्यादि पाठ) सर्व कहै। बीजी वार वले इम हीज करै। (पिण) अवग्रह बाहिर न नीकलै। तिहां ऊभोज सर्व पाठ कहै। आवस्सियाए पद नकहै। (इम सर्वत्र जाणिवूं) पछै अवग्रह मांहि रही कहै। इच्छाका० सं० भ०। राइयं आलोवूं (गुरु कहै आलोएह) पछै। इच्छं आलोएमि जोमेराइन (इत्यादि पाठ भूचरतो) काउसग्ग मां हैं चिंतव्या। रात्रिसंबंधी अतीचार। गुरु समक्ष आलोवे। पछै। सव्वस्सवि राइय (इत्यादि पाठ कहै) तिहां इच्छाका० सं० भ० एपद कहिवै करी। आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पडिक्कमह) पछै। इच्छंतस्स मिछामि दुक्कडं (कही) संमासा प्रमार्जी। आसणें बैसी। जीमणो गोडो ऊंचोराषी। डावो गोडो नीचो करी (एहवूं कहै) भगवन् सूत्रभणुं (गुरु कहै भणह) पछै इच्छं कही। ३ नवकार। ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार। १ करेमि भंते (कही) इच्छामि पडिक्कमिउं। जोमेराइन (इत्यादि कही) बंदित्तू सुत्र। तंनिंदे तंच गरिहामि (सूधी कहै) पछै ऊभो थई। अब्भुठिओमि आराहणाए (इत्यादि संपूर्ण कही) बे बांदणा देई॥ अवग्रह मांहि थको हीज कहै। इच्छाका० ॥ सं०। भ०। अब्भुठिओमि आभिंतर। राइयं (कही) संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोडालीये बैसी। बेबांह पडिलेही। मुहपत्ती वांम हाथसुं मुखें देई। दाहिण हाथ गुरु सांझो करी। नींचो नम्यो थको। जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि संपूर्ण कहै) तिवारै गुरु पिण मिछामि दुक्कडं कहै) पछै। बे बांदणादेई। भूमि प्रमार्जता। पाछै पगे अवग्रह बाहिर आवी। आयरिय उवझाए। इत्यादि गाथा ३ कहे। पछै। करेमि भंते०। इच्छामि ठामि काउसग्गं। तस्सुत्तरी। (इत्यादि कही) काउसग्ग करै। काउसग्ग मांहें।

श्रीवीर कृत छम्मासीतप चिंतवै (जो) छम्मासी तपन जाणे (तो) ६ लोगस्स, अथवा, २४नवकारनो कावसग्ग करै ऐसी प्रवर्त्तीहै। पछै जे पच्चक्खाण करवो हुवै (ते) हियामांहि धारी। काउसग्ग पारी। लोगस्स कही। ऊकडूबैसी। मुहपत्ती पडिलेही। बे वांदणा देई। सकल तीरथ नामलेई। नमस्कार करी (कहै) इछ कार भगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावो जी (पछै) गुरु मुखें पच्चक्खांणकरै। गुरु अभावै थापना समहें (अथवा) साधर्मी मुखें पच्चक्खांण करै (पछै) इछामो अणुसठिं कही, वैसै (तिवारै) गुरु १ थुई कह्यां पछै। मस्तकै अंजली करी। नमो खमासमणाणं! नमो ऊर्हत्सि द्धा कही॥ संसार दावानल इत्यादि (अथवा) नमोस्तु वर्द्ध मानाय। इ त्यादि (अथवा) पर समय तिमर (इत्यादि तीन गाथा भणी) शक्रस्त व कहै। पछै। ऊभो थई। अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्ति आए (इत्यादि कही) काउसग्ग मांहें १ नवकार चिंतवी। एक श्रावक प्रथ म काउसग्ग पारी। नमोर्ऊ त्सिद्धा कही। एक गाथा स्तुति कहै। बीजा सर्व काउसग्ग मांहें रह्या सुणें (पछै) णमो अरिहंताणं कही। काउसग्ग पारै। इम आगै पिण जाणवो। (पछै) लोगस्स कही। सव्वलोए अरिहंत चेइआणं। वंदणवत्ति०। अन्नत्थू०। (इत्यादि कही) १ नवकारनों का उसग्ग करी (पारी) बीजी स्तुति कही। सिद्धाणं बुद्धाणं कहै। (पछै) वे यावच्च गराणं०। अन्नत्थू० कही। १ नवकारका० करी। (पारी) नमो र्ऊत सिद्धा कही। चौथी स्तुति कही। (बैसी)। नमोत्थुणं कहै। पछै तीन खमासमणें। पूर्वोक्त रीतें। आचार्य। उपाध्याय। सर्व साधू वांदे। इति प्रभाती पंक्रिकमण विधि. ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनःइतना विशेष है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ इतनी विधि कियां पाछे थिरता हुवै (तो) उत्तर दिशें। सीमंधर स्वामी सांहमां बैसी। कम्म भूमी २ (इत्यादि) संपूर्ण चैत्यवंदन करै (प्रांतें) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्ति०अन्नत्थू० कही। १ नवकार चिंतवी (पारी) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै। इम हीज थिरता हुवै (तो) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै॥ पछै पक्खिलेहण

करै (ते इम) खमासमणदेई । इच्छाका० सं० ज० । पडिलेहण संदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्साएह) बीजै खमासमणे । इच्छा० सं० ज० । पडिलेहण करुं (गुरु कहै करेह) पछै । इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेहै । (इमहीज दोइ खमासमणें । अंग पडिलेहण संदिस्साउं । अंग पडिलेहण करुं (कही) धोतियो कणदोरो पडिलेही । खमासमणदेई । इच्छकार जगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहा वोजी (इम कही) थापनाचार्य पडिलेही । राखै (अनें) जो गुर्वा दिक थापनाचार्य पडिलेहै । तोपिण । खमासमण देई आग्यामांगै । पछै खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । मुहपत्ती पडि लेहुं (गुरुकहै पडिलेहेह) पछै इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमासमणें इच्छाका० सं० ज० । उंही पडिलेहण संदिस्साऊं । करुं (कही) कंबल वस्त्रादि पडिलेहै । पछै । पोसहशाला प्रमार्जी । काजो विधसुं परठी । खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमें (एमूलविध जाणवी) ॥ ❀ ॥ इतरी स्थिरतानहुवै तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी । हिवणां पिण प्रायें इमहीज करता दीसैछै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै सामायक पारणेंकी विधि कहैछै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछै सामायक पारै । १ खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै फेर खमासमण देई इच्छा० सं० ज० । सामायक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथाशक्ति कही । वले खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं० ज० । सामायक पारेमि (गुरु कहै आयारोनमोत्तव्वो) पछै तहत्तिक ही । अर्द्ध नम्र ऊनो थको । तीननवकारगुणी । नीचो गोमालीयै बैसी । मस्तक नमावी । जयवंदसज्झाय (इत्यादी गाथा कहै) (अथवा) पहिलां सामायक पारी । पछै पडिलेहण करै (इहां) यथायोग्य अवसरै गुरूनें सुहराई पूछै (ते इम एक खमासमण देई कहै । इच्छकार जगवन् सुहराई, सुखतप शरीर, निरावाध, संयम यात्रा, सुखें निरवहैछैजी, छै पूज्यजी साता (इत्यादि पूछी) बीजी खमासमण देवै । श्रीजिन पति सुरि जीनी समाचारीमें इम कह्यो छै ॥ ❀ ॥ इति सामायक पारणविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संध्याकाल सामायक बिधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पाछले पहुर धर्मशाला प्रमार्जी । वस्त्रादि पमिलेहै । जो अवेलो आयो हुवै (तो) दृष्टि पमिलेहण करै । पछै । गुरु आगै (अथ वा) थापनाचार्यजी आगै आवी । भूमी प्रमार्जी । आसण बांम पास मूं की । खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं० भ० । सामायिक मुह पत्ती पमिलेहुं (गुरु कहै पमिलेहेह) पछै इच्छं कही । वले खमासमणदेई इच्छाका० सं० भ० । सामायक संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । सामायक ठाउं (गुरु० ठाएह) पछै इच्छं कही । फेर खमासमण देई । अर्द्धावनत थई । तीन नवकार गु णी (कहै) इच्छकार भगवन् पसाउ करी सामायिक दंड उच्चरावो जी (गुरु० उच्चरावेमो) पछै । करेमि भंते सामाइयं (इत्यादि) सामायक सूत्र गुरुवचन अनुभाषण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । इरिया वहियं पमिक्कमामि (गुरु कहै पमिक्कमह) पछै इच्छं कही । इच्छामि पमिक्कमिउं । इरिया वहियाए (इत्यादि पाठें इरि यावही पडिक्कमी । १ लोगस्स नो काउसग्ग करी । णमो अरिहंताणं क ही । काउसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावेसी । मुहपत्ती पडिलेही । वांदणा देई (कहै) इच्छकार भगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी पछै (गुरु) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै ॥ गुरु भणावै था पनाचार्य समहें (अथवा) स्वमुखें (तथा) वमेरा साधर्मी मुखें पचखै (अनें) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै (तो) मुहपत्ती पमिलेही । पच्चक्खाण करै । वांदणा नदै (अने) जो चउविहार उपवास हुवै (तो) पच्चक्खाण करवोछे नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पमिलेहै । एविस्तार वि धिछै । पछै १ खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । सिझाय संदि स्साउं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इच्छं कही । वले खमासमण देई । इच्छा० । सं० । भ० । सिझाय करुं (गुरु० करेह) पछै इच्छं कही । ख मासमण देई । ऊभो थको (मधुरस्वरें) ८ नवकारनी सिझाय करै । पछै खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । बैसणो संदिस्साउं (गुरु० सं

दिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्छा० संं० अ० । वैसणो गाउं । (गुरु० गाएह) पछै इच्छं कही । जो शीतकालादि हुवै (तो) खमास मण देई । इच्छा० संं० अ० । पांगरणो संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्छा० संं० अ० । पांगरणो पडिग्गाउं (गुरु० पडिग्गाएह) इच्छंकही शुभध्यान करै ॥❀॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ देवसी पडिक्कमण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ३ खमासमण देई ॥ इच्छा० संं० अ० । चैत्य वंदन करूं (गुरु कहै करेह) पछै इच्छं कही । जयतिहुयण० । जय महायस (प्र मुख) नमस्कार कही । नमोत्थुणं कही । अरिहंत चेइयाणं० (इत्यादि पूर्वोक्त रीतें) च्यारे थुई ए देव वांदै । च्यार खमासमणें आचार्यादिक बांदी । पछै इच्छकार समस्त श्रावको वांदुं । इम कही गोडालियै बैसी । मस्तक नमावी । सव्वस्सवि देव सिय (इत्यादि) तस्स मिछामि दुक्कडं क है (पिण) इच्छा कारेण संदिस्सह इच्छं (एपद न कहै) पछै ऊभा थई । करेमि भंते सामाइयं० । इच्छामि ठाउ काउ सग्गं । जोमे देवसिउ० । तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थू ससिएणं० ॥) इत्यादि कही (काउसग्ग करै । काउसग्ग माहें । आजूणा चौपहरा दिवसमें) (इत्यादि पाठ मनमें चिं तवी) णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारी । लोगस्स कहै । संथा शा प्रमार्जन पूर्वक बैसी । मुहपत्ती पडिलेही । बे बांदणा देवै । पछै अवग्रह मांहि ऊभो थको कहै ॥ इच्छा० संं० अ० ॥ देवसियं आलोउं । गुरु कहै आ लोएह । पछै । इच्छं आलोएमि० पाठ कहै । आजूणा चौपहर दिवस० । लघु अतीचार आलोवै । पछै सव्वस्सवि देवसिय (इत्यादि) इच्छा कारेण संदिस ह । सूधी कहै । तिवारै (गुरु कहै पडिक्कमह) पछै । इच्छं तस्स मिछा मि दुक्कडं (कही) संथाशा प्रमार्जी । प्रमार्जित भूमें आसणें बैसी कहै । भगवन सूत्र भणुं (गुरु कहै भणह) पछै इच्छं कही । तीन नवकार ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार १ करेमि भंते (कही) इच्छामि पडि क्कमिउं । जोमेदेवसीउ (इत्यादि कही) एक श्रावक बंदित्तू कहै । बी जा सर्व सुणै । पछै ऊभो थई । अब्भुठिओमि आराहणाए (इत्यादि सं

पूर्ण पाठ कही) बे वांदणा देवै । अवग्रह मांहिज ऊभो थको । इछाका० सं० ज० । अब्भुठिउमि आभिंतर । देव सियं खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछै इछं खामेमि देवसियं (कही) गोडालीयै बैसी । वाम हाथें मुह पत्ती मुखें धरी । दाहिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी (सर्व पाठ कहै) पछै विधिसुं बे वांदणादेइ । आयरिय उवझाए (इत्यादि ३ गाथा कही) करेमिभंते सामाइयं ॥ इछामि ठाउं काउसग्गं (इत्यादि कही) चारित्र शुद्धिनिमित्तै दोयलोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही । सव्वलोए अरिहंतचे० । वंदण० । अन्नत्थू० कही ॥ १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) ज्ञान शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर दीवड्ढे (कही) सुयस्स भगवउ० । वंदण व० । अन्नत्थू कही । १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) सिद्धाणं (कही) वेयावच्च गराणं न कहै । पछै । सुयदेवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कही । एक नवकारनों काउसग्ग करी । गुरु संयोग नही हुवै (तो) एक श्रावक काउसग्ग पारी । नमोर्हत्सिद्धा० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । (गुरु हुवै तो गुरु कहै) बीजासर्व स्तुति सुणकै काउसग्ग पारें । पछै । खित्त देवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कही । एक नवकार चिंतवी । पूर्वजी परें (क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै) पछै ऊभो थको । १ नवकार कही । संझाशा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । मुहपत्ती पडिलेही । विधसुं बे वांदणा देई । इछामो अणुसठिं कही । बैसै (पछै गुरु एक स्तुति कह्यां पूठै श्रावक समस्त मस्तकें अंजली करी । णमो खमासमणाणं । णमो र्हत्सिद्धा कही । णमोस्तु वर्द्ध मानाय) इत्यादि तीन स्तुति कहै (श्राविका । णमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पछै णमोत्थुणं कही । एक श्रावक खमासमण देई कहै । इछाका० सं० ज० । स्तवन भणुं । बीजा सर्व खमासमण देई कहै । इछा० सं० ज० । स्तवन सांभलुं (गुरु कहै भणह, सांभलह) पछै आसणें बैसी । नमो र्हत्सिद्धा० पूर्वक । वमो स्तवन कहै । पछै तीन खमासमणें । आचार्य उपाध्याय सर्व साधू बांदी । चोथे खमासमणे इछा० सं० ज० । देवसी प्रायश्चित्त

विशुद्धि निमित्तं काउसग्ग करुं (गुरु कहै करेह) पछै इछं कही। देवसी प्रायछित्त विसुद्धि निमत्तें । अन्नत्थू कही । च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै । पछै खमासमण देई । इछा का० सं० ज० । खुद्दो वद्दव जहमावणत्थं करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू०) इत्यादि कही) च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै ॥ वैसी । खमासमण देई । थंजणा पार्श्वनाथ जीनों चैत्य वंदन करै । जय वीयराय कह्यां पछै खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी ॥ सिरि थंजणयछिय पास सामिणो (इत्यादि दोय गाथा कहै) ऊभा थई । वंदणव० अन्न० कही ४लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै (इम हीज) दादा जी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्ग करै) पारी मुखे लोगस्स कहै । पछै । दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसग्ग करै । (पारि) मुखे लोगस्स कहै पछे । जोटी शांति कहै (जो) शांति न आवै (तो) १६ नवकारनो काउसग्ग करै । पछै । ३ खमासमण देई । चउक्कसायनो चैत्यबंदन जय बीयराय सूधी करै । सर्व मंगल कहै ॥ चउक्कसायनो चैत्यबंदन सूती वखत करनेंकाहै (पिण) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजहै ॥ पछै पूर्वोक्तरीतै सामा यक पारै । इति देवसी पम्हिक्कमण विधिः संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात्रीनें पाछले विघमियें निद्रा दूर करीनें । पंचपरमेष्टि स्मरण करी । गृहचिंता परिहरी । पर्वादिवस थकी । प्रथम दिवसें । पम्हिलेही राख्याजे पोसहना उपगरण लेई । पोसह शालायें थापनाचार्य समीपें । अथवा गुरुनों संयोग हुवे (तो) गुरुनें पासें आवी । भूमीप्रमार्जी । एक खमा समण देई । इरियाबही पम्हिक्कमें । पछै खमासमण देई । इछाका० सं० ज० । पोसह मुहपत्ती पम्हिलेहुं । (गुरु कहै पम्हिलेहेह) इछं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती पम्हिलेहै । पछै ऊभो थई । खमासमण देई । इछाका० सं० ज० । पोसह संदिसाउं (गुरु कहै संदिसावेह) । पछै इछं कही । खमासमण देई । इछाका० सं० ज० । पोसह ठाउं) गुरुकहै । ठाएह (पछै इछं कही । खमासमण देई । ऊभो थई । आधो सरीर नमावी ।

मुखे मुहपत्ती देई । मधुर स्वरे । तीन नवकार गुणी कहै । इछकार जग वन पसाउ करी । पोसह दंडक उचरावोजी) गुरु० उचरावेमो) । पछै करे मिअंते पोसहं । आहा० । जाव अहोरत्तंवा० । अप्पाणंवो० ॥ एपाठ तीनवार गुरुवचन अनुज्ञापण करतो उचरै ॥ ❀ ॥ पछै एक खमासमणें । इछा का० सं० अ० । सामायक मुहपत्ती पमिलेहुं (गुरु कहै पमिलेहेह) बीजी खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहै । पछै । दोय खमासमणें सामायक संदि स्सावं । सामायक ठावं (कही) खमासमण देई । अर्धावनत गात्रनमो थको । तीन नवकार । तीन करेमि अंते उचरी । दोय खमासमणें । बैसणो संदिस्सावं । बैसणो ठावं । कही । पछै दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावं । सिझाय करुं (कही) खमासमण देई । नमो थको । आठ नवकारनी सिझाय करै । सीतादि परीसहै दोय खमासमणें । पांगरणुं संदि स्सावं । पांगरणुं पडिग्घावं (कहै) । ए सर्व सामायक विधि पूर्वे कही है तिमहीज करवी । (पिणइतनो विशेष है) पहिलां इरियावही पडिक्कमीहै । ते माटै । इहां सामायक दंडक उचरयां पछै । इरियावही नही पडिक्कमी जै ॥ ❀ ॥ पीछै चैत्यवंदन । जय वीयराय सूधी करी । कुसुमण दुस्समिण काउसग्ग करै । पछै पडिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै । पछै पूर्वो क्तरीतें पडिक्कमण करै (पिण इतरो विशेषहै) च्यारे थुई ए देव वांद्यां पीछै । खमासमण देई (कहै) इछाका० सं० अ० । बहुवेलं संदिस्सावं (गुरु कहै) संदिस्सावेह (पछै इछं कही) खमासमण देई (कहै) इछाका० सं० अ० । बहुवेलं करुं (गुरु कहै करेह) पछै इछं कही । तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्रीउपाध्यायजी मिश्र २ । तीजै सर्व साधू वांदी । कम्म भूमिहि २ । (इत्यादि नमस्कार भणें) जो पमिलेहण वेला नही हुवै (तो) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी । सिझाय करै । हिवै पमिलेहण वेला पमिलेहण करै) । ते विधिपूर्वै लि-खीछै । (तोपिण) संक्षेपें फेर लिखेंहें ॥ ❀ ॥ दोय खमासमणें । इछा० सं० अ० । पमिलेहण करुं (कही) मुहपत्ती पमिलेहै । पछै दोय खमा समणें । अंग पमिलेहण संदिस्सावं । अंग पमिलेहण करुं (कहै) पछै

(गुरु वचनें) इच्छं कही । धोतियो कणदोरो पम्मिलेही । वस्त्र पहिरी । खमासमण देई । इच्छकार भगवन पसाउकरी पम्मिलेहण करावोजी । (इम कही) । थापनाचार्य पम्मिलेही थापै । अनें जो (गुर्वादिक) थापनाचार्य पम्मिलेहैं । (तो) पिण (खमासमण देई । उक्त रीतें आग्यामांगै । पछै खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । उपधि मुहपत्ती पम्मिलेहुं (गुरु कहै पम्मिलेहेह) पछै इच्छं कही । मुहपत्ती पम्मिलेही । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । उही पम्मिलेहण संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) उही पम्मिलेहण करुं (गुरु० करेह) पछै इच्छं कही । कंबल वस्त्रादि पम्मिलेही । पोसहसाला प्रमार्जी । काजो विधिसुं परिठवी । एक खमासमण देई इरियावही पम्मिक्कमें (इहां आचार दिन करमें कह्योछै) ॥ ❀ ॥ दोयखमासमणें । इच्छाका० सं भ० । वसती संदिस्साउं । वसती पम्मिलेहुं (कही) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे (इत्यादि) पिण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवै एक खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । सिज्झाय संदिस्साउं । (गुरु कहै संदिस्सावेह) बीजै खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । सिज्झाय करुं । (गुरु कहै करेह) पछे इच्छं कही । नवकार १ कथन पूर्वक (उपदेश माला) प्रमुख सिज्झाय करी । नवकार एक कही । धर्म ध्यान करै । भणें, गुणें, वखांण सुणें ॥ ❀ ॥ इम करतां पूंण पुहुर दिन चढ्यां । उग्घाडा पोरिसी थागम्या । बहु पडिपुन्ना पोरिसी कही । खमासमण देई । इरियावही पम्मिक्कमी । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । पम्मिलेहण करुं । (गुरु वचनें) । इच्छं कही । मुहपत्ती पम्मिलेही । पान भोजन पात्र पम्मिलेही राखै । पछैसिज्झाय ध्यानकरै ॥

॥ ❀ ॥ हिवै काल वेलायें । आवस्सही पूर्वक देहरै जई । पांचेशक्रस्तवे देववांदै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखिये हैं ॥ ❀ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । भूमि प्रमार्जी । पुरुष हुवै तो) प्रभूजी सुं दक्षिणपासे बैसे । स्त्रीहुवै ते वांम पासे बैसे । पछै । इच्छाका० सं० भ० । चैत्य वंदन करुं । इच्छं कही । पछै नमोत्थुणं

कहै । खमासमण देई । इरियावही पमिक्कमें । एक लोगस्सनो काउसग्ग करे । मुखें लोगस्स कहै । संझाशा प्रमार्जी बैसै । तीन (तथा) च्यार (तथा) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिंच नाम तित्थं । (इत्यादि कही) पछै । नमोत्थुणं कहै (ऊनो थई) अरिहंत चेई याणं करेमि का उसग्गं । वंदण वत्ती० । अन्नत्थू० । कही । १ नवकारनो काउसग्ग करे (पारी)एक थुईकी गाथा कहै ॥ पछै लोगस्स । सव्व लोए अरि० ! वंदण० अनत्थू० । कही । १ नव० । (पारी) २ थुई की गाथा कहै । पछै । पुक्खर वरदी० । सुअस्सभग० । वंदण० । अनत्थू० । कही । १ नव० का० (पारी) ३ थुई कीगा० । पछै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयावच्चगराणं० । अनत्थू० । (इत्यादि कथन पूर्वक) चोथी थुईसे देववांदी । नमोत्थुणं कहै फेर अरिहंतचे०कही । इसीतरे । चार थुईए देव वांदी बैसे । नमोत्थुणं कहै । नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो पा० (इत्यादि कही) पछे स्तवन कहै । पछे जय वीयराय कही । (नमोत्थुणं) सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहै ॥ ❀ ॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥ प्रवचन सारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कहीछै) ॥ ❀ ॥ तथा चैत्य वंदन वृहद्भाष्यमें इम कह्योछै ॥ १ ॥ ❀ ॥ नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रति क्रमणादि करीवली नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुईमें देववांदै । फेर शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाइं गाथा भणी । खमासमण पूर्वक । जा वंतिके० बीजी गाथा कही । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कही । जय वीय राय कहे ॥ ❀ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही पमि क्कमें । पछै सिझाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै (तो) पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पच्चक्खाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरियावही पमिक्कमें । फेर एक खमा० । इ च्छा० संं० भ० । पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पमि०) पछै इच्छं कही । खमा० देई । मुहपत्ती पमिलेहै । फेर एक खमा० देई ।

इच्छा० सं० अ० । पाणहार असुक पच्चक्खाण पारुं (गुरु कहे पुणोवि कायव्वो) पछै यथाशक्ती कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० अ० । पाणहार पारियुं (गुरु कहै आयारो नमोत्तव्वो) पछै तहत्ति कही । १ नव कारगुणी । असुक पच्चक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं । आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मिछामि दुक्कडं (कही) चैत्य वंदन करै क्षणमात्र सिझाय करी । यथा संजवै । अतिथि संविभाग करी पाणी पीवै ॥ ❀ ॥ तथा उपधान वाही हुवै । (तो) पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी । आहार करै । पछै आसण वैठो थको हीज । दिवस चरम पच्चखै । पछै । इरियावही पडिक्कमी । चैत्य वंदन करै । (ए चेत्यवंदन आहार संवरण निमित्ते छै) । ॥ ❀ ॥ इति पच्चक्खाण पारणेंकी विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछै जो बहिर्भूमि जावणो हुवै (तो) आवस्सहीकही । उप योगीथको । निर्जीव स्थंमिलै जई । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकनें पूठि अणदेई । मल मुत्र परिठवै । प्राशुक जलें शुद्ध थई । वार तीन बोसिरामि २ । एहवूं कहिवै करी । मल मुत्र बोसरावी पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक (पैसी) इरियावही पडिक्कमे । खमासमण देई । कहै । इच्छाका० सं० अ० । गमणा गमणं आलोयहं (गुरु कहै आलोएह) पछै इच्छं कही । गमणागमण आलोवै ॥ ❀ ॥ (तेइम) आवस्सही करी । प्राशुक देशें जई । संकाशा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उच्चार प्रश्रवण बोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आव्यो आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंविराहियं । तस्सामिछामि दुक्कडं ॥ इम कही बैसै । पछै पडिलेहण वेला सीम सिझाय ध्यान करै ॥ हिवै पाछलै पुहर । इरियावही पडिक्कमी । खमासमण देई कहै । इच्छाका० सं० अ० । पडिलेहण करुं । (गुरु कहैक०) पछै इच्छं कही । दूजै खमास मणें । इच्छाका० सं० अ० । पोसहशाला प्रमार्जू (गुरु कहै) प्रमार्जह पछै इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमासमणें । अंग पडिलेहण संदिस्सानं । अंग पडिलेहण करुं । (कहै) पछै (गुरुवचनें) इच्छं कही मुहपत्ती पडिलेही । दंडासणो पूंजणी प्रमुख सोंप्रमार्जी । पोसहशाला प्रमा

जें (पछै) काजो शुद्ध करी । ऊधरी । एकांतें बिखरतो परठवी । इरियाव ही पम्हिकमी । खमासमण पूर्वक कहै । इच्छकार भगवन पसाउ करी प डिलेहणा पडिलेहावोजी । पछै थापनाचार्य पम्हिलेही । थापे । गुरु समीपै (अथवा) थापनाचार्य समीपै । एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । मुहपत्ती पम्हिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह पछै इछं कही) खमा- समण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पछै दोय खमासमणें । इच्छा० सं० भ० सिज्झाय संदिस्साउं । सिज्झाय करुं (कही) उत्तरीतें हृणमात्र सिज्झाय करी । तिविहार उपवास कीधो हुवै । (तो) गुरुशाखें । पाणिहार पच्चखै ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो हुवै (तो) वांदणां दोय देई । पच्च क्खांण करै ॥ ❀ ॥ (पछै) एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । उप धि थंम्हिला पम्हिलेहण संदिस्साउं । बीजै खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० उपधि थंम्हिला पडिलेहुं (गुरुवचनें) इछं कही । दोय खमासमणें । इच्छा का० सं० भ । बैसणो संदिस्साउं । बैसणोठाउं । कही (बैसै) वस्त्र कंबला दि पम्हिलेहै । पुंजणी हुवै (तो) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवा सी तोछै । तेमाटें । सर्वपाछो कम्हिपट्टो धोतीयो कणदोरो पम्हिलेहै ॥ ❀ ॥ उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवै (तो कम्हिपट्टादि पम्हिलेह्यां पछै । वस्त्रकंबलादि पम्हिलेहै । (एविशेष छै) । पछै कालवेला सीम सिज्झाय ध्या न करै ॥ (पीछै) उच्चार प्रश्रवण २४ थंम्हिला पडिलेहै (जो) चउदस हुवै । (तो) पाखी चउमासी पम्हिकमणो करै । संवछरियें संवछरी पम्हि कमणो करै ॥ ❀ ॥ तिहां देवसी पम्हिकमणो पूर्वें लिख्योछै । तिमहीज करै । (पिण इतरो विशेष छै) । इच्छा० । देवसियं आलोएमि । इत्यादि । देव सी आलोयां पछै । ठाणे कमणे । चंकमणे । (इत्यादि पाठ कहै) (तथा) खुद्दो वद्दव काउसग्ग कियां । पछै । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० सिज्झाय संदिस्साउं । सिज्झाय करुं (कही) बैठो थको । तीन नवकार प्रमुख सिज्झाय करै इति ॥ ❀ ॥ पाक्षिकादि तीन पम्हिकमणाकी विधि आगे लिखी है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पम्हिकमणो हुवां पछै । साधुनी वेयाव्च कर । पोरसी

सीम सिझाय ध्यान करै । जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवै तो आसन्न कहितो थको । भूमि प्रमार्जे । थंमिल स्थानकें जई । देहसंका निवारै । प्रश्रवण वोसरावी । स्वस्थानकें आवै । (भगवन्) बहु पडिपुन्ना पोरसी । (इम कही) खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमें । पीछै राई संथारा बिधि करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै राई संथारा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । राई संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं । (गुरु कहै पडिलेह) पछै इच्छं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । एक खमासमणें । इच्छा० सं० भ० । राई संथारो संदिस्सावं । बीजै खमासमणें । इच्छा० सं० भ० । राई संथारो ठावूं (पछै) गुरुवचनें । इच्छं कही । चउक्कसाय पडिम झुल्लूरण । (इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जय वीयराय सूधी चैत्यवंदन करै । भूमि प्रमार्जी । संथारो उत्तर पट्टो पाथरै । पछै शरीर प्रमार्जी । निस्सही २ इम कही । संथारै बैसी । तीन नव कार । तीन करेमि भंते । झचरी । णमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महा मुणीणं । अणुजाणह चिठिज्जा । अणुजाणह परमगुरु । (इत्यादि) राई संथा रा गाथा भणी । वामहाथ सिराणे देई । सोवै । निद्रानावै । जांसीम । मुनि वर चरित्र चिंतवै । पसवाडो फेरै (तो) शरीर संथारो प्रमार्जी फेरवै । जो देह शंकाये झठै (तो) पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी । इरियावही पडि क्कमें । पछै जवन्यें पिण । तीन गाथानी सिझाय करी सोवै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति राई संथारा विधि कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै रात्रीनें पाछिलै पुहर झठी । नवकारादि गुणी । इरियावही पडिक्कमें । खमासमण देई । कुसुमिण डुस्सुमिण काउसग्ग करी । पूर्वोक्त बिधै सामायिक लेवै । इहां इरियावही न पडिक्कमें । पछै दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकारगुणी । पडिक्कमण वेलासीम सिझाय करै । पडिक्कमण वेला हुवां । पडिक्कमणो पूर्वली परे करै । (पिण इतरो विशेषछै) । राई आलोयां पछै । संथारा उवट्टणकी (इत्यादि पाठ कहै) इम संपूर्ण पडिक्कमणो करी । पडिलेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधै पडिलेहण

करी। धर्म्मशाला पूंजी। काजो ऊधरी। इरियावही पमिक्कमें। दोय खमास मणें। सिझाय संदिस्सावी। उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै। पछै पोसहपारै॥

॥ ❀ ॥ हिवै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई। मुहपत्ती पमिलेहै। फेर। खमासमण देई कहै। इच्छा० सं० भ०। पोसह पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथा शक्ति कही। खमासमण देई (कहै)। इच्छा० सं० भ०। पोसह पारयूं। (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो)। पछै तहत्ति कहै। खमासमण देई। तीन नवकार अर्द्धावनत गात्र ऊभो थको गुणी। खमासमण देई। मुहपत्ती पमिलेहै। पीछै खमासमण देई कहै। इच्छाका० सं० भ०। सामायक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो। पछै यथा शक्ति कही। खमासमण देई। इच्छाका० सं० भ०। सामायक पारयूं (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो (पछै तहत्ति कही) खमाममण देई। अर्द्धावनत गात्र ऊभो थको। हाथ जोड्यां। मुहपत्ती मुखें दियां थकां। तीन नवकार गुणी। शंभासा पमिले है। गोडाउपै बैसी। मस्तक नमावी। भयवं दसन्नभद्दो (इत्यादि भावनारूप गाथा कहै) पछै पोसहना उपगरण संवरी। देह रै जई। देव जुहारै। घरे आवी। आहार निष्पन्न हुवो देखी। साधु समीपें आवै। अतिथि संविभाग व्रत साचवण निमित्तें। साधु भणी नि मंत्रणा करी। घरे लेजावै। साधू पिण शुद्ध आहार लेई। स्वस्थानकें आवै। तिवार पछै साधूनें जे आहार दीधो। तेहनो हीज। शेष आहार आप करै॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हिवै दिन ऊगां पछै पोसहलै तेहनीं विधि लि० ॥

॥ ❀ ॥ घर थकी निश्चित थई। धर्मस्थानके आवी। सर्व उपगरण पमिलेही। कचरो विधिसुं परिठवी। इरिया वही पमिक्कमें। खमासमण पूर्वक आग्या मांगी। पोसह मुहपत्ती पमिलेहै। आगै पोसह ग्रहणनी विधि पूर्वे लिखी है। तिमहीज जाणवी (पिण) दिवस पोसह हीज करणो हुवै (तो) (पोसह दंडक उचरतां) जावदिवसं पज्जुवासामि। (एह वो पाठ कहै) अनें जो। अठपुहरी करवो हुवै (तो) जाव अहोरत्तं प

ज्जुवासामि । (एहवो कहै) पछै सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण कुसुमिण डुस्सुमिण काउसग्ग करी । पम्हिकमणों करी । दोय खमासमणें बहु वेलं संदिस्सावै २ (अनें जो) पूर्व्वे पम्हिकमणो गुरु साथे कर्यो हु वै (तो) पम्हिकमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वस्त्र । ते पहरी । पोस ह सामायक सर्व विधि करी । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्सावै । २ (तथा) जो गुरु सें जूदो पडिक्कमणो कर्यो हुवै (तो) गुरु पासै आ वी । पोसह सामायक सर्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें । मुहपत्ती पम्हिलेही । बे वांदणा देई । इच्छाका० सं० न्न० । राइयं आलो ऊं । (गुरु कहै आलोएह) पछै राई आलोवै । फेर १ खमासमण देई । इ च्छाका० सं० न्न० । अब्भुट्ठिमि अब्भिंतर । राईयं खामेमि (गुरु कहै खामेह) पीछै सर्व पाठ कहै । राई खामें । पाहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पचख्योथो । तेमाटें । पछै । गुरु शाखै पच्चक्खाण उपवासनो करै । पछै । दो य खमासमणें । बहुवेलं संदिस्साउं० ३ । (ए तीन प्रकारका विकल्प जाण वा) । हिवे पम्हिलेहणतो पूर्वे करीछै । (तो पिण) । आदेश मांगवो । (तेइम) खमासमण देई । इच्छा० सं० न्न० पम्हिलेहण संदिस्साउं । वीजै खमासमणें । पडिलेहण करुं (कही) मुहपत्ती पम्हिले है । पछै । इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पडिलेहै । पछै । वली खमासमण देई । इच्छकार न्नगवन पसाउ करी पम्हिलेहण पम्हिलेहावो जी । (इम कहै) पछै । एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० न्न० । उपधि मुहपत्ती पम्हिलेहुं (कही) कोई वस्त्र अण पम्हिलेह्यो राख्यो हुवै (तो) पडिलेहै । (नहींतो) वली आसण पडिलेहै । पछै दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै । आगै सर्व क्रिया पूर्वे अठपुहरी पोसहमें लिखीछै । तिमहीज जांणवी । पिण इहां । अठ पुहरी पोसहीतो) पाछली रातें वली सामायिक न लेवै । जिणें दिवस सं बंधी चौपुहरी पोसह लीधो हुवे । (ते) पाछलै पुहर । पच्चक्खांण कियां पछै । दोय खमासमणें । उहीपडिलेहण संदिस्साउं । उहीं पडिलेहण करुं । (कहै) पिण थंभिला पद नकहै । अनें थंभिला नही पडिलेहै । यह

निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विसेष विधिही सो बतलाई ॥ ❀ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौपुहरी । पोसो ऊचरयो है । पछै संध्यानी पम्लिेहण करतां । रात्रि पोसहनो भावथयो । (तो) पच्चक्खाण कियां पछै । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पम्लिेही । तीन नवकार गुणी तीनवार पोसह दंडक उचरै । (तिहां) जाव रत्तिं पज्जुवासामि (इम) पाठ ऊचरै । पछै । सामायक विधि पूर्वं लिखी है तिम करै (पिण) सामायक उचरयां पछी । दोय खमासमणें । सिज्झाय संदिस्सावी । आठ नवकार कही । बैसणो संदिस्सावी । पांगरणो संदिस्सावै । पीछै । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । उंही थंमिला पम्लि लेहण संदिस्साउं । उंही थंमिला पम्लिहेण करुं (गुरु कहै करेह) इच्छंकही । उपधि पम्लिे है) आगे सर्वक्रिया पूर्वं लिखी तिम जांणवी । (तथा) जे श्रावक उपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोस हनों भावथयां । पाछले पुहर धर्म स्थानके आवै । जो वसती प्रमार्जी हुवै । (तो सरयो) नहींतो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व उपग रण पम्लिेही । इरियावही पम्लिकमें । पीछै चौविहार पच्चक्खाण करी । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पम्लिेही । दोय खमा समण देई । पो सह संदिस्सावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनवेर पोसह दंडक ऊचरै । (तिहां) दिवस मेसं रत्तिं पज्जुवासामि (कहै) संध्या हुवै । (तो) रत्तिं पज्जुवासामि कहै पीछै । बिहुं खमासमणें सामायक मुहपत्ती पम्लिेहै । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्सावै । फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिभंते ऊचरै । दोय खमासमण देई । सिज्झाय संदिस्सावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमा समण देई । बैसणो संदिस्सावी । शीतादिकै बे खमासमण देई । पांग रणुं संदिस्सावै । पीछै । बे खमासमण देई । अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पम्लिेहै । फेर बे खमा समण देई । उंही थंमिला पम्लिेहण

संदिस्सावी। (जो) अण पम्लिलेह्यो उपगरण हुवै। (तो) पम्लिलेहै (जो) सर्व उपगरण पम्लिलेह्या हुवै। (तोपिण) थानक शून्यता टालवा भणी। वले आसण पम्लिलेहै। पम्लिक्कमण वेलासीम सिझाय ध्यान करै। पीछै। उच्चार प्रश्रवणना (२४) थंभिला पम्लिलेही पम्लिक्कमणों करै। (तथा) पाउलीरातें। वली सामायक नलेवै। इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवाना विकल्प जाणवा) ॥ ❀ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ थंभिला पम्लिलेहण पाठ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ ❀ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ ❀ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एथंभिला पम्लिलेहण पाठकहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै थंभिला कहां २ करणा सोकहे है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ६ थंभिला सय्याकै दोनुं तरफ, दहणें पासे (३) वामपासे (३) पम्लिले है ॥ ६ थंभिला दरवज्जेकै भीतर पासे दाहिणें ३ वामें ३ पम्लिले है ॥

६ थंभिला दरवाजे के वाहर दोनुं पासे पग्भिले है ॥ ६ थंभिला (जहां) उचार प्रश्रवणकी जगा दोनुं तरफ पग्भिले है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति २४ थंभिला पग्भि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ ❀ ॥ (तिहां) प्रथम बंदित्तू सूत्र पर्यंत । देवसिक पग्भिक्कमी । १ । खमासमण देई । देवसी आलोइयं पग्भिकंता । इच्छा० सं० भ० । पक्षी मुहपत्ती पग्भिलेहुं । (चौमासै) चौमासी० मुह० (संवछरीयें) संवछरी मुहपत्ती पग्भिलेहुं । पछै (गुरुकहै पग्भिलेह) पछै इच्छं कहै । दूजी खमासणदेई । मुहपत्ती पग्भिलेही । वांदणाद्यै । तिहां (पक्खीमें) पख्खो वइक्कंतो । (चौमासी में) चौमासी वइक्कंतो । (संवछरीमें) संवछरो वइक्कंतो । इम यथा योग्य कहै । (पछै गुरु कहै) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिकै पाक्खिक (चउमासिक) संवछरिक भणज्यो । ढींक जयणा करज्यो । मधुर स्वरै पग्भिक्कमज्यो । खासै सो विवरा सुध खासज्यो । मांझलमें सावचेत रहज्यो पछै सगलाही कहै । तहत्ति । पछै ऊठी । इच्छाका० सं० भ० । संबुद्धा खामणेणं । अब्भुठिओवि आभिंतर । पक्खियं (३) खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछै मस्तकैं अंजली करतो थको । इच्छं खामेमि पक्खियं (३) कही । गोडालीयें वैसी । मस्तक नमावी । दाहिण हाथ गुरु साहमो करी मुहपत्ती मुखें देई । (पक्खियें) पनरसन्हं दिवसाणं । पनरसन्हं राईणं । जंकिंचि अप्पत्तियं । (इत्यादि सर्वपाठ कहै) चउमासे ॥ चउएहं मासाणं । अठएहं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राइं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि कहै) संवछरीयें ॥ छवाल सएहं मासाणं । चोवीसएहं पक्खाणं । तिन्निसय सठि राइं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादिकहै) तिवारे (गुरु पिण मिछामि दुक्कडं कहै) । तिहां दोय साधु उचरता हुवै (तो) पाखियें (३) चौमासीयें (५) संवछरियें (७) साधुनें खमावै । पछै ऊठी । अवग्रह मांहि रह्यो कहै । इच्छाका० सं० भ० । पक्खियं आलो वूं (गुरु कहै आलोएह) पछै इच्छं आलोएमि । जोमे पक्खिउ (३) अइ यारो कउ (इत्यादि सूत्र भणी) संक्षेपै (अथवा) विस्तारें । पाखी

चौमासी। संवछरी। अतीचार आलोवे। पछे। सव्वस्सवि पक्खिय (३) इत्यादि। इछाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे। तिवारे (गुरु कहे) चउत्थेण पक्किमह (चौमासे) छठेण पक्किमह (संवछरीयें)। अट्ठमेण पक्किमह। इछं। तस्समिछामि दुक्कडं (कही) द्वादशावर्त्त वांदणादेवे। पछे। इछा कारेण संदिस्सह भगवन्। देवसियं आलोइयं पक्किंता (१) पत्तेय खामणेणं। अब्भुठिउमि अब्भिंतर। पक्खियं। (३) खामेऊं। (गुरु कहे खा०) पछे। इछंखामेमि पक्खियं। ३ (इत्यादि पाठ) सर्व पूर्वे कह्यो। तिम कही। मिछामि दुक्कडं देई। खमावे। पछे। बे वांदणादेई। भगवन् देवसियं आलोइयं पक्किंता। पक्खियं (३) पक्किमावेह। (गुरु कहे सम्मं पक्किमह)। पछे इछंकही। करेमि भंते सामाइयं। इछामि ठामि काउसग्गं। जोमे पक्खिउ (३) (इत्यादि कही) तस्सुत्तरी० अन्न त्थू० कही। काउसग्ग करे) गुरु पाखी सूत्र कहे। ते सांभले। अनें गुरु थकी जूदा पक्किमता हुवे (तो) एक श्रावक खमासमण देई। कहे। भगवन सूत्र भणुं। (गुरु० भणह)। इसो वचन मनमें धारी। (इछं कही। ऊभो थको। हाथ जोमी। मुहपत्ती मुखें देई। तीन नवकार कही। मधुर स्वरे सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो। (वंदित्तू सूत्र गुणें) बीजाश्रावक। करेमि भंते०। इछामि ठाउं काउसग्गं। तस्सुत्तरी (अन्नत्थू कही) काउसग्गमें रह्या सुणें (सूत्रप्रांते) णमो अरिहंताणं कही(काउसग्गपारी) ऊभा थका तीन नवकार गुणी (बैसे) पछे तीन नवकार (३) करेमि भंते कही। इछामि पक्किमिउं। जो मे पक्खिउ (३) इत्यादि कही। (वंदित्तू सूत्र गुणें) पक्किमे देवसियं सव्वं। (एहनें ठिकाणें) पक्किमे पक्खियं। चौमासीयं। संवछरीयं (सव्वं कहे) पछे ऊठी। अब्भुठिउमि आराहणाए (इत्यादि परीपूर्ण भणी) खमासमण देई। इछा० सं० भ०। मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं। काउसग्ग करूं (गुरु कहे करेह (पछे इछं कही। करेमि भंते सामा०। इछामि ठाउं काउसग्गं। तस्सु०। अन्नत्थू। (इत्यादि कही) पाखियें (१२) लोगस्स। चौमासे। (२०) लोगस्स। संवछरीयें (४०) लोगस्सनो काउसग्ग करे। एक नव

कार ऊपर । काउसग्ग करी । (पारी) लोगस्स कहै । बैसी । मुहपत्ती पडिलेही । बे वांदणा देई । इच्छा० सं० अ० । समाप्ति खामणेणं । अ ब्भुट्ठिउमि अभिंतर । पक्खियं । (२) खामेऊं (गुरु कहै खामेह) पछै । इच्छं खामेमि पक्खियं । (इत्यादि पाठ) पूर्वे कह्यो । तिम कहै । (पछै) इच्छाका० सं० अ० । पाखी (३) खामणा खामूं (गुरु कहै) । पुण्यवंतो च्यारवेर खमासमण देई । तीन २ नवकार कही । पाखी (३) समाप्त खा मणा खामह । पछै । श्रावक एक खमासमण देई । मस्तक नींचो नमावी तीन नवकार गुणें । इम च्यार वार कहे । पछे । (गुरु कहै नित्थारग पार गाहोह (पछै । श्रावक कहै । इच्छं । इच्छामो अणुसट्ठिं (कही) (गुरु कहै) पुण्यवंतो । पाखीनें लेखै । एक उपवास । (अथवा) दोय आंबिल) अ थवा) तीन नीवी । (अथवा) च्यार एकासणां । (अथवा) बेहजार सि ज्झाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक अ णिज्यो ॥ इम चौमासै एसर्व दुगणो कहणो । संवछरीयें त्रिगुणो कहणो पछै जिणें तपकीधो हुवै । ते पडिक्कमणं कहै । न कीधो हुवै । ते कहै त हत्ति । पछै बे वांदणां देई । अब्भुट्ठिउमि अभिंतर । देवसियं खामेमि । इत्यादि कहै) पछै बे वांदणा देई । आयरिय उवज्झाए० तीन गाथा कहै । इम आगै सर्व विधि । देव सिक पडिक्कमणानी करै । पिण इतरो विशेष है । श्रुत देवतानो काउसग्ग करी । स्तुति कहै । पीछे अवण देवयाए करे मि काउसग्गं (इत्यादि विधें) अवन देवतानों काउसग्ग करी । स्तुतिकही । क्षेत्र देवतानो काउसग्ग करै । (तथा) तीने पर्वे । वधो स्तवन अजित शां ति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां । पछै । एक श्रावक गुर्वाज्ञायें । नमोर्हत्सिद्ध कही । शांति स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणें । जिणांनें रात्री पोसह न हुवै (ते) पोसह सामायिक पारी सांजलै ॥ ❀ ॥

इति पाक्षिकादि (३) पडिक्कमणविधिः कही ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें उम्मासी तपचिंतन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो उम्मासी तपहै ॥ रे जीव

ते करि सके। नकरिसकुं । इम एक दिन उंगो । करि सकै (न करिसकुं) इम एकेक दिन उंगो करतां । उगुण तीस दिन ऊणा छम्मास हुवै । तिहां सूधी पूछियै। पछै। (पंचमासी) करि सकै । न करिसकुं । एक दिन ऊणी पंचमासी करि सकै (न करिसकुं) । इम एकेक दिन उंगो करतां उगुण तीस दिन ऊणी । पंचमासी लगें पूछियें । पछै। (चउमासी) एक दिन ऊणी । दोय दिन ऊणी । इमहीज त्रिमासी । दुमासी । यावत् (एक मासकरि सकै) । नकरि सकुं । पछै। एक दिन ऊणो कियां । सो लह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सकै (न करिसकुं) । पछै। बे बे न्नात घटावतां पूछियै। (इम) वत्रीसम करि सकै (न करिसकुं) । (इम) त्रीसम। अठा वीसम । गावीसम । चौवीसम। बावीसम। बीसम। अठार सम । शोलसम । चौदसम । बारसम । दशम । अठम। छठ। चउत्थ तप करि सकै । (न करि सकुं) । (इम) आंबिल । निवी। एकासणो पुरिमड्ढ । पोरसी । नवकारसी । (तांई) जो पच्चक्खांण करवो हुवै। (सो) मनमें धारी। काउसग्ग पारै ॥ इति छम्मासी तप चिंतवन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रशस्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुहा ॥ श्रीजिन चंद सुरिंद। नितुराजत गछ राजान। वाचक अ मृत धर्म गणि । सीस क्षमा कल्याण ॥ १ ॥ सय अढार अम्तीस माझि। जेशलमेरु सुथान। श्रावक विधि संग्रह कियो । मूल ग्रंथ अनुमान ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ आचार ग्रंथनामः ॥ ❀ ॥

श्रीजिनप्रभसूरि कृत विधि प्रपा ॥ १ ॥ खरतर मंम्लाचार्य तरुण प्रभ सूरि कृत षमावश्यक बालावबोधं ॥ २ ॥ सामाचारी शतकं ॥ ३ ॥ वंदारुवृत्तिं ॥ ४ ॥ प्रवचन सारोद्धारवृत्तिं ॥ ५ ॥ आचार दिनकरं ॥ ६ ॥ श्रीजिन प तिसूरि सामाचारी पत्रं ॥ ७ ॥ शिवनिधानो पाध्याय कृत लघु विधि प्रपा दि ॥ ८ ॥ ग्रंथाश्च विलोक्य अयं विधि प्रकाशो निर्म्मित ॥ ❀ ॥

इति श्रावक विधि प्रकाशः परि पूर्णतामगात् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ साधू (अने) श्रावक । दोनुं टंक पम्हिकमणो करे । तेहनो हेतु (नांव) मुतलब लिखतेहें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहां पापसेती निवर्त्तन होणो (ते) पडिक्कमणो कहिये ॥ तथा ॥ ग्यानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्याचार ५ (एपंच आचार सुधि निमित्तें) श्रीगुरु साखें । अनें गुरु अन्नावे । थापनाचार्य शाखे पम्हिकमणो करवो (तेहना छ अध्ययनछै) सामाइयं १ । चउवीसत्थव २ । वंदणयं ३ । पडिक्कमणं ४ । काउसग्गो ५ । पच्चक्खाण ६ मिति (तिहां) सामायिकें करी चारित्राचारनी सुधिथायै । चउवीसत्थें करी दर्शना चारनी सुधता थायै । वांदणें करी ग्यानादिक आचार सुध थाये । पम्हिक्कमणें करी ग्यानादिकना अतीचारांनी सुधि थायै । अनें पम्हिक्कमणाथी जे अतीचार शुधनथाइ (ते) काउसग्गें शुधथाइ । पच्चक्खाणें करी तपाचार शुधथाइ । अनें वीर्याचार इणें छएकरी शुध थाइ ॥ हिवै देव वांदनादि अनुक्रमें पम्हिक्कमणो थापै । (तेहना हेतु कहै) ॥ सुध पम्हिक्कमणो मोक्षनो कारण छे । ते मंगल विना निर्विघ्नपणें प्रमाण नचढे । तिसवास्तै धुरें अवश्य मंगल करवो । तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है । पिण श्रीदेव गुरु वंदन सरीखो वीजो मंगल कोई नही (तेमाटे) प्रथम नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे थुईए देववांदी । च्यारे खमासमणे गुरूवां दे ॥ लोकमें पिण पहिलां राजानें नमस्कार करी (पछै) प्रधान प्रमुखनें नमें । इहां राजा समांन तीर्थंकर (अने) प्रधानादिक समान आचार्यादिक छै (इम मंगल कर) पम्हिक्कमणानें धुरे समस्त अतीचारनो बीजक (सव्वस्सवि देवसिय) इत्यादि कही मिछामि दुक्कडं देवै । पछें ज्ञानादिक मांहे । चारित्रना अधिकपणा हुंती । प्रथम चारित्राचार शुधि निमित्तें । करेमि भंते सामाइयं (इत्यादि तीन सूत्र भणें) तिहां समता परिणामें सर्व धर्म कार्यकरवा (ते माटें) प्रथम सामायक आवश्यक कह्यो ॥ ❀ ॥ पछै प्रभातनी पम्हिलेहण थी मांमी । दिवसना कीधा अतीचार गुरु आगै आलोइवाछै । ते धार्यां विना भली रीतें आलोवाइ नही (ते माटें) काउसग्ग करै । अतीचार मनमें धारै । पछै लोगस्स कहै (जे माटे) एसामायिका

दिक सुद्ध मार्ग (इहां) रिषन्नादि चउवीस तीर्थंकरे आपसेव्यो (अनें) न व्य जीवनें उपदिस्यो । ते कारणें । बीजै आवश्यके चउवीस नगवंतनी स्त वना करवी कही ॥ ❀ ॥ पछै धर्ममांहें विनयना प्रधानपणा हुंती । गुरुनें वांदणा देई । अतीचार आलोइवा । अनें वांदणाछे । तेशरीर सुद्ध विना नदेणी (ते माटे) प्रथम मुहपत्ती पमलेही । सुद्धकरी । तिणथी काया पमि लेहै ॥ तीजै आवश्यके वांदणा देवी कही ॥ ❀ ॥ पछै गुरु आगै । अती चार आलोई प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पमिक्कमह) (जे माटे) कित ना इक अतीचार तो आलोयां थी सुद्ध थया । अनें कितना इक न थया (ते सुद्ध करवानो) चोथो आवश्यक पमिक्कमणो कह्यो ॥ ❀ ॥ तिहां उत्तम कार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा (ते माटे) प्रथम नवकार कहै । अ नें समनाव धारी पमिक्कमवुं (ते माटे) पछै सामायिक सूत्र कहै । तिवार पछै साधु श्रावक आप आपणा अतीचार पमिक्कमवा निमित्तें सूत्रनणें । पछै समस्त अतीचार रूप नार निवर्त्तवे करी । हलको हुवो थको । ऊनो थई सूत्र पूर्ण करै । इम अतीचार पमिक्कमी । श्रीगुरुनें विषै पोतानो कीधो कोई अपराध खमाइवा निमित्तें । वांदणा देवै । पछै गुरु प्रमुखनें खमावी काउसग्ग निमित्तें । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुनें अपणो आधीन पणो जणाइवा निमित्ते पिण जाणवी । पछै (श्रावक) आयरिय उवझाए (इत्यादी तीन गाथा नणें) हिवे आलोयण पमिक्कणा थी शुद्ध न थया (जे) चारित्रादिकना मोटा अतीचार (ते) शुद्ध करवानें अर्थे पांचमो आ वश्यक काउसग्ग करै ॥ ❀ ॥ तिहां । प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र न णी । चारित्राचार सुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चिंतवै । इहां तीजी वार वले सामायक उच्चारण कीधो (ते) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें की धी सफल थाइ । ए अर्थे । पछै ज्ञान थी समकित अधिको है (ते माटें) दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कही । सव्वलोए (इत्यादि) सूत्र नणी । एक लोगस्सनो काउसग्ग करै । पछै श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर दीवड्ढे (कही) सुयस्स नगवउ (इत्यादि नणी) बीजो एक लोगस्सनो काउसग्ग करै (इहां) प्रथम काउसग्ग दोय लोगस्सनो कह्यो । ते ज्ञाना

दिक थी चारित्रनो अधिकपणो छे (ते माटे) वली । ग्यानादिकनी अपेक्षा यें, चारित्रनें अतीचार घणा लागे । तेपिण कारण जाणवो । पछै । ज्ञान । दर्शन । चारित्राचार । निरतीचार पणें आचरवाना फलनूत श्रीसिद्ध नगवान, तिणारी स्तवना । सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यादि नणें) पछै । हिवणां नपगारी श्री महावीर स्वामीछै (ते माटे) जो देवाण विदेवो (इत्यादि तेहुंनी स्तवना करै) पछै महा तीर्थपणा हुंती । नर्जिन शेत्र सिहरे (इत्यादि तीर्थ स्तवना करै) इम । चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार सुद्ध करी । समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणछै (तेमाटें) श्रुति समृ द्धि निमित्तें । श्रुत देवतानों कानसग्ग करी स्तुति कहै । पछै जेहना क्षेत्र में रहियै । क्षेत्र देवतानों कानसग्ग करी । स्तुति कहै । (सिद्धांत माहें) तीजै बतें निरंतर अवग्रह याचना रूप नावना कहीछै । ते साचवणें नि मित्तें ए कानसग्ग संनवै है । ए दोनुं कानसग्ग पूर्वधारीये आचरया छै । (आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, नाष्यादिक माहे) श्रीहरिनद्र सूरि प्रमुख मोटे आचार्यें कह्याछै (ते माटें) प्रमाण है । पछै कानसग्ग थी । केई अती चार सुद्ध न थया ते सुद्धकरवानें । छठो आवश्यक पच्चक्खाण कह्यो ॥ ❀ ॥ तेपूर्वे कीयो होय (तो) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक कही । मुहपत्ती (अनें) काया पमिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इछामो अणुसठिं कहै । तुह्मारी आज्ञायें में पमिक्कमणो कीधो । एहवुं गुरुनें जणा विवा निमित्तें । ए वांदणा कह्या । इतरे पमिक्कमणो परिपूर्णथयो ॥ ❀ ॥ (हिवै) निर्विघ्नपणें पमिक्कमणो पूर्ण हुवा थकी घणो हर्ष नपनो । तिणें करी । गुरु एक स्तुति कह्यां थकां । सर्व साधु श्रावक वर्धमान स्वरे । तीन स्तुति कहै (इहां गुरुना वचननें अंते) शिष्यादिक । नमो खमासमणा णं (एहवो गुरुनें नमस्कार कहै) ते गुरु वचननो बहुमान रूपछै । पछै शक्रस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु नक्ति पूर्वक सफल थायै (ते माटें) पमिक्कमणांनें प्रारंने (तथा) अंतें । देव गुरु वंदन कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवै पमिक्कमणां मांहें । चारित्रादि सुद्धि निमित्तें । पूर्वे कानसग्ग कीधा छे । तोपिण वली विशेष शुद्धि निमित्तें । च्यार लोगस्स

नो काउसग्ग करी। मंगल निमित्तें लोगस्स कहै । जे साधु श्रावक आत्मा थींहुवै। ते ए हेतु समऊी । विधि पूर्वक उपयोग सुं पमिक्कमणो करै। ते लीलायें भवसमुद्र तरै। सिद्धि संपदा वरै॥ ❀ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः। प्र ति क्रमण हेतवः। निबद्धा भाषयोद्धृत्य। साधु श्राद्धादि हेतवे॥ १ ॥ वा चकामृत धर्माणां। शिष्येणात्म हितेच्छना । क्षमाकल्याण गणिना । वीका नेर पुरे मुदा॥ २॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम्॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जयजय त्रिभुवन आदिनाथ पंचमगति गामी ॥ जयजय करुणा शांतिदांत भविजन हितकामी॥ जयजय इंद नरिंदवृंद सेवत सिरनामी। जयजय अतिशय नंतवंत अंतर गति जामी ॥ १ ॥ पूर्व विदेह विराजताए। श्री सीमंधर स्वामि । त्रिकरण सुध त्रिहुंकालमें । नित प्रति करुं प्रणाम॥ २॥ इति॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधरजिनस्तवन॥ ❀ ॥

॥ पूर्वविदेह पुखलावती । जयोजगापतीरे । श्रीसीमंधरस्वामि प्रहसमनित नमुंरे॥ १ ॥ जगत्रय भाव प्रकाशता। भविप्रतिबो धतारे। उपगारी अरिहंत ॥ प्रह० ॥ २ ॥ धन्यनयरी धन्यते नरा। धन्यते धरारे॥ विचरै जिहां जिन राज। प्र० ॥ ३ ॥ धन्य दिवश धन्य तेघडी। देखसुं आंखडीरे । भक्तिवछल भगवंत। प्रह० ॥ ४ ॥ महरनिजर अवधारजो। पतित उधारजोरे। जिनहरख घणें ससनेह। प्रहसम नितन मुंरे॥ ५ ॥ ॥ इति पदम्॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिबा। वीनतडी अवधारलालरे । परम पुरुष परमेसरू। आतम परम आधारलालरे० ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवल ग्यान दिवाकरू। भांगे सादिअनंत लालरे भासक लोकालोकको। ग्यायक गेयअनंतलालरे॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्रचंद्रचक्रीसरू। सुरनर रहे कर जोम लालरे। पदपंकज सेवे सदा। अणहुंतें इककोम लालरे॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजरवसे । मुझ मन हंस नितमेवलालरे। चरणसरण मोहि आसरो। भव२ देवाधिदेवलालरे॥

॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधमउधारण गो तुमे । दूर हरो भवदुःखजालरे । कहे जिन हरष मयाकरी । दे ज्यो अविचल सुखलालरे (श्री० ॥ ५ ॥

॥ इति सीमंधरजिनस्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जय जय नाभिनरिंद नंद सिद्धाचलमंडण । जय २ प्रथम जिणंद चंद भव दुःख विहंडण । जयजय साधु सुरिंद वृंद वंदिय परमेश्वर । जय २ जगदा नंद कंद श्री रिषभ जिनेश्वर ॥ १ ॥ अमृत समजिन धर्म नोए । दायक जगमें जाण । त्वत्पद पंकज प्रीतिधर । निसदिन नमत कल्याण ॥ २ ॥ इति० ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ सिद्धो विज्जाइचक्की नमि विनमि मुणी पुंडरियो मुणिं दो पाली पञ्जुन्न संबो अरह सुग मुणी सेलगो पंथगो अ रामो कोमी पंच द्रावड नरवई नारद पंडुपुत्ता । मुत्ताएवं अणेगे विमल गिरि महं तित्थमेयं नमामि ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज पुंडर गिरिजोटिया । प्रगट्यो परमआनंदा । मोह तिमर दूरेजए । जागा भवभयफंदा ॥ आ० ॥ १ ॥ मरुदेवाजीकेलाडला । नाभिराय के नंदा रिषभजिनेसर सुखकरू । दिनमणिज्युंदीपंदा ॥ आ० ॥ २ ॥ पूर बनिनाणुं रायणतले । आया प्रथम जिणंदा । नेमिविना सहुजिनवरै । इन गिरि कोसेवंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥ कलुकाले इण भरतमें । तारण झाझ समंदा । अनंत जीव मुगतैगया । वीतराग भाषिंदा ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौमुख जिननें आदले । नववसिबिंब सोहंदा । आत्मागुण निरमलकरी । मोहन सुःखपा वंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ इति सिद्धगिरी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धाचल गिरिजेट्यारे । धन्य भाग हमारा । सि० (टेर) एगि खरनी महिमा मोटी । कहतांनावेपारा । रायण रूंख समोसरया स्वामी । पूरव निनाणूं वारारे ॥ धन्य० सिद्धा० १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेसर । चौमुख प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्यसुं पूजाभावे । समकित मूल आधारारे ॥

ध० सि०२ ॥ नाव नगतिसुं प्रनुगुण गावे अपणा जनम सुधारा । यात्राकरी नविजन सुनभावे नरक तिर्यंच गति वारारे ॥ ध० सि० ३ ॥ दूर देशांतर थी हूंआयो श्रवण सुणीगुण ताहरा । पतित नधारण विरुध तुमारो । एतीरथ जगसारारे ॥ ध० सि० ४ ॥ संवत अढार वयांसी आषाढै । वदि आठम नोमवारा प्रनुजीके चरण प्रताप संगमें । हुमारतन प्रनुप्यारारे ध० सि० ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीआदिजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

जय २ जगदानंदन । जयजय वरनानि नंदन जिणंद । जय २ करुणा सागर । मनोरथा अद्य फलतामे ॥ १ ॥ अद्य मे सफलं जन्म । अद्य मे सफला क्रिया । प्रयास सफलोमेद्य । दर्शना दादिमप्रनो ॥ २ ॥ प्रातरुत्थाय एनाहं । मारुदेवो नमस्कृतः । हेलयामोहनृपाल । तेन नूनं नमस्कृतः ॥ ३ ॥ सुकृतं संचितंयेनः । दुकृतं तेन मुंचितं । येनः प्रथमनाथस्य । चरणां नोजनं चितं ॥ ४ ॥ त्रिनुवना नयदान विधायनी । त्रिनुवना स्तुति वंनित दायनी । त्रिनुवनः प्रनुतः पदशालिने । नगवते रिषनाय नमोनमः ॥५॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीशान्तिजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

शांतये शांति कामाय । विघ्नशांति विधायिने । नमः शांति स्वरूपाय । शांतेपदमुपेयुषे ॥ १ ॥ अशिवं शमया मास । गर्नसंस्थोपि यःपुराः । तन्ना माग्रहणादेवः । विघ्नासाम्यंति सांप्रतं ॥ २ ॥ श्रीशांति नाम मंत्रंयो । जपेत् निर्मल मानसः । श्रेयःसंपद्यते तस्य । पापशांतिर्नवेदपि ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

शोलम जिनवर शांतिनाथ सेवो सिरनामी । कांचन वरण सरीर कांति अतिशय अनिरामी । अचिरा अंगज विश्वशेन नरपति कुलचंद । मृगलंगन धरपति कमल सेवइ सुरवृंद ॥ १ ॥ जगमांह अमृत देवए । जासु अखंमित आण । एकमनें आराधतां । लहिये कोन्निकल्याण ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनेमिजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

प्रहसम प्रणमुं नेमिनाथ जिनवर जयवंत । यादवकुल अवतंस हंस उत्तम

गुणवंत । समुद्रविजय शिवा देवीमात मति सहज उदार । सुंदर स्याम सरीर जोति सोहे सुखकार ॥ १ ॥ गढगिरनारइजिणें लह्योए । अमृत समतस बाण ध्यानधरंता एहनो । प्रगटे परम कल्याण ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

ॐह्रींश्रीपार्श्वनाथाय । विश्वचिंतामणीयते । ॐधरणेंद्र वैरोट्या । पद्मादेवी युतायते ॥ १ ॥ सिताष्ट दलमध्यस्थ । वद्य पद्मासनायते । ॐअसिआउसाॐश्री । लब्धा लक्ष्मीं नमोनमः ॥ २ ॥ ॐदिक्पाला ग्रहाधीशं । यक्षणीयक्ष सेविता । ग्रहायुता हूइजया । क्षापरा जितयान्वितः ॥ ३ ॥ शांतितुष्टि महापुष्टि । धृति कीर्त्ति विधायिने । विघ्नवाला नलवेत्ताला । सर्वाधि व्याधि नाशने॥४॥ श्रीशंखेश्वर मंडण । पार्श्वजिन प्रणतिकल्प तरुकल्प । चूरयदृष्ट व्रातं । पूरय मे वांछितं नाथः ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ अभिनव मंगल माला । करणं हरणं दुरंति दुरितस्य । श्री पार्श्वनाथ चरणं । प्रतिपन्नो भावतः सरणं ॥ १ ॥ आयासेन विना लक्ष्मी । विनाक्षेपेण वैभवं । विनै वत्तपसा सिद्धि । र्जपतां पार्श्वनामते ॥ २ ॥ पार्श्वजिनशा सनंते । निवरु महामोह तिमर विध्वंसि । महिरत्न दीपकल्पं । तनोतु तेजो विवेकाख्यं ॥ ३ ॥ तुरेषां चरणो जिव्हे । कुरुस्तोत्रं चरणोनमः । हर्षासु मुचितां दृष्टी । आएषु परमेश्वरः ॥ ४ ॥ भवे भवांतरे वापि । दुःखेवा यदिवा सुखे । पार्श्व ध्यानेनमयांतु । वासुराः पुन्य भासुराः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ अमर तरु कामधेनु । चिंता माणि काम कुंभ माईया । तुहसामि पास सेवय । गयांइं सव्वेवि दासत्तं ॥ १ ॥ खंभिज्जाति भगंदर । ज्वर काश शास शूलतन निवहा । सिरि सामल पास पहु । तुह नाम पयंडु पवणेण ॥ २ ॥ जय धरणिंदनमंसिअ । पउमावइ पमुह सेविअ सुपास । ॐह्रीं अर्हं ममसिद्धिं कुणसु पास ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ पुनः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ॐममहरउ जरं । ममहरउ विडुरं भरंमा मरं । हरउ चोरारि मारिवाही ।

हरउ ममं पास तित्थयरो ॥ १ ॥ एगंतर जरं निच्चजरं । सीअजरं उएहजरं वेला जरं । तह तइयजरं चउत्थजरं । हरउ ममं पास तित्थयरो ॥ २ ॥ जिण दत्ताणा पालण परस्ससंघस्स बिहि समुग्गस्स । आरोग्ग सोहग्गं अपवग्गं । कुणउपास जिणो ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

वंदुं जगदाधार सार सिवसंपति कारण । जन्म जरा मरणादिरूप भवताप निवारण । श्री सिद्धारथ तात मात त्रिशला तनजात । सोवन वरण सरीरवीर त्रिभुवन विख्यात ॥ १ ॥ अमृत रूपे राजताए । चउवीसम जिनभाण । क्षमा प्रमुख कल्याण गुण आपोकरिसुपसाय ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ वीरस्सर्व सुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधा संश्रिताः । वीरेणा भिहतस्स कर्म निचयो वीराय नित्यंनमः । वीरास्तीर्थमिदं प्रवर्त्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्री वीरे धृतिकीर्ति कांति निचयः श्री वीरभद्रंदिशः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप गछ विशेष विधि संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥ ❀ ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो । तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो । चउविह कसाय मुक्को । इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह व्वयजुत्तो । पंचविहायार पालण समत्थो । पंच समिउ तिगुत्तो । छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥

❀ ॥ अथखमासमण ॥ ❀

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीही आए मत्थएण वंदामि ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सुगुरुनें शातासुख पृछा ॥

॥ इछकार सुहराइ सुहदेवसी सुखतप शरीर निरावाध सुख संजम जात्रा निर्वहोछोजी स्वामी शाताछेजी भात पाणीनो लाभ देजोजी ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक पारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ सामाइय वयजुत्तो । जावमणे होइ नियम संजुत्तो । छिन्नइ असुहं

कम्मं । सामाइअ जत्ति आवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिनकए । समणो इव सावन हवइ जह्मा । ए ए ण कारणेणं । वहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिं लीधुं विधिं पारिनं । विधिकरतां जे कोइ अविधि हुवो होय । ते सविहुं मन बचन कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगचिन्तामणिचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ इछाकारेण सं० । चैत्यवंदन करुं ॥ इछं ॥ जगचिंतामणि जगनाह । जगगुरु जगरक्कण । जगबंधव जगसत्थवाह । जगनाव विअरकण ॥ १ ॥ अठावय संठविअ रूव । कम्मठ विणासण । चनवीसंपि जिनवर जयंतु अप्पमि हय सासण॥१॥कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं । पढमसंघयणि नक्कोसय सत्तरिसय । जिणवराण विहरंतलब्भइ । नवकोडिहिं केवलिण । कोमि सहस्स नवसाहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीसमुणि । विहुं कोमिहिं वरनाण । समणह कोमी सहसदुअ । थुणिजअ निच्चविहाण ॥ २ ॥ जयनसामी जयनसामी रिसह सत्तुंजि । नजिंत पहुनेमिजिण । जयन वीर सचनरि मंमण । जरु अठ्ठहिं सुणिसुव्वय । महुरि पास दुहदुरिअ खंमण ॥ अवर विदेहिं तिथ्थयरा । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअ वंदुं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लरकाउप्पन्न अठकोडीन । वत्तीस बासिआइं । तिअलोए चेइए वंदे ॥ ५ ॥ पनरसकोडि सयाइं । कोमी बायालनरक अडवन्ना । बत्तीस सहस असिआइं । सासय बिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ जंकिं चिनामतित्थं कहके नमोत्थुणं कहे ॥ जावंति चेइयाइं । जावंति केविसाहू ॥ नमोर्हत्सिद्धा० ॥ नवसग्गहरं पासं ॥ कहकै नावपूर्वक जो स्तवन बोलना होय सो बोलके दोनूं हाथ जोरु मस्तक चढाय जयवीयराय संपूर्ण कहै ॥

॥ ❀ ॥ अथ जयवीअराय ॥ ❀ ॥

॥ जयवीअराय जगगुरु । होनममं तुह पनावन नयवं । नवनिबेन । मग्गा । णुसारिया इठ फल सिदि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धचाग । गुरु जण पूआ परत्थ करणंच । सुह गुरु जो गोतवयण सेवणा आनव मखंमा ॥ २ ॥ वारि जइ जइ विनिआ । णवंधणं वीअराय तुह समए । तहवि ममहुज्ज सेवा नवे नवे तुह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुरक रकन कम्म रकन । समाहि मरणंच

बोहिला लाभ ॥ संपज्जउ महएअं । तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं । सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणं जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ पीछे ऊभाहोके ॥ अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदण वत्तिआए । अन्नत्थू कहके एक नवकारको कावसग्ग करके स्तुतिकहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्लाण कंदं स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं । संतिंतवो नेमिजिणं सुणिंदं । पासं पयासं सुगणि कठाणं ॥ वत्तीय वंदे सिरि वद्ध माणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं । सव्वे जिणंदा सुर विंद वंदा । कल्लाण वल्लीण विशाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं । पणा सियासे स कुवाइदप्पं । मयंजिणाणं सरणं बुहाणं । नमामि निच्चंति जगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदुगो क्षीरतुसार वन्ना । सरोज हत्थाकमले निसन्ना । वाए सिरी पुत्थय वग्गहत्था । सुहायसा अम्हसया पसत्था ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्यद्दंताशुकेशरं । प्रातर्वीर जिनेंद्रस्य मुख पद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥ येषा मभिषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्ष भरात् सुखं सुरेंद्राः । तृणमपि गणयंतिनैव नाकं । प्रातःसंतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राहु ग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्व चन्द्र जिन चन्द्र भाषितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भगवानादि बंदन ॥ ❀ ॥

॥ भगवानहं ॥ आचार्यहं ॥ उपाध्यायहं ॥ सर्वसाधुहं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अतीचारनी८गाथा ॥ ❀ ॥

॥ नाणंमि दंसणं मिय । चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि । आयरणं आयारो । इअएसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ काले विणए वहुमाणे । उवहाणे तहय निन्हवणे । वंजण अत्थ तदुभए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअनिकंखिअ । निव्वितिगिछा अमूढ दिठीअ । उववूह थिरीकरणे । वच्छल्ल पभावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो । पंचहिं समइहिं तिहिं

गुत्तीहिं । एसचरित्ता यारो । अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ वारस विहंमि वितवे । अब्भिंतर बाहिरे कुशलदिठे । अगिलाइ अणाजीवी । नायव्वो सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । काय किलेसो संलीणआय । वज्झोतवोहोइ ॥ ६ ॥ पायछित्तंविणउ । वेयावच्चं तहेव सिझोओ । झाणं उस्सग्गोविय । अब्भिंतरओ तवोहोइ ॥ ७ ॥ अणगूहिय बलविरिओ । परिक्कमइ जोजहुत्तमाउत्तो । जुंजइ अजहाथामं । नायव्वो वीरि आयारो॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ सुअ देवया भगवई नाणा वरणी अकम्म संघायं । तेसिंखवेउ सययं । जेसिंसुअ सायरे भत्ती ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ जीसे खित्तेसाहु । दंसणनाणेहि चरण सहिएहिं । साहंति मुरकमग्गं । सादेवी हरउ दुरिआइं ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अढाइज्जेसुमुनिवंदन ॥ ❀ ॥

॥ अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंतकेविसाहू रयहरण गुछपम्मिग्गहधारा ॥ पंच महव्वय धारा, अठारस सहस्स सीलांगधारा॥ अरक यायारचरित्ता, तेसव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥१॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरकनक ॥ ❀ ॥

॥ वरकनक शंख विद्रुम । मरकत घन सन्निभं विगतमोहं । सप्ततिशतं जिनानां । सर्वामर पूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोसह पारवा गाथा ॥ ❀ ॥

॥ सागरचंदो कामो । चंदवडिंसो सुदंसणोधन्नो । जेसिंपोसह पडिमा । अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा सुलसा आनंद कामदेवाय । जेसिंपसंसइ भयवं । दढव्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधेंलीधुंविधें पारिऊं । विधिकरतां जे कोइ अविधिहुओहोइ । तेसविहुं मन बचन कायायेंकरी मिछामिदुक्कडं ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋरहेसरनी सझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋरहेसर बाहुबली । अनय कुमारोअ ढंढण कुमारो । सिरिओ अणियाउत्तो । अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो । वय रीरसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंडरिओ केसि कर कंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिभद्दोअ । भद्दोअ दसन्नभद्दो । पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबू पहु वंकचूलो । गय सुकमालो अवंति सुकुमालो । धन्नो इलाइ पुत्तो । चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जागिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो । कालयसू रिसंबो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पन्नवो विन्हुकुमारो । अद्दकुमारो दढ पहारीअ । सिज्जंस कूरगडुअ । सिज्जंभव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणोहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन बाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंती । नमया सुंदरी सीया । नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता । पउमावई अंजणा सिरि देवी । जिठ सुजिठ मिगावई । पभावई चिल्लणा । देवी ॥ ९ ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी । रेवई कुंती सिवा जयंतीय । देवीई दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी । गंधारी लक्ष्मणा सुसीमाय । जंबूवई सच्चभामा । रुप्पिणी कन्हठ महिसीओ ॥ ॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना । भूआ तह चेव भूअदिन्नाय । सेणा वेणा रेणा । भइणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥ इच्चाइं महासईओ । जयंति अकलंक सील कलिआओ । अज्जावि वज्जई जासिं । जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सता सतीओनी सिझाय ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिछं परिहरह धर सम्मत्तं । छविह आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं । दाणं शीलं तवोअ भावोअ । सझाय नमुक्कारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरुथुअ साहम्मिआण वछलं । ववहारस्सय सुद्धी । रहयत्ता तित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशम विवेक संवर । भासा समिई

जजीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरी वहुमाणो । पुथ्थय लिहणं पन्नावणा तित्थे । सद्धाण किच्च मेअं । निचं गुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामें मंगल कोड । पहेलें स्वर्गें लाख बत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कह्या तीजे बारलाख सदेह्या । चोथे स्वर्गे अरु लख धार । पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ छठें स्वर्गें सहस पचास । सातमें चालीश सहस प्रसाद । आठमें स्वर्गें छ हजार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणशे सार । नवग्रैवेयकें त्रणशे अठार । पांच अनुत्तर सर्वे मली । लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार ॥ जिनवर भुवन तणो अधिकार । लांबा शो जोजन विस्तार । पचास ऊंचा बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी बिंब परिणाम । सत्रासहित एक चैत्यें जाण । शो कोड वावन कोड संभाल । लाख चोराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥ सातशे ऊपर साठ विशाल । सबी बिंब प्रणमुं त्रण काल । सात कोडनें बोहोत्तर लाख । भुवनपतीमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोड निव्याशी कोड साठ लाख वंदूं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीशैनें ओगणसाठ । तिर्छालोकमां चइत्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हजार । त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर योतिषीमां वली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखभ चंद्रानन वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत सिखर वंदूं जिनवीश । अष्टापद वंदूं चौवीश । विमलाचल नें गढ गिरनार । आबूउपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक वरकाणो पाश । जीरावलोनें थंभण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह । जिनवर चैत्य नमूं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन वीश । सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्रीपमां जे अणगार । अढार सहस शीलांगना धार । पंच महाव्रत समती सार । पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥

बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल । ते मुनि वंदूं गुणमणि माल । नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं । जीव कहे भव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकलार्हत् स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलार्हत्प्रतिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रियः । भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान । मार्हत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृति द्रव्यभावैः । पुनत स्त्रिजगज्जनं । क्षेत्रे कालेच सर्वस्मि । न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं निःपरिग्रह । मादिमं तीर्थनाथंच । ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंत मजितं विश्व । कमलाकर भास्करं । अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगतं स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्व भव्य जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः देशना समये वाचः । श्रीसंभव जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांत मतांभोधि । समुल्लासन चंद्रमाः । दद्या दमंद मानंदं । भगवान भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीट शाणाग्रो । तेजितां घ्रि नखावलिः । भगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वभिमता निवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभ प्रभोर्देह । भासः पुष्णंतु वः श्रियं । अंतरंगारी मथने । कोपाटो पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय । महेंद्र महितांघ्रये । नमश्चतु र्वर्ण संघ । गगनाभोग भास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभ प्रभोश्चंद्र । मरीचि नि चियो ज्वला । मूर्त्ति मूर्त्तसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽस्तुवः ॥१०॥ कराम ल कवद्भिश्वं । कलयन् केवलश्रिया । अचिंत्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्बो धयेऽस्तुवः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानंद । कंदो ब्भेदनवांबुदः । स्याद्वादामृत निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः॥१२॥नवरोगार्त्त जंतूना। मगदंकार दर्शनः निःश्रेयस श्रीरमण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥१३॥ विश्वोपकारकी भूत । तीर्थ कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥ विम ल स्वामिनो वाचः । कृतकक्षोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जनने र्मल्यहेतवः । ॥ १५ ॥ स्वयंभू रमणस्पर्द्धि । करुणा रस वारिणा । अनंत जिदनंतांवः । प्रयच्छतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माणं । मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां । चतुर्द्धा धर्म्मदेष्टारं । धर्म्मनाथं सुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर वाग्ज्योत्स्ना । निर्म्मली कृत दिङ्मुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै । शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो भगवान् । सनाथो तिशयर्द्धिभिः । सुरा

सुर नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु जगवां । श्च तुर्थारनऋोरविः चतुर्थ पुरुषार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासु र नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्म्मद्रून्मूलने हस्ति । मल्लं मल्लि मजिष्टु मः ॥ २१ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपम । मुनि सुव्रत नाथस्य देशना वचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्द्धि । निर्मली कार कारिणं । वा रि प्लवा इवनमेः । पांतु पादनखांशवः ॥२३॥ यदु वंश समुद्रेंदुः । कर्म्म कक्ष हुताशनः । अरिष्टनेमि र्जगवान् । नूयाद्रोऽरिष्ट नाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर णेंद्रेच । स्वोचितं कर्म कुर्वति । प्रजुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्श्व नाथः श्रियेऽ स्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुत श्रिया । महानंदा सरोरा ज । मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः । ईषद्वाष्पार्द्रयोर्भद्र । श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥२७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः। सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्वास विरहित । स्त्रिजुवन चूडामणि र्जगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व्व सुरासुरेन्द्र महिता वीरं बुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्रीवीरे धृति कीर्त्ति कांति निचयः । श्रीवीरभद्रं दिश ॥ २९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरभुवन गतानां दिव्य वैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां। जिनवर भुवना नां जावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शांतिकर स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि भत्त पालग । निव्वाणी गरूडकय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विप्पोसहि प त्ताणं । संतिसामिपायाणं । ओं स्वाहा मंतेणं । सव्वाशिव दुरिअ हरणाणं ॥ २ ॥ उँ संतिं नमुक्कारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं । सो ह्रीं नमो स व्वो सहि । पत्ताणं चंदेइसिरीं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअण सामिणी । सिरि देवी जक्खराय गाणि पिम्गा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रक्खंतुजिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जासिंखला सया । वज्जंकुसि चक्केसरी नरदत्ता कालि महाकाली ॥५॥ गोरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ

रुट्टा। अच्चुत्ता माणसिआ। महामाणसिआओ देवीओ ॥६॥ जख्खा गोमुह महजख्खा। तिमुह जख्खेसु तुंबरू कुसुमो। मायंग विजय अजिओ। बंभो माणुओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पायाल किन्नर। गरुलो गंधव्व तहय जक्खिंदो। कुबेर वरुणो नियली। गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ चक्केसरी। अजिआ दुरिआरी कालि महा कालो। अच्चुअ संता जाला। सुतारया सोअ सिरिवच्छा ॥ ९ ॥ चंमा विजयंकुसि पन्नइत्ति। निव्वाणि अच्चुआ धरणी। वइरुट्ट बुत्त गंधारी। अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तित्थ रक्खण रया। अन्नेवि सुरा सुरी चउहावि। व्यंतर जोइणि पमुहा। कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिठि सुरगण। सहिओ संघस्स संति जिण चंदो। मज्झवि करेउ रक्खं। मुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह सम्मदिठि। रक्खं सरइ तिकालं जो। सव्वोवद्दव रहिओ। लहइ सुह संपयं परमं ॥ १३ ॥ तव गच्छ गयण दिणयर। जुगवर सिरि सोम सुंदर गुरूणं। सुपसाय लद्ध गणहर। विज्जा सिद्धिं भणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर परमातमा। शिव सुखना दाता। पुष्कल वई विजये जयो। सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंमरीगिणी। नयरीयें शो हे। श्री श्रेयांस राजा तिहां। भविअण मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही। सत्यकी राणी मात। कुंथु अर जिन अंतरें। श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रभु जनमीया। बली यौवन पावे। मात पिता हरखें करी। रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारनां। संजम मन लावे। मुनिसुव्रत नमी अंतरे। दिक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी। पाम्या केवल नाण। वृषभ लंछनें शोभता। सर्व भावना जाण ॥ ॥ ६ ॥ चौराशी जस गणधरा। मुनिवर एक शो कोड। त्रण भुवनमां जोअ तां। नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या केवली। प्रभुजीनो परिवार। एक समय त्रएय कालना। जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढा ल जिनांतरे ए। थाशे जिनवर सिद्ध। जस विजय जिन प्रणमतां। शुभ वंछित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जग धणी । आजरतें आवो । करुणावंत करुणा करी । अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमें धणी ए । जो होवे अम नाथ । जवो जव हुं डूं ताहरो । नहीं मेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग ढंमी करी ए । चारित्र लेइशुं । पाय तुमारा सेविनें । शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए । पूरो सीमंधर देव । इहां थकी हुं वीनवुं । अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला । कलित त्रिजुवन हितकरं । सुर राज संस्तुत चरणपंकज । नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंमण प्रवर गुण गण जूषरं । सुर असुर किन्नर कोमि सेवित न मो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं । निर्जरावली नमें अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी । कोमि पण मुनि मन हरं । श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर । कोम्निंत ए गिरिवरं । मुक्ति रमणी वरया रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही । विमल गिरिवर तो परं । नहि अधिक तीरथ तीर्थप ति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंमण । दुःख विहंमण ध्याइ यें । निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा । परम पद स्थिति जयकरं । गिरिराज सेवा करण तत्पर । पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शेत्रुंजय सिद्ध खेत्र । दीठे दुर्गति वारे । जाव धरीनें जे चढे । तेने जवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम । सकल तीरथ नोराय । पूर्व नवाणुं रिखजदेव । ज्यां ठवीआ प्रजुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंम सोहा मणो । कवरु जरु अजिराम । नाजिरायां कुलमंमणो जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्य ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परमेसर परमातमा । पावन परमिष्ठ । जय जगगुरु देवाधि देव । नयणे में दिष्ठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार । करुणा रससिंधु । जगती जन आधार एक । निःकारण बंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभुता हरा ए । किम ही कथ्यान जाय । राम प्रभु जिन ध्यानथी । चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासें जावजो । मुझ वीनतडी प्रेम धरीनें इण परें तुमें संभलावजो । (ए आंकणी) जे त्रएय जुवननो नायकडे । जस चौशठ इंद्र पायकडे । नाण दरसण जेहनें खायक डे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन बरणी कायाडे । जस धोरी लंछन पायाडे । पुंमरीगणी नगरीनो रायाडे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि बिराजै डै । जस चौत्रीश अतिशय गाजेडे । गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे डे । सुणो० ॥ ३ ॥ भविजननें ते पडि बोहेडे । तुम अधिक शीतल गुण शोहेडे । रूप देखी भविजन मोहेडे ॥ सुणो० ॥ ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ हुं । पण भरतमां दूरें वसीओ हुं । महा मोह राय कर फसीओ हुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयोडे तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयोडे । तब कांइक मुझथी डरीयोडे ॥ सुणो० ॥ ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूरे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वांधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आंखडीयें रे में आज । शेत्रुंजो दीठोरे । सवा लाख टकानो दहाडोरे । लागे मुनें मीठोरे (ए आकणी) सफल थयो मारा मननो ऊ माहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भाग्योरे । नरक तिर्यंच गति दूर निवारी । चरणे प्रभुजीनें लाग्योरे ॥ शेत्रुं० ॥ १ ॥ मानव भवनो लाहो लीधो वा० ॥ देहडी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे वधावी । प्रेमें प्रदक्षिणा दीधीरे ॥ शेत्रुं० ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आ

दीश्वर पूज्यारे। श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप मेवासी धूज्यारे ॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलैं। त्रण जुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेत्रुंजा तोलेरे ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहैरे । कायानी तो कासल टाले । सूरज कुंनमां नाहैरे ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रें वा० ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उद्धार अनंता की धारे ॥ शेत्रुं० ॥ ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठयारे । उदयरतन कहे आज मारे पोतें । श्री आदीश्वर तूठयारे ॥ शेत्रुं०

॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमलाचल नित वंदियें । कीजै एहनी सेवा । मानुं हाथ ए धर्मनो शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्जल जिन गृह मंमली । तिहां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विभ्रमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ कोइ अनेरूं जग नहीं । ए तीरथ तोले । इम श्रीमुख हरिआगलै श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ करया । जात्रा फल लहीयें । तेहथी ए गिरि भेटतां । शत गणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लहे । तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नाभिराजंगजं वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगे अजितं जिनं त्रिभु पुरे श्रीसुव्रतं स्थंजने । श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प जुवने ग्रैवेयके व्यंतरे । ज्योतिष्का मर मंदराद्रि वसतो स्तीर्थंकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुंडले । येचान्येपि जिना नमानि सततं तान् कृतिमा ऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥ श्री यद्वीरजिनास्य पद्म हृदतो निर्गम्यते गौतम । गंगा वर्त्तन येत्य या प्रवि त्रवे मिथ्यात्व वैताढ्यकं । उत्पत्ति स्थिति संहति त्रिपथगा ज्ञानां बुधा वृद्धिगा । सासे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्रंद्र

रवि ग्रहा श्च धरण त्रेंद्र शांत्यंबिका । दिगपालाः सकपर्दिगो मुखगणा श्चकेश्वरी भारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतिविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री संघस्य तुरा चतुर्विध सुरा स्ते संतु भद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमराजुल सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊभे दोय पंखीया (ए देशी) पिउजी पि उजीरे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश । तपे मोरी भातीयां । पग पग जोती वाट वालेसर कब मिले । नीर विछोह्यां मीनके । तेजुं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नविगमे । जिहारे वालेसर नाम तिहां मारूं मन रमे । जो होवे सज्जन दूर तोहि पासें वसे । किहां सायर किहां चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत मकरजोको सही । पतंग जलावे देह दीपक मनमें नहीं । माणसनो विजोग म होजो केहनें । सालेरे साल समान हइआमां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीम जोवन वय अति दहे । जेनो पियु परदेश ते माणस दुःख सहे । झुरी झुरी पंजर कीध, काया कमला जिसी । हजुअ न आ व्योनेम भली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग टाल्यो ते नवी टले चकवा रयणी विजोग तेतो दिवसें मले । आंबा केरो स्वाद निंबू ते न वि करे । जे नाह्या गंगा नीर ते छिल्लर केम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल धत्तूरे केम रमे । जेहनें धीयशुं प्रेम ते तेले केम जमें । जेहनें चतुरशुं नेह ते अवरनें शुं करे । नव जोबन तजी प्रेम वैरागीथे फरे ॥ ६ ॥ रा जुल रूप निधान के पोहती सहसावनें । जइ वांद्या प्रभु नेम संजम ले ई ऐकमनें । पांम्यां केवल ज्ञान के पोहती मन रली । रूपविजय प्रभुनेम भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आऊखा सिझायः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आऊखो तूटानें सांधो को नहींरे । तिण कारण मकरो जीव भादरे । जरा आव्यानें शरणुं को नहींरे । हिंसा छोमीनें दया पालरे ॥ आऊ० ॥ १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणेरे । मूरख संच्यां बहुला पाप रे । चोर तणी परे उंमी झूरशेरे । सहीश इहलोक परलोक संतापरे ॥

आ० ॥ २ ॥ ऊंचा चणाव्या मंदिर माळियारे । दे दे धरतीमें ऊंडी नींवरे एक दिन अणजाएयुं ऊठी चालवुंरे । सुख दुःख सहेशे आपणो जीवरे आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति हरिबल राणो केशवोरे । जो जो वली इंद्र सुरांनो नाथरे॥ ऊगी ऊगीनें उवेही आथम्यारे । जो जो कोइ अचरज वाली वातरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनी नीसरयारे । करता मुनि नव ला विहारेरे । नारंग पंखीनी दीधी उपमारे । न धरे ममता नेह लगारेरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ चारित्र पाळे रूमी रीतशुंरे । देवे मुनि अपनो उपदेशरे । तीको मुनिवर सिधासी मोक्षनेंरे । जश लेई इह लोक परलोकरे ॥ आ० ॥ ॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे । मकरो मुनि अएयानुं अभिमानरे । ऋषि चोथमल सूत्र देखिनेंरे । जोम कीधी जाजोर मझारेरे ॥ आऊ० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज देव अरिहंत नमुं । समरूं तारूं नाम । ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी । त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव । नेम नमुं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ । आबू रिखन जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि ऊपरें । जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं । भरतें भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं । ज्यां वीशे जिन पाय । वैभारगिरि ऊपरें । श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांम्बगढनो राजियो । नामें देव सुपाश । रिखन कहे जिन समरतां । पोहोचे मननी आश ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुविध धर्म जिणें उपदिस्यो । चोथा अभिनंदन । बीजे जन्म्या ते प्रभु । भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दुविध ध्यान तुझे परिहरो । आदरो दोयध्यान । एम प्रकाश्युं सुमति जिन । ते चविया बीज दिन । ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष । तेहनें भवि तजियें । मुज परे शीतल जिन कहे । बीज दिन शिव भजियें ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं । करोनाण सुजाण बीज दिनें वासुपूज्य परें । लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय । एकांत न ग्रहीयें । अर जिन बीज दिनें चवी । एमजिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चौवीशीये । एम जिन कल्याण । बीजादिनें केई पा

मीया। प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौवीशीयें । हुआ बहुत कल्याण। जिन उत्तम पद पद्मनें । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन । भाखे भविजन आगे। त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन। निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो भवि भावसे । पांचम अजुवाली। ज्ञान आराधन कारणें। येहज तिथ्थि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा। जाणो इण संसार। ज्ञान आराधनथी लहुं। शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही। काश कुसुम उप मान । लोका लोकप्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमें। करे कर्मनो खेह। पूर्व कोमी वरसां लगे । अज्ञानेंकरे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधकज्ञान । ज्ञान तणो महिमा घणो। अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी । जावजीव उत्कृष्टी। पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुभदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए । कायसग्ग लोगस्स केरो । खजमणुं करो भावशुं । टाले भव फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी भाव अपार । वरदत्त गुण मंजरी परें। रंग विजय लहोसार ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महा शुदि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण शुदि आठमें । संभव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या रुषभ जिणंद। दिक्षा पण ए दिन लही। हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधवशुदि आठम दिनें । आठ कर्म करया दूर । अभिनंदन चोथा प्रभु। पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली । जन्म्या सुमति जिणंद । आठजाति कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठवदि आठमें। मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आषाढ शुदि आठमें । पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें। नमि जन्म्या जगभाण। तिम श्रावण शुदि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ भाद्रवा वदि आठम दिनें चविया स्वामी सुपास। जिन उत्तम पदपद्मनें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ एकादशनुं चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शासन नायक वीरजी । प्रभुकेवल पायो । संघ चतुर्विध थाप वा । महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी । सोमल द्विजयज्ञ इंद्रभूति आदें मल्या । एकादश विग्य ॥ २ ॥ एकादशसें चतुगुणा । तेह नो परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा दिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वीरें थाप्या वंदियें । जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पाश । वर चरण विलाशी ॥ ऋष भ अजित सुमति नमी । मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिव वास पास । भवभवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । रिद्धि सगली जो डी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां । दैढशै कल्याण । वरस अग्यार एका दशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश पाठा । पूंजणी ठवणी विंटणी । मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत उंम्वा ए । वहो पडिमा अगियार । खिमाविजय जिन शासनें । सफल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव । अरिहंत सकलनी । भाव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर भाखित वाणी । जयवंती आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ए थुई चार वखत पण कहेवायछे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । मुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर जिन अंतर जनम्या तिहुअणयश परशंसा जी । सुव्रत नमि अंतर वरदी हा शिहा जगत निरासेंजी । उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु जाशे शिव वहु पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि अधिका जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें वीस जिनेश्वर दिठा जी ॥ दो चउ चार जघन्य दशजंबू धायई पुस्खर मझारें जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगें प्रवचन सार उधारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पा मी जिनपद खवण निसिहेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु

णत विनीतेंजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकसिया जी। अपजवसिय जिनागम बंदो अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आ णा रंगी समकित संगी विविध भंग व्रतधारी जी । चउविह संघ ती रथ रखवाली सहु उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी देती तस जश रुधीजी । श्री शुभवीर कहे शिव साधन कार्य शकलमां सिधीजी ॥ ४ ॥ ❀ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सु विशेष । राय राणा प्र णमें चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेह । हुं बीज तणे दिन प्रणमुं आणि नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतल नाथ । अरनाथ सुमति जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण । हुं बीज तणें दिन प्रणमूं ते सुविहाण ॥ २ ॥ पर काश्यो बीजें दुविध धर्म भगवंत । जेम विमला कमला विउल नयन विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । बीजें सवि कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर । चक्केसरि केसरी सरस सुगंध शरीर । कर जोमी बीजें हुं प्रणमुं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति

॥ ❀ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए। जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम वरण तन शोभतो ए। मुख शारदको चंद तो । सहस वरस प्रभु आउखो ए । ब्रह्मचारी भगवंत तो । अष्ट करम हेलें हणीए । पोहोता मुक्ति मझार तो। वासुपूज्य चंपापुरि ए। नेम मुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां वली ए। श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत सिखर वीश सिद्ध हुआ ए। शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुवा ए। भाख्यो सार वचन तो ॥ जीवदया गुण वेलमी ए। कीजें तास जतन तो । मृषा न बोलो मा नवी ए । चोरी चित्त निवार तो। अनन्त तीर्थंकर इम कहे ए । परहरियें परनार तो ॥३॥ गोमेद नामें जक्ष भलो ए। देवीश्री अंबिका नाम तो। शा

सन सानिध्य जे करे ए । करे बलि धरमनां काम तो । तपगछ नायक गुण नि लो ए । श्री विजय सेन सूरिराय तो । रिखन दास पाय सेवतां ए । सफ ल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल आठ करी जस आगल भाव धरी सुरराजाजी । आ ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग ल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरे व लीयाजी । आठमें आठ सरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ ष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनूं तप करतां अम घर नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ बि राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमे आठ शो आगम भाखी । भवि मन संशय भांजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निरतीचारोजी । आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीनें मानव भव फल लीजेंजी । सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी अ ष्टमहासिद्धि दीजेंजी । आठमनुं तप करतां लीजें निर्मल केवल ज्ञान जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकल्याणजी ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकादशी अति रूअडी । गोविंद पूछे नेम । कोण कारण ए प र्व मोहोटुं । कहो मुझशुं तेम । जिनवर कल्याणक अति घणां । एकशो ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ गिआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहे ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक सेवो । वन गजा जिमरेव । चौवीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहवुं करो जिनसुं रंग । अगीआर अंग लखाविये । अगीयार पाठासार । अगीआर कवली विंटणां ठवणी पूंजणी सार । चाबखी चंगी विविध रंगी शास्त्रतणें अनुसार । एकादशी एम उजमो । जेम पामियें भ वपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । भुजदंड

चंम अखंम जेहनें समरतां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि हर्ष पंमित शीश । शासन देवी विघन निवारो संघ तणां निश दीश ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विभ्रोः शैशवे । रूपा लोकन विस्मया हृत रस भ्रांत्या भ्रमचक्षुषा । जन्मृष्टं नयन प्रभा धवलि तं क्षीरोदकाशंकया । वक्त्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ ॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मरेणु कपिश क्षीरार्णवां भो नृतैः । कुंभै रप्सरसां प योधर भर प्रस्पर्धिभिः कांचनैः । येषां मंदर रत्नशैल शिखरे जन्माभिषे कः कृतः । सर्वै सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्भ क प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं बव्हर्थ युक्तं मुनिगण वृष भैर्ध्दारितं बुद्धिमद्भिः । मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रत चरण फलं ज्ञेय भाव प्रदीपं । भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक व्योमनील द्युतिमल सदृशं बालचंद्राभ दंष्ट्रं । मत्तं घंटारवेण प्रसृत मदज लं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी । यक्षः सर्वानुभूति र्दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धि ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठा कुरराम अपार । मंत्र मांहिं नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र बखाणुं । जलधर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहें जिम रुषभनो वंश । नाभि तणो जे अंश । द्रुमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशू रा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदा । सुमतिनाथ मुख पूनम चंदा । पद्म प्रभ सुख कंदा । श्रीसुपा र्श्व चंद्रप्रभ सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुधी । वासुपूज्य मति सुधी विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अर मल्लि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी । नमी पाशने वीर चोवीश । नेम विना ए जिन त्रेवीश । सिद्ध गिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन सार्थे बोले । स्वामी शत्रुंजय गिर कुण तोले । जिननुं वचन अमोले । रुषभ कहे सुणो भरतराय । उहरी पा

लंता जे नरजाय । पातिक चूको थाय । पशु पंखी जेइण गिरि आवे । भव त्रीजे ते सिद्धज थावे । अजरामर पद पावे । जिनमतमें शेत्रुंजो बखाण्यो । ते में आगम दिलमांहे आण्यो । सुणतां सुख अत्याण्यो ॥ २ ॥ संघ पति भरत नरेसर आवे । सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे । ना भिराया मरुदेवी माता । ब्राह्मी सुंदरी बहेन विख्याता । मूर्त्ति नवाणुं भ्राता गोमुखनें चक्केसरी देवी । शेत्रुंजय सार करे नित्य सेवी । तपगच्छ ऊपर हेवी श्रीविजय सेन सूरीश्वर राया । श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया । कृपन दास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महाविदेहखेत्रें सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी । रूपानां कोशीशा विराजे रत्नना दीवा दीपेजी । कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोतीना अक्षत सारजी । त्यां बेठा सीमंधर स्वामी बोलै मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥ केशर चंदन भरीरे कचोली । कस्तूरी वरासजी । पहलीरे पूजा अमारीरे होजो अमम ते परभातजी ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक लेवा बिधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुंकीनें । श्रावक, श्राविका, कटासणुं । मुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध वस्त्रपहरी । जग्या पुंजी । कटासण ऊपर बेशी, मुहपत्ती मावा हाथमां मुख पासें राखी । जमणो हाथ थापना जी सन्मुख राखी । एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही । इच्छामि खमासमण देई । इरिया वहिया । तस्सउत्तरी । अन्नत्थ ऊससिएणं । कहै । एक लोगस्सनो (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै । खमासमण देई । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥ इच्छं ॥ इमकही । मुहपत्ती, तथा, अंगनी पडिलेहणना पंचाश बोल कही । मुहपत्ती पडिलेहीयें । पछी खमासमण देई । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायक संदिस्सानं ॥ इच्छं ॥ वली खमासमण देई । इच्छा० ॥ सामायक ठामुं ॥ इच्छं ॥ एम कही । बे हाथ जोमी । एक नवकार गणी । इच्छकार भगवन् पसाय करी सामायक दंडक उच्चरावोजी । पछी गुरु प्रमुख वंदन करेमि

जंते कहे । पछी खमासमण देई । इच्छा० वैसणो संदिस्साउं ॥ खमा० इच्छा० ॥ वैसणो ठाउं ॥ खमा० इच्छा० ॥ सिज्झाय संदिस्साउं ॥ खमा० इच्छा० ॥ सज्झाय करुं । इच्छं । एम कही । त्रण नवकार गणवा । पछी बे घडी सज्झाय धर्म ध्यान करवुं । इति सामायक लेवानी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायिक पारवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरिया वही पडिक्कमीथी (यावत्) लोगस्स सूधी कही ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं (एम कही) मुहपत्ती पडिलेही । खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारुं । यथाशक्ती । वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पार्युं तहत्ती कही । पछी जमणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाइय वयजुत्तो०) कहिए ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणीओं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पाणी वावरयुं होय (तो) मुहपत्ती पडि लेहवी । अनें आहार वावरयो होय (तो) वांदणां बेदेवा । तिहा बीजा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पछी यथा शक्ति पच्चख्खाण करवुं । पछी खमासमण देई । इच्छा० कही । वमेरायें (अथवा) पोतें । चैत्यवंदन कहेवुं । पछी जंकिंचि० । नमोत्थुणं० कही । जग्गाथईने । अरिहंतचे इयाणं कही । एक नवकारनो काउस्सग्ग करी । नमोऽर्हत्० । कहीनें । प्रथम थुई कहेवी ॥ पछी । लोगस्स०सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं कही । एक नवकार नो काउसग्ग पारीनें । बीजी थुई कहेवी ॥ पछी पुक्खरवरदी० कही । सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदण० । कही । एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी । त्रीजी थुई कहेवी । पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही । वेयावच्च गराणं० करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थू० । कही । एक नवकारनो काउसग्ग पारी । नमोऽर्हत्० । कही । चोथी थुई कहेवी ॥ पछी बेशीनें नमोत्थुणं कहेवुं (पछी) चार खमासमण देवापूर्वक । भगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुभ्यः । प्रतें थोभ वंदन करीयें । पछी इच्छाकारेण० ॥ (दैवसिक प्रतिक्रमण

गाउं) एम कही । जमणो हाथ, चवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इछं सवस्सवि देवसिअ० ॥ कहेवुं ॥ पछी ऊना थई । करेमि नंते । इछामिठामि काउसग्गं । जोमे देवसिओ० ॥ तस्स उत्तरी० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो । आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो ॥ ते काउस्सग पारीनें लोगस्स कहवो । पछी बेसीनें । त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा बे देवां ॥ पछी ऊना थईनें । इछा कारे० ॥ देवसिअं आलोउं ॥ इछं आलोएमि जोमे देवसिओ० ॥ कहीने सात लाख कहेवा । पछी अढार पापस्थानक आलोइनें । सवस्सवि देवसिअ । कहीने बेसवुं । बेसीनें एक नवकार गणी । करेमिनंते । इछामि पमिक्कमिउं कहीने ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पछी वांदणां बे देवा । पछी । अब्भुठिओहं । अब्भितर देवसिअं खामीनें । वांदणां बे देवा । पछी ऊना थई आयरिय उवझाए, कहीने । करेमि नंते० ॥ इछामि ठामि० जोमे देवसिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही । बे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें लोगस्स कही । सवलोए अरिहंत चेइयाणं । वंदण०कही । एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग पारीनें । पुख्खरवरदी० ॥ सुअस्स नगवओ करेमि० ॥ वंदण० करीनें । एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें । सिधाणं बुधाणं० कही । सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काउसग्ग करवो । ते पारी । नमोऽर्हत्० कही । (पुरुषें) सुय देवयानी पहेली थुई कहेवी (अने) स्त्रीयें, कमल दलनी पहेली थुई कहेवी । पछी खेत्र देवयाए करेमि काउसग्गं० ॥ एक नवकारनो काउसग्ग पारी। नमोऽर्हत्० कही। क्षेत्र देवतानी बीजी थुई । स्त्रीयें (तथा) पुरूषें बन्नेनें कहेवी । पछी एक नवकार प्रगट गुणी (बेसीने) उठा आवश्यकनी मुहपत्ती पमिलेहीने । बे वांदणां दीजे (पछी) सामायक, चउवीसत्थो, वंदनक, पमिक्कमणुं, काउसग्ग, अनें पच्चख्खाण, करुंबुंजी । एम ए उ आवश्यक संजारवा । पछी इछामो अणुसठिं । नमो खमासमणाणं० । कही । नमोऽर्हत्० कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्द्धमानाय । कहे । अनें स्त्रीयां संसार दावानी थुई त्रण

कहे। पछी नमोथ्थुणं कही स्तवन कहेवुं (पछी) वरकनक कही जगवान् आदे वांदवा। पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अड्ढाइज्जेसु कहेवुं। पछी दे वसिअ पायछित्तनो काउसग्ग चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो क रवो। ते काउसग्ग पारी। प्रगट लोगस्स कही। बेसीने। खमासमण देइ। इ छा०। सिज्ञाय संदिसाउं। बिजुं खमासमण देई। इछा० सिज्ञाय जणुं। एम सिज्ञायनो आदेश मागी। एक नवकार गणी। सिज्ञाय कहवी। पछी एक नवकार गणी। खमासमण देई दुःख्खख्खओ कम्मख्खओ नो काउसग्ग। चार लोगस्सनो संपूर्ण (अथवा) शोल नवकारनो करवो। ते एक वेरें (अथवा) पोतें पारीने। नमो ऽर्हत कही । लघुशांति कहीनें । प्रगट लोगस्स कहे (पछी) इरिया वही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही ॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करी । प्रगट लोगस्स कहेवो । पछी चउक्कसाय० ॥ नमुथ्थुणं० कही ॥ जावंति, बे । क हीने। उवसग्ग हरं० ॥ जयवीयराय० कही । मुहपत्ती पडिलेहवी। पछी इछामि० ॥ इछा० सामायिक पारुं यथाशक्ति । इछामि०। इछा का० ॥ सामायिक पार्युं, तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर स्थापी । ए क नवकार गणीने सामाइअ वयजुत्तो कहेवुं । पछी थापेलि स्थापना होय तो एक नवकार गणी ऊठे । ए वं प्रतिक्रमण विधि कह्यो । बा की अंतरविधि मोहोटाथी समजवो। इति देवसी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं । पछी । इछा०। इछा०। कही कुसुमिण दुसमिणनो काउसग्ग चार लोग्गस्सनो (अथवा) शोल नव कारनो करी। पारी । प्रगट लोगस्स कहेवो । पछी खमासमण देई । जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन, जय वीयराय सुधी कहेवुं । पछी चार खमा सण पूर्वक। जगवान्। आचार्य । उपाध्याय। अनें सर्व साधु । प्रत्येकें बांदवा । पछी खमासमण बे देइ । सज्ञायनो आदेश मांगी। एक नवकार गणीनें । जरहे सरनी सज्ञाय कहीने (फरी) एक नवकार गणवो। पछी इछ कार सुहराईनो पाठ कहेवो। पछी इछाका०। राई प्रतिक्रमण ठाउं । क

हीने। जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने। पछी। इछं सव्वस्सवि राइय दु चिंतिय० ॥ कही। नमोथ्थुणं (तथा) करेमि भंते कही। इछामि ठामि काउ सग्गं० ॥ तस्सउत्तरी० कही ॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो का उस्सग्ग। पारीनें। प्रगट लोगस्स कही। सव्वलोए अरिहंत०। कही। एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करवो। पछी। पुख्खर वरदी० ॥ सुअस्स० ॥ वंदण० ॥ कही। अतीचारनी आठ गाथानो (अथवा) न आवडे तो। आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी। सिद्धाणं बुद्धाणं कही नें। त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेही। वांदणां दे देवा। (तिहांथी लेनें) अब्भुठिओ खामि। वांदणां दे दीजें (तिहां सुधी) देवसीनी रीतें जाणवुं। पण (जे) ठेकाणे देवसिअं आवे (ते) ठेकाणे राइयं कहेवुं। पछी आयरिअ उवज्झाए० ॥ करेमि भंते० ॥ इछामि ठामि० ॥ तस्स उ त्तरी० कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवडे तो। चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो। ते पारी प्रगट लोगस्स कही। छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेही। वांदणां बे देवा। (पछी) सकल तीर्थ वंदन करीनें। यथाशक्तियें पच्चख्खाण करवुं। पछी इछाकारेण संदिसह भगवन्। सामायिक, चउबीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउसग्ग, पच्चख्खाण, क रशुं छे जी। एम छ आवश्यक संभारवा। पछी पच्चख्खाण करशुं होय तो करशुं छे जी (अने) धारशुं होय तो धारशुं छेजी। एम कहेवुं। पछी इछा मो अणुसठिं० नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्०। कहीने। विशाल लोचन० ॥ नमोथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही। एक नवकारनो काउसग्ग पारी। नमोऽर्हत् कही। कल्याणकंदं नी प्रथम थोय कहेवी पछी लोगस्स०। पुख्खरवरदी० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं० कही ॥ अनुक्रमें चार थोयो कहीए छीए (तिहां सुधी) सर्व कहेवुं। पछी नमोथ्थुणं० कही। भग वान् आदि चारने। चार खमासमणेंवांदवा। पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी। अट्ठाइजेसु कहेवुं। (पछी) सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन जयवीय राय० ॥ काउसग्ग, थोय, पर्यंत कहीये। तिहां सुधी करवुं ॥ पछी खमासमण पूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउसग्ग० ॥

अने थोय कहीयें ढियें । तिहां सुधी करवुं । पछी सामायक पारवानी विधि नीरीते सामायक पारवुं ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पख्खि प्रतिक्रमण विधि ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियें (तिहां सुधी) सर्व कहेवूं । पण चैत्यवंदन, सकलाऽर्हतनुं, कहेवूं । अनें थोयो, स्नातस्यानी कहेवी । पछी खमासमण देईनें । इच्छाकारेण संदिसह भगवान् । देवसिअं आलोईअं पडिक्कंता । इच्छाकारेण० ॥ पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुं । एम कही मुह पत्ती पडिलेहिये । पछी वांदणां बे दीजें । पछी इच्छाकारे० संबुद्धा खामणेणं अब्भुठिओहं अब्भिंतर । पक्खिअं खामेऊं इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइआणं । जंकिंचि अपत्तियं० कही । इच्छाकारेण सं० ॥ पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि । जो मे पक्खिओ अईआरोकओ कही । इच्छाकारेण सं० ॥ पक्खी अतीचार आलोऊं (एम कही) वृद्धअतीचार कहियें । पछी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकित मूल बारव्रत । एकशो चो वीश अतीचार मांहें । जे कोई अतीचार । पक्ष दिवस मांहे । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय तेसवे हुं मने वचने कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ सव्वस्सवि पक्खिअ दुचिंतिअ । दुब्भासिय । दुच्चिठिअ । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ इच्छकारि भगवन् पसाओ करी पखीय तप प्रसाद करोजी । एम उच्चार करी आवी रीतें कहिए ॥ चउत्थेण एक उपवास । बे आंबिल । त्रण नीवि । चार एकासणा । आठ बे आसणा बे हजार सज्झाय । यथाशक्ति तपकरी प्रवेश करयो होय (तो) पइठ्ठा कहीए करवो होय (तो) तहत्ति कहीयें । न करवो होय (तो) अण बोल्या रहीअें । पछी वांदणा (बे) दीजे । पछी इच्छाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अब्भुंठिओहं अब्भिंतर । पक्खिअं खामेऊं । इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राईयाणं । जंकिंचि अपत्तियं० ॥ पछी वांदणा (बे) दीजें । पछी देवसिअं आलोईअं पडिक्कंता । इच्छाका० ॥ भगवन्० पक्खिअं पडिक्कमुं । सम्मं पडिक्कमामि ॥ इच्छं ॥ एम कही । करेमिभंते सामाइयं० कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिऊं । जोमे पक्खिओ० कहेवो । पछी खमासमण देई । इच्छाकारेण

संदि० ॥ पक्खिसूत्रपढुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने । श्रावक वंदित्तु कहे । (पछी) सुअ देवयानी थुई कहेवी पछी हेठा बेसी । जमणो ढिंचण ऊभो राखी । एक नवकार गणी । करेमि भंते० ॥ इच्छामि पडि० कही ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पछी करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउसग्गं । जोमे पक्खिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहीने बार १२ लोगस्सनो काउसग्ग करवो (ते लोगस्स) चंदेसुनिम्मलयरा, सूधी कहेवा ॥ (अथवा) अरुताजीश नवकारनो । काऊसग्ग करी पारवो ॥ पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । मुहपत्ती पडिलेहिनें । वांदणा बे दीजें । पछी इच्छाका० ॥ समाप्ति खामणेणं । अब्भुठिओहं अभिंतर० ॥ पक्खिअं खामेऊ । इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइयाणं । जंकिंचि अपत्तियं० कही । पछी खमासमण देईनें । इच्छाका० ॥ कही । पक्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पछी देवसी प्रतिक्रमणामा वंदित्तु कह्या पछी । बे वांदणां देईनें (तिहांथी) ते सामायक पारीयें । तिहां सर्व सूधी देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी थुईनें ठेकाणें, ज्ञानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं । सज्झायनें ठिकाणें उवसग्गहरं (तथा) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥ अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ ❀ ॥ इति पक्खी प्रति० ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौमासी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ये ऊपर कह्या मुजब पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) एटलुं विशेष । जे बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे (वीश) लोगस्सनो काउसग्ग करवो (अनें) पक्खिना आगारनें ठिकाणे । चउमासीना केहवा । यथा । तपनें ठेकाणे । छठेणं बे उपवास । बार आंबिल । ७ निवी । आठ एकाशणा शोल वे आसणा । चार हजार सज्झाय । ए रीते कहीए ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एपणऊपर लख्या मुजब । पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) बार लोगस्सना काउसग्गने ठेंकाणे । चालीश लोगस्स (अथवा) एकशोनें शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो (अने) तपनें ठेकाणे । अठम उत्तं

(एटले) त्रण उपवास ७ आंबिल। नवनीवि। बार एकासणां। चौवीस वेआसणां अने ७ हजार सज्झाय (ए रीते कहेवुं) अने पख्खिना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार कहेवा॥ इति पंच प्रतिक्रमण विधिः संपूर्णः॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवकार पांचिंदिअ कही। इरीयावही पमिक्कमवी। थापना होय तो नवकार पांचिंदिअ न कहेवुं। पछी तस्सउत्तरी कही। एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करी! प्रगट लोगस्स कही। ऊभे पगें बेसी मुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो, आदिनो पमिलेहण करवूं। पछी काजो काढी। जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं। पछी काजो कहाडनार थापनाजी सन्मुख ऊभो रही। इरिया वही पमिक्कमें। पछी। काजो परठववा जग्या शोधी। त्रणवार अणुजाणह जस्सग्गो कही। काजो परठवे। पछी त्रण वार, वोसिरे, कहे॥ इति पडिलेहण करवानो विधि॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ पच्चख्खाण पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावहियाए पमिक्कमीयें (पछी) जगचिंतामणिनुं चइत्यवंदन। जयवीयराय सुधी करवुं (पछी) मन्हजिणाणंनी सज्झाय कही मुहपत्ती पमिलेही। इच्छामि ०॥ इच्छाका०॥ पच्चख्खाण पारूं। यथाशक्ति इच्छामि ०॥ इच्छाका०॥ पच्चख्खाण पारयुं। तहत्ति। एम कही। जमणो हाथ, कटासणां (अथवा) चरवला ऊपर थापी एक नवकार गणी। पच्चख्खाण करयुं होय ते कहेवुं। ते लखीयें छीयें॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं। पोरिसिं साढपोरिसिं। गंठिसहियं मुंठिसहिअं पच्चख्खाण करयुं चउविहार। आंबिल, नीवि, एकासणुं, बे आसणुं, करयुं तीविहार। पच्चख्खाण फासिअं। पालिअं। सोहिअं। तीरिअं। किट्टिअं। आराहिअं। जंच न आराहिअं। तस्स मिछामि दुक्कडं। एमकही। एक नवकार गणवो॥ इति॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीरजिन वंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो। अरिक्रोधनें मन्नथी दूरवारो। संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं। राग द्वेषथी दूर थाओ उछाहिं॥ १॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी। शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी। मनु जन्म

पामी वृथा कां गमोडो। जैन मार्ग ढुंढी नुलाकां नमोडो ॥ २ ॥ अलो नी अमानी नीरागी तजोडो। सलोनी समानी सरागी नजोडो। हरी ह रादि अन्यथी शुं रमोडो। नदी गंग मूकी गलीमा पडोडो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्र धारा। केइ देव घाले गले रुंम माला। केइ देव नसंगें राखे डे वामा। केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे ले ई जपमाला। केइ मांसनक्षी महाविकराला। केइ योगिणी नोगिणी नोग रागें। केइ रुद्रणी नागनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश राखे। तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे। जदा लोनना थोकनो पार ना व्यो। यदा मधनो बिंडुओ मन्ननाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आ श राखे। तेह पिंमनें मन्नशुं लेम चाखे। दीन हीननी नीम ते केम नाजे। फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता नजो मोक्ष दाता। अलोनी प्रनूने नजो विश्वख्याता। रत्न चिंता म णि सारिखो एह साचो। कलंकी काचना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धी जेह प्राणी कहेडे। सवि धर्म एकत्व नूलो नमेडे। कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं। कीहां कायरानें कीहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंनखंमं। कीहां कोद्रवानें कीहां खीरमंडं। कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं। कीहां कामधेनु कीहां नागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की हां कूडवाणी। कीहां रंकनारी कीहां रायराणी। कीहां नारकीनें कीहां देव नोगी। कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ कीहां कर्म घाती कीहां कर्म धारी। नमो वीर स्वामी नजोअन्य वारी। जिसी सेजमां स्व मथी राज्यपामी। राचे मंदबुद्धि हरि जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुःख सं सारमां मन्न माचै। जना मूढमा श्रेष्टशुं इष्ट बाजे। तजो मोह माया ह रो दंनरोशी। सजो पुण्य पोशी नजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं सार अपार पामी। आव्या आश धारी प्रनू पाय स्वामी। तुहीं तुहीं तु हीं प्रनु पर्म रागी। नव फेरनी शृंखला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर जी अर्जडे एक मोरी। दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी। पुण्य उदय हुओ गुरु आज मेरो। विवेकें लह्यो में प्रनु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकारनो छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें। श्री जिन शासन सार। निश्चै थीनवकार नित। जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अमशठ अक्षर अधिक फल। नव पद नवे निधान। वीतराग श्रीमुख वदे। पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त। समरयां संपति थाय। संचित सागर सा तनां। पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि। सद्गुरु भाषि त सार। सो भवियां मन शुद्धशुं। नित जपीयें नवकार ॥४॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध। समशान विषे शिव नाम कुमरनें सोवन पुरिसो सिद्ध। नवलाख जपंता नरक निवारे पामें भवनो पार। सो भवियां भत्तें चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधी वरुशाखा डीकें वेसी हेठल कुंड हुताश। तस्करनें मंत्र समर्प्यो श्रावकें जड्यो ते आकाश। विधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट विरोध। जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध। नवलाख जपंतां थाये जिनवर इस्योडे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शीख्यो मुनिवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध। परभव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो परिगल रिद्ध। ए मंत्रथकी अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले। दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग अधबलतो ते टाले। संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र भुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी पामी प्रिय संयोग। इण ध्यानें कुष्ट टल्युं उंबरनुं रगत पित्तनो रोग। नि श्चेंशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण भुजंगम घाल्यो। धरणी करवा घात। परमेष्टि प्रभावें हार फूलनो वसुधा मांहि विख्यात ॥ कमलावतीये पिंगल कीधो पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी बाण प्रहार। पद पंच सुणंतां पांडुपति घर ते थइ कुंतानार। ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां शकट

पांचशौ माल । दीधे नवकारें गया देवलोकें विलसे अमर विमान । ए मं त्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनंती । होशे वार अनंत । नवकार तणी कोइ आद न जाणे एम भाखै अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समरयांसंप तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क ठोर ॥ पुंम्डरगिरिऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधरनें एकमोर । सह गुरु सन्मुख विधियें समरतां सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूलीकारोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहांसेठें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध । शेठनें घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र ॥ पंच सिज्ञाय महा व्रत पंचहु पंच सुमति समकित्त । पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ ॥ सो० ॥ ॥ १७ ॥ कलश (ढप्पय) नित जपीयें नवकार सार संपति सुखदाय क । सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्री जगनायक । श्री अरिहंत सुसिद्ध शुद्ध आचार्य भणीजें । श्री उवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजें । नव कार सार संसारखे । कुशल लाभवाचक कहे । एक चित्तें आराधतां विधि रुद्धि वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः नवकार छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुख कारण भवियण समरुं श्रीनवकार । जिन शासन आगम चउदै पूरवसार । इण मंत्रनी महिमा कहितां नलहुं पार । सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करै करजोम । जुइ मंगल विचरै तारै भवियण कोम । सुरछंदै विलसै अतिसय जास अनंत । पहिले पद नमियै अरि गंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरै भेदै सिद्ध थया भगवंत । पंचमि गति पुहता अष्ट करम करिहंत । कल अकल सरूपी पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजैपद वलि एह ॥ ३ ॥ गछ भार धुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणछत्तीसे थोम । श्रुत जाण शिरोमणि सागर जेम गंभीर । तीजै पद नमियै आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सुत्र भणावैसार । तप विध संयोगे भाषै अरथ

विचार। मुनिवर गुण युत्ता ते कहियै उवझाय । चौथै पद नमियै अह निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टालै पालै पंचाचार । तपशी गुण धारी बारी विषय विकार। तस थावर पीहर लोक मांहै जे साध । त्रिविधै ते प्रणमुं परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण फायण भूत वेताल। सवि पापपणासै थास्ये मंगल माल। इण समरयां संकट दूरटलै तत्काल। जंपै जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त०

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं। सारं नव पदात्मकं। आत्मरक्षा करं वज्र पंजरान्नं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिर सिस्थितं । ॐ नमो सव्व सिद्धाणं। मुखे मुख पटंबरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरि याणं। अंगरख्या तिशायिनी। ॐ नमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं। ॐनमोलोए सव्वसाहूणं। मोचके पादयो सुन्ने । एसो पंच नमुंकारो। शिला वज्रमईतले । सव्व पावप्पणासणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच स व्वेसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं। वप्रो परि वज्रमयं। पिधानं देहरक्षणे। महाप्रभावा रक्षेयं। क्षुद्रो पद्रव नाशनी परमेष्टी पदोद्भूता । कथिता पूर्व सूरिभिः। यश्चैवं कुरुते रक्षां। परमेष्टी पदै सदा । तस्यनस्या द्भयं व्याधी । राधिश्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ❀ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन जंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो पाश संखेसरो मन शुद्धें । नमो नाथ निश्चें करी एक बुद्धें । देवी देवतां अन्यनें शुं नमो गो । अहो भव्यलोको भुला कां भमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोकना नाथने शुं तजो गो । पड्या पाशमां भूतने कां भजो गो । सुरधेनु जंगी अजा शुं अजो गो । महापंथ मूंकी कुपंथें व्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काचमाटें । ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटें । सुरद्रुम उपार कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तें प्रभु पाश सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं । सहू जीवने जे करे छे सनाथं । महा तत्व

जाणी सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मा नुषोने वृथा कां गमो छो । कुशीलें करी देहनें कां दमो छो । नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं । भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न भाखे स दा हेत आणी । दयाभाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे मेह वूठा । प्रभु पाश शंखेश्वरो आपतूठा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर विलशै नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि रिवर चढे । मनवंछित लीला संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकमा । तस नामें नावे ढूकमा । भूत प्रेत नविमंरे प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय । गौतम नामें वाधे आय । गौतम जिनशासन शणगार । गौतम ना में जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल । मनवंछित कापड तंबोल । घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौत म उदयो अविचल भाण । गौतम नाम जपो जग जाण । मोहोटा मंदिर मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोड वारू विलशै वंछित कोड । महीयल मानें मोहोटा राय । जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी संगत मले । गौतम नामें निर्मल ज्ञान । गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु । गुरु गौतमना गुण छे बहु । कहे लावण्य समय कर जोम । गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ १०९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शोल सतीनो बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए । प्रभातें ऊठी मंगलीक कामें । सोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी बेहेनडी ए । घट घट व्यापक अक्षर रूपें । शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतीय शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषभ सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिभुवन मांहे । जे

ह अनोपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी । शीयलवती शुद्ध श्राविका ए । अभदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या । केवल लही व्रत भावि का ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम वल्लभा ए । जोवन वेशें कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भर तारी पांभव नारी । द्रुपद तनया वखाणीयें ए । एक शो आठे चीर पूराणां शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौ शल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सलूणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रभाजि का ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए । तस घर घरणी मृगावती सती । सुरनुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची । राची नहीं विषयारसें ए । मुखडुं जोतां पाप पु लाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । ज नकसुता शीता शती ए । जग सहु जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थ यो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी । कूवाथकी जल काढीयुं ए । कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा । चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित । शिवा शिवपद गामिनी ए । जेह ने नामें निर्मल थइयें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पां डुरायनी । कुंतानामें कामिनी ए । पांभव माता दशे दशारनी । बहेन पति व्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रिविधें तेहनें वंदीयें ए । नाम जपंतां पातिक जाए । दरिशण दुरित निकंदियें ए ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी । दमदंती तस गेहिनी ए । संकट पडतां शीयलज राख्युं । त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग जन पूजित । पुष्पचूला नें प्रभावती ए । विश्व विख्याता कामितदाता । शो लमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें भाखी शास्त्रें साखी । उदयरतन भाखे मु दा ए । वाहाणुं वातां जे नर भणशे । ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शेत्रुंजय रुषभ समोसरया । भला गुण भरयोरे । सीधा साधु अनंत । तीरथ ते नमुंरे । तीन कल्याणक तिहां थया । मुगतें गयारे । ने

मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेहरोरे । नरतें नराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबू चौमुख अतिभलो । त्रिभुवन तिलोरे । विम ल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रलीयामणोरे । सीधा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेंरे । सीधा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी । रुडें नरोरे । मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें । दुःख वारीयेंरे । अरिहंत बिंब अ नेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बीकानेरज वंदीयें । चिरनंदीयेंरे । अरिहंत देहरा आ ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो । पंचासरोरे । फलोधी थंभणपाश ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीझरोरे । जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करोरे । राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ श्रीनाभोजाई जादवो । गोभी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा । बावन नलारे । रुचक कुंभले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा नतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां । होजो मुज इहांरे । समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीराणपुरो रलीयामणोंरे लाल । श्री आदीसर देव । मन मो ह्योंरे । उत्तंग तोरण देहरुंरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ च उवीश मंमप चिहुं दिशेंरे ला० ॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुव नदीपक देहोंरे ला० ॥ समोवम नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ नलें जुहारया जोंयरांरे ला० ॥ सूतां ऊगी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुंरे ला० ॥ मोटो देश मेवाम ॥ म० ॥ लख्ख नवाणुं जगावि यारे ला० ॥ धन धन्नो पोरवाम ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ख रतर वसई खांतशुंरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद बी जा वलीरे ला० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृता रथ हुं थयोंरे ला० ॥ आज नयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणीरे ला० ॥ दूरें गयुं दुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोल

गिरंतरेरे ला० ॥ मागशिर माश मझार ॥ म० ॥ राण पुरें यात्रा करीरे ला० ॥ समयसुंदर सुखकार म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुक्खलवइ विजयें जयेंरे । नयरी पुंमरीगणी सार । श्री सीमंधर साहिबारे । राय श्रेयांस कुमार । (जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह) ॥ १ ॥ (आंकणी) ॥ मोहोटा न्हाना अंतरोरे । गिरुआ नवि दाखंत । शशि दरिशण सायर वधेरे । कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ गाम कुठाम न लेखवेरे । जग वरसंत जलधार । करदोय कुसुमें वासियेंरे । गाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणें रे । उद्योतें श शि सूर । गंगाजल ते बिहु तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे । तिम तुमे छो महाराज । मुजशुं अंतर किम क रो रे । बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे । ते न वि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे । नंदन रुकमणी कंत । वाचक जश इम वीनवे रे । जयरंजन भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माता त्रिशला फुलावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालरुवानां गीत । सोना रूपानें वली रत्नें जडिउं पालणुं । रेशम दोरी घूघरी वागे घुम घुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदनें ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्व प्रभुथी वरस अढीशें अंतरें । होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण । केशी स्वा मी मुखथी एवी वाणी सांभली । साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण । हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्रीके जिनराज । वीता बारे चक्री नहि हुवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रभुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें जाएया चोवीशमा जिनराज । मारी कूखें आव्या तारण तरण जिहाज । मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन शिर ताज । मारी कूखें आव्या संघ तीर थनी लाज । हुंतो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ मुऊनें डो होलो उपन्यो जे बेसुं गज अंबाडीयें । सिंहासन पर बेसुं चामर छत्र ध

राय । ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहरा तेजना । तेदिन संभारुंने आनं द अंग न माय ॥ हा० ॥ ३ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारनें आ ठ छे । तेहथी निश्चय जाएया जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगें लंछन सिंह बिराजतो । में पहले सुपने दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्धनना तमे । नंदन भोजाइयोना देवरजो सुकुमाल हसशे भोजाइयो कही देवर माहरा लाडका । हसशे रमशेनें वली चुंटी खणशे गाल । हशशे रमशे नें वली तुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो । नंदन नवला पांचशें मामीना भाणे ज छो । नंदन मामलिआना भाणेजा सुकुमाल । हशशे हाथे ज ढाली कहीने नाहना भाणजा । आंख्यो आंजी ने वली टबकुं करशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगला । रतने जरीआ झालर मोती कशबी कोर । नीला पीलानें वली राता स खे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सूखलडी सहु लावशे । नंदन गजवे भरशे लाडू मोती चूर । नंदन मुखमां जोइने लेशे मामी भामणां । नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी सात सती । मा री भत्रीजीने बेन तमारी नंद । ते पण गुंजो भरवा लाखणसाई लावशे । तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशे लाख टकानो घूघरो । वली शूआ मेनां पोपट ने गजराज । सार स हंस कोयल तीतरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे का ज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ । नंदन तमने अमनें केलीघरनी मांहे । फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडलें । बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तम ने मेरू गिरिवर सुरपतियें नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय । मुखना ऊपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा । वली तनपर वारुं ग्रह गणनो स मुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला भणवा नीशालें पण मूंकशुं । गजपर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज । पसली भरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं ।

सूखमली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहो टा थाशोने परणावशुं। वहूवर सरखी जोमी लावशुं राजकुमार। सरखा वेवाइ वेवाणुंने पधरावशुं। वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोइने दीदार ॥ हा०॥ ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पक्ष नंदन ऊजला। माहरी कूखें आव्या तात पनोता नंद। माहरे आंगण वूठा अमृत दूधै मेहुला। मा हरे आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गा युं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं। जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज। बजीमोरा नगरें वरणव्युं बीरनुं हालरुं। जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निंदावारक सझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे। निंदानां बोल्या महा पापरे वयर विरोध वाधे घणोरे। निंदा करतां न गणे माय बापरे॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुह्मेरे। पगमां बलती देखो सहु कोयरे। परना मैला में धोयां लूगडांरे। कहो केम ऊजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सं भालो सहुको आपणोरे। निंदानी मूको परी टेवरे। थोमे घणे अवगुणे सहु भरयारे। केहनां नलिया चुए कहेनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे। तप जप कीधुं सहु जायरे। निंदा करो तो करजो आ पणी रे। जेम बूटकवारो थायरे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहंजो सहुको तणोरे। जेहमां देखो एक विचाररे। कृष्णपरें सुख पामशोरे। समयसुं दर सुखकाररे॥ निं० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आनंदघनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषभजिनेश्वर प्रीतम माहरोरे। और न चाहुंरे कंत। रींज्यो साहेब संग न परिहरेरे। भांगे सादि अनंत ॥ रुषभ० ॥ १ ॥ प्रीत स गाईरे जगमां सहु करे रे। प्रीत सगाई न कोय। प्रीति सगाईरे निरुपाधि क कहीरे। सोपाधिक धन खोय ॥ रुषभ० ॥ २ ॥ कोई कंत कारण काष्ट भक्षण करेरे। मिलसुं कंतने धाय ए मेलो नवि कहीये संभवेरे।

मेलो ठाम न ठाम ॥ रुषन० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति घणो तप करेरे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धरशुंरे । रंजन धातु मिलाप ॥ रुषन० ॥ ४ ॥ कोई कहे लीलारे अलख अलख तणीरे । लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि घटेरे । लीला दोष विलास ॥ रुषन० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नेरे पूजन फल कह्युंरे । पूज अखंडित एह । कपट रहित थई आतम अरपणारे । आनंद घन पद एह ॥ रुष० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारुं मन मोह्युंरे श्रीबिमलाचलें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

पंथडो निहालुं रे बीजा जिनतणोरे । अजित २ गुण धाम । जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतियोरे । पुरुष किस्युं मुझ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतोरे । भूलो सयल संसार । जेणे नयणे करी मारगजोइयेंरे । नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे । अंधो अंध पुलाय । वस्तु विचारेरे जो आगमें करी रे । तो चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वाद परं परारे । पार न पहोचे कोय । अभिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य नयण तणोरे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनारे । वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुंरे । ए आस्या अविलंब । ए जन जीवेंरे जिनजी जाणजोरे । आनंद घन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संभवजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रातमी रमीनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संभवदेव त धुर सेवो सवेरे । लही प्रभु सेवन भेद । सेवन कारण पहेली भूमिकारे । अभय अद्वेश अखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥ भयचंचलताहो जे परिणामनी रे । द्वेष अरोचक भाव । खेद प्रवृत्तीहो करतां थाकीयें रे । दोष अबोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥ चरमावर्त्तहो चरम करण तथा रे । भव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुले भलीरे प्रापति प्रवचन वाक ॥ संभव ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधसूं

रे। अकुशल अपचय चेत। अथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे। परीशी लन नय हेत॥ संभव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेंहो कारज नीपजेरे। एमां कोई न वाद। पण कारण विण कारज साधीयेंरे। ए जिन मत उनमाद॥ संभव० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे। सेवन अगम अनूप देजो कदाचित सेवक याचनारे। आनंदघन रस रूप॥ संभव० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अभिनंदन जिन दरिशण तरसीये। दरशण दुर्लभदेव। मत २ भेदेंरे जो जई पूछीयें। सहु थापे अहमेव॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरशण दोहलूं। निरणय सकल विशेष। मदमें घेरयोरे अंधो किम करे। रवि शशि रूप विलेख। अभि०॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरी जोईयें। अति दुरगम नय वाद। आगमवादें हो गुरुगमको नही। ए शवलो विषवाद॥ अभि० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा। तुझ दरिशण जगनाथ। धीठाई करी मार ग संचरूं। सेंगू कोई न साथ॥ अभि०॥ ४ ॥ दरिशण २ रटतो जो फरूं तो रण रोझ समान। जेहने पीपासा हो अमृत पाननी। किम भाजे विष पान॥ अभि० ॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो। सीजे जो दरिशण काज। दरिशण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी। आनंदघन महाराज॥ अभि० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत (तथा) केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा। दरपण जिम अविकार। सुग्यानी॥ मति तरपण वहु सम्मत जाणियें। परिसरपण सुविचार॥ सु ग्यानी॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा। वहिरात म धुरि भेद॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो। परमातम अविछेद॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आतम बुधें हो कायादिक ग्रह्यो। बहिरातम अ घरूप। सुग्यानी। कायादिकनो हो साखी धर रह्यो। अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदेवो पूरण पावनो। वरजित सकल

उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतींद्रिय गुण गण मणि आगरू । इय परमातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ वहिरातम तज अंतर आतमा । रूप थई थिर भाव ॥ सु० ॥ परमातमनुं हो आतम भाववूं । आतम अरपण दाव सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां । भरमटले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे । आनंदघन रस पोष सु० ॥ सुमति० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी । विविध भंगी मन मोहेरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता । उदाशीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हित करणी करुणा । कर्म विदारण तीक्ष्णारे । हाना दाना रहित परणामी । उदाशीनता विक्षणारे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण पर दुख रीझेरे । उदासीनता उभय विलक्षण । एक ठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अभयदान ते मलक्षय करुणा । तीक्ष्णता गुण भावेरे । प्रेरण विणु कृत उदाशीनता । इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता । निग्रंथता संयोगेरे । योगी भोगी वक्ता मौनी । अनुपयोगि उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी । चमत्कार चित्त देतीरे । अचरिजकारी चित्र विचित्रा । आनंदघन पद लेतीरे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो० ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम जतन करीनें राखुं । तिम तिम अलगुं भाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वास र वसती ऊजम । गयण पायालें जाय । साप खायने मुखडुं थोथुं । एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगतितणा अभिलाषी तपीया । ज्ञानने ध्यान अभ्यासें । वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते । नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें । नावे किणविध आंकूं । किहां कणे

जो हठकरी हटकूं। तो व्याज ताणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं। साहुकार पण नाही। सर्व मांहेने सहुथी अल गुं। ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कांन न धारे। आपमतें रहे कालो ॥ सुर नर पंडित जन समजावे। समजे न महा रोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाएयुं ए लिंग नपुंसक। सकल मरदनें ठेलै। बीजी वातें समरथ छे नर। एहनें कोइन झेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें सगलुं साध्युं। एह वात नही खोटी। एम कहे साध्युं ते नवी मानुं। ए कहिवतछे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य ते वस आणुं। ते आगमथी मतिआणुं। आनंदघन प्रभु माहरुं आणो। तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांडीनें (यावत्) लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी। चैत्यवंदन। नमुत्थुणं कही, अरुहुं जयवीअराय। आभव मखंमा सूधी हाथ जोमी। कहे। (वली) चैत्यवंदन, कहीने। नमुत्थुणं। कही, (यावत्) चार थोयो कहीये छीयें तिहां सूधी बधुं कहेवुं। पछी नमुत्थुणं कही। (वली) चार थोयो कहीयें त्यां सुधी वधुं कहेवुं। पछी नमुत्थुणं; (तथा) बे जावंती कही। स्तवन कही। अरुहुं जयवीअराय आभवमखं मा सूधी कही। पछी चैत्यवंदन कही। नमुत्थुणं कही। (आखो) जय वीय राय कहेवो ॥ इहां सवारें देव वांदवां। (तेमां) मन्ह जिणाणं नी सझाय कहेवी। अने मध्यान्हे (तथा) सांझे देव वांदवामां सझाय न कहेवी ॥ इति देव वांदवानो विधि ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञान विमलजी कृत, चउमाशी देववंदन विधिः ॥❀॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमी काउसग्ग करी। लोगस्स० कही एक खमासमण देई। इच्छाका० श्री रुषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं। एम कही चैत्यवं० करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदि जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनेसर रुषभ देव। सबठथी चविया। वदि चउथें

आषाढनी । शक्रें संस्तविया । अष्टमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रभुजा या । दिक्षा पण तिणहीज दिने । चउनाणी थाया । फागण वदि इग्या रसी ए । ज्ञान लहे शुभ ध्यान । महा वदि तेरशें शिव लह्या । परमानंद निधान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ इहां नमुत्थुणं० । अरिहंत चेइयाणं० । वंदण वत्तिया कही । एक नवकारनो कावसग्ग पारी । ४ थुई क्रमसें कहियें । ते लिखियै ठीयें ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय जोगी प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषभ जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण का या मंगला जासजाया । बृषभ लंछन पाया देवनर नारी गाया । पण सय धनु गाया ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवी श नदार । एक नेम विना सवि समवसरया निरधार । गिरि करुणें आ वी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥ ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गरु सुत्र मझार । सिद्धा चलें सीधा बोल्या बहु अणगार । ते माटें ए गिरि सवि तीरथ शिरदार । जिन जेटे थावे । सुख संपति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेश्वरी शासननी रखवाल । ए ती रथ केरी सानिध करे संभाल । गिरुओ जस महिमा संप्रति कालें जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां । नमुत्थुणं, जावंती (बे) कही नमोर्हत्० कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ललनानी देशी) आदि करन अरिहंतजी । लगनी अवधार ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें । वंछित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥ आदिकरण अरिहंतजी (ए आंकणी) उपगारी अवनी तले । गुण अनंत भगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥ ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ल लना । ते अमृत फलनें लहै । ए जुगतुं निरधार ॥ ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग बे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ भरतादिक थया केवली अनुभव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाभिराय कुल मंडणो

मरु देवी सर हंस ॥ ललना ॥ रुषभदेव नित वांदियें । ज्ञान विमल अवतं स ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीरुषभ जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछी जय वीयराय अधों कहवुं । एक खमासमण देई । इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुदि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुदि आठमे जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुदि नवमें थया । पोषी इग्यार स । उज्वल उज्वल केवली । थया अक्षय कृपारस । वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए । पंचम गति लह्याजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको कावसग्ग करके । थुईकी गाथा कहे (इसी तरै सब ठिकाणें विध करवो) ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । भविकजन नगीनो जेहथी मोहलीनो । हुं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय ते दीनो । ताहरे ध्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी । चविया श्री संभव । फागुण शुदि आ ठम दिनें । शुदि चउदसी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासें जनमीया । त णी पूनम संजम । कार्त्तिक वदी पंचमी दिनें । लहे केवल निरूपम । पंच मी चैत्रनी उजली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रभु प्रणम तां । सीझे सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन संभववारु । लंछनें अश्वधारु । भवजलनिधि तारु । काम गद तीव्र दारु । सुरतरु परिवारू । दूसमाकाल मारू । शिव सुख किरता रु । तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयंत विमान थकी चव्या । अभिनंदन राया । वैशाख शुदि चौथें माव सुदि बीजे जाया । माहाशुदि बारशें ग्रहिय दिख्ख । पोषशुदि चउदस । केवल शुदि बैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चउथा जिनवरनें नमी ए ॥ चउगति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पार॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अभिनंदन वंदो । साम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । घ र्षिता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंछनें वानरिंदो । जस आगल मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाय क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुदि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं जम । शुदि नवमी वैशाखनी । निरुपम जस शम दम । चैत्र इग्यारस कुज ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीयें । नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोमि कापे । सुमति सुजन व्यापे । बोधिनु बीज व्यापे । अविचल पद थापे । जाप दीप प्रतापें । कुमति कदही नावें । जो प्रभु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन० ॥ ५॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पद्म प्रभ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम ग्रेवेयकथी चव्या । माहावदि छठ दिवसें । कातीवदि बा रसें जनम । सुर नर सवि हरषे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रभ स्वामी चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगशिर वदि इग्यारसें । रक्त कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पद्मप्रभु सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । सुगति वधु मनावे ।

रक्त तनु कांति फावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रभु गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उठा ग्रैवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । जादरवा वदि आठ मे । अवतरिया खास । जेठ सुक्ल बारसी जणया । तस तेरसे संजम । फा गुण बदि छठे केवली । शिव लहे तस सत्तमि । सत्तम जिनवर नामथी ए । साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि नितु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सा तमा श्री सुपासें । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय भवि गुणरास जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चंद्र प्रभजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा । चंद्रप्रभ सम देह । अवतरीया विजयं तथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि बारसें जनमीया । तस तेरसे साध फागुण वदिनी सातमे । केवल निराबाध । भाद्रव सातम शिव लह्या ए । पूरी पूरण ध्यान । अठ महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अभिधान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ नरगति पामी उद्यमें धर्ममधामी । जिन नमो शिरनामी चंद्र प्रभ नाम स्वामी । मुझ अंतरजामी जेहमां नहिय खामी । शिवगति वरगामी सेवना पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोरा सुविध जिणंद नाम । बीजुं पुष्फ दंत । फागुण वदि नव में चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जणया । तस छठें दिहा । काती शुदि त्रीजें केवली । दिये बहु परें शिहा । शुदि नवमी भा द्रवा तणी ए । अजर अमर पद दोय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुविधि जिन नदंत । नाम वली पुष्फ दंत । सुमति तरुणि कंत । संतथी जेह संत । कीयो कर्मकुरंत । लछि लीला वरंत । नव ज लधि तरंत । तेनमीजे महांत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ❀ ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या । शीतल जिन दशमा । वदि बैशा षनी अठ । जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ महावदि बारस जनम दिख्या । तस बारसें लीध । वदि पोष चउदश दिने । केवली परसिद्ध । वदि बीजे वै शाखनी ए । मोक्ष गया जिनराज । ज्ञान विमल जिनराजथी । सीजे स गला काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण शीतल देवा वालही तुझ सेवा । जेम गज मन रेवा । तुंही देवाधि देवा । पर आण वदेवा शमउे नित्यमेवा । सुख सुगति लहे वा हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या । श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दि वस अठें । करत वहु आनंद । फागुण वदि बारसें जनम । दीक्षा तस ते रस । केवली माह अमावसि । देसना चंदन रस । वदि श्रावण त्रीजे ल ह्या ए । शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए नगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सविजिन अवतंस । जास इख्याग वंश । विजित मदन कंस शुद्ध चारित्रहंस । कृत नय विध्वंस । तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषन्न ककुद अं श । ते नमुं पुण्य वंश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुदी नवम । जनम्या फागु

ण चौदशी। अमावसी संजम। माह शुदि बीजे केवली। चौदशि आषा ढी। शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट। सवि दूरे काढी। वासुपूज्य जिन बारमा ए। विद्रुम रंगें काय। श्री नयविमल कहे इस्युं। जिन नमतां सुख थाय॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वसुदेव नृप तात। श्री जयादेवी मात। अरुण कमलगात। महिष लंछन विख्यात। जसगुण अवदात। शीत जाणे निवात। होय नित सुखशात। ध्यावतां दिवस रात॥ १॥ इति॥ ❀ ॥ १२॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अछम कल्पथकी चव्या। माधव शुदि बारस। शुदि महात्रीजें जएया। तस चोथे व्रत रस। शुदि पोष छठें लह्या। वर निर्मल केवल। वदि सातमि आषाढनी। पाम्या पद अविचल। विमल जिणेसर वंदिअें ए। ज्ञान बिमल करी चित्त। तेरसमो जिन नितु दिये। पुण्य परिघल वित्त॥ १॥ इति॥ ❀ ॥ १३॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल विमल भावे वंदतां दुःख जावे। नव निधि घर आ वै विश्वमां मान पावे। सुवर लंछन फावे भोमिअर स्वेद थावे। मनु विनति जणावे। स्वामिनुं ध्यान ध्यावे॥ १३॥ इति विमलनाथ स्तुति॥

॥ ❀ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत थकी चविया इहां। श्रावणवदि सातम। वैशाखवदि तेरसी दिनें। जनम्या चउदस रातम। वदि वैशाखे चउदसि। केवल पुण्य पा म्या। चैत्रशुदि पंचमीदिने। शिववनिता काम्या। अनंतजिनेश्वर चउदमा ए। कीधा दुष्मन अंत। ज्ञानविमल कहेनामथी। तेज प्रताप अनंत॥ १४॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंत जिन नमीजें कर्मनी कोट गीजें। शिव सुख फल लीजें सिद्धि लीला वरीजें। बोधि बीज मोह दीजें एटलुं काज कीजें। मुझ मन अति रीझे स्वामिनुं कार्य सीझे॥ १॥ ❀ ॥ १४॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मास नी । शुदि त्रीजें जनम । तेरस माहिं कुजली । लीयें संजम भार । पोषि पूनमे केवली । गुणना भंडार । जेठी पांचमि कुजली ए । शिवपद पाम्या जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहें लीनो । वररमण शचीनो । जेहने वर्ण लीनो । त्रिभुवन सुख कीनो लंछने वज्र दीनो । नवि होय ते दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भाद्रवा वदि सातम दिने । सवठथी चविया । वदि तेरस जेठें जणया । दुःख दोहग समीया । जेठि चउदस वदि दिने । लीये संजमवेम । केवल उजल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चक्री परवडा ए । शोल मा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लह्या । नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । त्रिभुवन सुखकारी सप्त भय ईतिवारी । सहस चउसठनारी चउद रत्नाधिकारी । जिन शांति जीतारी मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केशर घोली मांहें कर्पूर चोली । पेहरी सीत पटोली वासियें गंधधूली । भरी पुष्पपटोली टालीयें दुःख होली । सवि जिनवर टोली पूजीयें भाव लोली ॥ २ ॥ शुभ अंग इग्यार तेम उपांग वलि बार । मूल सुत्रते चार नंदी अनुयोगद्वार । दशपयन्न उदार छेदखद वृत्ति सार । प्रवचन विस्तार भाष्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन दृष्टी सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखद्वंदा । ज्ञानविमल सुरिंदा साम्य भाकंद कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानथी नित्य वंदा ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (मोतीडानी देशी) सकल समीहित सुरतरु कंदा । शांति कर

ण श्री शांति जिणंदा । साहिबा जिनराज हमारा । मोहना जिनराज हमा रा ॥ सा० ॥ (ए आंकणी) त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो । पलक मा त्र न रहुं हिवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । लं ड्यो पण तुह्मे नवि लंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुह्मे कोइशुं नेह न लावो । वी तराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समझे पण डोरु दीधाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्तिखांची मन मांहे आएयो । सहज स्वभावें पण में जाएयो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची । तुम पदसे वा अंकें जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कबजे आव्यातो छूटीजें । जेह मुह मांगे तेहज दीजें ॥ सा० ॥ अभेद पण जो मनमां मलशो । कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अक्खय भाव निधी तुम पास । आपी दासने पूरो आश । ज्ञान विमल समकित प्रभुताई । दीधी साहेब एह वडाई ॥सा०॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सवठथी चविया । वदि चउदश वैशा खनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वैशाखनी लीये संजम भार । शुदि त्रीजें चैत्रहतणी लहे केवल सार । पडवा दिन वैशाखनीए पाम्या अ विचल ठाण । उठा चक्री जयकरु ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुंथु दयाला छाग लंछन सुहाला । जस गुण शुभ मा ला कंठे पेहरो विशाला । नमति भवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिभुव न तेजाला ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरवारथथी आविया फागुण शुदि बीजें । मृगशिर शुदि द शमी जएया अरदेव नमीजे । मृगशिर शुदि एकादशी संजम आदरीयो क्षाती उज्जल वारसें । केवल गुण वरीओ । शुदि दशमी मृगशिर तणी ए शिवपद लहे जिननाथ । सत्तम चक्रीनें नमुं नय कहे जोमी हाथ ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरजिन ए जुहारूं कर्मनो क्लेश वारूं । अहनिश संभारूं ताह रूं नाम धारूं । कृत जय जय कारूं प्राप्त संसार सारूं । नविहोय ते सारूं आपणो आप तारूं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चव्या जयंत विमानथी फागुण शुदि चउथें । मृगशिर शुदि इग्यारसें जनम्या निग्रंथे । ज्ञान लह्या एकणादिनें कल्याणक तीन । फागुण सुदि बारसें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेसर नीतमाए । जगणी शमा जिनराज । अणपरणया अणनूप पद । भवजल तरण जहाज ॥ १९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन मल्ली महिला वानडे जेहनीला । ए अचरिज लीला स्त्री तणें नाम पीला । दुशमन सवि पील्या स्वामि जोडे वसीला । अविचल सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ अंधारमी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि बारस व्रते । वदि बारसें ज्ञान फागुणनी तेम जेठनी । नवमी कृष्ण निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उजाला । तिहुयण करे प्रकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास ॥२०॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी हुं नमुं शीश नामी । मुझ अंतर जामी का मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशो शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया । श्रावणवदि आठम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आषाढनी थया तिहां अणगा

र । मृगशिर शुदि इग्यारसें वर केवल धार । वदि दशमी वैशाखनी ए । अ खय अनंता सुख्ख । नय कहे श्री जिननामथी । नासे दोहग दुक्ख ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नही विश्वगानो । सुत बप्पा मानो पुण्य केरो खजानो । कनक कमल वानो कुंभ छे जे कृपानो । सविनुवन प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । काती वदि बारस । श्रावण शुदि पंचमी जण्या । यादव अवतंस । श्रावण सुदि छठे संजमी । आसोज अमावस नाण । शुदि आषाढनी आठमे । शिवसुख लहे प्रमाण । अरिष्ठ नेमि अणपरणीया ए । राजिमतीना कंत । ज्ञान विमल गुण एहना । लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥ इति॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गया शस्त्रागारें शंख निज हाथ धारें । कियो शब्द प्रचारें वि श्व कंप्यो तिवारें । हरि संशय धारे । एहनी कोइ सारे । जयो नेम कुमारे । बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू द्वीपें विचरंता जिन देव । अर्धधात की खंमे सुरनर सारे सेव । अर्ध पुष्कर अर्धे इणिपरें वीस जिनेश । संप्र तिए सोहे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम नवजल नि धिने तारे । कोहादिक मोटा मल्लतणा नय वारें । जिहां जीवदया रस स रस सुधारस दाख्यो । नवि नाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन शासन सान्निध्य कारी विघन विडारे । समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे । शेत्रुंज गिरि सेवो जिम पामो नवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दो घमीया । दोघमीयां दोचार घमीयां । रहो रहोरे यादव० ॥ (ए आकणी) । मोज महिराण शिवादेवी जाया । तुमें छो आधार अमवडीयां ॥ १ ॥ रहो० ॥ नाह विवाह चाह करीआए । क्युं जावत

फिर रथ चमीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । गोरदी ए पशुपंखी चमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विगानं में बली जानं । करुं वीन ति चरणे पमीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमें स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन । वामी वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टभवांतर नेह निवाहत । नवमे भवते वीछ मीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि चमीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरें हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां॥ रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विभूषण नेमजी । राजुल मीठी वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख मीयां ॥ रहो० ॥६॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी ज नम त्रिभुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण भूर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख भरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे वि घननें जे विडारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । मुझ प्राणाधारे मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुभव जयजावे केवल ज्ञान पावे । षटजे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर जाण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार दश सत्य प्रकार पचख्खाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेभया जिहां उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाजा जे महा लोग पाजा । सुरनर महिपाजा शुद्ध दृष्टी कृपाजा । नय विमल विशाजा ज्ञान लछी मयाजा । जय मंगल माजा पास नामें सुखाजा ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारे माथे पचरंगी पाव सोनेरो गोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

प्रनुपासजिणेसर त्रुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरम मंदर धूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुं छवि निरमल जलधरो । सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुमगुण त्रोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी निजमतें ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ षट दर्शन त्रासे युक्ति निरासें शासनें ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशालें सहज समाजे त्रावनें ॥ सा० ॥ तुं ज्ञाननें ज्ञानें आतम ध्यानें आतमा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी त्रेद अत्रेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेकें देखियें ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अकामी लेखियें ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी जो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥ आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नियत विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणें ॥ सा० ॥ मोहारि विनाशी तुं जित काशी कवित्रणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी लायक नाथ छे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ छे ॥ सा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगें पुद्गल त्रोगें तें दह्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु समीयो सुखर नमियो सहुकहे॥सा०॥ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुणलहे ॥ सा० ॥७॥ इम तुम गुण थुणीयें कर्मनें हणीये पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणिये सेवक गणीयें जलकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिजुवन इंदा सं थुणे ॥सा०॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुमपय बंदा गुण त्रणे॥सा०॥८॥इति॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुदि आषाढ छठ दिवसें प्राणतथी चवीया । तेरस चैत्रह शुदि दिने त्रिशलायें जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिनें आपे संजम आराधे

शुदि दशमी वैशाखनी वर केवल साधे । काती कृष्ण अमावसीए । शिव गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे । पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारंभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लह्यो भवजल तीर धर्म कोटीर हीर । दुरति रज समीर मोह मूसार सीर । दुरित दहन नीर मेरुथी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर चरण कल्पद्रु कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग जंतु दयाला धर्मनी शास्त्र शाला । कृत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला सुरनर महिपाला वंदता ढे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी द्वादशांगी रचाणी । सगुण रयण खाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि सुखनी निशाणी । दुह पीलण घाणी सांभलोभाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला जे वली लोग पाला । समकित गुण वाला देव देवी कृपाला । करो मं गल माला टालिने मोह हाला । सहज सुख रसाला बोध दीजें विशाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज गईथी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदो वीर जिणेसर राया । त्रिशला माता जायाजी ॥ हरि लंछन कंचन वनकाया । मुझ मन मंदिर आयाजी ॥ वंदोवीर० ॥ १ ॥ दुषम समये शासन जे हना । शीतल चंदन गायाजी । जे सेवंतां भविजन मधुकर । दिन दिन होत स वायाजी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी ॥ वंदो० ॥३॥ कर्म कठिन भेदन बलवत्तर । वीर बिरुद जिन पायाजी । ए कल मल अतुली बल अरिहा । दुशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण तुं मात पिता तुं सहायाजी । सिंहपरें चारित्र आराधी । सुजश निशान ब जायाजी ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ गुण अनंत भगवंत बिराजे । वर्द्धमान जिनराया । जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥ वंदो० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीयराय कहेवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयठाण । स्याद्वाद सा

धन पद एही अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सहीए नमो जिणाणं) ॥ २ ॥ ए (आंकणी) ॥ बिहुं तेरलख सग्ग कोमि नवणवई । सासय जिणहरमाणं । तेरशें नव्याशी कोमी सग्गसठि बिंबह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही० ॥ मेरु वैताढ्य वखारा कंचन । यमक कुंमद्रह जाणुं । एकत्रीश ओगणयासी जिनवर । मानवलोकें वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख इक्यासी सहस चारसो त्र्याशी अधिक बिंब जाणुं । रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें । सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अमशत शय सहसा चालीसा । बिंबतणुं परिमाणं । सरवाले बत्रीशसें गुण सठी । तिर्यक लोकें चेईयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं । चउसय तेवीस परिमाणं । साठ चौबारा अवर त्रिबारा । रुचक कुंड नंदीठाणं ॥ स० ॥ बार देवलोकें नवग्रेवेयकें । अनुत्तर पंच बिमाणं । लाख चोराशी सहस सत्ताणुं । त्रेवीश चेई जाणुं ॥ ७ ॥ स० ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं । सहस चुमालीस आणुं । सातशें साठ ऊपर ऊर्ध्व लोकें । जिन पमिमा मन आणुं ॥ ९ ॥ ॥ स० ॥ त्रिजुवन मांहे सासय जिनहर । सगवन्न लख्ख बसें ब्याशी । आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या । सुणजो सम कित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्नरशें कोडी बेंतालीश कोमी । तेम अठावन्न लख्खा । बत्रीश सहस अशी वलि साधिक । सासय बिंबनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिबारें प्रतिमा । चोमुखें शत चौवीश । पांच सन्ना तिहां साठ वधारो । एकशत अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ रुषन्न चंद्राननें वर्धमान । वारिखेण चन्ननामें व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या । जिन घर पमिमा मानें ॥ १३ ॥ स० ॥ सकल सुरासुर नावना नावे । समकित गुण दीपावे । परित्त संसार करी शिव जावे । कुमति तेम न नावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पातालेनें तिर्यक लोकें । पणसय धणु परिमाण । कप्पें सग्गकर पणसय धणु माणुं । सासय असासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु । शेत्रुंजादिक बहुला । ते सविहूने त्रिविधें नमतां । पातक जाये सगला ॥ १६ ॥ स० ॥ ज्ञानविमल प्रनुनाम जपंता । लहीये कोडि कल्याण । मनह मनोरथ सगला सीझे । जनम सफल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० जयहर

नगवंताणं जयतुर। नमो जिणाणं सहीए। नमो अविचल आदि गराणं। सहीए नमो अरिहंताणं॥ १८॥ सही०॥ इति श्री सर्वजिन नमस्कारः॥ (इहां) एक लोगस्सनो काउस्सग्ग "चंदेसु निम्मलयरा" सूधी एक जण करे ते काउस्सग्ग पारी। पछी चार थोयो कहेवी (ते लखीयें छीयें.)॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषनदेव नमुं गुण निर्मला। दूध मांहे जिम नेली सीतोपला। विमल शील तणा सिणगारढे। नवनव भुऊने चित्ते रुचै॥ १॥ जेह अनंत थया जिनकेवली। जेह हसे विचरंतां जेवली। जेह असासय सासय त्रिहुं जगें। जिन पडिमा प्रणमुं नित नगमगे॥ २॥ सरस आगम क्षीर महोदधी त्रिपदी गंग तरंग करी वधी। नविक देह सदा पावन करे। दुरित ताप रजो मल अपहरे॥ ३॥ जिनप शासन नासन कारिका। सुर सुरी जिन आणा धारिका। ज्ञान विमल प्रनुतायें दीपता। दुरित दुष्ट तणा नय जीपता॥ ४॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन स्तुति॥ २५॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां एकजण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांनलै। पछी सर्वे जणा काउसग्ग पारीने। प्रगट एक लोग्गस्स पूरो कहै। पछी बेसीनें, एकवीश नवकार, प्रगटपणे सर्व जण गणे (पछी) सर्वेजण, मुख थकी आवी रीतें कहेः—श्रीशेत्रुंजायनमः॥ १॥ श्रीपुंमरीकाय नमः॥ २॥ श्री सिद्ध क्षेत्राय नमः॥ ३॥ श्री विमलाचलाय नमः॥ ४॥ श्री सुरगिरये नमः॥ ५॥ श्री महागिरये नमः॥ ६॥ श्री पुण्यराशये नमः॥ ७॥ श्रीपर्वताय नमः॥ ८॥ श्री पर्वतेंद्राय नमः॥ ९॥ श्री महा तीर्थाय नमः॥ १०॥ श्रीशाश्वताय नमः॥ ११॥ श्रीदृढशक्तये नमः॥ १२॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः॥ १३॥ श्रीपुष्पदंताय नमः॥ १४॥ श्री महापद्माय नमः॥ १५॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः १६॥ श्री सूरन द्र गिरये नमः॥ १७॥ श्री कैलासगिरये नमः॥ १८॥ श्री पातालमू लाय नमः॥ १९॥ श्री अकर्मकत्रेय नमः॥ २०॥ श्री सर्वकामपूर

णाय नमः ॥ २१ ॥ ० ॥ ए सिद्ध गिरीना (२१) नाम सर्वने मुखें प्रगट कही ने (पछी) पांच तीर्थना पांच स्तवन कहेवां ते लखीयें छीयें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीलमी रायण तरूतले । साहेलडीयां । पीलडा प्रभुजीना पाय गुण मंजरीयां । ऊजले ध्यानें ध्याइयें ॥ सा० ॥ अेहीज मुगति उपाय । गुण० ॥ १ ॥ शीतली छायायें वैसीयें ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गुण० ॥ १ ॥ नाही धोई निर्मल थई ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥गुण० ॥ २ ॥ पूजीयें सोवन फूलडे ॥ सा० ॥ नेह धरीनें अेह ॥ गु० ॥ ते त्री जे भवे शिवलहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्र दक्षिणा ॥ सा० ॥ दीअे अेहनें जे सार ॥ गुण० ॥ अभंग प्रीति होअे जेहने ॥ सा० ॥ भवभव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थडने मूल ॥ गुण० ॥ देवतणा वासा अछे ॥ सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें ॥ सा० ॥ सेवो एहने उछाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु भाखियो ॥ सा० शेत्रुंजा महातम मांहि गुण० इति श्री शेत्रुंजा स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री गिरनार तीर्थस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी कामनी दोयके कामें व्यापीयो हो० के का० ॥ ए चाल ॥ ॥ ❀ ॥ नेमनिरंजन देवके सेव सदा करूं हो लालके ॥ से० ॥ अहनिश ताहरूं ध्यानके दिल माहे धरूं हो लाल ॥ दिल० ॥ शंख लंछन गुणखाणके अंजन वानछे हो० के ॥ अं० ॥ राजिमतीना कंतके परणया विण अछे हो० ॥ पर० ॥ १ ॥ तुंहीज जीवन प्राणके आतमरामछेहो० के ॥ आत० ॥ माहरे परमा धारके ताहरू नामछे हो० के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना नंदन नितुनित वंदता होके० नित० ॥ कीजीयें करुणा वंतके कर्म निकंदना हो० के ॥ कर्म० ॥ ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढऊपरे हो० के ॥ रही० ॥ पहरी शील स नाह उदास ऐसी धरे हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुह्मे अ धिकूं करयुंहो० ॥ तुह्मे० ॥ कुमरपणें धरी धीर महाव्रत उचरया हो० के ॥ महा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेहजे तेह भवेखीनें होजा० ॥ तेह० ॥ करु

णा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारनेंहो० ॥ वली० ॥ आपी संजम नार पोहोंचामी पारनें हो० ॥ पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणाहो० ॥ करे० ॥ निरवाहे धरी नेहके ते विरला सुएया हो० ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत वखाणे कविजना हो० ॥ वखा ॥ तुह्मेतो दीधो छेहके तेहना थिरमना हो० के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादव नाथ सनाथ करो मुऊने सदाहो० ॥ करो० ॥ दिओ मुऊ शिर हाथ होवे जेम संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवानें मन नही हो० ॥ दीवा० ॥ नाणें मन असवार, घोडो दौरे सहीहो० ॥ घोडो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत, निबलनें नवि कही हो० ॥ निबल० ॥ पण लागीजे थोरी, किहां जाओ वही हो० ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते नीरु न नंजीयेहो० के ॥ नीरु० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होओ तो, कर्मनें मंजीयेहो० के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ तो दुशमन होय दूर, कोणे नविगंजीयेहो० ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्रके, दरशन दीजीयेंहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीयें हो० म० ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आबूतीर्थ स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिवर जइयें ॥ श्री जिनवर नी नक्ति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल व सहीना प्रथम जिणेसर । मुख निरखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर । कंठे टोरू ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखी । दुःख दोहग सवि गमीयें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रुषन जिणेसर । रैवत नेम समरीयें । अे दो वसिनी यात्रा करता । विहुं तीरथ चित्त धरीयें ॥ आवो० ॥ ३ ॥ मंरुप मंरुप विविध कोरणी । निरखी हियडे ठरियें । श्री जिन वरना बिंब निहाली । नरनव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी । अशुन करम सवि हरीयें । पाश शांति निरखी जब नयणें । मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम

वाधे। जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि हरीयें ॥ आवो० ॥ ६ ॥ अेकण ध्यानें प्रभुने ध्यातां । मनमांहि नवि स्मरीयें ज्ञान विमल कहे प्रभु सुपसायें । सकल संघ सुख करियें ॥ आवो० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्फ क नामें विमानें बेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल। समकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरभव सफलो कीजें। हीयमे हरखी लाल। समता संग करीजें । (आंकणी) चउमुख चउगति ह रण प्रसादें। चउवीसे जिनवैठा। चउदिशि सिंहासन समनासा । पूरवदिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संभव आदें दक्षिण चारे। पश्चिमे आठ सुपासा। धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो। एवं जिनचउवीशा॥ श्री० ॥ ३ ॥ बैठा सिंह तणें आकारें । जिन हर भरते कीधा । रयण बिंब मूरति थापीनें। जगजश वाद प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक। रावण तांत बजावे। मादल वी णा ताल तंबूरो। पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्ति भावें एम नाटक करतां। तूटी तंती विचालें । साधी आप नसा निज करनी । लघु कलाशुं ततकालें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी । तो अक्षय पद साध्युं समकित सुरतरु फल पामीनें । तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि परें भविजन जे जिन आगें । बहुपरें भावना भावे । ज्ञान विमल गुण तेह ना अह निश। सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समेत शिखर गिरि भेटीयेंरे । मेटवा भवना पास । आत म सुख वरवा भणीरे । ए तीरथ गुण निवासरे ॥ १ ॥ भवियां से वो तीरथ अेह । समेत शिखर गुण गेहरे ॥ भवि० ॥ से० ॥ (ए आ कणी) ॥ समेत शिखर कल्पें कह्योरे। वीश टुंक अधिकार । वीश तीर्थंकर शिव वरयारे। बहु मुनिनें परिवाररे ॥ भ० ॥ २ ॥ से० ॥ सिद्ध खेत्र मांहे व स्यारे। भाखे नय व्यवहार। निश्चय निज स्वरूपमांरे। दोय नय प्रभुजीना सार ॥ भ० ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतांरे । अति दुर्ग

मनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयेंरे । ते आगम स्यादवादरे॥ भ० ॥ ४ ॥ से० ॥ स० ॥ जय रथ राय तणी परेंरे । जात्रा करो मनरंग । भव दुःखने देइ अंजलीरे । थाये सिद्धि वधूनो संगरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत जात्रा करैरे । तो शिव हेतु थाय । भव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण प्रगटायरे ॥ भ० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समयें सम कित थयोरे । तेह समयें होय नाण । ज्ञान विमल गुरु भाखीयोरे । आवश्यक भाष्यनी वाणरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववंदन विधिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तरभेदी जिन पूजा रचीनें स्नात्रमहोछव कीजैजी । ढोल द मामा भेरी नफेरी झलरिनाद सुणीजैजी । वीरजिन आगल भावना भावी मानवभव फल लीजैजी । परब पजूसण पूरब पुण्यें आव्या इम जाणी जैजी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम दुवालस चत्तारी अठ कीजै जी । ऊपर वलि दशदोय करीनें जिन चौवीश पूजीजेंजी । बम्हा कल्पनो ठठकरीनें वीरवखाण सुणीजैजी । पम्हवानें दिन जन्म महोत्सव धवल मं गल वरतीजैजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अठमनुं तप कीजै जी । नागकेतुनी परै केवल लहियै जो सुभभावें रहियैजी । तेलाधर दिन भण्य कल्याणक गणधर वाद वदीजैजी । पास नेमीसर अंतर श्रीजै रुषभ च रित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारशै सुत्रनें समाचारी संवत्सरी पम्हिकमियेजी । चैत्यप्रवाही विधिसुंकीजै सकल जंतुनें खामीजैजी । पारणानें दिन सामीव त्सल कीजै अधिक वधाईजी । मान विजय कहै सकल मनोरथ पूरो देवी सिधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेम राजीमती बारमासो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीयालै खाट्ट भलीरे लाल (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरणथी रथ फेरीयोरे लाल । नीठुर नेम कुमार । प्रेमविलूधी प दमणी हो लाल । वीनवै राजुलनार ॥१॥ (हो रंगीला नेम, सुणमांहरी अर दास) । सहीयांसुं राजुल कहै हो लाल । मगसिर नायो पीउ । प्रीतम विण हिवमाहरो हो लाल । धीरज न धरै जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ

वीयो हो लाल । आयो मोकुख दैण । तो सूरतनें सांवलाहो लाल । देखण तरसैनेण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माहमहीनो सीपमैहो लाल । प्रीउसंग पोढै नारि प्रीतम बिणहुं एकली हो लाल । केमरहुं निरधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली खेलै हेतसुंरे लाल । फागुणमें नरनारी । हुं किणसुं खेलूं हिवै हो लाल । पास नही भरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चैतमहीनें चांदणीरे लाल । संजोगण सुख दैण । विरहणनें बालम विनारे लाल । रोवत जावै रेण ॥ ६ ॥ हो० ॥ वन हरीया वैसाखमेंरे लाल । मांजररही महकाय । अरजसुणी अबला तणी हो लाल । तपत मिटावो आई ॥ ७ हो० ॥ जेठ तपै लू आकरो हो लाल । दाझै कोमल गात । ससनेही साहिव विनारे लाल । कुण पूछै सुखवात ॥८॥ हो० ॥ आसाढै काली घटा हो लाल । उनमि आयो मेह । कंत मिल्या नि ज नारसुंरे लाल । धरती मिलीया मेह ॥ ९ ॥ हो० ॥ श्रावण चमकै दाम नी हो लाल । घनवरसै झरलाइ । इण रुत सूतां एकली हो लाल । क्युं क रि रेण विहाइ ॥ १० ॥ हो० ॥ काली कालाहण मिली हो लाल । भाद्र वडै वरखंत । अरज सुणीनें साहिवा हो लाल । पूरो मोमन खंत ॥ ११ ॥ हो० ॥ आशोजै आंसूझरै हो लाल । नाह विना निसि दीस । सारन पूगी साहिबे हो लाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ हो० ॥ काती द्रिढ ज्ञाती करीरे लाल । जाइ मिली गिरनार । देखी मुख निज नाहनो हो लाल । सफ ल गिणें अवतार ॥ १३ ॥ हो० ॥ संयमले पीउ सें हथै होलाल । पांमै भ वनो पार । इणपर पालै प्रीतमी हो लाल । धन धन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे कीधी पसुऊपरे हो लाल । मो परिकरिज्यो देव । चंदभणी द्योकरि दयाहो लाल । प्रभुचरणारी सेव ॥ १५ ॥ हो० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री नेमिराजुल बारै मासो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजीमगंजे नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्टा स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केशरियानें ऊयाजको० (इस चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज सखि प्रभु दरशण में पायो । मेरो रोम रोम हुलसायो

आ० ॥ अनंत काल भव जल माहि भ्रमतां । मिथ्या मत भरमायो । कुमति नारसंग इतउत डोलत । चेतन बहु दुःख पायो ॥ आ० ॥ १ ॥ पुन्य संयो गै नरभवपामी । सुमति नार संग चायो । हीनपुण्यतें मोह पकरकै । विषय क षाय रमायो ॥ आ० ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादै प्रभुगुण महमा । श्रवण सुणी हरषायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुभायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र बिजै सिवादेवीके नंदन । सहु सुर नर दिल भायो । इंद्र इं द्राणी मंगल गावत । मोतियन चोक पुरायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य घरी धन्यभाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण बाल ब्रह्मचारी नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरब देश अजीमगंजमें । श्री संघ चित्त भमायो । स्थापना चैत्य बिंब की करनें । जिनधर्म जगदीपायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ सिखि सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद मुनि भायो । श्री जिन चंद सुरिंदके श्री बर । हितप्रिय मोहन गायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ १९४३, बै । सु । ७ ॥ अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे जी० ॥ १ ॥ करम निकाचित दूर करणकों । सुंदर सुख उपायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिनभए आगामी होयगे । नवप द संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम क्षमा शिव रमणी वरके । शमर श मर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त० ॥❀॥

॥ ❀ ॥सद्भक्त्या देवलोके रवि शशि भुवने व्यंतराणां निकाये । नक्ष त्राणां निवाशे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्फुटिक मणिकणे ध्वस्तसांद्रां धिकारे । श्री मत्तीर्थं कराणां प्रति दिवस महं तत्र चै त्यांनिबंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंडले हस्तिदंते । वक्षारे कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नैषधे नीलवंते । चित्रशैले विचित्रे यमक गिरवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ २ ॥ श्री० ॥ श्री शैले वंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्बुदे पाव

के वा। सम्मेते तारकेवा कुलगिरि शिखरे ष्टापदे स्वर्ण शैले । सह्याद्रौ चोज्ज यंते विपुल गिरवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ ३ ॥ श्री० ॥ आषाढे मेदपाटे क्षित तट मुकटे चित्रकोटे त्रिकोटे । लाटे नाटेच धाटे विकट घन तटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकोटेच ओटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्री माले मालवेवा मलपति निखले मेखले पिछलेवा । नेपाले नाह लेवा कुवलय तिलके सिंघले मेखलेवा । डाहले कोशलेवा विगलित सलिले जंगलेवा तवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगत जनपदे सुप्रियागे तिलंगे । गौरे चौरे सुरेंद्रे वर तर द्रविरे नद्रीयाणे पुरेंद्रे । आद्रे माद्रे पुरिंद्रे द्रवियल कुवले कर्न्नि कुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोज्जयिन्यां । कौशंव्यां कौशला यां कनक पुरवरे देवागिर्यां सकाश्यां । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे ब्रह्मले तांमलिप्यां ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्वर्गे मर्त्यंत रहे गिरि शिखर स्तदे स्वर्नदी नीरतीरे । शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने भूरुहाणां निकुंजे । ग्रामे रण्ये वनेवा स्थल जल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इत्थं श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा भक्तिभाजां प्रसिद्धात् । प्रोद्यत्कल्याण हेतुः कलि मलि हरणे ये पठंते विशिष्टं । तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति मतुलं जायते मानवानां । कार्यं सिद्धि स्तवोच्चै प्रभवति सततां चित्त मानंद कारी ॥ ९ ॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपहरा करती आरती जिन आगे । हांरे जिन आगेरे जिन आगे। हांरे एतो अविचल सुखरा मांगे । हांरे नाभीनंदन पाश ॥ अप हरा० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमके । हांरे दोयचरणे झांझर झमकै। हांरे सोवन घूघरी वमके । हांरे लेती फूदरी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ तालमृदंगनें वांशली मफबीणा। हांरे रूमा गावंती स्वरझीणा। हांरे मधुर सुरा सुर नयणां। हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभुजाया । हांरे तोरी कंचन वरणी काया। हांरे मेंतो पूरवपुन्यें पाया। हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अप० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन

परमेश्वर प्रभुप्यारो हांरे प्रभु सेवक हुं छुं तारो । हांरे भवो भवना दुख मा वारो । हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त धरजो । हांरे मोरी आपदा सगली हरजो । हांरे मुनि माणक सुखीउ करजो । हांरे जाणी पोतानुं बाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य (तथा) देव वंदन भाष्यसें मंदर जाणेंकी पूजन करनेंकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घरी रात्ररहते उठके (प्रथम) दिलमें न वकार मंत्रका स्मरण करै ॥ में कोणहुं, क्या मेरी जातिहै, क्या मेरा कृत्य है, क्या मेरा धर्महै (इत्यादि) धर्म जागरणासें दिलकों सावचेत करै (पीछे) मलमूत्रकी बाधा दूर करके, अंगशुचीभूत करै ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि करके, विधिसंयुक्त घरदेराशरकी पूजाकरै (पीछे) यथाशक्ती अछा वस्त्र आभूषण पहरके, घोडा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, भाई, बंधु (इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम, द्रव्य हाथ में लेके । भव्यजीवोंकों मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशाशनकी प्रभाव ना करता हुआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि शाचवन करै (सो १० त्रिक लिखतेहे) (पहिला त्रिक) ३ निस्सही) कहणेंका (जिसमें) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै (कहे पीछे) संसार घर संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीछे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानेंकी सारसंभाल रक्खीथी सोभीछोमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीछे, निकेवल भाव पूजा करै । पिण द्रव्य पूजा न करै ॥ ❀ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेंकों प्रभूके द क्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ❀ ॥ (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके बिंबकों पंचांग मिलाके, तीन वेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ (चौथा त्रिक) प्र भूकी अंग १ । अग्र २ । भाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अब निस्सही किये पीछे । कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा बिधि, संक्षिप्त लिखते हैं ॥

निस्सही किये पीछे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै। पांचो इंद्रियांको बशमें रक्खै। गमनां गमनमें उपयोगी रहै। गीतादिक अन्य का सुनके चित्तमें व्याकुलता न रक्खे। कुउनी देव कार्यकों छोरुके और कार्यकी विचारणा न करै। राज कथादि संपूर्ण विकथा छोरै। जन्म (और) कर्मके अनुगत बचन न बोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिक का किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत बचन आंधेकों आंधा, गोलैकों गोला (इत्यादि बचन) नबोलै॥ निस्सही किये पीछे, जिन मंदरमें धर्म्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत बचन बोलना चाहिये॥ (जिसनें) मन, बचन, कायाके खोटै व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासें कियाहे (उसके नावसें) निस्सही होय (और) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे। उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवास्ते) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उजल वस्त्रसें मुखकोश बांधे। धूपादिकसें अंग अपना सुद्ध करै। नावसें, दूशरी निस्सही कहते, मुलगुंनारैमें प्रवेश करै। जयणा संयुक्त पूजा करै। पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणें। खेल खंखार न करै। निकेवल नगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे। प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै। सुकमाल अछा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें नगवानका अंगलूहै। कपूर कस्तूरी मिश्रित सुद्ध केशर चंदनका विलेपनकरै॥ सुनवर्ण, सुनगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस। गुलाब, चंपा, चंपेली, केवरा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै। अष्टांग धूप अगरबत्ती खेवै॥ मंगलदीप करै। अखंम उजल अक्षतांसें प्रनूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै॥ दर्पण १। नद्रासण २। वर्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मछयुग ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त्त ८। (ऐसा) अष्ट मंगलकी रचना करै। पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजै। सुंदर कुंकम मिश्रित चंदनसें हत्थोदेवै। उत्तम नैवेद्य चढावै। अछा खाद्य फल चढावै। (इत्यादि) पूजाकीविधि, आरती पर्यंत। राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जीवानिगमादि, सिद्धांतोमें लिख्ये मुजब करै (पीछे) अंतरंग नक्तीसें प्रनूके सन्मुख नाटक करै॥ (जैसें)

देवेंद्र, दानवेंद्र नारद, इनोंनें (तथा) उदाई राजाकी, राणी प्रभावतीनें द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तैसें) प्रभूके सन्मुख शंकारहित होके। उत्तम पुरुष नाटक करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भाव पूजा ॥ २ ॥ (यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा) ॥ ❀ ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ ❀ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था। तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ❀ ॥ (अबछठात्रिक) तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै। उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहणी। वांइ। पिछाडी। निजर नही करै ॥ ❀ ॥ (अब सातमा त्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जकें। उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ❀ ॥ (अब आठमा त्रिक) ॥ ❀ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रक्खै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (अब नवमात्रिक) ॥ ❀ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै। दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी। एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका जोमा तिस आकार हाथ रखना। (सो) मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान (जय वीयराय) इत्यादि करै (अब दशमात्रिक) ॥ ❀ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन बंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २। प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चे

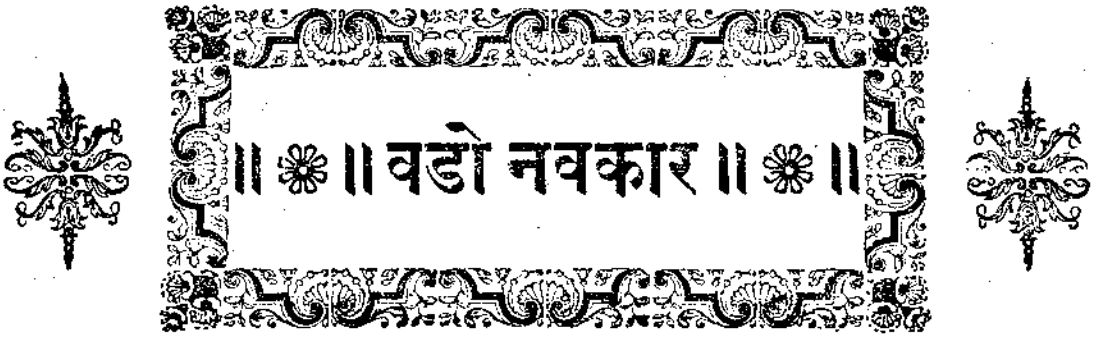
इयाइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंम विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें (लेकें) आभवम खंमा तक । प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ❀ ॥ (ऐसें दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥❀॥ (अब पांच अभिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहें) ॥ ❀ ॥ सचित्त द्रव्य कुशमादिक अपनेंपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह, मुगट, छत्र, खम्ग, चामर, पाउका, अचित्त वस्तू मोम्ना । आभूषण प्रमुख पहस्या रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग करना ४ ॥ जिन बिंब देखतेही (नमो जुवण वंधुणो) ऐसें नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ ❀ ॥ (अब तीसरा द्वार दो दिशीका) पुरष दहणी दिशा वैठा । भगवंतकों वांदे ॥ स्त्री, बांइ दिश बैठके भगवंत को बांदे ॥ ❀ ॥ (अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) ॥ ❀ ॥ अभिग्रह देव बांदणांमें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर वैठके देव वांदे १ ॥ (मध्यम) नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर वैठके देव वांदै ३॥ (अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥ ❀ ॥ (सो) जघन्य १॥ मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन भेद है (तिहां) णमो अरिहंताणं (इत्यादिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना (ए जघन्य चैत्य वंदन १) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंमक । नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंत चेइयाणं (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक स्तुति कहै (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै ॥ पांच दंमक सहित । थूई गाथा (४) कहै (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ (तथा) विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीयराय पर्यंत । आठे थुई ए देव बांदै । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहियै ॥ ❀ ॥ (अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करै । दो जानु । दो हाथ (और) मस्तक (ए) पांच अंग मिलायके जमीनमें लगावै ॥ ❀ ॥ (अब सातमा द्वार) ॥ ❀ ॥ जघन्यें एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रभू की स्तवना करै ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा । शत्रुंजय मंमण रुषन जिणं दा ॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी ॥ दूशरी आरती मरुदेवी नंदा । जुगला धरम निवार करंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ तीशरी आरती त्रिजुवन मो हे । रत्न सिंघासन मारा प्रजुजीनें सोहे ॥ जय० ॥ चोथी आरति नित्य नवी पूजा । देव रुषन देव अवर न दूजा ॥ जय० ॥ २ ॥ पांचमि आर ति प्रजुजीनें भावे । प्रजुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ आरती कीजें प्रजु शांति जिणंदकी । मृगलंछनकी में जाउं बलिहारी । जय जय आरती शांति तुमारी । विश्वसेन अचिराजीको नंदा । शांति जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरति कीजें प्रजु नेम जिणंद की । शंख लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवा देवीको नंदा । नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति कीजै प्रजु पाश जिणंदकी । फणिंदलंछनकी में जाउं बलि हारी ॥ आ० ॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा । पाश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ६ ॥ आरति कीजै महाबीर जिणंदकी । सिंह लंछनकी में जाउं ब लिहारी ॥ आ० ॥ शिद्धारथ त्रिशलाको नंदा । बीरजिणंद मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरति कीजें प्रजु चोवीश जिणंदकी । चोवीश जिणंदकी में जाउं बलिहारी । चरणकमल नित सेवत इंदा । चोवीश जिणं द मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोमी सेवक इम बोले । नहि कोइ माहरा प्रजुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥



॥ श्रीः ॥



॥ ❀ ॥ वडो नवकार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ किंकप्पत्तरु रे अयांण चिंतन मणचिंतारि । किंचिंतामणि का मधेनु आराहौबहुपरि । चित्रावेली काजकिसै देसंतर लंघन । रयणरासि कारण किसै सायरलंघन । चवदह पूरबसार युगे लहौ ए नवकार । सय लकाज महियलसरै उत्तरतरै संसार । केवलिभासिय रीतिजिके नवकार आराहै । भोगविसुक्ख अनंत अंत परमप्पयसाहै । इणझाणें सुररिद्धि पुत्त सुहविलसै बहुपरि । इणझाणें सुरलोक इंदपद पामेंसुन्दरि । एहमंत्र सासतो जगे अचिंत चिंतामणिएह । समरण पापसवे टलै रिद्धिसिद्धि नि यगेह ॥ २ ॥ नियसिर ऊपर झांण मझचिंतवै कमलनर । कंचनमय अ ठदलसहित तिहांमांहिंकनकवर । तिहांबैठा अरिहंतदेव पनमासण फिट कमणि । सेयवत्थ पहरेवि पढमपय चिंतन नियमणि । निवारिय चनगइग मण पामिय सासयसुक्ख । अरिहंतझाणइं तुमलहो जिमअजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनरन्नेय तिहां सिद्ध बीयपद जे आराहै । रातैविद्रुमतणें वणनि यसोहग साहइ । रातीधोवत पहिर जपइ सिद्धहिं पुवइं दिसि । सयल लोय तिहां नरहहोइ ततखिणसइंवासि । मूलमंत्र वसीकरण अवरसहु जगधं ध । मणिमूली ओषधकरइबुद्धिहीण जाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिणदिसपंखडी जपै णमो आयरियाणं । सोवनवणह सीससहित नवएसहनाणं । रिद्धि सिद्धि कारणें लाभ ऊपर जे ध्यावइ । पहिरवि पीलावत्थतेह मनवंछियपावइ । इण झाणैंनवनिधिहुवै रोगकदेनविहोइ । गजरथ हयवरपालखी । चामर

ऊत्र सिरजोइ ॥ ५ ॥ नीजवण उवझाय सीस पाढंता पछिम । आराहिजै अंग पुव्वधारंत मणोरम । पछिमदिश पंखडी कमल ऊपर सुहझाणं । जोवो परमाणंद देवगय तासु विमाणं । गुरु लघु जे लक्खै विचुर तिहां नरबहुफल होइ । भावविहुणा जे जपै तिहां फलसिद्ध न कोइ ॥ ६ ॥ सर्वसाधु उत्तरविभाग सांमला बइठा । जिण धर्मलोय पयासयंत चारित गुणजिठा । मणवयण काएहिं जपै जे एकै झाणै । पंचवण तिहां नाणझा ण गुण एहपमाणें । अनंतचोवीसी जगहुईए । होसी अवर अनंत । आ दिकोई जाणें नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोक्कारो । पद दिशिअगनेहिं । सव्व पावप्पणासणो पदजप नेरेहिं । वायवदिस झाएह मं गलाणंचसव्वेसिं । पढमंहवइमंगलं ईसाणपएसिं । चिहुंदिस चिहुं विदिसै मिलिय अठदल कमल ठवेइ । जो गुरु लघु जाणी जपै सो घणपापखवेइ ॥ ८ ॥ इणप्रभावधरणिंदहुत पायालहसामी । समली कुमर उप्पण जिल्ल सुरलोयहगामी । संबल कंबल बेबलध पहुता देवांकप्पे । सूलीदीधो चोर देव थयोनवकारह जप्पें । शिवकुमार मनवंचिकरि । जोगीलीयो मसांण । सोनापुरसो सीधलो । इणनवकार प्रमाण !! ९ ॥ डोंकैबैठो चोर एक आकासैगामी । अहिफिट्टी हुइ फूलमाल नवकारह नामी । वाउरुआ चारंत बाल जलनदीप्रवाहै । वींध्यो कंटहि उयर मंत जपियो मनमां है । चिंत्या काज सवे सरै । ईरति परति विमास । पालितसूरि तणी परै । विद्या सिद्धआकास ॥ १० ॥ चोरधाड संकट टलै राजावसिहोवै । तित्थंकर सो होइ लाखगुणविधिसुं जोवै । साइण भाइण भूत प्रेत वेताल न पुहवइ । आधि व्याधि ग्रहतणी पीड ते किमहि न होवइ । कुठ जलोदर रोग सबे नासइ एणहमंत । मयणासुंदरितणीपरै नवपय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इनमंत्रतणा गुण किता वखाणुं । नाणहीण उनमत्थएह गुण पारन जाणुं । जिमसेत्रुंजै तित्थराज महिमा उदयवंतौ । तिममंत्रह धुरि एह मंत्रराजा जैवंतौ । तित्थंकरगणहरपणिय चउदै पूरवसार । इणगुण अंत न कोलहइ गुणगुरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अडसंपय नवपय सहित इगसठ लघु अक्षर । गुरुअक्षर सत्तेव एहजाणो परमाक्षर । गुरुजिणवल्लहसूरिन

णं सिवसुक्खहकारण । नरय तिरियगइ रोग सोग बहुदुक्ख निवारण । जल थल पव्वय वन गहन समरण हुवे इकचित्त । पंचपरमेष्टि मंत्रहतणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिजय पहुत्त स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महा पाडिहेर जुत्ताणं । समय खित्त ठिआणं । सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीया । पन रस पणास जिणवर समूहो । नासेउ सयलदुरिअं । नविआणं नत्तिजुत्ता णं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विअ । तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा । गह भूअ रक्ख साइणी । घोरुवसग्गं पणासेउ ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसाविअ । सठी पंच व जिणगणोएसो । वाहि जल जलण हरि करि । चोरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपणाय दसेवअ । पणठी तहयचेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं देवा सुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः । हरहुंहः तहयचेव सरसुंसः । आलिहअ नामगब्भं । चक्कं किर सव्वउ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पण्णत्ति वज्जश्रृंखला । तहय वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता । कालि महा कालि तहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला । माणवि वइरुट्ट तहयअछुत्ता । माणसि महमाणसिआ । विज्जादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिसु उप्पणं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाण वणो । वसोहिअं हरउ दुरि आइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा । ति त्थयरा गयमोहा । झाए अव्वा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संखविद्दुम । मरगय घणसंनिहं विगय मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं । सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ । जे केवि दुहदेवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फलहे लिहिऊण खालिअंपीअं । एगंतर गहमुग्गय । साइणिभूअंपणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरिसय जंतं । सम्ममंतं दुवार पमिलिहिअं । दुरिआरि विजय तंतं । निम्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति सप्तत्युत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं ॥

॥ ❀ ॥ अथ दोसावहार स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोसावहारदक्खो । नालीयायर वियासिगोपसरो । रयणत्तयस्सज णत । पासजिणो जयत जयचक्खू ॥ १ ॥ कयकुवलय पब्भिोहो । हरिणं कियविग्गहो कलानिलत । विहियार विंद महणो । दियराओ जयत पास जिणो ॥ २ ॥ कंतीइनिज्जिणंतो । सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो । जयजंतुअम यवक्को । सुमंगलो जयत पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदलनीलरुई । हरिमंगल संथुओ इलाणंदो । रयणीयरदारत मह । बूहोपसीयज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय वियट्टो । नायत्थोणायरायकयपूत । सिरिपासनाहदेवो । देवाय रित सुहंदिसत ॥ ५ ॥ रायावट समुज्जत । तणुप्पह मंगलोमहाचूई । असुरे हिंनमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयत ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो । संतो दुक्खावहोजयंमिथिरो । बहुल तमासरिससरी । जहचक्खुसुत जयतपासो ॥ ७ ॥ कवलीकयदोसायर । मायंगरहं अहो तणुविमुकं । लोयाभरणीचूयं । पासजिणं सत्तभंसरह ॥ ८ ॥ दुरिआइं पासनाहो । सिहावमाली नहो भ वणकेऊ । दूरंतमरासीत । सत्तमठाणठित हरत ॥ ९ ॥ इय नवगह थुइग भं । जिणपहसूरीहिं गुंफिअं थवणं । तुहपास पढइ जोतं । असुहाविगहा नपीडंति ॥ १० ॥ इति नवग्रहस्तुतिगर्भित श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगद्गुरु ९ ग्रहस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं । ग्रहशांतिं प्रवि ख्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया विधिक्रमात । पुष्पैर्विलेपनै र्धूपैः । नैवेद्यै स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्यमार्त्तंडः चंद्र श्चंद्रप्रभस्यच । वासुपूज्योभूमिपुत्रो । बुधोप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माणां । शांति कुंथु नमि स्तथा । वर्द्धमानो जिनेंद्राणां । पादपद्मे बुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा । श्चाभिनंदनशीतलौ । सुमतिःसंभ वःस्वामी । श्रेयांसश्चबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधे कथितः शुक्रः । सुव्रतश्चश नैश्चरः । नेमिनाथोभवेद्राहुः । केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्मलग्नेचरा शीच । यदा पीडंति खेचराः । तदा संपूजयेद्धीमान् । खेचरैः सहितान् जि नान् ॥ ७ ॥ पुष्पैर्गंधादिभिर्धूपै । नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृस दानैश्च

वासोन्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्यसोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनैश्च रोराहुः । केतुःप्रमुखाखेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चा रा । देशनक्षत्रवर्णके । स्तुताश्चपूजिताभक्त्या । ग्रहाः संतुसुखावहा ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा । ग्रहाणांतुष्टिहेतवे । नमस्कारशतंभक्त्या । जपेदष्टो त्तरं नरं ॥ ११ ॥ भद्रबाहु रुवाचेदं । पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद्धृ । ग्रहशांतिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥ इति श्रीनवग्रहशांतिकारकजिनस्तोत्रं ॥

॥ ❀ ॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धम्मो मंगलमुक्किठं । अहिंसा संजमो तवो । देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मेसयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्सपुप्फेसु । भमरो आविअइरसं । नय पुप्फं किलामेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणाबुत्ता । जेलोए संति साहुणो । विहंगमाव पुप्फेसु । दाणभत्तेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वि त्तिलब्भामो । नवकोइजवहम्मइ । अहागडे रीयंते । पुप्फेसुभमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकारसमाबुद्धा । जे भवंति अणिस्सिआ । णाणापिंडरयादंता । तेणवुच्चंति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ डुमपुप्फियानामज्झयणंसम्मत्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येभ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंउपा ध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंश्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनमस्कारः । सर्वपापक्षयंकरः । मंगलानांचसर्वे षां । प्रथमं भवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जएविजए । अर्हंपरमात्मनेनमः । कमलप्रभसूरिंद्रो । भाषतेजिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन । त्रिकालंयः पठेदिदं । मनोभिलषितंसर्वं । फलंसलभतेध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रेपवित्रात्मा । षण्मासैर्लभतेफलं ॥ ५ ॥ अर्हंतंस्थापयेन्मुर्ध्नि । सिद्धंचक्षुर्ललाटके । आचार्य श्रोत्रयोर्मध्ये । उपा ध्यायंतुघ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृंदं मुखस्याग्रे ॥ मनःशुद्धंविधायच । सूर्यचंद्र निरोधेन । सुधीःसर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी । वामपार्श्वे स्थितो

जिनः। अंगसंधिषु सर्वज्ञ। परमेष्टिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांश्रीजिनोरक्षे। दाग्नेयिंविजितेंद्रियः । दक्षिणाशांपरंब्रह्म । नैरुतिंचत्रिकालवित् ॥ ९ ॥ प श्चिमाशां जगन्नाथो । वायवंपरमेश्वरः । उत्तरांतीर्थकृतसर्वा । मीशानींचानि रंजनः ॥ १० ॥ पातालंभगवानर्हं । नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा देव्यो । रक्षंतुसकलंकुलं ॥ ११ ॥ रुषभोमस्तकंरक्षे । दजितोपिविलोचने । संभवःकर्णयुगलं । नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ नेष्टौ श्रीसुमती रक्षेत् । दंता न्पद्मप्रभोविनुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं । तालु चंद्रप्रभोविनुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत् । हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसोबाहुयुगलं वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुली र्विमलोरक्षे । दनंतोसौस्तनावपि । सुधर्मो प्युदरा स्थीनि । श्रीशांतिर्नाभिमंमलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकंरक्षे । दरोरोमकटीतटं । मल्लिरुरूपृष्ठिवंशं । जंघेचमुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षेत् । श्रीने मिश्चरणद्वयं । श्रीपार्श्वनाथःसर्वांगं । वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेजस्क । वाय्वाकाशमयंजगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो । वीतरागोनिरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेश्मशानेवा । संग्रामेशत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि । भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणप्राप्ते । दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपु त्रत्वेमहादोषे । मूर्खत्वेरोगपीडिते ॥ २० ॥ शाकिनी शाकिनी ग्रस्ते । महा ग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारे ध्ववैषम्ये । व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय । यःस्मरेज्जिनपंजरं । तस्य किंचिद्भयंनास्ति । लभ्यते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजर नामेदं । यःस्मरत्यनुवासरं । कमलप्रभराजेंद्रः । श्रि यंसलभतेनरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थायपठेत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंज राख्यं । आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यं । लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे । देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः । वादींद्रचूडामणिरेषजै नो। जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इस महाप्रभावीक जिनपंजरस्तोत्रकों सुगुरूकेपास सीखके प्रभातसमें सदागुणें तो कोई शरीरमें उपद्रव न होय ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लघु जिनसहस्रनामः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्ष्यसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः । निःशरीरो निरातंको । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारो थनिषक्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजःशांतः । निर्भेद्यो निर्ममःशिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपद्धानः । निरागो निरघोजिनः । निःशब्दःप्रतिमश्लेष्टः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः । अनिंद्यो महापूतात्मा । जगत्शिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः । सोपि योगात् शुभंप्राप्तः । कर्मद्योतिबलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्धः । अर्चितःअक्षयो विभुः । अमूर्त्तः अच्युतोब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापति ॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमोभवः । अप्रमेयो जगन्नाथ । बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः । अद्वैद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वसत्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः । निष्कषायो भवांतकः । विश्वनाथः स्वयंबुद्धः वीतरागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंदः । अवाङ्मानसगोचरः । असाध्यःशुद्धश्चैतन्यः । कर्म नो कर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः । कर्म्मा जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरःशंभुः । विश्ववेदी पितामहः । सर्वभूतहितोदेव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो । भगवां स्त्रिजगद्गुरुः । अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्यक्तव्यात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित । गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः । निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः । सर्वेशःसत्सुखावासः । जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो भगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्व

रो भुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो मुक्तिवल्लभः । योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्य त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः । कट्याणको ष्टमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जित । सर्वदेवाधिकोदेवोः । सर्वभूत हितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धःपापनाशनः । तनुमात्रश्चिदानंदः । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मु क्तिस्थोमहतांमहः । मुक्तिकार्यायसंतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा देवो महावीरो । महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्र दायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्द्धि को महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो । महा विघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिमअच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्ता मुक्तिजसंबोधः एकानेकविनिश्चलः । सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महाशूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदोधीरो । म हाहृद्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामोविषयाच्च्युतः । भ गवंतो महाशांतो । शांतिकट्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः । परमात्मापरानंदोः । परंपरम आत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुता नंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नाकृतिं नाकुरोवर्णी । व्योमरूपो जिता त्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः । संसारछेदकारणः । निरवद्योमहा राध्यः । कर्मजिद्धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नर कांतकः । स्वयंभू पापहृत्पूज्यः । पुनीतोविभवःस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो म हातीतो । रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो । देव देवेशनायकः॥३६॥ वरेण्योभवविध्वंसी । योगिनांज्ञानगोचरः । जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्कभव्यसंवंद्यः । पवित्रोगुणसागरः । प्रसन्नः परमा राध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यःसुरर्चितः । निष्प्रपंचोनिरातंको । निःशेष क्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो लोकालोक विलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः

॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदंयांति । मुच्यतेनात्र संशयः ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति भद्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुटकर महाप्रभावीकस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलमङ्गल केलिनिवेशनं । सहृदयं हृदयं गमदेशनं । अभि नतोत्तम भक्तिसुरेश्वरं । नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दर सद्गुण मंन्दिरं । विमल केवलबोध विकस्वरं । अतिसुवर्णसुवर्ण समद्युतं । प्रवरबंधुरल क्षणसंयुतं ॥ २ ॥ (युग्मं) यदीयभक्ति र्भविनां भवे भवे । भवेदभीष्टार्थनिदा नमद्भुतं । सएव नन्दात्म समुद्भवो जिनः । समर्च्चनीयः खलुशीतलः प्रभुः ॥३॥ कर्माभितप्तान् भविनः सुशीतलान् । कुर्वन्मुदावाक् सुधया दयापरः । सदेव देवो भवतात्सदैव मे । सदिष्ट सिद्ध्यै जिनराजशीतलः ॥ ४ ॥ अधिगतशि वशर्मा वीतमोहादिकर्मा । दृढरथ तनुजन्मा सर्वतः साधधर्मा । त्रिदशमहित मूर्त्तिः स्फूर्त्तिमत्पुण्यकीर्त्तिः । जयतु गतभवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥५॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनःस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो । दलित दुरितराशि र्विश्वविश्वा वदातः । प्रकट महिमरम्यो दुर्मतीनामगम्यो । जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिं तामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूलयन्ती । पदमकृतपदाब्जे यस्य नृङ्नीवपद्मा । अविकृतमति कायोत्सर्गमुद्रान्वितोसौ । जगतिबहुमतोस्मान् पातुवामांगजन्मा ॥ २ ॥ अविचलमणिबिम्ब सत्फणानां सहस्रं । बहुलविम लभास्व द्भूषणोभासिगात्रः । गुरुतर वरभक्त्या सक्तचित्ताङ्गभाजां । भवतु शिवसमृद्ध्यै चाश्वसेनिर्जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ कुपितकरिमृगेश व्यालदावानलाब्धि प्रहरणगदगुप्त्यातंकशंकापहर्त्ता । विकसितमुखपद्मः सत्पुरेसूरताख्ये । जयतु भुजगलक्ष्मीभ्राजमानोजिनेंद्रः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यस्य ज्ञानदयासिन्धो । र्दर्शनंश्रेयसे ध्रुवं । सश्रीमानपार्श्वतीर्थेशो निषेव्यः सततं सतां॥१॥वामासूनोर्यशः पुंजै । रगाधस्यानघागुणाः । स्मर्यंते येन सस्मार्यो । भवेत् प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयासक्तान् ।

संसारिक सुरासुरान् । सेव्यता मङ्घ्रयोधीराः । पार्श्व देवो परःप्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सर्वार्थदानेन । येन कल्पद्रुमाश्रपि । नवेदभ्यर्चितो लोके । साश्रियेचामृतायच ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुरश्लोकैः । जैनलाभप्रदायकः । कल्याणकारको नूयात् । श्रीमान्शंखेश्वरःप्रभुः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसमस्यामयीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं । सद्धर्मदानं जगतेददानं । यद्देशपा र्श्वी शितपादपार्श्वं । नुवामिपार्श्वेभवभेदपार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसीसूनसमप्र भावा । समप्रभावा भवदीयमूर्त्तिः । विभाति वामांप्रभव त्रिलोके । भवत्रि लोकेन समर्चनीय ॥ २ ॥ तवेशपत्यं कजमादरेण । हृद्यादधाना जनताद रेण । मुक्ताभवेदेकपदे पराया । निर्वेशवनसौख्यपरंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेषभू वर्षितदानवारी।र्यन्मानसे त्वं ध्रियसे सदैवा।सएव गव्युत्तम दानवारी। प्रोच्चारि तोद्दामयशाःसदैवः॥४॥देवाधि देवाधिहर स्त्वमेव ॥ सुज्ञान सुज्ञानभि बुद्धरू पः । सारांग सारांग वितीर्णभूयः । कल्याण कल्याणकृदंगभाजां ॥५॥ यैरर्च्यसे त्वं वरवैद्यराज । मनोभिरामैः सुमनोभिरामै । कर्माभिधैरुज्झितभूधनास्ते । विसारिलोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थं ते जिनपुंगवस्य भगवन् प्रोद्दाम धामान्वितं । पादाब्जं परभागभूतत्रिभुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं । दक्षं कर्मविप क्षु पक्षदलने भव्या भवंतु क्षमाः । कल्याणाश्रय मुक्तिमाप्तुमखिलं तीर्त्वा भवांभोनिधिं ॥ ७ ॥ इति विविधयमकयुक्तश्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शालिनीछन्दः ॥ ❀ ॥ गौभीग्रामे स्तंभने चारुतीर्थे । जीराव ल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये । वाणारस्यांचापि विख्यातकीर्तिश्रीपार्श्वेशं नौमि शंखे श्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देववंद्यं । स्वर्गेभूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥२॥ भित्वाभेद्यं कर्मजालं विशालं । प्राप्यानन्तं ज्ञानरत्नंचिरत्नं । लब्धामंदानंद निर्वाणसौख्यं ॥ ३ ॥ श्रीपा०॥ विश्वाधीशंविश्वलोके पवित्रं । पापागम्यं मोक्षलक्ष्मीकलत्रं । अंभोजाक्षं सर्व दा सुप्रसन्नं । श्रीपा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्येखंगदोर्नागचंद्र । संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे । प्राप्तं पुण्यै र्दर्शनं यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इतिशंखेश्वरजिनस्तवः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशदसद्गुण राजि विराजितं । घनघना घननाद विभ्राजितं । भ्रजत भक्तिभरेण रमेश्वरं । जगति पार्श्वजिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विविधवर्ण विभूषितविग्रहाः । विहितदुर्द्दमदर्प्पकनिग्रहाः । वसुयुगार्कमिताः सुकृताकराः। जिनवराः प्रभवंतु शिवंकरा ॥ ३ ॥ रुचिरवर्ण निवर्ण्यमनिन्दितं । सुमनसां प्रकरैरभिवंदितं । निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं । जिनमतं नमतां चितश मेदं ॥ ३ ॥ सकलभव्य सरोजविकाशिका । कुमतिसंत मसोच्चयनाशिका । जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । भवतु वाग्जिनलाभ शुभार्थदा ॥ ४ ॥
॥ ❀ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्यविलसद् ज्ञानामृतांभोनिधेः । सद्भावेन परस्वरूपविरते र्मुक्त्यास्पदेतस्थुषः । सद्भूतप्रतिबिंबवतस्तु सुतरां गौरीपुरोद्भासिनः । सोल्लासं प्रणिपत्य सत्य मनसा तत्रैव नित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो भव्या व्रजंतोध्वनि । स्पृश्यंन्ते नहि दुष्टजंतुनिवहैर्वन्यै र्नवा तस्करैः । नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो। सःश्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्योनकेषांभवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तः करणाद्भृतं कुटिलतां मोहादिनोद्भावितां । धृत्वा निर्मलभावनांच विधिना यद्भक्तिमातन्विता।लभ्यन्ते नरराज निर्जर वर श्रेणी सुखानिक्रमा । न्मुक्तिश्री रपि सैवसुप्रमनसा संसेव्यतांविश्वपाः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीगौडीपार्श्वजिनस्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यः श्रीऋषभ स्ततोजितजिनः श्रीसंभवस्तीर्थकृत् । सुश्रीमान भिनंदनश्च सुमतिः श्रीसद्मपद्मप्रभः । पृथ्वीकुक्षिभव सुपार्श्वजिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रभः । सर्व्वज्ञः सुविधिर्जिनो मुनिमतः श्रीशीतलःसौम्यदृक्॥ १ ॥ श्रेयांस प्रभुवासुपुज्य विमला नंतेश धर्म्मेश्वराः । शांतिः कुंथु र स्तपो जितारिपु र्मल्लि र्जिनः सुव्रतः। अर्हतौ नमिनेमिशुभमुनिपौ विश्वत्रयेविश्रुतौ ।श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमानः प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्च तुर्विंशति । निंश्शेषोत्तम भव्यजंतुहृदयां भोजप्रबोधोद्यतः । वंद्यन्ते सुरवृन्दवं द्यविशदश्लोकव्रजानिर्भय । श्रीसंपत्तिनिवास विक्रमपुरेसद्भक्तितः प्रत्यहं ॥३॥
॥ ❀ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगलाष्टकं लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुट प्रद्योतिरत्नप्रभा । भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनां भोधौ व्यवस्थायिनः। ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तमम लं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेःस्वर्ग्गापवर्ग्गप्रदः । धर्म्मःसु क्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्याजयं।प्रोक्तंतत्त्रिविधं चतुर्विध ममीकुर्वं तुमे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिनाधिपा स्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्री मन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो येचक्रिणो द्वादश । ये विष्णु प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्ताधिकाविंशती । त्रैलोक्ये भयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी। चंपायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः। सम्मेदशैलेर्हतां । शेषाणामपि चोर्জ্জयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वाणा वनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वंतु मेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योति र्व्यंतर भावनामरगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता । जंबू शाल्मलि चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्यादिषु। इक्ष्वाकारगिरौच कुंडलनगे द्वीपेच नंदीश्वरे । शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपिजयत्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे । योजातः परिनिक्रमे वचभवो यःकेवलज्ञानभाक्। यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमासंभावितः स्वर्गिभिः कल्याणानिच तानिपंचसततं कुर्वंतुमे मंगलं ॥६॥ येपंचौषधिरुद्धयः श्रुततपो ऋद्धिंगता पंचये । येचाष्टांगमहानिमित्तकुशला येष्टौविधाचारणा । पंचज्ञानधराश्च येपिबलिनो ये बुद्धि रुद्धीश्वरा । सप्तैते सकलाश्च ते गण भृताः कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ७॥ देव्याश्चाष्ट जयादिका त्रिगुणिता विद्या दिका देवता ॥ श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः । द्वात्रिंश त्त्रिदशा ग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा । दिक्पाला दश इत्यमीसुरगणाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां । पूर्वाण्हेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं । ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजै र्धर्मार्थकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिताः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥९॥

॥ इति श्रीमङ्गलाष्टकं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परमात्मास्तोत्रः ॥ ❀ ॥

॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नबंधु र्नकर्म नकर्त्ता । नअंगं न संगं नइच्छा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोहो नरागादिलोकं । नजोगं नन्नोगं नव्याधि र्नशोकं । नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं (चि०) ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षु र्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा । नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा । (चि०) ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिंता । नक्षुल्लद् नन्नीतं नकृष्यं नतुंदा । नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्या । चि० ॥ त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं । रुषीकेश विध्वंशकर्म्मारिजालं । नपुण्यं नपापं नअक्ष्या नघ्राणं (चि०) ॥ ५ ॥ नवाट्यं नवृद्धं नविघ्रि र्नमूढा । नवेद्यं नखेद्यं नमूर्त्ति र्नमीहा । नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । (चि०) ॥६॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो नजन्या । नगुर्वो न शिष्यो नआद्यो नदीनं ॥ (चि०) ॥७॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्ववेदी । नपूर्णो नशून्यं सचैतन्यरूपं । अन्योन्निघ्निणं नपरमार्थमेकं । (चि०) ॥ ८ ॥ आत्मा रामगुणाकरं गुणनिधि श्चैतन्यरत्नाकरं । सर्वेभूतगतागते सुखदुख ज्ञातात्वया सर्वगं । त्रैलोक्याधिपति स्वयंस्वमनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंहरिवंश हर्षहृदयं श्रीमान भूदर्च्युतः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नमस्कारस्तोत्र. ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं । दर्शनं स्वर्गसोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेनच । नतिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य । संसारध्वांतनाशनं । बोधनंचित्तपद्मस्य । समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य । सद्धर्म्मामृतवर्षणं । जन्मदावविनासाय । वृंहणंसुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति जिनेभक्ति । जिनेभक्ति दिनेदिने । सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु भवे भवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहित्राता । नहित्राता जगत्रये । वीतरागसमोदेवो । न भूतो न भविस्यति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं मम । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्ष जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागं मुखंदृष्ट्वा । पद्मरागसमप्रभं । नैकजन्म कृतंपापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हतो मंगलं नित्यं

सिद्धाजगतिमंगलं । मंगलंसाधवोमुख्यं । धर्म्मःसर्व्वत्रमंगलं॥ ९ ॥ लोको त्तमाश्हार्हंतः सिद्धालोकोत्तमाः सदा । लोकोत्तमोयतीशानां । धर्मोलोको त्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्व्वदार्हंतः । सिद्धाशरणमंगलां । साधवः शरणं लोके । धर्म्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं । मक्षरंवाप्ययत्स्थितं । अग्निज्वाला समंना द । बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं देदीप्यमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्हं मित्यक्षरंब्रह्म । वाच कंपरमेष्टिनः सिद्धचक्रस्य सद्बीजं । सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमो र्हद्भ्य ईशेभ्यः । ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः । उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः । ॐ ज्ञानेभ्योनमोनमः । ॐ नम स्तत्त्वदृष्टिभ्य । श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्येत । द र्हदाद्यष्टकंशुभं । स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदंशिखांरक्षे । त्परंरक्षेत्तुमस्तकं । तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे । तुर्यंरक्षेच्चनासिकां ॥ ७ ॥ पंचमंतु मुखंरक्षेत् । षष्ठंरक्षेच्चघंटिकां । नाभ्यंतंसप्तमंरक्षे । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांत । सरेफोर्ध्यब्धिपंचषान् । सप्ताष्टदशसूर्यांकान् । श्रितोविंदुस्वरान्पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षराआद्याः । पंचातोज्ञानदर्शन । श्चारित्रेभ्यो नमो मध्ये । ह्रीं सांतह समलंकृतः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॐ । ह्रां । ह्रीं । ह्रुं । ह्रूं । ह्रें । ह्रैं । ह्रौं । ह्रः । असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ॥ ❀ ॥ जंबूवृक्षधरोद्वीपः । क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्ट । काष्टाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः । कूटजैरलंकृतः । ॐ ह्रैं रुचैस्तरस्तार । स्तारामंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं । वीजम ध्यास्यसर्वगं । नमामि बिंबमार्हत्यं । ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलंशांतं । बहुलं जाड्यतोज्झितं । निरीहं निरहंकारं । सारं सारतरंघ नं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं । सात्त्विकं राजसंमतं । तामसं चिर संबुद्धं । तैजसंशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निराकारं । सरसं विरसंपरं परापरं परातीतं । परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच । त्रिवर्णं

तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं । सपरंच परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं । निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं । निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं । बुद्धं सिद्धं मतंगुरु । ज्योतीरूपं महादेवं । लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः सरेफोविंदुमंडितः । तुर्यस्वरस मायुक्तो । बहुधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे । वृष भाद्याजिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैनिजैर्युक्ता । ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो । विंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः । स्वर्णाभः सर्व तोमुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसं लीनं । तीर्थकृन्मंडलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ । नादस्थितिसमा श्रितौ । विंदुमध्यगतौनेमि । सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभुवासुपूज्यौ । कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतःसर्वे । हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरंप्राप्ता । श्चतुर्विं शतिरर्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदाः सर्व कालेषु । ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययश्चक्रं । तस्य चक्रस्य या विद्या । तयाह्यादित सर्वाङ्गं । मामांहिनस्तु शाकिनि ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० । मामांहिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देव० । मामांहिनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० । मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० । मामांहिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० । मामांहिंसंतुपन्नगाः ॥ ३५ ॥ देव० । मामांहिं संतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० । मामांहिंसंतु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० । मामांहिंसंतुवाघ्रयः ॥ ३८ ॥ देव० । मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० । मामांहिंसंतु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देव० । मामांहिंसंतु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा । तस्यायानुविलब्धयः । तान्नि रभ्युद्यतज्योति । रहंसर्व निधीश्वराः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा । देवाभूपीठि वासिनः । स्वर्वा सिनोपि ये देवाः । सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४२ ॥ येऽवधिलब्धयो येतु । परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयोदेवाः । मांसं रक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूतवेत्तालाः । पिशाचामुज्जलास्तथा । ते सर्वे प्युपशाम्यंतु । देवदेव

प्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृति र्लक्ष्मी । गौरी चंडी सरस्वती । जयांबा विजयानित्या । क्लिन्ना जिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा कामबा णाच । सानंदानंदमालिनी । माया मायाविनी रौद्री । कला काली कलि प्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो । वर्त्ततेयाजगत्त्रये । मह्यंसर्वाःप्रय च्छंतु । कांतिंकीर्त्तिंधृतिंमतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सदुः प्राप्यः । श्रीऋषि मंडलस्तव । भाषितस्तीर्थनाथेन । जगत्त्राण कृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणेराज कुलेवन्हौ । जलेदुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे । स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं । पदभ्रष्टा निजं पदं । लक्ष्मी भ्रष्टानिजां लक्ष्मीं ॥ प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यां । पुत्रार्थी लभते सुतं । वित्तार्थी लभते वित्तं । नरःस्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकांस्ये । लिखित्वा यस्तुपूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि । र्गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रेलिखित्वेदं । गलके मूर्द्धनि वा भुजं । धा रितं सर्वदा दिव्यं । सर्वभीति विनाशकं ॥ ५४ ॥ भूतैःप्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः । पिशा चैर्मुज्झलैर्मलै । वातपित्तकफोद्रेकै । र्मुच्यते नात्रसंशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्व स्त्रयीपीठः । वर्त्तिनःशाश्वताजिनः । तैःस्तुते र्वंदिते दृष्टे । र्यत्फलंतत्फलंश्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतन्नोप्यं महास्तोत्रं । नदेयं यस्यकस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते । बालहत्यापदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपःकृत्वा । पूजयित्वा जिनावलीं । अष्टसाहस्त्रिको जापः । कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरंप्रात । र्येपठंति दिनेदिने । तेषांनव्याधयोदेहे । प्रभवंति नचापदः ॥ ५९ ॥ अ ष्टमासावधियावत् । प्रातःप्रातस्तुयःपठेत् । स्तोत्रमेतन्महातेजो । जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोबिंबे । भवेसप्तमके ध्रुवं । पदंप्राप्नोति शुद्धात्मा । परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता । कल्याणानि चसोश्नुते । गत्वास्थानंपरं सोपि । भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं । स्तुतीनामुत्तमंपरं । पठना त्स्मरणा ज्जापा । ल्लभ्यते पदमुत्तमं ॥ ६ ॥ इतिश्रीऋषिमंडलस्तोत्रं ॥ ❀ ॥ कृपक श्लोकान्निराकृत्यमूलयं त्रकल्पानुसारेण । लिखितं । गणिः श्रीहेमाकल्याणोपाध्यायैः । तस्योपरि मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भक्तामरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भक्तामरप्रणत मौलिमणिप्रभाणा । मुद्द्योतिकं दलितपापत मोवितानं । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा । वालंबनंभवजलेपततांज नानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतःसकल वाङ्मयतत्वबोधा । दुद्भूतबुद्धिपटुभिःसुरलोक नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरैरुदारैः । स्तोष्ये किलाहमपितं प्रथमंजिनेंद्रं ॥ २ ॥ युग्मं । बुद्ध्याविनापि विबुधार्चितपादपीठ । स्तोतुं समुद्यतमति र्विग तत्रपोहं । बालंबिहाय जलसंस्थित मिंदुविंब । मन्यःक इच्छति जनः सह साग्रहीतुं ॥ ३ ॥ वक्तुंगुणान्गुणसमुद्र शशांक कांतान् । कस्तेक्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या । कल्पांतकाल पवनोद्धतनक्रचक्रं । कोवातरीतुमलमंबुनि धिं नुजाभ्यां ॥ ४ ॥ सोहं तथापि तवभक्तिवशान्मुनीश । कर्तुस्तवं विग तशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्मवीर्य मविचार्य मृगोमृगेंद्रं । नाभ्येति किं नि जशिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतं परिहासधाम । त्वद्भक्ति रेव मुखरीकुरुते बलान्मां । यत्कोकिलःकिलमधौमधुरंविरौति । तच्चारुचाम्र कलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेनभवसंततिसन्निबद्धं । पापंक्षणात्क्ष यमुपैति शरीरभाजां । आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु । सूर्यांशुभिन्न मि व शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेतिनाथतवसंस्तवनंमयेद । मारभ्यते तनुधि यापि तवप्रभावात् । चेतोहरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु । मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तांतवस्तवनमस्तसमस्तदोषं । त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव । पद्माकरेषु जलजानिवि काशभाजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ । भूतैर्गुणै र्भुविभवंत म भिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किंवा । भूत्याश्रितं य इहनात्म समंकरोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वाभवंत मनिमेषविलोकनीयं । नान्यत्रतोषमुपयाति जगत्यचक्षुः । पीत्वापयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः । क्षारंजलंजलनिधे रसितुंकइच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं । निर्म्मापितस्त्रिभुवनैक ललामभूत । तावंतएवखलुते प्यणवःपृथिव्यां । यत्तेसमानमपरंनहिरूप मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रंक्वतेसुरनरोरगनेत्रहारि । निःशेषनिर्जित जगत्त्रितयो पमानं । बिंबं कलंकमलिनं क्वनिशाकरस्य । यद्वासरे भवति पांडुपलाशक

ल्यं ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप । शुभ्रागुणास्त्रिजुवनं तवलंघ यंति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं । कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्रयदिते त्रिदशांगनाभि । र्नीतं मनागपिमनो नविकार मार्गं । कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन । किंमंदराद्रिशिखरं चलितंकदा चित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्ति रपवर्जित तैलपूरः । कृत्स्नंजगत्त्रयमिदं प्रग टी करोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां । दीपोपरस्त्वमसिना थ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराहुगम्यः । स्पष्टी क रोषि सहसायुगपज्जगंति । नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः । सूर्यातिशायिम हिमासि मुनींद्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं । गम्यं न राहुवदनस्य नवारिदानां । विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकांति । विद्योतय ज्जगद् पूर्वशशांकबिंबं ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वतावा । युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सुनाथ । निष्पण्णशालिवनशालिनिजीवलोके । कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानंयथा त्वयि विभाति कृतावकाशं । नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजःस्फु रन्मनिषु याति यथा महत्वं । नैवंतु काचसकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्नेवरं हरिहरादय एव दृष्टा । दृष्टे षु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवताजुवियेन नान्यः । कश्चि न्मनोहरतिनाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानिशतशो जनयंतिपुत्रान् नान्यास्सुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्वादिशोदधति भानि सहस्ररश्मिं । प्रा च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामामनन्तिमुनयः परमं पुमांस । मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् । त्वामेवसम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु । ना न्यःशिवः शिवपदस्य मुनींद्रपन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभु मचिंत्य मसंख्य माद्यं । ब्रह्माण मीश्वर मनन्त मनङ्गकेतु । योगीश्वरं विदितयोग मनेक मेकं । ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदन्तिसन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधा । त्वंशंकरोसि भुवनत्रय शंकरत्वात् धातासिधीर शिवमार्ग विधेर्विधानात् । व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ । तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नम स्त्रि जगतः परमेश्वराय । तुभ्यं नमो जिनभवो दधिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्र यदि नामगुणैरशेषै ।

स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश। दोषैरुपात्त विबुधाश्रयजातगर्वैः। स्वप्नां तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ त्यैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखा । भा त्याति रूपममलं भवतो नितांन्तं । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं। बिम्बं रवेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे। वि भ्राजते तव वपुः कनकावदातं । विम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं । तुङ्गो दयाद्रिशिरसीव सहस्र रश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं। वि भ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं । उद्यच्छशांक शुचिनिर्झर वारिधार । मुच्चै स्तटं सुरगिरेरिवशातकौंभ्रं ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तवविभाति शशांककांत । मुच्चैः स्थितंस्थगितभानुकरप्रतापं । मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धिशोभं । प्रख्यापयत् त्रिजगतःपरमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेम नवपंकज पुंजकांति । पर्युल्लसन्नख मयूख शिखाभिरामौ। पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्रधत्तः । पद्मानि तत्र वि बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं तथा तव विभूति रभूज्जिनेंद्र। धर्म्मोप देशन विधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभादिनकृतः प्रहतान्धकारा । तादृ क्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्योतन्मदा विलविलोल कपोल मूल। मत्तभ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं । ऐरावताभमिभमुद्धत मापतन्तं। दृष्ट्वा भयं भवतिनोभवदाश्रितानां ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभ गलदुज्वल शोणिताक्त। मुक्ताफल प्रकरभूषित भूमिभागः । बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि। नाक्रा मति क्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं । दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गं। विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं। त्वं नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिल कंठनीलं। क्रोधोद्धतं फणिनमुतफण मापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः । त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्ग गजगर्जित भीमना द। माजौबलं बलवता मपि भूपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापविद्धं । त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवा ह। वेगावतारतरणातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षाः । त्व त्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र। पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ । रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा । स्त्रासं

विहायभवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ आकृतभीषणजलोदरभार भुग्नाः । शोच्यांदशा मुपगताश्च्युतजीविताशाः । त्वत्पादपंकज रजोमृतदिग्धदेहा । म र्त्याभवन्ति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरशृंखलवेष्टिताङ्गा । गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंन्तः । सद्यः स्वयं विगत बंध भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेंद्र मृगराज दवानलाहि संग्रामवारिधि महोदरबन्धनोत्थं । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव । य स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां । भक्त्या मया रुचिरवर्ण विचित्रपुष्पां । धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं । तंमानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इतिश्रीभक्तामरस्तोत्रम् ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कल्याणमन्दिर मुदारमवद्यभेदि । भीता भयप्रदमनिन्दित मंह पद्मं । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु । पोतायमानमभिनम्यजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः । स्तोत्रं सुविस्तृतमति र्नविभुर्विधातुं । तीर्थेश्व रस्य कमठस्मयधूमकेतो । स्तस्याहमेष किलसंस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मं ॥) सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्मादृशाः कथमधीश भवंतधीशाः । धृष्टोपि कोशिकशिशु र्यदिवादिवांधो । रूपं प्ररूपयति किं किलघर्म रश्मेः ॥ ॥ ३ ॥ मोहक्षया दनुभवन्नपि नाथमर्त्यो । नूनं गुणान् गुणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोपि यस्मा । न्मीयेत केन जलधे र्नतु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तवनाथ जडाशयोपि । कर्त्तुंस्तवं लसदसंख्य गुणाकर स्य । बालोपि किं ननिजबाहु युगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति स्वधि यांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश । वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जातातदेव मसमीक्षित कारितेयं । जल्पंति वा निजगि रा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामापिपाति भवतो भवतो जगंति । तीव्रातपो पहतपांथ जनान्निदाघे । प्रीणा ति पद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयिविभो शिथलीभवंति । जंतो क्षणेन निबडाअपि कर्म्मबंधाः । सद्यभुजङ्गममया इवमध्यभाग । मभ्यागते वनशिखंडिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसाजिनेंद्र ।

रोद्रै रुपद्रवशतै स्त्वयिवीक्षितेपि । गौस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रै । चौरै रिवाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारको जिनकथं त्रविनां तएव । त्वा मुद्रहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्रादति स्तरति यज्जल मेषनून । मंतर्गतस्यम रुतः सकिलानुत्रावः ॥ १० ॥ यस्मिन्हर प्रत्रृतयोपि हतप्रत्रावा । सोपि त्वया रतिपतिः क्षपितःक्षणेनः । विध्यापिता हुतत्रुजः पयसाथ येन । पीतं न किं तदपिदुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिण तुल्य गरिमाणमपिप्रपन्ना । स्त्वांजंतवः कथमहो हृदयेदधानाः । जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाघवेन । चिं त्यो नहंतमहतां यदिवा प्रत्राव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि वित्रो प्रथमं निरस्तो । ध्वस्तास्तदावतकथं किलकर्म्मचौराः । प्लोषत्यमुत्र यदिवा शि शिरापिलोके । नीलद्रुमानि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगि नो जिन सदा परमात्मरूप । मन्वेषयंतिहृदयां बुजकोशदेशे । पूतस्य नि र्मलरुचेर्यदिवा किमन्य । दक्षस्य संत्रविपदं ननुकार्णिकाया ॥ १४ ॥ ध्याना जिनेश त्रवतो त्रविनः क्षणेन । देहंविहाय परमात्मदशां व्रजंति । तीव्रान लादुपलत्रात्रव मुपास्यलोके । चामीकरत्वमचिरा दिवधातुत्रेदाः ॥ १५ ॥ अन्त सदैव जिन यस्य वित्राव्यसेत्वं । त्रव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरं । एतत्स्वरूप मथ मध्यविवर्त्तिनोहि । यद्रिग्रहं प्रसमयंति महानुत्रावाः ॥ १६ ॥ आत्मामनीषि त्रिरयं त्वदत्रेदबुद्ध्या । ध्यातोजिनेंद्रत्रवतीह त्रवत्प्रत्रावः । पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं । किं नामनो विषविकार मपाकरोति॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनंवित्रो हरिहरादि धियाप्रपन्नाः । किंका चकामलिनिरी शसितोपि शंखो । नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्म्मोपदेशसमये सविधानुत्रावा । दास्तांजनोत्रवति ते तरुरप्यशोक । अ भ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोपि । किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रंवित्रो कथमवाङ्मुखवृंतमेव । विष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गो चरे सुमनसां यदिवासुनीश । गच्छंति नून मधएवहि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंत्रवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति । पीत्वा यतः परमसंमदसंगत्राजो । त्रव्याव्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वा मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो । मन्ये वदंति सुचयः सुरचामरौघाः । यस्मै

नतिं विदधते मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिर मुज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिहभव्य शिखंडिनस्तां । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै । श्चामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥ २३ ॥ उच्चैस्तरा तवशति द्युतिमंडलेन । लुप्तच्छदा छविरशोक तरुर्बभूव । सानिध्यतो पि यदिवा तव वीतराग । निरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन । मागत्यनिर्वृतिपुरी प्रति सार्थवाहं । एतन्नि वेदयति देव जगत्त्रयाय । मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्यो ति तेषु भवता भुवनेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताक लापकलितो लसितातपत्र । व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिंडितेन । कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हे म रजत प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेणभगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्य स्रजो जिन नमत् त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्यरत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पा दौ श्रयंति भवतो यदिवा परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्म जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तंहि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव । चित्रंविभो यदसिकर्म विपाकशून्यः ॥२९॥ विश्वेश्वरोपि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाकुर प्रकृतिरप्य लिपिः त्वमीश । अज्ञानवत्यपिसदैव कथंचदेव । ज्ञानंत्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भार संभृतनभांसि रजांसिरोषा । दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायापितैस्तवननाथ हता हताशो । ग्रस्तस्त्वमीभि रयमेव परंदुरात्मा ॥३१॥ यद्गर्जदूर्जित घनौघमदभ्रभीम । भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन मुक्त मथदुस्तरवारिदभ्रे । तेनैवतस्य जिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्व केशविकृताकृतिमर्त्यमुंड । प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवं तमपीरितोयः । सोस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधृतान्यकृत्याः । भक्तियुक्तसतरु लकपद्ममलदेहदेशाः । पादद्वयं तवविभो भुविजन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मि न्नपार भववारिनिधौ मुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आक र्णितेतु तवगोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्विषधरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥ ज

न्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया महित मीहित दानदक्षं । तेनेह जन्मनि मुनीश परानवानां । जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ ३६ ॥ नूनं नमोहतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वंविभो सकृदपि प्रविलोकितोसि । मर्मा विधौ विधुरयंति हिमामनर्थाः । प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथै ते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षतोपि । नूनं नचेतसि मया विधृतोसिभक्त्या । जातोस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं । यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति नभावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसते वशिनांवरेण्य । भक्त्यानते मयि महेश दयांविधाय । दुःखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो । बध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा हृदिमांपुनीहि । सीदंत मद्यभयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंघ्रि सरोरुहाणां । भक्तेःफलं किमपिसंतत संचितायाः । तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्यपूयाः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थंसमाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकितांगभागाः । त्वद्बिंबनिर्म्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या । येसंस्तवंतवविभो रचयंतिभव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचंद्र । प्रभास्वराः स्वर्गसंपदोभुक्ता । ते विगलितमलनिचया । अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सेत्रुंजरास ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रासभणुं रलियाम णो । सेत्रुंजैनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवतच्यारसतोतरै । हुवाधनेसरसूर । तिण सेत्रुंजमहातमकियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसरया । से त्रुंजैऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेत्रुंजमाहातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुं जतीरथ सारिषो । नहीछै तीरथकोय । स्वर्गमृत्यु पातालमै । तीरथसगलाजो य ॥ ४ ॥ नामैनवनिधिसंपजै । दीठांदुरितपुलाय । भेटंतां भवभयटलै । से वंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए । दक्षिणभरतमझार । सोरठदेससुहाम णो । तिहां छै तीरथसार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढालपहिली: रामगिरि ॥ ❀ ॥

॥ सेत्रुंजोनेंश्रीपुंमरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक । विमलाचलनेकरूं परणाम । एसेत्रुंजैना इकवीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद पर्व्वत इंद्रप्रकास । महातीरथपूरवेसुखकाम ए०॥२॥ सासतोपर्वतनें दृढशक्ति । मुक्ति निलो तिणकीजैनक्ति । पुप्फदंत महापदम सुठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुनद्र कैलाश । पातालमूल अकर्मकतास । सर्वकाम कीजै गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजैनाइकवीसनाम । जपैजवेठाअपणैठांम । सेत्रुंजजात्रानोफल लहै । महावीरनगवंतइमकहै ॥ ५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ ❀ ॥ सेत्रुंजोपहिलैअरै असीजोयणपरमांण । पिहुलो मूल ऊंचपण । बबीसजोयणजाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो । बीजै अरैविशाल । बीसजोयणऊंचोकह्यो । मुऊवंदणा त्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरै । पिहुलो तीरथराय । सोलजोयण ऊंचोसही । ध्यानधरूं चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिहुलपण । चोथै अरै मझार । ऊंचो दसजोयण अचल । नितप्रणमें नरनार ॥ ४ ॥ वार जो यण पंचम अरै । मूलतणै विशतार । दोजोयण ऊंचोअछै । सेत्रुंजतीरथ सार ॥ ५ ॥ सातहाथ छठै अरै । पिहुलो परवतएह । ऊंचोहोस्यै सत्तध नुष । सासतोतीरथएह ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥❀॥ केवलन्यानी प्रमुखतीर्थंकर । अनंतसीधाइणठामरे । अनंतवली सीझसै इ णठामै । तिणकरुं नितपरणामरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा । सीझसीव लीय अनंतरे । जिणसेत्रुंजतीरथ नहीजेट्यो । तेगरभावासकहंतरे ॥ सेत्रुं० ॥ २ ॥ फागुणसुदि आठमनें दिवसै । रिषभदेव सुखकाररे । रायणरूंख समोस स्यास्वामी । पूरवनिनाणूं बारेरे । से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्रचैत्रीपूनमदिन । इणसेत्रुंज गिरिआयरे । पांचकोडिसूं पुंमरीकसीधा । तिण पुंमरीक कहायरे । से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर । बेबेकोडिसंघातरे । फागुणसुदिदशमी दिनसीधा । तिणप्रणमुंपरभातरे । से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चउदसनेदिन नमिपुत्री चौसाठिरे । अणसणकरि सेत्रुंजैगिर ऊपर । एसहुसीधा एकछरे । से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा । द्रावरुने वारिखिल्लरे । कातीसुदि पूनमदिनसीधा । दशकोडिसुं मुनिशिखरे । से० ॥७॥ पांचे पांडव इणगिरसी धा । नवनारद रिषिरायरे । लंब प्रजून गयाइहां सुगतै । आठेकरमखपायरे ।

से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थंकर । समोसस्या गिरिशृंगरे । अजित शांति तीर्थंकरबेऊं । रह्या चोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवार संघातै । थावच्चा सुकशाधरे । पांचसै साधुसुं सेलगमुनिवर । सेत्रुंजै सिवमुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंजैसीधा । भरतेसरनें पाटरे । राम अनें भरतादिक सीधा । मुक्तितणी एवाटरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालिमया लीनें छवयाली । प्रमुख साधुनीकोडिरे । साधुअनंता सेत्रुंजैसीधा प्रणमुं बेकरजोडिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ❀ ढालचौपाईनी ॥ ❀ ॥ सेत्रुंजैनाकहुं सोलछधार । तेसुणिज्यो सहुको सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय । जनमजनमना पातिकजाय ॥१॥ रुषभदेव अयोध्यापुरी । समवसस्या स्वामी हितकरी । भरतगयो बंदणनैकाज । येछपदेसदियोजिनराज ॥२॥ जगमांहै मोटा अरिहंतदेव । चौसठ इंद्र करैजसुसेव । तेहथीमोटो संघकहाय । जेहनें प्रणमें जिनवररराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटो संघवीकह्यो । भरतसुणीनें मनगहगह्यो । भरत कहैतेकिमपामियै । प्रभु कहै सेत्रुंजै जात्राकियै ॥ ४ ॥ भरतकहै संघवीपद मुझ । थेआपोहुं अंगजतुझ । इंद्रैआएयाअक्षतवास । प्रभु आपै संघवीपदता स ॥ ४ ॥ इंद्रैतिणबेला ततकाल । भरत सुभद्रा विहुंनैमाल । पहिरावी घर संप्रेखिया । सखरसोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमावली । रत्नतणीदीधीमनरली । भरतै गणधर घरतेडिया । सांतिक पोष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्रीसुंकी सहुदेस । भरततेडायोसंघआसेस । आयोसंघ अयोध्यापुरी । प्रथमथकी रथजात्राकरी ॥ ८ ॥ संघ भगति कीधी अतिघणी । संघचलायो सेत्रुंजाभणी । गणधर बाहूबलकेवली । मुनिवरकोडि साथेलि यावली ॥९॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिद्धि । भरतें साथे लीधीसिद्धि । हयगयरथ पायक परवार । तेतो कहतां नावैपार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवीकहवाय । मारगचैत्य जुधरतोजाय । संघ आयो सेत्रुंजैपास । सहुनीपूगी मननीआस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय । माणि माणक मोत्यांसुं वधाय । तिण ठामै रही महोछवकियो । भरतें आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजा ऊपर चढ्यो । फरसंता पातिक झडपड्यो । केवलन्यानी पगला तिहां । प्रणम्यारायण रूंखडै जिहां ॥१३॥ केवलन्यानी सनात्रनिमित्त । ईशानेंद्र आ

णीसुपवित्त । नदीसेत्रुंजै सोहामणी । भरतेंदीठी कौतुकभणी ॥ १४ ॥ गणधर देवतणे उपदेस । इंद्रेबलिदीधो आदेस । श्रीआदिनाथ तणोदेहरो । भरत करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रसाद उत्तंग । रतन तणी प्रतिमा मनरंग । भरतै श्रीआदीसरतणी । प्रतिमाथापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमाभली । माहीपूनिम थापीरली । ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद । भरतैथाप्या नवलैनाद ॥ १८ ॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद । भरतकराया गुरुसुप्रसाद । भरत तणोपहिलो उधार । सगलोही जाणै संसार ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ढाल सिंधूको आसावरी ॥ ❀ ॥ भरत तणें पाटै आठमें । दंमु वीरज थयो रायोजी । भरत तणीपर संघकीयो । सेत्रुंजसंघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंजैउधारसांभलो । सोभमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात बीजावलि । तेह नकहुं अधिकारोजी से० ॥ २ ॥ चैत्यकरायो रूपातणो । सोनानो बिंबसारोजी । मूलगोबिं बभंमारीयो । पछिमदिश तिणवारोजी । से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्राकरी । सफलकियो अवतारोजी । दंमुवीरज राजातणो । एबीजो उधारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सोसागरोपम वितिक्रम्या । दंमुवीरजथी जिवारोजी । ईशानेंद्रकरा वीयो । एतीजो उधारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी । माहेंद्र नाम उदारोजी । तिणसेत्रुंजैनो करावीयो । ए चोथो उधारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनोधणी । ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी । तिणसेत्रुंजैनो करावीयो । ए पांचमो उधारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्रनोकीयो । ए छठो उधारोजी । चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो । ए सातमो उधारोजी ॥ से० ॥८॥ अभिनंदन पासै सुणयो । सेत्रुंजनो अधिकारो जी । व्यंतरइंद्र करावीयो । ए आठमो उधारोजी । से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभुस्वामिनोपोतरो । चंद्रशेखरनाम मल्हारोजी । चंद्रजसराय करावीयो । ए नवमो उधारोजी । से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय क रावीयो । ए दशमो उधारोजी । से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो । मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी । श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उधारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांभवकहै अम्हेपापीया । किमछूटां मोरीमायोजी । कहैकुंती सेत्रुंजतणी । यात्रकीयां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचेपांभव संघ

करी। सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी। काष्टचैत्य विंबलेपना। ए बारमो उधारोजी। से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी। प्रतिमां सुंदरसरूपोजी। श्रीसेत्रुंजैनो संघकरी। थापी सकल सरूपोजी। से० ॥ १५ ॥ अठोत्तर सोवरसांगयां विक्रमनृपथी जिवारोजी। पोरवाडजावम करावीयो। एतेरमो उधारोजी। से० ॥ १६ ॥ संवत बार तिम्मोत्तरै। श्रीमाली सुविचारोजी। वाहम्दे मुहते करावीयो। ए चवदमो उधारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरै इकोत्तरै। देसल हर अधिकारोजी। समरै साहकरावीयो। ए पनरमो उधारोजी। से० ॥ १८ ॥ संवत पनर सत्यासीयै। वैसाखवदि सुभवारो जी। करमेंमोसी करावीयो। एसोलमो उधारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रतिकालै सोलमो। एवरतैउैउधारोजी। नितनित कीजै वंदना। पामीजै भवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ दुहा। वलिसेत्रुंज महातमकहुं। सांभलो जिमउै तेम। सूरिधनेसरइमकहै। महावीरकह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी। सेत्रुंजै पुजनीक। भगवंतनो वेसवां दतां। लाभहुवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजाऊपरै। चैत्यकरावैजेह। दल परमाण समोलहै। पल्योपमसुखदेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो। नवो नीपावैकोय। जीर्णोधार करावतां। आठगुणो फलहोइ ॥ ४ ॥ सिरऊपरि गागरधरी। स्नात्र करावै नारि। चक्रवर्त्तिनी स्त्रीथई। सिवसुख पामेंसार॥५॥ काती पूनिम सेत्रुंजे। चढिनैं करै उपवास। नारकी सौसागर समो। करै करमनो नास ॥ ६ ॥ कातीपरब मोटो कह्यो। जिहां सीधा दशकोडि। ब्रह्म स्त्री वा लकहत्या। पापथी नाखैछोडि ॥ ७ ॥ सहसलाख श्रावग भणी। भोजन पुन्यविशेष। सेत्रुंज साधु पडिलाभतां। अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ ॥ ❀ ॥ धन २ अयवंतीसुकुमालनें एहनी ॥ ❀ ॥ सेत्रुंजैगयां पाप छूटी यै। लीजै आलोयण एमोजी। तप जप कीजै तिहां रही। तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ से०। जिणसोनानी चोरीकरी। ए आलोयणतासोजी। चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी। एककरै उपवासोजी ॥ २ ॥ से० ॥ वस्तु तणी चोरीकरी। सात आंबिल सुध थायोजी। काती सातदिन तपकीयां। रतनहरण पाप जायो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी। चोरी कीधी जेणोजी। सातदिवस पुरमढकरै। तो छूटै गिरि एणोजी ॥ ४ ॥ से० ।

मोती प्रवाला मूंगीया । जिण चोरया नरनारोजी । आंबिलकरि पूजाकरै । त्रिणटंक सुध आचारोजी ॥ ५ से० ॥ धान पाणी रसचोरीया । जे जेटै सिद्धक्षेत्रोजी । सेत्रुंज तलहटीसाधुनैं । पडिलाभैं सुध चित्तोजी ॥ ६ से० । वस्त्राभरण जिणेंहरया । तेहूटै इण मेलोजी । आदिनाथनी पूजाकरै । प्रहऊठीवहुवेलोजी ॥ ७ से० ॥ देवगुरुनो धनजेहरै । तैसुध्थायेएमोजी । अधिकोद्रव्य खरचै तिहां । पात्रपोषै बहुप्रेमोजी ॥ ८ ॥ से ॥ गायनेंसघो मामही । गजनोचोरणहारोजी । धैतेवस्तु तीरथै । अरिहंतध्यान प्रकारोजी ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तक देहरापारका । तिहां लिखै अपणो नामोजी । छूटै छम्मासीतपकीयां । सामायक तिणठामोजी ॥ १० ॥ से० ॥ कुंवारी परिव्राजका सधव अधव गुरु नारोजी । व्रतभांजै तिणनें कह्यो । छम्मासी तप सारोजी ॥ ११ ॥से० ॥ गौ विप्र स्त्री बालक रिषी । एहनोघातक जेहोजी । प्रतिमा आगै आलोवतां । छूटै तप करि तेहोजी ॥ १२ ॥ से० ॥ ❀ ॥ ढाल ६ कुं मरजलै आवीयोए ॥ एहनी ॥ ❀ ॥ संप्रतिकालै सोलमोए । एबरतैढै उधार । सेत्रुंज यात्रा करूंए । सफलकरुं अवतार ॥ १ से० ॥ छहरी पालतां चालीयैए । सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीतानें पहुचीयैए । संघ मिल्या बहुथाट ॥ २ ॥ से० ॥ ललितसरोवर पेषीयैए । वलि सत्तानीवाव । से० ॥ तिहां विसरामोलीजियैए । वमनैचौतरै आवि ॥ ३ ॥ से० ॥ पाली तानें पाजमीए । चढीयै उठिपरभात ॥ से० ॥ सेत्रुंजनदीय सोहामणीए । दूर थकीदेखंत ॥ ४ ॥ से० ॥ चढियै हिंगुलाजनें हमैए । कलिकुंमनमीयै पास । से० ॥ वारीमांहे पैसीयैए । आणी अंग उल्लास ॥ ५ ॥ से० । मरुदेवी टूंक मनोहरूए । गजचढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांतिनाथ जिनसोलमोए । प्रणमीजैतसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडै परगमोए । सोमजीसाहमल्हार । से० । रूपजी संघवी करावीयोए । चौमुख मूलउधार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुखप्रतिमा चरचीयैए । प्रभतीमांहि प्रभाबिंब । पांचेपांम्बपूजियैए । अदभुतआदिप्रलंब से० ॥ ९ ॥ खरतरवसहीखांतिसुंए । बिंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी नमुंए । टालूंअलगउद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरमदुवार मांहेंनीसरुंए । कुगतिकरुं अीतदूर ॥ से० ॥ आदुं आदिनाथदेहरैए । करमकरुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥

मूलनायक प्रणसुंमुदाए। आदिनाथ भगवंत ॥ से० देवजहारुं देहरेए। भ मतीमांहि भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ सेत्रुंजेऊपरि कीजीयेए। पांचेगाम सनात्र। से०। कलश अठोत्तरसो करुंए। निरमल नीरसुगात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथ म आदीसर आगलेए। पुंमरीक गणधार ॥ से० ॥ रायणतलपगलानमुंए। शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायणतलपगलानमुंए। चौमुखप्रति माच्यार ॥ से० ॥ बीजीभूमि विंबावलीए। पुंमरीकगणधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकुंमनिहालीयेए। अतिभलीभलकाझोल ॥ से० ॥ चेलणातलाई सिद्ध सिलाए। अंगफरसुं उल्होल से० ॥ १५ ॥ आदिपुरपाजे ऊतरूंए। सिद्धवमूलुंविसरांम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाड इणपरि करीए। सीधावंछितकाम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्राकरी सेत्रुंज तणीए। सफलकीयो अवतार ॥ से० ॥ कुसलखेमसुं आवीयोए। संघसहूपरिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंजरास सो हामणोए। सांभलज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ घर बैठां भणेंभावसुंए। तसुजा त्राफलहोइ ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल वयांसीयेए। सावणवदिसुखकार। से० ॥ रासभणयो सेत्रुंजतणोए। नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछखरतरतणोए। श्रीजिनचंदसुरीस। से०। प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए। स कलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीसजगजाणीयेए। समैसुंदरउवझाय। से०। रासरच्यो तिणरूवडोए। सुणतां आणंदथाय ॥ से० ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसम्मेतसिखरजीकोरास ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वांदी वीस जिनेसरू। रचस्युं रासरसाल। तीरथ शिखर समेतनी। महिमा बडी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियलै। प्रगट्यो शिखर समेत। कोडाकोडी मुनिवरू। सिद्धि गए इहखेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखर समेतए। फरस्यां पापपुलाय। भविजन भेटो भावसुं। ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा सिखरसमेतनी। कहि नसकै कविकोय। गुण अनंत भगवंतना। तिमए तीरथ होय ॥ ४ ॥ ढाल ॥ १ ॥ चौपईनी ॥ ❀ ॥ गिरवर शिखर समो नहीकोय। एहनी महिमा सबजग होय। वीसजिनेसर मुगतैगया। मुनिजन ध्यानधरीनै रह्या ॥ १ ॥

प्रथम अयोध्यानगरी भली । तिहां जितशत्रु नरेसर वली । विजया राणी नें सुतजाण । अजित कुमर सहुगुणनीखाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिक सेवा करै । इंद्राणी अतिउछव धरै । तीर्थंकरनी पदवी लही । अंतर अरिजिण साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इमभोगवतां भोग । पुन्यप्रसाद मिल्यो सहु जोग । अवसर दै संबहर दांन । संजम लीनो आप सुजान ॥ ४ ॥ कर्मख पावी पाम्यो ग्यान । केवलदर्शन लह्योप्रधान । विचरै पुहवी मंझल मांहि । भव्यजीव प्रतिबोधन तांहि ॥ ५ ॥ सिंह सेनादिक गणधरभया । पंचाणवै संख्या सहु थया । एकलाख मुनिवर परिवरया । श्रावक श्रावकणी बहुकरया ॥ ६ ॥ तीन लाख वलि तीस हजार । साधवियां जाणो सुविचार । श्रावक सहस अठाणुं सही । दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥ पांच लाख पेंतालीस हजार । श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख पूरबनो आय । कंचनवरण सरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढा च्यारसै धनुष सरीर । मानलह्यो प्रभु गुण गंभीर । गजलांछन प्रभुजीनो जाण । अमृतसम जसुमीठी वाण ॥ ९ ॥ अनुक्रम प्रभुजी सिखरसमेत । गिरवर पर आव्या निजहेत । सहस मुनिस्वरनें परिवार । मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनिमनें दिनें । मुक्तिगए प्रभु तीरथइणें । भूचर खेचर किनरसुरी । इंद्रादिक सहु उछव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही । अठाइ महोछव कियोसही । ए तीरथनी जात्राकरै । ते भवियणअक्षयसुख लहै ॥ १२ ॥ दुहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंभव जिनराजजी । गएइहांनिर्वाण । शिखरसमेत सुहामणो । प्रगट्यो तीरथ जाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ सुगुणसनेही साजन श्रीसीमंधरस्वाम, एचाल ॥ सावत्थी नगरी भरी धनसंपद सहुथोक । जैतारीनृप राजकरै सुखियासबलोक । सेनाराणी मीठीबाणी गुणनी खाण । जेहनें सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥ १ ॥ कंचनबरण सरीरमनोहर प्रभुनोजाण । लंछन अश्वतणो सोहै प्रभुनो परधान । साठलाख पूरबनो प्रभुनो आयुप्रमाण । धनुख च्यारसै उचपणै प्रभुदेह बखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्यायें प्रभुनें गणधर होय । दोयलाखमुनि जेहनै गुणवरता जगजोय । तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस । भूमंडल विचरै प्रभु श्रीसं

नव जगदीस ॥ ३ ॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावक लोक । षट्लख सहस उत्तीस श्रावकणी संख्याथोक । त्रिमुख यक्ष अरु दुरितादेवी सानिध कार । बिचरंतां प्रभु सकल संघमें जय जय कार ॥ ४ ॥ सहस श्रमण परिवारै प्रभुजी शिखर समेत । एकमास संलेखणकीनी निज पदहेत । इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरबांण । तीरथमहिमां महियल मोटी थइय सुजाण ॥ ५ ॥ ❀ दुहा ❀ ॥ अभिनंदन जिन वंदियै । पायो पद निरवांण । शिखर समेत सुहामणो । जेटो तीर्थसुजांण ॥ १ ॥ सहसश्रमणसुं सुकसंजमधरो एचाल ॥ ❀ ॥ नगरी अजोध्या सुरपुरी समजली । संवरराजा सोहैमनरली । सिद्धार्था राणी तसुनंदए । अभिनंदण जिन प्रगट्याचंदए (उल्लालो) चंदए सोवन वरणसोहै धनुष साढीतीनसै । सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकर कपिलंछन तेनित बसै । पूर्वलाख पचास आयु गणधर इकसो सोलए । तीनलाख मुनि छलाख आर्या सहस त्रिंसतसोलए ॥ १ ॥ (चाल) सहसअठ्यासी दोलख श्राद्धनी । संख्या चौलखसत्तावीसनी । श्रावकएयांरी संख्या जाणए । नायक यक्ष कालिकाठाणए (उल्लालो) ठाणए शिखर समेत ऊपर मासएक संलेखणा । इकसहस साधू परवर्या प्रभु मुक्ति पहुचे पेषणा । इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला । श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदाहोत सुमंगला ॥ २ ॥ (चाल) सोवनवर्ण धनुषतनुतीनसै । लंछनक्रौंच सोहै सुभगै हसै । पूरब लाख पच्यासी आउए । इकसौ गणधर गुणगण भाउए (उल्लालो) भाउए मुनि त्रिणलाख सोहै सहसवीस प्रमाणए । पणलक्ष त्रीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्षजाणए । संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आनीयै । पणलाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मांनीये । श्रीशिखर ऊपर सातसंख्या सहस साधुसुरंगए । करमासकी संलेखणा प्रभुमुक्तिपुहता चंगए ॥३॥(चाल) इम कोसंवी नगरीतातए । धरनृपतात सुसीमामातए । पदमप्रभुतसु अंगजना थए । लंछनकमल तणो सुभहाथए (उल्लालो) हाथए धनुषप्रमाणपूराअढाईसै तनुकहो । तीन लाख पूरब थितकहावै एकसोगणधर लहो । लखतीन ती सहजार साधू वीससहस लखच्यारए । साधवी दोयलख सहस छिहंतर श्राविकसंख्या सारए ॥ ४ ॥ (चाल) पांचलाख वलि पांचहजारए । श्रावकएयांरी

संख्यासारए । कुसुमदेव स्यामादेवी कही । लालबरण तनुसोहै प्रभुसही । (ज्वालो) सोहए सिखरसमेत ऊपर आठसेत्रिण मुनिवरा । करमास संले खन प्रभुनी सेव करहै सुरवरा । श्रीपदमप्रभूजी मुक्तिपहुता गिरीशिखर महिमाभई । तसु चरणपंकज वालवंदै हृदय आणंद गहगही ॥ ५ ॥ दुहा ॥ श्रीसुपास जिणंदना । पदपंकज आराम । भविजन भ्रमर सुसेवतां । पामें बंछितकाम ॥ १ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा, ए चाल ॥ ❀ ॥ नगर वणारसी सोभता । राजा तात प्रतिष्टलालरे । देवी पृथवीमातजी । स्वस्तिकलंछन सिष्टलालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वजिणंदजी । वीस पूरबलख आयुलालरे । धनुष दोयसैदेहनो । कंचनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचाणवै गणधर कह्या । साधू त्रिणलाख होय लालरे । च्यारलाख तीस ऊपरै । सहस साध वियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहससतावन लहूनी । श्रावकसंख्या थाय लालरे । च्यारलाख वलीत्रेणवै । सहस श्रावकणीभाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष सांतासुरी । पांचसै मुनि परवार लालरे । करिअणसण मुगतैगया । नामलियां निस्तार लालरे ॥ ५ ॥ श्रीसु० ॥ नगर चंद्रपुर इण परै । राजातात महेस लालरे । देवी मातालक्ष्मणा । सुत चंद्रप्रभु वेशला लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्रप्रभु वंदियै । चंद्रबरण तनुदेह लालरे । लंछन चंद्रतणो भलो । धनुषदोढसै देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ भविक कमल प्रतिबोधता सेवै सुर नर यक्ष लालरे । दसलाखपूरव आउखा । तेणवै गणधर दक्षला लरे ॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलख सहस पचाणवै । मुनिश्रमणी तीनलक्ष लालरे । असीसहस संख्याकही । श्रावकवलि दोयलक्षलालरे ॥ ९ ॥ श्रीचं० ॥ लाखपचास ऊपरवली । श्राविका चउलक्षधार लालरे । सहसइकाणवै ऊपरै । प्रभुजीनो परिवार लालरे । ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी । सहससाधु परिवार लालरे । संलेखन इकमासनी । पुहता मुक्तिमझार लालरे ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविध जिनेसरू । जगपति दीनदयाल । समेतसिखर मुगतेगया । भविजनके प्रतिपाल ॥ ढाल ॥ ❀ ॥ श्रीविम लाचलसिरतिलो एचाल ॥ ❀ ॥ नयर काकंदी नरपति । एम पितासुग्रीव । देवीरामा मातासुत । जए सुविधसुजजीव ॥ १ ॥ रजतवरण समतनुसत । ध

नुष एकपरिमांण। दोय लाख पूरब कह्यो। प्रनुनो आयु सुजांण॥ २॥ अठ्या सी संख्याजये। गणधर परम प्रधान। लख दो मुनि विंशति सहस। इकल खश्रमणीजांण ॥ ३ ॥ दोयलक्ष श्रावक कह्या। अरु गुणतीसहजार। एक त्तर चौलख सहस। श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरीसुतारा सुरअजित। श्रीसंघ सानिधकार। सहससाधु परिवारसुं। आए सिखर सुचार॥ ५॥ मासमं लेखण कर प्रनु। मुक्तिगए इहठोर। तीरथ महिमा महियलै। प्रगटी च्यारुं उर॥ ६॥ इमहीज शीतलनाथनो। हिवसुणज्यो अधिकार। भद्दिलपुर दृढ रथ पिता। मातनंदा सुखकार॥ ७॥ लंछन सुत्र श्रीवत्सनो। श्रीशीतल जिन चंद। कंचनवरण नेजधनुष। मानसरीर अमंद ॥ ८ ॥ एकलाख पूरब क ह्यो। प्रनुनो आयुप्रमाण। इक्यासी गणधर कह्या। मुनि इकलाख सुजाण ॥ ९ ॥ एकलाख चालीससहस। श्रमणी संख्या उर। सहस तयासी दोय लख। श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्षचौ। श्रावकणी सु विचार। देवी असोका ब्रह्मयक्ष। सहु संघ सानिधकार ॥ ११ ॥ सिखरस मेत सहस्रएक। साधूनें परिवार। मुक्तिगए प्रनुमासकी। संलेखन करसार ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ धन २ संप्रतिसाचौ राजा एहनी ॥ ❀ ॥ सिंहपुरी नगरी तिहांराजा। विष्णुनरेसर तातजी। कंचनवरण श्रेयांस प्रनूजी। उप- ज्या विष्णु सुमातजी॥ १॥ नमोरे २ श्री त्रिनुवन राजा। खडग लंछन प्रनु पायजी। धनुष असी देहमांन चौरासी। लाख वरसनो आयुजी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहसचौरासी। मुनि श्रमणी तीन लक्षजी। तीन सहस बलि सहस गुणयासी। श्रावक पुण दोय लक्खजी॥ ३॥नमो०॥ अडतालीस सहस बलि चौलख। श्राविका जाणो सारजी। जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो। श्रीसंघ सानिध कारजी॥ ४॥ न०॥ सहस मुनीसरनें परिवारै। प्रनुजी सिखर समेतजी। मास संलेखन कर प्रनुपुहता। मुक्तिम हिल सुखहेतजी॥ ५ ॥ न०॥ हिव कंपिलपुर तातनूपति। श्रीकृतवर्मसुमा तजी। स्यामादेवी अंगजजपना। विमलनाथजगतातजी॥६॥न०॥ सूकरलं उन सोवनकाया। साठधनुष देहीमांनजी। साठलाख बर्षरनो आयु। शिष्य स तावन जानजी॥७॥ न०॥ साठसाहस मुनि अम्हसय इकलख। श्रमणी श्रावक

जांणजी। आठसहस दोयलक्ष श्राविका। चौलक्षसंख्या आंणजी॥ ८॥ न०॥ षणमुख सुरवर विदितादेवी। प्रभुजी सिखरसमेतजी। षटहजार साधुपरिवारै। मुक्तिगए सुखहेतजी॥९॥न०॥नगरी नाम अजोध्या नरवर। सिंहसेन जगसार जी। सुजसामात तिणें सुतजायो। प्रभुजी अनंतकुमारजी॥ १० न०॥ लंछन श्येन सोवनसमकाया। धनुषपचास प्रमांणजी। तीसलाख वछरनोआयु। गण धर पचवीस आंणजी॥ ११॥ न०॥ छासठसहसमुनीसरसोहै। वासठश्रमणीह जारजी। छहजार लाख दोय श्रावक। श्रावकणी इमधारजी॥ १२॥ न०॥ च्यारलाख वलि चवदहजारए। अंकुसादेवी होयजी। पाताल्यक्ष श्रीसंघकै सानिध। कारी नितप्रति जोयजी॥ १३ न०॥ आठसैमुनिवरलें परिवारै। शि खरसमेत प्रधानजी। माससंलेखन करगिरऊपर। पुहतापद निरवांणजी॥ १४ न०॥ ❀॥ दुहा॥ ❀॥ ऐसें धर्मजिणेसरू। पुहता पदनिर्वाण। शिखर समेत गिरंदपर। नमो २ जगभांण १॥❀॥ जगतगुरु त्रिशलानंदनजी एचा ल॥ ❀॥ रत्नपुरी नगरीधणीजी। भानुराय सुजांण। राणीसुव्रता मातनेंजी। धर्मनाथ गुणखांण॥ १॥ जगतपति धर्मजिनेसरसार॥ धनुषपेंतालीस तनुक ह्योजी। वज्रलंछन सुखकार॥ २ ज०॥ चोतीसगणधर मुनिकह्याजी। चौ सठसहस प्रमांण। श्रमणी वासठ सहस स्युंजी। श्रावक दोयलक्षमान॥३॥ ज०॥ च्यारसहस वलि ऊपरांजी। चौलाख एक हजार। श्रावकणी सं ख्याकहीजी। दसलक्ष आयुविचार॥ ४ ज०॥ किंनरसुर यक्षासुरीजी। एकसहस परिवार। समेत शिखर मुगतैंगयाजी। वांदू वारहजार॥ ५॥ ज० हथणापुर विश्वसेननाजी। अचिरामात उदार। शांतिजिनेसर जनमियाजी। त्रिभुवन जय २ कार॥ ६॥ (जगतपति शांति जिनेसरसार)॥ मृगलांछन सोवनसमोजी। देही धनुषचालीस। आयुवरषइकलाखनोजी। छत्तीस गणधर सीस॥ ७॥ ज०॥ वासठसहस मुनि छसैजी। इगसठ श्रमणी हजार। दो यलाख श्रावककह्या जी। ऊपरनेऊ हजार॥ ८॥ ज०॥ सहसत्रयांणूं श्रा विका जी। तीनलाख परिवार। गरुडयक्ष देवीसुरी जी। श्रीसंघ सानिधकार॥ ९॥ज०॥ नवसै मुनि परिवारस्युंजी। आया शिखर समेत। मासखमणकर मुक्तिसैं जी। पुहता निजपदहेत॥ १०॥ ज०॥ ऐसें हथिणा पुर भलोजी

राजासूर सुतात । कुंथुनाथ जिन जनमीयाजी । कंचनतनु श्रीमात ॥ ११ ॥ (जगतपति कुंथुजिनेसर सार) ॥ छागलंछन पेंताळीसनोजी । धनुषदेहनो मान । सहस पंचाणवे वरषनोजी । आयु प्रभुनोजान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पेंती सगणधर दीपताजी । साठसहस मुनि जान । छसै साठसहस वळीजी । श्रमणी संख्यामान ॥ १३ ॥ ज० ॥ सहस गुणियासी लहूनीजी । श्रावक संख्या होय । सहस इक्यासी तीन लाखनी जी । श्राविका संख्याजोय ॥ १४ ॥ ज० ॥ सातसै साधू परवर्याजी । देवीबला गंधर्व । कुंथुनाथ मुगतैं गयाजी । माससंलेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ ❀ ॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो । कहस्युं अत्र अधिकार । श्रोता सुणज्यो प्रेमधर । थास्यैलाभअपार ॥ १ ॥ (देसीविढियानी) अरेलाला श्रीजिनकुशल सूरी सरू ए चा० ॥ ॥ अरेलाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू । जिहां नगरी अयोध्या चंदरेलाला । तात सुदर्शन मातजी । नंदादेवी ना नंदरे लाला ॥ २ ॥ श्री अ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो । वीसधनुष देहीनो मानरे लाला । कंचनवरण सुहामणो । आयु सहस चोरासी प्रमाणरे लाला ॥ ३ ॥ श्री० ॥ इकलाख श्रावक ऊपरै । वळी संख्या अधिकी जाणरे लाला । सहसबहुत्तर तीननी । लहू श्राविका संख्या आणरे लाला ॥ ४ ॥ श्री० ॥ देवदेवी सानिधकरे । इकसहस मुनि परिवाररे लाला । मुक्ति गए इणगिरि प्रभु । कर माससंलेखन साररे लाला ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मिथिलानगरी प्रभावती । मात पिता श्री कुंभ रायरे लाला । लंछनकलस पचीसनो । वपु धनुष सोवनसम कायरे लाला ॥ ६ (श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू) ॥ सहस पचावन वर्षनी । थित गणधरअठावीसरे लाला । भविककमल प्रतिबोधता । जगनायक श्रीजगदीसरे लाला ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ चाळीस सहस मुनीसरू । श्रमणी पचावनसहसरे लाला । सहस त्रयासी लहूनी । श्रावकनी संख्या साररे लाला ॥ ८ ॥ श्रीम० ॥ श्राविका सित्तरसहसनी । लहूतीन संख्या सुविचाररे लाला । सहस मुनी परिवारसुं । गए मुक्ति संलेखण धाररे लाला ॥ श्रीम० ॥ राजग्रही राजा पिता । सुग्रीव पद्मावती मातरे लाला । श्यामवरण तनु शोभतो । जे कपिल लंछन विख्यातरे लाला ॥ ९ (श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी) ॥ धनुष

वीस देही तणो । आयुवद्दर तीसहजारेरे लाला । अष्टादश गणधर थया । तीससहस मुनीसर सारेरे लाला ॥ १० ॥ श्रीमु० ॥ श्रमणी सहस पचीसनी । संख्यावहुत्तर हजारेरे लाला । इक लक्ष ऊपरि श्राविका । तीन लक्ष प चास हजारेरे लाला ॥ ११ ॥ श्री मुनि० ॥ वरुणयक्ष देवी भली । नर दत्ता सानिधकारेरे लाला । सहस मुनि परिवारसें । गए मुक्ति महल सुख सारेरे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयपिता विप्रामातजी । सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंछन कह्यो । वपु धनुख पनर आयु साथरे लाला ॥ १३ ॥ (श्रीनमिनाथ जिनेसरू) ॥ दसहजार वरस तणो । गणधर सित्तर परमाणेरे लाला । वीस इकतालीस सहस किम । साधु साधवी संख्या जाणेरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि० ॥ इकलख सित्तर सहस नी । तीनलक्ष सहस वलि होयरे लाला । श्रावक संख्या श्राविका । अ नुक्रमकरि संख्या जोय रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता भूमंडलै । आया सिखर समेत मझार रे लाला । भ्रकुटी यक्ष गंधारी सुरी । इक स हस मुनि परिवारेरे लाला ॥ १६ ॥ श्री० दुहा ॥ ❀ ॥ परमेसर श्री पास नी । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरोमणि सहसफण । जगजी वन जगतात ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ आदरजीव क्षमागुण आदर एहनी ॥ ॥ ❀ ॥ जय जय परमपुरुष पुरषोत्तम । पारस पारस नाथ जी । सांवरिया साहिव जग नायक । नाम अनेक विख्यात जी ॥ २ ॥ जय २ सिखर समेत सिरोमणि । श्रीसांवरिया पास जी । ध्यावै सेवें जेनरतेहनी । पूरै वंछित आसजी ॥ २ ॥ जय० २ ॥ कासीदेस वणारसि नगरी । श्रीअश्वसेन नरिंद जी । वामा माता जग विख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥ ॥ ३ ॥ जय० २ ॥ पन्नग लंछन नीलवरण छवि । देही शुभ नवहाथ जी । आयू एक सो वरस प्रमाणें । गणधर दस प्रभु साथजी ॥ ४ ॥ जय० २ ॥ सोल सहस मुनिवर अरुश्रमणी । कही अडतीस हजार जी । भूमंडल विचरै भविजनकुं । वोधवीज दातारजी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ स हस लाख इक श्रावक । गुणचालीस हजार जी । तीन लाख श्रावकणी संख्या । पार्श्व यक्ष सुर सारजी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगतै पुह

ता। महिमा थइयअपार जी। तिणए तीरथ प्रगट्यो जगमें । मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ जय० २ ॥ ग्रहरी पालै जेनर न्नावै । न्नेटै सिखर गिरिंद जी। ते नर मनबंछित फल पामें। ए सुरतरुनो कंदजी ॥ ८ ॥ जय०२॥ बहुबिध संघ तणी करै न्नक्ति । संघपति नांम धराय जी । सफल करै संपद निज पामी। जेहनो सुजस सवाय जी ॥ १० ॥ जय० ॥ परन्नव सुरनर संपद पामें। जात्रा करै गहगाटजी। साधर्मी बछल मुनि न्नक्ती। पूजा न्नछव थाट जी ॥ ११ ॥ जय० ॥ टुंक टुंक पर चरण प्रन्नूना। पूजो न्नविजन न्नाव जी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें। आनंद अधिक न्नछाव जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखर गिरिनो। सुणतां न वनिधि थाय जी। तिणए न्नविजन न्नाव धरीनें। सुण ज्यो मनथिर लाय जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमा धारी । कीरति जग विख्यात जी। जय श्रीजिन सौन्नाग्य सूरीसर। अमृतबचन सुगात जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ तासुपसायै रासरच्यो ए। अमृत समुद्रनें सीस जी। बालचंद्र निज मति अनुसारै। सोधो विबुध जगीस जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ संवत न्नगणीसै सित मोत्तरे। सुदि बैशाष सुढाल जी। रास अजीमगंज मांहि कीनो। न्नण तां मंगल माल जी ॥ १६ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री सिखरजीको रास संपूर्णम् ॥ २०१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गोतम रास लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बीरजिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो। पणमवि पन्नणिसु सामि साल गोयम गुरु रासो । मण तणु वयणे कंत करवि निसुणहु नो न्नविया। जिम निवसै तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिर न्नरह खित्त खोणी तल मंरुण। मगहदेस सेणियनरेस रिउदल बल खंरुण। धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा। विप्पवसै वसु नुइ तत्थ तसु पुहवी न्नज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरि इंदन्नूय न्नूवलय पसिद्धो । चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर। सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंन्नावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि पंकज्जलपाम्मिय । तेजहि तारा चंद सूरि आकास न्नमाम्मि

य। रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाम्यि। धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाम्यि॥ ४॥ पेखवि निरुवम रूव जास जणजंपै किंचिय एकाकी किल त्रित्त इत्थ गुण मेल्या संचिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय। रंभा पउमा गवरि गंग रतिहा विधि वंचिय॥ ५॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो। पंचसयां गुण पात्र गात्र हीमेंपर वरियो। करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय। अण चल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय॥ ६॥ (वस्तु)॥ ❀॥ जंबूदी व जंबूदीव भरह वासंमि। खोणीतल मंडण। मगह देस सेणिय नरेसर। वरगुव्वर गाम तिहां। विप्प वसै वसभूइ। सुंदर तसु पुहवि भज्जा। स यल गुण गण रूव निहांण। ताणपुत्त विज्जानिलो। गौयम अतिहि सुजाण॥ ७॥ (भास)॥ चरम जिणेसर केवलनांणी। चोविहसंघ पइठा जाणी। पावापुर सामी संपत्तो। चउविह देव निकायहिं जुत्तो॥ ८॥ देवहि समवस रण तिहांकीजै। जिणदीठै मिथ्या मत छीजै। त्रिभुवन गुरु सिंहासन बैठा। ततखिण मोह दिगंतपइठा॥ ९॥ क्रोध मान माया मदपूरा। जायै नाठा जिम दिन चोरा। देवदुंदुभी आगासे वाजी। धरमनरेसर आव्यो गाजी॥ १०॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा। चउसठ इंद्रज मांगेसेवा। चामरछ त्र सिरोवरि सोहै। रूवहि जिणवर जगसहु मोहै॥ ११॥ उपसम रसभर वर वर संता। जोजनवाणि वखाण करंता। जांणवि वर्द्धमान जिण पाया। सुर नर किन्नर आवइराया॥ १२॥ कंत समोहिय जलहल कंता। गयण विमाणहि रण रण कंता। पेखवि इंद भूइ मनचिंते। सुरआवे अम जज्ञ हुवंते॥ १३॥ तीर तरंडक जिमते वहिता। समवसरण पुहता गह गहिता। तो अभिमानें गोयमजंपै। इण अवसर कोपै तणुकंपै॥ १४॥ मूढा लोक अजाणयुं बोलै। सुर जाणंता इम कांइ मोलै। मो आगल कोइ जाण भणीजै। मेरु अवर किम ओपम दीजै॥ १५॥ (वस्तु) वीर जिणवर वीरजिणवर नांण संपन्न पावापुर सुरमहिय। पत्तनाह संसारता रण। तिहिं देवइ निम्महिय। समवसरण बहु सुक्ख कारण। जिणवर जग उज्जोयकरे। तेजहिकर दिनकार। सिंहासण सांमी ठव्यो। हुउ तो

जय जय कार ॥ १६ ॥ (ज्ञास) तोचढियो घणमाण गजै । इंद ज्रूइ ज्रूय देवतो ॥ हुंकारो करसंचरिय । कवणसु जिणवर देवतो ॥ जोजन ज्रूमि समो सरण । पेखवि प्रथमारंज्रतो ॥ दहदिस देखै विबुध वधू । आवंती सुररं ज्रतो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंम ध्वज । कोसीसै नवघाटतो ॥ वय रविवर्जित जंतुगण । प्रातीहारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर । इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्त चमकिय चिंतवए । सेवंतां प्रनुपायतो ॥ १८ ॥ सहस किरण सांमी वीरजिण । पेषवि रूप विसालतो ॥ एहअचंज्रव संज्रव ए । साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु । इंद्रज्रूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे । फेडै वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मदठेल करे । ज्रगतहिं नाम्यो सीसतो ॥ पंचसयांसुं ब्रत लियो ए । गो यम पहिलो सीसतो ॥ बंधव संजम सुणवि करे । अगनज्रूइ आवेयतो ॥ नाम लेई आज्रास करे । ते पिण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण । थाप्पा वीर इग्यारतो ॥ तो उपदेशै जुवन गुरू । संयम सुं व्रतवार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए । आपणपै विहरंत तो ॥ गो यम संयम जगसयल । जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ (वस्तु) ॥ ❀ ॥ इंद्र ज्रूइ २ चढियो बहुमान । हुंकारो करि कंप तो । सम वसरण पहुतो तुरंततो ॥ जेहसंसा सामिसवे । चरमनाह फेडै फुरंततो ॥ बोधबीजसंजाय मने । गोयम ज्रवहि विरत्त ॥ दिक्खलेई सिख्यासही । गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ (ज्रास) ॥ ❀ ॥ आज हुओ सुविहाण । आज पचेलम पुण्यज्रारो । दीठा गोयमसामि । जो निय नयणे अमियझरो ॥ समवसरण मझार । जे जे संसा ऊपजै ए । ते ते पर उपगार । कारण पूछै मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजै दीख । तीहां केवल ऊपजै ए । आपकनें अणहुंत । गोयम दीजै दान इम । गुरु ऊपर गुरु ज्रक्ति । सामी गोयम उप न्निय । अणचल केवल नाण । रागज राखै रंगज्रारे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सैल । वंदै चढ चउवीस जिण । आतम लबधि वसेण । चरम सरीरी सो जमुनि । इय देसणा निसुणेह । गोयम गणहर संचरिय । तापस पनरसए ण । जो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग । अहां स

गतिन ऊपजेए । किमचढस्यै दृढकाय । गज जिम दीसै गाजतोए । गिरु ओ ए अभिमान । तापस जो मन चिंतवै ए । तो मुनि चढियो वेग । आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न । दंम कलस ध्वज बम सहिय । पेषवि परमाणंद । जिणहर भरतेसर महिय । निय २ काय प्रमाण । चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब । पण मवि मन उल्लास । गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव । तिर्यक जृंभक देवतिहां । प्रतिबोध्या पुंमरीक । कंडरीक अध्ययनभणी । बलता गोयमसाम सवि तापस प्रतिबोध करे । लेई आपण साथ । चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीरखांम घृत आण । अमिय बूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र । करावै पारणो सवे । पंचसयां सुभभाव । उज्जल भरियो खीर मिसे साचा गुरु संयोग । कवलत केवल रूप हुय ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह । समवसरण प्राकारत्रय । पेषवि केवल नाण । उप्पन्नो उद्योयकरे । जाणें जण विपीयूष । गाजंती घनमेघजिम । जिणवांणी निसुणेवि । नाणीहुआ पंचस यां ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाणसंपन्न । पनरैसै परिवरिय । हरिय डुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जगगुरु वयण । तिहिंनाण अप्पाण निंदइ । चरमजिनेसर इमभणे । गोयम मकरिस खेव । देहजाय आपणसही । हो स्यां तुल्लाबेव ॥ ३१ ॥ (भास) ॥ ❀ ॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासंमि । वरसबहुत्तर संवसिय । ठवतो ए कणय पनमेण । पायकमल संघै सहिय । आवियो ए नयणा णंद । नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेषियोए गोयम सामि । देवसमा प्रतिबोधकरे आपणोए त्रिसलादेवि । नंदन पुहतो परमपए । वलतोए देव आकास । पेषवि जाएयो जिणसमेंए । तो मुनिए मनविषवाद । नादभेद जिमऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इणसमें ए सामियदेख । आपकनासूं टालियो ए । जाणतोए तिहुअणनाह । लोक विवहारन पालियो ए । अतिभलोए कीधलो सामि । जाएयो केवल मांगस्यैए । चिंतव्योए बालक जेम । अहवा केरु लाग स्यैए ॥ ३४ ॥ हूं किमए वीरजिणंद । भगतहिं बोलै बोलव्योए । आ पणोए उंचलो नेह । नाह नसंपै साचव्योए । साचोए एवीतराग । नेह

न हेजै लालियो ए। तिणसमेंए गोयमचित्त। राग वैरागे वालियोए॥ ३५॥ आवतो ए जो उल्लट। रहितो रागें साहियो ए। केवलए नाण उपन्न। गोयम सहिज उमाहियो ए। तिहुअणए जय जय कार। केवल महिमा सुर करै ए। गण धरए करय वखांण। भविया भवजिम निस्तरै ए॥ ३६॥ (वस्तु)॥ पढम गणहर २ वरषपचास। गिहवासै संवसिय। तीसवरस संजम विभूसिय। सिरिकेवल नाणपुण। बारवरस तिहुअण नमंसिय। राजग्रही नयरी उव्यो। वाणवइ वरसाउ। सामी गोयम गुण निलो। होस्यै सिवपुर ठाउ॥३७॥ (भास)॥ ❀॥ जिमसहकारै कोयलटहुकै। जिम कुसमावन परमल महकै। जिमचंदन सोगंधनिधि। जिम गंगाजल लहिरयां लहकै। जिमकणया चल तेजें झलकै। तिम गोयम सोभाग निधि॥ ३८॥ जिम मानसरोवर निवसै हंसा। जिम सुरतरुवर कणय वतंसा। जिम महुयरा जीव वने॥ जिम रयणायर रयणे विलसै। जिम अंबर तारा गण विकसै। तिम गोयम गुरु केलघने॥ ३९॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहै। सुरतरु महिमा जिम जगमोहै। पूरब दिसि जिम सहस करो। पंचानन जिम गिरवर राजे। नरवइ घर जिम मेंगलगाजै॥ तिम जिन सासन मुनि पवरो॥ ४०॥ जिम गुरु तरुवर सोहै साखा। जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा। जिम वन केतकि मह महै ए। जिम भूमीपति भुयबल चमकै। जिम जिनमंदिर घंटारणकै। गोयम लबधै गहगह्योए॥ ४१॥ चिंताम णि करचढीयो आज। सुरतरु सारै वंछिय काज। कामकुंभ सहु वसिहु आए। कामगवी पूरै मनकामी। अष्ट महासिधि आवै धामी। सामी गो यम अणुसरोए॥ ४२॥ पणवकूर पहिलो पभणीजै। मायावीजो श्रवण सुणीजै। श्रीमति सोभा संभवो ए। देवां धुर अरिहंत नमीजै। विनय पहु उवझायथुणीजै। इण मंत्रै गोयम नमो ए॥ ४३॥ परघर वसतां कांय करीजै। देस देसांतर कांय भमी जै। कवण काज आयास करो। महछठी गोयम समरीजे। काज समग्गल ततखिण सीझे। नवनिधिविलसे तिहां घरे॥ ४४॥ चवदय सय वारोत्तर वरसै। गोयम गणहर केवल दि वसै। कीयो कवत्त उपगारपरो। आदहि मंगल ए पभणीजै। परवमहोछव

पहिलो दीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धनमाता जिण जयरै धारियो । धन्य पिता जिण कुल अवतारियो । धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए । विनयवंत विद्याभंडार । तसुगुण मुहवि नलभ्भइ पार । वरुजिम साखा विस्तरो ए । गोयम स्वामिनो रास भणीजै । चउविहसंघ रलियायत कीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडो दिरावो । माणक मोतियां चोक पूरावो । रयण सिंघासण वैसणो ए । तिहां बैठी गुरु देसना देसी । भविक जीवना काज सरेसी । नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति गोतमरास संपूर्णम् ॥ इति षट् रासः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रभाती जेकरै । प्रहउगमते सूर । भूखा भोजन संपजै । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसै । लाब्धितणा भंडार । जे गुरु गोतम समरियै । मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंडरीक गोयम सुहा । गणधर गुण संपन्न । प्रहउठीनें प्रणमतां । चवदैसै बावन्न ॥ ३ ॥ खंति खमं गुणकलियं । सुविणियं सव्वलब्धि संपणं । वीरस्स पढमसीसं । गोयमसामी नमंसामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय । सर्वाभीष्टार्थदायने । सर्वलब्धि निधानाय । गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच विदेह विषै विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता । चरणकमल तसु नामुं सीस । अहनिसि समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंचमेरु पासै ऊलकंता । सोहै वीस महा गजदंता । तिण ऊपरि छै जिणवर वीस । ते जिणवर पणमुं निसि दीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय दुवालसअंग । थानकवीस भणेया तिहां चंग । तिणऊपरि जे आणै रंग । तेनर पामैं सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिणसासण देवी चउवीस । पूरै मुऊमन तणीजगीस । संघतणा जेविघन निवारै । तिहु अण जन मन वंछित सारै ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ इति वीसविहरमाणस्तुतिः ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सम दमोत्तम वस्तु महापणं । सकल केवल निर्मल सदगुणं । नगर जेसलमेर विभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुर नरेश्वर

नम्र पदांबुजाः । स्मर महीरुह जंग मतं गजाः । सकल तीर्थकराः सुख कारका । इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिन शासनं । विपुल मंगलकेलि विभासनं । प्रबल पुण्य रमोदय धारिका । फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकट संकट कोटि विनासिनी । जिनमताश्रित सौख्य विकासिनी । नर नरेश्वर किंनर सेविता । जयतु सा जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वर मुत्तियहार सुतारगणं । परचित्त कलत्त सुपत्तधणं । पयपंकय जुप्पय देवगणं । श्रीअव्वुय वंदूं आदिजिणं ॥१॥ तियलोय नमंसिय पायजुआ । घणमोह महीरुह मुत्तिगया । परिपालिअ निच्चल जीवदया । ममहुंतु जिणागम सुक्खसया ॥२ ॥ पणयंगि महातम रोरहरं । कल्लाण पयोरुह वुड्ढिकरं । सुहमग्ग कुमग्ग पयासकरं । पणमामि जिणागम मन्हि करं ॥ ३ ॥ सिरिइंद समुज्जल गायलया । सुहझाण विणम्मिय एगलया । असुरिंद सुरेंद सुरप्पणया । ममवाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥४॥❀॥ इति श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥४॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीवीरजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यदंघ्रि नमना देव । देहिनः संति सुस्थिताः । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपति नत चरण युगान् । नाभेयजि नादि जिनपती न्नौमि । यद्वचन पालनपरा । जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणा अतो जिनाः । सदर्थतो यद्वचयंति सूत्रतः । गणा धिपा स्तीर्थ समर्थन क्षणे । तदंगिना मस्तु मतं नु मुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरा सुरवरै स्सहदेवताभिः । सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्द्ध मान जिनदत्त मतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तुतिः अणोऊारी ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीअजितजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विश्वनायक जायक जितशत्रु विजयानंद । पयजुग नितप्रणमै देव अनेदेविंद । भावलहिरी गहिरी सव मनधरीयै अमंद । श्रीसूरतसहिरै वंदो अजितजिणंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिसय वलि चौतीस ।

दिलरंजण देसन तेहना गुण पेंतीस । अगणित रिधधारी आचारीमां ईस । एहगुणना धारक वांदुं जिनचौवीस ॥ २ ॥ सुध अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धांत । स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्त नविभ्रांत । पाप कर दम पाणी सदगतिनी साहिनाणी । सुणियै नितभविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी साचीदेवी सानिधकारी । दुख कष्ट निवारण सेवीजै सुखकारी । साचै मनसमरै ते सुख लाभ अपारी । जिनलाभ पर्यंपै हो ज्यो जय जय कारी ॥ ❀ ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दृढरथ नृपराणी नंदा केरोनंद । भद्दलपुर सामी फेरै भवनाफंद । चित्तचोखै नामियै श्रीशीतल जिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रतिका लै जेहक्षेत्रविदेह विचरंत । त्रिहुं भवणे ठवणा सासय असासय संत । ते सगला त्रिकरण प्रणसुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अ नंगपविठ । नय भंग निक्खेपा स्यादवाद मित सिठ । भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासै कोग्निकलेस ॥ ३ ॥ ब्रह्म जक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकि तधार । चिंता दुखचूरै पूरय मनहजगीस । ध्यान तेहनो धरीयै कहै जिनलाभ सूरीस ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ समवसरण भावगर्भित स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मिल चौविहसुरवर विरचै त्रिगडो सार । अढी गाऊ उंचो पिहुलो जोयण बार । विच कनक सिंहासण पदमासन सुखकार । श्री तीरथनायक वैसै चौमुखधार ॥ १ ॥ तीनछत्र शिरोवरि चामर ढालै इंद देव दुंदुभि वाजै भांजै कुमतीफंद । भामंडलपूठै झलके जाण दिणंद । ति हुअण जन मन मोहै सयलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य भावसु ठवणा नाम नि क्खेपाच्यार । जिण गणहर भाष्या सूत्रसिद्धांत मझार । जिनवरनी पडिमा जि नसारिषी सुखकार । सुभभावै वंदो पूजो जग जय कार ॥ ३ ॥ दुःखहर णी मंगलकरणी जिनवरवाणी । भवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी । म

नसुद्दे आणी प्रतिबूझो नविप्राणी । सुयदेविपसायें पामें जयति सुनांणी ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसमवसरण नावगर्भितस्तुतिः ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनेमिजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुर असुर बंदिय पायपंकज मयणमल्ल अद्दोन्नितं । घन सुघन स्याम सरीर सुंदर शंख लंछन सोन्नितं । सिवा देवि नंदन त्रिजग वंदन नविक कमल दिनेश्वरं । गिरनार गिरिवर सिखर वंदुं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदि जिनवर वीर जिनपावापुरे । वासुपूज्य चंपापुरियसीधा नेमि रेवय गिरिवरे । सम्मेत सिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू । चनवीस जिनवर तेहवंदुं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग नपांगबारै दसपयन्ना जाणियें । छेद ग्रंन्थ प्रसत्थ अत्था च्यार मूल वखाणियें । अनुयोग द्वार नदार नंदी सूत्र जिनमत गाइयै । इह वृत्ति चूरणि नाष्य पेंतालीस आगम ध्याइयै ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहनें सदानवियण सुखकरू । दुखहरै अंबा लुंब सुंदर दुरिय दोहग अप हरू । गिरनार मंरुण नेमि जिनवर चरण पंकज सेवियें । श्रीसंघ सहुनें सदामंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

इति गिरनार मंरुण श्रीनेमि जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीदेवार्यं । विश्वेवर्यं । पूर्णानंदं । नक्त्यावंदे ॥ १ ॥ तीर्थाधीशाः । शुन्नादेशाः । सर्वेनीष्टं । शं कुर्वं तु ॥ २ ॥ अर्हद्भ्राचो । वाचो युक्त्या । कृष्णाः सद्भिः । पापं ध्वंतु ॥ ३ ॥ शांता कांता । सिद्धा देवी । शांत्यै दांत्यै । शश्वद्भूयात् ॥ ४ ॥ इति श्रीवीर प्रनु स्तुतिः ॥ १० ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिनुवन जन नायक दायक वंछित दान । नवि कमल विकासन सासन सूर समान । प्रणमुं बहुनावे नंदाराणी नंद । श्रीसूरत सहिरै शीतलनाथ जिणंद ॥ १ ॥ नज्जल गुण धारी अविकारी अरिहंत । नविजन हितकारी महिमावंत महंत । नपगारी अविचल जयकारी जगदीस । नित निरमल चित्तें वंदो जिन चौवीस ॥ २ ॥ जिहां नैगम संग्रह आदिकनय सुविचार । स्यादस्ति प्रमुख वलि सप्तनंगि विस्तार । पेंतीस

गुणेंकरी सोभे अति सुविसाल । तेकंठे ठविये जिनवाणी वरमाल ॥ ३ ॥ कमलासन सोहै नील वरण तनुकांत । निज च्यार भुजे करि राजै अतिसय वंत । श्रीदेवी अशोका सोक हरण सुखकंद । इम भक्ते पन्न णे श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीसं देवेंद्रं । काम्याकारं लीलागारं साध्वाचारं श्रीतारं । ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्त्तिस्फारं श्रीकारं । गीर्वाणै र्वन्द्यं सानंदं भक्त्या वन्दे श्रीपार्श्वं ॥ १ ॥ जागृद्द्वीपे जंबूद्वीपे स्वर्ण शैले श्रीशैले । चंचच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुगत्वाढ्ये वैताढ्ये । श्रेयस्कारे वह्नस्कारे देवावासे सोल्लासे । येवर्त्तन्ते सर्वाधीशा स्तेसौख्यं वो देयासुः ॥ २ ॥ स म्यग् ज्ञानं शुद्धध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं । त्रैलोक्य श्रीरामारम्यं विद्रद्भम्यं प्राकाम्यं । अर्हद्भक्तां भोजोद्भूतं शश्वत्पूतं संगीतं । लक्ष्मीकांतं वर्णो पेतं वंदेव्यक्तं सिद्धांतं ॥ ३ ॥ भव्यानां भक्त्यानां कल्याणं कुर्वंती बिभ्रा णा । शीर्षे सोम्मीरं कोटीरं तारं हारं बह्वोजे । विख्याता भोगेंद्रोपेता सा लंकारा प्रल्हादं । यद्भंती पद्मादेवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैदुष्यं ॥ ४ ॥ ❀ ॥
इति श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीदीपमाला स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ पापायां पुरि चारु षष्टतपसा पर्यंकपर्यासनः । क्ष्मापाल प्रभु हस्तपाल विपुल श्रीशुल्कशालामनु । गोसे कार्त्तिक दर्श नागकरणे तूर्यारि कांते शुने । स्वातौ यः । शिवमाप पाप रहितं संस्तौमि वीर प्रभु ॥ १ ॥ यन्नि र्भागमनोद्भव व्रतवर ज्ञानाद्भराप्ति क्षणे । संभूयाशु सुपर्व संततिरहो चक्रे महं स्तत् क्षणात् । श्रीमन्नाभिजवादि वीरचरमा स्ते श्री जिनाधीश्वराः । संघाया नघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसिच ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिधः । तत्पश्चा द्गणनायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः । श्रीमत्तीर्थ समर्थनेक समये सम्यग् दृशां भूस्पृशां । भूयाद्भावुक कारकं प्रवचनं चेतश्चमत्कारियत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थ भावनपराः सिद्धायि का देवता । चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता पायादपायादसौ । अर्हन् श्रीजि

नचंद्रगी स्सुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो । याचके वम कष्टहस्ति निधने सार्द्दूलविक्रीम्तिं ॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धारथ ताता जगत विख्याता त्रिसलादेवी माय । तिहां ज गगुरु जनम्या सब दुखविरम्या महावीरजिनराय । प्रनुलेई दिक्षा कर हित शिख्या देईसंबछरीदान । बहु करमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुज्ञध्यान ॥ १ ॥ वर केवलपामी अंतरजामी वदिकाती शुज्ञदीस । अमावसजातें पिछलीरातें मुगतिगया जगदीस । वलि गौतम गणधर मोटासुनिवर पाम्या पंचमज्ञान । थयातत्वप्रकासी शीलविलासी पहुतामुगति निदान ॥ २ ॥ सुरपति संचरिया रतनज्ञधरिया रातथई तिहां काली । जन दीवा कीधा कार जसीधा निसाथई ज्ञजवाली । सहुलोकै हरखी निजरेनिरखी परबकियो दी वाली । वलि ज्ञोजन ज्ञगतें निज निज सगतें जीमें सेवसुहाली ॥ ३ ॥ सिद्धायिकादेवी विघनहरेवी वंछित दै निरधारी । करै संघनेसाता जिमजग माता एहवी शकति अपारी । जिणगुण इमगावै शिवसुखपावै सुणज्यो ज्ञविजनप्राणी । जिनचंदजतीसर महासुनीसर जंपै एहवी वाणी ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री दीपमालिका स्तुति ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

~ ॥ ❀ ॥ अथ मोटा गोटा स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनमोहन महाराज । तीन जुवन सिरताज ॥ आछे लाल ॥नगर ब्रहान पुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिणंद प्रधान । निरमल सुगुण निधान॥ आछे लाल ॥ वामा सुत वम्हि ज्ञागीया जी ॥ २ ॥ सेवक नीसंज्ञाल । करीय खरी ततकाल ॥ आछे लाल ॥ संकट सहु प्रनु परि हरयाजी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर । प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछे लाल ॥ वाट विषमता पिणटली जी ॥४॥ प्रनुजीने परसाद । वीता सहु विखवाद ॥ आछे लाल । मन बंछित सुख सहु फट्याजी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप । मिलीयाछो प्रनु आप ॥ आछे लाल ॥ देज्यो दरसण वलि सदाजी ॥ ६ ॥ अमृत धर्म सुजाण । सीस क्षमा कट्याण ॥ आछे लाल ॥ वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमन मोहन पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्व जिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय २ श्रीजिन राज । जग जन अन्तर जामी । तारण तरण जिहाज । परमातम परिणामी ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेस । परमानंद प्र धान । परम प्रकास विसेस । निरमल ज्ञान निधान ॥ २ ॥ जगपति पा स जिणंद । प्रभु तुझ हो उप गारी । सुनियै सेवक जान । अैसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद चूलि । में बहुकाल गमायो । निजपर भा व विवेक । सुद्ध सुभाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन भाव । कर्म कलं कित कीनो । ताकारण गुण छोडि । पर औगुण चित दीनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान । दिलमें रोस भरावं । अवता निज गुणगान । सुनिवैकुं ऊमाहूं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुद्ध । दिलसें दूर नजावै । कुम ति कदाग्रह जोग । समता सुद्ध न आवै ॥ ७ ॥ अब कछु पुण्य संयोग । प्रभु तुझ मुद्रा देखी । सुद्ध अध्यातम लीन । भाव असुद्ध उवेखी ॥ ८ ॥ निरखि २ प्रभुबिंब । मनमें आनंदपाऊं । गाऊं तुझगुणग्राम । देव अवर नविचाहुं ॥ ९ ॥ करुणाकरि प्रभुमुझ । आतम निरमल कीजै । सुद्धदसा प्रगटाय । मोह विकलता छीजै ॥ १० ॥ भव२ निजपद सेव । प्रभु सेवककुं दीजै । श्री जिन भक्ति पसाय । सुमति विलाश वरीजै ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भविका श्रीजिनबिब छुहारो ॥ आतम परम आधारोरे । (भ विकाश्रीजि०) जिनप्रतिमा जिनसारषी जाणो । नकरो संकाकाई । आ गमवाणीनें अनुसारै । राखो प्रीत सवाईरे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिं ब स्वरूप न जाणें । तेकहिये किम जाणें । भूला तेह अज्ञानें भरिया । न ही तिहां तत्वपिछाणोरे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा । रावण प्रमुख अनेक । विविध परै जिन भगति करंता । पाम्या धरम वि वेकरे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते जोतां । होय नि श्चय उपगार । परमारथ गुण प्रगटै पूरण । जोज्यो आद्र कुमाररे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर । छै बहु जलधि मझार । तेदेखी

बहुला मल्लादिक । पाम्या विरत प्रकाररे ॥ ज्ञ० श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगै जिन प्रतिमानो । प्रगटपणें अधिकार । सूरीयाज्ञसुर जिनवर पूज्या । राय पसेणी मझाररे ॥ ज्ञ० श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगै अहिंसादाखी । जिनपूज्यां जिनराज । एहवा आगम अरथमरोमी । करियै केम अकाजरे ॥ ज्ञ० श्री ॥ ७ ॥ समकित धारी सतीय द्रूपदी । जिनपूज्या मनरंगै । जोज्यो एहनो अरथ विचारी । छठै ग्याता अंगैरे ॥ ज्ञ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरै जिम जिनवर पूजा । कीधी चितथिर राखी । द्रव्य ज्ञाव विहुं ज्ञेदे कीनी । जीवा ज्ञिगम ते साखीरे ॥ ज्ञ० श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखै । कोइ संका मति कर ज्यो । जिनप्रतिमा देखी नित नवलो । प्रेम वणो चित धर ज्योरे ॥ ज्ञ० श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रनुपासपसायै । सरधा हो ज्यो सवाई । श्रीजिनलाज्ञ सुगुरु नपदेसै । श्रीजिन चंद्र सवाईरे ॥ ११ ॥ ज्ञ० श्री० ॥ इति श्रीचिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंतरजामी सुण अलवेसर । महिमा त्रिजग तुमारी । सांज्ञल नें आयो तुमतीरे । जन्ममरण दुखवारो ॥ १ ॥ (सेवक अरज करेछेहो राज । अम्हनें शिवसुख आलो) ॥ (आंकणी) सहुकोनां मनवंछित पूरो । चिंता सहुनी चूरो । एह विरुदछे राज तुह्मारो । किम राखो छो दूरो सेव० ॥ २ ॥ सेवकनें विल विलतो देखी । मनमें महिरन धरसो । करुणासागर किम कहवासो । ज्यो नपगार नकरसो ॥ सेव० ॥ ३ ॥ लटपटनो हिव कामनही छे । परतिख दरसण दीजै । धुंवाकै धीछुं नहीसाहिब । पेट पड्यां पतीजै ॥ ४ ॥ श्री संखेसर मंमण साहिब । वीनतमी अवधारो । क हे जिनहर्ष मयाकर मुऊपर । नवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयकारी जिनराज । पुरसादाणीरे । वामासुत वरदाय । निरमलनाणीरे ॥ १ ॥ पांचकमल प्रनुअंग । निरुपम निरख्यारे । तीनकमल मुऊ संग । आतमहरख्यारे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख । चंद लजाणुंरे । गगन

न्मेंनिसदीस। इम मन आणुरे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार। नयण विराजै रे। हृदय कमल सुविलास। थाल ज्युं गाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक। पंकज हार्यो रे। ततखिण निज संवास। जलमें धार्यो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार। श्रीजिन राया रे। साचै पुण्य संयोग। साहिब पायारे ॥ ६ ॥ प्रभु गुण अनुभव नीर। सांग सुरंगै रे। टाल्यो पातिक पंक। आतम संगै रे ॥ ७ ॥ वरस अढार चौतीस। वदि वैशाखै रे। मनु हर पांचम दीस। सहु संघ साखें रे ॥ ९ ॥ नगर महेवा मांहि। पास जुहार्या रे। श्रीजिन चंद मुणिंद। वंछित सार्या रे ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीऋषभजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) पाटो धरजी पाटीयै पधारो ए० ॥ सुणि २ सेत्रुंज गिरस्वामी। जगजीवन अंतरजामी। हुंतो अरजकरुं सिरनामी। कृपानिध वीनती अवधारो ॥ १ ॥ भवसायर पार उतारो। निज सेवक वानवधारो ॥ कृ० ॥ प्रभु मूरति मोहन गारी। निरख्यां हरखे नरनारी। जाउं वारी हुं वार हजारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै। मुऊ ऊपर महिर धरीजै। दिलरंजन दरसण दीजै ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया। भव भवना पातिक टलिया। प्रभु जो मुऊ सैमुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ॥ ४ ॥ समर्यां संकट टलि जायै। नव नव नित मंगल थायै। मुऊ आतम पुण्य भरायै। कृ० ॥ ५ ॥ कर जोमी वीनति कीजै। केसर चंदन चरचीजै। दिन धन धन तेह गिणी जै ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस जहितोरो। अति हरखित हुवो चित्त मोरो। जिम दीठां चंद चकोरो ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचमे आरै। विसमा भय संकट वारै। सहु सेवक काज सुधारै ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवो स्वामि सदा सुखदाई। कमणा न रहै घर काई। वाधै संपति सोभ सवाई ॥ कृ० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा। भव जन मन नयण आणंदा। ओलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ कृ० ॥ १० ॥ जयकारी रिषभ जिणंदा। प्रहसम धर परम आणंदा। वंदै श्रीजिन भक्ति सूरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ इति श्री रुषभ देवजी स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घर अंगण सुरतरु फट्योजी । कवण कनक फल खाय । गयवर वांध्यो वारणेंजी । खर किम आवेदाय ॥ १ ॥ विमल जिन माहरे तुह्मसुं प्रीति । सुर सकलंकित सुं मिट्यां जी । हीयडो हींसे केम ॥ वि० २ ॥ ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लहीजी । कुणखल खावा जाय । आदर साहिब नो लहीजी । कुणट्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाच छते कुण काचनें जी । अलव पसारै हाथ । कुण सुरतरु थी ऊठिनें जी । वांवल घाले वा थ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी । तो प्रभु तुमची आण । श्री जिनराज भवो भवैजी । तुंहीज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री विमल जिन स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरा साहिब हो श्री सीतलनाथकि । वीनती सुणो इकमोरकी । दुख भांजै हो जग दीन दयाल कि । वात सुणीमें तोरकी ॥ १ ॥ (मो०) तिण तोरैहो हुं आयो पासकि । मुझ मन आस्या छै घणी । कर जोडी हो कहुं मननी वातकि । तुं सुणि जे त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ (मो०) हुं भमियोहो भव समुद्र मझार कि । दुख अनंता में सह्या । ते जाणें हो तुं हीज जिन राज कि । में किमजायें ते कह्या ॥ ३ ॥ (मो०) भाग जो गै हो तोरो श्री भगवंत कि । दरसण नयणें निरखियो । मन मान्यो हो मोरै तुं अरिहंत कि । हियमो हेजै हरखियो ॥ ४ ॥ (मो०) एक निश्चै हो में कीधो आज कि । तुझ विण देव बीजो नही । चिंतामणि हो जो पायो रतन्न कि । काच ग्रहै कहो कुण सही ॥ ५ ॥ (मो०) पंचामृ तहो जिण भोजन कीध कि । खल खायवा मनकिम थीयै । कंठ तांइहो जो अमृत पीधतो । खारो जल कहो कुण पीयै ॥ ६ ॥ (मो०) मोती कोहों जो पहरयो हारकि । चिरमठि कुण पहिरै हीयै । जसु गांठै हो लाख कोरि गरत्थ कि । व्याज काढी दाम कुण लीयै ॥ ७ ॥ (मो०) घर मांहें हो जो प्रगट्यो निधानतो । देस देसांतर कुण भमें । सोना नोहो जो पोरसो सीधतो । धातुरवादी कुण धमें ॥ ८ ॥ (मो०) जिण

कीधो हो जवहर व्यापार कि । मणि हारी मन किम गमें । जिण कीधो हो सदा हाल हुकम्म कि । ते तूं कारो किम खमें ॥ ९ ॥ (मो०) तूं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि । हुं सेवक प्रभु ताहरो । मुऊ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि । भव दुख भागो माहरो ॥ १० ॥ (मो० ॥ तुऊ मूरति हो देखंता प्राय कि । समवसरण मुऊ संभरै । जिन प्रतिमा हो जिन सरिषी जाण कि । मूरख जे सांसो करै ॥ ११ ॥ (मो०) तुह्म दरसण हो मुऊ आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरना । तुह्म नामें हो मोरा पाप पुलाय कि । जिम दिन जाय चोरना ॥ २ ॥ (मो०) तुह्म दरसण हो मुऊ मन उल्लरंग कि । मेह आगम जिम मोरना । तुह्म नामें हो सुख संपत्ति थाय कि । मन वंछित फल मोरडा ॥ १३ ॥ (मो०) हुं मांगुं हो हिव अविहड प्रेम कि । नित नित करूं निहोरना । मुऊ दे ज्यो हो स्वामी भव भव सेव कि । चरण न छोडुं तोरना ॥ १४ ॥ (मो०) कलश ॥ इम अमर सर पुर संघ सुख कर मात नंदा नन्दनो । सकलाप शीतल नाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवत्स लंछन वरण कंचन रूप सुंदर सोह ए । एतवन कीधो समय सुंदर सुणित जनमन मोहए ॥ १५ ॥ इति श्री शीतल नाथ जिन स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८४ आसातना स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) विलसै रुक्मिनी ॥ जय २ जिण पास जगत्र धणी । सोभा ताहरी संसार सुणी । आयो हुं पिण धर आस घणी । करिवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन २ जे न पडै जंजालै । उपयोग सुं बैसे जिन आलै । आसातना चउरासी टालै । सास्वता सुख ते हीज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेखम जिन हरमें । कलह करै गाली जूयरमें । धनुषादि कला सीखण ढूकै । कुरलो तंबोल भखें थूकै ॥ ३ ॥ सुरै वायवडी लघु नीत तणी । संज्ञा कुंगुलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर किया । चांदीनी नाखे चांबडिया ॥ ४ ॥ दांतणनें वमन पीयै कावो । खावे धांणी फुली खावो । सूवै वेसामण विसरावै । अज गज पसुनें दाखण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दसन आखै । नख गाल वपुषना मल नाखै । भिलणो

लेखो करे मंत्रणो । विहचण अपणो करि धन धरणो ॥ ६ ॥ वेसै पग ऊपरि पग चढियां । थापै ढांणा ढमे ढूंढणीयां । सूकवै कप्पम पप्पम व म्यिां । नासीय छिपै नृपभय पम्यिां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथाज कहै । इहां संख्या बेतालीस लहै । हथियार धम्नें पशु बांधे । तापे नांणों प रखेरांधै ॥ ८ ॥ नांजी निसही जिन गृह पेसै । धरे छत्रनें मंमपमें बेसै । पहिरे वस्त्र अनें पनही । चामर वीजैं मनठाम नही ॥ ९ ॥ तनु तेल सचित्त फल फूल लीये । नूषण तजि आप कुरूप थीये । दरसणथी सिर अंजलि नधरे । इग सामै उत्तरा संग न करे ॥ १० ॥ ढोगो सिर पेच मोम जो मै । दाडिये रमनें वैसे होमै । सयणांसुं जुहार करै मुजरो । करै नंम चेष्टा कहै वचन वुरो ॥ ११ ॥ धरै धरणो ऊगमे उत्तंठी । सिर गुंथै बांधे पालं ठी । पसारे पग पहरे चाखडीयां । पग ऊटक दिरावे पुर वडीयां ॥ १२ ॥ कर दम जूहै मैथुन मंमै । जूआ वलि ओंठ तिहां ढंमै । उघाडे गुझ करै । वयदां । काढे व्यापार तणी कयदां ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीरधरे । अंघोले पीवाठाम नरै । दूषण जिन नवनमें एदाख्या । देव वंदन नाष्यमें जे नाष्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावक सगतिउतां । आसातन टाले वार सतां । परमाद वसे कोई थायै । आलोयां पाप सहूजायै ॥ १५ ॥ तंबोल नें नोजन पान जूआ । मल मूत्र सयन स्त्री नोग हुआ । नूषण पनही ए जघन्य दसे । वरज्या जिन मंदिर मांहिवसे ॥ १६ ॥ द्रव्यतनें नावत दोय पूजा । एहनाहीज नेदकह्या दूजा । सेवा प्रनुनी मन सुख करै । वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ (कलश) ॥ ❀ ॥ इम नव्यप्राणी नाव आणी विवेकी शुन्न वातना । जिन बिंब अरचै परी वरजै चोरासी आसातना । ते गोत्र तीर्थं कर उपार्जे नमें जेहनें केवली । उव झाय श्री धमसीह वंदै जैन सासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्रीचौरासी आसातना स्तवनं ॥ १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिनदेहमान स्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणसुं रुषन्न जिनेसर पाय । धनुष पांचसै उंचीकाय । बीजो अजित जिन सुऊ मन बसै । मान धनुष साढाच्यारसै ॥ १ ॥ तीजो सं नव सुख दातार । उंची काय धनुष सोच्यार । अनिनंदन जिनसुं मनली

न । देह धनुषसो साढा तीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ भगवान । धनुष तीनसो देहीमान । पदम प्रभु पूरे मन आस । देह धनुष दोयसे पंचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय । देह प्रमाण धनुषसो दोय । चंद्रा प्र भु जिन मुझ मन वसै । देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविध नाथ न मियें सुविवेक । ऊंच प्रमाण धनुषसो एक । सीतल नाथ नमें जगसवे । देह प्रमाण धनुष जसुनिवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नमुं ऊलसी । ऊंच प्रमाण धनुष तनु असी । वासपूज्य वारम जिन चंद । मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणकरि गंभीर । साठि धनुष जसुमान सरीर । अनन्त ज्ञान अनन्त प्रकास । देह प्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम ध रमनाथ जगदीस । मान धनुष जसु पेंतालीस । शांति करण सोलम जिन शांति । देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार । मान धनुष पेंत्रीस उदार । अर अठारम दीन दयाल । त्रीस धनुष तनु अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि नाथ जिन उगुणीसमो । मान पचीस धनुष पय नमो । बीसम मुनिसुव्रत अरिहंत । वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमि जिन राजान । पनरै धनुष तनु रूप निधान । बावीसम श्रीने मि जिणंद । दस धनु दीपै जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्रीपारस नाथ । नील वरण सोहै नव हाथ । चोवीसमा जिनवर श्रीवीर । सात हाथ जगना थ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चौवीस । प्रणमें प्रहसम धरीय जगी स । तांवर रिधि सिधि उछरंग । रंगविनें प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीचोवीस जिन देह मान स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिन आयुप्रमाण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषभ देव प्रणमुं जिनराय । लाख चोराशी पूरब आय । बीजो अजित जसु सूत्रै साख । आउ बहुत्तर पूरबलाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो । आउलाख पूरब साठिरो । अभिनंदन पूरै मन आस । आउला ख पूरब पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आउ लाख पूरब चालीस । श्रीपदम प्रभूनी ए थितिजाण । लाख तीस पूरब परि माण ॥ ३ ॥ श्रीसुपार्श्व लख पूरब वीस । दस लख पूरब चंद प्रभु ईस ।

सुविध नाथ लख पूरब दोय । इक लख पूरब शीतल थिति होय ॥ ४ ॥ आउ वरस चोरासी लाख । श्रीश्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बहुत्तर व रसां तणो । वासु पुज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आउ लख साठि वरीस । वरस अनंत तणो लख तीस । लाखवरस दस धरम दिणंद । ला ख वरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पंचाणवै । श्रीकुंथु ना थ तणीसंन्नवै । सहस चोरासी अर जिनतणी । मल्लि सहस पंचावन न्नणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । मुनि सुव्रत परमाउ उदार । वी स सहस नमिजिन थिति न्नणी । वरस सहस नेमीसर तणी ॥ ८ ॥ पास वरस एकसो सुख कंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । रुषन्न तणा तेरै अवतार । सात चंद्र संतीसर बार ॥ ९ ॥ सुव्रत न्नव नव नव नेमीस । पार्श्व वीर दश सत्तावीस । त्रिहुं त्रिहुं न्नव सतरै जगदीस । सगला न्नव एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्धि लही सहुनें धन धन्न । गणधर चवदे सै बावन्न । सहुनें मुनि लख अठावीस । सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल उयांल हजार । षडधिक सहु साधवी सोच्यार । श्रावक ला ख पचावन धुरै । अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविका सुजगीस । लाख पांच सहस अमतीस । ए संघ चतुर्विध सहु जिन त णें । रंगविनें प्रणमें हित घणें ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीचोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ६३ शिलाका पुरुष स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल १) धरम महारथ सारथि सारं । एचाल ॥ ❀ ॥ सदगुरु चरणकमल मनधारं । त्रेसठ उत्तम नरअधिकारं । पन्नणसु श्रुत अनुसारं । जेहने नाम लियै निसतारं । आपण सफलहुवै अवतारं । पामी जै न्नव पारं ॥ १ ॥ रुषन्न अजित संन्नव अभिनंदन । सुमति पदम प्रभु नयना नंदन सत्तम तेम सुपास । चंद्र प्रभुनें सुविध सीतल जिन । श्रेयांस वासपूज्य जिण सुरमणि । विमलगुणें करवास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेसर कुंथुनाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनि सुव्रत नमि नेमि । पार्श्व वीरए जिन चोवीस जगवल्लभ जगगुरु जगदीस । प्रणमीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥ (ढाल २) प्रथ

म सुपनगज निरखो एचाल ॥ ❀ ॥ प्रथम भरतनर इंद्र । बीजो सगरसु रिंद । मघवा तीजो उदार । चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांति चक्कीस । छठो कुंथु गणीस । सातमो अर नरनाथ । आठम सुभूमि सनाथ ॥ ५ ॥ न वमो पदमनरेस । हरषेण दसम कहेस । इग्यारम जय ताम । बारम ब्रह्म दत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर वार । खेत्रभरत सिणगार । मघवा सनत कुमार । पुहता स्वरग मझार ॥ ७ ॥ सुभुम अनें ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय निरत्त । आठ थया सिवगामी । तेप्रणमुं सिरनामी ॥ ९ ॥ (ढाल ३) ॥ ❀ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥ ❀ ॥ पहिलो त्रिपृष्टि जाण । द्विपृष्ट दूसरो तीजो स्वयं प्रभु जाणिये ए । पुरषोत्तम ए चोथो । पंचम परगहो । पुरुष सिंह प्रमाणीयै ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंडरीक । दत्त तिम सातमो । लक्ष्म ण नामें आठमोए । नवमो कृष्णनरेस । एनव केसवा । प्रहकठी ए पिण नमुए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव । नारकी सातमी । आगला पंच छठी गयाए । सातमो पंचम नैर । चौथी आठमो । नवमो तीजी नारीयाए ॥ ११ ॥ अचल विजयनें भद्र । सुप्रभु सुदर्शण । आनंद नंदन सुभमतीए । रामचंद्र बलभद्र । बलदेव एनव । आठ थया तिहां सिवगती ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रह्म देवलोक । काल उसप्पणी । जास्यै सिवकृष्ण सासणेंए । अथवा नि पुलाक नाम । तीर्थंकर होस्ये । चवदमो इम बहुश्रुत भणेंए ॥ १३ ॥ (ढाल) कुमर पणें प्रभु रहतां काल सुखे गमेंए एचाल ॥ ❀ ॥ अस्वग्रीवनें तारक मेरुक बलि मधु तिसा ए । निशुंभ बलय प्रल्हाद रावण जरासिंधु जिसा ए । ए नव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण भाव जि णेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५) सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ सां तिनें कुंथु अरि एहभव एकही । चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही । वीर वासुदेव अरिहंत भव जू जूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुण सठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नवएण लेखे भता । तीन चक्रधर तणा मिलिय बारै टल्या । एम त्रेसठना तात इक वन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्र भत तणी टाल दीजै जिसै । थाय सहुनी थई साठ लेखै इसै । एह नर रयणनो ध्यान नित जे धरै । तेह सुर पद लही

मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥ (कलश) इम थुएया तीर्थंकर चक्रीसर वासु देव बलदेव ए । प्रति वासुदेव सुसेवजेहनी करै सुर नर सेव ए । त्रेसठ सिलाका पुरुष उत्तम जगें जयवंता सदा । प्रहसमें तेहना चरण पंकज नमें मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सिलाका पुरष स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अजितशांतिजिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल कमला कंदए । सुखसागर पूनिमचंदए । जगगुरु अजि य जिणंदए । शांतीसर नयणानंदए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेवए । बि हुं गुणगाइस संखेवए । पुण्य भंडार भरेसए । मानवभव सफल करेसए ॥ २ ॥ कोडहि लाखपचासए । सागर जिणसासण भासए । रिसहजिणे सर वंसए । उवझाय सरोवर हंसए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजीयोए । राजा जितशत्रु जग गाजीयोए । विजया तसुघर नारए । बिहुं रमयति पासासारए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतारए । तिणराय मनाव्योहारए । उयरव स्यो दसमासए । पत्नु पूरी जणणी आसए ॥ ५ ॥ बिहुं जण मन आणंदी योए । सुतनाम अजिअजिण तो दीयोए । तिहुअण सयल उछाहए । क्रम क्रम वाधै जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारस तणीए । गति सुललित नि जगति निरजणीए । मलपति चालै गैलए । जाणें नयण अमीरस रेलए ॥७॥ अवरन समो संसारए । बलि न्यान बिबेक विचारए । गुणदेखी गज गहगह्योए । लंछण मिसि पगलागी रह्योए ॥८॥ जोवनवय जब आवीयोए । तब वररमणी परिणावियोए । पीयसाधै सब काजए । प्रभु पालै पुहवीराजए ॥९॥ हिव हथणाउर ठामए । विश्वसेण नरेसर नामए । राणी अचिरा देवए । मनहर सुखमाणें बेवए ॥१०॥ चवदह सुपनें परवरयोए । अचिरा उयरे सुत अवतरयोए । मानवदेव बखांणीयोए । चक्रीसर जिणवर जाणीयोए ॥ ११ ॥ देस नयर हुइ संतए । तिणनाम दीयो सिरि शांतए । जिणगुण कुण जाणें कहीए । तिहुं भुवणे तसु उपमानहीए ॥ १२ ॥ नयण सजूणो हिरणलोए । बनसिंघे वीहै एकलोए । नयण समाधि निरोधए । इणनयणे नारिबिरोधए ॥ १३ ॥ गीतही राग सुरंगए । पिण पन्नणे लोक कुरंगए । तो उलग्यो शशि संकए । तिणपाम्यो नाम कलंकए ॥ १४ ॥ इणपर मृग अति खल

ज्योए । जयजंजण स्वामी सांजल्योए । आणंदीयो मनआपणोए । पा यसेवै मिस लंछण तणोए ॥ १५ ॥ लीलापति परणें घणीए । नव नवीय कु मरि रायां तणीए । बल उल अरियण जोगवैए । पीयराय जलीपर जोगवैए ॥ १६ ॥ कुमरतणें मंगल समेंए । पंचाससहस बरसां गमेंए । तौतेजै दिणयर जिसोए । ऊपन्नो चक्करयण तिसोए ॥ १७ ॥ साधी जरह उहखंमए । बरतावी आंण अखंमए । चवदरयण नवनिहि सहीए । वसु सोलसहस जक्खै अही ए ॥ १८ ॥ सहसबहुत्तर पुरवराए । बत्तीस मौमबद्ध नरवराए । पायक गामै कोमए । छिन्नवै नमें वेकरजोमए ॥१९॥ हय गय रह वर जूजुवाए । लखचौरा सी मंदिर हुवाए । लाख त्रि वाजित्र घम घमैए । बत्तीस सहस नाटक रमेए । ॥२०॥ रूपजिसी सुरसुंदरीए । लक्षण लावन्य लीला जरीए । जंगम सौ हग देहरीए । इसी चौसठसहस अंतेउरीए ॥ २१ ॥ अवरज रिधि प्रकार ए । मणि कंचण रयण जंमारए । ते कहिवा कुण जाणए । वपु वपुरे पुण्य प्रमाणए ॥ २२ ॥ इम चक्रीसर पंचमोए । चौथो दूसमशूशम समोए । वरस सहस पचवीसए । सबपूरी मनह जगीसए ॥ २३ ॥ इणपरि विहुं तिर्थंकराए । चिरपाली राज विविहपराए । जाणी अवसर सारए । बिहुं लीधो संजमजारए ॥ २४ ॥ बिहुं खमदम धीरम धरीए । बिहुं मोह मयण मद परहरीए । विहुं जिण आण समाणए । बिहुं पाम्यो केवलनाणए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोमहि महिय । बिहुं चौतीसे अतिसय सहिय । समवसरण बिहुंठाणए । बिहुं जोयणवांणि बखांणए ॥ २६ ॥ नाचे रण कत नेउरीए । बिहुं आगलि इंद्र अंतेउरीए । टिग मिग जोवै जग सहुए रंगहि गुणगावै सुरबहुए ॥ २७ ॥ विहुंसिर उत्र चमर बिमल । बिहुं पगतल नव सोवन कमल । बिहु जिन तणें बिहारए । नविरोग नसोग नमारिए ॥ २८ ॥ विहुं नवयार नुवणजरीए । विहुं सिद्धि रमणि सयंबरीए । बिहुं जंजी जवकंदए । बिहुं नंदयो परमाणंदए ॥ २९ ॥ इम बीजोनें सोलमोए । जांणे चिंतामणि सुरतरुसमोए । थुणिअ तिसंझ बिहाणए । तिहां इह परिजव नवि हाणए ॥ ३० ॥ विहुं उद्भव मंगलकरण । विहुं संघसयल डुरियहरण । बिहुं वरकमल वयण नयण । बिहुं श्री जिनराय नुवण

रयण ॥ ३१ ॥ इमजगतै जोलिमतणीए । श्रीअजिय शांति जिण थुइ जणीए । सरण बिहुं जिणपायए । सिरि मेरुनंदन उवझायए ॥ ३२ ॥ इति श्री अजित शांतिजिन वृहस्तवन संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पम्लिेहण स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल कपूर हुवे अति ऊजलोरे एचाल) ॥ ❀ ॥ वरधमान जिनवर तणाजी । चरण नमुं चितलाय । ग्यान क्रिया जिण उपदिसै जी । शिव सुखतणो उपाय ॥ १ ॥ (भविक जन धर श्रीजिन उपदेस । टूटे कर्म कलेस भ०) ॥ पम्लिेहण मुहपति तणीजी । भाषीछै पचवीस । तिहां एभाव विचारीयै जी । इम भाषै जगदीस ॥ २ ॥ (भ०) प्रथम बेपास विलोकियै जी । सूत्र अरथनी दृष्टि । एपम्लिेहण दृष्टिनी जी । करे धर्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ (भ०) समकित मिथ्या मिश्रनीजी । मोहनी तीन नो त्याग । कामराग स्नेहराग नें जी । तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ (भ०) सीष वधू तक गुरु थकी जी । वाम हाथ करनाउ । नव अखो मा आदरो जी । नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ (भ०) देव तत्व गुरु तत्व सुं जी । धर्म तत्व गृह सार । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी । तीन तणो परिहार ॥ ६ ॥ (भ०) ग्यान दरसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार । तजो विराधन तीन एजी । एह अरथ अवधार ॥ ७ ॥ (भ०) मन वच कायानी सदाजी । गुपति गृही जे सुद्ध । परिहरीयै वलि जाणनें जी । तीने दंभ विसुद्ध ॥ ८ ॥ (भ०) पम्लिेहण पचवीसए जी । मुह पत्ती नी सार । हिव पम्लिेहण अंगनी जी । ते पिण चतुर विचार ॥ ९ ॥ (भ०) हास्य अरति रति दोयनें जी । सुद्ध करो वाम वांह । तजि भय शोक दुगंछना जी । दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ (भ०) धुरली लेश्या तीन एजी । ते शिर थी करि दूर । रिद्धि रस शाता गारवो जी । करि मुख थी चकचूर ॥ ११ ॥ (भ०) काढ सल्य तीन उर थकी जी । माया नियाण मिथ्यात । च्यार कषाय वे वगलथी जी । क्रोधादिक करिघात ॥ १२ ॥ (भ०) तज खटकाय विराधना जी । चरण बिएहे सुद्ध होय । ए पम्लिेहण अंगनी जी । पचवीसे तुं जोय ॥ १३ ॥ (भ०) इम पडिलेहण जे

करै जी। धर मन ग्यान विवेक। सकल करम दूरै करै जी। पामें सुक्ख अनेक॥ १४ ॥ (ग्र० कलश) इम वीरजिणवर तणा मुख थी अरथ गण धर सांभली। कहै सूत्र वाणी मन सुहाणी सुणो भवियण मन रली। ज्ञ ज्ञाय वर सिरि लब्धकीरति मुख थकी ए संग्रही। मुह पती पग्लिेहण तणी विधि लब्धि वल्लभ गणि कही॥ १५॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीमुह पत्ती पग्लिेहण स्तवनं॥ १४॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरि स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री विमलाचल शिर तिलो। आदीसर अरिहंत। जुगला धर म निवारणो। नयनंजण भगवंत॥ १ ॥ श्री० ॥ मुझ मन ऊलट अति घणो (रे) सोदिन सफल गिणेस। स्वामी श्रीरिसहे सरू। जब नयणे नि रखेस॥ २॥ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहरता। साधु तणें परिवार। आदि जिणंद समोसरया। पूरब निनाणुंवार॥ ३॥ श्री० ॥ अचरा विजया नंद नें। जग बंधव जगतात। इण गिरि चउमासै रह्या। थिवर कहै ए वात॥ ४॥ श्री० ॥ पामें शिव सुख सासता। गणधर श्री पुंडरीक। पुंडरगिरि तिण कारणें। भगति करो निर भीक॥ ५॥ श्री० ॥ नमिनें विनमि स होदरू। विद्याधर बलवंत। सेत्रुंज सिखर समोसरया। जे गरुवा गुणवं त॥ ६॥ श्री० ॥ थावचा मुनिवर सुक। सहस २ परिवार। पंथग वय णे जागीयो। सो सेलग अणगार॥ ७॥ श्री० ॥ पांडव पांच महाबली। सुणी जादव निरवाण। ते सीधा सिद्ध चलै। सुर नर करै वखांण॥ ८॥ श्री० ॥ इम सीधा इणडूंगरै। मुनिवर कोडा कोडि। पाज चढंता सांभ रै। ते प्रणमुं कर जोडि॥ ९॥ श्री० ॥ जे वाचणि प्रति बूझवी। ते दर वाजै जोय। गोमुख यक्ष कवड मिली। सानिध कारी होय॥ १०॥ श्री० ॥ जे विधसुं यात्रा करै। सुर नर सेवकतास। राज समुद्र गुण गा वतां। अविचल लीलविलास॥ ११॥ श्री० ॥ इति सेत्रुंजय स्तवनं॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री रिषभ जिनेसर स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रिषभ जिनेसर दिनकर साहिब। वीनतडी अवधारोरे (ज गनातारू। मुझ तारोजी कृपा निधि स्वामी) ॥ जग जसवाद प्रगटै ता

हरो। अविचल सुख दातारोरे ॥ ज० ॥ १ मु० ॥ निजगुण भोक्ता पर गुण लोक्ता। आतम सगति जगायारे ॥ ज० अविनासी अविचल अविकारी शिववासी जिन रायारे ॥ ज० मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी। हुं तुम चरणे आयोरे॥ ज० ॥ तुम रीझावण हेतै ततखिण। नाटक खेलम चायोरे॥ ज०॥ ३ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री। तरु साधारण पा मीरे॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री। वेषधरया दुख धामीरे॥ ज० ॥ ४ ॥ मु०॥ सुर नर तिरि वलि नरक तणीगति। पंचेंद्रीपणो धारयोरे ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो। अबतो हुं पिण हारयोरे॥ ज०॥ ५॥ मु० ॥ भवनाटक नितकरतो नवनव। हुं तुझ आगलि नाच्योरे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिषो। निरखी तुझनें जाच्योरे॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या। तो मुझ वंछित दीजैरे ॥ ज० ॥ जो नविरीं झ्या तो मुझ भाषो। वलि नाटक नवि कीजैरे॥ ज० ॥ ७॥ मु० ॥ लाजच धरि हु सेवा सारुं। तुं दुखडा नविकापैरे॥ ज० ॥ दातासेती संबलेरो। बहिलो कुतर आपैरे॥ ज० ८ मु० ॥ तुझ सरिषा साहिब पिण महारो। जो नवि कारज सारोरे॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली। दोस नकोई तुमारोरे॥ ज० ९ मु० ॥ दीनदयाल दयाकरि दीजै। सुध समकि त सहिनाणीरे॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो। तेहीजगुण मणिखाणी रे॥ ज० १० मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै। ज्येष्टसुदी सोमवारेरे॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपदादिन भेट्या। बीकानेर मझारोरे॥ ज० ११ मु० ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री रुषभ देवजी स्तवनं ॥ १६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री महावीर वीनती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर सुणो मोरी वीनती। कर जोमीहो कहुं मननी वात। बाल कनी परिवीनवुं। मोरा सामीहो तूं त्रिभुवन तात॥ १॥ वी०॥ तुम दरसण वि णहुं भम्यो। भव मांहेंहो सामी समुद्र मझार। दुक्ख अनंता मैं सह्या। ते कहितांहो किमआवै पार॥ २ ॥ वी० ॥ पर उपगारी तुंप्रभु। दुखभांजेंहो जग दीनदयाल। तिणतोरै चरणें हुं आवीयो। सामी मुझनेंहो निज नयण निहा ल॥ ३ ॥ वी० ॥ अपराधी पिण उधरया। तें कीधीहो करुणा मोरासाम।

हुं तो परम जगत ताहरो। तिणतारोहो नहीं ढीलनो काम ॥ ४ ॥ वी० ॥ शूलपाणि प्रति बूझव्या। जिण कीधाहो तुझनें उपसर्ग। शंक दीयो चंमको सीये। तैं दीधोहो तसु आठमोसर्ग। ५ ॥ वी० ॥ गोशालो गुनही घणुं। जिण बोल्याहो तोरा अवरणवाद। ते बलतो तैं राखीयो। सीतलेस्याहो मूं की सुप्रसाद ॥ ६ ॥ वी० ॥ ए कुणउं इंद्रजालीयो। इम कहितां हो आ यो तुमतीर। ते गोतमनें तैं कीयो। पोतानोहो प्रनुतानो वजीर ॥ ७ ॥ वी० ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा। जे झगड्योहो तुझसाथ जमाल। तेहनें पिण पनरै नवे। सिव गामीहो तैं कीधो कृपाल ॥ ८ ॥ वी० ॥ अैमत्तो रिषि जेरम्यो। जल मांहेंहो बांधी माटीनी पाल। तिरती मूंकी काचली। तें तार्यो हो तेहनें ततकाल ॥ ९ ॥ वी० ॥ मेघकुमर रिषि दूहव्यो। चितचूकोहो चारि तथी अपार। एकावतारी तेहनें। तें कीधो हो करुणा नंमार ॥ १० ॥ वी० ॥ बार वरस वैस्याघरे। रह्यो मुंकीहो संयमनोनार। नंदखेण पिण ऊधरयो। सुर पदवीहो दीधी अतिसार ॥ ११ ॥ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी। ग्र हवासैहो बसिया वरस चौवीस। ते पिण आद्रकुमारनें। तें तार्यो हो तोरी एह जगीस ॥ १२ ॥ वी० ॥ राय श्रेणक राणी चेलणा। रूप देखीहो चित चूका जेह। समवसरण साधु साधवी। तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ १३ ॥ वी० ॥ विरत नहीं नहीं आखमी। नहीं पोसोहो नहीं आदर दीख। ते पिण श्रेणिकरायनें। तें कीधोहो सामी आ पसरीख ॥ १४ ॥ वी० ॥ इम अनेक तें ऊधरया। कहुं तोराहो केता अवदात। सारकरो हिवमाहरी। मनमांहेंहो आणो मोरली वात ॥ १५ ॥ वी ॥ सूधो संजम नविपलै। नही तेहवोहो मुझ दरसण नाण। पिण आधारउं एतलो। इक तोरोहो धरुं निश्चल ध्यान ॥ १६ ॥ वी० ॥ मेह महीतल वरसतो। नविजोवैहो सम विखमी ठाम। गरुआ सहिजे गुण क रै। स्वामी सारो हो मोरा बंछित काम ॥१७॥ वी० ॥ तुम नामें सुख संपदा तुम नामें हो दुख जायै दूर। तुम नामें वंछित फलै। तुम नामें हो मुझ आणंद पूर ॥ १८ ॥ वी० ॥ (कलश) ॥ ❀ ॥ इम नगर जेशलमेर मंम ण तीर्थंकर चौवीसमो। सासना धीसर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समो।

जिणचंद त्रिसला मात नंदन सकल चंद कला निलो । वाचना चारज स मय सुंदर संथुएयो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति श्री महावीर जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चोवीस दंमक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल आदर जीव क्षमागुण आदर) एचाल ॥ ❀ ॥ पूर म नोरथ पासजिनेसर । एहकरुं अरदासजी । तारण तरण विरुद तुऊ सांज लि । आयो हुं धरि आस जी ॥ १ ॥ (पू०) इण संसार समुद्र अथागै जमियो जवजल मांहि जी । गिल गिचिया जिम आयो गिडतो । साहिब हाथे साहिजी ॥ २ ॥ (पू०) तुं ग्यानीतो पिण तुऊ आगै । वीतक कहीयै वात जी । चौवीसे दंमक हुं जमियो । वरणुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ (पू०) साते नरक तणो इक दंमक । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें तीन विकलेंद्री । जगणीस गिणती आणजी ॥ ४ ॥ (पू०) ॥ पंचेंद्री तिर्यंच नें मानव । एह थया इकवीस जी । व्यंतर ज्योतिषीनें वेमानिक । इम दंम क चोवीस जी ॥ ५ ॥ (पू०) पंचेंद्री तिर्यंच अनें नर । परयाप्ता जे हो य जी । एचौविह देवां मे जपजै । इम देवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ (पू०) असंख्यात आऊखै नर तिरि । निहचै देवज थायजी । निज आऊखे सम के जावै । पिण अधिकै नवि जायजी ॥ ७ ॥ (पू०) जवनपती कै व्यंतर तांई । समूर्छिम तिरयंच जी । सरग आठमा तांई पुहचै । गरजज सुकृत सं चजी ॥ ८ ॥ (पू०) आऊ संख्यातै जे गरजज । नर तिरयंच विवेक जी । बादर पृथवीनें वलिपाणी । वनस्पती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ (पू०) परि याप्ता इण पांचें ठामें । आवी जपजै देवजी । इण पांचामाहें पिण आगै । अधिकाई कहुं हेवजी ॥ १० ॥ (पू०) तीजा सरग थकी मांमी सुर । एकेंद्री नवि थाय जी । अठम थी ऊपरिला सगला । मांनव मां है जायजी ॥ ११ ॥ ❀ ॥ (पू०) (ढाल २ आज निहेज्योरे दीसै नाहलोएचाल ।) ॥ ❀ ॥ नरक तणी गति आगति इण परै । जीवजमें संसार । दोय ग तिनें दोय आगति जाणीयै । वलीय विशेष विचार ॥ १२ ॥ (न०) संख्या तै आऊ परयापता । पंचेंद्री तिरयंच । तिम हीज मनुष्य एहिज बे नरक

में । जावै पाप प्रपंच ॥ १३ ॥ (न०) प्रथम नरक लगि जाय असन्नि यो । गोह नकुल तिम बीय । गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी लगे । सींह प्रमुख चो थीय ॥ १४ (न०) पंचमी नरकै सीमा सापणी । छठी लगि स्त्री जाय । सातमीये मांणस कै माछलो । ऊपजै गरन्नज आय ॥ १५ ॥ (न०) न रक थकी आवै बिहुं दंमकै । तिरयंच कै नर थाय । ते पिण गरन्नज नें परयापता । संख्या ती जसुआय ॥ १६ ॥ (न०) नारकियांनें नरकथी नीसरयां । जे फल प्रापत होय । उतकृष्टे आंगै करि तेकहुं । पिण निश्चै नही कोय ॥ १७ ॥ (न०) प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै । बीजी हरि बलदेव । तीजी लगि तीर्थंकर पद लहै । चोथी केवल हेव ॥ १८ ॥ (न०) पंचमी नरकनो सरव विरति लहै । छठी देस विरत्त । सातमी न रक नो समकित हीज लहै । न हुवै अधिक निमित्त ॥ १९ ॥ (न० ॥ ढाल ३) ॥ ❀ ॥ (करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे) ए चाल ॥ ❀ ॥ मानव गति विण सुगति हुवै नहीरे । एहनो इम अधिकार । आऊ संख्या ते नर सहु दंमकैरे । आवी लहै अवतार ॥ २० ॥ (मा०) तेऊ वाऊ दंमक वेतजीरे । बीजा जे बावीस । तिहांथी आया थायै मानवीरे । सुख दुःख कर्मस रीस ॥ २१ ॥ (मा०) नर तिरयंच असंखी आउखैरे । सातमी नरकना तेम । तिहां थी मरनें मनुष्य हुवै नही रे । अरिहंत जाण्यो एम ॥ २२ ॥ (मा०) वासुदेव बल देव तथा वलीरे । चक्रवर्त्तिनें अरिहंत । सरग नर गना आया ए हुवैरे । नर तिरथी न हुवंत ॥ २३ ॥ (मा०) चौविह दे व थकी चवि ऊपजैरे । चक्रवर्त्ति बल देव । वासुदेव तीर्थंकर ए हुवै रे । वैमानक थकी बेव ॥ २४ ॥ (मा०) (ढाल ४ नाभि अने मरुदेवा) ए चाल ॥ ❀ ॥ हिव तिरयंच तणी गति आगति कहीयै अशेष । जीवन्नमें इण परन्नव मांहें करम विशेष । आऊ संख्याती जे नर तिर्यंच विचार । ते स गला तिरयंचा मांहें लहै अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचां मांहे आवै नारक देव । ते कह्या पहिली तिण कारण नकहुं हेव । पंचेंद्री तिरयंच संख्याते आऊखै जेह । ते मरी चिहुं गतिमां जावै इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठे कहावै । तिहां थी आउसंख्याता नर ति

रयंचमें आवे । विकल चवी लहै सरब विरति पिण सुगति न पावै । तेऊ बाऊ थी आयो तेहनें समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जी व संसार । पृथवी आउ वनस्पती मांहि लहै अवतार । एतीने इहांथी चवि आवै दसे ठामें । थावर विकल तिरी नर मांहे उतपत पामें ॥ २८ ॥ पृथ वी काय आदि देई दस दंडके एह । तेऊ वाऊ मांहे आवी उपजै तेह । म नुष्य विना नवमांहे तेऊ वाऊ बे जावै । विकलेंद्री ते दसमांहि जावै पूठा ही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत । वनस्पती मां हें तिहां रहीयो काल अनंत । पुढवी पाणी अगनि अनेंचोथो वलि वाय । काल चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री मझारै । संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै । सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो । हिव मांनव भव लहिनें साधुनो वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नही किम हूवे बूटकवार । पिणउँ महारे मनसुध ताह रो एक आधार । तारण तरण में त्रिकरण सुद्धै अरिहंत लाधो । हिव संसार घणो भमिवो तो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तुं मन वंछित पूरण आपदाचू रण सामी । ताहरी सेवलही तो में नवनिध सिध पामी । अवरन कांइ इछंइण भव तुंहीज देव । सूधै मन एक होज्यो भव भव ताहरीसेव ॥ ३३ ॥ (क लश) ॥ इम सकल सुखकर नगर जेशल मेर महिमा दिन दिनें । संवत्तसतरै उगणतीसै दिवस दीवालीतणें । गुण विमलचंद समान वाचक विजेहरष सुसीसए । श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीसए ॥ ३४ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री चौवीस दंडक स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ इरियावही मिछामि दुक्कडसंख्या स्तवन लि० ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु प्रणमुंरे पास जिणेसर थंभणो एहनी ॥ ❀ ॥ पद पंक ज रे प्रणमी बीरजिनंदना । त्रिकरण सुधरे करि मुनिवर पय वंदना । अेम तेरे पडिकमी जिम इरियावही । श्रीवीर नीरे वाणी तहत्तकरि सरदही । (उ०) सरदही वाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मिछामि दुक्क ड तणी संख्या कहिसुं जिम कही केवली । जू दग जलण तिम वाउ वण सइ विगल पण इंद्री तणी । करतां विराहण करम बंध्या दूर ते करिवा भ

णी ॥ १ ॥ (चाल) पुढवी दगरे वाऊ तेऊ वणस्सई । पण थावररे वादर सुहम दसेथई । प्रत्येकजरे वणस्सइ इग्यारह थया । बावीसेरे पजत्तग अ पजत्तया । (उल्लालो) पजत्त अपजत्तग वखाएया विगल तिय छहनाजए। जल थल खचर नुयंग छुइपण इंद्रिय तिरि अरुआजए। धम्मादि साते न रक पुढवी नारकी तिहां सात जे। ते चवद भेदै करी जाणो पजत्तय अ पजत्त जे ॥ २ ॥ (चाल) पनरह बिधरे सुर गिण परमाहम्मिया । किल्ब विखियारे त्रिविध करम ते निम्मिया। जंभिय दसरे नव लोगांतिक जाणियै सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणियै। (उल्लालो) वखाणियै दसविध नुवन पतिना तार रवि शशि रिषि गहा। चर थिर दसेविध जोइसी सुर वखाएया जिणवर जहा। बारह विमानक पण अणुत्तर नवग्रीवेकै नव भएया। पजत्त अपजत्तग अठाणुं अधिक सतसंख्यागिएया॥❀॥ (ढाल२) मेघ आगम सही ए० ॥ पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए । खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणीयै असि कसि मसिहि आजीविकाए । हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए। मेरुपिण पाखती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिरि सिहरीय दाढ चीयारि ल वण समुद्रमांहि विस्तरीए । सात २ अंतर दोय पासै दीप उप्पन्न अन्तर धरीए । दोइसै भेद छुइ आगला जांणि मणुय पजत्त अपजत्तयाए। एक सौ एक समुर्छिम भेद तीनसै तीनमणुआ थयाए॥ ५ ॥ (ढाल ३) ॥ (हिव जनम्या जगगुरु०) ए० ॥ पणसय त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह। पणसहस छसै वलि त्रीस अ धिकते जाणि । ते रागै दोसै छगुणा करी वखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इ ग्यारह छइसय साठि प्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हितकर आण। मनवच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक । तेतीस सहस सत सातअसी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा किद्ध। इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध। अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल। जे थइयविराधना तिणी त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय। अरिहंत प्रमुख छह साखै छगुणा भाय। इम लाख

अढारह वलि सहस चउवीस । इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥ (ढाल ४) चोपईनी ॥❀॥ इण परि मिछामि दुक्कडंदेई । नविक तरया नवजल निधिकेई । तरै अढै वलि आगलि तरिसी । निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल । न्हाण करै आतमक रि निरमल । सें मुखनाषै वीर जिणेसर । सूत्रकरी गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पम्हिकमी मुनिवर अइमत्तो । वीरसीस केवल पदपत्तो । त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै । मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥ (कलश) ॥ ❀ ॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो । तियलोय सामी सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो । नवजाय लक्ष्मी कीर्त्ति सीसै जैनवा णी मन धरी । गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुएयो नावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि दुक्कड संख्या स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचसमवाय स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धारथ सुतवंदियै । जगदीपक जिनराज । वस्तुनाव सब जा णियै । जिन आगम थी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथी संपजै । सकल वस्तु विख्यात । सप्तनंगी रचना विना । वंधन बैसे वात ॥ २ ॥ वाद वदै नय जूजु आ । आप आपणें ठाम । पूरण वस्तु विचारतां । कोई न आवै काम ॥ ३ ॥ अंध प्ररूपै एहगज । ग्रही अवयव एकेक । दृष्टिवंत लहै पूर्णगज । अ वयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकल नयै करी । जुगत २ सुध बोध । धन जिनसासन जगजयो । तिहां नही कोइ विरोध ॥ ५ ॥ (ढाल १ आ साउरी राग ॥) श्रीजिन सासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धसरूपरे । नयएकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकल अनंग अनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० । कोई कहै एकाल तणें वस । सकल जगत गत होयरे । कालै नपजै विणसे का लै । अवरन कारन कोयरे ॥ ७ ॥ श्री० । कालै गर्न धरै जगवनिता । कालै जनमें पूतरे । कालै बोलै कालै चालै । कालै झालै घर सूतरे ॥ ८ ॥ श्री० ॥ कालै दूध थकी दही थायै । कालै फल परिपाकरे । विविध पदारथ का ल नपायै । अंतकरै बेवाकरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बारचक्रवै । वासुदेव बलवंतरे । कालै कविलत कोई नदीसै । जसुकरता सुर सेवरे

॥ १० ॥ श्री० ॥ उत्सर्पणि अवसर्पणि आरा । बे बे जूजूयें आंतरे । षटरितु काल विशेष विचारो । भिन्नभिन्न दिन रातरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले बाल बिलास मनो हर । यौवन कालाकेशरे । बुढ्ढपणें हुयवलि २ दुर्बल । सकति नही लवलेसरे ॥ १२ ॥ श्री० ॥ (ढाल२ गिरु आ गुण श्रीवीरजी ए चाल) ॥ ॥ ❀ ॥ तब सुभाव बादी वदैजी । कालकिसुं करै रंक । वस्तु सुभावै नीपजे जी । विणसै तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ (बिवेकी जुओ २ वस्तु सु भाव) ॥ छतै योग जोवनवती जी । वांझणि न जणें बाल । मूंअनही महिला सुखे जी । करतल ऊगै न बाल ॥ १४ ॥ बि० ॥ विणस भाव नवि संपजै जी । किमह पदारथ कोय । अंब नलागै नींबफेजी । वागवसंते जोय ॥ १५ ॥ बि० ॥ मोर पींछ कुणचीतरै जी । कुण करै संध्या रंग । अंगवि विध सविजीवनाजी । सुंदर नयन कुरंग ॥ १६ ॥ बि० ॥ कांटा बोरबंबूल नाजी । कुणें अणियाला कीध । रूप रंग गुण जूजूआजी । तस फल फू ल प्रसिद्ध ॥ १७ ॥ बि० ॥ विसहर मस्तके नितवसैजी । मणिहरै विस तत काल । परबत थिर चल वायरोजी । नरथ अगननी झाल ॥ १८ ॥ बि० ॥ मद्य तुंब जलमां तरैजी । बूडै काग पाहाण । पंख जाति गयणें फिरे जी । इणपरै सहिज बिनाण ॥ १९ ॥ बि० ॥ वाय सूंठ थी नपसमें जी । हरडै करै विरेच । सीझैनहि कणकांगमो जी । सकल सुभाव अनेक ॥ २० ॥ बि० ॥ देश विशेषै काठनोजी । नुयमां थायै पाखाण । संख अस्थिनो नी पजै जी । क्षेत्र सभाव प्रमाण ॥ २१ ॥ बि० ॥ रवि तातो शशि सीयलो जी । भव्या दिक बहु भाव । नए द्रव्य आपापणा जी । न तजै कोई सुभाव ॥ २२ ॥ बि० ॥ ❀ ॥ (ढाल३) कपूर हुवै अति उजलो रे एचाल ॥ काल किसुं करै बापमोरे । वस्तु सुभाव अकज्ज । जो नहोइ भवतव्यता जी । तो किम सीझै कज्ज रे ॥ २३ ॥ (प्राणी मकरो मनजंजाल) ॥ एतो भा वी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ जलधितरै जंगल फिरै जी । कोमि यतन करै कोय । अणभावी होवै नही जी । भावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंब मौर वसंतमां जी । फालै कोई लाख । खरचा केई खांखटी जी । केइ आंबा केई साख रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ वांछल जिम भवतव्यता जी । जि

ण २ दिशे उजाय । परवस मन माणस तणो जी । तृण जिम पूठै धाय रे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियत वसै विण चिंतव्यूं जी । आवी मिल ततकाल । वरसां सोनुं चिंतव्यो जी । नियम करै विसराल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो चक्रि सुन्नूमि तेजी । समुद्र पड्यो विकराल । ब्रह्मदत्त चक्री तणा जी । नयन हरै गोवाल रे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयल करै जी । किम रा खीसरे प्राण । आहेमी शर ताकीयो जी । ऊपर ऊमें सींचाणरे ॥ २९ ॥ प्रा० ॥ आहेमी नागें मस्यो जी । बाण लग्यो सींचाण । कोकूहो उमी गयो जी । जोउ नियत परमाणरे ॥३०॥ प्रा०॥ सस्त्र हएया संग्राम मांजी । रानपड्यां जीवंत । मंदिर मांहें मानवी जी । राख्याही नरहंतरे ॥ ३१ ॥ प्रा० ॥ (ढाल४ राग मारुणी मनोहरणी) ॥ ❀ ॥ काल स्वभाव नियत मति कूमी । करम करै ते थाय । करमें नरय तिरय नर सुर गति । जीव ऊवंतरै जाय ॥ ३२ ॥ (चेत न चेतज्योरे करम न छूटै कोय) ॥ करमें राम वस्या वनवासे । सीता पामी आल । कर्मे लंका पति रावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मे कीमी कर्मे कुंजर । कर्मे नर गुणवंत । कर्मे रोग सोग दुख पीमित । जनम जायै विलसंत ॥ ३४ ॥ (चे०) कर्मे वरस लगे रिसहेसर । उदक न पा में अन्न । कर्मे जिननें जोउ गिमारै । खीलारोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्मे एक सुख पालै वैसै । सेवक सेवै पाय । एक हय गय चढया चतुर नर । एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी परि । जगहीं मै हाहूतो । कर्म वली ते लहै सकल फल । सुख ऊर सेजै सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ नंदर एकै कीधो उद्यम । करंमीयो करकोले । मांहे घणा दिवसनो भूखो । नागरह्यो ममोले ॥ ३८ ॥ चे० ॥ बिवर करी मूषक तसु मुखमां दीये आपणुं देह । मार्ग लही वन नाग पधारया । कर्म मर्म जोवो एह ॥ ३९ ॥ चे० ॥ (ढाल ५ मी) ॥ (तो चोढियो घण मान गजै एचाल) ॥ ❀ ॥ हिव उद्यम वादी ऊणेए एच्यारे असमत्थतो । सकल पदारथ साधवा ए । उद्यम एक समरत्थतो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए । स्युं नविसीजै काजतो । रामें रयणायर तणी ए । लीधो लंका राजतो ॥ ४१ ॥ करम नियतिनें अनुसरे ए । जेहमां सत्वन होयतो । देवल बाघ मुख पंखि

या ए । पिण पैसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विण उद्यम किम नीकलै ए । तिल माहेंथी तेलतो । उद्यम थी ऊंची चढैए । जोवो एकेंद्रिय बेलतो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इकसमें ए । जेह नसीऊं काजतो । ते फिर उद्यमथी हुवैए । जो नवि आवे वाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊख्यां विनाए । नविरंधायै अन्नतो । आवी न पमै कोलीयोए । मुखमां खेपै जतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिताए । उद्यम कीधा कर्म्म तो । उद्यम थी दूरे टलै ए । जोउ कर्म नों मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करीए । कीधा पापअनंततो । उद्यमथी षट मासमां ए । आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपै २ सरवर भरै ए । काकरै २ पालतो । गिर जेहवा गढ नीपजै ए । उद्यम सकत निहालतो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जल विंदुओए । करे पाहाणमां ठामतो । उद्यम थी विद्या भणें ए । उद्यम जोमै दामतो ॥ ४९ ॥ (ढाल६) एढिंमी किहा राखी एदेशी ॥ ❀ ॥ एपांचेही वाद करंतां । श्री जिनचरणे आवै । अमीयरसै जिन वयण सुणीनें । आणंद अंग नमायैरे ॥ ५० ॥ (प्राणी समकित मतिम न आणोरे । नय एकांत मताणोरे । ते मिथ्या मत जाणोरे । आंकणी) ॥ एपांचे समुदाय मिल्या विण । कोई काज न सीझै । आंगुल जोगे कवल तणी पर । जे बूझै तें रीझैरे ॥ ५१ ॥ प्रा० ॥ आग्रह आणी कोई एकने । एहमां दियै वधाई । पिण सेनामिल सकल रणं गण । जीतै सुभट लहाईरे ॥ ५२ ॥ प्राणी० । तंतुसन्नावै पट उपजावै । काल क्रमें वणाई भवतव्यता होयें ते नीपजे । नही तो विघन घणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणीस० । तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक । भाग्य सबल सहकारी । एपांचे मिल सकल प दारथ । उतपत जोवो विचारी रे ॥ ५४ ॥ प्राणी० ॥ नियति वसें हलुकर्म थइने निगोद थकी नीकलियो । पुण्यें मनुज भवादिक पामी । सदगुरुनें जई मिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ भवथितनो परपाक थयो तब । पंडित वीर्य उलसियो । भव्यस्वभावै शिव गति गामी । शिव पुर जईनें वसियोरे ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमान जिन इण परि वीनवै । सासन नायक गावो । संघ सकल सुख दाई जेहथी । स्यादबाद रसपावोरे ॥ ५७ ॥ प्रा० ॥ (कल श) इम धर्म नायक सुगति दायक वीर जिनवर संथुएयो । सय सतर संवत

वन्हिलोचन वर्ष हर्ष धरी घणो। श्री विजय देव सूरींद पटधर विजय प्रभु मुणिंदए। कीर्त्ति विजय वाचक सीस इण परि विनय कहै आणंदए ॥५८॥ इति पंच समवाय स्तवनं समाप्तम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १४ गुणठाणास्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थंभणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ सुमतिजिणंद सुमतिदातार। वंदुं मनसुध वारंवार। आणीभाव अपार। चवदै गुणथानक सुविचार। कहिस्युं सूत्र अरथ मनधार। पामें जिम भवपार॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो। बीजो सास्वादन मन आणो। तीजो मिश्र वखाणुं। चोथो अविरत नाम कहाणो। देशविरति पंचम परमाणो छठो प्रमत्त पिछाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सलहीजै। अठम अपूरव करण कहीजै। अनिवृत्ति नाम नवम्म। सूखमलोभ दसम सुविचार। उपशांत मोह नाम इग्यार। खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधाम। चउदम थयो अयोगी नाम। वरणुं प्रथम विचार। कुगुरु कुदेव कुधर्म्म बखाण। तेह लक्षण मिथ्या गुणठाण। तेहना पंचप्रकार ॥ ४ ॥ (ढाल २) सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ जेह एकान्त नय पक्ष थापी रहै। प्रथम एकान्त मिथ्यामती ते कहै। ग्रंथ अस्थापि थापै कुमति आपणी। कहै विपरीति मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमें सारिखा। तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा। सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणें। संसयी नाम मिथ्यात चोथो भणें ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंधरातो रहै। एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै। एह अनादि अनंत अभव्यनें। करिय अनादि थिति अंत सुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंड जीमनें वमें। सरस रस पाय वलि स्वाद केहवोगमें। चौथ पंचम छठे ठाण चढिनें पडै। किणहि कषाय वसिआय पहिलै अडै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली। सहीय सासादनें थिति इसी सांभली। हिव इहां मिश्रगुण ठाण त्रीजो कहे। जेह उत्कृष्ट अंतर महुरत लहै ॥ ९ ॥ (ढाल ३) बेकर जोगीताम ॥ एहनी ॥ ❀ ॥ पहिला चार कषाय। शमकरि समकिती। कैतो सादि मिथ्यामती ए। ए बेहिज लहै मिश्र। सत्य असत्य जिहां।

सरदहणाबेनं ब्रतीए ॥ १० ॥ मिश्र गुणाजय मांहि । मरण लहै नही । आ उबंध नपजै नवो ए । कैतो लहै मिथ्यात । कै समकित लहै । मतिसर खी गति पर नवै ए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान । उदय करी लहै । म तिविण किहां समकित पणो ए । ते अविरत गुणठाण । तेतीस सागर । साधिक थिति एहनी नणो ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग । निरवेद आ सता । समकित गुण पांचे धरेए । सहु जिन वचन प्रमाण । जिन सास न तणी । अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ केईक समकित पाय । पुदग ल अरधतां । उत्कृष्टा नवमें रहै ए । केईक नेदी गंठि । अंतर महुरतें । चढतें गुण सिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म । त्रिणवलि मोह नी । मिथ्या मिश्र सम्यक्तनीए । साते प्रकृतिजास । परही उपसमें । ते उपसम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध । ते नर क्षायकी । तिणहीज नव सिव अनुसरेए । आगलि वांध्यो आउ । तातें तिहां थकी । तीजै चोथै नवतरै ए ॥ १६ ॥ (ढाल ४) इणपुर कंबल कोइन लेसी ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ पंचम देसविरति गुणठाण । प्रगटै चउकसी प्रत्याख्यान । जेण तजै बावीस अनक्ष । पाम्यो श्रावकपणो प्रतक्ष ॥ १७ ॥ गुण इक वीस तिके पिण धारै । साचाबारै ब्रत संभारै । पूजादिक षटकारज साधै । इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आरत रोद्र ध्यान हुवे मंद । आयो मध्य धरम आनंद । आठ बरस ऊणी पुब्वकोम । पंचम गुण ठाणें थिति जोम ॥ १९ ॥ हिव आगै साते गुणथान । इक २ अंतर महुरत मान । पंच प्रमाद वसै जिण ठाम । तेण प्रमत्त बठो गुणधाम ॥ २० ॥ थिवर कल्प जिन कल्प आचार । साधै षट् आवस्यक सार । उद्यत चोथा च्यार क षाय । तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥ २१ ॥ सूधो राखै चित्तसमाधै । धर मध्यान एकांत आराधै । जिहां प्रमाद क्रिया विधनासै । अपरमत्त सत्तम गुण नासै ॥ २२ ॥ (ढाल ५) नदी यमुनाके तीर उभै दोय पंखीया ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ पहिलै अंसै अठम गुणठाणा तणें । आरंजै दोयश्रेणि संखेपै ते गणें । उपशम श्रेणि चढै जे नरहुवे उपसमी । क्षपक श्रेणि क्षाय क प्रकृति दशक्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरब गुण ल

हैं। अष्टम नाम अपूरव करण तिणें कहै । सुकल ध्याननो पहिलो पायो आदरै। निरमल मन परिणाम अभिग ध्यानें धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै । जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न जाणियै। क्रोध माननें माया संजलणा हणें । उदै नही जिहां वेद अवेद पणों तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सूखम लोभ कांइक शिव अभिलखै । ते सूखम संपराय दशम पंक्ति दखै । संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे । मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपसम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो काल करै किणही परै । तो थायै अह मिंद्र अवर गति नादरै। च्यारवार सम श्रेणि लहै संसारमें। एक भवै दोय श्रेणि अधिक न हुवै किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समी पहिलै पमै। मोह उदै उत्कृष्ट अरध पुगदल रमै। खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही । दशम थकी बारम्म चढै ध्यानें रही ॥ २८ ॥ (ढाल ६ एक दिन कोई मागध आयो पुरंदर पास) ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ खीण मोह नामें गुण ठाणो बारम जाण। मोह खपायो नैमो आयो केवल नाण । प्रगट पणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिव आगै तेरम गुणठाण तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चौकमी क्षयगई र हीय अघातीय एम । प्रकृति पच्यासी जेहनें जूना कापम जेम । दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत । केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरै श्री भगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी ठानी परगट वात । महिमावंत अ ढारे दूषण रहित विख्यात । आठेवरसे ऊणी कही इक पूरव कोमि । उत्कृ ष्टी तेरम गुण ठाणें ए थिति जोमि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूध्या मन वच काय । तेण अयोगी अंत समइ सहु प्रकृति खपाय । पांचे लघु अक्षर उचरतां जेहनो मान । पंचम गतिपामें सिवपद चउदम गुणथान । ॥ ३२ ॥ त्रीजै वारमें तेरमें मांहै न मरै कोइ । पहिलो बीजो चोथो पर भव साथे होइ । नारक देवनी गतिमांहे जाजै पहिलाच्यार । धुरला पांच तिरी मांहिमणुए सर्व्व विचार ॥ ३३ ॥ (कलश) ॥ इम नगर बाहम मेरुमं मण सुमति जिण सुपसाउलै । गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आग ननें भलै । संवत्त सतरैसै बत्तीसै श्रावण वदि एकादसी । वाचक विजय श्री

हरष सानिध कहै मुनि इम धर्म्मसी ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति श्री चतुर्दश गुण स्थान विचार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरण विचार गर्भित स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढुहा) श्रीजिन सासन सेहरो । जगगुरु पास जिणंद । प्रण मी जेहना पाय कमल । आवी चौसठ इंद्र ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवै तिहां । त्रिगढो करै तयार । सम कित करणी साचवै । एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रसंसा समकिती । मिथ्यात्वी होवै मूंक । सूर्य देख हरखै सहू । घणें अंधारै घूक ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ढाल वीर बखाणी० एचाल ॥ ❀ ॥ आप अरिहंत भलै आविया जी । गावै अपछरह गंधर्व्व । समवरण रचै सुरवराजी । सं खेपै ते कहुं सर्व्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवन पति वीश इंद्रें मिल्या जी । सोलह व्यंतर सार । जोइश छ दश वेमाणिय जुड्या जी । चौसठ इंद्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुरपुंज परमार जैजी । भूमि योजन समभाग । मेघ कुमर रचै मेघनें जी । करीय सुगंध छिरकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ धूपणाजी । करय श्री अगन कुमार । वांणव्यंतर हिव वेगसुं जी । रचय मणिपीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहुप पंच वरण जरध सुखै जी । बरष ए जानु परिमाण । भवणवइ देव त्रिगढो भलो जी । करय ते सुणव सुजाण ॥ ८ ॥ आ० ॥ रचय गढ प्रथम रूपा तणोजी । सोवन कांगरै सा र । रवि शशि रयण कोसीसको जी । कनक नो बीय प्रकार ॥ ९ ॥ आ० ॥ रतन गढ रतननें कांगरै जी । रचय वेमाणि सुरराज । भलो त्रीजोगढ भी तरैजी । जीहां विराजै जिनराज ॥ १० ॥ आ० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसै जी । सवा तेत्रीस विसतार । धनुषसै तेरगढ आंतरोजी । पौल पंचास ध णु च्यार ॥ ११ ॥ आ० ॥ दश पंच २ त्रिहुं गढतणी जी । पावगी वीश ह जार । थाक श्रम नहीय चढतां थकां जी । एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ ॥ आ० ॥ पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच्च रहै त्रिगढ आकाश । ते हतल सहु यथा स्थित वसै जी । नगर आराम आवाश ॥ १३ ॥ आ० ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी । नील मणि मोर निरमाण । छुसय धणु मध्य मणि पीठिका जी । उच्च जिण देह परिमाण ॥ १४ ॥ आ० ॥ च्यार आस

ण तिहां चिहुं दिसेंजी । मोतीयें झाक झमाल । सम विचकूण ईसांणमें जी ॥ देव दुंदो सुविसाल ॥ १५ ॥ आ० ॥ देव दुंदुभि नाद उपदिसै जी । जिन गुण गावसी तेह । अह्म जिम आइं शिर ऊपरें जी । गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥ (ढाल) सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ पुव्वदिशि आसणें आइ वैसै पहू । सुरकृत चौमुख रूपदेखे सहु । दीपै अशोक तरु वार गुण देह थी । देखि हरषै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सु विसालए । रूप चिहुं चिहुं दिसें चामर ढालए । योजन गामनी वांणि श्री जिनतणी । भगवंत उपदिसें बार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा रूपथी अगनिकूणें करी । गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरी । ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्री पणें । नैरुत कूंण जिन वाणि भुनी सुणें । त्रिहुं तणा पति वाय कूणमें जाणए । सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए । बारह परष दा मद मछर गेम ए । भूख त्रिष वीसरै सुणें कर जोमए ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच आकास ए । झल हलै तेज धुम चक्र गगनें सही । महक सहु बारणें धूप धांणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहुधरीय पहिलै गढै । होइ पग चारि नरनारि ऊंचा चढे । जिन तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए । वैर तजि वीय गढ रहै सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरषते परषद बारमें । सुणें जिन वाणि धन गणय अवतार में । चौविह देव जिण देव सेवा रचै । मणिम यी मांहिली प्रोलमांहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणी यै । विदसि चौकूण दोइ २ वखाणियै ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए । स्नान पानें वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत *अपराजिया । मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया । तुंवरु पुरुष खट्टंग अर्चि* माल ए । रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिल त्रिगमो नहुअ जिण पुर ग्राम ए । देव महर्द्धिक रचै तिण ठाम ए । करण वारवार नहीं का रण कोई ए । आठ प्रातीहारज ते सही होइ ए ॥ २५ ॥ जिण समवसर णनी रुद्धि दीठी जीयै । तेह धन धन्य अवतार पायो तियै । पास अरदा स सुणी वंछित पूरज्यो । हिव मुझ ताहरो सुख दरसण हुज्यो ॥ २६ ॥

(कलश) इम समवसरणें रुषिवरणें सहू जिनवर सारखी । सरद है ते लहै सुख समकित परम जिन धम पारखी । प्रकरण सिद्धांते गुरू परंपर सुणी सहु अधिकार ए । संस्तव्यो पास जिणंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समव सरण विचार भाषा गर्भित स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आबूजी तीर्थ महिमा स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जात्रीमा भाई आबूजीनी जात्र करे ज्यो । जात्र भणी उमहे ज्यो । तुझे नरभव लाहो लीज्योरे ॥ जात्री० ॥ पंचतीरथी मां हेलाजे। आबू मारूमै देस विराजैरे ॥ जा० ॥ स्वरगथी वादै लागो । उंचो अंबरीयै जाइ लागोरे ॥ १ ॥ जा० ॥ एतो देवांनो वास कहावै । निरखंता त्रिपति नथावेरे ॥ जा० ॥ एतो डूंगरीयानो राजा । एहनीछे वारह पाजारे ॥ २ ॥ जा० ॥ छहरितु वास वणाव्यो । एतो चंपला अंबजां छायोरे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा । जिहां तिहां वनवेल्यां आझारे ॥ ३ ॥ जा० ॥ भार अढारे वणराई । एतो इहांहीज निजरे आईरे ॥ जा० ॥ दह दिस परमल आवै । फूलभानो रंग सुहावेरे ॥ ४ ॥ जा० ॥ ऊपर भूमि विसाला । देव ल दीठा रलीयालारे ॥ जा० ॥ विमल मंत्री वरदाई । चक्केसरि देवि सहाईरे ॥ ५ ॥ जा० ॥ पोरवाड वंस वदीतो । जिण दल पतिसाही जीतोरे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो । पाहण आरास मंगायोरे ॥ ६ ॥ जा० ॥ झीणी २ कोरणी झेरयो । दल मांखण जेम उकेरयोरे ॥ जा० ॥ नवी २ भांतिवनाई । जिहां तिहां कोरणीया झिणाईरे ॥ ७ ॥ जा० ॥ उत्तरै पाहणजेतो । जोषीजै पाहण तेतोरे ॥ जा० ॥ आदिजिणेसर सामी । प्रतिमा थापी हित कामीरे ॥ ८ ॥ जा० उगणीस कोड सोनईया । द्रव्य लागति करि जस लीयारे ॥ जा० ॥ करजो डीनें आगै । मंत्री जिनवर पाय लागैरे ॥ ९ ॥ जा० ॥ पूठै चढीया हा थी । मंगाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल सम वडकोई । भूमं डल मांहि न होईरे ॥ जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला । वस्तुपाल अनै तेजपालारे ॥ जा० ॥ देवनमी रिद्धिपाई । इहां तियां पिण सफल कराईरे ॥ ११ ॥ जा० ॥ तेहवो जिणहर पासैं । वारकोडनी लागति भासैरे जा० ॥ देवराणी जेठाणी । आलानी अजब कहांणीरे ॥ १२ ॥ जा० ॥

इहां देवल सोह वधारी। नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारीरे ॥ जा० ॥ कसवट पांहण केरी। मूरति सुरमा रंग हेरीरे ॥ १३ ॥ जा० ॥ देवल वारो दीठो। तेतो लागै नयणे मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केई देवल पासै। लोकजोवै घणो तमासोरे ॥ १४ ॥ जा० ॥ त्रिणगाउ आगल जाईयै। देवल देखी सुख लहीयैरे ॥ जा० ॥ चौमुख प्रतिमा च्यारो। आदिनाथ देव जुहारोरे ॥ १५ ॥ जा० ॥ सोवनमें साते धातो। झिग मिग रही दिननें रातोरे ॥ जा० ॥ मणि चवदैसै चम्मालो। जिण बिंवनो भार निहालोरे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली भोम सोभागी। जिणवरथी जसुलय लागीरे ॥ जा० ॥ एहनी करणी वाह वाहो। इहांलीधो लखमी लाहोरे ॥ १७ ॥ जा० ॥ ए डुंगरीयै आवी। जिण जात्रकरै मनभावीरे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै। नाटकीया नाच करावेरे ॥ १८ ॥ जा० ॥ रातीजोगो दिवरावो। जिणवरना जस गुण गावोरे ॥ जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो। जातफलीनो जस लीज्योरे ॥ १९ ॥ जा० ॥ आगेथी आवी चाली। वातां केई अचरिज वालीरे ॥ जा० ॥ सुणीयैछै जे कोई। अहिनाणें जो ज्यो तेईरे ॥ २० ॥ जा० ॥ ए तीरथ गुणगावे। जात्रानो फलते पावैरे ॥ जा० ॥ ए तीरथ सम तोलै। कुणआवै रूप चंद वोलैरे ॥ २१ ॥ जा० इति आबूजी स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भवी जिनपूजोरे शीतल जिन पतीरे। नयना नंदन चंद। प्रभुजी विराजैरे सूरति बिंदैरेरे। नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जग हितकारीरे जिनजी अवतरयारे। श्रीदृढरथ नृप गेह। श्रीवछ सोहैरे लांछन सुंदरूरे। कनकवर्ण प्रभुदेह ॥ २ ॥ भ० ॥ विषय निवारीरे संयम संग्रह्योरे। लाधुं केवल नांण। सघन घनाघन जिमधर्म वरसतारे। विचर्या त्रिभुवन भांण ॥ ३ ॥ भ० । वेदनी प्रमुख जे सेष रह्या हुतारे। च्यार अघाती कर्म। दूर निवारयारे अनुक्रम तेहनेंरे। पाम्युं शिव पद सर्म ॥ ४ ॥ भ० ॥ संप्रतिकालैरे श्रीजिन राजनोरे। पूजीजै प्रतिबिंब। प्रतिदिन लहीयैरे प्रभु सुप्रसाद थीरे। वांछित फल अविलंब ॥ ५ ॥ भ० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतांरे। दुष्कृत दूर पुलाय। इंद्रीयनिग्रह सुग्रह संपजैरे। समकित पिण दृढ

थाइ ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्यारे । एहवा वचन विलास । ते वहुमानेंरे निज चित्तमें धरयारे । नेमीसुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युंरे सुंदर सोभतोरे । मनधरि अधिक उल्लास । शीतल प्रभुनोरे बिंब भरावीयोरे । सहस फणा वलि पास ॥८॥ज० ॥ वरस अठारह सत्तावीसमेंरे । माधव मास मझार । उज्जल द्वादसी दिवसें थापीयारे । विंब अनेक उदार॥९॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेलें थयारे । बिंबादिक सुविचार । कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनीरे । विधपूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्री जिनलाभ सूरीश्वर दीपतारे । श्रीखर तर गछ जाण । तासपसाय में शीतल जिन थुण्यारे । विबुध हुमाकल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अढाई द्वीप २० विरहमान स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदुं मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस । दीप अढीमें दीपें जे वंता जगदीस । केवल ग्यांननें धारें तारें करि उपगार । किण २ ठामें कुण २ जिन कहिस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पेंतालीस लक्ष जोयण मानुक्ष क्षेत्र प्रमाण । वलियाकारें आधे पुष्करसीमा जाण । दोय समुद्रे सोहे दीप अढाई सार । तिणमें पनरें करमा भूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूदीप समें विच थाल आकार । लांबो पिहुलो इकलख जोयणनें विसतार । मोटो तेहनें मध्य सुदरशण नामें मेर । तिणथी दिसा विदिसांनी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षणदिसि एहजरत सुजक्षेत्र । पांचसें बावीस जोयण कला तेहनो वेत्र । उत्तरखंमें एहवो ऐरवतक्षेत्र कहाय । इण विहुं करमांभूमी अरा बई फिरता जाइ ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस्र बसें चौरासी जोयण जाण । च्यारकला ए महाविदेह विखंभ वखाण । बावीससें तेरे जोयण एकविजें पहुलाण । एहवी वत्तीस विजय विराजें जेहनें ठाण ॥ ५ ॥ मेरुविचें कर पूरब पछिम दोय विभाग । सोलें२ विजय तिहां विचरें श्रीवीतराग । सासते चोथे आरें तारें श्रीअरिहंत । एहवो महाविदेह करम भूमि त्रीजीतंत ॥ ६ ॥ पूरवविदेह विजें पुष्कलावति आठमी ठाम । पुंमरीकणीनगरी तिहां श्री सीमंधर स्वांम । वप्रविजें पचीसमी विजया पुरनो नाम । पछिम विदेह बीजो युगमंधर कीजें प्रणाम ॥७॥ तिमहीज नवमी वछविजें वलि पूरवविदेह । नयर सु

सीमा त्रीजो बाहु नमुं धरि नेह। नलिनावर्त्त चौवीसमी पश्चिम विदेह वखाण। वीतसोका नगरी तिहां चौथो सुवाहु जांण॥ ८॥ ए च्यारेई जिणवर जंबूद्वीप मझार। महाविदेह सुदरशण मेरुतणें परकार। एहवो जंबूद्वीप महागढ जेम गिरंद। खाई रूपै दोइलख जोयण लवणसमंद॥ ९॥ (ढाल दीवाली दिन आवीयो एचाल)॥ दीपै बीजो दीपए। धन २ धातकीखंम। पिहुलो चिहुं लख जोयणे। मंमल रूपे मंम॥ १०॥ दी०॥ दोइ भरत दोइ ऐरवत। दोइ वलि महाविदेह। करमभूमी षटठै जिहां। तणहीज नामें एह॥ ११॥ दी०॥ पूरब पश्चिम धातकी। खंम गिणीजै दोन। विजयमेरू पूरब दिसै। पश्चिम अचलमेरु जोइ॥ १२॥ दी०॥ इक २ मेरुनें आंतरै। करमभूमि तीन २। निज २ मेरुथी मांमिनें। लेखो चिहुं दिस लीन॥ १३॥ दी०॥श्रीसुजात जिन पांचमो। छठो स्वयंप्रभू ईस। रिषभानन जिन सातमो। समरीजे निस दीश॥ १४॥ दी०॥ अनंत वीरज जिन आठमो। ए च्यारे जिन राय। पूरब धातकी खंममें महाविदेह रहाय॥ १५॥ दी०॥ पहिली चिहुं जिननी परै। विजय नगर दिशिठाण। तिणहीज नामें अनुक्रमें। विजय मेरु अहिनाण॥ १६॥ दी०॥ नवमो सूर प्रभु नमुं। दसमो देवविशाल। इम वज्रधर इग्यारमों। त्रिकरण नमुं त्रिहुंकाल॥ १७॥ दी०॥ बारमो चंद्रानन जिन। पश्चिम धातकी मांहि। बिचरै च्यारे जिणवरा। अचलमेरु तणाहि॥ १८॥ दी०॥ एहवो धातकी खंमए। परदक्षणा परकार। अठलख जोयण वींटीयो समुद्र कालोदधि सार॥ १९॥ दी०॥ (ढाल ३ पहिली प्रतिमा एकणमा सनी० एचाल)॥ कालोदधिनें पैलै पारए। बींट्यो चूडी जेम विचालए। सोलह लख जोयण विसतारए। दीप पुष्कर वर अति सुखकारए। (त०) सुखकार पुष्कर दीप त्रीजो तेहनें आधैपगै। विचपड्यो परवत मानुषोत्तर मनुष्यक्षेत्र तहांलगै। तिण आधिकर अठलाख जोयण अरधपुष्कर एकए। तिहां करमभूमी छए कहीजै धातकी खंम जेमए॥ २०॥ (ढाल) आधै पुष्करनें पूरब दिसे। मंदरनामें मेरु तिहांवसै। पश्चिम विज्जमाली मेरुए। इहां किण इतरो नामें फेरए। (त०) फेरए इतरो इहां नांमें अवरठामें को नही। एक एक मेरे तीन तीने करमभूमी तिहां कही। इम भरत ऐरवत महा

विदेहै नांमसरखो हेतए । तिणहीज नामें विजै सगली सासता धर्मखेतए ॥ २१ ॥ (ढाल) धातकीखंमै तिम पुष्कर सही । इहां खेत्रांनी रचना वि ध कही । वार २ कहतांए विसतारए । पहिला परखेज्यो सुविचारए । (ज०) सुविचार वाकी तेहसगलो नगर तिमहीज मनगमें । पूरबै पछिम जेहनीते तेह तिमहीज अनुक्रमें । श्रीचंद्रवाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तिर्थ करा । पूरबै पुष्कर अरधमां हे सरबजीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ (ढाल) वैरसेन बंधु जिन सतरमो । श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो । देवजसा उगणीसम देव ए । जसोरिष वीसम जिण देवए । (ज०) जिणच्यार पुष्कर अरध मां हि कह्या पछिम भागए । तिहां मेरु विद्युन्मालि चिहुंदिशि विचरता बीत रागए । चौरासी पूरबलाख वरसां आउ इक २ जिनतणो । पांचसै धनुष सरीर सोहे सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ (ढाल) कालजघन्यै एजिण वीसए । हिव उतकृष्टे भेदकहीसए । एकसो सत्तरि तिहां जिणवर कहै । पांचे भरते जिमपांचे लहै । (ज०) जिणलहै पांचे तेमपांचे ऐरवत मि ल दशहुवा । इक २ विदेहै वत्तीस विजयां तिहां पिणउे जू जू आ । एक सो सत्तरि एम जिनवर कोम्निवसय वलि केवली । नव सहस कोमी अवर मुनिवर वंदीयै नित ते वली ॥ २४ ॥ (ढाल) इहां भरतें ऐरवतें आजए पांचमें आरे नही जिनराजए । धन २ पांचे महाविदेहए । विचरै वीसे जिन गुणगेहए । (ज०) गुणगेह दोष अढार वरजित अतिसया चौतीसए । चौसठि इंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीसए । तिहां आज तारण तरण विचरै केवली दोय कोरुए । दोईसहस कोमि सुसाधु वीजा नमुं बे कर जो रुए ॥ २५ ॥ (कलश) इम अढीदीपै पनर करमाभूमि खेत्र प्रमाणए । सि द्धांत प्रकरण मांहभाष्या वीस विहरमाणए । श्रीनगर जेशलमेर संवत सतर गुणतीसै समै । सुख विजय हरष जिणंद सानिध नेहधरि धर्मसीनमें ॥ ॥ २६ ॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मभूम्यादि विचार गर्भितं विंशति विहरमा ण जिनानां वृहिस्तवनं ॥ ❀ ॥ १ जंबुद्रीप, २ धातकी खंम, आधो पुष्करद्रीप, एवं २ ॥ द्रीपमें ५ भरत ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्मभूमीमें विचरता सास्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल शास्वताचैत्य नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल वेकर जोगीताम एचाल) ॥ रिषभानन वधमांन । चंद्रानन जिन । वारिषेण नामें जिणाए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद । त्रिजुवन सासता प्रणसुं बिंब सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोमि । लाख बहुत्तर । चे ईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरेसै निव्यासी कोमि । साठ लाख सुंद र । जुवनपती मांहि मन वसीए ॥ ४ ॥ बारै देव लोक प्रासाद । चौरासी लाख । सहस छिन्नूनें सातसैए ॥ ५ ॥ (ढाल २ आव्यो तिहां नरहर एचाल) ॥ ❀ ॥ हिवे नव ग्रीवेकै पंचानुत्तर सार । चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार प्रत्येकै प्रतिमा वीसासो तिहां जांण । अम्त्रीस सहस सत साठ अढै गु ण खांण ॥ ६ ॥ नंदीसर वांवन कुंमल रुचिक वखांण । चऊ २ चेई हर साठ सबे त्रिहुं ठांण । इकसो चौवीसे गुण प्रतिमा चिहुंनांम । चारसै चालीसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुलगिरि तीस । मेरूवन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस । मानुषोत्तर परवत च्यार २ इखुकार । अैसो अति सुंदर वक्षस्कार मझार ॥ ८ ॥ (ढाल ३) ॥ दिग्गज गिरचालीस । असीद्रह सुजगीस । कंचन गिर वरुए । एक सहस धरुए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य । वीस सतरसो आढ्य । सत्तर महानदीए । पं च चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरुक्ख । इग्यारैसै सत्तर सुक्ख । कुं मत्रणसय असीए । वीस जमग वसी ए ॥११॥ (ढाल ४) ॥ त्रिण सहस सो एक निवांणुंरे । जिनवर प्रासाद वखांणुं । वीस सो ए अंक गुणीयैरे । ती र्थंकर प्रतिमा थुणीयै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि त्र्यासीरे । प्रतिमा आठ सोनै असी । सरवालै सब मेली जैरे । जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लक्खारे । दोयसै निव्यासी कयरुक्खा । हिव प्रतिमा ग्यांन कहीजैरे । जिनवरनी आंण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरैसै वैतालीस को मीरे । अम्वन लख अधिके जोमी । छत्तीस सहस अधिक कहीयैरे । प्रति मा सगली सरदहीयै ॥ १५ ॥ (ढाल ५ मी) ॥ जोइस विंतर प्रतिमा सा सती । असंख्यात वलि जेहोजी । पाय कमल तेहना नित प्रणमीयै । सो वन वरण सुदेहोजी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदीयै । सुंदर सकल

सरूपोजी। पूजै प्रतिमा चोविह देवता। वलिय विद्याधर नूपोजी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिन प्रतिमा वोली जिन सारखी। हित सुख मोक्ष नी दानोजी। न वियणनें नवसायर तारवा। प्रवहण जेम प्रधानोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभि गम प्रमुख मांहि नाषीयो। एसहु अरथ विचारोजी। सांनलितां नण तां सुख संपदा। हियमै हरष अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० ॥ (कलश)॥ इम सास ता प्रासाद प्रतिमां संथुएया जिनवर तणा। चिहुं नांम जिण चंद तणा त्रिनुवन सकलचंद सुहावणा। वाचना चारज समय सुंदर गुणनणें अनिरा मए। त्रिहुं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा सुख परणांमए ॥ ❀ ॥
इति शास्वता जिनचैत्य बिंबसंख्या स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे हुंतो नरवागईथी नटजमुनाके तीरजो० एचाल० ॥ हांरे ह्मारे धरमजिणं दसुं लागी पूरण प्रीतजो। जीवरूलो ललचाणो जिनजीनी नलगेंरेलो। हांरेमुनें थास्पें कोइक समेंप्रनु सुप्रसन्न जो। वातरूलीतबथास्पे माहरी सवि वगेरेलो॥१॥हांरेकोई दुर्जननो नंजेरयो माहरो नाथजो। नलव स्पे नहिक्यारे कीधी चाकरीरेलो। हांरेमोरा स्वामीसरीषो कुणले दुनियां मांहिं जो। जईयेरे जिम तेहने घर आस्याकरीरेलो ॥ २ ॥ हांरे जस सेव्यांसेती स्वार थनी नसिद्धजो। ठालीरे सीकरवी तेहथीगोठडीरेलो। हांरेकांई झूठुंखायते मि ठाइनें माटेंजो। क्याहीरे परमारथनी नहि प्रीतडीरेलो ॥३॥हांरेप्रनु अंतरजां मी जीवनप्राणाधारजो। वायोरे नवि जाएयो कलियुग वायरोरेलो। हांरे मोरा लायक नायक नगति वत्सल नगवांनजो। वारूरे गुणकेरा साहिब सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हांरेप्रनु लागी मुफनें ताहरी माया जोरजो। अल गारे रह्याथी होइन नोगलोरेलो। हांरे कुण जांणें अंतर गतिनी विण महाराजजो। हेजेंरे हसी बोलो ढंमी आंमलोरेलो ॥ ५ ॥ हांरेताहरे मुखनें मटकें अटक्यूं माहरुं मन्नजो। आंखरूली अणीआली कांमण गारीयुंरेलो। हांरे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुफजो। रातीरे प्रनुरागे नरहे वारीयांरेलो ॥ ६ ॥ हांरे प्रनु अलगा तोपिण जाणज्यो करीनें

हजूरजो। ताहरीरे बलिहारी हुंजाउं वारणेंरेलो। हांरे कवि रूपविबुधनो मो हन करै अरदासजो। गिरूआ थई मन आंणो ऊलट अतिघणोरेलो ॥ ७ ॥ इतिश्री धर्म नाथ जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकित द्वारगुंनारे पेसतांजी। पापपडल गयादूररे। मोहन मरुदेवीनो लालजोजी। दीठो मीठो आनंदपूररे ॥ १ ॥ स० ॥ आयूवरजित सातेकर्म नीजी। सागर कोमा कोमी हीणरे। स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी। वीरज अपूरबनो घरलीधरे ॥२॥ स० ॥ चुंगलत्रागी आद कषायनीजी। मिथ्यातमो हनी सांकलसाथरे। बार उवामा सम संवेग नांजी। अनुत्रव त्रवनें वेठो नाथरे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधुं जीवदया तणुंजी। साथीयो पूरो सरधारूपरे। धूपव टी प्रजुगुण अनुमोदनाजी। त्रिगुण मंगल आठ अनूपरे ॥ ४ ॥ स० ॥ सं बरपांणी अंगपखालणेंजी। केशर चंदन उत्तम ध्यांनरे। आतम गुण रुची मृग मद मह महेंजी। पंचाचार कुशम परधानरे ॥ ५ ॥ स० ॥ त्राव पूजानें पा वत आतमाजी। पूजो परमेसर पुन्यपवित्ररे। कारणजोगें कारज नीपजेजी खिमा बिजय जिन आगम रीतरे ॥ ६ ॥ स० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी। नाम जपुं निसदीसजी। चत्तारी अठ दश दोय वंदियाजी। चिहुंदिस जिन चौवीसजी ॥ १ ॥ म० ॥ जो जन जोजन अंतरेंजी। पावन साला आठजी। आठ जोजन ऊंचो देहरोजी दुख दोहग जाये नाठजी ॥ २ ॥ म० ॥ त्ररतें त्रराव्या त्रला देहराजी। सोनै प्यारा थंत्रजी। आप मूरति करे सेवनाजी। जांणे जोईजै ऊत्रजी ॥ ३ ॥ म० ॥ गौतमस्वामि तिहां चढ्याजी। आंणी त्रागीरथ गंगजी। गोत्र तीर्थंकर वांधियोजी। रावण नाटक रंगजी ॥ ४ ॥ म० ॥ देवे नदीधी मुऊनें पांखमीजी आवुं केम हजूरजी। समय सुंदर कहै वंदनाजी। प्रह ऊगमतें सूरजी ॥ ५ ॥ म० ॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अनंत जिन आपज्योरे) ॥ एचाल ॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे तुझ अनंत अपार । तेशांनलतां ऊपनीरे । रुचि तिण पारउतार ॥ १ ॥ अजि ताजिन तारज्योरे । तारज्योदीन दयाल । अजित जि० (आंकणी०) जे जे कारण जेहनोरे । सांमग्री संयोग । मिलतां कार्य नीपजेरे । कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ २ ॥ अ० ता० ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसुरे । जहि कारण संजोग । निज पद कारक प्रनु मिल्यारे । होय निमित्त मनोग ॥ ३ ॥ अ० ता० अ० अज कुल गत केसरी लेहेरे । निज पद सिंघ निहाल । तिम प्रनुनक्तें नवि लेहेरे । आतिम शक्ति संनाल ॥ ४ ॥ (अ० ता०) ॥ कारण पद कर्त्ता पणेरे करि आरोप अनेद । निज पद अर्थी प्रनुथकीरे । करै अनेक नमेद ॥ ५ ॥ (अ० ता० अ०) अहवा परमातम प्रनूरे । परमानंद स्वरूप । स्याद्वाद सत्तार सीरे । अमल अखंम अनूप ॥ ६ ॥ (अ० ता० अ०) आरोपित सुख भ्रमट ल्योरे । नास्यो अव्याबाध । समरयो अनि लाखी पणोरे । कर्त्ता साधन साध्य ॥ ७ ॥ अ० ता० अ० ॥ ग्राहकता स्वांमित्वतारे । व्यापक नोक्ता नाव । कारणता कारज दशारे । सकल ग्रह्युं निज नाव ॥ ८ ॥ अ० ता० अ० ॥ श्रद्धा नासन रमणतारे । दांनादिक परिणांम । सकल थया सत्तारसीरे । जिन वर दरशन पांमि ॥ ९ ॥ अ० ता० अ० ॥ तिणें निर्यामक माहणोरे । वैद्य गोप आधार । देवचंद सुख सागरूरे । नाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ता० अ० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिझायमाला लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढंढण रिषजीनें बंदणा ॥ हुंबारी ॥ नत्कृष्टो अणगारेरे ॥ हुंबारी लाल ॥ अनिग्रहलीधो एहवो ॥ हुं० ॥ लेस्युं सुद्ध आहारेरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठै गोचरी ॥ हुं० ॥ नमिलै शुद्ध आहारेरे ॥ हुं० ॥ मूल नजे अणसूझतो ॥ हुं० ॥ पंजर कीधो गातरे ॥ हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरिपूछै श्रीनेमिनें ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस अढारेरे ॥ हुंबा ॥ नत्कृष्टो कुण एहमें ॥ हुं० ॥ मुऊनें कहो विचारेरे ॥ हुंबा० ॥ ढंढ० ॥ ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखियो ॥ हुं० ॥ श्रीसुख नेमि जिणंदरे ॥ हुं० ॥

कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन जादव कुल चंदरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ हुंवा ॥ वांद्या कृष्णनरेसरे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखनें ॥ हुं० ॥ आएयो नावविसेसरे ॥ हुं ॥ ५ ॥ ढं ॥ मुऊ घरआवो साधुजी ॥ हुं ॥ ल्यो मोदक बे सुघरे ॥ हुं० ॥ मुनिवर विहरीनें पांगुरया ॥ हुं ॥ आया प्रनुजीनें पासरे ॥ हुं ॥ ६ ॥ ढं ॥ मुऊलब धै मोदक मिल्या ॥ हुं ॥ कहोनें तुमे किर पालरे ॥ हुं० ॥ लबधिनही बन्न ताहरी ॥हुं॥ श्रीपति लबधि निधानरे ॥ हुं ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नहीं ॥ हुं ॥ चाल्या परठवा काजरे ॥ हुं ॥ ईंटनिवाहें जाइनें ॥ हुं ॥ चूरें करम समाजरे ॥ हुं ॥ ८ ॥ ढं ॥ आणी चढती नावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाणरे ॥ हुं ॥ ढंढणरिषि मुगतें गया ॥ हुं ॥ कहै जिन हरष सुजाणरे ॥ हुं० ॥ ९ ॥ ढं ॥ इति ढंढण मुनी सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀

॥ ❀ ॥ अथ धन्नारिषि सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन वांणी रे धन्ना । अमीय समाणी मोरा नंदन । मन मैतो मानीरे नंदन ताहरें ॥ १ ॥ तुं अतिही बैरागीरे धन्ना । धरमनो रागी मोरा नंदन । माहरो तो मनमोरे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसि दीसै रे धन्ना । तो विनसूनी (मो०) । अनुमति देतांरे जीन बहै नही ॥ ३ ॥ वत्तीसे नारीहो धन्ना । अतिही पियारी । (मो) । बाणी तो बोलैरे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालकतो कामणीरे धन्ना । वय पिण तरुणी । (मो०) । गज गति चालैरे चाल सुहा वणी ॥ ५ ॥ ए घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । (मो०) कोम्बित्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणोरे धन्ना । वय पिण जाणो । (मो०) नोगवि लेज्योरे नोग सुहा मणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलोरे धन्ना । नहीय सुहेलो (मो०) सुगम नही बैरे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर घर निक्षा हो धन्ना । गुरुतणी सिख्या । (मो) कहनी तो रहणीरे नही बै सारषी ॥ ९ ॥ इक बारें सुणीयै हो धन्ना । आगम नणीयै । (मो०) । जिनवर जांणोहो मुकर जोगबै ॥ १० ॥ बनवासै रहणा हो धन्ना । परीसह सहनो । (मो) । कोमल केसांरे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें नाष्यो हो अम्मा । मू

ठन आख्यो (मोरी अम्मा) ठुकर मारग जननी दाखीयो ॥ १२ ॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा । झूठन आखी । (मोरी अम्मा) । कायरमारग जननी दाखीयो ॥ १३ ॥ एजग स्वारथी हे अम्मा । नही परमारथि । (मोरी अम्मा) बीर बखाएयोरे परषदा सहु सुएयो ॥ १४ ॥ में इम जाएयो हे अम्मा । बीर बखाएयो । (मोरी अम्मा) । एधन जोवन आऊ थिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजै हे अम्मा । ढीलन कीजै । (मोरी) । जोखिण जाइसु फिर आवै नही ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा । जीव सुखपायो ॥ (मो०) संजम लीधोरे मनमां गह गह्यो ॥ १७ ॥ छठ २ पारणें हे अम्मा । विग य निवारण ॥ (मो०) ॥ बीरबख्याएयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं जम पालै हे अम्मा । दूषण टालै ॥ (मो०) ॥ अंग इग्यारह अरथ रू मा भणें ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नव पख वाम ॥ मो० ॥ मास संथारै हो सरबारथ सिधि लह्यो ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीधन्नाऋषि सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कर्म सिझाय लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव दानव तीर्थंकर गणधर । हरिहर नरवर सबला । कर्म प्र माणें सुख दुख पाम्यां । सबल हुवा महा निबलारे प्राणी । कर्म्म समो नही कोई ॥ १ ॥ आदी सरजीनें कर्म्म अटारया । बरस दिवस रह्या भूखा । बीरनें वारै बरस दुख दीधा । नपना ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्रा० ॥ २ क० ॥ साठ सहस सुत मारया एकणदिन । जोध जुवान नर जैसा । सगर हुवो महापुत्रनो दुखियो । कर्म्म तणा फल अैसारे ॥ प्रा० ॥ ३ क० ॥ बत्तीस सहस देसांरो साहिब । चक्री सनत कुमार । सोले रोग शरीरमें नपना । कर्म कीयो तनु छारेरे ॥ प्रा० ॥ ४ क० ॥ कर्म्म हवाल कीया हरीचंदनें बेची सुतारा राणी । बार बरस लगमाथै आएयो । नीच तणें घर पाणीरे प्रा० ॥ ५ क० ॥ दधिबाहन राजानी बेटी । चावी चंदनबाला । चौपदज्युं चौहटामें बेची । कर्म्म तणा ए चालारे ॥ प्रा० ॥ ६ क० ॥ संभूम नामें आ ठमो चक्री । कर्में सायर नाख्यो । सोलै सहस जल्ल देखै । पिण किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० ॥ ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री । क

मैं कीधो आंधो । इमजाणी प्राणी थेकांइ । कर्म्म कोई मति बांधोरे ॥ प्रा० ॥ ८ क० ॥ उप्पन कोरु यादवनो साहिब । कृष्ण महाबल जाणी । अटवी मांहि मूंवो एक लरो । बिल २ करतो पाणीरे ॥ प्रा० ॥ ९ क० ॥ पांरव पांच महा झूझारा । हारी द्रोपदा नारी । बारै बरस लग बन रु बस्या । भमिया जेम भीख्यारीरे ॥ प्रा० ॥ १० क० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता । लखमण रावण मारयो । एक लखै जग सहु नर जीत्यो ते पिण कर्म्मसुं हारयोरे ॥ प्रा० ॥ ११ क० ॥ लखमण राम महा बल वंता । अरु सतवंती शीता । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या । बीतक बहु तसबीतारे ॥ प्रा० ॥ १२ क० ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा । बेटै बांध्यो मुसकै । धरमी नरनें करम धकायो । करमसुं जोरन किसकारे ॥ प्रा० ॥ १३ क० ॥ सतीय सिरोमणी द्रौपदी कहीयै । जिन सम अवरन कोई । पांच पुरुषनी हुइ ते नारी । पूरब कर्म्म कमाईरे ॥ प्रा० ॥ १४ क० ॥ आभानगरी नो जे स्वामी । साचो राजा चंद । मांई कीधो पंखी कूक डो । कर्म नाख्यो ते फंदरे ॥ प्रा० ॥ १५ क० ॥ ईशरदेव पारबती नारी करता पुरुष कहावै । अहिनिस महिल मसाणमें बासो । भिख्या भोजन खावैरे ॥ प्रा० ॥ १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रातदिवस रहै अटतो । सोलकला ससिधर जगचावो । दिन २ जायें घटतोरे ॥ प्रा० ॥ १७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें । भांज्या ते पिण साजा । रुद्धि हरष करजोरीनें वीनवै । नमो २ करम महाराजारे ॥ प्रा० १८ क० ॥ इति श्री कर्म्मसिझाय संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शीता सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जल जलती मिलती घणीरे । झालो झाल अपाररे । सुजाण शीता । जाणें केसू फूलियारे लाल । राता खेर अङ्गाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करै शीतासतीरे लाल । सील तणें परिमाणरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुशीथयारे लाल । निरखे राणो राणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलेंरे लाल । पावक पासें आयरे ॥ सु० ॥ झली जाणें सुरङ्गनारे लाल । अनुपम रूप दिखायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया घणारे लाल । झ

ना करै हाय हायरे ॥ सु० ॥ भस्म हुसी इण आगमेंरे लाल । राम करै अन्यायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बांढ्यो हुवैरे लाल । सुपनेंही मन कोयरे ॥ सु० ॥ तोमुझ अगनि प्रजालज्योरे लाल । नहीं तो पाणी होयरे सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पैठी आगमेंरे लाल । तुरत अगनि थयो नीररे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलसुं भरयोरे लाल । झीलै धरम सुधीररे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुशम बरषा करैरे लाल । एह सती सिरदाररे ॥ सु० ॥ शीता धीजै ऊतरी रे लाल । साख भरैसंसाररे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयारे लाल । सगलै थया उछरंगरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुसी थयारे लाल । शीता शील सुरंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहें जस जेहनोरे लाल । अविचल शील कहायरे ॥ सु० ॥ कहै जिन हरष सती तणारे लाल । नित प्रणमी जै पायरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति शीतासती सिझाय समाप्तम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अनाथी रुषि सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रेणिक रय वाम्री चढ्यो । पेखियो मुनी एकंत । वर रूप कां तै मोहियो । राय पूछैरे कहैरे बिरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे अनाथीनि ग्रंथ । तिणमें लीधोरे साधूजीनो पंथ ॥ (श्रे०) ॥ इण कोसंबी नगरी वसें । मुझपिता परधल धन्न । परवार पूरै परवरयो । हुं डुं तेहनोरे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुझ वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात पिता सहु झूरी रह्या । तोही पिणरे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी गुणमन उरमी । उरमी अबला नार । कोरमी पीमामें सही । नही कीधीरे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राज बैद्य बुलाइया । कीधला कोकि न पाय । बावना चंदन लेपिया । पिण तोहीरे दाह नविजाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ बेदना जो मुझ उपसमें । तो लेवुं संजम भार । इम चिंतवतां वेदन गई व्रत लीधोरे हरष अपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जग मांहि को केहनो नही । तेम णी हुंरे अनाथ । बीत रागनो धरम बाहरो । कोइ नहीरे सुगतिनो साथ श्रे० ॥ ७ ॥ करजोमी राजा गुणस्तवै । धन धनतूं अनगार । श्रेणिक सम कित तिहां लहै । बांदी पुंहचैरे नगरमझार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी

गावतां। कर्म्मनी तूटै कोमि। गणि समय सुंदर तेहना । पाय बांदैरे बे करजोमि ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथी मुनी सिज्झाय समाप्तम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रतिक्रमण सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करि पम्हिक्कमणो नावसुं । दोयघरी सुन्न झाण ॥ लालरे ॥ परन्नवजातां जीवनें। संबल साचो जाण ॥ लालरे ॥ १ ॥ (करि पम्हिक्कम णो नाव सुं०) ॥ श्रीमुख बीरसमुच्चरे। श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाखखंमी सोना तणी। दीयै दिन प्रतिदान ॥ ला ॥ २ (करि०) ॥ लाख बरस लग तेहने। इम दीयै द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायकनी तु ला। नावै तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ (करि०) सामायक परसादथी। लहीयै अमरबिमान ॥ ला० ॥ धरमसींह मुनिवर कहै। सुगति तणो ए नि दान ॥ ला० ॥ ४ (करि) ॥ ❀ ॥ इति प्रतिक्रमण सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तव्यसन सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सात बिसननारे संग मतां करो। सुण तेहनों सुबिचार ॥ बिवे की ॥ सात नरक नारे जाई सातेई । आपै दुक्ख अपार ॥ बिवेकी। १ सा० ॥ प्रथम जुवानेंरे बिसनपड्यां थकां। पांम्व पांच प्रसिद्ध ॥ बिवेकी ॥ नलराजा पिण इण बिसनें पड्यो। खोइ सहू राज रिद्ध ॥ बि० २ सा० ॥ दूसरै मांस भक्षण अवगुण घणां। करै परजीव संहार ॥ वि० ॥ महा स तकनी नारी रेवती। नरक गई निरधार ॥ बि० ३ सा० ॥ तीजै मदरा पा न बिसनतजी। चितधरी बली चाह ॥ बि० ॥ दीपायणरिष दुहव्यो जाद वें। द्वारकानो थयो दाह ॥ बि० ४ सा० ॥ चोथै बिसनें वेश्याघर बसै। लोकमें न रहै लाज ॥ बि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो । कुबिसनें रे काज ॥ बि० ५ सा० ॥ पाप आहेमैं कुविसन साचवै । प्राणी हणीयें प्रहार ॥ बि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो। पहिली नरक मझार ॥ बि० ॥ ६ सा० ॥ उठै चोरीनें बिसनें करी। जीव लहै दुक्खजोर ॥ बि० ॥ मुंज देवराजायै मारीयो। चावो हुंरुक चोर ॥ बि० ७ सा० ॥ परस्त्रीय सं गत कुबिसनसातमें। हाणि कुजस बहु होय ॥ बि० ॥ राणो रावण शीता अपहरी। नास लंकानोरे जोय ॥ बि० ८ सा० ॥ इम जाणी भव्य तुमे आ

दरो। सीख सुगुरुनीरे सार॥ बि० ॥ इण भव परभव आणंद अति घणा। कहै ध्रमसी सुखकार॥ बि० ९ सा० ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपदेस सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दमका नांहि भरोसा साहै। करले चलनेंका सामान ॥ १ ॥ तन पिंजरसैं निकश जाइगा। डिनमें पंछी प्राण॥ द० १ ॥ लख चौरासी जोजन भटक्यो। उपनों गरभा धान। सवानवमास बश्यो अंधकूपमें। मनुष्यरूप सनमान॥ द० २ ॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है॥ सुखमें खाण अरुपाण। भीरपण्यां तेरै कोइयन साथी। साथी दान अरु ध्यान ॥ द० ॥ ॥ ३ ॥ आशा त्रिशनां विकथा निद्रा। कुमता रूप निधान। दिन २ बधै पापकी संगत। ब्यापैं क्रोध अरुमान॥ द० ॥ ४ ॥ चलते फिरते सोवत जागत। करत खाण अरुपाण। डिन २ आयु घटतहैं तेरो। होत देहकी हाण॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपत में। होय रह्या गलता न। देखत२ विनस जायगा। मतकर मान गुमान॥ द० ६ ॥ झूठा सब यह जगत पसारा। नारी विषकी खान। माया ममता आदिके बैरी। इनसैं कहा पहचान॥ द० ७ ॥ पांचूं चोर मुंसें घर तेरो। इन की खोटी बाणि। अठबैरी तेरे संग फिर तुहै। मोह बमा सुलतान ॥ द० ॥ ॥ ८ ॥ कोइ रहणैं पावे नही जगमें। यह तु निहचै जानि। अजहुं गंमि समझि कुटलाई। मूरख तर अज्ञान॥ द० ॥ ९ ॥ भाई बंध अरु सजन संबंधी। राखै तेरा मान। अंतसमें कोई कामन आवै। किसपै मान गुमान॥ द० ॥ १० ॥ जप तप शील पालो सुभ संगत। देह सुपात्रे दान। सेंहित साध चरण चितल्यावो। प्रभु भज तज अभिमान॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ इति उपदेश सिझाय संपूर्णम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जंजं बिहिणा जिहिअं। तंतं परिणमइ सयल लोयस्स। इह जाणे विणुधीरा। बिहुरेवि नकायरा हुंती॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बाहूबलजीनी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईभर आंबा आंबलीरे। एचाल ॥ ❀ ॥ बाहूबल चारित लीयोरे। साचो धरिवैराग। भरतेसर इम बीनवैरे। बार २ पाय लाग। हरष

नर मुऊसुं बोलज्योरे (थानें बाबाजीरी आण । थानें रुषभ देव जीरी आण। थेतो मकरो खेंचा ताण। थेतो माहरै जीवन प्राण) । हरष० । मुऊ सुंबो० । (आंकणी) ॥ १ ॥ हुंतो नाई ताहरोरे। जेमैं कीधो दोस। तो पिण खमज्यो नाई मारे। गरुवा नकरै रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बां ह देई मिलांरे। जोवो आंख उघारु । बोलो मीठा बोलमारे। पूरो मननो लारु ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलो नाखुं तोमनेंरे। जिण कुल जाई बेढ । नायो आयुध साजमेंरे। ज्युं बांभण वर ढेढ ॥ ह० ॥ ४ ॥ नाभीना उतंभमारे। किमसंभलायै कान। जातां पांव बहै नहींरे। तुऊनें मुंकी रान ॥ ह० ॥ ॥ ५ ॥ तूं जीत्यो हूं हारीयोरे। देव भरै छै साख । तुऊ सरिखो जगको नहीरे। मुऊ सरिषाछै लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथै सूरज आवीयोरे । प सीनो सारो गात। बैसो भोजन जीमियैंरे। खारक दाख निवात ॥ ह० ॥ ॥ ७ ॥ निन्नांणूं एकण मतैंरे। मुऊनें लोभी जाण। ते सहु मुऊनें परि हरयोरे ज्युं बरसालै छाण ॥ ह० ॥ ८ ॥ तुंमाहरै जीवन आतमारे। तुंहीज माहरै बांह। दिस सूनी नाई बिनारे । आवोनें घरजांह ॥ ह० ॥ ९ ॥ बोल घणाई बोलियारे। भरतेसर महाराज। हाथीना दांत जे नीकल्यारे। ते पाछान वीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अभिमानी सिर सेहरोरे । बाहूबल रिषिराय सीधा करम खपायनेंरे। विमल कीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ इति बाहूबल सिज्झाय संपूरणम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चेलणा महासती सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीरवांदी वलतां थकांजी । चेलणा दोठोरे निरंथ। राति वन मांहि काउसग रह्यो जी। साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी। सतीय सीरोमणि जाण। चेडा राजानी साते सुता जी। श्रेणिक शीयल परमाण ॥ २ ॥ वी० ॥ शीत ठंठार सबलो पडै जी। चेलणा प्रीतम साथ। चारितीयो चित्तमें वस्यो जी। सोवडि बाहिर रह्यो हाथ ॥ ३ ॥ वी० ॥ झबक जागी कहैं चेलणा जी । किम करतो हुस्यै तेह। कुसती मन माहिं ए कुणवस्यो जी। श्रेणिक पम्योरे संदेह ॥ ४ ॥ वी० ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी। श्रेणिक दीयोरे आदेस। नग

वंत सांसो नांजियो जी। चम कियो चित्तनरेस ॥५॥ वी० ॥ वीरवांदी वल तां थकां जी। पैसतां नगर मझार। धुंवानो धोर देखी करीजी। जा जा हरे अन्नय कुमार ॥ ६ ॥ वी० ॥ तातनो वचन पाली करी जी। व्रतलि यो अन्नय कुमार। समय सुंदर कहै चेलणा जी। पामिया नवतणो पार ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति चेलणा महासती सिझाय संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बाहूबलजी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजतणा अति लोनीया। नरत बाहूबल झूझैरे। मूंठि उपा मी मारिवा। बाहूबल प्रतिबूझैरे ॥ १ ॥ बीरा म्हांरा गजथकी नुतरो। बा म्ही सुंदरी नासैरे। रुषन्न जिणेसर मोकली। बाहूबलनें पासैरे ॥ १ ॥ बी० (गजचढ्यां केवल न होईरे) ॥ २ ॥ बी० ॥ लोचकरी चारितलीयो। व लि आयो अनिमानोरे। लघु बंधव वांदुं नही। काउसग्ग रह्यो सुन्न ध्या नोरे ॥ ३ ॥ बी० ॥ बरस दिवस काउसग रह्यो। बेलम्यिां वींटाणोरे। पंखी माला मांमीया। सीत ताप सूकाणोरे ॥ ४ ॥ बी० ॥ साधवी बचन सुएया इसा। चमक्यो चित्तमझारोरे। हय गय रथमें परिहरया। पिण न विमुंक्यो अहंकारोरे ॥ ५ ॥ बी० ॥ वैरागै मन वालीयो। मूंक्यो निज अनिमानोरे। पांव उपाडी वांदिवा। नपनों केवल नाणोरे ॥ ६ ॥ बी० ॥ पहुतो केवलि परषदा। बाहूबल रिषि रायोरे। अजर अमर पदवी लहै। समय सुंदर वंदै पायोरे ॥ ७ ॥ बी० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति बाहूबल सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अरणकमुनी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरणक मुनिवर चाल्यागोचरी। तरुके दाझै सीसोजी। पाय उ नरांणारे बेलूपर जलै। तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ १ अ० ॥ मुख कमला णोरे मालतीफूलज्युं। नजो गोखने हेठोजी। खरै उपहुरैरे दीठो एकलो। मोही माननी मीठोजी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीलैरे नयणे वेधियो। रिषयं भ्यो तिणवारो जी। दासीनें कहै जाय तंतावली। नरिष तेडी आणो जी ॥ ३ ॥ अ० ॥ पावन कीजै रिषिवर आंगणो। वहिरो मोदक सारो जी। नव जोवन रस काया कांइदहो। सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रा

वदनीरे चारित चूकव्यो। सुखविलसै दिन रातोजी। इकदिन गोखेरे रमतो सोगटै। तब दीठी निज मातो जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करती मायफिरै। गलियै गलियै मझारो जी। कहि किण दीठोरे माहरो अरण जो। पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उतर तिहां थीरे जननी पाय न म्यो। मनमें लाज्यो तिवारोजी। धिग् धिग् पापीरे माहरा जीवनें। एहमें अकारज कीधो जी ॥ ७ अ० ॥ अगन धुखंतीरे सीला ऊपरै। अरणक अणसण कीधो जी। समय सुंदर कहै धनते मुनिवरू। मनवंछित फल सी धोजी ॥ ८ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सचित्त अचित्त सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढालचौपईनी) ॥ प्रवचन अमरी समरी सदा। गुरुपद पंकज प्रणमीमुदा। वस्तु तणा कहुं काल प्रमांण। सचित्त अचित्त विधि लहै जिम मांण ॥ १ ॥ बिहुं रुतु मिली चौमासा मांन। षटरुतु मिलीनें वरिस प्रमांण। वर्षा शीत उष्ण त्रिणकाल। त्रिहुं चौमासें वरस रसाल ॥ २ ॥ श्रावण भाद्रव आसू मास। काती इम वरसाला वास। मागसिर पोस माहनें फाग। ए च्यारे सीयाला लाग ॥ ३ ॥ चैत्र बैशाखनें ज्येष्ट आसाढ। उष्णकाल एच्यार अगाढ। वर्षा शरद शशिर हेमंत। वशंत ग्रीष्म षटरुतु इम तंत ॥ ४ ॥ राध्युं विदल रहै चउयाम। उंदन आठपुहुर आगिरांम। प्रहरसोल दधि कांजी गाढ। पछै रहैतो जीवनिवास ॥ ५ ॥ पापड लोइया वटक प्रमांण। च्यारपहुर तिम पोलीमांन। पनर दिवस वर्षापकवान। त्रीसदिवस सीयाला मांन ॥ ६ ॥ वीस दिवस उन्हालै रहै। पछै अभक्ष थायै जिनकहै। मात्र प्रमुख नीवी पकवांन। चलितरसै तसकाल प्रमाण ॥ ७ ॥ धांन धोयण उघमी पर माण। दोयघमी जरवांणी जांण। फल धोयण एक प्रहर प्रमाण। त्रिफला जल उघमीनुं मांन ॥ ८ ॥ त्रिणवारे ऊकलिउं जेह। सुद्ध उष्णजल कहियै तेह। प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण। वर्षा शीत उन्हालै जांण ॥ ९ ॥ श्रावण भाद्रवमै दिनपंच। मिश्रलोट अणचालित संच। मिगसर पोसै त्रिण दिन जांण। आसू काती चउदिन मांन ॥ १० ॥ माह फागुणै कह्यो पण याम। चैत्र वैशाष चउप्रहर प्रमाण। जेठ आसाढ प्रहर त्रिण जोय। ति

ण उपरांत सचित्त ते होय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि षरुधान कपास । जव त्रि णवरसें अचित्त होय खास । विदल सर्व तिल तूंवरदाल । पांच वरसै होइ अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसें अचि त्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सचित्त जोनि अचित्त तेहोय ॥ १३ ॥ हरडै पींपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अभिराम । जोय ण शत जल वटमां वहै । साठिजोयण थलमांहै रहै ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तु प्रवहणनी जेह । थाइं अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अगनि परीयापणैं करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ बारपहुर रहै ऊगलीराव । सोलपहुर राईता अजाव । कणाह विगय परिसेक्यो धांन । पहिरचोवीस गोमूत्रनुंमान ॥ १६ ॥ अति खारुं घृत कालातीत । पलटाई वर्णादिक रीत । काचो दूधरहै बहुबार । एह अन्नहू कहै मुनिसार ॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक विदलनीदाल । सेक्या धांनपरैं तसकाल । च्यारपहुर सीरो लापसी । विदलपरै ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंभी गिएयो । काल प्रमाण सवि केहनुं भणयो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु अन्नहू कहिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सैंधव कह्यो अचित्त । श्राद्ध विधैं अख्यरां प्रतीत । एकालादिक ऊहरां जेथाय । तेह अचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥ गीतारथनें वयणैं जोय । आचीरण अनाचीरण होय । आई धांन अंकुर नीक लै । तवतें वस्तु अन्नहूमां भिलै ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवण हरियाल । आवै जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले वानी नही तसुभाखि ॥ २२ ॥ इम बोल्यो लवलेश विचार । विस्तर प्रवचन सारोद्धार । धीरविमल पंडित सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिझाय ॥२३॥ इति सचित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिझाय ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १९ दोश काउसग्ग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणी सदोष काउसग्ग तणा । बोलुं श्रुतअनुसारै सुणया ॥ १ ॥ घोटक दोष कह्यो बलिएह । वांको पगराखै बलिजेह । लत्तादोष बीजो हवैसुणो । लील हला वै जे अति घणो ॥ २ ॥ उंठीगण लैई जेरहै । थंभदोष ते तीजो कहै । मा

लदोष चौथो कह्यो एह। मस्तक अमकावी रहैजेह ॥ ३ ॥ पग अंगूठा मे लीरहै। जघिदोषते पंचमकहै । बेऊं पग भेलाकरै जेह । नवल दोष छठो कह्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखै निजहाथि। शवरी दोष कह्यो जगनाथ। मुख चालना करै अति घणी । खलित दोष अठम तेसुणी ॥ ५ ॥ घूंघट ता णीनें जेरहै । बहुदोष ते नवमो लहै । लभ थडतूं पहिरै पहिरणुं । दशमें दोष लंबोत्तर भणुं ॥ ६ ॥ हृदय स्थल आछादितरहै। ते थण दोष इग्यारमो लहै। वस्त्रासुं ढांक्यो सविदेह। संयति दोष बारसमो एह ॥ ७ ॥ भांपण चा लोकरै अति घणुं । भमुहदोष तेरसमो भणुं । अंगुली हलावै संख्याकाज। चवदमो दोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करै। वायस दोष पनरमो धरै। पहिरयावस्त्र संकोची रहै। कपित्थदोष सोलसमो लहै ॥ ९ ॥ मस्तक धूणावै अतिघणुं। ते सिरकंप सतरमो भणुं। महिरानी परि जे वडव मै। वारुणी दोष अठारमो चमै ॥ १० ॥ मूकदोष कह्यो नगणी समो। तेह करी कावसग मतगमो। त्रिणदोष एमाहिला टलै। सोल दोष साधवीनें मिलै ॥ ११ ॥ लंबुत्तर १ थणनें २ संयती ३। दोष एह बोल्या जगपती। बहूदोष चौ थौ जबमिलै। च्यार दोष श्राविकानें टलै ॥ १२ ॥ कावसगथी समता सुख थाय। कठिन कर्मनी कोमि पुलाय। कावसग करतां सवि सुख होइ। कावस ग सम तप नकह्यो कोय ॥ १३ ॥ दोष रहित कावसग कीजीयै । जिम स हिजै शिवफल लीजीयै। पंम्ति धीर विमलनो सीस। कवि नय विमल कहै निशिदीश ॥ १४ ॥ इति कावसग्गना १९ दोष सिझाय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोयण स्वरूप सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल सफल संसार एचाल) ॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणो। जा स परसाद उपगार थायै घणो। सूत्र सिद्धांत गुरु मुख थकी सांभली। लहीय सम कित अनें विरति लहीयै वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै। जिण थकी जीव संसार सागर तिरै। दोष लागा जिके गुरु मुख आलो इयै । जीव निर्मल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागै तिके च्यार प्र कारना। धुरथकी नामनें अरथ ते धारणा । किणही कारण वसै पापजे की जीयै । प्रथम ते नांम संकप्प कहीजीयै ॥ ३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प प्रमुषै

करी । दोष ते बीय परमादसंज्ञा धरी । कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां । दर्प्पइण नांमकरी दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगि नरकरै जिको । चौथो आकुट्टियादोष ऊपजै तिको । अनुक्रमें च्यारए अधिक इक एकथी । दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५॥ (ढाल २) अन्यदिवस कोई मागधआयो पुरंदरपास ए चाल ॥❀॥ पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय । ग्याननाउपगरण तणी आशातन कीधी होय । जघन्यथी पुरमड्ढ एकासणो आंबिल उपवास । अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताईतास ॥ ६ ॥ एजो खंमित थायै अथवा किहांइ गमाय । तोवलिनवा करायां दोष सहु मिटजाय । थापना अणपम्हिलेह्यां पुरमड्ढनो तपधार । गिरतां एकासणनें गमतां चौथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतीचार तिहां पुरमड्ढजघन्य । एकासण आंबिल अठम चिहुंभेदे मन्न । आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति । जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विनास्यां चौथ प्रसिद्ध । बि ति चउरिंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध । बहु बि ति चौरिंद्रिय हणयां बि ति चउ उपवास । संकल्पादि चिहुंविधि दुगुणा दुगुण प्रकाश ॥ ९ ॥ उदेही कुलिया वगा कीडी नगरा भंग । बहुत जलोयां मूंक्या दसउपवास प्रसंग । वमन विरेचन कृमिपातन आंबिल इक एक । जीवांणी ढोलंतां दोइउपवास बिबेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंद्री उपद्रव होइ । दोइ त्रिण आठ दसे उपवासै आलोयण जोइ । बहुपंचेंद्री उपद्रव अठ अठमें दश वीश । चिहुं प्रकारै चढती आलोयण सुणलेसीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनें लकडी प्रमुखें कीध प्रहार । एकासण आंबिल उपवासनें अठ विचार । साध समद्दें लोकसमद्दें राजसमद्द । कूडा आलदीयां दुइचौथरु अठ प्रतद्द ॥१२॥ उपवास दश दंडायां तेम मरायां वीस । इकलख असीसहस नवकार गुणो तजिरीस । पख चौमाश वरस लग इक त्रिण दश उपवास । अधिको क्रोधकरै तो आलोयण नहिं तास ॥ १३ ॥ सूआवडना दोषकीयां गुरु ऊपर रोस । जीवविराधन कीधा बहु असतीना पोस । करीय दुवालस बारहजार गुणो नवकार । मिछा दुक्कड देई आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥ (ढाल ३) बेकर जोडीतांस ॥ एचाल ॥ विणकी

धां पच्चखांण । विणदीधा बांदणा । पमिक्कमणा विध पांतरैए । अणोऊानें अ सिझाय । तिहां अविधै ज्ञाएयां । इक २ आंबिल आचरैए ॥ १५ ॥ गंठ सीनें एकत्र । निवी आंबिल । जांगै आलोयण इमेंए । एक पांच षट् आठ । नवकरवालीय । गुण नवकार अनुक्रमेंए ॥ १६ ॥ उपवासअंग उपवास । आंबिल ऊपरां । अधिकोदंम वखांणीयैए । पांचम आठम आदि । अंगकी या बली । फिरग्रही पातिक हाणीयैए ॥ १७ ॥ ऊखल मूशल आग । चूलो घरटीयै । दीधै अठम तपकरैए । मांगीसूई दीध । कातरणी बुरी । आंबिल चढता आदरैए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध । रात्री जोजन । जल तिरणो खे लण जूओए । पापतणा उपदेश । परद्रोह चिंतव्यां । उपवासइक २ जूजूओ ए ॥ १९ ॥ पनरै करमादांन । नियमकरी अंग । मद्यमांस माखण अष्या ए । आलोयण उपवास । संकप्पादिक । चिहुं भेदें चढता लिख्याए ॥ २० ॥ बोल्या मिरखाबाद । अदत्ता दांनत्युं । जघन्य एकासण जांणीयै ए । अति उत्कृष्टी एण । जांण आलोयण । उपवास दस २ आंणीयै ए ॥ २१ ॥ (ढाल ४) ॥ सुगण सनेही मेरे लाला (एचाल) चौथै व्रत जागै अतीचार । ज घन्य अठ आलोयण धार । मध्यइ दस उपवास बिचार । उत्कृष्टा गुण लख न वकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमणदोष प्रसंग । तीन गुण व्रत मांहै अंग । च्यार सिक्षा व्रतनें अतीचारे । आंबिल त्रिणप्रत्येकें धारै ॥ २३ ॥ सीलतणी नव वागि कहाय । तिहां जोलागो दोष जणाय । त्रीयनें फरस हुआं अबिबेके । इक आंबिल कीजै प्रत्येकें ॥ २४ ॥ साधु अनें श्रावक पोसीध । एकेंद्रीस चित्त संघट्टे कीध । वीसर जोलैं सचित्त जल पीध । दंम एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोआं विण लूह्या पात्रै । एकासण तिम पुरमढ मात्रै । गई मुह पत्ती आंबिल सारो । तिम जंघे अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार उलंगी राखै । व्रत पचखांण करै षट् साखै । दोषे मिछामि दुक्कम दाखै । आ लोयणलेतां अजिलाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार । पूरो कहितां नावै पार । तोपिण संक्षेपै तंतसार । निरमल मन करतां विस्तार ॥ २८ ॥ धन श्रीवीर जिनेसर स्वांमी । जसु आगम वचनें विधि पामी । जीतकल्प ठांणांगै आदि । वली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ २९ ॥ (कलश) इम जेह ध

रमी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइनें । एकांत पूछे गुरु वतावे शक्तिवय तसु जो इनें। बिधएह करसी तेहतिरसी धरमवंत तणे धुरे।ए तवन श्रीध्रमसी ह कीधो चौपनें फल वधि पुरे ॥ ३० ॥ इति आलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ इहां क्रोधका सिझाय प्रतिक्रमण विधमें लिषआएहें ॥

॥ ❀ ॥ अथ मानकी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥रेजीव मांन नकीजियें । मानें विनय नआवेरे । विनय विना विद्या नहीं । तोकिम समकित पावेंरे ॥ १ ॥रे०॥ समकितविन चारित्र नहीं। चारित्र विण नहीं मुक्तीरे। मुक्तिना सुखछे सास्वता । तेकिम लहीइं जुक्तीरे॥२॥रे०॥ बिनय बरो संसारमां । जगमांहे अधिकारीरे । मानें गुणजाये गली । प्राणी जोज्यो विचारीरे ॥ ३ ॥ मानकियो जो रावणें । ते तो रामें मारयोरे । दुरजोधन गरवै करी । अंतेवर ते हारयोरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूका लाकरा सारिखो । दुख दाई ए खोटोरे । नदय रतन कहै माननें । देज्यो तुमे देसोटोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति मानकी सिझाय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मायाकी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकितनूं मूल जाणीये जी । सत्य वचन साख्यात । साचा में समकित वसें जी । मायामां मिथ्यातरे (प्रांणी मकरिस माया लगार ॥ १ ॥ मुख मीठी कूठे मनेंजी । कूरु कपटनो कोट । जीनेंतो जी जी करै जी । चितमां ताके चोटरे ॥ प्रां० ॥ २ ॥ आप गरजें आधो पगै जी । पिण न धरे विसवास । मनसुं राखे आंतरोजी । ए मायानो पासरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेसुं बांधी प्रीतरी जी । तेसुं रहे प्रतिकूल । मयल नछंरे मन तणोजी । ए मायानो मूलरे ॥ प्रां० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी । मित्र सुं राखेरे भेद । मल्लि जिनेसर जाणजो जी । तो पाम्या स्त्री वेदरे प्रा० ॥ ५ ॥ नदय रतन कहै सांभलोजी । मेलो मायानी बुद्धि । सुगति पुरी जावा तणोजी । ए मारगछे सुधरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लोभकी सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमे लक्षण जो ज्यो लोभनारे । लोभे जन पामें खोभनारे ।

लोभें झाह्या मन मोहला करैरे। लोभें दुरघट पंथे संचरैरे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहना लेतं भामणारे । बलि पाय नमीनें करुं खामणारे । लोभे मरजादा नरहै केहनीरे । तुमे संगत मेलो तेहनीरे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभे घर मेहली रणमां मरैरे। लोभै नंचते नीचुं आचरैरे। लोभें पापभणी पगला भरैरे। लोभै अकारज करतां न औसरैरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोभै मनडुं नरहें निरमलुंरे। लोभें सगपण नासें वेगलुंरे। लोभें नरहै प्रेतनें पावठुंरे। लोभे धन मेले बहु एगठुंरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोभें पुत्र प्रतें पिता हणेरे। लोभें हत्या पातिक नविगणेरे । ते तो दाम तणें लोभें करीरे। ऊपर मणिधर थायें ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोभनें थोभ दीसे न हीरे। एहवो सूत्र सिद्धांते कह्युं सहीरे । लोभें चक्री संचूम नामें डुबोरे। ते तो समुद्र मांहे बूमो मुंबोरे ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम जाणीनें लोभनें डंभ ज्योरे। एक धर्म सुं ममता मंडज्योरे। कवि उदय रतन भाषे मुदारे। वंदुं लोभ तजै तेहनें सदारे ॥ ७ ॥ इति श्री लोभकी सिझाय संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भरत चक्रवर्त्ति सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भरतजी मनहीमें वैरागी । मनहीमें वैरागी । भरतजी म० ॥ टेक ॥ सहस बत्तीस मुगट बद्ध राजा । सेवा करै बडभागी । चौसठ सहस अंतेवारि जाके । तोही न हुवा अनुरागी । (भरतजी मनहीमें वैरागी) ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके । छन्नुं कोडहै पागी । लाख चोरासी गजरथ सोहियें । सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार कोड मण अन्नज उपजै । छुण दशलाख मण लागे । तीन कोड गोकुल नित दूझे। एक कोडि हलसागी ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस बत्तीस देस बद्ध भागी । भए सरबके त्यागी । छन्नुं कोड गांमके अधि पति । तोही न हुआ अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निध रतन चउगमा वाजें। मन चिंता सरब भागी । कनक कीरत मुनिवर वंदतहे । दीजो सुमति में मांगी ॥ ५ ॥ भर० ॥ ❀ ॥ इति भरतजीकी स्वाध्याय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गर्भाधान उतपत्ति विचार वैराग्यसि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उतपति जोय जीव आपणी । मनमांहि विमास। गरभावासे

जीवरो। वसीयो नवमास ॥ १ ॥ नु० ॥ नार तणी नाजीतलै। जिन व चनें जोय। फूलतणी जिम नालिका। तिम नाभी ढै दोय ॥ २ ॥ नु० ॥ तसुतल जोनि कहीजियै। वर फूल समान। आंब तणी मांजर जिसो। तिहां मांस प्रधान ॥ ३ ॥ नु० ॥ रुधिर श्रवै तिहां मांसथी। रितुकाल स दीव। रुधिर शुक्र जोगै करी। तिहां उपजै जीव ॥ ४ ॥ नु० ॥ जे अ पावन पवनें करी। वासित दुरगंध। तिणथानक तूं ऊपनो। हिव हूउ अंध मंध ॥ ५ ॥ नु० ॥ नाभी वांसतणी घणुं। भरीयै रूधाज। तातीलोह सिलाकतें। जालै ततकाल ॥ ६ ॥ नु० ॥ तिम महिलानी जोन में। ढै नव लख जीव। पुरुष प्रसंगे तेसहू। मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ नु० ॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां। पांचेइंद्री जेह। तेह तणी संख्या नही। तजो कारज एह ॥ ८ ॥ नु० ॥ नवलख जीव टिकै तिहां। उत्कृष्टीवार। जीव जघन्य पणें टिकै। एक दोय त्रिण च्यारि ॥ ९ ॥ नु० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै। महुरत परिमाण। बार बरसनी थिति तिहां। उत्कृष्टी जाण ॥ १० ॥ नु० ॥ तिहां गरभै कोइ जीवरो। जंपै जग दीस। फिर नर आवंतो रहै। संबत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ नु० ॥ महिला वरस पिचावनें। कहीयै नीरबीज। पिचहत्तर वरसां पछै। थायै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ नु० ॥ जी मणी कूखें नर वसे। तिम वामें नारि। बीच नपुंसक जाणीयै। जिन वच न विचार ॥ १३ ॥ नु० ॥ हिव सामान्य पणें इहां। आयो गरभावास। सातदिना ऊपरि रहै। नरगत नवमास ॥ १४ ॥ नु० ॥ आठ बरस तिर यंच रहै। उत्कृष्टे काल। गरभा वासै भोगव्यां। इम बहु जंजाल ॥ १५ ॥ नु० ॥ कारमण कायें कर लीयो। पहिलो आहार। शुक्र अनें श्रोणित तणो। नही झूठ लिगार ॥ १६ ॥ नु० ॥ परजापत पूरी नही। तिहां वि सवा वीस। तिण आहारै तुंथयो। ऊदारक मीस ॥ १७ ॥ नु० ॥ पवन अढै उदरै तिको। ऊपजायै अंग। अगनिकरै थिर तेहनें। जल सरस सुरंग ॥ १८ ॥ नु० ॥ कठन पणें प्रथवी रचै। अवगाह आकास। पांच भूत शरीरमें। इम करै प्रकाश ॥ १९ ॥ नु० ॥ बारै महुरत तां पछै। वि लसै नरनारि। गरभतणी उतपति तिहां। नही अवर प्रकार ॥ २० ॥

उ० ॥ कलिल हुवै दिन सातमै । अरबुद दिन सात । अरबुदथी पेसी वधै । घनमांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै । अमतालीस टंक । प्रथम मास जिनवर कहै । मन धरो निस्संक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सुथिर मांसबीजै हुवै । हिवै तीजै मास । करम तणें वसि ऊपजै । माता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथै मासै मातना । प्रणमें सहु अंग । हाथ अनें पग पांचमें । तिम सुतकोसंग ॥ २४ ॥ उ० पित्त रुधिर छठे पमै । सातमें इण संच । नव धमणी नस सातसै । पेसी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें । साढी तीन कोडि । उपजे ऊणैं केतलै । इम आगम जोड ॥ २६ ॥ उ० आठमै मासैं नीपनो । इम सकल शरीर । कंधै शिर वेदन सहै । जंपै जिनबीर ॥ २७ ॥ उ० ॥ शोणित शुक्र सलेषमा । लघुनें वमनीत । वात पित्त कफ गरभथी । थायै नरनीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सुंहटी लगै । बालकनो नाल । रस आहार करै तिहां । आवै तत काल ॥ २९ ॥ उ० ॥ जननी ल्यै आहार ते । जाय नाडो नाड । रोम इंद्री नख चख वधै । तिम मींजीने हाड ॥ ३० ॥ उ० ॥ सबहु अंगै ऊलसै । सरबंग आहार । कवल आहार करै नही । गरभै सुविचार ॥ ३१ ॥ उ० ॥ मास बीजै किण जीवनें । थायें ज्ञान विभंग । अथवा अवधि कही जीयै । तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३२ ॥ उ० ॥ कटक करै वैक्रीयपणैं । झुझी नरकै जाय । को जिन वचन सुणी करी । मरी सुर पिण थाय ॥ ३३ ॥ उ० ॥ कंधैमुख गोमा हीयै । सहि तो बहु पीड । दृष्टि आगलि विहुं हाथसुं । रहै मुठीजीड ॥ ३४ ॥ उ० ॥ नरविण वस्त्र जलादिकै । ऊपजै आधान । अथवा बिहुं नारी मिल्यां । कह्यो गरभ विधान ॥ ३५ ॥ उ० ॥ कोई उत्तम चिंतवै । देखी दुख वास । पुन्य करी तिम नीकलुं । नाऊं गरभावास ॥ ३६ ॥ उ० ॥ कंठकोडि चांपै सुई । कोई समकाल । तिणथी गरभै अठगुणी । सहै वेदन बाल ॥ ३७ ॥ उ० ॥ माता भूखी भूखीयो । सुखणी सुखथाय । माता सूती ते सूवै । परवस दिन जाय ॥ ३८ ॥ उ० ॥ गरभ थकी दुख लखगुणो । जामें जिनवार । जन्मथयां दुख वीसरै । धिग् मोह विकार ॥ ३९ ॥ उ० ॥ उपज्या अशु

चि पणै जिहां। मल मूत्र कलेस। पिंड अशुचि करि पूरीयो। किहां सुचि लवलेस॥ ४०॥ नु०॥ तुरत रुदन करतो थको। जामें जिणवार। मात पयोधर मुख ठवै। पीयै दूध तिवार॥ ४१॥ नु० दिन दिन दीसै दीपतो। करै रंग अपार। लाड कोड माता पिता। पूरै सुविचार॥ ४२॥ नु०॥ श्रोत्र इग्यारै नारिनें। नव नरनें जाण। रात दिवस वहिता रहै। चेतो चतुर सुजाण॥ ४३॥ नु०॥ सात धातु साते त्वचा। उंडै सातसै नाड। नवसै नाडी पिंडमें। तिम तीनसै हाड॥ ४४॥ नु०॥ संधि एकसो साठडै। सत्तोत्तरसो मरम। तीन दोष पेसी पांचसै। ढांकीडै चरम॥ ४५॥ नु०॥ रुधिर सेर दस देहमें। पेसाब सरीष। सेर पांच चरवी तिहां। दोय सेर पुरीष॥ ४६॥ नु०॥ पित्त टांक चोसठ अडै। वीरज बत्तीस। टांक बत्तीस सलेखमां। जाणैं जगदीस॥ ४७॥ नु०॥ इण परमाण थकी यदा। ऊंडो अधिको थाय। व्यापै रोग शरीर में। नवि चालै काय॥ ४८॥ नु०॥ पोख्यो पहिलै दाहकै। इम वधियौ अंग। खान पान भूषण भला। करे नवनवा अंग॥ ४९॥ नु०॥ हिव बीजै दसकै भणयो। विद्या विवध प्र कार। तीजै दसकै तेहनें। जाग्यो काम विकार॥ ५०॥ नु०॥ जिण था नक तुं आपनो। तिणमें मन जाय। चौथे दसकै धन तणो। करै कोडि उ पाय॥ ५१॥ नु०॥ पहुतो दसकै पांचमें। मनमें ससनेह। बेटाबेटी पो तरा। परणावै तेह॥ ५२॥ नु०॥ छठै दसके प्राणीयो। वले परवस था य। जरा आवी जोवन गयो। तृष्णा तोही न जाय॥ ५३॥ नु०॥ आवै दसकै सातमें। हिव प्राणी तेह। बल भागो बूढो थयो। नारी न धरै स नेह॥ ५४॥ नु०॥ आठमें दसकै मोसलो। खुलिया सहु दांत। कर कंपावै सिर धुणें। करै फोकट वात॥ ५५॥ नु०॥ नवमें दसकै प्राणी यो। तन सूकत जाय। सालै वचन वहुवां तणां। दिन झूरतां जाय॥ ५६॥ नु०॥ खाट पड्यो खूं खूं करै। सहु गाली देह। हाल हुकम हालै नही। दीयो परजन छेह॥ ५७॥ नु०॥ आंख गलै बेपुरु मिलै। पडे मुंहमै लाल। बेटा बेटीनें बहू। नकरै सार संभाल॥ ५८॥ नु०॥ दसमें दसकै आवीयो। तब पूरी आय। पुण्य पाप फल भोगवी। प्राणी

परभव जाय ॥ ५९ ॥ उ० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो । लह्यो नर भव सार । श्री जिन धरम समाचरो । पामो जिम भवपार ॥ ६० ॥ उ० ॥ चरण पणें जे तप तपै । पालै निरमल शील । ते संसार तरी करी । लहै अविचल लील ॥ ६१ ॥ उ० ॥ कोकि रतन कवरी सटै । कांई गमेरे गिंवार । धरम पखै पिण जीवनें । नही कोई आधार ॥ ६२ ॥ उ० । काया माया कारमी । कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । साचो धरम संभार ॥ ६३ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए । छै लोक महंत । जनम मरण करि फरसियो । तेवार अणंत ॥ ६४ ॥ उ० ॥ आप सवारथिया सहू । न ही केहनो कोय । विण स्वारथ अण पूजतां । सुत पिण वेरी होय ॥ ६५ उ० ॥ जरा न आवै जांलगै । जांलग सबल शरीर । धरम करो जीवतां लगै । होइ साहस धीर ॥ ६६ ॥ उ० ॥ आरजदेस लह्यो हिवै । लाधो गुरु संयोग । अंग थकी आलस तजो । करो सुकृत संयोग ॥ ६७ ॥ उ० ॥ श्री नमिराय तणी परै । चेतो चित मांहि । स्वारथना सहुको सगा । कोई किणरो नांहि ॥ ६८ ॥ उ० ॥ भोग संजोग तजीसहू । थया जे अणगार धन धन तसु माता पिता । धन धन अवतार ॥ ६९ ॥ उ० ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो । सेवो जिन धरम । जिणथी सुख संपति वधै । कीजे तेहिज कर्म ॥ ७० ॥ उ० ॥ तंदुल वेयाली अछै । एहनो अधिकार । तिणथी ऊध रनें कह्यो । नहीं कूठ लिगार ॥ ७१ ॥ उ० ॥ (कलश) इह जेनधर्म्म विचार सांभलि लीये संयम भार ए । परि सींह केरा सदा पालै नेम निरती चार ए । संसारना सुख सकल भोगवि ते लहै भवपार ए । श्रीजिन हरष सुसीस रंगै इम कहै श्रीसार ए ॥ ७२ ॥ उ० ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

इति उपदेश बहुत्तरी संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ बिजयसेठ बिजयासेठाणीको चोढालियो लि० ॥

॥ ❀ ॥ प्रह ऊठीरे पंच परमेष्टि सदा नमुं । मनसूधैरै तेहनें चरणे नित नमुं । धुरि तेहनेंरे अरिहंत सिद्ध वखाणियै । आचारजरे उपाध्याय मन आणियै । (उल्लालो) आणियै निज मन भाव सुधै उपाध्याय नमूं बली । जे पनरह करम भूमि मांहे साधु प्रणमुं ते वली । जिम कृष्ण

पक्षनें सुक्लपक्षवालि शील पाल्यो ते सुणो। भरतारनें स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरत क्षेत्रेरे समुद्र तीर दक्षण दिसे। कछदेसेरे बिजय सेठ श्रावक वसे। शील ब्रतरे अंधारा पक्षनो लियो । बाला पणेरे एहवो निश्चो मन कियो। (उल्लालो) मन कीयो एहवो तेण निश्चे पख्य अंधारे पालस्युं। हुं शील निश्चे एह विरुद्ध विषय सेवा टालस्युं। इक अढे सुंदर रूप बिजया नाम कन्या तेवली। तिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मन रली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्म्म जोगेरे मांहो मांहि ते विहुं तणो। शुभ दिवसेरे हुओ विवाह सुहामणो। तब विजयारे शोले शृंगार भला करी । पिउ मंदिरे पोहती मन उल्लट धरी। (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पहुती पिया पासे सुन्दरी। ते देखि हरषे सेठ बोले शील निश्चो संभरी। मुझ शील निश्चो पख अंधारे तेहना दिन तीनछे। ते नेम पाली सुकलप ख्य हुं भोग भोगवस्युं पछे ॥ ३ ॥ (चाल) इम सांभलरे बिजया तब वि लखी थई। पिऊ पूछेरे किम चिंता तुझनें भई । तब विजयारे कहे शुक्ल पक्ष ब्रतमें लीयो । ब्रत चोथेरे बाला पण निश्चो कीयो। (उल्लालो) बाला पणेमें कीयो निश्चे शुक्लपक्ष ब्रत पालस्युं। तो उजे पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं । तुझे अवरनारी परणने हिव सुक्ल पक्ष सुख भोगवो कृष्ण पक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तब व लतेरे तसु भरतार कहे इसो। विषया रसरे कालकूट विषछे तिसो । ते भं गीरे शील ब्रत दोनुं पालस्यां। एह वार्त्तारे मात पिता न जणावस्यां॥उ०॥ मात पिता जब जाणस्ये तब दिख्य लेसां धरदया। इम अभिग्रह लेइनें ते भाव चारित्रीया थया। एकत्र सज्या सयन करतां खग्ग धारा ब्रत धरे । मन वचन काया करी सूधो शील बेऊं आचरे ॥ ५ ॥ (ढाल)॥ बिमल के वली एक। चंपा नयरीयें। ततखिण आवि समोसरयाए। आणी अधिक विवे क। श्रावक जिण दास।कहे विनय गुण परिवरयो ए॥६॥सहस चोरासी साधु मुझ घर पारणो। करे मनोरथ तो फले ए । केवल ज्ञान अगाध । कहे श्रावक सुणो। एह वाततो नवि मिलेए ॥७॥ किहां एतला अणगार। किहां वलि सूझतो। भातपाणी नही एतलोए। तो हिव तेह विचार । करो तुझे

जिम तिम। फल अद्ध हुवै तेतलोए ॥ ८ ॥ अहै हिवै कछदेस । सेठ बिजय वली। बिजया भार्या तसु घरेए। भावयती ग्रह वास। तेहनें भोजन दीधां फल हुवै तेतलोए ॥ ९ ॥ जिणदास कहै भगवंत । तेमांहि एतला कुण गुण कुण ब्रतहै घणा ए। केवली कहै अनंत । गुण तसु शीलना । कृष्ण शुक्लपक्ष ब्रत तणा ए ॥ १० ॥ (ढाल) ३ ॥ दानकहै जगहुं बडो एचाल ॥ केवलीनें मुख सांभली। श्रावक तेजिनदासरे । कछदेसें हिव आ वीयो । पूरै निज मन आसरे ॥ ११ ॥ (धन २ शील सुहामणो) ॥ शी ल समो नही कोईरे । शीलै देव सानिध करै । शीलथी शिव सुख होईरे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय बिजया भणी । भगतसुं भोजन देईरे। सहस चोरासी साधुना । पारणानो फल लेईरे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मात पिता पूछै तेहनें। एहनो शील वखाणरे । केवलीनें मुख जिम सुएयो । तिम कहै ते गुण जाणरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें । पारणो दीये कोई भायरे । कृष्ण शुक्ल पक्ष दंपती । भोजननो फल थायरे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मात पिता जबजाणीयो । प्रगट हुओ संबंधरे । सेठ विजय बिजया ली यो। चारित्र अप्रतिबंधोरे ॥ ध० ॥ १६ ॥ (ढाल) ४ ॥ केवलीनें पासै। चारित्र लेई उदार। मन ममता मूंकी । पालै निरती चार ॥ १७ ॥ आठ क रम खपावी। पाम्यो केवल नाण । ते सुगतै पहुता । दंपती सुगण सुजा ण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै । भावै जे नर नार । ते वंछित सुख लहै। पहुंचै भवनें पार ॥ १९ ॥ (कलस) इम कृष्णपक्षनें शुक्ल पख्यै शील पाल्यो निरमलो । ते दंपतीना भाव सुद्ध सदा सुभ गुण सांभलो । जिम दुरिय दोहग दूर जायै सुक्ख थायै बहुपरै । वलि सकल मंगल मनह बं छित कुशल नित घर अवतरै ॥ इति कृष्ण शुक्ल पक्ष चौढा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इखुकार राजा भृगुप्रोहित सि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महिला में बैठी राणी कमलावती । जीणीतो उभै मारगखेह। जोवै तमासो इखुकार नगरमें। कोतिक उपनो मनमें एह ॥ १ ॥ (सांभल हे दासी आज नगरमें बहदो किम घणो) । कातो परधान सखी भूंणीया। काकेई लूंट्या राजा गांव। काकोई गाडयो धन नीसर्यो । गामा रह्या छै

गामो गाम ॥ २ ॥ सां० ॥ आ० ॥ नातो परधान बाइजी मंगीया । ना को राजा लूंट्या गांव । नगू परोहित धन तज नीसर्यो । राजारै धन लेवा चाव ॥ ३ ॥ (सांनल हे राणी हुकम करो तो कोई गामो इहां धरां) ॥ वे टांतो तिणरा संजम लीयो । वरज्यो घणुं ही पिता मात । ते पिण चारित लेवा नमह्या । नगू जशा तिणें मोह लल चात ॥ ४ ॥ (सांनल हे० हुक०) ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहै । इहां तो कमी नहीं काय । सांनलनें राणी माथो धुणीयो । राजारी ममता नही गाय ॥ ५ ॥ (सां० दासी राजानें एवातां जुगती नही) । महिलांसुं राणी कमलावती । आईछै राजारे हजूर । वचन कहै राजानें आकरा । जाणें पोरस चढियो बोलै सूर ॥ ६ ॥ (सांनलहो राजा ब्राह्मण जोगी रिध्क्युं आदरो) । कर जोगी कमला कहै । सांनल कंत सुजाण । ब्राह्मण जेरिध परिहरी । ते तो घर मां है मत आण । (सां० । राजा०) ॥ ७ ॥ एरिधसुं अपणें कांई घणो हुसी । राजारा मोटा छै नाग । वमियै आहाररी वांछा कुण करै । कै कुतरा कै काग ॥ ८ ॥ सां० ॥ राजा० । ब्रा० । वमियो आहार पीछो नर नखे । नही परसंसवा जोग । नगू प्रोहित रिध तजनीस र्यो । थे जाएयो छै आसीह्यांरे नोग ॥ ९ ॥ (सां । राजा ब्रा०) ॥ संकलपियोमो पाछो किमलीयै । सांनलहो महाराज । दान दियो थे पाहिलां हाथसुं । ते पूठो लेतांनावै थानें लाज ॥ १० ॥ (सां राजा ब्रा० निहचैतो मरणो राजा इक दिनें । जोगीनें काम विसेष । बीजो तो जगमें सरणो को नही । तारै जिनजीरो धम एक ॥ ११ ॥ (सां० राजा) ॥ सगलै जगतरो धन नेजो करी । थे घालो नंमारां रै मांहि । तो पिण त्रिसना राजा पापणी । त्रिपत न मनमो थाय ॥ १२ ॥ (सां० ब्रा०) । सांनलनें इखुकार राजा बोलीयो । तुं नाषैनी वचन संनाल । कातनें राणी ओलो बाजीयो । काकोई कीधी मतवाल ॥ १३ ॥ (सां० । राणी राजानें करमा वचन न बोलीयै) । नांतो राजाजी ओलो वाजीयो । नाकोई कीधी मत वाल । ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो । वरजण आईहो नूपाल ॥ (सां० राजा ब्रा०) ॥ १४ ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहै ।

इसमी बैरागण थाय । अजूंतो निजरां आवै नही । तुं बेठी छै घर मांय (सां० । राणी राजानें कर०) ॥ १५ ॥ उत्तर बाजीतो दीसै नही । इसमी आई छै मतवाल । हुंतो घर छोमीनें नीसरी । थे पिण छोमो हो भूपाल । (सां० । राजा आग्या देवो तो संयम आदरुं) ॥ १६ ॥ रतन जम्तरो राजा पींजरो । तिणमें सूवटो पडियो फंद । इण रीतै हुं थांरै राजमें । रहिनें पासुं आणंद । (सां० राजा आग्या) ॥ १७ ॥ सनेह रूपिया तांतण तोम्नें । आरंभ धनसुं रहस्यां दूर । विरकत थई मोन पणें रह्या । थे पिण होयज्यो सूर ॥ (सां० राजाआ०) ॥ १८ ॥ दवतोलागी हो राजा वन मझै । हिरण सिसा बलै मांय । गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें । मन मांहें हरषित थाय । (सां० राजा राग द्वेषरा भांगा लग रह्या) ॥ १९ ॥ मांहो मांहै खेधो ईसको । दस प्राण रहित कीधो काल । कुसमणतो म नमें हरष पाम्यो घणो । जाणें ते माहरो मिटियो साल । (सां० हो रा जा रागद्वेष) ॥ २० ॥ इण दिष्टांतै लोभी मूरख थका । मुरझरह्या भोग मांहि । पेलानें दुखियो देखी चेतै नही । लागी राग द्वेषरी लाय ॥ (सां० राजा राग०) ॥ २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमां । नरपासै पंखी प म्यिो आय । आमिष सम भोग छोम्नें । चारित्र लेस्यां चित्त लाय ॥ (सां० प्राणी संयमथी सुखपांमीयै) ॥ २२ ॥ महल पिलंगादिक अथि रछै । ते पांम्या छै आपणें हाथ । कामभोगमें रकत होय रह्या । ते तज होयसां नाथ ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २३ ॥ पांचे इंद्र्यांरा भोग छोम्नें । द्रव्य भावै हलकाथाय । सहज वाउ पंखीनीपरै । विचरस्यां अपणी दाय ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २४ ॥ गिरध पंखीज्युं भोग जाणजो । एह काम वधारै संसार । सापज्युं मोर थकी मरतो रहै । ज्यूं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ (सां० । प्राणी सं०) ॥ २५ ॥ सोक तजी संतोषसुं । लेस्यां संय मभार । ममता तजी समता ग्रहो । करस्यां उग्र विहार (सां० प्राणी सं०) ॥ २६ ॥ तन धन जोवन कारमो । चंचल वीज समान । खिण २ खूटै आउखो । मूरख करैरे गुमान ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २७ ॥ हस्तीज्युं वंधण तोम्नें । आपे वनसुखै जाय । करम बंधण तूटै संयम लियां । सुणो

कहुंवुं महाराय ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २८ ॥ इम सुणनें इखुकार राजा चेतियो । ओमीनें मोटको राज । कायरनें तो ए तजतां दोहिलो । विप्र सहित सारया काज ॥ (सां० राणी सं०) ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ओमके । पायो जिन धरम सुजाण । तपस्या सगलांही आदरी । उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ ३० ॥ सुधसंयम पालै सदा । सुमति गुपति दयाल । अमरानी परै करै गोचरी । रिष टालै दोष वयांल ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज बै । अव्य जीवनें ए तारै पार । केवल ज्ञान उपायनें । सुख पाम्यां श्रीकार ॥ ३२ ॥ (सां० प्राणी सं०) । मोहनिवारी प्राणी समऊनें । निरमल भावना भाव । अए जणा थोडा कालमें । सुगति बिराज्या जाय । (सां० प्राणी सं०) ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती । भृगु पुरोहित जशा नार । प्रोहित भृगुला दोय दीकरा । शिव सुख पाम्यो सार ॥ ३४ ॥ (सां० प्राणी सं०) इति श्री इखुकार राजा भृगु प्रोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥(अब नव पदके (९) चैत्यवंदन (९) स्तवन(९)थुई लिखते हैं॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री इष्टदेवायनमः ॥ ❀ ॥ जय २ श्री अरिहंत भानु । भवि कमल विकाशी । लोकालोक अरूपि रूपि । समवस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्घात सुभ केवलै । क्षय कृत मल राशी । शुक्ल चरम शुचि पादमें । भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरङ्ग रिपु गण हणीए । हुय अप्पा अरिहंत । तसु पद पंकजमें रहित । हीर धरम नित संत ॥ ३ ॥ इति अरिहंत पद चैत्यबंदनं ॥ जिंकिंचि० । नमोर्ऽहत्० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पूजो मनरली, हां हो दादा कुशल सुरिंद पू० एदेशी) ॥ श्रीतेरमगुण बसिकै कंत । कर्मकुं भंजै श्री अरिहंत । (मन मानले) । अष्ट समय में समय तीन । सर्व आहार थी होवें हीन ॥ (म०) बादर काये मन बच भोग । तनु २ सें फुन दृढ तनु योग ॥ (म०) सुखम कायते मन बच रोक । निज बीर्ये ताकुं कर फोक (मन०) ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन

व्यापार । बेइंद्रीनें वाक्य प्रचार (म०) आदि समय रह्यो पणक सुजी व । सुखम लह्यो तिण जोग अतीव (म०) एषां योग थी समयें एक। हीना संख गुणो कर ढेक (मनमा०) समया संखें जोग निरोध । कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध (मन०) बेद समें ना हारता पाय । कुशल कहै ते श्री जिनराय । (म०) तेरमे गुणमें गुण समें देव । आपोसा जगकुं नितमेव (म०) ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनम् ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अरिहंत पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी । केवल ग्यान की ज्योति प्रकाशक अनंतगुणें करि पूरो जी । तीजै भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरोजी । बारै गुणांकरी एहवा अरिहंत आराधो गुण नूरोजी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शैलेसी पूर्वप्रांत । तनु हिंनत भागी । पुव्व पनोयपसंगसें ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत । गये निगुण निरागी । चेतन रूपें आत्मरूप । सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाण थी ए । रूपातीत स्वभाव । सिद्ध भये तसु हीर धर्म । बंदे धरि सुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थांरे महिला ऊपर मेह ऊरोखै बीजली ॥ (ए चाल) ॥ ❀ ॥ अष्ट बरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें (म्हाराजाल ही०) । जतकृष्टो करै बास सयोगी धाममें (म्हा० स०) ॥ अजोगी के अंत तजे भव भव्य ता (म्हारा०त०) । शैलेसीजहै कर्म दलै गुणश्रेणिता (म्हा० द०) ॥ १ ॥ ऊस्वाऊर पंच काल रहै ते योगमें । (म्हा०र०) तेरस प्रकृतिनो अन्त करीनें अन्तमें (म्हा०क०) गमन करै नगरजूसें अक्रिय होयनें (म्हा० अ०) पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधनें (म्हा०स्व० २) इषु गुण नवपरमाण जोजन लहे कही (म्हा०जो०) वर्तुल बिसदा भाश निरालंबन सही (म्हा०नि०) मध्ये जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें (म्हा०घ०) मही पक्षथी हीन भणी

सिद्धांतमें (म्हा०अ०)॥ ३ ॥ तनुपव्भारा नाम शिलासें जोयनें (म्हा०शि०) युग लोचनमें भाग अलोककुं स्पर्शनें । लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहना (म्हा० प्र०) इक्विधनु शतपंच गुणासें हीनता (म्हा०) मिलिया एकमें नंत अबाधा नालही (म्हा० अ०) अष्ट प्राणधरि रम्य सिरीही जो सही (म्हा० सि०) बीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें (म्हा० धरो०) कुशलभये जग जीव मिलोगा तेहमें (म्हारा० मि०)॥५॥❀॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो सिववाशी जी । अव्या बाध सादि अनादि चिदानंद चिदराशी जी । पर मातम पद पूरण विलाशी अघ घन दाघ विनाशी जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद ध्यावो केवल ग्यानी भाशी जी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति सिद्धपद स्तुतिः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन पदकुल मुखरस अनिल । मितरस गुण धारी । प्रवल सबल घन मोहकी । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्वादिक जिनराज गीत । नयतन विस्तारी । भव कूपै पापें पमत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके । आचारिज पदसार । तिनकुं बंदे हीर धर्म । अठोत्तर सो बार ॥ ३ ॥ इति आचार्य पद नमस्कारः ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आचार्य पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (नणदल बींदलीलै एचाल) ॥ ❀ ॥ खंती खमगथी जेणें । हण्यो क्रोध सुभट सम देणेंहो । (गणपति गुणपेखी) । मान महागिरि बयरे । अति सोभन मद्दव बयरें (होग० १) दंभरूप बिश बेली । वर अजाव कीलै ठेलीहो (ग०) । मुर्छा बेलथी भरियो । लोह सागर मुत्तें तरियोहो(ग०) ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो । जिण दम शम जंत्रें कीनो हो (ग०) मोह महामल्ल तारुयो । पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो (ग०) ॥ ३ ॥ दोश गयंद बस कीनो । धरि उपशम अंकुस लीनो हो (ग०) अंतरंग रिपुजेद्या । सुर बर पिण जिण णिषेद्याहो (ग० ४) रस कृति गुणथी

लीनो। सुत्र अरथै आगम पीनोहो (ग०) आचारिज पद एहवो । धरी जीव कुशलता सेवोहो (ग०) ॥ ५ ॥ इति आचार्य स्त० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आचार्यपद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचाचारकुं पालै उजवालै दोष रहित गुणधारी जी । गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी जी । प्रबल सबल घनमोह हरणकुं अनिल समो गुणवाणी जी । क्षमा सहत जे संयम पालै आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुति ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ पद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन श्री उवझाय राय । सठता घन भंजन । जिनवर दिसत दुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहि निश हीर धर्म । बंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्याय चैत्य० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शांवलिया अलगा रहोनें । (एचाल) हुयनें ३ दूरी हुयनें । चेतन भाषै सठनें (दूरीहोयनें) तुं मुझपास क्युं आवै (दू०) तुझनें कुण वतलावे । (दू० आंकणी) तो संगै निज पंचेंद्रीनो । रचना चरम भुलाणो । नाणावरणी खय उपशमसे । भावेंद्री भंगाणो (दू०) ॥ १ ॥ द्रव्यै ते परजाप्तेंकीना । जाति नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक किण कर्मे उपदेश (दू०) ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुझकुं शंका । तेरे संगे लागी । नीलवर्ण की शमतासेती । मेंभयो तोसुं रागी (दू०) ॥ ३ ॥ उप क हीयें हणीयो भवियानो । अधियां जाग्रत आय । आधीनां मन पीगाना में । मायो येन बिलाय (दू०) ॥ ४ ॥ आधिक्यै स्मरीयै बर आगम । सुत्र सें ते उवझाय । ततसेवातें हणि सठताकुं । चेतन कुशलता पाय (दू०) ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ पद स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंग इग्यारै चउदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी । सूत्र अरथधर पाठक कहियै जोग समाधि विचारी जी । तप गुण सूरा आगमपूरा नय निक्षेपै तारी जी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ ❀ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दंशण नाण चरित्त करी । वर शिवपद गामी । धर्म शुक्लसु चि चक्रसें । आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्ततें । नये अंतरजामी । मांनस ईंदिय दमनभूत । शम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुण गण भर्यो ए । पंचम पद मुनिराज । तत्पद पंकज नमतहै हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदनं ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ साधु पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मालन मालन मति कहो (एचाल) निकषाया जगजन कहै । धारे चउगति बसनसें रोसहो (मुनिंदजी) राग हीन भय तुं करै । (साहिबा) शिव रमणीसें हेतहो (मुनिंदजी) ॥ १ ॥ सर्वेप्रमादतजी रहै (सा०) उठैपूरब कोम्हो (मु०) शत सोगम आगम करै (सा०) लघुकाले गुण आदिहो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्द्धि निद्राउदै सा० । पामें कर्म निकंद हो (मु०) प्रचला निद्रामें रही (सा०) । बारम गुणनो बास हो (मु०) ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करै (सा०) जो गुण संख्या तीत हो (मु०) तो पिण तिण जगमें लही (सा०) त्रिक घन गुणनी ख्यात हो (मु०) ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिव पथें (सा०) साधन परवर जीव हो (मु०) । साधु हुवइ तसु धर्ममें (सा०) कुशल भवतु जगती वहो (मु०) ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ साधू पद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति गुपतिकर संजम पालै दोष बयालीश टालैजी । षटकाया गोकल रुख वालै नवबिध ब्रह्मव्रत पालैजी । पंच महाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल उजवालै जी ॥ क्षपक श्रेणिकरि कर्म खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ इति साधू पदस्तुति ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शनपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हुय पुग्गल परियट्ट । अड्ढ परमित संसार । गंठिभेद तव क रिजहै । सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक बेदक शशि असंख । उवशम पण वार । बिनाजेण चारित्र नाण । नही हुवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदे व गुरु धर्मनीए । रुचि लक्षन अभिराम । दरशनकुं गणि हीर धर्म । अह निश करत प्रणाम ॥ इति दर्शनपद नमस्कारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शनपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रामचंद्रके बाग आंबो मोह रह्योरी (ए चाल) ॥ ❀ ॥ देव श्रीजिनराज । गुरुते साधु भणयोरी । धर्म जिनेश्वर प्रोक्त । लक्षण बोधि तणोरी ॥ १ ॥ बोधलाभके काज । सप्तम नरक भलोरी । तेण बिना सुर लोक । तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त । बोधही छांहलहेरी । उपशम क्षायक वेद । ईश्वर तीन कहेरी ॥ ३ ॥ भव सायर हे अपार । फुण अस्ताघ कह्योरी । जसु लाभै ते होय । गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यदभावें अप्रमाण । नाण चारित्त भलारी । बोध धर्ममें जीव । लाभै कुशल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनपन्नत्त तत्व सूधासरधै समकित गुण उज वालै जी । भेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी । प्रत्या ख्यानें समतुल्य भाष्यो गणधर अरिहंत सूराजी । ए दरशण पद नित नित बंदो भवसागरको तीरा जी ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ द्विप्रादिक रस राम वन्हि । मित आदम नाण । भाव मिला पसें जिन जनित । सुय बीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव जेहि दोय । मण लोचन नांण । लोकालोक सुरूप जाण । इक केवल भाण ॥ २ ॥ नानावरणी नासथीए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें हीर धर्म । नित चाहत अवकाश ॥ इति ज्ञानपद चैत्यबंदनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद स्तवन ॥ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्मांरे अति उलरंगे (ए चाल) जिनवर भाषित आगम भणिया । तत्व यथास्थिति गमिया जी (म्हारे जगजनतारू) ते उत्तम बर नाण कहायै । भवि जन अहनिशि चाहै जी (म्हा०) ॥ १ ॥ भक्ष्या भक्ष्य कुपंथ सुपंथा । पेयापेय अग्रंथाजी (म्हा०) देव कुदेव अहित हित धारी । जाणें जेण विचारी जी (म्हा०) ॥ २ ॥ श्रुति मति दोयउ इंद्री सारू । तेण परोक्ष बिचारूजी । (म्हा०) उही मण केवल है वारू । जीव प्रतक्ष सुधारू जी (म्हा०) ॥ ३ ॥ अयवि जस्स बलें जगजाणें । लोकादिक अनुमानें जी । (म्हा०) त्रिभुवन पूजै जासु पसायें । धारी शुभ अध्यवसायें जी (म्हा०) ॥ ४ ॥ नाणा वरणी उपशम क्षयथी । चेतन नाणकुं बिलशैजी (म्हा०) । सप्तम पदमें भविजन हरषै । निशदिन कुशलता निरखै जी (म्हा०) । इति नाणपद स्तवनं ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यान पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मतिश्रुत इंद्री जन्मित कहियै लहीये गुण गंभीरो जी । आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग बिस्तारोजी । अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी । ए पांच ग्यानकुं बंदो पूजो भविजननें सुखकारो जी ॥ ❀ ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जस्स पयायें साहु पाय । जुग २ समितेंद । नमन करै सुभ भावलाय । फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय । करि कर्म निकंद । सुमति पंच तीनगुप्तियुत । दै सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृति मान कषाय थीए । रहित लेस सुचिवंत । जीव चरत्तकुं हीरधर्म । नमन करत नितसंत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी । चिदाभास निस्संग (सुग्यानी सांभलो) मूर्त्तिहीन चेतन करै । रूपी पुदगल रंग ॥ (सुग्यानी सां०)

॥ १ ॥ स्यङ्क कारण वर्गणा ॥ कार्ये कारण भाव (सु०) कृत्वा जोग सुधामता । लब्धा संखस्वभाव (सु०) ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें । बृद्धि लहै जुगमान (सु०) मध्ये वसु समयें लहै । अंते द्रौ तेजाण (सु) ॥ ३ ॥ सहकारी मानस सुखा । कारण रम्य वलेण (सु०) प्राप्ताघस्र प्र कारता । सप्त प्रकृतका तेन(सु०) ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी भलो । चेतन संयमधाम (सु०) कर घन मिल पद धर्ममें । कुशल भवतु अभिराम (सु०) ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावै जी । बारै भावना सूधी भावै सागरपार उतारै जी । षटखंम राजकुं दूर तजीनें चक्री संजमधारै जी । एहवो चारित्रपद नित बंदो आतम गुण हि तकारै जी ॥ इति चारित्र पद स्तुतिः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री रुषभादिक तीर्थनाथ । तद्भव शिव जाण । बिहिअंतै रपि बाह्य । मध्य द्रादश परिमाण ॥ १ ॥ बसु कर मित आमोसही । आदिक लब्धि निदान । भेदै समतायुत खिणें । दृग्घन कर्म विमान ॥ २ ॥ नव मो श्रीतपपद भलोए । इच्छा रोध सरूप । बंदनसें नित हीरधर्म । दूरभवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपद चैत्यवंदनं ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बारश भेद भणया जिनराजै । बाह्य मध्यतणा जगकाजैरे । (शि वपद श्रेणि) । तिण भव सिद्धितणा बरग्याता । जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ १ ॥ (शि०) शमता सहिते जिनते भारी । भली कर्म चमु पिणहारी रे (शि०) जीव कनकसें कर्म कचोरा । दहै तप पावनका जोरारे (शि०) ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुशमहै रुद्धि । देव नरनी फलते सिद्धी रे (शि०) पाप सकलहै तमनी राशी । तप भानूसें जाये नाशी रे (शि०) ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहियै बारू । लब्धां सगली जगहित कारू रे (शि०) अति दुकर फुण साध्यता हीना । काम तातें बारू कीनारे ।

(शि०) ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै । तपपदही चेतन वहियैरे (शि०) पाठक हीर धर्म कृपासें । नवपद कुशलाकूं नासेरे ॥ शि० ॥ ५ ॥ इति श्रीतपपद स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ तपपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इच्छारोधन तपते जाण्यो आगम तेहनो साखी जी । द्रव्य जावसें द्वादश दाखी जोगसमाधि राखी जी । चेतन निजगुण परणित पेखी तेहीज तप गुण दाखी जी । लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वरसें सुख जाषी जी ॥ इति तपपदस्तुतिः ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिन चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मद्वृषन्न सर्वज्ञ। वृषन्नांक सुवर्णरुक्। जय देवाधिदेवार्हं। जाजि राजेन्द्र नन्दन ॥ १ ॥ युगस्पादौ त्वयायेन । ज्ञान त्रय युतेन यत्। जनन्या मरुदेवायाः । पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषन्न स्तुतिः ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अर्हता जितनाथेन। गजलांछन शालिना । जित शत्रू महीपाल। पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षि रत्नेन । जगवंस्त्वयका जिनः । जिता रागादयो येन । वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्य जितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ जितारि नृपतेर्वंश्यात् । शंन्नवः शंन्नवाजिधः । शेनायानंदनो हे म । वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्व सौख्यप्रदो मुख्य । ज्ञान दर्शन संयु तः । मुनीनां पुङ्गवो देवो । नित्यं दिशतुमांजिनः ॥६॥ इति शंन्नव स्तुतिः ३

॥ ❀ ॥ सिद्धार्थानंदनं सार्व । वीतरागं जगत्पतिं । श्री संबर समुत्पन्नं प्लवगांकं हिरण्यन्नं ॥ ७ ॥ अजिनन्दन नामानं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौ ति परयाजक्त्या । सना लोकेजिनंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ मेघाजिध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । क्रौंच लक्षण जृष्टेम । मरीचि मंङ्गलांगजः ॥ ९ ॥ सत्यं सुमति नाथेश । सुमतिं तनुसत्तमां । जवि नां पुण्यकर्तृणां । स्वर्ग सौख्यवलिप्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ ५ ॥

॥❀॥ सुशीमा पुत्र सत्कोक । नदद्युति धराधर । धरा जिध नृपोद्भूत । पद्म लक्षण धारक ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जवसंकीर्णे । दुस्तरे पततां नृणां । त्राणाय सततं देव । पद्मप्रन्न जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रन्न स्तुतिः ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसुपार्श्वांनिधो देवः । पृथ्वीजः स्वस्तिकांकनृत् । प्रतिष्ट नृप संजात । श्यामीकर करोजिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः । कर्मणां छेदने परः । यः सार्व्वः परमब्रह्मा । तंनौमि सदा विनूं ॥४॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ७

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रन्न प्रन्नोकांत । चंद्रलक्षण संयुत । स्तमापति ह्यविज्ञान । तमो व्यूह विनासनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ । महसेन नृपोद्भवः । लक्ष्मणा पुत्र मांस्वामि । न्नव केवल बोधनृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रन्न स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ (अत्राद्यछत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तु तो वो ददत्वाशु । सुरासुर नरेश्वरैः । सुविधिर्व्वांछित शर्म्म । सुग्रीव नृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी रामा । माननीया दिवौ कसां । मान मुक्तो वदातोयो । मायौ मकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (चामर बंधाविमौ) ॥ श्रीमच्छीतलनाथेश । नन्दा दृढरथात्मजा । न्नास्वत्सुवर्ण वद्देह । श्रीवत्सांघ्रांक धारकः ॥ १९ ॥ त्वदीय चरणांन्नोजः । सेवकानां वपुर्नृतां । प्राक् कृतं वृजनव्यूहं । दुष्टं शंन्नोद्यहे बिन्नौ ॥ १० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विष्णु र्वंशार्क वद्देवो । विष्णु पुत्रो हिरण्यन्नः । श्रेयो वृद्धि करो जस्रं । खड्गलांछिन नृङ्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वा कर्म रिपून् सार्व । श्रेयांस श्रैयसैः सह । परज्ञान मयेनत्वं । महानन्दपदं परं । इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥

॥❀॥ वरी वर्त्ति तरामीहा । न्नवतां न्नवतां यदि । झटिति छेदितुं चित्ते । नोन्नव्याः प्रामु मङ्करं ॥ २३ ॥ त्तदान्नजध्व मेनंहि । वासुपुज्यं जया सुतं । वसुपूज्य कुलोत्तंसं । महिषां कंच रक्तन्नं ॥२४॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः २

॥❀॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र । कृतवर्म समुद्भव । शूकरांक धर श्यामा । पुत्रकल्याण दीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवाद्विमल ज्ञान । त्वदीय स्मरणं विना । कुर्व न्नप्येतिनो ब्रह्म । प्रक्रियां नातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमलस्तुतिः ॥ १३ ॥

॥❀॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य । सुयशः सिंह सेनयोः । देवस्य श्येनचिन्हस्य । वर्ण्यानन्त गुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं । गुणानां नेजिरे नहि । अनन्तस्य गुणान्तस्य । क्षमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुतिः ॥ १४ ॥

॥❀॥ सुव्रतापुत्र वज्रांक । न्नानुवंशार्कसन्निन्न । कनकप्रन्न सर्व्वज्ञ । ध

र्म्मनाथाभिधेश्वर ॥ २९ ॥ तवागोपि पुरश्चारी । भूतले यात्यशोकतां । अनुत्तरफलाः संति । सतां संगत योपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्म्मनाथ स्तुतिः ॥१५॥

॥ ❀ ॥ विश्वसेन धराधीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचिरेयं सुवर्णांगं । कलायामि जिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तं श्रीमच्छांति नामानं । यस्याग्रे कुर्वते मुदा । प्राज्यां सुमनसां वृष्टिं । विबुधा विबुधप्रियां ॥ ३१ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः

॥❀॥ श्रीयुतायाः श्रियपुत्र । श्रेयस्कर हिरण्मय । सूरि भूपति संजात । छागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं पापसंदोहं । भवांतर कृतं घनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्दावर्त्तांक संयुतं । अंभोज वन्हिरालेपं । देवीपुत्रं सुवर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्व्वे । धुर्य्यप्रभुतया जिनं । चरीकर्मि नमस्तस्मा । अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ कुंभ प्रभावती पुत्रौ । नीलवर्णौ घटांकभृत् । जगन्मित्र इव ध्वान्त । नाशना द्भिदितः सदा ॥ ३७ ॥ त्रय त्रय युतोभाति । देवयो विष्टपत्रये । तस्य श्रीमल्लिनाथस्य । स्मरणेन मुदा सखे ॥३८॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः

॥❀॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि पवित्रकृत् । कुर्म्म लक्षण भूद्धर्म्म दायक श्यामलद्युवे ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रत देवेन । क्षीणकर्म्मारि मंभुज । देहि त्वं मेव्ययीभावं । पदं तत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुतिः ॥२०॥

॥ ❀ ॥ श्रीमद्विजय भूपाज । कुलोत्तंस हिरण्यरुक् । वप्रासुत नमिनाथ । नीलोत्पल सदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंच जनोदेवः । निन्दाच कुरुतेश्वयं । सएति परमज्ञानं । कोपि नह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ।

॥ ❀ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंश हरौ शंखौ । शंखांके कमल प्रभे ॥ ४२ ॥ त्यक्त राजी मती स्नेहे । नेमनाथे जितस्मरे । सिद्धि प्रमदयामाला । प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः २२

॥ ❀ ॥ अश्वशेनाख्य भूपाज । सुतेन परमेष्ठिना । वामेयेन दितायेन । कमठ स्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय । नमोस्तु मामकं सदा । पवनासन चिन्हाय । नीलवर्णाय संभवे ॥४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तु०

॥ ❀ ॥ श्रीमत्सिद्धार्थ वंशार्क । त्रिशलेय जगन्मणे । महा नाद ध्वजा

र्हंत । कल्याणं कर सर्व्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थ कृद्वीर । मोहेभ्रहनने मृ गात् । त्वद्भक्ति दत्तचित्ताय । कमलां देहिमे जिनः ॥ ४८॥ इति स्तुः ॥२४॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीक्षमा कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तवना संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुट्कर नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यत्र श्रीभरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्क्रमात् । तीर्थेशः किल युग्मवर्णवसुदिक संख्यान संख्याश्रियः । साधु स्थापयतिस्म विस्मित हृदा दृश्यं नगाधीश्वरं । तं चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं ॥ १ ॥ इत्यष्टापद स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जसद्रि पंचाशदधीश्वरालयै । बिराजिते श्रीमति शाश्वताश्रये । नन्दीश्वरे द्वीपवरे जिनेश्वरान् । वंदे प्रमोदाद्भवभीति शांतये ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ इति नंदीश्वर स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शकल कुशलवल्ली पुष्करावर्त्त मेघो । दुरिततिमिर भानुः कल्प वृक्षोपमानुः । भवजल निधिपोतः सर्व संपत्ति हेतुः । स भवतु सततंवः श्रेयसे पार्श्व देवः ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शनाद्दुरित ध्वंसी । वंदना द्भांछित प्रदः । पूजना त्पूरकः श्रीणां । जिनःसाक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुवर्ण वर्णं गजराजगामिनं । प्रलंब बाहु सुविशाल लोचनं । नरा मरेंद्रै स्तुतपादपंकजं । नमामि भक्त्या रुषभं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमस्कार समोमंत्रः । शत्रुं जय समोगिरिः । वीतराग समो देवो । न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ दिट्ठे तुह मुहकमले । तिन्निविणट्ठाइ निरवसेसाइं । दारिद्दं दोहग्गं । जम्मंतर संचियं पावं ॥ १ ॥ पाताले यानि बिंबानि । यानि बिंबानि भूतले । स्वर्गेपि यानि बिंबानि । तानि वंदे निरन्तरं ॥ १ ॥ प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रशस्तं । वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः । कर युग मपि यत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं । तदसि जगति देवो वीतराग स्त्वमेव ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति सर्व जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हत्था जेह सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त । एकण धम्में बा

हिरा। परघर कम्मकरंत ॥ १ ॥ नव बीजांकुर जनना। रागाद्याःक्षय मु पागता यस्य। ब्रह्मा वा विष्णुर्वा। हरो जिनोवा नमस्तस्मै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाके देववंदनमें (तथा) दशमें दिन। तथा पारणेकी विधिमें कहणेका (चै०) (स्त०) थुई लि० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदढ पीढिपइठिउ। सिद्धि सूरि उव झाय साहु चिहुंसाहगरिठिउ। दंसण नाण चरित्त तवहिं पम्हसाहें सुन्द रू। तत्तक्खर सर वग्ग लहि गुरुपय दल संवरू। दिशिवाल जक्ख जक्खणी पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियउ। सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अह्म मम वंछि यदियउ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः नवपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ श्री अरिहंत उदार कांति। अति सुन्दर रूप। सेवो सिद्ध अ नन्तशांत। आतम गुण चूप ॥ १ ॥ आचारज उवझाय साधु। शमता रस धाम। जिनभाषित सिद्धांतशुद्ध। अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधबीज गुण संपदाए। नाण चरण तव शुद्ध। ध्यावो परमानन्दपद। ए नवपद अवि रुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनन्द कंद। जगमांहि प्रसिद्धो। चिंतामणि सम जास जोग। बहु पुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥ तिहु अण सार अपार एह महिमा मनधारो। परिहर परजंजाल जाल। नित एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्क पदसेवतां। सहजानन्द स्वरूप। अमृतमय कल्याण निधि। प्रगटे चेतन चूप ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद वृद्धस्तवन लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सुरमणी समसहु मंत्रमां। नवपद अभिरामीरे लोय। (अहो नव०) करुणा सागर गुणनिधी। जग अंतरजामीरे लो०। (अहो जग०) ॥ १ ॥ त्रिभुवन जनपूजित सदा। लोकालोक प्रकासीरे। लो० (अहो लोका०)। एहवा श्री अरिहंत जी। नमुं चित्त उल्लासीरे लो०। (अ० न०) २। अष्ट करम दलक्षय करी। थया सिद्ध सरूपीरे लो०। (अ० थ०) सिद्ध नमो जवि भावथी। जे अगम अरूपीरे लो० (अ० जे)

॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता । सुंदर सुखकारी रे लो० । (अ० सुं०) आ चारज तीजे पदे । वंदु अविकारी रे लो० । (अहोवं०) ॥ ४ ॥ आगम धारी उपशमी । तप दुविध आराधी रे लो० । (अ० त०) चोथे पद पाठ क नमो । संवेग समाधी रे लो० । अ० सं०) ॥ ५ ॥ पंचाचार पालणपरा पंचाश्रव त्यागी रे लो० । (अहोपं०) गुण रागी मुनि पांचमें । प्रणमुं वड़ भागी रे लो० । (अ० प्र०) ॥ ६ ॥ निज परगुणनें उजखे ॥ श्रुत श्रद्धा आवे रे लो० । (अ० श्रु०) छठे गुण दरशण नमो । आतम शुभ भावे रे । (लो० अ० आ०) ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमें । जे पंच प्रकारे रे लो० (अ० जे०) लोकादिक षद् द्रव्यना सहुभाव विचारेरे लो (अ० स०) ॥ ८ ॥ आठमें चारित्र पद नमो । परभाव निवारी रे (लो० अ० प०) खंत्यादिक दस धर्मनो । जेह छे अधिकारी रे लो० । (अ० जे०) ॥ ९ ॥ नवमें वलि तपपद नमो । बाह्याभ्यंतर भेदेरे लो० । (अ० बा०) बांध्या काल अनंतना । जे कर्म उछेदे रे लो० । (अ० जे०) ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी । ध्यावे शुभ भावे रे लो० । (अ० ध्या०) नृप श्री पालतणी परे । मन वंछित पावे रे लो० । (अ० म०) ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक माशमां । नव आंबिल करियेरे लो । (अ० न०) नव ओली विधियुत करी । शिव कमला वरियेरे लो० । (अ० शि०) ॥ १२ ॥ सिद्ध चक्रनी बहुपरे । वर महिमा कीजेरे लो० । (अ० व०) श्री जिनलाभ कहे सदा । अनुपम जश लीजेरे लो० । (अ० अ०) ॥ १३ ॥ इति० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनःनवपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग मारु) ॥ तीरथनायक जिनवरू जी । अतिसय जास अनूप । सिद्ध अनन्त महागुणी जी । परमानंद सरूप । (भविक मन धारज्योरे) ॥ १ ॥ धारज्यो नवपदध्यान (भ० श्री आचारज गणधररूरे । गुण छत्तीश निवास । पाठक पदधर मुनिवरू जी । श्रुतदायक सुविलाश (भ०) ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोभता जी । साधू शमतावंत । सम्यग् दर्शन सुंदरू जी । ज्ञान प्रकाश अनन्त । (भ०) ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे । तप उत्तम विधि होय । ए नवपदना ध्यान थीरे । निरुपाधिक

सुख होय। (न०) ॥ ४ ॥ अमृतसम जिनधर्मनोरे। मूलए नवपद जाण। अविचल अनुभव कारणें जी। नितप्रतिनमत कल्याण (न०) ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग प्रभाती) नवपद ध्यान धरोरे (भविका न०) मन व च काया कर एकंते। विकथा दूर हरोरे (न० ॥ १ ॥ मंत्रजगी अरुतंत्र घणेरा। इन सबकों बिसरोरे। अरिहंतादिक नवपद जपनें। पुण्य भंमार भरोरे॥ २ ॥ (न०) अष्टसिध नव निध मंगल माला। संपति सहज वरोरे। लालचंद याकी बलिहारी। शिवतरु बीज खरोरे॥ ३ ॥ (नव०) ॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद थुई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नित प्रति हुं प्रणसुं सिद्धचक्र सुभ भाव। हिवकारज सिद्धि नो लाधो एह उपाय। तुझ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय। इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमियें सिद्ध सूरी उवझाय। मुनिवर त्रिक करनें दंशण नाण सुहाय। दुगविधि चारित्तें बुध विध तप मन भाय। ये नवपद ध्यावतां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या परवादै जानो ए अधिकार। श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार। प्रवचन अनुसारें भाष्यो एह विचार। भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभंडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार। सेवकनें आपै सुख संपति परिवार। हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नंदी मन भाय। जिनचंद सूरी सरखरतर पति सुपसाय ॥ ❀ ॥ इति नवपद स्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपदओली करण विधि लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ सें ओली सरू करै। (कदास) तिथि घटी हुवे तो छठ से, वढी होय तो, आठिम सें सरू करै। (पिण) आंबिल नव पूनिमतक करै। (तिहां) प्रथम भूमि शुद्ध करके। मांमणादिक सें चित्रत करै। पीछे बाजोट ऊपरि सिद्ध चक्र थापे त्रिकाल पूजा करें। (सोलिखते हैं) प्रभात समय राई पमिक्कमणो करिके। पीछें वस्त्र पमिलेहै। (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना हे। तहां

आयके पांच शक्रस्तवे देव वांदै। पीछे नव चैत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास क्षेप पूजा करै। पीछे केसर चंदनसें पूजा करै। पीछे मध्यान्ह समय, पांचशक्र स्तवे देव बांदै। पीछे गुरु पासे आयके। राई आलोवे। अब्भुट्ठिमि खमायके आंबिलनो पच्चक्खाण करै। प्रथम अरिहंत पदका वरण सपेद है। (इससें) आंबिल में चावल (अनें) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। अैसो आंबिल पचखै। (पीछै) अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिंतविके बारै नमस्कार करै। सो लिखते हें (प्रथम सर्व ठिकाणें) इच्छामिखमासमणो। वं० इत्यादि कहिके नमस्कार करै॥

॥ ❀ ॥ अरिहंतके १२ गुणः ॥ ❀ ॥

१॥ अशोक वृक्ष प्रति हार्य संयुताय श्री अरिहंताय नमः॥
२॥ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
३॥ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
४॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
५॥ स्वर्ण सिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
६॥ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
७॥ दुंदुभिप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
८॥ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
९॥ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि०॥
१०॥ पूजातिशय संयुताय श्रीअरि०॥
११॥ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि०॥
१२॥ अपाया पगमातिशय संयुताय श्रीअरि०॥

॥ ❀ ॥ इत्यादि नमस्कार करके। अन्नत्थू सासियेणं। (कहिके) १२ बारे लोगस्सको काउसग्ग करै। एकलोगस्स प्रगट कहै। पीछे स्वस्थान क जाकें। चैत्यवंदन करै। पचक्खाण पारिके। आंबिल करै। पहले जल पीवे (जब) चैत्यनंदन करिके पीवै। पीछे फेर चैत्यनंदन करिके तिविहार पचक्खाण करै। (ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं)। इस पदको २००० गुणनो करै। श्रीपालजीको चरित्र नवपद महिमा सुणें। पूण पहिर दिन

रहणेंसें (तीसरीवेर) पांच शक्रस्तवे देव वांदै । सामायक लेके दिन ऊते पम्हिकमणो करै। आरतीके समय, दीप, धूप, कुशम, पूजा करै। (अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके पीछै पम्हिकमणो करै। (सोनेंके समय) इरिया वही पम्हिकमके । चैत्यबंदन करिके । राई संथारा गाथागुणके सोवै। निद्रा न आवे (जहांतक) नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ द्वितीय दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब इसीतरे दूशरे दिन प्रन्नाति करणी सब करिके, सिद्धपदका लाल वर्ण है। (इसीसें) गहुंके रोटीको (आंबिल करै (ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं) इसपदको गुणणो दो हजार करै । सिद्धपदके आठगुण है। सो (८) गुणांको गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं)।

॥ ❀ ॥ सिद्ध पदके (८) गुण ॥ ❀ ॥

१ ॥ अनन्त ज्ञान संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
२ ॥ अनन्त दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ ॥ अव्यावाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ ॥ अनन्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ ॥ अक्षय स्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ ॥ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ ॥ अगुरुलघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ ॥ अनन्त वीर्य गुण संयुताय श्रीसि० ॥

॥ ॥ यह आठे नमस्कार करिके । अन्नत्थूससि० आठ लोगस्सको काउसग्ग करै। एक लोगस्स कहिके पारै। पीछै पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करै ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय दिवश विधिः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रन्नात कर्त्तव्य करै । आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै। (ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं) इस पदको गुणनो दोहजार करै । आचार्य पदके (३६) गुण याद कर के, छत्तीस नमस्कार करै (सो लिखते हैं) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आचार्य पदके (३६) गुण ॥ ❀ ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
२ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
४ ॥ मधुरवाक्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ ॥ गांभीर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ ॥ धैर्य गुण संयुताय श्रीआ० ॥
७ ॥ उपदेश गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ ॥ अपरिश्रावी गुण संयुताय श्रीआचा० ॥
९ ॥ सौम्य प्रकृति गुण संयुताय श्रीआ०
१० ॥ शील गुण संयुताय श्री० ॥
११ ॥ अविग्रह गुण संयुताय श्री० ॥
१२ ॥ अविकथक गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१३ ॥ अचपल गुण संयुताथ श्रीआ० ॥
१४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ ॥ क्षमा गुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ ॥ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ ॥ मृदु गुण संयुताय श्रीआ०
१८ ॥ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ ॥ द्वादश विधि तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० ॥ सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ ॥ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ ॥ शौचगुण संयुताय श्रीआ०
२३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ०
२४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ०
२५ ॥ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ०
२६ ॥ अशरण भावना भावकाय श्रीआ०

२७ ॥ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२८ ॥ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२९ ॥ अन्यत्व आवना भावकाय श्रीआ० ॥
३० ॥ अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३१ ॥ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३२ ॥ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३३ ॥ निर्जरा भावना भाव काय श्रीआ० ॥
३४ ॥ लोक स्वरूप भावना भाव काय श्रीआ० ॥
३५ ॥ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३६ ॥ धर्म्म दुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥

॥ ❀ ॥ यह छत्तीस नमस्कार करिके। अन्नत्थू ससिएणं (इत्यादि) कहि के। छत्तीस (३६) लोगस्सको कायसग्ग करै । एक लोगस्स ऊंचे स्वरसें कहिके पारै। यथोक्त करणी। अनुक्रमसें करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो नवझायाणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। हरद्या मूंगाकी दाल प्रमुखका आंबिल करै। नपाध्याय पदके (२५) गुण यादकरि के नमस्कार करै॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नपाध्यायके (२५) गुण ॥ ❀ ॥

१ ॥ आचारांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीनपाध्याय नमः ॥
२ ॥ सुयगडांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीनपाध्याय नमः ॥
३ ॥ श्रीठाणांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीन० ॥
४ ॥ श्रीसमवायांग सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
५ ॥ श्रीभगवती सुत्र पवन गुण युक्ताय० ॥
६ ॥ श्रीज्ञाता सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
७ ॥ श्रीनपाशकदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
८ ॥ श्रीअन्तगडदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
९ ॥ श्रीअणुत्तरोववाई सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

१० ॥ श्रीप्रश्न व्याकरण सुत्र पठन गुण यु० ॥
११ ॥ श्रीविपाक सुत्र पठन गुण यु० ॥
१२ ॥ उत्पाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
१३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१४ ॥ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१५ ॥ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१६ ॥ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ता० ॥
१७ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
१८ ॥ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१९ ॥ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२१ ॥ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२२ ॥ अबिंध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
२३ ॥ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
२४ ॥ क्रिया विशाल पूर्व पठन गुण यु० ॥
२५ ॥ लोक बिंदुसार पूर्व पठन गुण यु० ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें पचवीश नमस्कार करै (खमाहोके) अन्नत्थूस० (इत्यादि कहिके) पचवीश लोगस्सका काउस्सग्ग करै। एक लोगस्स क हके पारे। (पीछे) पुर्वोक्त करणी करै। इति चतुर्थ दिवश विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीँ णमोलोए सव्वसाहूणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। साधु पद काले वर्ण है (इससें) उपदका आंबिल करै । सर्व साधु पदके सत्तावीश गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साधु पदके (२७) गुण ॥ ❀ ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ ॥ मृषावाद विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
३ ॥ अदत्तादान विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥

४ ॥ मैथुन विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
५ ॥ परिग्रह विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
६ ॥ रात्रिभोजन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ॥
७ ॥ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ ॥ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ ॥ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० ॥ वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ ॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ ॥ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ ॥ एकेंद्री जीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ ॥ बेइंद्रीजीव रक्षाय श्रीसा० ॥
१५ ॥ तेइंद्री जीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ ॥ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ ॥ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ ॥ लोभ निग्रह काय श्रीसा० ॥
१९ ॥ क्षमा गुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० ॥ शुभ भावना भाव काय श्रीसा० ॥
२१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ ॥ संयम योग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ ॥ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ ॥ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ ॥ काय गुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीशहसहण तत्पराय० ॥
२७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें सातवीश नमस्कार करै (खमा होके) अन्नत्थू स० (इत्यादि कहिके) सातवीश लोगस्सका काउसग्ग करै । एक लोग स्स कहके पारे (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै । (यह पंच परमेष्टि पदके

सर्व गुण मिलाणेसें) (१०८) होय (इसीसें) जैनमें मालाके दाणे (१०८) होते है ॥ इति पंचम दिवश विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्टम दिवस विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करे । दर्शन पद सपेद वर्ण (इससें) तंदुलका आंबिल करे । सम्यक्तके सतसठि गुण चिंतवके नमस्कार करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सम्यक्तके सतसठि भेद लि० ॥ ❀ ॥

१ ॥ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
२ ॥ परमार्थ ज्ञातृसेवन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
४ ॥ कुदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
५ ॥ शुश्रूषा रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
६ ॥ धर्म राग रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
७ ॥ वैयावृत्त रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
८ ॥ अर्ह द्भिनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
९ ॥ सिद्ध विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१० ॥ चैत्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
११ ॥ श्रुत विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१२ ॥ धर्म विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१४ ॥ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१६ ॥ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१७ ॥ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सद्द० ॥
१९ ॥ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतनरूपस० ॥
२० ॥ संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति चिंतनरूप सद्द० ॥

२१ ॥ शंका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२२ ॥ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२३ ॥ विचिकित्सा रूप दूषण रहिताय० ॥
२४ ॥ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय० ॥
२५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय० ॥
२६ ॥ प्रवचन प्रभावक रूप स० ॥
२७ ॥ धर्मकथा प्रभावक रूप स० ॥
२८ ॥ वादी प्रभावक रूप स० ॥
२९ ॥ नैमित्तक प्रभावकरूप स० ॥
३० ॥ तपस्वी प्रभावकरूप सद्द० ॥
३१ ॥ प्रज्ञप्त्यादि विद्या भृत्प्रभावकरूप स० ॥
३२ ॥ चूर्ण जनादि सिद्धप्रभावकरूप स० ॥
३३ ॥ कविप्रभावकरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३४ ॥ जिनशाशने कौशलता भूषनरूप स० ॥
३५ ॥ प्रभावना भूषणरूप स० ॥
३६ ॥ तीर्थसेवा भूषणरूप स० ॥
३७ ॥ थैर्यता भूषणरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३८ ॥ जिनशाशने भक्ति भूषणरूप० ॥
३९ ॥ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस० ॥
४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ॥
४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीस० ॥
४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप श्रीस० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप ॥

४८ परतीर्थकादि अशनादि दानवर्जनरूप श्रीस० ॥
४९ ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप श्रीस० ॥
५० ॥ राजाभियोगाकार युक्त श्रीस० ॥
५१ ॥ गणाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५२ ॥ बलाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५३ ॥ सुराभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५४ ॥ कांतार वृत्याकार युक्त श्रीस० ॥
५५ ॥ गुरु निग्रहकार युक्त श्रीस० ॥
५६ ॥ सम्यक्त चारत्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्री० ॥
५७ ॥ चारत्र धर्म पुरस्य द्वार मिति चिंतन० श्रीस० ॥
५८ ॥ चारत्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ॥
५९ ॥ चारत्र धर्मस्याधार मिति चिंतन० श्रीस० ॥
६० ॥ चारत्र धर्मस्य भाजन मिति चिंतन० श्रीस० ॥
६१ ॥ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभ मिति चिं० श्री० ॥
६२ ॥ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान युक्त श्रीस० ॥
६३ ॥ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान युक्त श्री० ॥
६४ ॥ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान यु० श्री० ॥
६५ ॥ सचजीव कृत कर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थान यु० ॥
६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्व्वाणमिति श्रद्धान स्थान युक्त श्री० ॥
६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥

॥ ❀ इस रीतसें सतसठि नमस्कार करै । (खमाहोके) अन्नत्थू ससिएणं० (इत्यादि कहिके (६७) लोगस्स (अथवा) ७ लोगस्सको काउसग्ग करै । एक लोगस्स कहके पारै । (पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तम दिवश बिधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीं णमो नाणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। ज्ञान पद उज्वल वर्ण है (इससें) तंदुलका आंबिल करै । इकावन भेद ग्यान पदके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ज्ञानपदके (५१) नेद लि०

१ ॥ स्पर्श नेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ ॥ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
३ ॥ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नम : ॥
४ ॥ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
५ ॥ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
६ ॥ रसनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
७ ॥ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
८ ॥ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
९ ॥ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
१० ॥ मनऽर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
११ ॥ स्पर्शनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१२ ॥ रसनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१३ ॥ घ्राणेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१४ ॥ चक्षुरिंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१५ ॥ श्रोत्रेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१६ ॥ मनें करी ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१७ ॥ स्पर्शनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
१८ ॥ रसनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
१९ ॥ घ्राणेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२० ॥ चक्षुरिंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२१ ॥ श्रोत्रेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२२ ॥ मन करी अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२३ ॥ स्पर्शनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२४ ॥ रसनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२५ ॥ घ्राणेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२६ ॥ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ॥

२७ ॥ श्रोत्रेंद्री धारणा मति० ॥
२८ ॥ मनो धारणा मति ज्ञानायनमः ॥
२९ ॥ अक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥
३० ॥ अनक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥
३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ॥
३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ॥
३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ॥
३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ॥
३७ ॥ सपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
३८ ॥ अपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
३९ ॥ गमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥
४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥
४१ ॥ अंग प्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ ॥ अणुगामि अवधिग्यानाय नमः ॥
४४ ॥ अणूणगामि अवधिग्यानाय नमः ॥
४५ ॥ वद्धमान अवधि० ॥
४६ ॥ हीयमान अवधि० ॥
४७ ॥ प्रतिपाती अवधि० ॥
४८ ॥ अप्रतिपाती अवधि० ॥
४९ ॥ रुजुमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥
५० ॥ विपुलमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥
५१ ॥ लोका लोक प्रकाशक श्री केवलग्यानाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें (५१) नमस्कार करै । (खमा होके) अन्नत्थ ऊससिएणं० (इत्यादि कहै) (५१) लोगस्सका काउसग्ग करिके । प्रगट

जोगस्स कहै। पीछे सर्व पूर्वोक्त करणी करै। इति सप्तम दिवश विधिः ॥ ७॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। चारित्र पदका उज्वल वर्ण है। (इसीसें) तंदुलका आंबिलकरै। सित्तर भेद चारित्र पदके। चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पदके (७०) भेद लि० ॥ ❀ ॥

१ ॥ प्राणाति पात विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
२ ॥ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
४ ॥ मैथुन विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
५ ॥ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
६ ॥ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
७ ॥ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
८ ॥ मृदुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
९ मुक्तधर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
१० ॥ तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
११ ॥ संयम धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
१२ ॥ सत्य धर्म्म रूप चारि० ॥
१३ ॥ शौच धर्म्म रूप चारि० ॥
१४ ॥ आकिंचन धर्म्म रूप चारि० ॥
१५ ॥ बंभ धर्म्म रूप चारि०
१६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः ॥
१७ ॥ उदग रक्षा संयम चारि० ॥
१८ ॥ तेऊ रक्षा संयम चारि० ॥
१९ ॥ बाऊ रक्षा संयम चारि० ॥
२० ॥ वनस्पति रक्षा संयम चारि० ॥
२१ ॥ वेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥

२२ ॥ तेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२३ ॥ चौरिंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२४ ॥ पंचेन्द्री रक्षा संयम चारि० ॥
२५ ॥ अजीव रक्षा संयम चारि० ॥
२६ ॥ प्रेक्षा संयम चारि० ॥
२७ ॥ उपेक्षा संयम चारि० ॥
२८ ॥ अतिरिक्त वस्त्र भक्तादि परठण त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ ॥ प्रमार्जन रूप संयम चारि० ॥
३० ॥ मनः संयम चारि० ॥
३१ ॥ वाक्संयम चारि० ॥
३२ ॥ काया संयम चारि० ॥
३३ ॥ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ ॥ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३५ ॥ तपस्वी वैयावृत्यरूप चारि० ॥
३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूप चारि ॥
३७ ॥ गिलाण साधु वैयावृत्यरूप चारि० ॥
३८ ॥ साधु वैयावृत्य रूप चारि० ॥
३९ ॥ श्रमणो पाशक वैयावृत्यरूप चा० ॥
४० ॥ संघ वैयावृत्यरूप चारि० ॥
४१ ॥ कुल वैयावृत्य रूप चारित्रे० ॥
४२ ॥ गण वैयावृत्य रूप चारि० ॥
४३ ॥ पशुपंम्गादि रहित वशति वसण ब्रह्म गुप्त चारि० ॥
४४ ॥ स्त्री हास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
४५ ॥ स्त्री आशन बर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
४६ ॥ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म०
४७ ॥ कुड्यंतर सहित स्त्री हाव भाव सुणन वर्जन ब्रह्म० ॥
४८ ॥ पूर्व स्त्री संभोग चिंतन वर्जन ब्रह्म० ॥

४९ ॥ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म० ॥
५० ॥ अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ॥
५१ ॥ अंग विभूषा वर्जन ब्रह्म०
५२ ॥ अणशण तपोरूप चारित्रेभ्योनमः ॥
५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ॥
५४ ॥ वित्ति संखेव तपो रूप चा० ॥
५५ ॥ रस त्याग तपो रूप चा० ॥
५६ ॥ कायकिलेस तपो रूप चा० ॥
५७ ॥ संलेखणा तपो रूप चा० ॥
५८ ॥ प्रायश्चित्त तपो रूप चा० ॥
५९ ॥ विनय तपो रूप चा० ॥
६० ॥ वेयावच्च तपो रूप चा०॥
६१ ॥ सिज्झाय तपो रूप चा० ॥
६२ ॥ ध्यानतपो रूप चारित्रेभ्योनमः ॥
६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ॥
६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ॥
६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ॥
६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ॥
६७ ॥ क्रोध निग्रह करण चा० ॥
६८ ॥ मान निग्रह करण चा० ॥
६९ ॥ माया निग्रह करण चा० ॥
७० ॥ लोभ निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ॥

॥❀॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै । (खमा होके) । अन्नत्थू ससिएणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके । एक लोगस्स कहै (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करै । इति अष्टम दिवस विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो तवस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै ।

तप पदका उज्वल वर्ण है (इसीसें) तंडुलका आंबिल करै। पचास भेद तप प दके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप पदके (५०) भेद लि० ॥ ❀ ॥

१ ॥ यावत् कथक तपसे नमः ॥
२ ॥ इत्वर तप भेद तपसे नमः ॥
३ ॥ बाह्य ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
४ ॥ अभ्यंतर ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
५ ॥ द्रव्यतप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
६ ॥ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
७ ॥ कालतप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
८ ॥ भाव तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
९ ॥ काय किलेस तपभेद तपसे नमः ॥
१० ॥ रस त्याग तपसे नमः ॥
११ ॥ इंद्री कषाय जोग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ ॥ स्त्री पशु पंमकादि वर्जितस्थान अवस्थित संलीण ता० ॥
१३ ॥ आलोयण प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१४ ॥ पमिक्कमण प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१५ ॥ मिश्र प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१६ ॥ विवेक प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१७ ॥ उपसर्ग प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१८ ॥ तप प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१९ ॥ भेद प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२० ॥ मूल प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२१ ॥ अणवस्थित प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२२ ॥ पारंचिय प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२३ ॥ त्याग विनय रूप तपसे नमः ॥
२४ ॥ दर्शन विनय रूप तपसे नमः ॥

२५ ॥ चारित्र विनय रूप तपसे नमः ॥
२६ ॥ गुर्वादिक मनविनय रूप तपसे नमः ॥
२७ ॥ वचन विनयरूप तपसे नमः ॥
२८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ॥
२९ ॥ उपचारक विनयरूप तपसे नमः ॥
३० ॥ आचार्य वेयावच्च तपसे नमः ॥
३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ॥
३२ ॥ साधू वेयावच्च तपसे नमः ॥
३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः ॥
३४ ॥ लघु सिष्यादि वेयावच्च तपसे नमः ॥
३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ॥
३६ ॥ श्रमणो पाशक वेयावच्च तपसे नमः ॥
३७ ॥ संघ वेयावच्च तपसे नमः ॥
३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः ॥
३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः ॥
४० ॥ वायणा तपसे नमः ॥
४१ ॥ प्रछनातपसे नमः ॥
४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः ॥
४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
४४ ॥ धर्म्म कथा तपसे नमः ॥
४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥
४६ ॥ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥
४७ ॥ धर्म्म ध्यान चिंतन तपसे नमः ॥
४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ॥
४९ ॥ वाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
५० ॥ अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करे । (खडा होके) अन्नत्थू

सासि एणं (इत्यादि कहै) (५०) लोगस्सका काउसग्ग करिके। एक लोगस्स कहै। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरूकेपास जाणेकी विधिः लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभ दिन, शुभ घमी देखके, अछा वस्त्र आभूषण पहरे। लिलाडके तिलक करै॥ दोव। सरसुं। मस्तकमें धारण करै। हाथके मो ली बांधके। अक्षत। सुपारी। श्रीफल। नेवेद्य। यथाशक्ति रोकनाणो लेके। नवकार गुणतोथको। गुरूके पास जावै। प्रादशावर्त्त वांदणा कर के। ग्यान पूजा करै। पीछे बहुत प्रमोदवंत होके। गुरुके मुखसें जेजो तप ग्रहण करै (सो) तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगै लिखेंगे ॥ इति तपस्याग्रहण करणेंकों पोशाल जाणेकी बिधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संक्षेप ऊजमणा बिधिः लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचककों मंण्डन करै। सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ चूनीके आकार वनावे। पहिलै गढमांहे। अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै। पद २ के वर्ण गुण प्रमाणें। रत्नादिक चढावे। (और) पंचवर्णके फूल। पंचवर्णके धान्य। नवना लेरका गोटा रंगके। जिसपदका जैसा वर्ण होइ (तैसे ही) रंग का गोला चढावै। पंच वर्णी। नव धजा चढावै ॥ दूसरै वलयमें। सोले श्रीफल (अथवा) पूंगी फल चढावै। तीसरै वलयमें (४८) बुहारा चढावै ॥ नव निधानके ठिकाणें (९) नव बरा फल चढावै ॥ दश दिग्पा ल। नवग्रहकों। पक्वान्न प्रमुख चढावै ॥ इत्यादिक विधिसंयुक्त। सिद्ध चक्र स्थापना। घर देहरासर आगे करै। (और) जिनमंदिर मांहे। बाह्य मंडपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमाणें मंण्डल रचना करै। विस्तारसें सब विधि गुरुके वचनसें करके। नवपदजीकी पूजा पढायके कलस ढालै। धवल मंगल गीतगान गावै। वाजित्र बजावै। (इसीतरे) महा महोछव। उदार चि त्तसें करै। मंगल दीप आरती प्रमुख करै। दूसरै दिन विसर्जन करै ॥ इति संखेप सिद्धचक्र मंण्डल विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धचक्र संखेपउद्यापन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब दशमें दिन गुरूके पास आके उजी तपकों पारें । तप पारणा की बिधि आगे लिखेंगे । (तथा) उद्यापनमें ग्यान भक्तिके कारण । ९ पूठा । ९ विटांगणा । ९ पुस्तक । ९ लेखणा । ९ ठवणी । ९ झिल मिल । ९ रुमाल । ९ मोरा । ९ मिजासणा । ९ थापना । ९ चंद्रआ । ९ पूठिआ । ९ आरती । ९ कलश । ९ जापमाला । ९ मंदर । ९ प्रतिमा । ९ तिलक । ९ मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज वणावै । शक्ति न होय तो यथाशक्ती रोकनाणो चढावै । देव पदको देवपदमें देवै । गुरु पद को गुरु पदमें देवे । ग्यानपदको ग्यानखाते लगावे । इत्यादिक यथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करै ॥ इति सिद्धचक संक्षेप उद्यापन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादशमाश सकल पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्र प्रथम चैत्रमाश चतुपर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चेत्रमास में । चैत्र सुद ७ सें लेके, चैत्र सुद १५ पर्यंत ९ दिन अति उत्तम है । (सो) अति उत्तमता का कारण कहते है । बारें मासमें तीन अठाही महोछव आता हे । (जिसमें) । चैत्र आसोज का दोय अठाई महोछव सास्वता है । चैत्र सुद ८ (सें) चैत्र सुद पूनम आसोज सुद ८ (सें) आसोज सुद १५ (यह) दोनुं मासके आठ दिनोंमें । निश्चै सेती । च्यारुंनिकाय के देवता इंद्र सब जेला होके । आठमा नंदीसर द्रीप जावै (पुन्याहं २) कहते थके । अष्ट द्रव्यसें पूजन करै । गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेकी भक्ति करै । पीछे नवमें दिन । अपणें २ जन्मकुं सफल मानते हुए । अपनें २ । देवलोक जावै । (इसी माफक) तीसरी अठाई आसाढ चौमासेकी (१४) पीछे । (४२) दिन जानेसें, संबछरी पर्व साचवणें को आठ दिन अठाई महोछव करैं । अब यह नव दिनोंमें । चार पर्वसेवन करणे योग्य है ॥ ❀ ॥ प्रथम नवपद जीकी उजी । इसी नव दिनोंमें विधिसंयुक्त करे । (सो) विधिपूर्वे लिखी है । इससें इहां न लिखी । यह सिद्ध चक्रमंत्रल (और) नवपदजी की उजीका अधिकार (दशमा विद्या प्रवाद पूर्व्वसें) उद्धरण करके । भव्य

जीवोंके अनंत सुखप्राप्तिके कारण । चवदै पूर्वधारक श्री भद्रबाहु स्वामी जीनें प्रशिद्ध किया । (इसीसें) सर्व भव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है । यह तपकों अपणी कुयुक्ति लगायके । जो पुरष खंमन करते है । उस का अनंत संसार । भगवानका बचनसें मालूम होता है (शास्त्रोंमे लिखा है) हे गोतम । अपणी कुटलताईसें (जो) सुत्रको एक हरफ अन्था पण करैगा (सो) अनंत संसार बढावेगा । (सुत्र किसकुं कहते है) सु त्तं गण हर रइयं । तहेव पत्तेय बुद्धि रइयंच । सुय केवलिणा रइयं । अ भिन्न दस पुव्विणा रइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोंका रचाहुवा (तेसेंही) प्रत्तेक बुद्धिका रचा हुआ । श्रुतकेवली चवदै पुर्वधारी का रचा हुवा । संपूर्ण दश पूर्वधारीका रचा हुआ कों । भगवाननें सुत्रकी संज्ञा कही है इसीसें प्रमाण है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टापदओलीकरण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी चैत्रमासमें सुद (८) सें लेके । पूर्णमासी तक । (केई भव्य जीव) अष्टापदजीकी ओली करते है (जिसमें) पडिक्कमणा । देववंदन । देवपूजा । इत्यादिक सर्व विधि नवपदजीकी ओली तुल्य करै (इतना विशेष है) श्रीअष्टापद तीर्थाय नमः । (इसी पदको) २००० गुणनो (वा) बीस जाप करै । अरिहंत पदके १२ गुणकों नमस्कार क रै । आंबिल (वा) एकासणेंको पच्चक्खाण करै । पीछे पूर्णमाशीके दिन अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके । विधिसंयुक्त (२४) भगवंतकी पूजा करै (एसें) चैत्र । आसोज । दो ओली करणेंसें । चार वर समें । एक ओली करनेंसें आठ वरसमें संपूर्ण होय । पीछे भक्तिसंयुक्त उ जमणो करै (साहमी वछल करै (इत्यादि) विशेष विधि गुरुके मुखसें जानके करै) ॥ ❀ ॥ इति द्रितीय अष्टापद ओली पर्वाधिकारः कथितः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीवीरजिन जन्म कल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अब तीसरो पर्व) चैत्र सुद १३ के दिन । श्रीमहावीरस्वा मी को जन्म कल्याण भयो है (इसीसें) सर्व ठिकाणें । धर्मरागी पुरुष गुरूके मुखसें समझके जलयात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकको महोछ

व करै। (एसेंही) रुद्धीवंत श्रावककों धर्मका उद्योत के खातर, सर्व त्र गवंतके कल्याणकके दिन (जो) कल्याणक होय । उसीका महोछव करना चाहियै। अैसी शक्ति न होय (तो) शाशनके अधिपति । देवा धिदेव (श्रीमहावीर स्वामीके) च्यवन कल्याणकसें लेके । निर्वाण क ल्याणक पर्यन्त । (जिस दिन) जो कल्याणक होय । उसीका महोछव पूजन करणा चहियै (इसीसे) धर्मका उद्योत होय। श्रीसंघमें परम आ नंद होय ॥ ❀ ॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः कथितः॥

॥ ❀ ॥ चैत्री पूनम पर्वाधिकारः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चैत्री पूनम पर्वका अधिकार (समाचारी शतकानुसारे) लिखते है ॥ ❀ ॥ प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजय पर्वतकों स्थापन करै (तिसपर) पट्टा रखके । श्रीपुंमरीक गणधर (वा) श्रीऋषभ देव स्वामी का बिंबस्थापन करै। अक्षत मोत्यां करके पर्वतकों वधावै । केशर चंदनसें पर्वतकों पूजे । सब श्रीसंघ इकठे होके । पर्वतके चौफेर तीन प्रदक्षणा देवै । पीछे पूजन सरू करै (यथा) ॥ ❀ ॥ दश (१०) बीश (२०) तीश (३०) चत्ता (४०) पन्ना (५०) पुप्फदामेण लहई। चउत्थ छठम अठम दसम दुवालसम फलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम (१०) प्रकारसें पूजनके अधिकार लिखते है ॥ ❀ ॥ एकाग्रचित्तसें । अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमा कों न्हवण करावै । पीछे श्रीसंघ खमा होके। दश नमस्कार उच्चार पूर्वक । १० फूल (तथा) १० फूलमाला चढा के। प्रतिमाके १० तिलक करै। (यथाशक्ति) सुपारी । नालेर (इत्या दि) सर्व चीज उत्कृष्टसें दश २ ॥ जघन्यें नालेर १ सुपारी १० और फ लफूल यथासंभव चढावै । धूप खेवै । कपूरकी आरती करै । पीछे सिद्ध गिरि गुणगर्भित चैत्यबंदन करके । पांचशक स्तवे देव वांदै । १० खमा स मण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदकों १० वेर नम स्कार करै। पीछे (श्रीसेत्रुंजय पुंमरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं)। अन्नत्थू ससि० कहके । १० लोगस्सका कावसग्ग करै । (इहां केई आ चार्य कहै) बहुत उछव होय । वेला कम रहै । (तब) एक लोगस्स

को कावसग्ग करै । १० जैतीके ठिकाणें १० गाथाको स्तवन कहै। पीछे अनेक प्रकारका बाजित्र बजावै ॥ ❀ ॥ इति प्रथम पूजाबिधिः ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (अब इसी तरे) बीश । तीश । चालीश । पचाश यह च्यारोंपूजाके भेद जान लेना । (इतनाही विसेष है) दूशरी पूजामें १० के ठिकाणें २० की विधिकरै ॥ तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें । ३० की विधि करै ॥ चौथी पूजामें १० के ठिकाणें, सब बिधि ४० की करै ॥ पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै ॥ (तथा) सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः । इस पदको २००० गुणनो करै । उत्कृष्टसें पांचू पूजामें । जूदी २ धजा चढावै । जघन्यसें पांच पूजा किये पीछे १ धजा चढावै । यह तप । गुरूके मुखसें लेके । जघन्यें १ बरस । (वेसी होसकै तो) ७ बरस । उत्कृष्टसें १२ बरस । विधि संयुक्त तपस्या करै । गुरूके मुखसें उपदेश सुणें । संपूर्ण तप हुवां पीछै । सिद्ध गिरीकी यात्रा करै । ग्यान पूजा करै । गुरु भक्ती करै । साहमी वछल करै । (यह) चैत्रीपूनमके दिन । श्री रुषभ देव स्वामीके । प्रथम गणधर श्री पुंमरीकजी । पांचकोमि साधू साथ अक्षय सुखकों प्राप्तभये (इसीसें) प्रथम श्रीभरत चक्रवर्त्ति । चैत्री पूनमको आराधन करके । श्री पुंमरीक गणधर की प्रतमा स्थापन करके । (यह) चैत्री पूनम पर्ब्ब प्रसिद्ध किया ॥ यह चैत्री पूनम आराधन करनें सें । इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय । स्त्रियोंके पुत्र पुत्र्यादिक की बांछा पूरण होय । (और) आधि व्याधि सोग संताप सब दूर होय । परभवमें देवादिक रुद्धिप्राप्त होय । क्षीण कर्मी होनेंसें अक्षय सुखको प्राप्त होय ॥ इति चैत्र माश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चैत्री पूनम स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) पयप्रणमीरे जिन वरना सुपसाउलै । पुंमरगिररे गा इसहुं सुभ भावलै । मति सुरगिररे सहस जीभ जो सुख हुवै । किम ते नररे विमला चलना गुण तवै । (उल्हालो) किम तवै गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहु । गिररायना गुणछे अनंता कहै जिणवर मुख सहु । निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाषियै । तिर

यंच नारक तणी गतिना दुःख दूरै राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिन राजारे पहिलो आदि जिनेसरू । तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरू । तसु अंगजरे पुंमरीक गुण गण निलो । शम दम रसरे विनय विवेक गुणे भलो (उल्लालो) गुणभलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम सिवपु री । पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपतै संचरी । पण कोमि साथे विमल गिरवर मुगति पदवी पाव ए । सुदि चैत्र पूनिम तेण ए गिरी पुंमरीक कहावए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्रीरे पूनिम पर्व सुहामणो । सेत्रुंजेरे आराध्यां फल हुवै घणो । मन सुद्धरे आपणपै थानक रही । आ राध्यांरे यात्र पुन्य पामें सही (उल्लालो) ते पुन्य पामें दान तप जप ध र्म्म ध्यान मने धरै । बहु भाव भत्तैं त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै । भावना भावै तेण दिवशै पंच कोमि गुणो फलै । अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्ध सुंदरनें मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दश वीशारे तीश चालीश पूजा कही । पन्नासारे श्रावक निरती सरदही । चउथ छठैरे अठम दसम दुवा लसैं । पूजा फलरे अनुक्रम ए मुझ मन वसैं । (उल्लालो) मनवसै पूज कपूर धूवै मासखमण फले वली । सामन्न धूवे पक्खनो फल जे करै मननी रली । हिव पूजनी विधि जेम गुरु मुख सुणीअछे परंपरा । ते मोहमाया कप टछंमी सुणो भवीयण सादरा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ (ढाल) तंदुल राशि विमल गिर थापी । तसुऊपरि पट्टादिक आपी । प्रतिमा आदि जिणेसर केरी । पुंमरी कनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंज गिरिनें मन चिंतीजै । करमतणा मल दूर करीजै । मोती तंदुल करीय वधावो । तीन प्रदक्षिण पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंग लीक पहिला तिहां आठ । करमबंध दूरै करि आठ । प्रतिमा मूल सनात्र करेवा । जिनवरना गुणहीयडै धरेवा ॥ ७ ॥ नमनाथई नवकार गुणंता । दश दश जैती तिलक करंता । माला पुष्प पुंगीफल ढोवो । मेरु भरण वर धूप उखेवो ॥ ❀ ॥ (ढाल) शक्र स्तव पांचे देववांदै । जघन्यना वंदण पाप छेदै । दशे नमस्कार करंत जैती । राखी करी दृष्टि जिनेंद्र मेती ॥ ९ ॥ आराधिवा कीजै काउसग्ग । जिणें कीयै भाजै कर्म्म वग्ग । लोगस्स उ ज्जोय दसे वखाणुं । वेला प्रमाणें अहिं एगआणुं ॥ १० ॥ इणें प्रकारै धुर

पूज एह । इसी परै बीजी च्यार तेह । दशां तणी वृद्धि तिहां गिणीजै । एक चित्त सूधै सुभ पुन्य कीजें ॥ ११ ॥ धजा तणो रोप तिहां करीजै । एकेक पूठै अथवा गिणीजै । सहुत्तरै आरति मंगलेवो । पछै प्रभु आगलि ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथायोगै संघपूजा आदरो । साहमी वछल करो भविका भव समुद्र लीलावरो । संपदा सोहग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहुलहै । श्री अमरमाणिक सीस सुपरै साधु की रति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्रीचैत्री पूनिम स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीसर द्वीप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नंदीसर बावन्न जिनालै । शाश्वता चौमुखसोहैरे । रुखभा नन चंद्रानन वारषेण । वरधमान मन मोहेरे (नं०) ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अद्भुत । वलयाकार विराजैरे । तेहनें मध्य चिहुं दिश शोभत । अंजन गिरवरछाजैरे ॥ २ ॥ (नं०) जोयण सहस चउरासी ऊंचा । ऊंच पणें अभिरामारे । मूलै पृथुल सहसदश जोयण । उवरि सहस इक श्यामारे ॥ ३ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशाद प्रभुना । अति उत्तंग उदारारे । सा धूजंघा विद्याचारण । वांदै विविध प्रकारारे ॥ ४ ॥ (नं०) चैत्ये चैत्ये एक सो चोवीस । बिंब संख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवो भविजन भक्तें । सुध आगम करि साखीरे ॥ ५ ॥ (नं०) ऊंचपणें सहु जोयण बहुत्तर । सो जोयण आयामारे । पिहुलपणें पंचास जोयणना । प्रभु प्राशाद सुठामारे ॥ ६ ॥ (नं०) धनुष पांचसैं आयत प्रभुनी । बिविध रतनमय कायारे । जिन कल्याणक भुवन करवा । सुरपति भगतें आयारे ॥ ७ ॥ (नं०) अंजन अंजन चिहुं गिरी उवरे । चौमुख वावि बिशालारे । वावि वावि विच इक इक पर्वत । राजतरंग रसालारे ॥ ८ ॥ (नं०) चौसठि सहस जोयण उत्तंगै । दश सहस सम पिहुलारे । चिहुंदिशि सोल सोहै दधिमुख गिर । तिहां प्राशाद सुविमलारे ॥ ९ ॥ (नं०) वावि वाविनें अंतर विदिशैं । रतिकर पर्वत रूमारे । दोय दोय संख्या ए जगदीसै । कह्या नही एकूमारे ॥ १० ॥ (नं०) जोयणसहस मान दश ऊंचा । दश दश सहस विस्तारारे । ऊवरि सम संठाण जगदगुरु । निश्चय ए निरधारारे ॥ ११ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशा

द सतोरण। अंजनगिरि परि माणेंरे। जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज। श्रीजि नराज वखाणेंरे॥ १२॥ (नं०) इम प्राशाद प्रत्नूना बावन। नंदीसर वरद्वी पैरे। द्रव्य नाव विध पूज करंता। मोह महानड जीपैरे॥ १३॥ (नं०) प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें। जीवानिगमें जाणोरे। इम अधिकार बै ग्रंथ अनेकै। इहां संका मत आणोरे॥ १४॥ (नं०) जिम सुरपति विरचै ति हां पूजा। ते अनुनव इहां ल्यावोरे। ध्यावो जिम पावो परमातम। जैन चंद्र गुणगावोरे॥ १४॥ (नं०) इति नंदीसर द्वीप स्तवनम्॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर तपस्याकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुनदिन शुन घरी गुरूके पास नंदीश्वर तप ग्रहण करै। नंदीश्वर द्वीपके चारूं दिश तरफ (५२) चैत्यकी अपेक्षायें। अमावसके अ मावस (५२) उपवास करै। जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवा स होय। उसी नामको २००० गुणनो करै (सो लिखते है)॥ ❀ ॥ ॥१॥ऋषनाननजी सर्वज्ञाय नमः॥❀॥२॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः॥❀॥ ॥ ३॥ श्रीवारषेणजी सर्व०॥ ४॥ ❀ ॥ श्रीवर्धमानजी सर्व०॥ ❀ ॥

(यह) च्यार नामकों (४) वेर सुलटा (४) वेर उलटा गिणें। अनुक्र में (१३) उपवास करनेंसें एक उंची होय॥ (४) वार उंची करणेंसें, यह तप संपूर्ण होय। पीछे शक्ति माफक उजमणो करै। नंदीसर द्वीप को मंमल बणावै। पूजा करावै। (इत्यादि महामहोछव करके)। ग्यान पूजा करै। साहमी बछल करै। मंमल पूजाकी बिसेष विधि गुरूके बचनसें जाणके करै। इति नंदीसर तपस्याधिकारः॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वैशाख माशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाखके महिनेमें (मिती) वैशाख सुद ३ है (सो) अक्षय तृतीया नामसें पर्व प्रसिद्ध है (इस दिन) श्रीऋषन देव स्वामीके। चारित्र ग्रहण कियां पीछे। वारै माशीका पारणा। सोमयश राजाके पुत्र। श्रीश्रे यांस कुमरजीके हाथसें। इक्षुरस सेती हुवा (उसी समय) उत्तम दानके प्रनावसें। सर्व देवगण प्रमोदवंत होके। सुगंध जलकी वर्षा॥ १॥ सुगंध पुष्पोंकी वर्षा॥ २॥ (१२॥) कोरु सोनइयोंकी वर्षा॥ ३॥ आकास

सें अहो दानं २ ऐसें उदघोषणा ॥ ४ ॥ देव दुंदुभि बाजित्र ॥ ५ ॥ ऐसे पांच द्रव्य प्रगट किये । श्रेयांस कुमरका जश तीन जुवनमें विस्तरण हुआ । (इसी दिनसें) आहार देणेंकी विधि सबकों मालुम हुई । इस दान के प्रभावसें श्रेयांस कुमर अक्षय सुखकों प्राप्त हुवा । (इसीसें) अक्षय तृतीया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है । इस पर्वके आणेंसें । अछे वस्त्र आभूषण पहरके । जगवंतके मंदर जावै । अष्ट द्रव्यसें पूजन करै । स्नात्र । अष्ट प्रकारी । सत्तरभेदी (इत्यादिक) पूजा करावे ॥ पीछे गुरूके मुख सें, एकासणादिक पच्चक्खाण करके । पर्वकी महमा सुणें । अपनें घरमें मंगलीक जोजन तैयार होनेंसें । गुरूकों वहरायके । सर्व कुटंब इकठे होके जीमें । और (जो) मंगल कार्य करणा होय (सो) इसी दिन करे । (इस माफक) इस पर्वकों जो जव्यजीव सेवन करेंगे । उसीके तप तेज सदा वढते रहेंगे । अलं विस्तरेण ॥ इति अक्षय तीज पर्वाधिकारः

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय ज्येष्टमाशा पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्येष्ट कृष्ण त्रयोदशी (१३) के दिन (शोलमा) श्रीशांति नाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणक है । (इसीसें) यह दिन वमा उत्तम है । सर्व ठिकाणें श्रीसंघ इकठे होके । । विधि संयुक्त शांति पूजाका महोछव करावै । शांति जल लेजाके । अपनें २ घरमें छींटै । इस शांति पूजाके करानेंसें । मारी हेजा । (इत्यादि समुदाइक रोग) कभी श्री संघमें व्याप्त न होय (अथवा) कोई श्रावकके घरमें रोग चालो रहतो होय (वा) बहुत चिंता रहती होय (तो) इसी दिन शांति पूजाका उछव कराणा चाहिये । (इसीसें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीमा सर्व दूर होय । अनेक मंगल श्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्टबद (१३) पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ सुद १४ के दिन । चौमाशी १४ इस नामसें पर्व प्रसिद्ध है (सो) लिखते है ॥ (यथा) सामायका वस्यकपोषधानि । देवार्चन स्नात्र विलेपनानि । ब्रह्मक्रिया दान तपो सुखानि । जव्या श्चतुर्मासक मंमनानि ॥ १ ॥ (अर्थ) जोजव्या एतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि । चतुर्माश

कस्य मंडनानि अलंकार भूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो (यह) सामायक कों आदलेके (जो) धर्म कृत्यहै (सो) चोमासे के मंडनहै। अलंकार समानहै । (यथा शक्ति) यह चौमासे पर्व्वमें । केइ जीव । सामायक । पडिक्कमणा । पोशा । करै । केइ भगवानके मंदरमें नानाप्रकार की पूजा करै । केइ शीलव्रत पालै । केइ सुपात्र दान देवै । केइ नाना प्रकारकी तपस्या करै जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवै (सो करै) इसमें विरोध नहीं । कोई प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहियै (जिससें) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय । और चौमाशी (१४) के दिन । सर्व मंदर दरशन करनेकों जावै । पांच शक्र स्तव देव बांदै । पीछे गुरूके पास जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणें। सर्व चीजका प्रमाण करके । उपरांत सोगन लेवै । सांझकों चौमाशी पडिक्कमणो करै । (इसी माफक) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैकों पिण सेवन करै ॥ इति चतुर्मास पर्व्वाधिकारः कथितः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रावण माश मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण माशमें कई भव्य जीव । मम्माई आदिक खेत्रोमें। नाना प्रकारकी पूजा नाटकादिउछव, अंगी रचना करायके चौमाशै पर्व्वका उद्योत करते हैं। (इसी माफक) सर्वठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा कराणी चहियै । और बहुत ठिकाणें की श्रावकाएयां इस महिनें में कई तरैकीतपस्या करै है । (जिसमें) उत्तम फलकी दैनें वाली कई तपस्या (विधि प्रपाक ग्रंथसें) उधरण करके। संखेपविधिसें इहां लिखतेहें ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुरिमड्ढ १ । एकासण १ । नीवी १ । आंबिल १। उपवास १। (यह १ उली) इसी तरै पांच उली करै । तपो दिन २५। कुजमणें (२५)। लाडू चढावै ॥ ❀ ॥ इति इंद्रि जय तप ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकासण १ । नीवी १ । आंबिल १ । उपवास १ । (इसी तरै) उली च्यार करै। तपो दिन १६ । कुज मणें १६ लाडू चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति कषाय जयतपः २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीवी १ । आंबिल १ । उपवास १ । (इसी तरै) उली ३ । करै । तपोदिन ९ । ऊजमणें नव । लाडू चढावै ॥❀॥ इति योगशुद्धि तपः ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ ❀ ॥ इति दर्शन तपः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणइ । गोतम स्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्र तप ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अठम १ । छठ १ । उपवास १ । एकाशण १ । एकल ठाणो १ । दत्ति १ । नीवी १ । आंबिल १ । (यह एक उली) इसी तरै, उली आठ करै । तपोदिन (८८) ऊजमणें रूपानो वृक्ष । सोनानो कुहाडो करायके । ग्या न खाते देवै ॥ इति आठ कर्म सूदण तपः ॥ ७ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ भादवा वदि चउथसें लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एका शणा (अथवा) बिआशणा करै । घर देहरासर आगे (अथवा) अठै ठिकाणें कलश स्थापन करै । एक मुठी चावल सदा कलशमें भरै । संव छरीके दिन कलश ऊपर नालेर रखके । महोत्सव पूर्वक मंदर लाके, देव आगे रक्खे । स्नात्र पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति अक्षयनिधि तपः ॥ ८ ॥❀॥ श्रीबासु पूज्य पूजा पूर्वक । रोहणी नक्षत्र दिने । उपवास । (वा) नीवी । आंबिल । सात वरश, सात माश करै (श्रीबासु पुज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः) इस पदको २००० गुणनो करै । गुरूके पास स्तवन सुणें (सो) स्तवन आगे लिखेंगे ॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें । ज्ञान भक्ति गुरुभक्ति करै ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदपक्षके पांचमके दिन । श्रीनेमि । अंबिका, पूजा पूर्वक । पांच एकाशणादिक तप करै । अंबिका देवीकों बेस चढावै ॥ ❀ ॥ इति अंबिका तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुद पक्षमें इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजापूर्व्वक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ इति श्रुत देवता तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

सुद पक्षमें । एकांतर । उपवास ८ । पारणें आंबिल ८। एवंदिन (१६) ऊजमणें ग्यानपूजा करें। इति सर्वांग सुन्दरतपः ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चैत्रमाशे। एकांतर उपवास १५ ॥ एवंदिन (३०) ऊजमणें सोनेको (अथवा) रूपैको वृक्ष। अनेक फल सहित चढावै ॥ ❀ ॥ इति सौभाग्य कल्पवृक्ष तपः ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पम्विा। बीज । तीज। अनुक्रमसें, पूनिम पर्यंत (१५) उपवास। जो तिथि भूलै। सोतिथि और करै। ऊजमणें एकसो वीश (१२०) लाडू मंदर चढावै। स्नात्र करावै ॥ इति सर्व्व सुखसंपत्ति तपः ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वरशातना च्यार माश (और) पोष । चैत्र। यह षट्माश टाल के छोटी पांचम तप सरू करै। अंधारी, अजुआली पांचम, माश ५ लग । एकाशणादिक तप करै। ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ इति छोटी पांचम तपः१५

॥❀॥सुद पांचमकों, पांच वरश, पांचमाश, उपवास करै। उपवासके दिन देव वांदनादिक क्रिया करै । ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण। पकवान फल, कलशादिक, पांच ५ चढावै ॥ सत्तर भेदी पूजा करावे। साहमी वछल करै। इति ज्ञानपंचमी तपः ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ सुदि। पम्विा। बीज। तीज। चौथ। पांचमें। एकाशणादिक तप करै। अशोग वृक्ष पूजा पूर्व्वक, देव आगै नेवेद्य चढावै । (इसी तरै) वरस १। तपकरै। ऊजमणें चावलांसें। अशोग वृक्ष लिखके पूजा करै॥

॥ ❀ ॥ इति अशोग वृक्ष तपः ॥ १७॥ ❀ ॥ आषाढ वदि (७) श्रीविमलनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास ॥ श्रावण वदि (७) श्रीअनन्तनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास ॥ काती वदि (७) श्रीआदिनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास ॥ पोष वदि (७) श्रीपार्श्वनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास करै। स्नात्र करै । ऊजमणें चावलांसें लोकनाल बनाके, सात राज, सात पावडी करिके । तिस ऊपरि सिद्धिक्षेत्र (तिसकों) सोनें रत्नोंको मुकट चढावै ॥ इति मुकट सप्तमीतपः १८

॥ ❀ ॥ आसोज सुदि ८ तांइं एकाशणादि तप करै । आठ प्रकारकी पूजा करै। नेवेद्य चढावै । पहिलै वरश अष्टापदकी एक पावडी। इसी तरै

आठे वरशे आठ पावली । अष्टप्रकारी पूजा पूर्व्वक आराधियै । ऊजमणें अष्टापद पूजा करावै । पकवान फल सर्व चउवीश चढावै ॥ ❀ ॥
इति अष्टापद पावलीतपः ॥ १९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदपक्षके ८ आठमके दिन । उपवाश (अथवा) आंबिल (८) करै । ऊजमणें दूधका कटोरा भरके । आठ लाडू देव आगलि चढावै । इति अमृत आठमि तपः ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ बदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके दशमके दिन । दश उपवास (अथवा) बीश एकाशणा करै । ऊजमणें अखंडित घी धार पूर्व्वक तीन । प्रदक्षिणा देवै ॥ इति अखंड दशमी तपः ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके ११ इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजा पूर्व्वक । एकाशण । नीवी । आंबिल । (वा) उपवास ११ करै । ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करै ॥ इति श्री इग्यारअंग तपः ॥ २२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुद पक्षके १४ चउदस के दिन । एकासणादि १४ तप करै । ऊजमणें ग्यानपूजा करै । चवदप्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ ❀ ॥
इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांच अमृत तेला । मास ६ में करै । (प्रथम तेलै) सिखरण पारणो । (दूसरै तेलै) सीरैको पारणो । (तीसरे तेलै) लापशीकोपारणो । (चौथै तेलै) लाडूको पारणो । (पांचमें तेलै) खीरको पारणो । सर्व पारणें प्रथम साधूकों विहराके पारणो करै ॥ इति पंचामृत तेला तपः ॥ २४ ॥ अठम १ । एकाशणो १ ॥ अठम १ । एकाशणो १ ॥ अठम १ । एकाशणो १ ॥ ए मोटो रत्नोत्तर तपः ॥ २५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
आंबिल १२ करके । ऊजमणें रूपाको चक्र, मंदर चढावै (तो) सदा जय होय । विणज व्यापारमें लाभ होय । झगडै जीत होय ॥ ॥ ❀ ॥
इति धर्म्म चक्रतपः ॥ २६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपवास ५ व्याशणां ५ । एकांतरै करै । इति पांच महाव्रत तपः २७

॥ ❀ ॥ उपवाश १ एकाशणो १ । नीवी १ । आंबिल १ । व्याशणो १॥ उपवास १ । एकाशणो १ । नीवी १ । आंबिल १ । व्याशणो १ । एवं दिन

१०। पूनमसें सरू करै। पारणें साधू पडिलाभै । ग्यान पूजा करै ॥ ❀ ॥ इति दालिद्र हरण तपः ॥ २८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेंद्रियें उपवास १। बेंद्रीयें छठ १। तेंद्रीयें अठम १। चौरिंद्रीयें दशम १। पंचेंद्रीयें द्वादशम १। छकायें चतुर्दशम १। तप करै। ऊज मणें, सुंखडीसें, स्त्री ६ जीमावै ॥ ❀ ॥ इति छकाय आलोयण तपः ॥ २९॥ ॥ ❀ ॥ नीवी (आठ) निरंतर करै। इति सासू सुखतपः ॥ ३० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ आंबिल (आठ) निरंतर करै ॥ इति सुसरसुख तपः ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ छठ (पांच) करै ॥ इति पुत्री सुख तपः ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ अठम (पांच) करै इति बेटा सुख तपः ॥ ३३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ उपवास (आठ) एकांतरकरै ॥ इति भर्त्तार सुख तपः ॥ ३४ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥ निवी (पांच) निरंतर करै ॥ इति जेठ सुख तपः ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ एकाशणा (पांच) निरंतर करै ॥ इतिदेवर सुखतपः ॥ ३६ ॥ ❀॥ छठ ५। एकाशणा पांच। एकांतर करै ॥ इति पिता माता सुख तपः ॥३७॥

॥ ❀ ॥ इत्यादिक कई तरैकी तपस्या बहुत ठिकाणेंकी श्राविका करै है। (इसीसें) सर्व श्राविकाके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उधरण करके। संखेप विधिसें इहां लिखी है। वेसी शक्ति होय (तो) पूजा। साहमी वछल तीर्थ यात्रा। (इत्यादिक) सातुं शुभखेत्रोंमें। अपणा धन खरच करै। धर्मका उद्योत करै। इस तपस्या के प्रभावसें। (इस भवमें) संसार संबंधी दुखदालिद्र दूर होके। सर्व कुटंबमें सुख संपदा होय। (परभवमें) देवादिक रुद्धी प्राप्त होय। (किंबहुना) इति बुटकर तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भाद्रवमाशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भाद्रवमहिनेंमें। मिती भाद्रवासुद ४ (तथा) कई मतके अपेक्षायें ५ तिथकों। संवछरी नामसें पर्व्वप्रशिद्ध है। (प्रथम इस संवछरी पर्व्वकी महमा कहते है) (जेसें) जगतमें अनेक मंत्र है। पर नवकार मंत्र समान कोइ मंत्र नही (१) तीर्थोंमें शत्रुंजय समान कोईतीर्थ नही (२) पांच दानमें। अभयदान। सुपात्रदान। समान कोई दान नही (३) गुणमांहें विनयगुण (४)। व्रतमांहें ब्रह्मव्रत (५)। नियम

मांहें संतोष नियम (६) । तपमांहें उपशम तप (७) दर्शनमांहें जैन दर्शन (८) । जलमांहें गंगाजल (९) । अलंकारमांहें चूडामणि (१०) ज्योतिषी मांहें चंद्रमा (११) । तेजवंत मांहें सूर्य (१२) । तुरंग मांहें पंच वल्लभ किशोर (१३) नृत्यकलावंत मांहें मोर (१४) गज मांहें ऐरावण (१५) दैत्यमांहें रावण (१६) । वनमांहें नन्दनवन (१७) । काष्ट मांहें चंदन (१८) साहसीक मांहें विक्रमादित्य (१९) । न्यायवंत मांहें श्रीराम (२०) रूपवंत मांहें काम (२१) । सती मांहें शीता (२२) । सुगंध मांहें कस्तूरी (२३) वस्तु मांहें तेजनतूरी (२४) । वाजित्रमांहें भंभा (२५) स्त्रीमाहें रंभा (२६) धातुमांहें स्वर्ण (२७) दातारमाहें कर्ण (२८) । गौ माहें कामधेनु (२९) । वृक्ष माहें कल्पवृक्ष (३०) । जलमाहें अमृत (३१) स्नेहमाहें घृत (३२) । (इत्यादिक) सर्व वस्तू में एक एक चीज उत्तम होती है । (इसी माफक) सर्व पर्वोमे उत्कृष्ट रा जाधिराज, श्री संवछरी पर्व (दूशरो नाम) श्रीपर्यूषणा पर्वकों । भगवंत श्री महावीर स्वामीजीनें उत्तम वर्णन कियो ॥ ❀ ॥ (अब श्री पर्यूषण पर्व आनेसें) (प्रथम) श्रीसाधुके करनें योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥ ❀ ॥ संवछरी प्रतिक्रमण करै ॥ १ ॥ लोचकरावै २ तेलैका तप करै ३ ॥ सर्व मंदरोमें भगवंतकी भाव स्तवना करै ४ । सर्व श्रीसंघसें खमावै ५ । यह पंचकारणके वास्ते, श्रीतीर्थंकर गणधरोनें श्रीपर्यूषणा पर्व्व प्रवर्त्तन किया ॥

॥ ❀ ॥ अबशुद्धश्रावक संवछरी पर्व आराधन करनेकों, आठदिन अ ठाही महोछव करै (सो) कल्पलता शास्त्रसें लिखतेहें ॥ ❀ ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै । कल्पसूत्रजीकों बिधि संयुक्त अपनें घर लेजा वै । रात्री जागरण करावै । (प्रभात समय) नगरके सर्व श्रीसंघकों निमंत्र ण करै । यथायोग्य सत्कार सन्मान करै । पीछे पुस्तक ग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरकै । मुगट, छत्र, चामर, (इत्यादिक सहत) सा ख्यात इंद्र महाराजको रूप बनाके, हाथी ऊपर (अथवा) पालखी ऊ पर बेठै । अष्टमंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके । अपनें दोनुं हाथमें थाल रक्खे । दोनुं तरफ पुरुष अछा वस्त्र आभूषण पहरकै । चमर ढालै ।

अनेक प्रकारके बाजित्र बाजते हुये। दानें देते हुये, नाना प्रकारके श्रुत ज्ञानके गुण वर्णन करते हुये। नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके। गुरूके पास आवै। गुरू पिण खमा होके। विनय संयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगै रखै। श्री संघके आज्ञासें वाचना पूर्वक वाचै ॥ १ ॥ नगरमें सब ठिकाणें अमारि पमहो फेरावै। दूशरो अपनें वचनसें (तथा) द्रव्यसें। कसाई धोबी। जमनुंजा (इत्यादिक) सर्वके आरंभ छोमावै ॥ २ ॥ सुपात्र दान देवै ॥ ३ ॥ विदाम, सुपारी, नालेरादिककी, परभावना करै ॥ ४ ॥ श्रीवीतराग देवकी उदार भक्तिसें पूजा करै। चौदसके दिन। संवछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होके। सर्व मंदर दरशन करनें को जावै ॥ ५ ॥ सचित्तका परिहार करै ॥ ६ ॥ ब्रह्मचर्य पालै ॥ ७ ॥ चउत्थ। छठ ॥ अठमादिक। तप करे ॥ ८ ॥ अपनें २ वित्तके अनुसारै, जन्म कल्याणक को महोछव करै ॥ ९ ॥ अठ पहरी पोशो करै ॥ १० ॥ संवछरी प्रतिकमण करै ॥ ११ ॥ निशल्प होके सर्व श्रीसंघसें खमावै ॥ १२ ॥ पारणेंके दिन पोशह पमिकमणें वाले साधर्मी भाइयोंकी भक्ति करै ॥ १३ ॥ गुरू भक्ति करै ॥ १४ ॥ संवछरी दान देवै। साहमी वछल करै ॥ १५ ॥ इस विधि संयुक्त (यह) कल्पसुत्र एकचित्त सुणनेंसें, आराधन करनेसें, आठ भवमें सिद्धि स्थानकको प्राप्त होय। (और) केई उत्तम जीव। अत्यंत शुभ भाव रखके। अठमादिक तप करिके युक्त, कल्प सुत्रजीको वाचते है। और सुणनें वाले, प्रमाद, निद्रा, विकथा, छोमके। अठमादिक तप करके युक्त। इकचित्तसें शुछ भाव रखके। इकवीश वेर सुणते है (सो) पुरष देवगतिको प्राप्त होके। तीशरे भव सिद्धि स्थानको प्राप्त होते है ॥ ❀ ॥ इस पर्यूषणा पर्वके महोछव (जो) भव्यजीव करते है। (सो) धन्य है। धर्मके प्रभावीक है। अपणें लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करै है। उसी पुरषां को नमस्कार है ॥ ❀ ॥ (अब कल्प सुत्रजीका महात्म कहते है) ॥ ❀ ॥ यह कल्पसुत्र, नवमा पूर्वसें उधरण किया हुवा। दशाश्रुत स्कंधका आठमा अध्ययन है। सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण। श्रुतकेवली। श्रीभद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है। यह कल्पसुत्रके अनंते विषय है। (जेसें) सर्व

नदीकी बालूके जितने कण होय (तिससें पिण) एक सूत्रके अनंते बिष य हे। इस कल्पसूत्रके महात्म (जो) देवाचार्य । हजार जीभ करके क है (तो पिण) महात्मका एक अंश कह सकता नहीं । अैसा इस पर्व का महात्म जानके (जो) भव्यजीव शुद्ध भावसें सेवन करेंगें (सो) अनेक तरेसें, रुद्धी, वृद्धी, सुख, सौभाग्यकों, प्राप्त होंगे (और) परभवमें देवादिक रुद्धी पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषण पर्वाधिकारः ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आश्विनमाश मध्ये पर्वाधिकार लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशोज महिनें में । मिती आशोज सुद ७ सें लेके । आशो ज सुद १५ तांइं । नवपद ओली (तथा) अष्टा पद ओली बिधि संयुक्त करै । सो सर्व बिधि पूर्वे लिखी है । उसी माफक करै ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्त्तिक माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कार्त्तिक महिनें में । मिती कार्त्तिकवद अमावस है (सो) दीप मालिका नामसें पर्व प्रशिद्ध है । (यह) दीपमालिका पर्व कबसें प्रशिद्ध हुआ (सो लिखते है) चोबीशमा तीर्थंकर । श्रीमहावीर स्वामी । समस्त साधु, साध्वी, साथ विचरते थके । अंतकी चोमाशी पावापुरी आयके रहे (उहां) आगामी कालके सर्व भाव । भव्यजीवोंके आगे प्ररूपण किये । फेर । आपणा अंतसमय जानके । हस्तिपाल राजाके शुल्कशालामें आयके रहे । (अपनें पर) गौतम स्वामीका बहुत स्नेह देखके । निजीक गाम में, एक देव शर्मा ब्राह्मणकों । प्रतिबोध देनेंके लिये भेजा । (पिछाडी) प द्माशन धारन करके । सोलै पहर अखंम देशना देते हुये । पूरण बहुत्तर बरशको आऊखो पालके (इसी) अमावसके दिन । पिछली दो घमी रात्र रहनेंसें सिद्धि स्थानकको प्राप्त भए । जिस समय भगवंतका निर्वाण क ल्याणक हुआ (उस समय) चौसठ इंद्र देवता गणके आनें जानेंसें बडा उद्योत हुआ । और (जो) सर्व राजा, पोषधमें बैठे हुए थे (सो) भाव उ द्योतका अस्तपणा देखके । सर्व ठिकाणें रत्न धरके द्रव्य उद्योत किया । एकमके, प्रातसमें देवतावोंके आते जाते बचन सुणके । श्रीगौतम स्वामी कों केवल ज्ञान उत्पन्न हुवो । (दूजके दिन) सुदर्शना बैन । अपना

भाई नंद वर्द्धन राजाको घरमें बुलायके जिमाया। शोक दूर करायो। (जिस सें) भाई बीज प्रवर्त्तन हुई। (इसीसें) यह दीवाली पर्व बडा उत्तम है। इस दीवालीके रात (जो) गुणनो करै (सो लिखते हैं)॥ ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥

२ ॥ श्री महाबीर स्वामी पारंगताय नमः ॥

३ ॥ श्री गौतम स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस एक २ पदको २००० गुणनो करै। उपवास करै। रात्री जागर्ण करै। निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसें थालभरके मंदर जावै। रोशनी करै। निर्वाण कल्याणककी आरती करै। दीपमाला चैत्यवंदन करके स्तवन बोले। निर्वाण कल्याणक अधिकार सुणें। गौतम रास सुणें। (इत्यादिक) उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवाली पर्वका उछव करना चाहियै॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जगदीशर अति अलवेशर। बीर प्रभूराया॥ पतित उधारण भव भयभंजण। बोधबीज दाया॥ (जय २ जिनराया। आरति करुं मन भाया। होय कंचनकाया)॥ १ (ज०)॥ क्षत्रीकुंम नगर अति सुंदर। सिधारथ राया। सुदि आसाढ छठके दिवशै। त्रिशला कुक्षआया (ज०)॥ १ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम। निज प्रीतम भाषै। अरथ भेद सहु निश्चै करनें। जिन गुण रस चाखै (ज०)॥ २ ॥ चैत्र सुदी तेरश दिन उत्तम। सहु ग्रह उच्चपावै। जन्म लेई दिश कुमरी सहुना। आशन कंपावै (ज०) ३ ॥ उछव कर जावै निज थानक। इंद्र सहु आवै। मेरु शिखरपर स्नात्र महोछव। करि आनंद पावै (ज०)॥ ४ ॥ वसु धारा वृष्टीकर सहु सुर। निज थानक जावै। सिधारथ करै जन्म महोछव। अचरज सहु पावै (ज०)॥ ५ ॥ कंचन बरण तेज अति दीपत। हरिलंछन भाजै। कुल इक्ष्वागु अंग सहु लक्षण। शशिज्युं मुख राजै (ज०)॥ ६ ॥ दान संबछर दे प्रभु लेवै। चारित्र सुख दाई। मार्गसीर्ष दशमी बद पक्षै। उत्तम तरु पाई (ज०)॥ ७ ॥ बार बरश छद्मस्थ पणामें। दुकर तप पालै। माधव सुद दशमी के दिनकुं। दोख सहु टालै

(ज०) ॥ ८ ॥ केवल पाय सबीसुर संगै । पावा पुर आवै । गुणगण संकृत देशना देकें । संघ सहु पावै ॥ ९ ॥ नूमरुल बिच बहुतजीवकुं अविचल सुख देवै । नर सुर इंद्र सबीमिल पूजै । जगमें जश लेवै (ज०) ॥ १० ॥ चरम चौमाशि पावापुरि करकै । अंत समय जाणी । हस्तिपा लकी शुक्ल शालमें । सोलै पहर बाणी (ज०) ॥ ११ ॥ पर्यंकासन छठ तपस्या । इक चित गुणधामी । कार्त्तिक कृष्ण अमावसके दिन । शिवक मला पामी (ज०) ॥ १२ ॥ इंद्रादिक निर्वाण महोछव । करि प्रनु गु ण गावै । देवमुखै गणधर गुरु गोतम । सुणनें पउतावै (ज०) ॥ १३ ॥ बीतराग गुण मनमें धारी । अनित्यनाव नावै । केवल ग्यान प्रगट हुय ततखिण । सुर नर गुण गावै (ज०) ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक शाशन पतिकी । आरति ज्यो गावै । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जब । मोहन गुण पावै (ज०) ॥ १५ ॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दीपमाला चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय श्री जिन वर्द्धमान । सोवन समवान । सिंह लंछन सिद्धार्थराय । त्रिशला सुत नांन ॥ १ ॥ वरस बहुत्तर आऊदेह । करसत्त प्रमाण ॥ रुषनादिक सम जासवंस । इक्ष्वाग सम जांण ॥ २ ॥ छठनत्त संजम लियोए । कुंम्याम पुर ठाम । गणधर इग्यारे सहित । आपो शिव पुर स्वाम ॥ ३ ॥ चवद सहस मुनि स्वामि सीस । बत्तीस सहस । श्रमणी श्रावक एक लाख । गुणसठ सहस ॥ ४ ॥ तीन लाख श्राविका । वली सहस अढार । सुर मातंग सिद्धाइका । नित सानिधकार ॥ ५ ॥ एकाकी पावा पुरीए । छठनक्त सुजाण । प्रनु पोहता अमृत पदे । करो संघ कल्याण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पीछे जंकिंचिनामतित्थं० । नमोत्थुणं० । कही । दीपमाला निर्वा णक कल्याणकको स्तवन बोलै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारग देशक मोक्ष नोरे । केवल ग्यान निधान । नावदया सागर प्रनूरे । पर नपगारी प्रधानोरे ॥ १ ॥ (वीर प्रनु सिद्ध थया) संघ स कल आधारोरे । हिव इण नरतमां । कुण करस्यै नपगारोरे ॥ २ ॥ (वीर

प्रभु सिद्ध थया)। नाथ विहूणी सैन्य जूरे । वीर विहूणोरे संघ । साधे कुण आधार थीरे। परमानंद अभंगोरे॥ ३ ॥ (वीर०) मात विहूणा बालज्युंरे । अरहो परो अथमाय। वीर विहूणा जीवमारे । आकुल व्याकुल थायैरे॥ ४ ॥ (वी०) ॥ शंसय छेदक वीरनोरे । विरहते केम खमाय। जे दीठें सुख उपजैरे। ते विण किम रहिवायोरे॥ ५ ॥ (वी०) ॥ निर्यामक भव समुद्रनोरे। भव अटवी सत्थवाह। ते परमेशर विन मिल्यांरे । किम वाधे उछाहोरे ॥ ६ ॥ (वी०) ॥ वीर थकां पिण श्रुततणोरे । हुंतो परम आधार। हिवणा श्रुत आधारछेरे । एह जिन आगम सारोरे ॥ ७ ॥ (वी०) ॥ इण कालै सब जीवनेंरे । आगमथी आनंद। ध्यावो सेवो भवि जनारे। जिन पडिमा सुख कंदोरे॥ ८ ॥ (वी०) ॥ गणधर आचारज मुनीरे। सहुनें इणपरि सिद्ध। भव भव आगम संगथीरे । देवचंद्र पद लीधोरे॥ ९ ॥ (वी०) ॥ इति निर्व्वाण कल्याणक स्तवनं॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमी पर्व्वाधिकारः २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूशरो कार्त्तिक महिनेमें, कार्त्तिक सुद पंचमी। (सो) ग्यानपंचमी नामसें पर्व प्रशिद्ध है। (इस दिन) सर्ब भव्य जीवांकों ज्ञानको बिशेष आराधन करनो चहिये। ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कोईबी नही। सर्ब तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नही । मोक्ष मार्ग साधनकों ज्ञान समान कोई उपाय नही। इस ज्ञान पंचमीकों आराधनसें अनेक दुष्ट कर्म बिछेद होय। गुंगापणो, मूर्ख पणो, वक्रपणो, (और) कोढादिकके रोग, सर्ब दूर होय । (अनुक्रमें) ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होनेंसें पांचों ज्ञान प्रगट होय (जैसें) वरदत्त गुणमंजरीके रोगादिकके सर्ब उपद्रव दूर होके। मनोरथ पूर्णभए। उसी माफक (जो) ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा। उसीका मनोरथ पूर्ण होगा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमी देव वंदन बिधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पवित्र स्थानके। चौकी पट्टे उपर ग्यानकों स्थापन करे। तिस आगे पांच साथिया करै। फल, फूल, प्रमुख चढावै । पांच वत्तीको दीपक चढावै। अगर कपूरको धूप खेवै। पूजा पढके। वास क्षेप, कपूर

सें, ग्यान पूजा करै। यथा शक्ती। रोकनाणो चढावै। (तथा) पूठा, विटां गणादि चढावै। (ज्ञानपूजा लिखते हें) ॥ ❀ ॥ नमंति सामंत महीवनाहं । देवाय पूयं सुविहेय पुब्बिं। नत्तीय चित्तं मणिदामएहिं। मंदार पुप्फं पसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेव सट्ठा मणि मुत्तिएहिं । सुगंधपुप्फेहि वरंसिएहिं। पूयंति वंदंति नमंति नाणं। नाणस्सलाभाय नवक्खयाय ॥ २ ॥ यह पूजा पढके, ज्ञान पूजा करै। (इसी तरै) द्रव्य पूजा करके (पीछे) नावपूजा करै (सो लिखते हें)। १ खमासमण देके। इरिया वही पम्हिक्कमें । लो गस्स कहै। (बैठके) मुहपत्ती पम्हिलेहै । अणुजाणह । मेमी नग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै। पीछे पांच खमा समण देके । ज्ञानको नमस्कार कहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल वस्तु प्रतिनाश नानु निरमलसुख कारण । सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु नव जलनिधि तारण। संयम तप आनंद कंद अन्नाण निवारण मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्मपरणति पम्हिबोहण। साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण । मोह तिमर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण । आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रनुता परगासण ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध नाण मणपज्जव केवल। नेद पचास क्षायोपशमिक एक क्षायिक निरमल । दोय परोक्ष प्रथम तिहां पुग्गपरतक्ष दीसतः। सकल प्रतक्ष प्रकाश नास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन नाशै। बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै। शाखा श्रीनिर्युक्ति नाष्य पम्हिशाखा दीपैं। चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंच ज अंगे। नंदी अनुयोग द्वार शाख मानो मन रंगे। वीरपरंपर जीत अनुनव नपगारी। अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोह पंकहर नीरसम सिद्धांत अबाधै। देव चंद्र आणासहित नय नंग अगाधै। ए श्रुतज्ञान सोहामणो। सकल मोक्ष सुखकंद । नगतै सेवो नविकजन । पामो परमानंद ॥ ६ ॥❀॥ इति ज्ञानस्तुति ॥❀॥ (इत्यादि) नमस्कार क

हिके। णमोत्थुणं०। जावंति चेइयाइं०। जावंति केवि साहू०। नमोर्हत्सि० (कहके) प्रणमुं श्रीगुरु पाय० (इत्यादि) ज्ञानके स्तवन बोलै। जय वीयराय० कहै। वंदण०। अनत्थू० कहके। एक नवकारको कानसग्ग करै। थुई कहै॥ ❀॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ अथ थुई लि०॥ ❀॥

॥ ❀॥ देविंद वंदिय पणहि परूवियाणि। नाणाणि केवल मणोहि म ई सुयाणि। पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए। पूया तवो गुणरयाण जि याणदिंतु ॥१॥ ❀॥ यह स्तुति कहके। (ज्ञान आराधवा निमित्तं करे मि कानसग्गं) तस्सुत्तरी। अन्नत्थू० कहके। १ लोगस्सको कानसग्ग करै (पारके) बोधा गाधं० (इत्यादि गाथा पढके) पीछै आभणि बो हियनाणं। सुयनाणं चेव ओहिनाणंच। तह मणपज्जव नाणं। केवलनाणं च पंचमयं॥१॥ यह गाथा कहके। इछामि खमा०। श्रीमति ज्ञानाय नमः॥१॥ श्रीश्रुतिज्ञानाय नमः॥२॥ श्रीअवधिज्ञानाय नमः॥३॥ श्री मनः पर्यव ज्ञानाय नमः॥४॥ समस्त लोकालोक भास्कर श्री केवल ज्ञा नाय नमः॥५॥ (इसी तरै) पांच नमस्कार करै। थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणांकों नमस्कार करै (सो) पूर्वे नवपदजीकै गुणनेंमें लिख्या है। उसी माफक करै। पीछे (ॐ ह्रीँ णमो नाणस्स) इस पदको २००० गु णनो करै। कम थिरता होय (तो) ५ जाप करै। ज्ञान पंचमीका व्या ख्यान सुणें। थिरता होय (तो) इग्यारै अंगकी सिझायों पढै (वा) सुणें (सो) इग्यारै अंगकी सिझायों लिखतेहें॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ अथ प्रथम आचारांग सिझाय लि०॥ ❀॥

॥ ❀॥ (ढाल हठीलानी) पहिलो अंग सुहामणोरे। अनुपम आ चारांगरे। (सुगुण नर) वीर जिनंदै भाषियोरे लाल। उवझाई जास उवं गरे (सु०)॥१॥ बलिहारीए अंगनीरे लाल। हुं जाउं वारं वाररे (सु०) विनये गोचरी आदरैरे लाल। जिहां साधु तणो आचाररे (सु० बलि०)॥२॥ सुयखंध दोयछै जेहनारे। प्रवर अध्ययन पचवीशरे (सु०) उद्देशा दिक जाणियैरे लाल। पिच्याशी सुजगीसरे (सु० ब०)॥३॥ हेतु जुग

तिकर सोभतारे। पद अट्ठार हजारे (सु०) । अक्षर पदनें छेहमैरे लाल। संख्याता श्रीकारे (सु० ब०) ॥ ४ ॥ गमा अनंता जेहमांरे । वलि अनन्त पर्यायरे (सु०)। त्रस परित्ततोछै इहांरे लाल । थावर अनन्त कहायरे (सु० ब०) ॥ ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासतारे । जिनप्रणीतए भावरे (सु०) सुणतां आतम ऊलसैरे लाल। प्रगटै सहिज स्वभावरे (सु० ब०) ॥ ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविकारे । अंगै धरीय उल्लासरे (सु०) विधि पर्वक तुमे सांभलोरे लाल। गीतारथ गुरु पासरे (सु० ब०) ॥ ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलोरे । ऊतारै भव पारे (सु०) विनयचंद्र कहै माहरैरे लाल। ए हीज अंग आधाररे (सु० बलि०) ॥८॥ इति आचारांग सिझाय॥१

॥ ❀ ॥ अथ सुयगडांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल रसीयानी)। बीजोरे अंग तुमे सांभलो। मनोहर श्रीसुगडांग (मोरा साजन)। त्रिणसै तेशठ पाखंडी तणो । मत खंड्यो धर रंग (मो०) ॥१॥ (मीठीरे लागै वाणी जिन तणी) जागै जेहथीरे ग्यांन (मोरा सा०)। ए वाणी मन भाणी माहरै। मानुं सुधारे समान (मोरा०) (मीठी०) ॥ २ ॥ रायपसेणी उवांगछै जेहनो। एतो सुत्र गंभीर मो० । बहुश्रुत अरथ जाणें सहु । क्षीर नीर धनुर तीर (मो० मी०) ॥ ३ ॥ एहनारे सुयखंध दोयछै। वलि अध्ययन तेवीश (मो०) ॥ उद्देशा समुद्देशा जिहां भला। संख्यायैरे तेत्रीश (मो० मीठी०) ॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया। पद छत्तीश हजार (मो०)। संख्याता अक्षर पद मांहे । कुण लहे तेहनोरे पार (मो० मीठी०) ॥ ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली । भेद अनन्त जिण मांहि (मो०) । गुण अनन्त त्रस परित्त कह्या । थावर अनन्त जेमांहि (मो० मी०) ॥ ६ ॥ निबद्ध निकाचित जेसा सयकरा। जिनपन्नत्तारे भाव (मो०)। भाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा। चरण करण नोरे जाव (मो० मीठी) ॥७॥ करीयै भगत जुगत ए सुत्रनी। निहश्चै लहीयैरे मुक्ति (मो०)। विनयचंद्र कहै प्रगटै एह थी। आतम गुणनीरे शक्ति (मो० मीठी०) ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसुयगडांग सिझायः ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (३) गणांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) आठ टकै कंकणो लीयोरी (ए चाल) त्रीजो अंग भलो कह्योरे । (जिनजी) नामें श्रीठाणांग । (मोरो मन मगन थयो) । हांरे देखी २ भाव । हांरे जीवाजीव स्वभाव (मो०) सबल जगत करी भाजतोरे । जि० । जीवाभिगम उपांग (मो०) ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन व स्योरे । जि० ॥ जिम कोकिल दलअंब (मो०) गुहिर भाव कर जाग तोरे ॥ जि० ॥ आजतो एह आलंब (मो०) ॥ २ ॥ कूट शेल सिखरी सिलारे । जि० ॥ काननमें वलिकुंम (मो०) गह्वर आगर द्रह नदीरे ॥ जि० ॥ जेहमें अढैरे उदंम (मो०) ॥ ३ ॥ दश ठाणा अतिदीपतारे ॥ जि० ॥ गुण पर्याय प्र योग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचनारे ॥ जि० ॥ संख्याता अनु योग (मो०) ॥ ४ ॥ वेष्ट शिलोक निजुत्तसुंरे ॥ जि० ॥ संगहणी पनि चि त्त (मो०) ए सहु संख्याता जिहांरे ॥ जि० ॥ सुणतां उलसै चित्त (मो०) ॥ ५ ॥ सुयखंध इक राजतोरे । जि० । दश अध्ययन उदार (मो०) उद्देशादिक वीशढैरे । (जि०) पद बहुत्तर हजार (मो०) ॥ ६ ॥ रागी जिन शासन तणोरे ॥ जि० ॥ सुणें सिद्धांत वषांण (मो०) । विनय चंद्र कहै ते हुवैरे ॥ जि० ॥ परमारथरा जाण (मो०) ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीठाणांग सूत्र सिझायः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४) समवायांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) थांरा महिलां ऊपर मेह झवोके वीजली (ए चाल) ॥ ❀ ॥ चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ॥ सुणो० ॥ पन्नवणा उपांग करी सोभावणी हो लाल ॥ करी सो० ॥ अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी हो लाल ॥ साखासु० ॥ समकित भाव कुसुम परमल व्यापी घणो हो लाल ॥ पर० ॥ १ ॥ जीव अजीवनें जीवाजीव समास थी हो लाल ॥ जीव० ॥ लहीयै एहथी भाव विरोध कांइ नथी हो लाल ॥ वि० ॥ भांगा तीन स्वसमयादिकना जाणीयै हो लाल ॥ यादि० ॥ लोक अलोकनें लो कालोक वखाणीयै हो० ॥ लो० ॥ २ ॥ एक थकी छे सत समवाय प्ररूपणा हो लाल ॥ सम० ॥ कोमा कोम प्रमाणक जीव निरूपणा हो० ॥ जी० ॥ बारस

विह गणि पिटक तणी संख्या कही हो० ॥ त० ॥ सासता अरथ अनंतकि जै एहना सही होलाल ॥ जै० ॥ ३ ॥ सुय खंध अध्ययन उद्देशादिके न लाहो लाल ॥ उ० ॥ संख्यायें एक एक प्रत्येकै गुणनिला हो० ॥ प्रत्ये० ॥ पद एक लाख चौमाल सहस ते उत्तरा हो० ॥ स० ॥ पदनें अग्र उदग्र संख्याता अक्षरा हो० ॥ सं० ॥ ४ ॥ भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहै सदा हो० करी० ॥ सुणतां भेद गंभीर त्रिपत न होय कदा हो० ॥ त्रिप० ॥ जेहनमावै अंगकि अन्तरगतिहसी हो० ॥ अन्त० ॥ जलवरसं ते जोर कुणन हुवै खुसी हो० ॥ कुण० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो हो० । जिणं० ॥ तजिया शास्त्र मिथ्यात सुत्र जाएयो खरो हो० ॥ सु० ॥ जिम मालती लहीभृंग करीनें नविरहै हो० ॥ करी० ॥ ईश्वर शिर सुरगंग तजी परि नवि वहै हो० ॥ तजी० ॥ ६ ॥ एप्रवचन निग्रंथ तणो जुगतै वखो हो० ॥ तणो० ॥ साकर सेलडी द्राष थकी पिण मीठडो हो० ॥ थकी० ॥ स्युं कही यै बहुवात विनयचंद्र इम कहै हो० ॥ वि० ॥ एहना सुणनें भाव श्रोता अति गहगहै हो०॥ श्रोता० ॥ ७ ॥ इति श्रीसमवायांग सूत्रसिझाय सं० ॥४॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) भगवती सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल पंथीडानी) । पंचम अंगे भगवती जाणीयैरे । जिहां जिनवरना वचन अथाहरे । हिमवंत परबत सेती नीकल्यारे । मानुं परतिख गंगप्रवाहरे (पं०) ॥ १ ॥ सूरपन्नत्ती नामें परगडीरे । जेहनी छै उद्दाम भुवांगरे । सूत्र तणी रचना दरीया जिसीरे । मांहिला अरथ ते सजल तरंगरे (पं०) ॥ २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलोरे । एक सो एक अध्ययन उदारेरे । दश हजार उद्देशा जेहनारे । जिहां किण प्रष्ण छत्तीश हजाररे (पं०) ॥ ३ ॥ पद तो दोयलाख अरथे भरयारे । ऊपरि सहस अठ्यासी जाणेरे । लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे । विवाह पन्नत्ती अधिक प्रमाणेरे (पं०) ॥ ४ ॥ करियै पूजा अनें परभावनारे । धरियै सदगुरु ऊपररागरे । सुणियै सूत्र भगवती रागसुंरे । तो होय भव सागरनो त्यागरे (पं०)॥५॥गोतम नामें द्रव्य चढाइयैरे । सम्यक्ज्ञान उदय होय जेमरे । कीजै साधु तथा साहमी तणीरे । भगति युगति मन आणो प्रेमरे (पं०) ॥ ६ ॥

इण विधिसुं एह सूत्र आराधतांरे। इण भव सीझै वंछित काजरे । परभव विनय चंद्र कहै तेलहैरे। मोहन मुगति पुरीनो राजरे (पंच०) ॥ ७ ॥
इति श्रीभगवती सूत्र सिझाय सं० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (६) ज्ञातासूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) कितलख लागा राजाजीरै मालियै । (एदेशी)। छठो अंग ते ज्ञाता सूत्र वखाणियै जी । जेहना छै अरथ अधिक नदंरु हो (म्हांरा सुणजो धरिनेह सिद्धांतनी वातरीजी)। श्रवणे सुणतां गाढो रस भ पजै जी। मधुर ता तर्जित जिम मधु खंरु हो (म्हां०) ॥ १ ॥ जंबुद्दीव पन्नत्ती उपांगछै जेहनो जी। इण मांहे जिन पूजानी बिधि जोरहो (म्हां०) अर्चिक सुणि परम शांतिरस अनुभवै जी। चार्चिक सुणि करै सम सोर हो (म्हां०) ॥ २ ॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी। समवस रण राजाना मातनें तातहो (म्हां०) धरमाचारज धर्म कथा तिहां दा खवी जी। इहलोक परलोक रुचि विशेष सुहात हो (म्हां०) ॥ ३ ॥ भो ग परित्याग प्रवज्या पर्षदाजी। सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो (म्हां०) संलेहण पच्चखाण पादपोप गमनताजी । स्वर्ग गमन शुभकुल उतपत्ति हो (म्हां०) ॥ ४ ॥ बोधिलाभ वलितंतते अंतक्रया कहीजी। धर्मकथाना दोयछै सुअखंध हो (म्हां०)। पहिलाना उगणीश अध्ययन ते आजछै जी। बीजाना दशवर्ग महा अनुबंध हो (म्हां०) ॥ ५ ॥ ऊंठ कोमि तिहां स बल कथानक भाषिया जी। भाष्यावलि उगणीस उद्देश हो (म्हां०) । संख्याता हजार भला पद एहना जी। एह थकी जायै कुमति कलेश हो (म्हां०) ॥ ६ ॥ विनय करै जे गुरुनो बहु परै जी । तेहनें श्रुत सुणतां बहु फल होय हो (म्हां०)। ते रसिया मन वसिया विनय चंद्रनें जी। सो मांहें मिलै जोयां एक कै दोय हो (म्हां०) ॥ ७ ॥ ❀ ॥
इति श्री ज्ञाता धर्म कथाङ्ग सिझायः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) उपाशकदशा सूत्रसिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल बिजियानी)। हिवै सातमो अंग ते सांभलो। उपाशग दशानांमें चंगरे। श्रमणो पाशकनी वर्णना। जसु चंदपन्नत्ती उपांगरे ॥ १ ॥

मन लागो मोरो सुत्रथी । एतो नव वैराग तरंगरे । रसराता ज्ञाता गुण लहै । परमारथ सुविहित संगरे (म०) ॥ २ ॥ इण अंगै सुयखंध एकलै अध्ययन उद्देश विचाररे । दश२संख्यायें दाखव्या । पद पिणसंख्यात हजाररे (म०) ॥ ३ आणंदादिक श्रावक तणो । सुणतां अधिकार रसाल रे । रस लागै जागै मोहनी । श्रोता जननें ततकालरे (म०) ॥ ४ ॥ श्रोता आगलतो वाचतां । गीतारथ पासें रींझरे । जे अर्ध दग्ध समझै नही । ते हसुं तो करवी धीज रे । (म०) ॥ ५ ॥ दश श्रावकतो इहां भाषिया । पण सूत्र भणयो नहीं कोयरे । ते माटै शुद्ध श्रावक भणी । एक अरथ नी धारणा होय रे (म०) ॥ ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपीयै । निस्संकपणें सुजगीसरे । कवि विनय चंद्र कहै स्युं थयो । जो कुमती करस्यै रीसरे (म०) ॥ ७ ॥ इति श्रीउपाशक दशांग सिझायः ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (८) अंतगडदशांग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) बीर वखाणी राणी चेलणाजी । इस चालमें ॥ ❀ ॥ आठमो अंग अंतगड दशाजी । सुणी करो कान पवित्र । अंतगड केवली जे थया जी । तेहनारे इहां आठ चरित्र ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरता जी । पूरता जगतनी आस । जिनवर देव इहां भासताजी । सासता अर्थ सुविलास (आ०) ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय भंग थीजी । अंग ना भाव अभंग । सहिज सुखरंगनी तालिकाजी । कल्पिका जासु भवांग (आ०) ॥ ३ ॥ एक सुय खंध इण अंगनोजी । वर्ग छै आठ अभिराम आठ उद्देशा छै वलीजी । संख्याता सहस पद ठाम ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ आठमा अंगना पाठमें जी । एहवो अछेरे मीठास । सरस अनुभव रस ऊपजै जी । संपजै पुण्यनीरास (आ०) ॥ ५ ॥ विषय लंपट नर जे हुवै जी । निरविषयी सुण्या थाय । जिम महाविष विषधर तणो जी । नागमंत्रे सुण्या जाय (आ०) ॥ ६ ॥ अमृत वचन मुख वरसती जी । सरस्वती करोरे पसाय । जिम विनय चंद्र इण सूत्रनाजी । तुरतलहै अभिप्राय (आ०) ॥ ७ ॥ इति श्रीअंतगड दशांग सिझायः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (९) अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल नणदल बिंदलीजै ए चाल) ॥ ❀ ॥ नवमो अंग अणुत्तरो वाई। एहनीरुच मुझनें आईहो (श्रावक सूत्र सुणो) सूत्र सुणो हित आणी। एतो वीतरागनी वाणी हो (श्राव०) ॥ १ ॥ जसु कल्पाव तंसिकानामें। सोहै नवांग प्रकामें हो (श्रा०) एतो आगमनें अनुकूला। मानुं मेरु शिखरनी चूला हो। (श्रा०) ॥ २ ॥ एतो सूत्रनो नाम सुणीजै। तिम तिम अंतर गति नीजै हो (श्रा०)। प्रगटै नवलसनेहा। एहथी उ लसै मोरी देहा हो (श्रा०) ॥ ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया। तेहना गुण इणमें गाया हो (श्रा०)। नगरादिक नाव वखाएया। तेतो उठै अंगै आ एया हो (श्रा०) ॥ ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू। त्रिणवर्ग वली मनोहारू हो (श्रा०)। उद्देशा त्रिणसनूरा। संख्यात सहस पद पूरा हो (श्रा०) ॥ ५ ॥ सूत्र सुणावुं अमे तेहनें। साची श्रद्धा हुय जेहनें हो (श्रा०) श्रोताथी प्रीत लगावुं। निंदकनें मुंह न लगावुं हो (श्रा०) ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर। तेतो मांणस नही पिण ढोरहो (श्रा०)। कवि बि नयचंद्र कहै साचो। श्रुत रंगै सहुको राचोहो (श्रा०) ॥७॥❀॥ इति ॥८॥

॥ अथ (१०) प्रष्णव्याकरण सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) आघा आम पधारो पूज (एहनी) ॥ ❀ ॥ दशमो अं ग सुरंग सुहावै। प्रष्णव्याकरण नामें। सूत्र कल्पतरु सेवै ते तो। चिदा नंद फल पामें। (आवो २ गुणना जाण। तुमनें सूत्र सुणावुं)। (टेक) ॥ १ ॥ पुष्पकली ज्युं परिमल महकै। गुरु परागनें रागै। तिम उपांग पु ष्पिका एहनो। जोर जुगति करि जागै। (आवो०) ॥ २ ॥ अंगुष्ठा दिक जिहां प्रकास्या। प्रष्णादिक अतिरूमा। तेउ अठोत्तर सत एतो। सूत्र मध्य मणि चूमा (आ०) ॥ ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आएयां पांचे संबर द्वारा। महा मंत्र वाणीमां लहीयै। लबधि नेद सुखकारा। (आ०) ॥ ४ ॥ सुय खंध एकउ दशमें अंगै। पणयालीस अझयणा। पणयालीस उद्देशवलीपद। सहस संख्यात नीरयणा (आ०) ॥ ५ ॥ जे नर सूत्रसुणें नही कानें। केवल पोषै काया। मायामांहि रहै लपटाणा।

ते नर इम हीज आया । (आ०) ॥ ६ ॥ सूत्र मांहि तो मारग दोय छै। निश्चय नय व्यवहारा । विनय चंद्र कहै ते आदरियै । तजि मन मद न विकारा। (आ०) ॥ ७ ॥ इति श्री प्रष्णव्याकरण सूत्रसिझायः ॥ १० ॥

॥ ❀ ॥ अथ (११) विपाकसूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल करुखानी) ॥ ❀ ॥ सुणोरे विपाक श्रुत अंग इग्यारमो। तजो विकथा वृथा जे अनेरी । ललित नवांग जसु प्रवर पुष्फ चूलिका। मूलिका पाप आतंक केरी (सु०) ॥ १ ॥ असुन्न किंपाक सम दुक्कृतफल भोगवी। नरकमां गरकथया जेह प्राणी। सुक्कृतफल भोगवी स्वर्गमां जे गया । तास वक्तव्यता इहां आणी (सु०) ॥ २ ॥ दोय श्रुत खंधनें बीश अध्ययन वलि । बीश उद्देश इहां जिन प्रयुंजै । सहस संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम। बहुल परिमल भ्रमर चित्तगुंजै (सु०) ॥ ३ ॥ सरसचं पकलता सुरभि सहुनें रुचै । अन्य उपगारनी बुद्धि माटै । सूत्र उपगार तेह थी सबल जाणियै। जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै (सु०) ॥ ४ ॥ बंधनें मोक्षना बेउ कारण अछै। दुक्कृतनें सुक्कृत जोवो बिचारी । दुक्कृतनें पर हरी सुक्कृतनें आदरी। जिन वचन धारियै गुणसंभारी (सु०) ॥ ५ ॥ मकररे मकर निंद्या निगुण पारकी । नारकी तणी गति कांई वांधै । नारकी प्रकृत तजि सहज संतोष भज। लाग श्रुत सांभली धरम धंधै (सु०) ॥ ६ ॥ सुक्खनें दुक्ख विपाक फल दाखव्या। अंग इग्यारमें वीत रागै । चिरजयो वीरशासन जिहां सूत्र थी। कवि विनय चंद्र गुण ज्योति जागै (सु०) ॥ ७ ॥ इति श्रीविपाकसूत्र सिझायः ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारै अंगकी बर्णना लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल वधावानी) अंग इग्यारह में थुणया। (सहेलीए) आज थया रंगरोलकि (स०) नन्दीसूत्र मांहि एहनो (स०)। भाष्यो सर्व निचोलकि ॥ १ ॥ (सहेलीए आज वधामणा) पसरी अंगइग्यारनी (स०) मुझ मन मंगल वेलकि। सींचूते हरखै करी (स०) अनुभव रसनी रेलकी ॥ २ ॥ हेज धरी जे सांभलै (स०)। कुंण बूढा कुण बालकि । तो ते फल लहै फूटरा (स०) स्वादें अतिहि रसालकि ॥ ३ ॥ हरख अपार धरी हीयै (स०)

अहम्मदावाद मझारकि। नासकरी ए अंगनी (स०) वरत्या जय जय कार कि॥ ४॥ संवत सतर पचावनें (स०)। वरषा रुतु नन्न माशकि। दशमी दिन शुदि पक्षमां (सु०) पूरण थई मन आसकि॥ ५॥ श्रीजिन धर्मसूरि पाटवी (स०)। श्रीजिनचंद्र सूरीसकि। खरतर गछना राजीया (स०) त सु राजै सुजगीसकि॥ ६॥ पाठक हरख निधानजी। सहे०। ज्ञान ति लक सुपसायकि। विनय चंद्र कहै में करी (स०)। अंग इग्यार सिझा यकि। (सहे०)॥ ७॥ इति श्रीइग्यारै अंग सिझायः॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ पुनः ज्ञानको स्तवन लि०॥ ❀॥

॥ ❀॥ राग तुमरी॥ ❀॥ मरेरे मनमांनी ज्ञानजरी। (मे०) परनप गारी सुगुरु बताई। पांचुं नेदे करी। मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव। केवल बोधवरी। (मे०)॥ १॥ तपकर अग्नि मूंस दंशनकी। करमें धनल करी। सक्रिय संयम करतासुं मिल। सिद्ध रसानधरी। (मे०)॥ २॥ पूरण पुन्य मिली मोय सजनी। सकला नन्ददरी। बालकहै अब विसरत नांहीं। पल छिन एकघरी। (मे०)॥ ३॥ इति॥ ❀॥

॥ ❀॥ पुनः आगम स्तवन लि०॥ ❀॥

॥ ❀॥ श्रुत अतिहनलो। संवसकल आधार नमुं त्रिनुवन तिलो।(आं कणी) अरथै श्री बीर जिणंद आख्यो। सूत्रें श्रीगणधर गुरु नाष्यो। तदुनय थी जे मुनिवर राख्यो॥ १॥ (श्रु०)। जेह थी जगनाव सकल जाणें। नय एकान्त मुनि जन नवितांणें। निश्चइ व्यवहार ते मन आणें॥२ (श्रु०) जिहां अङ्ग नपाङ्गै अतिरूडा। छेद पइन्ना नहिं कूडा। मू लसुत्र नन्दी अनुयोग चूडा॥ ३॥ (श्रु०)। जिहां निरयुगती सुत्रै संगी वलि नाष्य चूरणि टीका चङ्गी। पंचम अंगै कही पंचाङ्गी॥ ४॥ (श्रु०) जिहां साधु श्रावक मारग लहियै। संवेग पखी वलि सरदहियै। एत्रिण विन नवमारग कहियै॥ ५॥ (श्रु०)। जेहनी अनुपेहा नित करियै। नपचारै दूषण परिहरियै। आराध्यां निज अनुनव वरियै॥ ६॥ (श्रु०) जिन आगमना जे गुणगावै। शुनाशय जे मनमें ध्यावै। ते क्षमा क ल्याण सदा पावै॥ ७॥ (श्रु०)॥ इति आगम स्त०॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्त्तिक चौमाशाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कार्त्तिक महिनेमें मिती कार्त्तिक सुद १४ कैदिन। सब मन्दर दर्शन करनेंकों जाना। व्याख्यान सुणना। सामायकादिक धर्मकृत्य करना (इत्यादिक) सर्व अधिकार पूर्वे, आसाढ चौमाशे तुल्य जानके, कार्त्तिक चौमाशैका सेवन करै॥ इति कार्त्तिक चौमाशा सेवनविधिः॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमाशीका अधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम कार्त्तिक बद १ सें सेत्रुंजरास सुणें निवी (वा) एकाशणा, व्याशणादिक तप करै। दोनुं टंक पम्हिकमणो करै। देव वंदनादिक करै। (ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इसीको एक जाप सदा करै। शक्ति होय (तो) सिद्ध गिरी यात्रा करनेंको जावै। काती पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै। अठाही महोछव करै। बिस्तारसें देववंदनादिक बिधि करै (२१) वेर सेत्रुंजरास सुणें। ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अनन्त सिद्धाय नमः। इसी पदसें (२१) जेती देवै। (कदास) सिद्ध गिरी जाणें की सक्ती न होय (तो) जहां सिद्ध गिरीका पटमंड्या होय। तहां महोछव संयुक्त दर्शन करनेंको जावै। पूजादिक सब विधि करै। अठ भक्त करके (वा) चतुर्थ भक्त करके। इस पर्व को आराधन करै। गुरुभक्ति करै। साहमी वछल करै। (इत्यादिक) विधिसंयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करनेंसें। सर्व अशुभ कर्म विध्वंस होके मंगलमाला प्रवर्त्तन होय॥ ❀ ॥ (इस दिन) श्री द्रावम वारखिल्ल प्रमुख दशकोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए (जिससें) इस दिन (जो) धर्मकृत्य किया हुआ, निस्संदेह दशकोमि गुणा फलै। (इस) भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरी के समान, कोई उत्तम तीर्थ नहिं। (में पिण सन्) उगणीसै तीशमें। चैत्रीपून मकों यात्रा करता हुवा। सब भगवंतकै बिंबोंका दरशण करके गिणती किया (सो) बारै हजार। तीनसै। अठावन १२३५८ बिंब हुआ। और बहुत ठिकाणें चरणोंकी स्थापना है। अनन्ता साधु अणसण लेके परम पदकों प्राप्त भए हैं (इसीसें) जो आसन्न भव्वी जीव होंगे (सो) सुभभावसें

इस तीर्थकों सेवन करेंगे। और जो सेवन करते हैं। उसी पुरुषोंकों नम स्कार है। उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरीके स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (देशी गरबानी)। ते दिन क्यारे आवसी हे। (जोरे वहिनी)। जासुं सिद्धाचलनी जात (मोरी सहीयां हे)। पाजे चढतां प्रेम सुंहे। (जोरे वहिनी)। गाइयै गुण अखियात। (मोरी सहीयां हे। तेदि०)॥१॥ अद्भुत ऊंचो देहरो हे। (जोरे वहिनी) मूल नायक आदिनाथ। (मोरी सहीयां हे)। भोली भगत भली परै हे। (जोरे०) निरख्यां होय सनाथ। (मोरी० ते०)॥ २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे। (जोरे०) पहिर खीरोदक चीर। (मोरी०) केसर भरीय कचोलमी हे। (जोरे०) पूजसुं सुगुण सुधीर। (मोरी० ते०)॥ ३ ॥ रूमी रायण छांहमीहे। (जोरे०) आदि जिणंद न दार। (मोरी०) तिहां जगनाथ समो सरया हे। (जोरे०) पूरब निनांणुं बार। (मोरी० ते०)॥ ४ ॥ इण गिर वरियै ऊपरा हे। (जोरे०)। सीधा साधु अनंत। (मोरी०) चौमाशे रह्या दोय जिनवरा हे। (जोरे०) आजित जिणेसर शांति। (मोरी०ते०)॥ ५ ॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिला हे। (जोरे०) अद्भुत उलका झोल। (मोरी०) सिद्धवड सेत्रुंजै नदी वहै।(जोरे०) करियै नित रंगरोल। (मोरी० ते०)॥ ६ ॥ इण डूंगर दीठां थकां हे। (जोरे०) उपजे परमानंद। (मोरी०) गहिरी गिरवर छांहडी हे। (जोरे०) चाहै नित जिणचंद (मोरी० तेदि०)॥ ७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम्॥१॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिरजइयै॥ सुणि वहनी ए गिरनी महिमा। आदिजिनंद इम भाखी। भरथादिक नरपतिनें आग ल। इंद्रादिक सहु साखीरे (आज०)॥ १॥ इण गिरवरियै काल अनं ते। साधु अनन्ता सीधा। जनम मरणनां दुख गोमीनें। अमल अखय गुण लीधारे (आ०)॥ २ ॥ इण गिर सनमुख पगला भरतां। आतम सुद्ध सुभावै। कोरु भवांरा पातिक कीधा। एक पलकमें जावैरे (आ०)॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए सेत्रुंजो। जोतां लागै मीठो। तीन भुवनमें इण गिर

तोलै। बीजो कोईन दीठोरे (आ०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं नेह धरीनें। आगै ऊजग करस्यां । अद्भुत आदि जिनेसर निरखी । प्रेम सुधारस पीस्यांरे (आ०) ॥ ५ ॥ पुहसुगंधा लेइ पचरंगा । हार सुगंधा गूंथी । पहिरावी प्रभु कंठै लहिस्यां। शिव मारगनी सूथीरे (आ०) ॥ ६ ॥ गहिर स्वरे जिन वर गुण गातां । यात्र निनाणूं करियै । मन गमती भ्रमती विचभ्रमतां । भव सायर निसतरियैरे (आ०) ॥ ७ ॥ पूरबनिनाणूं वार प्रथम जिन। राय णरूंखै आया। ते तीरथ सुभ भावै फरसी। करियै निरमलकायारे (आज०) ॥ ८ ॥ लाभ उदै ए गिरवर लहियै। कहै इम केवल नाणी। श्रीजिनचंद स दा हित बहुल। प्रेम घणें चित आणीरे (आ०) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (श्रीचंद्रा प्रभु प्राहुणोरे ए देशी) ॥ ❀ ॥ नमोरे नमो सेत्रुंज गिरीरे । त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे । पाप पंकज दूरै टलैरे । तूटै करम जंजालरे । (नमो०) ॥ १ ॥ पूरब निनाणुं समोसर्यारे । प्रथम जिनंद जगदीशरे । बावीशम जिनवर विनारे । समो सर्या तेवीशरे। (नमो०) ॥ २ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रहीरे । सीधा एहीज ठोरूरे। काल आगामी वलि सीझस्यैरे । साधु अनन्ती कोरिरे (नमो०) ॥ ३ ॥ अनंत कल्याणक भूमिकारे । महिमावंत महन्तरे । सासतो तीरथ ए सही रे। अतिशय जास अनन्तरे (न०) ॥ ४ ॥ कोरि भवंतर जेकियारे पातिक विविध उपाय रे । सेत्रुंजै सनमुख चालतां रे । पग पग ते सहु जायरे। (नमो०) ॥ ५ ॥ धनदिन तेहीज जाणसुंरे। वहिस्युं सेत्रुंज केरी वा टरे। उहरी यथाविध पालस्यूंरे । संघ सहित गहिगाटरे (नमो०) ॥ ६ ॥ पगपग उछव अति घणारे । पग पग याचक दानरे । प्रेम भगति साहमी तणीरे। जीर्णोधार प्रधान रे (नमो०) ॥ ७ ॥ धन ते गिर राय निरखसुंरे। वढती मंगल मालरे। मणि मोतीयडे वधावस्युं रे । रजत सोवन भर थालरे (नमो०) ॥ ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युंरे । करस्युं पावन मोरी का यरे। भगति जुगति जुहारसुंरे। नाभि नन्दन जिन रायरे (नमो०) ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव करसुं मुदारे। पूजा विविध प्रकार रे । भावै भावना भावसुं रे।

करसुं सफल अवतारेरे (नमो०) ॥ १० ॥ रतनत्रयी नमती नली रे । देसुं ते धर बुधिरे । नव नव भ्रमण निवारसुंरे । लहिसुं आतम सुधिरे ॥ (न मो०) ॥ ११ ॥ विध फरसण मन माहरोरे । मोहि रह्यो दिन रातरे । पुन्य प्रबल थी पामियो रे । उजलगिरी केरी जातरे (नमो०) ॥१२॥ नाथ धूलेवा सु पसाय थीरे । कारज सगला सिधरे । कहै जिन हरष सूरी सदारे । होय जो मंगल वृधरे (नमो०) ॥ १३ ॥ इति सिधा० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (देशी पंथीडानी) ॥ अंग नमावो मोनें अतिघणो । भेटवा बि मल गिरंदरे । (पंथीमा) । नाभिराया कुल चंदलो । जिहां वसै मरुदेवी नन्द रे । (पंथीमा) । वहिलुं बोलैरे पंथी ह्यांरा वहिलुं बोलैरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजो छै कितनीक दूररे (पंथीमा वहि०) । पाली ताणो नगर सुहामणो । रूमी ललिता सरनी पालरे (पंथीमा) जिहां अंबलारे वरुला घणा । कुक रही चंपलानी मालरे (पंथीमा वहि०) ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवमा । सेत्रुंज वसिया छै सोरेरे (पंथीमा) । कमाहो करीनें जे वर रहै । मांणस नहीं ते ढोर रे । (पंथीमा वहिलुं०) ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटैजी चालतां । झीणी झीणीझमै खेहरे । (पंथीमा) । मैला थायै संघना कापमा । निरमल थायै देहरे । (पंथीमा वहिलुं०) ॥ ४ ॥ ऊंचो देहरो आदि नाथ रो । आगल चौक विसाल रे (पंथीमा) । जिहां मिलमिल घणा मानवी । गावै प्रभुगुण मालरे । (पंथीमा वहिलुं०) ॥ ५ ॥ घस केसर नरवाटका । पूजै जिनवर अंगरे । (पंथीडा) । फूलाहंदो सौहै प्रभुसिर सेहरो । दि वलानी जोति अभंगरे । (पंथीडा व०) ॥ ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै । कपजै परम आनन्दरे । (पंथीमा) मोनें भेटणरोजी कोमछै । प्रेम घणें जिनचंदरे । (पंथीमा व०) ॥ ७ ॥ इति सिधाचलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जात्रानिनाणुं करियै विमल गिरि (जात्रा०) ॥ पूरबनिनाणुं वार सेत्रुंज गिरि । रुषभजिनंद समोसरियै (विम० जा०) । कोडि सहस भव पातिक तूटै । सेत्रुंज सामें रुग भरियै । (विमल० जा०) १ ॥ चौ

थ उठ दोय अठम तपस्या । करि चढियै गिरवरियै । (वि० जा०) पुंड रीक पद जपियै हरखें । अध्यवसाय शुभ धरियै (वि० जा०) ॥ २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै । हिंसक पिण ऊधरियै (वि० जा०) । भूमि संथारीनें नारितणो संग । दूर थकी पर हरियै (वि० जा०) ॥ ३ ॥ अेकल आहारीनें सचित्त परि हारी । गुरु साथे पद चरियै (वि० जा०) पडिकम णा दोय विधसुं कीजै । पाप पनल विष हरियै (वि० जा०) ॥ ४ ॥ कलि काले ए तीरथमोटो । प्रवहण सम भवदरियै (वि० जा०) । उत्तम ए गिर वर सेवंतां । पदम कहै भवतरियै । (विम० जात्रा०) ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज बधाई म्हांरै रंग बधाई । मोतीयमे० । ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धगिरी भेटो भवि भावे । ज्युं सुखसंपति आनंद थावै । सि० ॥ ए गिरवरकै भेटणसेती । पूरव संचित अघ सहु जावै ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ रायणरुंखे रिषभ जिनेसर । पूरव निनांणुं आया स्वभावै ॥ सि० ॥ पुंडर गिरकी महमा जिननें । भरतादिक सब जनकुं सुणावै ॥ सि० ॥ २ ॥ सासतो तीरथ तीन भुवनमें । शिवपुरि पाज प्रत्यक्ष कहावै ॥ सि० ॥ को डि अनंत साधू इण ऊपर । मुक्तिगये इण गिरके प्रभावै ॥ सि० ॥ ३ ॥ एकवार गिरकुं भेटणसें । सहस कोडना पातक जावै ॥ सि० ॥ नाभिरा य मरुदेवीके नन्दन । आदिजिनंद भेट्यां सुखपावै ॥ सि० ॥ ४ ॥ अदभु तबिंब अनोपमसोभित । चौमुख जिनवर अति मनभावै ॥ सि० ॥ देशदे शांतरसें बहु नरगण । आय भजीविध पूज रचावै ॥ सि० ॥ ५ ॥ कपूर क स्तूरी केसर घोली । मनसुध प्रभुके चरणें चढावै ॥ सि० ॥ आज हमारै सुरतरु प्रगट्यो । मनमें हरष आनन्द भरावै ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रवी कंचनमइ भगो । विमलाचल भेट्या सुभभावै ॥ सि० ॥ मुर्शिदावाद अ जीमगंजमें । गोत्र दूधेड्या प्रगट कहावै ॥ सि० ॥ ७ ॥ मोहतिमर अघ दूर करणकों । बुध सिंह यात्राकरी सुभभावै ॥ सि० ॥ गगन जोग ग्रह इंदु संवछर । चैत्रउज्वल तेरस मन भावै ॥ सि० ॥ ८ ॥ आग्रहसें श्रीअ

जयराजकुं । साथ अनीविध यात्रा करावै ॥ सि० ॥ संघ साथ श्री लक्ष्मी प्रधानना । शिष्य मोहन प्रभुना गुणगावै ॥ सि० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनबिंब संख्यागर्भित सेत्रुंजरास लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ आदिजिनंद दिनंदसम । ज्योति रूप जगतेय । आतम गुण परकास कर । भवियणकुं सुख देय ॥ १ ॥ वाग्देवी प्रणमी करी । सद्गुरु सीस नमाय । सिद्ध क्षेत्रका गुण कहुं । सुमतानें सुपसाय ॥ २ ॥ सुमता वचने चालतां । सदा सुरंगी देह । सुरपति नरपति सहुनमें । पामेंशिवसुख तेह ॥ ३ ॥ सुमता जिम चेतन भणी । समझावे चित आय । प्रथम बात एही कहुं । सुणो भवी चितलाय ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ढाल १ मारू जीकी ॥ ❀ ॥ सुमता कहे चेतन भणी । साहिबजी । छोमो मिथ्या जालहो । इक चित्ते एगिरि सेविये ॥ सा० ॥ ज्यो निज गुण नी चाहहो ॥ इक० ॥ १ ॥ काल अनादीसें रह्यो ॥ सा० ॥ कुमति कथन बस होयहो । भवमांहे भमतां दुखसह्या ॥ सा० ॥ २ ॥ जन्म मरणकरि नव नवा ॥ सा० ॥ नटज्युं वेश व नां वहो । चउगतिमें नाटक तुम कियो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरक निगोदमें तुम रह्या ॥ सा० ॥ क्षण नहिं पाम्यो सुख हो । किम भूलो दुख देखी जिसा ॥ सा० ॥ ४ ॥ देव मनुष्य अवतार में ॥ सा० ॥ मोह विटंबणा दुःख हो । चित्तधरने दुर्जन गांमिये ॥ सा० ॥ ५ ॥ बल अपणो फोरयां बिनां ॥ सा० ॥ दुर्जन नपमे पायहो । जशलीजे दुर्जन क्षय करी ॥ सा० ॥ ६ ॥ मुझकुं कदेय न संभरी ॥ सा० ॥ तोपिण अवसर देखहो । तुमआगे बात सहू कही ॥ सा० ॥ ७ ॥ उत्तम नर जिणनें कह्यो ॥ सा० ॥ होय गुण अवगुण जांणहो । बलि जांणें मित्र कुमित्रनें ॥ सा० ॥ ८ ॥ मुझसें प्रेम धरी करी ॥ सा० ॥ कीजे वचन प्रमाण हो । जिन मारग उत्तम आदरो ॥ सा० ॥ ९ ॥ चारित्र धर्मनी आगन्या ॥ सा० ॥ धारो शिर पर आजहो । जिम पामो रंग बधामणा ॥ सा० ॥ १० ॥ सुध सरधा जलकुं ग्रही ॥ सा० ॥ बोवो समकित बीज हो । नवपल्लव धर्म तरू हुये ॥ सा० ॥ ११ ॥ उत्तम नर सुरपति पणो ॥ सा० ॥ पुष्प सुगंधी जाण हो । फलइणका शिव सुख पांमस्यो ॥ सा० ॥ १२ ॥ उत्तम ग्यांन प्रकाशसें ॥

सा० ॥ सहु देखे निजरूप हो । परमातम पदकुं पिछांणिये ॥ सा० ॥ १३ ॥ तुं मुझ बल्लभहे सदा ॥ सा० ॥ तुम गुण अपरं पारहो । परमातम पद तुंही अछे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पिण निश्चे व्यवहार में ॥ सा० ॥ निश्चे नयकुं जांणहो । व्यवहारे शुद्ध क्रिया करी ॥ सा० ॥ १५ ॥ निज निज शक्ती अनुसरे ॥ सा० ॥ पाले व्रत मन शुद्धहो । नव पदनो ध्यान हिये धरी । सा० ॥ १६ ॥ सिद्ध गिरी प्रवहण चढी ॥ सा० ॥ वेगे शिवपुर जायहो । भव सायर पार पामो सुखे ॥ सा० ॥ १७ ॥ इण परि सुमता आयके ॥ सा० ॥ समझावे भवि चित्तहो । सुखपामे समझे भविजिके ॥ सा० ॥ ॥ ❀ ॥ (दुहाः) ॥ इणपर सुमता बयणसुण । आसन भवी जीव । हरख धरी व्रत आदरे । धर्म अमृत रस पीव ॥ १ ॥ सिद्ध गिरी इक अवसरे । आयावीर जिणंद । इन्द्रादिकसहु आयनें । वांद्या धर आणंद ॥ २ ॥ सिद्ध गिरीना गुणसहू । सुणवा भवि चितधार । प्रभुपद पंकज नमण कर । बैठा करी इकतार ॥ ३ ॥ भगवन दीनी देशना । सिद्धगिरी सम आज । जगमें कोइ तीरथ नहीं । परतिख शिवपुर पाज ॥ ४ ॥ काल अनादीसें रह्यो । नाम ठाम पर सिद्ध साधु अनंता इण गिरे । अणसण लही सिव लिद्ध ॥ ५ ॥ नामलियां सहु भव यटले । दुख दालिद्र हुये दूर । दिनदिन अधकीसंपदा । पांमे सुख भरपूर॥६॥ ॥ ❀ ॥ (ढाल २) ॥ जंबूद्वीप मांहे कह्योरे लाल दक्षिण भरत प्रमाणरे । (भविकनर) सहु देशां मांहे सिरैरे लाल । सोरठ देश वखांणरे ॥ भ० १ ॥ *इण गिरनी महमा बडीरे लाल । कहे न सके कोई पारेरे ॥* भ० ॥ (बीर जिनंदै भाषियोरे लाल) ॥ २ ॥ बिमलाचल प्रणमुं सदारे लाल । श्राद्ध गुणां समनांमरे ॥ भ० ॥ घर बैठां शुभ भावथीरे लाल । ध्यान कीयां सुख पांमरे ॥ भ० ॥ बी० ॥ ३ ॥ प्रथम अनादी कालमेंरे लाल । अनंत सीधा इहां आयरे ॥ भ० ॥ अनंत साधु बलि सीधसीरेलाल । प्रणमुं ए गिरिरायरे ॥ भ० ॥ बी० ॥ ४ ॥ फागुण सुदि दशमी दिनेंरे लाल । पूरब निनांणुं वारेरे ॥ भ० ॥ आदि जिणंद समोसरयोरे लाल । चरण नमुं सुखकारेरे ॥ भ० ॥ बी० ॥ पुंडरीक गणधर नमुंरे लाल । पंचकोडि मुनिसाथरे ॥ भ० ॥ चैत्री पूनम दिन आयनेंरे लाल । झाली शिवपुर बा

थरे ॥ ज्र० ॥ बी० ॥ ६ ॥ नमि विनमि दोदो कोरसेंरे लाल । इणगिरि कीनो वासरे ॥ ज्र० ॥ फागुण सुद दसमी दिनेंरे लाल । अविचल ज्योति प्रकाशरे ॥ ज्र० ॥ ७ ॥ नमि पुत्री चौसठ कहीरे लाल । अणशण लही शिव पायरे ॥ ज्र० ॥ द्रावड संग काती पूनमेंरे लाल । दसकोमि सीधा इहां आयरे ॥ ज्र० ॥ बी० ॥ ८ ॥ राम ज्ररत पांम्व कह्यारे लाल । बलि नारद नव आयरे ॥ ज्र० ॥ थावच्चा सेलग मुनीरे लाल । जाति मयाली शिव पायरे । ज्र० ॥ बी० ॥ ९ ॥ अजित शांति चौमासो रह्यारे लाल । ज्रविजीवां हित काजरे ॥ ज्र० ॥ नेम विना सहु आवियारे लाल । एशिव पुरनी पाजरे । ज्र० ॥ बी० ॥ १० ॥ साधु अनंता प्रतिकंकरेरे लाल । सीधा ध्यान लगायरे ज्र० ॥ मनमोहन गिरि सेवतांरे लाल । पातिक दूर पुलायरे ॥ ज्र० ॥ बी० ॥ ११ ॥ (दुहाः) ॥ करजोमी नितप्रतिनमुं । सहू साधु मनज्राय । सेत्रुंज महातम ग्रन्थसें । ज्रेद सुणो चितलाय ॥ १ ॥ ज्ररता दिकसें आजलग सोजे उद्धार कहाय । ग्रंथान्तर में जेहना । ज्रेद कह्या समझाय ॥ २ ॥ सं प्रतिकाले एरह्यो । षोडसमो उद्धार । करमचंद मोसी तणो । जशरह्यो जग विस्तार ॥ ३ ॥ देव जुवन जिम सोज्रता । नवबसि चैत्यना ज्राव । सुरपति नर पति सहुनमें । प्रगट्यां आतमदाव ॥ ४ ॥ सहु बिंबनी संख्या कहुं । जेनव बसिमें होय । मूलनायक वसिनांममें । प्रगट कहुं हुं जोय ॥ ५ ॥ (ढाल३) ॥ ❀ ॥ नमोरे नमो सेत्रुंजगिरीरे । (ए चाल) ॥❀॥ प्रणमुं ए गिरिरायनेंरे । धन्य दिवस थयो आजरे । सुमतानें सुपसायथीरे । मनबंछित फल्या काजरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ प्रथम विमल बसि आयनेंरे । पूज्या जिनप्रति बिंबरे । सहु चैत्यामें सोज्रतारे । उप्पनसै उप्पन बिंबरे ॥ २ ॥ प्र० ॥ नाज्रिराय सुत जाणियेरे । मूल नायक उवि शांतिरे । मोतीबसीमें बिंबरह्यारे । पचवीशसै बयालीस क्रांतिरे ॥ ३ ॥ प्र० ॥ बालावसिमें सोज्रतारे । च्यारसै षट् बिंबजाणेरे । मूलनायक दोनुं बसीतणारे । आदिनाथ गुणखांणेरे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अद्भुत बिंब मनोहररूरे । इग्यारै कर ऊंचो जाणेरे । विस्तारमांन नवहाथनोरे । मुऊब लज्र जिम प्राणेरे ॥ ५ ॥ प्र० ॥ चौथी प्रेमाबसि हुं नमुंरे । आदिनाथ जग नाथरे । पांचसै अम्रतीश जिहां रह्यारे । बिंब मिल्यां सहु साथरे ॥ प्र०

॥ ६ ॥ अजितनाथ स्वामी तणीरे। पांचमी हेमावसि थायरे । अमसठ ऊपर तीनसैरे। बिंबनमुं गुण गायरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ ऊजमवसी छठी जांणियैरे पद्मप्रभू जगन्नांणरे । रिखभानन चंद्राननेंरे । बारिखेण बधमांनरे ॥ ८ ॥ प्र० ॥ बावन जिनांजा सास्वतारे। चौमुख नंदीसर नावरे। च्यारसै गुणती श सोभतारे। बिंब अनोपम रावरे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ मूलनायक पार्श्व प्रभुत णीरे। प्रतिमा साकरबसि मांयरे। और तयांसी बिंबडेरे । नयणेदीठां सुख पायरे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ आदिनाथ टींपाबसीरे। बीशबिंब सुविसालरे । नव मी खरतरबसि बिंबनीरे। ओपमा रविजिम नालरे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ आदी शर चौमुख तणीरे। प्रतिमा चार सुख दायरे। और बिंब तेवीशसैरे। पंच दश देष्यां मनभायरे ॥ १२ ॥ प्र० ॥ बारै सहस त्रिणसै ऊपरैरे । अठाव न बजि होयरे। इम नवबसि सहु बिंबनीरे। संख्या कहीमें जोयरे ॥ १३ ॥ प्र० ॥ पांम्व मंदर जाणियेंरे। मरुदेवी टुंक सुखकाररे। शाशनदेवीनी मंद रीरे। नेमचवरी धर्मद्वाररे ॥ १४ ॥ प्र० ॥ रायण तल पगलानमुंरे। गणधर मंदर जायरे। चवदैसे बावन तणारे। नित नित प्रणमुं पायरे ॥ १५ ॥ पुं मरीक बबिमोहनीरे । देष्यां मनवस थायरे। नीमकुंम सुचिजल नरयोरे। सूर्यकुंम जलनायरे ॥ १६ ॥ प्र० ॥ त्रिण षट् बारै गानीरे। नमती देनं तीनरे। उलका झोल दरशण करीरे। सिद्धसिला सिद्धचीणरे ॥ १७ ॥ प्र० ॥ चेलणा तलाई सोभतीरे । अजित शांति थुंभ आतरे। नामवाडूंगर हस्त गिरीरे। कदमगिरी कीनीजातरे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ इत्यादिक दरशण करीरे। सिद्धबम सेनं आयरे । अगिणत चरण प्रभूतणारे। नमणकरुं मन लायरे ॥ १९ ॥ प्र० ॥ देवपुरी जिम सोभतोरे। फूंगर अतिहि बिसालरे। सहुज नपदना जात्रवीरे। पूजै सहस मिल नालरे ॥ २० ॥ प्र० ॥ इम सिद्धगि- रि मन लायनेंरे। त्रिकरण नमुं त्रिहुं कालरे। ओर नमुं सहु नव्यनेंरे। जे शुध आग्या पालरे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ प्रतिदिन एगिरवर चढीरे। अष्टद्रव्य लेई हाथरे। द्रव्य नाव पूजा करैरे। मोहन सहु जगनाथरे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ ॥ ❀ ॥ (दुहा) ॥ इण परि संख्या बिंबनी। करि आतम सुखदाय। अधि क बिंब कोइ थापसी। नमसुं चित्त लगाय ॥ १ ॥ मंदबुद्धि संयोगसें । रही

होय कबु नूल । तोपिण ओगुण ढांकके । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल पुन्य संयोगसें । मुऊ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप नावना । नेद धरमना च्यार । नावविनां सहु गारसम । नाव सहु मुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । नग वन् वचन प्रमाण । नाव धरी प्रनु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥ शिव सुखसें वेमुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा नत्थापकर बांधे नवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे नगमें । मुऊ आवे शुन्न नाव । मन वंछित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत रुखमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोंसमरके । पामुं नवजल पार ॥८॥ (ढाल) मेरुंजसाधु अनंतासीधा (इस चालमे) एतीरथनी अद्नुत महमा । धा रो चित्तमझारे । पंचप्रमाद विषय सुखउंगी । नेटो गिरि सुखकारे । एती०॥१॥ मनुषा जन्म पायके जेनवि । नेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरनावासै कहिये पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । नत्थापे निज बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो नमसी । दुर्लन पांमें सिद्धरे॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जां णी मन नावधरीनें । नवि मिल आवेधायरे । नहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ मन नायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह नव परनव मांहेकीधा । जे नर पाप अघोरे । ते इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सहु चोरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग स हुनांमें नासे । तूटै करम कठोरे । दुष्ट देव देवी कामण सहु । नागे तीरथ जो रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रनु साखे । पापमेल सहु धोयरे । हिणमें निजगुण नज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥७॥ समकित धारी जे सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्यै । पूजा करे स हु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत नपद्रव नय नहिंव्यापे । दुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा कर तीरथनी । नगति करो मन शुद्धरे । तीर्थंकर पिण तीर्थनमीनें । देनपदेश शुनु द्धिरे ॥ ए० ॥१०॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेनवि । सेलखेत्र निज वित्तरे । ख रचे निज मन नाव धरीनें । पांमें सहु जगकित्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम तीरथ गुण गुरु मुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध बिंबचरण स

हु बंदी। सार्या आतम काजरे॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशे सन् उगणीसे तीशरे। धन्यघरी धन्यवेला एहीज। पाम्यां त्रिभुवन ईशरे॥ए० ॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम। रिषभदेव जिनरायरे। एहीजदेवरह्या त्रिभुवनमें। मोहनगुणनां दायरे॥ ए०॥१४॥(दुहाः)॥ करजोमी बीनतिकरुं सुणोगरीबनिवाज। कर्म सघन दूरेकरी। दीजे त्रिभुवन राज॥ १ ॥ मोसे अधम संसारमें। कर्म सघन बस होय। तप जप संयम नहिपले। किमपांमुं पद तोय॥२॥ जे तुमरी आग्याधरे। तेहनें दोजगराज। एहमें प्रभु अचरज नहि। अचरज मुझनें काज॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके। खमिये सहु अपराध। तुं मरा वचन हियेवस्या। अचल अमृत रस स्वाद॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगसें। रंगाणी मुझदेह। अबमिथ्यात पतंगको। रंगचढै नहि रेह॥ ५ ॥ तुम सहाये जोमाहरो। चेतन निजगुणपाय। तो अविचल आग्याधरुं। तन मन वचन लगाय॥ ६ ॥ इम बीनति प्रभुनी करी। समकित निरमल काज। द्रव्य क्षेत्र काल भाव विन। मिलेन शिवपुर राज॥ ७॥ रत्न जडित सिंहासणें। रयण आभूषण सार। अद्भुत रथ बैठे प्रभु। उछव करे नर नार॥ ८॥ (ढाल)॥ आज महोछव रंगरलीरी (इस चालमे)। आज उछवदिन मुझमन भायो॥ आ०॥ संघसहु मिल गावे वधाई। रथ बैठा सोहे जिन रायो॥ आ०॥ ॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला। मधुर ध्वनी अंबर रहिगायो॥ आ०॥२॥ मुर्शिदावाद पूरब दिश गाजे। अजीमगंज गंगापार वसायो॥ आ० ॥३॥ बुध सिंह विसनचंद मिलभाई। गोत्र दुधेड्या मांय कहायो॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि महमासुण भाव धरीनें। विधसें यात्र करी सुखपायो॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य संयोग मिल्यो मोय सजनी। आनंद दायक संघ सवायो॥ आ० ॥ ६ ॥ आज अंगणमोय सुरतरु फलियो। दुखदालिद्र सहु दूरगमायो॥ आ० ॥ ७ ॥ आजमनोरथ सहु मुझ फलिया। आज आनंद मंगल बरतायो॥ आ०॥८॥ गुरु खरतर जिन आग्या पालक। सोहे हंससूरि महारायो॥ आ० ॥ ९ ॥ पाठक पद लायक गुणसोभित। सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो॥ आ० ॥१०॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक। पंक्ति लक्ष्मी प्रधानपसायो॥ आ०॥११॥ तासुशीश मोहन हित जांणी। उत्तम ए तीरथ गुणगायो॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञावधर धन्य दिन आज सफलो गिएयो। आजमें सजनि आ नंद पायो॥ ज्ञा०॥ हर्ष धरि निजरि ज्ञरि बिमलगिर निरखकर। रजत मणि कनक मोतिय वधायो॥ ज्ञा०॥ १॥ पग पगै ज्ञमगधर पंथनित पूछतां। धन्य दोय चरण जिहां तलक आयो। आज धनदीह जागी सु कृतकी दिशा। आज धनदीह दिन सुजश गायो॥ ज्ञा०॥ २॥ दूर दुर गत टलिय यात्र विधसुं करी। पुन्य ज्ञंकार पोतै ज्ञरायो। वदत जिनराज मनरंग सुरगिर सिखर। रिषज्ञ जिनचंद सुरतरु कहायो॥ ज्ञा०॥ ३॥
॥ इति सिद्धगिरी स्तवनं॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति कार्त्तिक माश चतु पर्व्वाधिकारः॥ ८॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मार्गशीर्ष माश पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मिगसर महिनेमें मिती मिगसर सुद ११ (सो) मोन इग्या रस नामसें पर्व्व प्रसिद्ध है। इस दिन दैढसै कल्याणक हुये (सो लि खते हें) जन्म। दिक्षा। केवलज्ञान। यह। तीन कल्याणक। श्रीमल्लिनाथ स्वामीके हुये। श्री अरनाथ स्वामीनें दिक्षा अंगीकार करी॥ श्रीनमि नाथ स्वामीनें केवल ग्यान उत्पन्न ज्ञयो। (ऐसें) इस ज्ञरतक्षेत्रमें वर्त्त मान चौबीशीके पांच कल्याणक हुए (इसी माफक) पांच ज्ञरत। पांच ऐरवतमें। चौबीशीके पांच२ कल्याणकमिलानेंसें। पचास कल्याणक हुये अतीत। अनागत। वर्त्तमान। कालके अपेक्षायें। दैढसै कल्याणक हुये। इसीसें यह दिन वडा उत्तम है (इस दिन) मोन संयुक्त उपवास करै। अठ पहरी पोसो करके। मोन इग्यारसको गुणनो करै। पोशहकी शक्ति न हो य (तो) देशावगासी लेके गुणनो करै। (एसें) इग्यारै बरशमें, इग्यारे उपवास करै। और (जो) इग्यारस करनेंकी इछा हो (तो) माशमें बद सुदकी। दोनुं एकादशी। इग्यारै बरश, इग्यारै महिनां करै। यह तपस्या करतां इग्यारै अंग शुद्धज्ञावसें सुणें। इग्यारै अंग लिखायकै देवै। पढनें वालूं का सहाय्य करै। तपस्या ग्रहण करनेंको (पारनेंको) गुरूके मुखसें विधि करै। यथा शक्ति आगम पूजा साहमी वछल करे॥ इति॥

॥ ❀ ॥ अथ मोन एकादशीको गुणनो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत २४ जिनपंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २ ॥

२१ ॥ श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लि अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लिनाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अरिनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ३ ॥

४ ॥ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री उदय नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पूर्वभरते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ द्वितीय ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीअकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकर अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकरनाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकर सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीसप्तनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पूर्वभरते वर्त्तमान २४जिनपंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ५ ॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री गांगिलनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकी खंडे पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ६ ॥

४ ॥ श्री सांप्रति सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्धपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्रीमृदु सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिनपच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ८ ॥

२१ ॥ श्रीअरएयवास सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अयोग नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ९ ॥

४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ।
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याण क नामः ॥ ❀ ॥ १० ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्या णक नामः ॥ ❀ ॥ ११ ॥

२१ ॥ श्रीप्रयत्न सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री माल्लि सिंह नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ १२ ॥

४ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री धनद अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री धनद नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री पौष नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमन्नरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ १३ ॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्री प्रलंबसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हतेनमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री प्रशमजित नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमन्नरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ १४ ॥

२१ ॥ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री प्रसाद नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमन्नरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ १५ ॥

४ ॥ श्री अघटित सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेंद्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेंन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीरिषन्नचन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ १६ ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री दयांतसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री रत्नेश नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १७ ॥

२१ ॥ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवत क्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १८ ॥

४ ॥ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीनिर्वाण नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते अतीत २४ जिन पञ्च कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १९ ॥

॥ प्रथमः ॥

४ ॥ श्री सौदय सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ २० ॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोषित अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोषित नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोषित सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री काम नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २१ ॥

४ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री दिलादित्य नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते ॥ अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ २२ ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री अष्टाहिकसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २३ ॥

२१ ॥ श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री सायकाह्न अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री सायकाह्न नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री सायकाह्न सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री खेमन्त नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुषकरार्द्ध पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ २४ ॥

४ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

॥❀॥ धातकीखंमे पश्चिमऐर वते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २५ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ॥ ❀

४ ॥ श्रीपुरूरव सर्वज्ञाय नमः ॥
३ ॥ श्रीअवबोध अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीविक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

॥❀॥ धातकीखंमे पश्चिम ऐर वते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥❀॥२६॥

२१ ॥ श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्रीनन्दकेश नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंमे पश्चिमऐर वते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ २७ ॥

४ ॥ श्रीमहामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअसौचित अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीअसौचित नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअसौचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीधर्मेन्द्र नाथाय नमः

॥❀॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ २५ ॥

॥ ❀ ॥ द्रितीय ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीअश्ववृन्द सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री कुटिल अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीकुटिल नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीवर्द्धमान नाथाय नमः ॥

॥❀॥ पुष्कराद्ध पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २६ ॥

२१ ॥ श्रीनन्दिक वर्द्धमानाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्रीविवेक नाथाय नमः ॥

॥ ❀ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐर वते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ३० ॥

४ ॥ श्रीकलाप सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीआरण नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीमौन एकादशी गुणनो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणनेंसें दैढसै माला होय (जो) भव्यजीव शुद्ध चित्तसें गुणेंगे (सो) अल्प भवमें अनंत सुखकों प्राप्त होंगे इति मार्गशीर्ष माश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोष महिनेंमें, मिती पोषबद १० (सो) पोष दसमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है। इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका जन्म कल्याणक है। इसी सें यह दिन श्री संघमें परम आनंदकारी है। इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको अधिकार सुणें। एकाशणादिकको पच्चक्खाण करै। जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय। उहां यात्रा करणें को जावै। कदास यात्रा करनें कों न जाय सकै (तो) जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की स्थापना होय। उहां महोछव संयुक्त दर्शण करनेंको जावै। जलयात्रा दिक महोछव करकै अष्टोत्तरी स्नात्र करावै (अथवा) पंचकल्याणकजी की (वा) सतर भेदी पूजा करावै। रात्री जागरण करावै। तोरण बांधै। गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरै के उछव करै (और) जन्म कल्याण कादिक ॥ पाश जिनेसर जगति लोए० ॥ वाणी ब्रह्मा बादनी० ॥ इत्यादिक पार्श्वनाथ स्वामीके गुण गर्भित स्तवन पढै। (वा) सुणें। इसी तरै इस पर्वको सेवन करनेंसें। आधि व्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे। अनेक तरैसें रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीचंद्रा प्रभु जिनवर साहब सुणियो० (इस चालमें)। पोश दसम दिन पारश प्रभुको। जन्म भयो सुखदाई। (में वारी जावुं०)। काशी देश बणारसी नगरी। अस्वशेन कुल आई। (में०) वामांडर अवतार लियो है ॥ सहु जीवन गुण दाई ॥ (में) १ ॥ एक सहस अठोत्तर लछण। अनुपम रूप सुहाई। (में०)। नील वरण भवि तीन ग्यानयुत। पार्श्व प्रभू बरदाई। (में वा० । २ । पो०)। नरक जीव पिण क्षिण सुख पावत। दिश कुमरी मिलआई। (में०) सूतिका कर्म क

री निजथांनक। गई सहु हरष भराई (मेंबा० । ३ । पो०)॥ आशन कंपित सहु सुरवरना। देख ग्यांन भेद पाई । कोमा कोमि देव देवांगना मिल सहु आगल धाई । (में बा० पोश०) ४ ॥ सुरपति सक्र पंमव रूपै कर । मेरु सिखर ले जाई । (में०) । स्नात्र महोछव अधिक आनंदसें । बसुबिध पूज रचाई । (मेंबा० । ५ । पो०) । बत्तीसबद्ध नाटक प्रभु आगल। तत्ताथेई तान सुणाई। (में०) सात तीन इकवीश भेद कर । मिष्ट बचन गुण गाई । (मेंबा० । ६ । पो०)। इम छछवकर प्रभुकों लेई। माता पास बैठाई। (में०) । रत्नकुक्षि धारक तूं जगमें। तूंसहु सुर नर माई। (मेंबा० पो०) । ७ । हरखधरी धनधान्य बहूबिध। राजरिद्ध फैलाई । (में०) नंदीशर अठाई महोछव । करि सहु थानक जाई। (मेंबा० ॥ ८ ॥ पोश०)। अश्वसेन कुलक्रम आचारै। जन्मछछव अधकाई । ध्वजतोरण बाजित्र बहू विध । मंगलध्वनि बरताई। (में बा० पोश०) ॥ ९ ॥ इम प्रभु जन्म कल्याणक दिवसै । सहु संघ हरख बधाई। (में०) लक्ष्मी प्रधान मोहन प्रभुसेवै। अहनिशि ध्यान लगाई। (मेंबा० पो०)। १० ॥ ❀ ॥ इति जन्म कल्याणक स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) बाणी ब्रह्मावादनी। जागै जग विख्यात। पाशतणा गुणगावतां। मुझ मुख वसज्योमात ॥ १ नारंगै अणहलपुरै। अहमदा वादै पाश। गौमीनो धणी जागतो । सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभदिन घमी । महुरत एकमंमाण । प्रतिमा ते इह पाशनी। थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ गुणहि विशाला मंगलीक माला। बामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण माणि माणकदे । गौमीनो धणी जाचोजी॥४॥(गु०) अलहणपुर पाटण मांहे प्रतिमा। तुरक तणें घर हूंतीजी। अश्वनीभूमि अश्वनीपीडा। अश्वनी वालि विगूती जी ॥ ५ ॥ (गु०) जागंतो ज कहेजेहनें कहियै । सुहणो तुरकनें आपैजी । पाश जिनेसर केरी प्रतिमा। सेवक तुझ संतापैजी ॥ ६ ॥ (गु०) प्रह ऊठीनें परगट करजे । मेघा गोठीनें देजे जी । अधिको मलेजे ऊंगो मलेजे । टंका पांचसै लेजेजी

॥ ७ ॥ (गु०) नहिं आपिस तो मारीस मुरमीस । मोर बंध बंधास्यैजी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ । लाज घणी घर जास्यै जी॥८॥(गु०) मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै । साहथवाह जे गोठीजी । निलवट टीलो चोखा चे ढ्या । वस्तु बहै तसुपोठी जी ॥९॥ (गु)॥❀॥(दूहा)॥❀॥ मनसुं वीहनो तुरक मो । मांनें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणा तणो । संभलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोलै तुरकनें । वमा देव है कोइ । अवसताब परगटकरो । नहीं तर मारै सोय ॥ ११ ॥ पाउजीरात परोमीयै । पहली बंधै पाज । सुहणा माहें से ठनें । संभलावै यक्ष राज ॥ १२ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ एम कही यक्ष आयो राते । सारथ वाहुनें सुहणें जी । पाशतणी प्रतिमा तुं लेजे । लेतो शिरमत धुणे जी ॥ १३ ॥ (एम०) पांचशैटका तेहनें आपे । अधिको म आपिस वारोजी । जतन करी पुहचाने थानकि । प्रतिमा गुण संभारो जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुझनें होसी बहु फलदायक । भाई गोठीनें सुण जे जी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । प्रहउठीनें थुणजे जी॥१५॥ (एम०) सुहणो देईनें सुरचाव्यो । अपने थांनक पहुतो जी । पाटण मांहें सारथवाहू हींडै तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०) ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी । चो खा तिलक जिलाकै जी । संकेत पहुतो साचोजाणी । बोलावै वहुलाकै जी ॥ १७ ॥ (ए०) मुज घरि प्रतिमा तुझनें आपुं । श्रीपाश जिणेसर केरी जी । पांचसै टका जो मुझ आपै । मोलन मांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नांणो देई प्रतिमा लेई । थानक पहुतो रंगैजी । केशर चंदन मृगमद घोली विधसुं पूजा रंगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी रूमी रूनी कीधी । ते मांहि प्रतिमा राखैजी । अनुक्रम आव्या परिकरमांहे । श्री संघनें सुरसाखै जी ॥ २० ॥ (ए०) उछव दिन २ अधिकाथायै । सत्तर भेद सनात्रोजी । गाम २ ना दरशण करवा । आवै लोक प्रजातोजी ॥ २१ ॥ (ए०) ॥❀॥ (दूहा) इकदिन देखै अवधिसुं । परिकर पुरनो भंग । जतनकरुं प्रतिमा तणो । तीरथ अछै अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठनें । थल अटवी उजाम । महिमा थास्यै अति घणी । प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुश ल खेम तिहां अछै । तुझनें मुझनें जाणि । संका कोनी काम करि । कर

तो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ पाश मनोरथ पूरा करै । वाहण एक वृषभ जो तरै । परिकरथी परियाणो करै । इक थल चढ बीजै ऊतरै ॥ २५ ॥ बारै कोस आव्या जेतलै । प्रतिमा नविचालै ते तलै । गोठी मनह विमासण थई । पास जुवन मंझावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किमकरुं प्रयाण । कुटको कोइ नदीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो मंझावुं किम गरथै विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंघरहस्यै किहां । सिद्धा वटो किम आवै इहां । चिंतातुर थयो निद्रालहै । यक्षराज आवीनें कहै ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां । गरथवणो जाणी जे तिहां । स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि । पाहण तणी उद्घटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ । अमृत जल नीरसरसी कूओ । खाराकूआ तणो इह सैनांण । भूमि पड्यो छै नीलो बाण ॥ ३० ॥ सिद्धावटो सीरोही वसै । कोढपराभवियो किसमिसै । तिहां थकी तूं इहां आण जे । सत्यवचन मा हरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो । सिद्धावटैनें सुहणो दियो । रोगगमीनें पूरुं आस । पाश तणो मंझे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो तेवैण । हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुवा । सिद्धावटैने गया तेमवा ॥ ३३ ॥ सिद्धा वटो आवै सूरमो । जीमें खीरखांम घृत चूरमो । घमै घाट करै कोरणी । लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली । नाटक कौतिक करती रली । रंग मंझप रलियामणो रसै । जोतां मानवनों मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद । स्वर्गसमो मंझे आवास । दिवश विचारी इंमो घड्यो । ततखिण देवल ऊपर चड्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेलावास । पद्मासण बैठा श्रीपास । महिमा मोटी मेरुसमान । एकल मिल वगमे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं सांभली । तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरीया अढै । यात्र करीनें परनें पढै ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ विघन विमारण यक्ष जगि । तेहनो अकल सरूप । प्रीत करै श्रीसंघसें । देखामै निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौमी पाशजिन । आपै अरथभंमार । सानिध करे श्रीसंघनें । आस्या पूरण हार ॥ ४० ॥ नील पलाणें नीलहय । नीलो थइ असवार । मारग चूका

मानवी। बाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ वरण अढार तणो लहै भोग। विघन निवारै टालै रोग। पवित्र थई समरै जे जाप। टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ घरि धननो सूत। आपै अपुत्री यानें पुत्र। कायरनें सूरापण धरै। पार उतारै लब्धी वरै ॥ ४३ ॥ दो भागीनें दै सोभाग। पग विहूणानें आपै पग। ठाम नहीं तेहनें ठैठाम। मन बंछित पूरै अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधारयानें दे आधार। भवसायर उतारै पार। आरतीयानी आरत भंग। धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां साद दीयै यक्ष राज। तेहना मोटा अढे दिवाज। बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास। गूंगानें दै वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियानें सुखनो दातार। भय भंजण रंजण अवतार। बंधन तूटै वेरी तणा। श्री पार्श्वनाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपै। विश्वानर विकराल। हस्त यूथ दूरैटलै। दुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा भयचूक वै। विष अमृत नमुकार। विषधरनो विष उतरै। संग्रामें जय जय कार ॥४९॥ रोग सोग दालिद्र दुख। दोहग दूर पुलाय। परमेशर श्री पाशनो। महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ❀ ॥ (कमखानी चाल) २ ॥ ❀ ॥ नंजितुं नंजितुं नंज नपशम धरी। उँ ह्रीँ श्रीँ श्रीपार्श्व अक्षर जपंतै ॥ भूतनें प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा नपसमै। वार इकवीश गुणंतै ॥ ५१ ॥ (नं०) दुष्टरा रोग सोगा जरा जंतनें। ताव एकांतरा दुत्तपंतै। गर्भबंधन व्रणं सर्प विछु विषं। चालिका बालमेवा झखंतै ॥५२॥ (नं०) साइणी माइणी रोहणी रंकणी। छोटका मोटका दोषहुंतें। दाढ नंदरतणी कोल नोला तणी। स्वान सीयाल विकराजदंते ॥ ५३ ॥ (नं०) धरणेंद्र पदमावती समरसोभावती। वाट आघाट अटवी अटंते। लखमी लोडुं मिलै सुजश वेलावलै। सयल आस्या फलै मन हसंते ॥ ५४ ॥ (नं०) अष्ट महाभय हरै कान पीराट ले। उतरै सूल सीसगभणंते। वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू। श्रीपार्श्व जिन नाम अभिराम मंतै ॥ ५५ ॥ (नंजितुं) ॥ ❀ ॥ इति श्रीगोमी पार्श्वनाथजी वृहत्स्तवन सं० ॥ ❀ ॥ इति पोषमाश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ माघ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माघ महिनेंमें, मिती माघ वदि १३ (सो) मेरु तेरस नाम सें पर्व प्रसिद्ध है । (इस दिन) श्रीऋषन्न देव स्वामीको निर्वाण कल्याणक है। (इसीसें) नगवंत महाराज इसदिनकों उत्तम कहा है । (इस दिन) चौविहार उपवास करै । रत्नामई, पांचमेरू नगवानके आगे चढावै। बीचमें १ बमो मेरू। च्यारुं दिश छोटामेरू । (ऐसें) पांच मेरू चढावै। ऐसी शक्ती न होय (तो) सोनेंके । चांदीके (वा) घृतके। मेरू करके चढावै । आगै चारुं दिश तरफ चार चार नंद्यावर्त्त करै । अष्टप्रकारी सत्तर नेदी । पूजा पढायके । अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ❀ ॥ पीछे ॥ १ ॥ श्रीऋषन्नदेव स्वामी पारंगताय नमः) ॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करै। और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै (तो) पूजादिक सब बिधि पारणेंके दिन करै । अतिथि संविन्नाग करके पारणो करै । इसी विध संयुक्त १३ तेरै बरश (अथवा) १३ तेरै माश तपस्या करै । पीछे शक्ति माफक बहुत उछवसें उद्यापन करै । तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी बछल (करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहें ॥ (जैसें) अयोध्या नगरीमें । अनन्तवीर्य राजाको पुत्र । पिंगल राय कुमर । गांगिल मुनीके पास । इस पर्वका अधिकार सुनके । तपस्या करी । तपस्याके करनेंसे । सर्व रोग दूर हुये। तपस्या पूर्ण होनेसें । तेरै १३ मंदर बनवाया । १३ तेरै रत्नां मई । सुवर्ण मई। रूपै मई । प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ बेर संघ सहित तीर्थों की यात्रा करी । तेरै बेर साहमी बछल किया । बहुत प्रकारसें ज्ञान नक्ति करी । अंतमें महसेन कुमरको राज्य देकै । श्रीसुव्रताचार्य समीपै दिक्षाग्रहण करी । अनुक्रमें चवदै पूर्वकों पढके । सर्व कर्मकों क्षय करके । अनंत सुखकों प्राप्त हुवा । इसी का बिस्तार संबन्ध । मेरु तेरशका बखाण सुणनेंसें मालुम होगा । जो नव्य जीव इस पर्वकों बिधि संयुक्त सेवन करैगा । (सो) इस नवमें परनवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा ॥ ❀ ॥ इति माघ माश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फाल्गुन माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फाल्गुन महिनेंमें, मिती फाल्गुन सुद १४ (सो) तीसरै चौमाशै की चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिनको (सर्व कर्त्तव्य) आषाढ चौमाशे तुल्य करै। सो पूर्वे लिख्यो है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां विशेष होलीको अधिकार लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रमण भगवंत श्रीमहाबीर स्वामी । बारै माशमें, ६ छमोटका पर्व कहा। ३ तीन चौमाशा। २ दो ओली। १ पर्यूषणा। एवं ६। (जिसमें) २ ओली। १ पर्यूषणा। यह ३ पर्वका अठाई महोछवतो सर्व ठिकाणें भव्य जीव करतेहें। और कार्त्तिक चौमाशैका छछव प्रायें बहुत ठिकाणें होता है। (परंतु) कलकत्तै जैसा महोछव कोई ठिकाणें देखा नहीं। (और) फाल्गुन चौमाशैका छछव मुर्शिदावादमें अछा होता है। पर कोई महोछव में आज्ञा बिरुछ जो काम होय (सो) प्रशंसनीक नहीं । एकतो भगवंतके समोसरणके साथ । आज कालके । अमीर लोक। धूपकै मरसें, खेह के मरसें । आपतो जाते नहीं (निकवेज) असमझ पुरुषाकों भेज देतेहें । पीछे बे पुरुष मदोन्मत्त हुए थके। कूदतां, नाचतां, भागतां, । समवसरणकों उछाला देते लेजाते हैं। (उसमें) जितनी आशातना होतीहै। जितना कर्मबंधता हैं । उसका भागी हम नहीं ॥ भगवंत को धर्म, विनय मूल १ । दया मूल २। चारित्र मूल ३ है । (इसमें) धन्य है जिसके माता, पिता, (सो) बिनय बिबेक संयुक्त शुछभावसें। सर्व धर्मकार्य करके धर्मको उद्योत करैहै। उसी पुरुषांकों नमस्कार है। उसी महोछवकी प्रशंसना है । (इसीसें) आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष है (सोतो) शेशका चौमाशा पर्व जानके । सर्व ठिकाणें। भगवंतके धर्मको उद्योत करते थके। शुभ ध्यानरूप अग्नीसें (अष्टकर्म) रूपी काष्टकों जलाके होली करते हैं। (पीछें) सुबोध जलसें स्नानकरके अत्यन्त सुन्दरता कों प्राप्त होते हैं ॥ अब द्रव्यै, भावै, दो प्रकारसें, होलीका अधिकार कहणें की इछायें (प्रथम) द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इस फाल्गुण माशमें, चौदश पूर्णमाशी के दिन (कई) अज्ञानी जीव,

बिबेकसें, श्री जिनधर्मसें, विकल हुए थके । नींच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके । लकरू छाणादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलिका करै है। महा उत्तम चौमासै पर्व्वका बिराधन करै है। (दूशरे दिन) मलमुत्रा दिकसें क्रीमा करै है । खोटा बचन बोलै है। रासन माथे चढै है। अनेक जीवांकों दुःख उत्पादन करै है। (ऐसे जीव) शुद्ध बीतराग देवकी आग्याओ मके। आंम अरमा के कुल परंपराकों प्राप्त होते है। मिष्टान्न भोजनका खा णा छोमके। बिष्टाको भोजन करते हैं । दूधका पीणा छोमके। जानते थके पिसाब पीते हैं। (ऐसे पुरुष) निकेवल कर्मोंके बंध सघन करके। नीच ग तिकों उपार्जन करते हैं । अनर्थदंमसें अनन्त भव संसारकी स्थिति बां धते हैं। (इस वास्ते) आत्मार्थी भव्यजीवांकों । इस माफक । द्रव्य हो ली करनी उचित नहिं। (निकेवल) भाव होली करनी उचित है ॥ बसं तके स्तवन बोलै । रात्री जागर्ण करावै । भगवानके मंदरमें पूजा करावै। महोछव निकालै । नाना प्रकारके नाटक करै । साहमी वछल करै। सा धर्मी भाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीमा करै। (आगै) राजा लोक भी, बसंत ऋतु आनेसें सज्जन संबंधी साथ। नाना प्रकारके । जल । चं दन। केशर। अबीर। गुलाल । इत्यादिकसें क्रीडाकरी (सोतो) फेरभी शास्त्रोंमें देखते हैं। (परंतु) यह मल मुत्रादिकसें खेलना। होली जलानी। पादत्राण खाणा । भंम चेष्टा करनी । अपनें धर्मकी मर्यादा। अपनें कु लकी मर्यादा । सर्व छोमके। भांड भरमाके गोदी बैठना। भांम भरमा के कुलकी मर्यादा करनी। ऐसी क्रीमा उत्तम पुरुषोंकै (और) जिनधर्म वा ले भव्य जीवोंके । कोई ठिकाणें करनी कही नहीं। यह क्रीमा निकेव ल महामिथ्यात्वी नींच पुरषोंने चलाई ही। उसी पुरुषोंके देखादेख प्रायें अज्ञानी जीव, सबकोई करनेंकों लग गए। (देखो बडा आश्चर्य है)। जब मंदरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता है। उस बखत बहुत कों फुरसत न होती है। (और जो केइ आते है)। उनोंकों स्त्रिया होनेंमें । अगाडी नाटक करनें में । बडी लज्जा मालुम होती है । (और होलीके दिन) माता, पिता, भाई बैन, सर्वकी लज्जा छोमके। बहुत

दिलमें खुसी होके । पागलके माफक। उपानत खाते फिरते है। मन आवै ज्युं बोलतेहें । कोई वेश्यादिक का नाटक करायकै हजारुं बगशीस कर देते हें । मनमें जानें, हमनें बडा नांम किया। पर अहो नाइयो। इसमें तुमारा कुछ नाम नहीं है। निकेवल महा अशुभ कर्म पैदा होता है। तुमारा कल्याण जबई होगा। ऐसी उमंगसें सर्व की लज्जा गेरुके । भगवानका उछव करो । रात्री जागर्ण करो। नाटक करो । धर्मका उद्यो त करो। (इसी तरै) होली खेलो (सो) तुमारा इह भव बी सुधेरंगे। परभवबी सुधरेंगे। (यह) द्रव्यै, भावै, दोंनुं होलीका, यथावस्थित स्वरूप लिखा है। इसकों आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरष तो देख करकै प्रसन्न होंगे । यह खोटे मारग कों बंध करनें की प्ररूपणा रक्खेंगे। (और जो) महामूर्ख अज्ञानी जीव होंगे (सो) अपनें खेलनेंके वास्ते। सच्ची बातकोंभी कुयु क्ती लगायके झुठ ठहरावेंगे। महारोस धारण करेंगे । (जैसें) कोइके पिताकों गाली देनेंसें रोस उत्पन्न होय (इसी तरै) यह भंम चेष्टा की निंदना देखकै महारोस धारण करेंगे । (और जो) मध्यस्थ जीव होंगे (सो) ऐसा बोलेंगे। यह बात सच्च है। किसका पर्व्वहै । किसका खेलना है। निकेवल इसमें अनर्थ दंम लगता है। (परंतु) हम इकेला क्या करें। सर्व भाई बंधकों खेलते देखकै। हमसें रहा जाता नही । इससें खेलते हें। (पर) यह पृथा बंध होयतो अछीहै । (इसीसें) अहो देवानुप्रियो सर्व ठिकाणें यह नीच खेलकों गेरुके। उत्तम खेल खेलनेंकी प्रवर्त्तना क रो। जिससें तुमारा तप तेज सदा बढता रहै । सदा आनन्द रहै । यह बारै माश के सर्व कर्त्तव्य। मेंनें अपनी बुद्धिसें न लिखा है । (किंतु) प्रा चीन आचार्योंके व्याख्यानकी पद्धति देखके । सर्व बालजनके उपगारार्थे संक्षिप्तसें शुद्ध भाषामें प्रगट किये हें (इसमें) आगम विरुद्ध उछो अधको क हनेंमें आयो होय (तो) त्रिकरण सुद्ध मिछामि दुक्कम देताहुं। (और) नीं च कर्मके बंध गेरानेंकों । कठोर बचनभी बोला है (सो) बाचकै। गु णकों ग्रहण करना। परंतु रोस धारण न करना । मेरै तो शुद्ध नवकार मंत्र गुणनें वाले है (सो) सर्व परम मित्र है। सर्वके तप तेज बढते देख

कै, मेरा चित्तमें परम आनंद होता है । (और) त्रिकरण शुद्धै सर्व जीवा जोनिसें वेर वेर खमाता हुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमिय खमाविय में खमिय । सव्वह जीव निकाय । सिव्वह साख आलोयण । मज्झह वैर नभाय ॥ १ ॥ सवे जीवा कम्मवसु । चवदह राज भमंत । तेमें सव्व खमाविआ । मज्झवितेह खमंतु॥इति फाल्गुन मा०॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ भाव होली खेलनके स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ (रागधमाल) होरी खेलियै नरबहुरन ऐसोदाव । (हो०) दयामिठाई अति भलीरे । तप मेवा परधान । सील अथाणो अति भलो (वारी) संयम नागर पान । (हो०) ॥ १ ॥ लेस्या मादल भाव मुफरे क्रोध मान दोय ताल । पांच सुमतिको अरगजो (वारी) नवतत्व लेहु गुलाल । (हो०) ॥ २ ॥ सुमता केसर घोलीयैरे । दमवाको छिरकाव । ग्यांन पिचरको पकरकै (वारी) । मुगति वधू चितलाय । (हो०) ॥ ३ ॥ ऐसा साज वनायकैरे । रुषभदेव गुण गाय । श्री जिनचंद इम खेलतां (वारी) भव भव पातिक जाय । (हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत होरी ताल्यत ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय बोलोरे पाश जिनेशरकी ॥ (ज०) ॥ मस्तक मुगुटसोहै मनमोहन । अंगीया सोहै केशरकी । (जै०) ॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंमित तनकी । स्याम घटा जैसी जलधरकी ॥ (ज०) ॥ २ ॥ बालपणेंमें अद्भुत ग्यानसुं । करुणा कीधी विषधरकी ॥ (ज०) ॥ ३ ॥ कमठ उपाय वायज्युं वादल । जीतकरी अपनें घरकी ॥ (ज०) ॥ ४ ॥ मात वामा भयरे जिनजायो । राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ (ज०) ॥ ५ ॥ अष्ट कर्म दल सबल खपाए । श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ (ज०) ॥ ६ ॥ कहै जिन चंद मेरे प्रभुपारस । जैसी छाया सुरतरु की ॥ (ज०) ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मधुवनमें जाय मची होरी ॥ (म०) ॥ ग्यान गुलाल अबीर उडावो । सुमता केशर रंगघोली ॥ (म०) ॥ १ ॥ अमृत रूप धरम जिन वरको । सुछक्षमा कहै करजोडी ॥ (म०) ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसंत होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यादव मनमेरो हरलीयोरे ॥ (या०) ॥ संजम दूती कान लगी जब । शिवनारीपर चित्त दीयोरे ॥ (या०) ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चले हो । नवभव नेह अलग कीयोरे ॥ (या०) ॥ २ ॥ मोह ढोरु गिरनार सिधाए । नेमि जिणंदनें कहा कीयोरे ॥ (या०) ॥ ३ ॥ तुमहो तीन भुवनके साहिब । सुरनर कहै तुमे चिरंजीयोरे ॥ (या०) ॥ ४ ॥ वारवार मेरी वंदना हुयज्यो । चंद कहै मन हरखीयोरे ॥ (या०) ॥५॥ इतिपदं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इक सुणलै नाथ अरज मेरी (इ०) ॥ १ ॥ इह संसार गहर तर सिंधु । भमर पमत जिहां भवफेरी (इ०) ॥ २ ॥ क्रोधादिक बहु मगर मछ है । ग्रहत जंतु नकरत देरी ॥ (इ०) ॥ ३ ॥ ऐसे जलधिसें पार करो तो । तारण तरण विरुदतेरी ॥ (इ०) ॥ ४ ॥ धरम जिनेसर जग परमेशर । दूरकरो दुखकी बेरी ॥ (इ०) ॥ ५ ॥ परम क्षमागुण दायक लायक । अनुपम कीरति जगतेरी ॥ (इ०) ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवरो सुखदाई । जाकी छवि वरणि न जाई । (आंकणी) । श्री अश्वसेन वामानन्दनकी । कीरति त्रिभुवन छाई । समेत सिखर गिर मंण्डन प्रभुको । देख दरश हरखाई । हृदय मेरो अति हुलसाई (सांव०) ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । आज आनन्द बधाई । तीन भुवन को नायक निरख्यो । प्रगटी पूर्व पुण्याई । सफल मेरो जनम कहाई ॥ (सांव०) ॥ २ ॥ प्रभुके सरस दरश विन पाये । भव भव भटक्योमें भाई अब तेरो चरण शरण चित चाहत । बाल कहै गुण गाई । प्रभुजीसें लगन लगाई (सां०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः रागिणी बसन्त ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेंना हरखाइ । आज तेरी मूरत निरखी ॥ (नें०) ॥ भवभव संचित पाप करम सब । देखत दूर पुलाई । सुमति वधारण कुमति विना

रण। ज्ञान बिमल उलसाइ ॥ (आज०) ॥ १ ॥ बामानन्दन अतिछवि सुन्दर । महिमा वरणी नजाई। दीन दयाल दयाकर दीजै । आनन्द हरख सवाई ॥ आ० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी । आज चली गिरनार कामिनी ॥ (म०) (आंकणी) ॥ सुंदर रूप बनाय सखी सब । सिखरसेल जेसें चमके दामनी ॥ (म०) ॥ १ ॥ नेम प्रभुको व्याह मनायो । मोसें प्रीति लगाइ नामनी ॥ (म०) ॥ तोरण आय चले मोह छोरी । कौन चूक मोपे काढी नामनी ॥ (म०) ॥ २ ॥ मेंन तजुंगी नव नव कैरी । प्रीत बनी जैसी इंदु दामनी ॥ (म०) ॥ ३ ॥ राजुल पहली प्रीतम सेती । वा लकहै नई सुगति गामनी ॥ (म०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान । होरी चेतन खेलै । (रंग०) शील सुरंगी चीरमंगाये । पहिरे आप सुजान ॥ (हो०) ॥ पर मन्दिर तज अविचल लीजै । धर्म दया धर ध्यान ॥ (हो०) ॥ हिल मिल आप परमरस चाखे सुमति सखी पहिचान ॥ (हो०) ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे । सोहै अद्भुत वान ॥ (हो०) ॥ सुमति अबीर उडाय जगतमें । बैठे शिव पुर थान (हो०) अनुभव राग मगन गुण गावै । तप जप सुन्दर तान (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै । बंछित पावै दान (हो०) इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी (ताल यत्) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिदानन्द खेलै फाग । हो हो होरी आई ॥ मन मृदङ्ग बजे त न मांहि । गावत आगम राग (हो०) ॥ ज्ञान गुलाल सदा रङ्ग लागे खेलत सुनत सुहाग (हो०) समकित केशर चीर रङ्गावै । पहिरो मन वैराग (हो०) ॥ लाख चौराशी रामत छांमी । च्यारूं गतिसें भाग (हो०) अविचल सुख पंचम गति पावै । योग यतन कर जाग ॥ (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै । पावै भव दधि पार (हो०) चेतनता सुध होय जगत में । समकित के रङ्गभाग (हो०) ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पुनः होरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी आई, मेरो मन भयो, प्रसन्न प्रसन्न भयो, प्रसन्न न न न हे (हो०) ब्रज बनिता मिल नेम कुमर सङ्ग । फाग रमत हियै हसन हसन हसननन ननहे (हो०) ॥ १ ॥ बाजे तेताल मृदंग झांझ झफ । बीणा की धुनि जिम मेघ गरजन गरजन गरजन नन नहे (हो० ॥ २ ॥ उमत गुलाल लाल भए बादल । हरि हलधर हीये हरखन हरखन हरखन ननन्हे (हो०) ॥ ३ ॥ सबल आधार चरण जिनजीको । सेवक कों नित दीजीयै दरशन दरशन दरशन न न नहे (हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पुनः होरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी खेलो नेमसें धाय धाय । पुरजनकी लाज मेरी करै बलाय (हो०) ज्ञान गुलाल अबीर उमावो । क्षमा करो रङ्ग लाय लाय (पु० हो०) ॥ १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरूङ्गीमें गाय गाय (पु० हो०) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह उमावो । ज्ञान हि येमें लाय लाय (पु० हो०) ॥ ३ ॥ जगत चन्दकी अरज बीनती । शरण गहीमें तेरी भाय २ (पु० हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरै घटकी गगरया रङ्गसें भरी । शिव पुरकी वात पूछुं कबकी खरी । (मे०) परम जोत प्रभु सिद्ध सिला पर । परमातम निज ध्यान धरी । (शि०) ॥ १ ॥ मोहन रङ्गभरो रंग शिवपुर । अजर अमर पद सुक्खकरी (शि० मे०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ में नें देखी अनोखी होरीरे (में०) सहसा वनकी कुंजगलिन में । अनुपम सोर मच्यो री (अ०) ॥ १ ॥ यादवपति श्रीनेमकुमरजी । सुमतासखी मिल गौरी (अ०) ॥ २ ॥ सुमता केशर भर पिचकारी । मारत है बर जोरी ॥ (अ०) ॥ ३ ॥ ज्ञानगुलाल उमै अतिभारी । अबीर उमै भरझोरी । (अ०) ॥ ४ ॥ कपूर कहै प्रभु मोकुं खेलावो । अरज सुणो इक मोरी (अ०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसुणलै नाथ अरज मेरी इस चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमे ध्यावोरे अंतरीक पारसकुं ॥ तु० ॥ अंतरीक प्रभुके ध्यावणसें दूरकरे दुख दालिद्रकुं ॥ तु० ॥ अस्वसेन कुलमें चिंतामणि । जिमरवि ऊगो सरदऋतुकुं ॥ तु० ॥ १ ॥ बांमाउर अवतार लियोहै । भव्यजीवनें तारणकुं ॥ तु० ॥ नील वरण तनज्योति अखंडित । लंछन अहि सुखकारणकुं ॥ तु० ॥ ॥ २ ॥ दक्षिणदिशमें सिरपुर नगरे । जिहां भेट्या जिनराजकुं ॥ तु० ॥ पार्श्वप्रभुको दरशण पायो । दूर हुआ भव भटकणसुं ॥ तु० ॥ ३ ॥ प्रगट प्रभूको अतिशय पेख्यो । अधर रहत भूमि ऊपरकुं ॥ तु० ॥ कपूर कस्तूरी केशर चंदन । अष्टद्रव्य लेके पूजनकुं ॥ तु० ॥ ४ ॥ अष्टकरम शत्रूकुं जीपके । जायचढ्या राजशिवपुरकुं ॥ तु० ॥ दूधेड्या गोत्र उत्तम बुधसिंहपति । विशनचंद हितकारणकुं ॥तु० ॥५॥ भगणीसै गुणतीसै फागुण । यात्राकरी सुद तेरशकुं ॥ तु० ॥ श्री अजेराज ग्यानकुं चाहे । मुक्ति कमल इछा पूरणकुं ॥ तु० ॥ ६ ॥ इति श्रीअंतरीक पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बाबो रुषभ बेठे अलवेले । मारो गुलाल मुठी भरके । बाबो० ॥ मुठी भरके पसली भरके ॥ बाबो० ॥ चुआ चुआ चंदन और अरगजा । केशरकी मटकी भरके ॥ बाबो० ॥ १ ॥ रतन जडित शिर छत्र बिराजे । अंगी जमाव जमी जरके ॥ बाबो० ॥ २ ॥ बाहें बाजूबंध बहिरखा बिराजे । फूलनके गजरे सरके ॥ बाबो० ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन । रमियें भवि आदेशरसें ॥ बाबो० ॥ आदिखान है दास तुमारो । तार लीओ अपनो करकें ॥ बाबो० ४ ॥ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमन जाणें मोरी पीर । पीर पर रर रर रर । नेमन जाणें० ॥ तोरणथी रथ फेरवी चाल्या । दाझ्यो हैयमा केरो हीर । हीर अर रर रर रर ॥ नेम० ॥ १ ॥ चंदबदनी मृग लोयणीरे । प्रेमनो मारयो मुनें तीर । तीर तर रररररर ॥ नेम० ॥ २ ॥ आंशुमां झरती धरणी ढलीरे । जाणे आशाढो

नीर । नीर झरररररर ॥ नेम० ॥ ३ ॥ शिवराज कहे नेम राजुलेंरे । कर्म रूपीआं फाड्या चीर । चीर चररररररर ॥ नेम० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गिरिराजकूं हमारी वंदनारे । जिनराजकूं हमारी वंदनारे ॥ भव दुःख वारण शिवसुख कारण । देखत भव नहीं फंदनारे ॥ गिरि० ॥ ॥ १ ॥ नाभिराया मरु देवीको नंदन । प्रणमुं रुषभ जिनंदनारे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो । जिम चातक दिल चंदनारे ॥ ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ चतुर कुशल कहे शरण तुमारो । सिद्धगिरि कर्मनिकंदनारे ॥ गिरि० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः राग होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दरशन कीयो आज सिखरगिरिको ॥ दर० ॥ देख्यो मधु बन शीता नालो । ताको नीर वहेंडे अति नीको ॥ द० ॥ १ ॥ वीश को शथी दरशन दीठो । भागो भरम सकल जियको ॥ द० ॥ २ ॥ वीशे टुंकें वीश गोमटमी । तामें चरण जिनेसरको ॥ द० ॥ ३ ॥ अब जिनवरके शरणें आयो । रसतो पायो मुगति पदको ॥ द० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्ध गिरि जीको दरशन करले ॥ संघ यात्रा । संघयात्रा करनेंसें पाप कटत है । सिद्ध० ॥ (आंकणी) कोटि अनंता इन गिरि सिद्धा । ताकुं शीश नमय ले ॥ संघ० ॥ ॥ १ ॥ रिखभ जिनेश्वरजीको दरशन । शुद्ध आतम पावन करले ॥ संघ० ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । भव भवका दुःखहरले ॥ संघ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो चेतन खेले होरीरे । अैसी होरी । आज बरजोर रही ॥ मेरो० ॥ मन कर मोज प्रेमकर पाणी । करुणा केशर घोरी ॥ अैसी० ॥ १ ॥ दया मिठाई तप बहु मेवा । समरस विमल कटोरी ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ गुरुके बचन वारी मृदंग वजतहे । दे फफ ज्ञान कटोरी ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ दान कहे सुमता सखीयनसें । चरण रहो जुग जुग जोरी ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंतानंत प्रभुजीनी वाणी । आशातना तजेरे प्राणी ॥ अनंता० ॥ श्री शीतल जिन शीतल वचनें । भाव दया चित्त आणी अनंता० ॥ १ ॥ जे जीव देव द्रव्यनें खावे । थई लोभ वशे अज्ञाणी ॥ अनंता० ॥ २ ॥ सागर शेठ परें दुःख पामी । थई नारकीयें शुं प्राणी ॥ अनंता० ॥ ३ ॥ देवद्रव्य जे विधि ए वधारे । ते जिन थइ वरे शिवराणी ॥ अनंता० ॥४॥ धर्मचंदकर जोडी रागें । तारजो केवल नाणी ॥ अनंता०॥५॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे ॥ मेरे साहेब । मेरे साहेब । आदि जिणंद चंद ॥ मोहे० ॥ (आंकणी) ॥ रंग तुंही रंग रेज तुंही है । संजम रंग मोहे रंगदे ॥ मोहे० ॥ १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादि को । सो अब इनकुं खिनदे ॥ मो० ॥ २ ॥ रत्नत्रयी रुद्धि तेरीमें देखी । सो अब मुजकुं सुझदे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे । वाबिच केवल धरदे ॥ मोहे० ॥ ४ ॥ कहत बूधरदास समकित पावे । आप समाना करदे ॥ मोहे० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे पाश प्रभुजीके रंग मंरुप मांहे । खेलत संत वशंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा । विनय अबीर विलसंत ॥ मेरे० ॥ १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी छूटत । समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फूलवाडी । मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अंग आभूषण पंचेंद्रिय वश । गुरु सेवा सलहंत ॥ चार भावना गहेर कसुंबा । पीवत मन हरखंत ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ अद्भुत पंचमहाव्रत वागा । पहिरे तन शोहंत ॥ कहे जिन चंद्र प्रभुकी कृपासें । निरखे नवल वशंत ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग मच्यो जिन द्वार ॥ चालो खेली ए होरी ॥ पाशजीके दरबारे ॥ चालो० ॥ फागुनके दिनचार ॥ चालो० ॥ रंग० ॥ (आंकणी) ॥ कनक कचोली केशर घोली । पूजो विविध प्रकारे ॥ चालो० ॥ १ ॥

कृष्णागरुको धूप घटत हे । परिमल महके अपारेरे ॥ चालो० ॥ २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत । पाशजीके दरबारेरे ॥ चा० ॥ ३ ॥ भर पिचकारी गुलालकी छिरको । वामा देवी कुमारेरे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग वीण रुफ बाजे । भेरी नुंगल रण कारेरे ॥ चालो० ॥ ५ ॥ सब सखीयन मिल नाटक करके । गावत मंगल सारेरे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावे । मुख बोले जयकारेरे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमजीसें कहीयो मोरी । शामरेसें कहीयो मोरी । तोरण आए कोनें भर माए । गोरु चले अभिमानी ॥ अरे लाला ॥ गोरु चले० ॥ पशुवन के शिर दोष चढायो । तोरी प्रीत पुरानी ॥ दयादिलमें नही आनी ॥ (शामरेसें०) ॥ १ ॥ चूक पडी सो मुहसें कहीयो । ऐसी ना करी ए शोधानी ॥ अरे० ॥ आठ भवोंकी प्रीत बंधाणी । नवमे चले क्युं जानी ॥ शाम तेरी सुरत पिछानी (शामरेसें०) ॥ २ ॥ या जोरी जुगमें पूर नेह लागी, राजुल गुलकी बानी ॥ अरि०॥ बीनति सुन अमर पद दीजो रंग विजय सुखदानी ॥ आवा गमन छिदानी (शामरेसें०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महाराज तोरे मंदिरमे बरसे रंग । हांरे हो । श्री चिंतामणि पाश प्रभुजी (तोरे मंदिरमें०) ॥टेक॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा । सुमता नीर सुचंग (हांरे हो०) ॥ १ ॥ अनुभव लहर फूली फूलवाडी । दिन दिन चढते रंग (हांरे हो०) ॥ २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम । शुकल ध्यानके संग (हांरे हो०) ॥ ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित्त धर । तुजशुं अविहड रंग (हांरे हो०) ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरी अंगीयां बनी है सुरंग । (हां रे हो) श्री चिंतामणिपाश ॥ प्रभुजी तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आए । आणी भाव अभंग ॥ हांरे हो श्री० ॥ ग्रह बंधीकी भांत भली है । बुंटीया नव नव रंग ॥ हांरे हो श्री चिं० ॥ १ ॥ जरकस जामो खूब बन्यो है । कोर केवडा संग ॥ हांरे हो

श्री चिं० ॥ मस्तक मुकुट कानें दोय कुंडल । बाजूबंद सुचंग ॥ हांरे हो श्री चिं० ॥ २ ॥ फूलनकी गलमाल सोभत है । सौरंग वास सुगंध ॥ हांरे हो श्री चिं० ॥ त्रिभुवन साहब तखत बिराजे । महिरवान मन रंग ॥ हांरे हो श्रीचिं० ॥ ३ ॥ सुर नर याकी सेवा करत है । रात दिवश धर रंग ॥ हांरे हो श्री चिं० ॥ सुनिजर है साहेबकी सबपर । संघ है सकल सुरंग ॥ हांरे हो श्री चिं०॥ भावना भावो जिन गुण गावो । अमर घणें उछरंग ॥ हांरे हो श्री चिं० ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पुनःहोरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामणि चित्त ध्यावो रे । वंछित फल पावो ॥ सकल भविक जन मिलकर आवो । राग फाग गुण गावोरे ॥ वंछित० ॥१॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो । भर भर मुठीया उमावोरे ॥ वं०॥ कुंकुम केशरकुं छिरका वो । भाव शुक्ल जल भावोरे ॥ वं० ॥ २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वं० ॥ दरस सरस करकें सुख पावो । पुण्य भंडार भरावोरे ॥ वं० ॥ ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो । नृत्य संगीत नचावो रे ॥वं० ॥ अमर सिंधुर आनंद बधावो । जिनजीसें लय लावोरे ॥ वं० ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत मारो पिचकारी रे । मेंतो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग बजत मन मांहि । गावत आगम राग ॥ लाल मेंतो सगरी भीज गई ॥ मत० ॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागो । खेलत सुमति सोहाग ॥ पीया मेंतो सगरी भीज गई ॥ २ ॥ समकित केशर चीर रंगाऊं । पहिरुं मन वैराग ॥ लाल मेंतो० ॥ ३ ॥ लख चौराशी रामत छोडुं । चारों गति सो हाग ॥ पिया मेंतो० ॥ ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी । शिव सुंदरी व रमांग । लाल मेंतो० ॥ ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारें । इण विध खेले फाग ॥ लाल मेंतो० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे तुंतो जिन भज विलंब न कर हो । होरीके खेलइया ॥ हां० ॥ (आंकणी) ॥ समता लहेर संयममां झीली । ममता लहेर परिहर

हो ॥ हो० ॥ १ ॥ विनय संभारीमें नारि पिचकारी । हांरे तुंतो, शिवरमणीकुं वरहो ॥ हो० ॥ ज्ञान गुलाल नरी तिहां जोरी । हांरे तुंतो, खेल वसंत वर घर हो ॥ हो० ॥ २ ॥ शील सुगंध आभूषण अंगे । हांरे तुंतो, आतम अनुभव वर हो ॥ हो० ॥ ज्ञान विज्ञान फूली फूल वारी । हांरे तुंतो, गुंजत मनमधुकर हो ॥ हो० ॥ ३ ॥ वामानंदन पाश जिनेसर । हांरे तुंतो, जगनायक जग गुरहो ॥ हो० ॥ श्रीजिनलाभ कहे प्रभु संगे । हांरे तुंतो, समतारस अनुसर हो ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम मिलेतो बातां कीजीये ॥ होप्यारे ॥ नेम मि० ॥ टेक ॥ मेंहुं तुमारी खिजमतगारी । प्रेमका प्याला पीजीए ॥ हो० ॥ ने० ॥ १ ॥ हम है केतकी तुम हो भमरा । फिर फिर वासना लीजीयें ॥ हो० ॥ ने० ॥ २ ॥ मेंहुं धरती तुम हो मेहुला । कबहुं तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ॥ ने० ॥ ३ ॥ नेम राजुल मिल मुक्ति सिधाए । रूपचंद पद दीजीये ॥ हो० ॥ ने० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आतमतत्व विचारो ज्ञानसें । करम कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० (आंकणी) ॥ पुद्गल जीव सरूप पिछान्यो । ममता मिट गइ सारी जानसें ॥ कर्म कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥१॥ क्रोधादिक अरी अंधकार सम, नाश भयो सब ज्ञान भानसें ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम पद पावत सोई । विनय भजत पद अचल थानसें ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी ॥ एतो उपशम रसकी कयारी ॥ लाल० ॥ (आंकणी) ॥ कामक्रोधादिक दोष रहित हे । नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिंयामें । दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥ १ ॥ ओरनयनमें काम क्रोध हे । बहुत भरी हे खुमारी ॥ परधन देख हरनकी इछा । यामें हे हुशियारी ॥ लाल० ॥ २ ॥ ऐसा लछन हे नयनोमें । क्युं पामे भव पारी ॥ ओही बिचार करो दिल अपनें । होत कर्मसें भारी ॥

लाल० ॥ ३ ॥ धर्म बिना कोई सरनां नहिं हे । एसो निश्चे धारी ॥ विनय कहे प्रभु भजन करो नित । ओही तारन हारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शन बिन जीव संसार भम्यो ॥ दर्शन० ॥ चोराशी लख योनी भटकत । लहि मानव भव युंहि गम्यो ॥ द० ॥ १ ॥ पुन्यउदय श्रावक कुल पायो । घटमें ज्ञान उद्योग भयो ॥ द० ॥ २ ॥ माया ममता में निशदिन तुं । विषय विकारथुं नहिं विरम्यो ॥ द० ॥ ३ ॥ सार विवेक तुं धार रे चेतन । भटकत भ्रममें क्युं भटक्यो ॥ द० ॥ ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर । भज भगवंत तेरो पापशम्यो ॥ द० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत जोको ह्यांनें युंहीरे । कोई चूक बतावो ॥ मत० ॥ अबीर गुलाल भाव सब रमतां । हमथुं कदेय न खेलोरे ॥ को० ॥ १ ॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये । चढिया जे गिरनारी रे ॥ को० ॥ २ ॥ बहुत हठाथुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० ॥ ३ ॥ राजुल ऊभी अरज करत हे । एक वार फिर जोवोरे ॥ को० ॥ ४ ॥ नेमि राजुल मिल मुक्ति सिधाए । पहेली राजुल नारीरे ॥ को० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अटक्यो चित्त हमारो री । जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब । जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० ॥ १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन जनम भद्दिलपुर । कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० ॥ ३ ॥ नेवु धनुष शरीर सुशोभित । कनक वरण अनुकारोरी ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु कहिये । नाम लीआं निस्तारो री ॥ जि० ॥ ५ ॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक । अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० ॥ ६ ॥ हरखचंद का साहेब सचे । हुंतो दास तुमारो री ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल राजै गिरनार । नेम पद मंगल है (देवा०) मंगल रा

जिमती पद मंगल । मंगल रह नेमि राज (ने०) मंगल गणपति मंगल पाठक । सब तपसी विचसार (ने०) मंगल धन धन्ना मुनि नायक । मंगल सब अनगार (ने०) जय जय खेम कुशल गुरु जंपै । आनन्द घन अवतार (ने०) । इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इम माश द्रादश मध्य जे सहु पर्व्व सेवन कारनें । सहु बालजन उपगार कारन शुद्ध भाषा सारनें ॥ संवत् रसानलनंदबसुधा भाद्र शित एकादशी । गुरु गच्छ खरतर कलिकता पुर मोहन भाषा उपदिशी ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति द्रादशमाश पर्व्वाधिकारः ॥ १२ ॥ सं १८३६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्रादश माश मध्ये प्रसिद्ध पर्व्वाधिकार कथनानंतर । सांप्रति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप मुच्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिस माशमें जितने दिन भगवंतके कल्याणकके है । सो सर्ब भव्यजीवोंके सेवन करनें योग्य है । परंतुकोण तिथकों क्या कल्याण कहै । सो जाणया बिना सेवन कर सकते नही । (और बिशेष में) पंच कल्याणक तपस्या करनेंवाले भव्यजीवोंके अवस्य पंच कल्याणक टीप गुणनें बिना काम चलता नहीं । इसीसें गुणनो करनें माफक बिधि प्रपा कसें पंच कल्याणक टीप लिखते हें ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंच कल्याणक टीप लि० ॥ ❀ ॥

(कार्त्तिक कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

५ ॥ श्रीसंभवनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी अर्हते नमः ॥
१२ ॥ श्रीनेमिनाथजी परमेष्टि० ॥
१३ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी नाथाय० ॥
३० ॥ श्रीवर्द्धमानजी पारंगताय० ॥

(मार्गशीर्ष कृष्णपक्षे) ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी अर्हते० ॥
६ ॥ श्रीसुविधिनाथजी नाथाय० ॥

(कार्त्तिक शुक्लपक्षे) ॥ २ ॥

३ ॥ श्रीसुविधिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीअरनाथजी सर्वज्ञाय० ॥

(मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे) ॥ ९ ॥

१० ॥ श्रीअरनाथजी अर्हते नमः ॥
१० ॥ श्रीअरनाथजी पारंगताय० ॥
११ ॥ श्रीअरनाथजी नाथाय० ॥
११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी अर्हते० ॥
११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी नाथाय० ॥

१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी नाथाय नमः ॥ ११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी सर्वज्ञा० ॥
११ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी पारंगताय० ॥ ११ ॥ श्रीनमिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
(पोष कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥ १४ ॥ श्रीसंभवनाथजी अर्हते० ॥
१० ॥ श्रीपार्श्व नाथजी अर्हते० ॥ १५ ॥ श्रीसंभवनाथजी नाथाय० ॥
११ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी नाथाय० ॥ (पोष शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥
१२ ॥ श्रीचंद्रप्रभुजी अर्हते नमः ॥ ६ ॥ श्रीविमलनाथजी सर्व० ॥
१३ ॥ श्रीचंद्रप्रभुजी नाथाय० ॥ ९ ॥ श्रीशांतिनाथजी सर्व० ॥
१४ ॥ श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीअजितनाथजी सर्वज्ञा० ॥
(माघ कृष्णपक्षे ॥ ५ ॥) १४ ॥ श्रीअभिनंदनजी सर्वज्ञा० ॥
६ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी परमेष्टिने० ॥ १५ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी सर्वज्ञा० ॥
१२ ॥ श्रीशीतलनाथजी अर्ह० ॥ (माघ शुक्लपक्षे) ॥ ९ ॥
१२ ॥ श्रीशीतलनाथजी नाथाय० ॥ २ ॥ श्रीअभिनंदजी अर्हते० ॥
१३ ॥ श्रीऋषभदेवजी पारंगता० ॥ २ ॥ श्रीवासुपुज्यजी सर्वज्ञाय० ॥
३० ॥ श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीविमलनाथजी अर्हते० ॥
(फाल्गुन कृष्णपक्षे) ॥ १० ॥ ३ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी अर्हते० ॥
६ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी सर्वज्ञाय० ४ ॥ श्रीविमलनाथजी नाथाय० ॥
७ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी पारं० ॥ ८ ॥ श्रीअजितनाथजी अर्हतेनमः ॥
७ ॥ श्रीचंद्रप्रभूजी सर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ श्रीअजितनाथजी नाथाय० ॥
९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि० ॥ १२ ॥ श्रीअभिनंदनजी नाथाय० ॥
११ ॥ श्रीऋषभदेवजी सर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी नाथाय० ॥
१२ ॥ श्रीश्रेयांसजी अर्हते नमः ॥ (फाल्गुन शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥
१२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी सर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीअरनाथजी परमेष्टिने० ॥
१३ ॥ श्रीश्रेयांसजी नाथाय० ॥ ४ ॥ श्रीमल्लिनाथजी परमेष्टि० ॥
१४ ॥ श्रीवासुपुज्यजी अर्हते नमः ॥ ८ ॥ श्रीसंभवनाथजी परमेष्टि० ॥
३० ॥ श्रीवासुपुज्यजी नाथाय० ॥ १२ ॥ श्रीमल्लिनाथजी पारंगता० ॥
(चैत्र कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥ १२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी नाथाय० ॥

४ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी परमेष्टि०
४ ॥ श्री पार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय०
५ ॥ श्रीचंद्रप्रभूजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीआदिनाथजी अर्हते० ॥
८ ॥ श्रीआदिनाथजी नाथा० ॥

(वैशाख कृष्णपक्षे) ॥ ९ ॥

१ ॥ कुंथुनाथजी पारंगताय० ॥
२ ॥ श्रीशीतलनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीकुंथुनाथजी नाथाय० ॥
६ ॥ श्रीशीतलनाथजी परमेष्टिने० ॥
१० ॥ श्रीनमिनाथजी पारंग० ॥
१३ ॥ श्रीअनंतनाथजी अर्हते० ॥
१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी नाथा० ॥
१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी सर्व० ॥
१४ ॥ श्रीकुंथुनाथजी अर्हते० ॥

(ज्येष्ट कृष्णपक्षे) ॥ ८ ॥

८ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी अर्हते० ॥
९ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी पारं० ॥
१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी अर्हते० ॥
१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी पारंग० ॥
१४ ॥ श्रीशांतिनाथजी नाथाय०॥

(आषाढ कृष्णपक्षे) ॥ ३ ॥

४ ॥ श्रीआदिनाथजी परमेष्टि० ॥
७ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीनमिनाथजी नाथाय० ॥

(चैत्र शुक्लपक्षे) ॥ ८ ॥

३ ॥ श्रीकुंथुनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
५ ॥ श्रीअजितनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीसंभवनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीअनंतनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीसुमतिनाथजी पारंग० ॥
११ ॥ श्रीसुमतिनाथजी सर्वज्ञा० ॥
१३ ॥ श्रीवर्द्धमानजी अर्हते० ॥
१५ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी सर्वज्ञाय० ॥

(वैशाख शुक्लपक्षे) ॥ ८ ॥

४ ॥ श्रीअभिनंदनजी परमे० ॥
७ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीअभिनंदनजी पारंग० ॥
८ ॥ श्रीसुमतिनाथजी अर्हते० ॥
१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीविमलनाथजी पारं० ॥

(ज्येष्ट शुक्लपक्षे) ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीधर्म्मनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीवासुपूज्यजी परमेष्टिने० ॥
१२ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी अर्हते० ॥
१३ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी नाथाय० ॥

(आषाढ शुक्लपक्षे) ॥ ३ ॥

६ ॥ श्रीवर्द्धमानजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीनेमनाथजी पारंग० ॥
१४ ॥ श्रीवासुपूज्यजी पारंग० ॥

(श्रावण कृष्णपक्षे)॥ ४ ॥
३ ॥ श्रीश्रेयांसजी पारंगताय०
७ ॥ श्रीअनंत नाथजी परमेष्टि०
८ ॥ श्रीनमिनाथजी अर्हते नमः ॥
९ ॥ श्रीकुंथुनाथजी परमेष्टिने नमः ॥
(भाद्रवा कृष्णपक्षे) ॥ २ ॥
७ ॥ श्रीचंद्रप्रभूजी पारंगता० ॥
७ ॥ श्रीशांतिनाथजी परमे० ॥
८ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे० ॥
(आश्विन कृष्णपक्षे) ॥ २ ॥
१३ ॥ श्रीमहावीरजी गर्भापं० ॥
३० ॥ श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय नमः

(श्रावण शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥
२ ॥ श्रीसुमतिनाथजी परमेष्टि० ॥
५ ॥ श्रीनेमिनाथजी अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीनेमिनाथजी नाथाय० ॥
८ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी पारंग० ॥
१५ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी परमे० ॥
(भाद्रवा शुक्लपक्षे) ॥ १ ॥
९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी पारंग० ॥
(आश्विन शुक्लपक्षे) ॥ १ ॥
१५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि०॥
॥ ❀ ॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥
॥ ❀ ॥ गर्भापहार षष्टमप्यस्तिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचकल्याणक विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभदिन शुभ घमी गुरूके पास । पंचकल्याणक तप ग्रहण करै । उपवास (वा) आंबिल एकासणा दिकको पच्चख्खाण करै । तीन टंक देव बंदन करै । पडिक्कमणो करै । (जिस दिन) जो महाराजको कल्याणक होय । उसीको २००० गुणनो करै । और (पाश जिनेसर जगति जोए०) इत्यादि पंच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढै (वा) सुणें । जहां भगवंत के कल्याणक भूमि होय । (उहां) वहे महोछवसें संघ सहित यात्रा करनें कों जावै । विधिसंयुक्त यात्रा करै । और सर्व भगवंतों के पंच कल्याणकको उछव करै । (जो) शक्ति न हो (तो) शासनके अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के षट् कल्याणकका उछव जरूर करै ॥ ❀ ॥ अब २३ भगवंत की अपेक्षायें पांच, श्रीवीर प्रभूकीअपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लि० ॥ ❀ ॥ १ ॥ चवन कल्याणक कों (परमेष्टिनेनमः) कहियै (इस दिन) चवद स्वप्नादिक की पूजा करायकै । चवन कल्याणकको उछव करै । हीरा चढावै ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २ ॥ जन्म कल्याणक कों (अर्हते नमः) कहीयै (इस दिन) जलयात्रादिक महोत्सव करकै । अष्टोत्तरी स्नात्रादिक करावै । वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ ❀ ॥ ३ ॥ दिक्षा कल्याणक कों (नाथाय नमः) कहीयै (इस दिन) समोसरण निकालै । अशोकवृक्षादिकके नीचै स्थापन करकै । दिक्षाको उत्सव करै । घृत गुरु वस्त्रादिक चढावै । शक्तिमाफक दान देवै ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ४ ॥ केवल ग्यान कल्याणककों (सर्वज्ञाय नमः) कहीयै । (इस दिन) समोसरणमें भगवंतकों स्थापन करकै । आठ प्रातिहार्य प्रगट करै । नाना प्रकारके उत्सव करै । वस्त्र आभूषण चढावै । सपेदगोला चढावै ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारं गताय नमः) कहीयै । (इस दिन ।) निर्वाण कल्याणक के भावगर्भित उत्सव करै लाडूचढावै ॥ ५ ॥ (और) छठा गर्भापहार कल्याणकका उत्सव करणा होय तो चवण कल्याणकके उत्सव समान करै ॥ ६ ॥ (इसी तरै) सर्व कल्याणकके उत्सव करै । तपस्या पूर्ण होनें सें । पंचकल्याणक जीकी पूजा करावै । गुरूभक्ति करै । साहमी वत्सल करै । (इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या (जो) भव्य जीव करेंगे (सो) अनन्त सुख कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्या धिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पख वासैको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर करजो मया (एदेशी) जंबुद्वीप सोहामणो । दक्षिण भरत उदार । राजग्रही नगरी भली । अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥ (श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी) । समरंता सुख थाय । मनवंछित फल पामीयै । दोहग दूरपुलाय ॥ २ ॥ (श्री०) राज करै तिहां राजियो । सुमित्र नरेसर नांम । पटराणी पद्मावती । शीलगुणें अभिराम ॥ ३ ॥ (श्री०) श्रावण शुजल पूनमै । श्रीजिनवर हरिवंश । माताकुक्षि सरोवरै । अवतरीयो रायहंस । (श्री०) ॥ ४ ॥ जेठपदम पक्ष अष्टमी । जायो श्री जिनराय ॥ जनम महोत्सव सुरकरै । त्रिभुवन हरख नमाय (श्री०) ॥ ५ ॥ शामल वरण सोहामणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंछन काउवो । वीशधनुष तनुमान (श्री०) ॥ ६ ॥ परणी नार प्रभावती । भोगपुरंदर

साम । राजलीला सुखभोगवै । पूरै वंछित काम (श्री०) ॥ ७ ॥ तब लोगांतिक देवता । आवि जंपै जयकार । प्रभु फागुणवदि बारसै । लीधो संजम भार (श्री०) ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवदि बारसै । मनधर निरमल ध्यान । च्यारकरम प्रभुचूरिया । पाम्यो केवलग्यान (श्री०) ॥ ९ ॥ (ढाल २) सुखकारण भवियण (एहनी) ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि । प्रभुना पदपंकज प्रणवै वेकरजोडी । वेकरजोडी मस्तक ढोली समवसरण विरतंत । माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्र त्रय झलकंत । सिंहासन वैठा तिहां स्वामी चोविह धर्मप्रकासै । बारै परखदा वैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ २४ ॥ तपनें अधिकारै पखवासो तपसार । पडिवा थी कीजै पनरह तिथ उदार । पनरह तिथि कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपवास । श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास । तप झलमणें रजत पालणो सोवन पूतलीचंग । मोदक थाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरन्तर अहुख दर्शनी जेम । मनवंछित केरा सुखपामी जै तेम । पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ भरतार । जस कीरत सोभाग वधाई महियल महिमा जांण । परभव सुगति फल लहीयै एतपनें प्रमांण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघ तणो अधिकार । भरुवछ प्रमुख नगरादिक करिया विहार । विहार करी प्रतिबोधै खंदक पंचसयां परिवार । कार्त्तिकसेठ जितसत्रु तुरंगम सुव्रतनाम कुमार । तीश सहस वरस आऊखो पालै जग दया सार । श्रीसम्मेत सिखर परमेसर पुहता सुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय । मुनिसुव्रत स्वामी वीशमो जिनवरराय । वीशमो जिनवर राय जगत गुरु भयभंजण भगवंत । निराकार निरंजन निरुपम अजरामर अरिहंत । श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकल चंद गणिसीस । वाचक समय सुन्दर इम पभणै पूरो मनह जगीस ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ १ ॥ इति पखवासा स्तवन संपूर्णम् ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पखवासा तप विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभ दिन गुरूके पास तप ग्रहण करकै सुद (१)

पडिवासें । पूर्णमासी तक । इकसार पनरै उपवास करै । जो शक्ती न हो (तो) प्रथम सुद पक्षकी पडवा १ । द्रितीय सुद पक्षकी दूज २ (ऐसें) अनुक्रमसें पनरै सुदपक्षमें तपस्या पूर्ण करै । श्री मुनिसुव्रत स्वामीके पंच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढै । गुरूको संयोग होय (तो) गुरूके पास सुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीको (२०००) दो हजार गुणनो करै । और तपस्या ग्रहण करनेंकी (तथा) देवबंदनादिककी विधि । पूर्वे खुलासा लिख दीनी है । उसी मुजब बिबेकी जीव सब तपस्या की विधि करै । बिधि संयुक्त करनें सें उत्तम फल मिलता है ॥ ❀ ॥ इति पखवासा बिधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश पच्चक्खाण स्तवन लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं । महावीर भगवंत । त्रिगडै बैठा जिनवरू । परषदवार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समें । पूछै श्रीजिनराय । दश पचखाण किसा कह्या । कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ १ ॥ सीमंधर करज्योमया (एदेशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिशै सांभल गोयम स्वाम । दश पचखाण कियां थकां । लहीयें अविचल ठाम ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नवकारसी १ । बीजी पोरसी २ ॥ साढ पोरसी ३ । पुरमड्ढ ४ ॥ एकासण ५ ॥ नीवी ६ ॥ कही ॥ एकलठाण ७ ॥ देव ड्ढि ॥ (श्री ४) ॥ दात ८ । अंबिल ९ । उपवास १० । ही ॥ एहीज दश पच्चख्खाण । एहना फल सुण गोयमा । जू जूवा करूं वखाण ॥ (श्री० ५) ॥ रतन प्रभा १ । शर्कर प्रभा २ ॥ वालुक ३ । तीजी जांण ॥ पंक प्रभा ४ । तिम धूम प्रभा ५ ॥ तम प्रभा ६ । तम तम ७ । ठाम । (श्री० ६) ॥ नरक सात कही एसही । करम कठिन करजोर । जीव करम वस ते सही । उपजै तिण हीज ठोर (श्री० ७ ॥) छेदन भेदन तामना । भूख त्रिषा वलित्रास । रोम रोम पीडा करै । परमाहम्मी तास (श्री० ८) ॥ रात दिवश खेत्रवेदना । तिलभर नहीं जिहां सुक्ख । किया करम जे भोग वै । पामें जीव बहुदुक्ख (श्री० ९) ॥ इकदिनरी नवकारसी । जे करै भाव

विशुद्ध। सो वरस नरकनो आऊखो। दूर करै ज्ञानबुद्धि (श्री० १०)॥ नित्य करै नवकारसी। ते नर नरक न जाय। नरहै पाप वलि पाऊला। निरमल होवै जी काय (श्री०)॥ ११॥ ढाल २॥ श्रीबिमलाचल सिर तिलो (ए चाल)॥ सुण गोतम पोरसी कियां। महामोटो फलहोय। भावसुं जे पोरसी करै। दुरगति छेदै सोय (सु० १२)। नरक मांहें जे नारकी। वरशें एक हजार। करम खपावै नरकमें। करता बहुत पुकार (सु० १३॥) एक दिवश नी पोरसी। जीव करै इकतार। करमहणें सहस एकना। निहचैसुं गण धार (सु०) १४॥ दुरगति मांहें नारकी। दसहजार प्रमाण। नरक आयु खिण एकमें। साढपोरसी करै हांण (सु०) १५। पुरमड्ढ करै नित जीवजे। नरकै ते नविजाय। लाख वरश करमनें दहै। पुरमड्ढ करम खपाय (सु०) १६॥ लाख वरश दश नारकी। पामें दुःख अनंत। इतरा करम एकासणें। दूर करै मनखंत (सु०) १७॥ एककोमि वरसांलगे। करम खपावै जीव। नीवीय करतां भावसुं। दुरगति हणें सदीव (सु०) १८॥ दश कोमी जीव नरकमें। जितरो करै कर्म दूर। तितरो एकलठांणही। करैसही चकचूर (सु०) १९॥ दात करंता प्राणीयो। सो कोमी परमांण। इतरा वरश दुरगति तणा। छेदै चतुर सुजांण (सु०) २०॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो। कोमी एक हजार। करम खपावै इणपरै। भाव आंबिल अधिकार (सु०) २१॥ कोमी सहस दशवरशही। सहे दुःख नरक मझार। उपवास करै इक भावसुं। तो पामें सुगति मझार (सु०) २२॥ ढाल ३॥ केकेइ वरलाधो (एदेशी)॥ लाख कोमी वरसां लगै। नरके करतां रीवरे। (गोतम गणधारी) अठम तप करतां थकां। सही नरक निवारै जीवरे (गो० २३) नरके वरश कोम लाखही। जीव लहें तिहां दुःखरे। ते दुःख अठम तप हुंती। दूरकरी पामें सुक्खरे (गो०) २४॥ छेदन भेदन नारकी। कोमा कोमि वरसोइरे। कुगति कुमतिनें परहरो। दशमें एतो फल होइरे (गो० २५) नितफासू जल पीवतां। कोमा कोमी वरशनो पापरे। दूरकरै खिण एकमें। निश्चैहोय निः पापरे (गो० २६) वलिय विशेषै फल कह्यो। पांचम करै उपवासरे। पामेंग्यां

न पांचेभला। करता त्रिजुवन परकासरे (गो०) २७ ॥ चवदश तप वि धसुं करै। चवदह पूरव होय धारे। इम अनेक फल तपतणा। कहितां वलि नावै पारे (गो० २८)॥ मन वचने काया करी। तप करै जेनर नार रे। इग्यारै वरश एकादशी। करतां लहै नवपारे (गो० २९)॥ आठम तप आराधतां। जीव न फिरै संसारे। अनंत नवांना पापथी। बूटै जीव निर धारे (गो० ३०)॥ तप हुंती पापी तर्या। निसतरीयो अरजुन मालरे दृढप्रहारि तपसें तिर्यो। चउहत्याना बूटा जालरे (गो० ३१)॥ तपना फल सूत्रे कया। पच्चक्खाण तणा दश नेदरे। अवर नेद पिणउे घणा। करतां उेदै त्रय वेदरे (गो० ३२)॥ कलशः॥ ❀॥ पच्चक्खाण दश विध फल प्ररूप्या महावीर जिण देवए। जे करै नवियण तप अखंमित तासु सुरपय सेवए। संवत्त निधिगुण अश्व शशि वलि पोशसुद दशमी दिनें। पदम रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि नणें (गो० ३३)॥ ॥ इति दश पच्चक्खाण वृह स्तवनं ॥ ❀॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ अथ १० पच्चक्खाण तपबिधिः ॥ ❀॥

॥ ❀॥ यह दश १० पच्चक्खाणके स्तवनमें। खुलासा दश पच्चक्खाणके नेद (और) बेला। तेला। पांचम। आठम। चौदश। (इत्यादिक) तपस्या करनेंके फल। नगवंत श्री महावीर स्वामीके। बचन माफक। उत्तम पुरुषोनें रचना करी है। (इसीसें) धर्मरागी पुरुष। इसी स्तवनकों पढके। तपश्या करनेंमें आदरवंत होताहै। और कोईकै दश पच्चख्खाण तप करनेंकी इछा हो (तो) पहलै दिन। नवकारसी, दूशरे दिन पोरसी (इसी तरै) स्तवन मुजब १० पच्चक्खाण तप। दश दिवशे सेवन करै। सदा स्तवन सुणें। गुरूको संयोग न हो (तो) आपपढै। अंतमें पूजाकरावे। शक्ती माफक उद्यापन करै (इसी तपस्याके प्रसाद) खोटी गतिकों दूर करकै। अछी गतिके बंध बांधै। महा ऐश्वर्यवंत होय। नाग्यवंत होय॥ ❀॥ इति दश पच्चक्खाण तप बिधिः॥ ❀॥

॥ ❀॥ अथ वीश स्थांनक स्तवन लि० ॥ ❀॥

॥ ❀॥ श्रीसिद्धाचल नेटियै (एदेशी)॥ वीश थांनक तपसेवीयै।

धर करि सुन्न परिणांम लाल रे । तीजै नव सेव्योथको । बांधै तीर्थ कर नाम लालरे । (वी०) ॥ १ ॥ तप रचना अधकी कही । ग्याता अंग म झार लालरे । सुणजो नवि तुमे नावसुं । चितसें करियै उचार लालरे (वी०) ॥ २ ॥ सुविहत गुरु पासै ग्रहै । वीश थानक तप एह लाल रे । निरदूषण सुन्नमहुरते । उचरीजै ससनेह लालरे (वी०) ॥ ३ ॥ अ रिहंत १ । सिद्ध २ । प्रवचननमुं ३ ॥ सूरि ४ । थिवर ५ । उवझाय ६ । लालरे ॥ साधु ७ । नाण ८ । दंसण ९ । अरु ॥ विनय १० । नमुं उज साय लालरे (वी०) ॥ ४ ॥ चारित्र ११ । बंन्न १२ । क्रियापदे १३ ॥ तप १४ । गोयम १५ । जिण १६ । ईस लालरे ॥ चारित्र १७ । ग्यान नें १८ । श्रुत १९ । नणी ॥ नमुं तीर्थ २० । पदवीश लालरे (वी०) ॥ ५ ॥ वीश दिवशमें एकही । पद गुणनो करमेव लालरे । अथवा दिन वी शांलगे । वीशे पद गुणमेव लालरे (वी०) ॥ ६ ॥ एकउली षट्मासमें । पूरीजो नविहोय लालरे । फेरनवी करणी पमै । पिउली निष्फल जोय लालरे (वी०) ॥ ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं । अथवा देखी शक्ति लालरे । पोसहकर आराधियै । देववांदै निज नक्तिलालरे (वी०) ॥ ॥ ८ ॥ संपूरण पद सेवतां । पोसहरो नही जोग लालरे । तोही सात पदैसही । पोसह करिये संजोग लालरे (वी०) ॥ ९ ॥ सूरि, थिवर पाठक, पदै । साधु, चारित्र, सुजांण लालरे । गौतम, तीर्थपदे, सही । सात थांनक मनमान लालरे । (वी०) ॥ १० ॥ पद पद दीठ करै सदा दोय दोय जाप हजार लालरे । पमिकमणो दोय टंकही । करियै पूजा सार लालरे (वी०) ॥ ११ ॥ शक्ति मुजब तप कीजीयै । एक उली करो वीश लालरे । वीशा वीशी च्यारसै । तप संख्या कही एम लालरे (वी) ॥ १२ ॥ जिसदिन जो पद तप करै । तिसके गुण चितधार लालरे । काउसग्ग पर दक्षणा । मुख नणियै नवकार लालरे (वी०) ॥ १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणें । कीजै जिन पद नक्ति लालरे (वी०) ॥ १४ ॥ मृतक जनम रितु कालमें । कविधारयो उपवास लालरे । सोलेखै नहिं लेखवो । निकेवल तपजास लालरे (वी०) ॥ १५ ॥ सावज्ज त्या

ग पणो करै। सोकन धारै चित्त लालरे। शील आभूषण आदरै। मुखसुं बोलै सत्य लालरे। (वी०) ॥ १६ ॥ जेठ आषाढ वैशाखमें। मिगसर फागु ण माह लालरे। एषट् माशे मांहिनें। व्रत ग्रहीयै वरु नाग लालरे (वी०) ॥ १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां। कुजमणो निरधार लालरे। कीजै शक्ति विचारनें। उद्यव विवध प्रकार लालरे (वी०) ॥ १८ ॥ बीश बीश गिणती तणा। पुस्तक पूठा आदि लालरे। ग्यान तणी पूजा करै। मुंकीजे हठ वाद लालरे (वी०) ॥१९॥ फलवधी नगरनी श्राविका। कीधी विध चित्त लाय लालरे। जनम सफल करवा भणी। ओहीज मोक्ष उपाय लालरे (वी०) ॥ २० ॥ (कलश) ॥❀॥ इम वीर जिनवर तणी आग्या धार चित्त मझारए। सहुदेख आगम तणी रचना रची तप विधसारए। वसुनंद सि द्धी चंद्र वरसे चेत्र मास सुहंकरू। मुनि केसरी शशि गछ खरतर भणी स्तवना मन हरू ॥ २१ ॥ इति वीश स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीश स्थानक तपकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहां प्रथम शुभ मुहुर्त्तके दिन। नंदी स्थापना पूर्वक। सुवि हित गुरुके समीप। वीश स्थानक तप। विधिपूर्वक उच्चरै। एक ओली दो माशसें लेकै (यावत्) छम्माशें पूरी करै। (कदाचित्) छम्माश मध्ये पूरी नकर सकै (तो) वा ओली गिणती में नहीं। और नवी करणी पडै। एक ओलीके वीश पद है (तिहां) कोई वीश दिनमें। वीशो पद जूदा २ गिणें कोई वीशों दिनमें एकजपद गिणें। दूसरै वीशों दिनमें दूसरो पद। (ऐसें) वीशों पदकी वीश ओली करै। तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत। अठम तप करिकै आराधै। वीश अठमें एकओली होय (ऐसें) वीश ओली (४००) अठमें आराधै। और तिससें होनशक्ति छठ तप करकै आराधै। तिससें होनशक्ति चौविहार उपवास करकै आराधै। तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करके आराधै। तिससें हीन शक्ति आंबिल (तथा) ति विहार एकाशणा करकै आराधै। तिहां शक्तिवान प्राणी। सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै। (हीन शक्ति) दिन पोसह करै। वीशों पद पोसह सेती आराधै (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो)

आचार्य पदै १ उपाध्याय पदै २ थिवर पदै ३ साधू पदै ४ चारित्र पदै ५ गौतम पदै ६ तीर्थ पदै ७ यह सात थानकै तो पोसहज करकै आराधै । तथापि शक्ति न हो (तो) तिस दिन देशावगासिककरै । सावद्य व्यापार त्यजै । सो पिण नहोइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधै । अपणी ही नताभावै (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उपवासादि तप न गिणें, न जावै । स्त्रियां पिण रुतु समय का तप न गिणें (तथा) तपके दिन पोसह साहित करै (तो) वहोत श्रेयकारी है । सो न होसकै । (तो) तपके दिन उभय टंक पम्हिकमण करै । तीन टंक देव बंदन करै । दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करै । ब्रह्मचर्य पालै । भूमि शयन करै । तपकै दिन अ तिसावद्य आरंभ व्यापार न करै । असत्य न बोलै । सर्व दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै । (तथा) तपके दिन पोसह करै (तो) पारणेंके दिन जिन भक्ति करके पारणो करै । (जो) तपके दिन पोसह नहो (तो) उ सी दिन श्रीजिन भक्ति करै । करावै । भावना भावै । (तथा) तपकै दिन पदके गुण भेद प्रमाण संख्याइं काउसग्ग करै । (तावन्मात्र) तद्गुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदना करै । उस पदका गुण यादकरके उदात्त स्वरै स्तवना करै । हर्षित रहै ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीश स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते हैं॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (णमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १२ काउस ग्ग ॥ ❀ ॥ १ ॥ ❀ ॥ (णमो सिद्धाणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ (णमो पवयणस्स) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (णमो आयरियाणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ४ ॥ ❀ ॥ (नमो थेराणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ (णमो उवझायाणं (दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ का उसग्ग ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (णमो लोए सव्वसाहुणं) २००० गुणनो । लोग स्स २७ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लो

गस्स ५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ८ ॥ ❀ ॥ (णमो दंसणस्स (२०००) गुणनो। लोगस्स १७ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ९ ॥ ❀ ॥ (णमो विनयसंपणाणं) २००० गुणनो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १० ॥ ❀ ॥ (णमो चारित्तस्स) २००० गुणनो। लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ❀ ॥ (णमो बंभव्वय धारीणं) २००० गुणनो। लोगस्स ९ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १२ ॥ ❀ ॥ (णमो किरिआणं) २००० गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ (णमो तवस्सीणं) २००० गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १४ ॥ ❀ ॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो। लोगस्स १७ काउ सग्ग ॥ ❀ ॥ १५ ॥ ❀ ॥ (णमो जिणाणं) २००० गुणनो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणनो। लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लो गस्स ५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १८ ॥ ❀ ॥ (णमो सुअनाणस्स) २००० गुण नो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १९ ॥ ❀ ॥ (णमो तित्थस्स) २००० गुणनो। लोगस्स पांच काउसग्ग करै ॥ ❀ ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति वीश स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीशों जगेमें सर्व पदके उछव महोछव प्रभावना उजमणा पूर्वक करै । जिन शाशन के उन्नतिके कारण करै । इतनी शक्ति न हो (तो) एक जगी तो विशेष उछवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखी है (जो) गुरुको संयोग हुय । तबतो विस्तारसें बीशों पदकी जूदी जूदी वि धि गुरुके मुखसें समजके करै (जो) गुरुका जोग न हो (तो) विवेक सं युक्त इस विधिकों देखके बीश स्थानक तप सेवन करै। बीश स्थानक तवन पढै (वा) सुणें। बीश स्थानकजीकी पूजा करावै । अपनी शक्ति माफक बीश बीश ग्यानोपरगण करावै। । देव पदको देव खातेलगावै । ग्यान पद को ग्यान खाते लगावै। गुरु पदको गुरु खाते लगावै। सर्व तीर्थोंकी यात्रा करै। साहमी वछल करै (इत्यादिक) द्रव्ये, भावै, विधिसंयुक्त सुद्ध भावसें (जो) भव्य जीव यह बीश स्थानक पदकों सेवनै करेंगे (सो) जिन नाम

कर्मकों उपार्जन करके। तीशरे भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे। इत्यलंबिस्त रेण ॥ ❀ ॥ इति वीशस्थानक तपउजी विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ रोहणी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशण देवत सांमणीए। मुऊ सानिध कीजै ॥ भूलो अक्षर भगति भणी। समऊाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणोए। जिणरा गु ण गावुं ॥ जिम सुख सोहग संपदाए वंछित फल पावुं ॥ १ ॥ दक्षिण भ रते अङ्गदेस छे चंपानयरी। मघवा राजा राज करै तिण जीता बैरी। पाट तणी राणी रूवमीए लखमी इण नामें। आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पांमें ॥ २ ॥ रोहणी नांमें पुत्रिकाए सबकुं सुखकारी। आठां पुत्रां ऊपराए तिणलागै प्यारी। वाधै चंद्र तणी कलाए जिम पख उजवालै। तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरीरूपै रूवमीए घर अङ्गण बैठी। दीठी राजा खेलतीए तिण चिंता पैठी। तीन भुवन विच एहवी ए नहीं दूजी नारी। रंभा पद्मा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीसै कोइ इसो जिणनें परणावुं। आख्यां आगल साज व धै तिण चयन न पावुं। देश २ ना राजवीए ततखिण तेडाया। सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजा तणोए छे कुमर सोभागी। कन्या केरी आखंमीए तिण सेती लागी। ऊभा देखै स कल लोक चढीया केई पाला। चित्रसेन रै कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनें देवांगनाए जपै जय २ कार। रलियायत थयो देखनें ए सारो संसार। करजोमी कहै लोक वखत कन्यारो जाग्यो। वीत शोकनो कुमर थयो शिर ऊपर लाग्यो ॥ ७ ॥ इम वीवाह थयो भलो ए दीया दांन अपा र। घर आया परणी करीए हरख्यो परिवार। वीतशोक निज पुत्रभणी अपणो पाट दीधो। आपण संयम आदरी ए जगमें जश लीधो ॥ ८ ॥ ढाल ॥ ❀ ॥ प्रभु प्रणमुरे पाशजिनेसर थंभणो (एदेशी) ॥ ❀ ॥ तिण नयरीरे चित्रसेन राजा थयो। सुख मांहै रे केतलो काल वही गयो। इण अवसररे आठ पुत्र हुवा भला। चढतै पखरे चंद जिसी चढती कला (अजालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी। सातमी भूमें

कंत सेती करै क्रीमा अति घणी। आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं रांणी लियो। पुत्रनें प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ (चाल) इक कांमणरे गोख चढी द्रष्टे पडी। शिर पीटैरे दीनस्वरे रोवै खमी। बूढा पणरे मनगमतो बालक मुंओ। हुं एकजरे तिण अधिकेरो दुखहुवो (ज०) दुखहुवो देखी रोहणी हिव कहै इम प्रीतम भणी। एनार नाचै अनें कूदै कहो किम मोटा धणी। एहवो नाटक आजतांइ में कदे देख्यो नही। मुऊनें तमासो अनें हाशो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) ॥ इण वचनेंरे री सांणो राजा कहै ॥ तूंपापणीरे परतणी पीमा नवि लहै। ए दुखणीरे पुत्र मुंए तम फड करै। जब बीतैरे वेदना जाणी जै तरै । (ज०) जाणें तरै तुं वात दुखनी गरब गहली कामनी । इम कही राजा हाथ झाल्यो तेह ना बालक भणी। सातमी नुंयथी तलै नाख्यो तिसे हाहारवथयो। रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजारे पुत्र तणें शोकै करी। थयो मुरछितरे रोवै अति आंख्यां भरी। पमतो सुतरे सासणदेवत जांणियो। कंचन मइरे सिंहासण वैसांणियो। (उल्लालो) वैसांणियो करजोम आगै करै नाटक देवता । गोदीखिलावै के हसावै पाय पंकज सेवता। ऊपनो भूपतिनें अचंभो देखी ए कारण किसो । जो कोई ग्यानी गुरुपधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतांरे चारितिया आया तिसै। राजा पिणरे पुहतो वांदणनें तिसै । सुण देशनारे पूछै प्रश्न सुहामणो । कहो स्वामीरे पूरब भव बालक तणो ॥ (उल्लालो) बालक तणो भवभूप पूछै कहै इण पर केवली । रोहणी राणीरो भवांतर अनें राजानो वली । श्रीगुरु पासे पाछले भव रोहणी तप आदरयो । तप तणें सगते साधु भगते तुम्म भवसायर तरयो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजारे किम रोहणितप कीजीयै । विधि भाषोरे जिम तुम पासे लीजीयै । तब मुनिवररे विध रोहणरा तप तणी । इम जंपैरे चित्रसेन राजा भणी ॥ (चाल) राजा भणी विधएह जंपै चंद्र रोहण तप आखियै । उपवास कीजै लाभ लीजै भली भावना भाखियै। बारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजियै मनरङ्गसु। इम सात वरसां लगे कीजै तजी आलस अङ्गसुं ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

(ढाल)३॥ ❀ ॥वीरसुणो मोरी वीनती (एचाल)॥ ❀ ॥तप करियै रोहणि तणो। वली करियैहो ऊजमणो एम । तप करतां पातिक टलै। तिण कीजै होतपसेती प्रेम ॥ १५ ॥ (त०)॥ देव जुहारी देहरै । तिण आगै हो कीजै वृक्ष अशोक । गुणनो वारम जिन तणो । जला नेवज हो धरीयै सहु थो क ॥ १६ ॥ त० ॥ केशर चन्दन चरचीयै । कीजै आगै हो आठे मङ्गलीक। विधसुं पुस्तक पूजीयै। ते पांमें हो शिवपुर तहतीक ॥ १७ ॥ (त०) ॥ सेवा कीजै साधूनी । वलि दीजै हो मुंह मांग्यादान । संतोषी जै साहमी। मन रङ्गे हो कर २ पकवान ॥ १८ (त०) पाटी पोथी पुंछणा । मिस लेखण हो झिल मिल सुजगीस । नवकरवाली वीटणा । गुरु आगै हो धरो सत्ता वीस ॥ १९ (त०) ॥ चोथो व्रत पिण तिणदीनें । इम पालै हो मन आण बिवेक । इण विध रोहणि आदरै । तेपांमें हो आनन्द अनेक ॥ २० ॥ ॥❀॥ (ढाल ४ धरम करो जिनवर तणो) ॥❀॥ इम महिमा रोहण तणी। श्रीग्यांनी गुरु परकासै रे। चित्रसेननें रोहणी । वाशपूज्य तिर्थंकर पासै रे॥ २१ (इ०) ॥ इणपरि रोहणि आदरी । ऊपर ऊजमणो कीधो रे । चित्रसे ननें रोहणी। मनसूधै संजम लीधोरे॥ २२ (इ०) ॥ आठे पुत्रे आदरी। दि ख्या बारम जिन आगैरे। वलि नानाविध तप तपे। धरम तणी मति जागैरे॥ २३ (इ०) ॥ करि अणसण आराधना। लहि केवल शिवपद पायारे। जि नवाणी आणी हीयै। प्रभु चरणां चितलाया रे॥ २४ (इ०) ॥ मनमोहन महिमानिलो। मैंतवियो शिवपुर गामीरे। मनमान्या साहिब तणी। हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ २५ (इ०) ॥ ❀ ॥ कलश ॥ ❀ इम गगन दुग मु नि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुद भली। मैं कही रोहण तणी महि मा सुगुरु मुख जिम सांभली। वाश पूज्य अमनें थया सुप्रशन चित्तनी चिं ता टली। श्रीसारजिन गुण गावतां हिव सकल मन आश्या फली ॥ २८ ॥ इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन गुरूके पास रोहणी तप ग्रहण करै । रोहणी नक्ष त्रके दिन उपवास करै । बारमा श्री वाश पूज्य स्वामीका पूजन करै । आ

गै अष्ट मंगलीक रचना करे । अष्ट द्रव्य चढावै । देव बंदनादिक करकै धर्मोपदेश शुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीबाश पुज्यस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी को (२०००) गुणनो करे । ऐसें सात वरश (यह) तप करनेंसें । सुख शौभाग्य बधेगा । विशेष अधिकार । यह रोहणी तप का स्तवन सुणनेंसें मालुम होगा (अलं विस्तरेण) इति रोहणीतप विधिः॥

॥ ❀ ॥ अथ अम्माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय । म हावीर स्वामी जे जे तप कीया । तेहनो कहिसुं विचार (वलि २ बांदुं बीरजी सुहामणा) ॥ १ ॥ आवठ अंजण सेव्यां सुख करै । गातां नवनि धि थाय । बारैं वरसां बीरजी तपकीयो । दूरकरै सहु पाप (व०) ॥ २ ॥ वे करजोमी एहुं वीनवुं । श्रीजिन शाशन राय । नाम लियांथी नव निधि संपजै । दरशण दुरित पुलाय (व०) ॥ ३ ॥ नव चौमाशा जिन जीरा जांणियै । एक कियो अम्माश । पांचे अणा अ वलि जाणीयै । वार के को जी माश (व०) ॥ ४ ॥ बहुत्तर माश खमण जग जीपता । अ दो माशीरे जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशी वखाण (व०) ॥ ५ ॥ अद्र महाअद्र शिवगति जाणीयै । उत्तम एहना प्रकार । विचमें पा रणो स्वामी नवि कीयो । नवि कीयो चौथो आहार ॥ ४ ॥ (व०) तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी । कीधा बारै जी माश । दोयसै बेला जिनजीरा जाणीयै । इम गुणतीस विलास (व०) ॥ ६ ॥ तीनसै पारणा जिनजीरा जांणीयैं । तीन गुणतीश पचाश । एहमें स्वामी केवल पामिया । पांम्या मु गति आवास (व०) ॥ ६ ॥ (कलशः) इम बीर जिनवर सयल सुखकर अतही दुकर तप करी । संयम सुपाली कर्म टाली स्वामी शिवरमणी वरी । सेवक पन्नेंसें बीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा । संसार कूप पर्यंत राखो आपो स्वामी सुखघणा ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ इति अम्माशीतप स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अम्माशी तप बिधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशनके अधिपति श्री महावीर स्वामी । सर्वसें उत्कृष्ट अम्माशी

तप कियो। (इसीसें) इस कालमें संघयण बल पराक्रमके हीनपणासें इ कसार उम्माशी तप न कर शकै (तोपिण) उम्माशीके (१८०) उपवास करनेंसें । जघन्य उम्माशी तपके फलकों प्राप्तहोय । और देववंदनादि सर्व क्रिया करै । उम्माशी तपका स्तवन शुणें । इस उम्माशी तपके स्तव नमें। सर्व तपस्या की संख्या कही है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इसी को (२०००) गुणनो करै । भगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नाम सें तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां यात्रा करनेंकों जावै । अनेकतरेसें शुद्धभा वना भावै । शक्ति माफक उद्यापन करै । इस तपस्याके प्रशाद लघुकर्मी होके अनन्त सुखकों प्राप्त होय ॥ ❀ ॥ इति उम्मासी तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारै माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दांन उखट धरी दीजीयें। (एदेशी) ॥❀॥ त्रिभुवन नायक तुं ध णी । आदि जिणेसर देवरे । चौसठइंद्र करै सदा । तुझपद पंकज सेवरे (त्रिभु०) ॥ १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तुंथयो । इण अवसरपणी कालरे । तुझ सम अवरनको प्रभु । तुं प्रभु दीन दयालरे (त्रि०) ॥ २ ॥ प्रथम ती र्थं कर तुं सही । केवल ग्यान दिनंदरे । धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं । तूंही है प्रथम जिनंदरे । (त्रि०) ॥ ३ ॥ अंतर अरिजे आतम तणा । काल अनादि थितिजेहरे । ते तप शक्तिये तैंहण्या । आत्म बीरज गुण गेहरे (त्रि०) ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह शकै । जेहनो अंत न पारे । प्रादश माशनो तप कर्यो। तेह अपानक सारे (त्रि०) ॥ ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो । आगममें जिन राजरे । ते करवुं अति आकरुं तप विना किम सरै काजरे (त्रि०) ॥ ६) तीनशै साठ उपवास ते। जे इण पंचम कालरे । अवसर आदरै क्रम विना । ते पिण भवि सुविसालरे (त्रि०) ॥ ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै । शास्त्र तणें अनुसारे । पक्रिकम णादिक भावथी। सुद्ध क्रिया मन धारे (त्रि०) ॥ ८ ॥ चित्तसमाधि सुभ भाव थी। धरै ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तम फल लहै । बलिलहै उत्तम ग्यानरे (त्रि०) ॥ ९ ॥ काल अनादि संसारमें । जन्म मरण तणा छ

क्खरे । ते लह्या धर्म पायांविनां । तप विनां किमहुवे सुक्खरे (त्रि०) ॥ १० ॥ हिव लह्यो नर भव पुन्यथी । वलिलह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्वनी रुचिथईहे मुझे । हिव मिट्यो मन तणो भर्मरे (त्रि०) ॥ ११ ॥ भव २ एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख कारेरे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । में कियो हिवे परिहारेरे (त्रि०) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोक्ष मारग सुविसालरे । भव २ जे मुझ संपजे । तो फले मंगल मालरे (त्रि०) ॥ १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो । ते तप सुरतरु कंदरे । धन २ जेनर आदरे । काटे ते करमनो फंदरे (त्रि०) ॥ १४ ॥ (कलशः) इम नाभि नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मेंथुएयो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीबालूचरे श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारे माशी तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथमतिर्थंकर श्री रुषभदेव स्वामी उत्कृष्ट बारे माशी तपस्या करी (इसीसें) भव्य जीव बारे माशी तपस्याका भाव भायके (३६०) तीन सै साठ उपवास करे । जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया करे । बारे माशी तपका स्तवन सुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ १ ॥ श्री रुषभदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥ ॥

इसीको (२०००) गुणनो करे । तपस्या पूर्ण होनेंसें सिद्धगिरी यात्रा करनेंकों जावे । शक्तिमाफक उद्यापन उछव करे । इस तपस्याके प्रशाद भव्य जीवोंके कभी दुख दौ भाग्य प्राप्ती न होय । सदा तप तेज बढतो रहे । इति बारे माशी तपस्याविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) प्रणमुं प्रथम जिनेसरु । शुभमनें सुखकार । लबधि अठावीस जिन कही । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रष्ण व्याकरणें प्रगट भगवती सुत्रमझार । पन्नवणा आवस्यके । बारू लबधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर भुपजे । लबधां अठावीस । एहिव परगट अरथसुं । सां

जलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ अनुक्रमें हेव अधिकार गाथा तणें। लबधिना नाम परिणांम सरिषा जणें। रोग सहु जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लबधि छै नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल मुत्र उषध समा जाणीयै ॥ वीय विप्पोसही लबधि वखाणीयै। श्लेषम उषध सारिखो जेहनो । तीजी खेलोसही नांम छै तेह नो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरै हुवै । चोथी जल्लोसही नाम तेह नो ठवै। केश नख रोम सहु अंग फरसै सही । रहै नही रोग सब्बोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा। भेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा। वस्तु रूपी सहु जांणियै जिण करी। सातमी लबधि ते अ वधि ग्यांनें करी ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर (ए चाल) ॥ ॥ ❀ ॥ हिव आंगुल अढीयै उणो मांनुष क्षेत्र । संग्या पंचेंद्री तिहां जे वसय बिचित्र । तसु मननो चिंतित जांणें थूल प्रकार। ते रुजुमति नांमें अठम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष क्षेत्रे संज्ञावंत । पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत। सूखम परजायें जाणें सहु परिणाम। ए नवमी कहीयै विपुलमती सुत्र नाम ॥ ९ ॥ जिण लबधि प्रभावे जली जाय आकाश । ते जंघा विद्याचारण लबधि प्रकाश । जसु वचन सरापै खि णमें खेरुंथाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादरदेखै लोकालोक । ते केवल लवधी बारमियै सहु थोक। गणधर पद लहीयै तेरम लबधि प्रमाण। चवदम लबधे करी चव दै पूरब जाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकर पदवी पांमें पनरमी लबधि। सोलम सु खदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि । बलदेव तणो पद लहियै सतरमी सार। अ ढारमि आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत खीरै मेल्या जेह सवाद । एहवी लहै वाणी उगणी सम परसाद । जणीयो नविभूलै सुत्र अरथ सुविचार। ते कुष्टिक बुद्धी वीशम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एकै प द जणीयै आवै पद लख कोड । इक वीशमी लबधी पायाणु सारणी जोड। एकै अरथै करी उपजै अरथ अनेक । बावीसम कहीयै बीज बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ कपूर हुवै अति उजलो

रे (एचाल) ॥ ❀ ॥ सोलह देश तणी सहीरे । दाहक सगति वखाण । तेह लबधि तेवीसमीरे । तेजोलेश्या जाण ॥ १५ ॥ (चतुरनर सुण ज्यो ए सुविचार) । आगममें अधिकार । वारू लबधि विचार (च०) चवदह पूरब धर मुनिवरूरे । उपजन्ता संदेह । रूप नवो रचि मोकलै रे । लबधि आहारक एह (च०) ॥ १६ ॥ तेजो लेश्या अगनिनें रे । उपशम वा जल धार । मोटी लबधि पचवीश मीरे । शीतो लेश्या जांण (च०) ॥ १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवैं रे । विविध प्रकारै रूप । सदगुरु कहै छावीसमीरे । वेक्रिय लबधि अनूप (च०) ॥ १८ ॥ एकणपात्रे आदमी रे । जीमावै केई लाख । तेह अक्षीण महाणसीरे । सत्तावीसमी साख (च०) ॥ १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनीरे । संघादिकनें काम । तेह पुलाक लबधि कहीरे । अठावीशमी नाम (च०) ॥ २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुंरे । तेम पुलाक विचार । भगवती सूत्रमें भाषियो रे । ए त्रिहुंनो अधिकार (च०) ॥ २१ ॥ पन्नवणा आहारनीरे । कल्पसूत्र गणधार । तीन तीन इक २ मिली रे । वारू आठ विचार (च०) ॥ २२ ॥ प्रष्ण व्याकरणें कहीरे । बाकी लबधां वीश । सांभलतां सुख ऊपजै रे । दोलत हुवै निशि दीश (च०) ॥ २३ ॥ ❀ ॥ (कलशः) ॥ ❀ ॥ संवत्त सतरैसै छवीशै मेरु तेरस दिन भलै । श्रीनगर सुख कर लूणकरणसर आदि जिन सुपसावलै । वाच ना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए । श्रीधर्म वर्धन स्तवन भ णतां प्रगट ग्यान प्रकाश ए ॥ २४ ॥ इति (२८) लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (शुभदिन (गुरुके पास) । २८ लब्धि तप ग्रहण करै । अनुक्रमसें २८ उपवास करै । स्तवन सुणें । (जिस दिन) जो लब्धी को उपवास होय । उसी लब्धी कै नामको गुणनो करै । तप पूर्ण होनेंसें । शक्ति माफक उद्यापन करै । यह तपस्या करनेंसें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय । सदा आनंद रहे ॥ ❀ इति २८ लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ बेकर जोमी तांम (एचाल) । जिनवर

श्री वर्धमान । चरम तीर्थंकर । प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्रीग णधार । सूरि शिरोमणी । नमतां नवनिधि संपदाए ॥ १ ॥ चवदे पूरव ना म । सुत्रे जूजूवा । वीरजिणंदे भाषीयाए ॥ तेहिव सुगुरुपसाय । वरणव स्युं इहां । आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १ । दूजो अग्रायणी २ । वीर्यवाद ३ तीजो नमुंए ॥ अस्ति नास्ति प्रवाद ४ । सत्ता जाणी यै । नाणप्रयण ५ पंचम गिणुंए ॥ ३ ॥ छठो सत्यप्रवाद ६ । सत्तम आतम ७ । कर्म प्रवाद अष्ठम गिणोए ८ ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९ । नामें नवम । विद्या प्रवाद दशमो कह्योए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११ । प्राणायु वारमो १२ । क्रिया विलास तेरम भणोए १३ ॥ विंदुसार इण नाम १४ । चवदे एकठ्या । सास्त्र थकी में संग्रह्याए ॥ ५ ॥ (ढाल २) श्रीविमलाचल सिरतिलो (एदेशी) ॥ उत्पादपूर्वसोहामणो । कोटी पद परि मांण । षटभाव प्रगटछै ते जिहां । त्रिपदी भावविनांण ॥ १ ॥ सर्वद्र व्य पर्यय तणो । जीव विशेष प्रमाण । दूजो पूर्व अग्रायणी । छिन्नू लख पद जांण ॥ २ ॥ पदलख सत्तर जेहनी । संख्या परगट एह । वीर्य प्रबल ता जीवनी । भाषी तीजै तेह ॥ ३ ॥ चौथे पूर्वे जे कयो । अस्ति नास्ति प्रवाद । पदसंख्या साठ लाखनी । सप्त भंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यानप्रवाद पद पंचमो । सूत्रे आएयो जोय । मत्यादिक पण भेदसुं । पद संख्या इक कोडि ॥ ५ ॥ सत्य प्रवाद छठोकहुं । भाषुं सत्य स्वरूप । संख्यापद इग को रुनी । भाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां । आतमद्रव्य सुभाव । छवीस पद कोरु जेहना । सुत्रेआएयां भाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवाद तणो हिवै । प्रगट पणें अधिकार । लाख असी पद जेहना । कोडी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवै । नामें प्रत्याख्यान । लाख चौराशी जेहवा । पद संख्याचित्त आन ॥ ९ ॥ अतिसय गुणसंयुत भणी । साधन साध्य निदांन । विद्या अनुपम सातशै । कोरी दस लख जांन ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो । छवीस कोरु प्रमांण । ज्योतिष शास्त्र विचारणा चौवीह देवकल्यांण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो । छप्पन्न लख इग कोरु । प्राण निरोधन जे क्रिया । शास्त्रे आएयो जोरु ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक जे

क्रीया। छंद क्रिया सुविसाल। पद संख्या नव कोम्नी। तेरमी किरिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसार विंदु चवदमो। नामें अरथ निहाल। पद संख्या इग कोडनी। लाख पचवीश संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी। संख्या गज परिमाण। सोलसहस अरु तीनशै। उर तयांसी जांण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या एकही। गुणमालाथी देख। आगै बुधजन सोध ज्यो। बाकी देशविशेष ॥ (ढाल३) बीर जिणेसर उपदिशै (ए चाल)॥ सूत्रे गुंथै गणधरा। अरथे अरिहंत भाषैरे। ते श्रुत ग्यान नमुं सदा। पाप तिमर जिमनासैरे ॥ १ ॥ (वाणीरे जिनंदनी) सुणज्यो चित हित आणीरे। तत्व रमणता अनुसरै। संपूरण गुण खाणीरे (वा०) ॥ २ ॥ विषय कषाय तजी करी। ग्यान भगत उरधारीरे। विधि संयुत जिन मंदिरै। प्रभुमुखपाश जुहारीरे (वा०) ॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी। श्रीश्रुत ग्यान निधानोरे। सदगुरु चरण नमी करी। संवर जोग प्रधानोरे (वा०) ॥ ४ ॥ अकृत लेई कजला। गुंहली सुंदर कीजैरे। नांण दंसण चारित्रनी। ढिगली तीन धरीजैरे (वा०) ॥ ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इणपरै। सुगुरु संजोगै लेईरे। विधिसुं पुस्तक पूजीयै। चित अति आदर देईरे ॥ ६ ॥ (वा०) इम तप संपूरण थयां। कजमणो हिव कीजैरे। घरसारू धनखरचनें। नर भव लाहो लीजैरे (वा०) ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा। पूरब नाम प्रमाणोरे। नवकर वाली कोथली। लेखण ठवणी जाणोरे ॥ ८ ॥ देहरै देवजुहारनें। आरती मंगल कीजैरे। सनात्र पूजा वलि साचवी। तत्वसुधारस पीजैरे ॥ ९ ॥ (वा०) इण पर तप आराधतां। दुरगति कारण छेदैरे। चवदह रज्जु सिरोमणि। जीव अक्षय गतिवेदैरे ॥ १० ॥ (वा०) तप आराधन विध भणी। आगम वचने जोईरे। भवियण पिणतुमे आदरो। ज्युं भव भ्रमण न होईरे ॥ ११ ॥ (वा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गछ खरतर तपै रविजिम क्रांतए। सौभाग्य सूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्ववृत्तंत ए। संवत अठारै वरश छिन्नूं नयर श्री बालूचरै। ए स्तवन भणतां श्रवणसुणतां सयल मन वंछित फलै ॥१२॥❋॥ इति चवदै पूर्व स्तवनं संपूर्णम् ॥❋॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) पूरव तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके (१४) उपवास करै । (जिस दिन जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसें (२०००) गुणनो करै । स्तवन सुणें । इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और बिधि सर्व लिखी है । उसी मुजब बिबेकी जीव गुरुसें समझके करै । यह तपस्याके करनेंसें ज्ञाना वरणादि कर्मका क्षयोपशम होय । शुद्ध ज्ञानका उदय होय ॥❀॥ इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सासण देवी सारदा । वांणी सुधारस वेल । बालक हितकरणी वगसियै । सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिनपूजतां । मनलहि शुद्धपरिणाम । तप तिलके फल पामियें । दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै (एदेशी) ॥ कमला जिम कुंकुल पुरै । भुज बल नरपतिभीमोरे । पदमनी पदम सुवासना । श्वेतगज स्वप्नेंनीमोरे (पदम०) ॥ १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना । प्रसवीसुता पूरै माशैरे । दवदंती नाम दीपतो । गुणमणि बुद्धि प्रकाशैरे (प०) ॥ २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा । रूप गुणें करी रंभारे । देव गुरु धर्म्म दीपावती । व्रतधारी दृढ वंभारे (प०) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजै श्रीसांतीनी । देवे दीधी त्रिकालो रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वर मालोरे । (पदमनी०) ॥ ४ ॥ उवझाया धिपश्री निषदनो । नल लिखीयो निलौरे । आनन्दसुं पंथआवतां । पूरब पुन्य उघारै रे (प०) ॥ ५ ॥ मझमरयणी तमभरी । मधु रव कुंत इहां वनमेंरे । माणि भाले तेज दिनमणी । जाग्रत देखी अहो मनमें रे (प०) ॥ ६ ॥ ग्यांनधारी गुरु कोइ मिलै । पूछीयै एह प्रसन्नो रे । कर्म बलै मुनि आवीया । परीसह जीत मदन्नो रे (प०) ॥ ७ ॥ पंच जीत पंच मालता । टालता दुस्सह सबलारे । संजम शुध संभालता । उद्यम शिव सुख कमलारे (प०) ॥ ८ ॥ (दूहा) माणि तेजें मुनि तरुठये । रथथकी स्त्री भरतार । देवै तीन प्रदक्षिणा । विधसुं चरण जुहार ॥ ९ ॥ देशना सुण पावन थया । ग्यान सुधारस पाय । को तप परभव तिल

कहै। कहियै श्रीमुनिराय ॥१०॥❀॥ (ढाल) अरथनूपअावसुं ए (एचाल)॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहैए। नाणी गुरु सुपसाय। दीपक सहु लोकनाए॥ कर्म सुअासुअ परअवै ए। इह अव फल निपजाय। करम गति वांकडीए ॥ ११ ॥ उहि नाण अव प्रागनो ए। नृप सुणें निरमल अाव। समकित सा हीयो ए। धर्मवतीको नृप बधु ए। जांएयोहे तत्व प्रस्ताव। साची जिन वा सनाए॥ १२ ॥ चौथ प्रमुख नृप चूंपसुं ए। किरिया शुद्ध करी एह। अलै चित्त अावसुं ए॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए। चाढै जिन चौवीश। रयण कंचण जड्याए ॥ १३ ॥॥ तिलक २ सें पांमियो ए। समकित एह सती स। जनम सफलो गिणें ए। अगवन तपविधि अाषीयै ए। नल कहै बोध वरीस। पीहर षटकायनाए॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतनाए। षट् उपवास क हीस। त्री चौ बीहारस्युं ए॥ चौथ दोय जिन बीरनाए। अजिता दिक बा वीस। आणा गुरु शिर वहीए ॥ १५ ॥ पोषध तीश त्रीनें थयाए। पूजन ति लक चढाय। तारक जगदीसनें ए। उद्यापन संघ अक्तिसुं ए। जन्म सफ ल नल राय। सूधैमन साधीयै ए॥ १६ ॥ सुण वांणी सम कित ग्रहैए। पयप्रणमी गुरु वीर। चित्त उमाहीयो ए॥ इण पर जे अवि आदरै ए। थायै चरम शरीर। मूल सुख शाशतो ए॥ १७॥ कलशः ॥ श्रीशांतिदाता त्रिज गत्राता अविक ध्याता सुखकरा। इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजश बांध्यो शिव घरां। आगमे आखै सुरीय साखै सगुरु अाषै सुण यथा। सुद्ध ध्यावै अविक अावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ ॥❀॥

इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तिलक तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ शुअ दिन गुरुके पास। तिलक तपस्या ग्रहण करकै। तीश (३०) उपवास करै। (प्रथम) श्रीऋषअदेव स्वामीके (६) उ उपवास करै(जब)॥❀॥

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्रीऋषअ देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

इस पदको (२०००) गुणनो करै। फेर श्रीमहावीर स्वामीके (२) दो उपवास करै। (जब) ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

इस पदको (२०००) गुणनो करै । और श्रीअजितनाथ स्वामीको आदलेकै (२२) बाईस भगवंतके (२२) उपवास करै जब

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्रीअजितनाथ स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ॥ ❀ ॥

इसी अनुक्रमसें बाईस भगवंतको गुणनो करै । (जिस दिन) जो महाराजके नामको उपवास होय । उसी नामको (२०००) गुणनो करै । और सर्व बिधि स्तवनमें लिखी है । उसी मुजब करै ॥ इति तिलक तपस्या बिधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शोलीयैको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिनेसर भाषीयोरे लाल । सहु व्रतमें सिर ताज (भवि प्राणीरे) । कषाय गंजन तप आदरो रेलाल । इणथी पातिक जाय (भ०वी०) ॥१॥ कोइ बरष तप आदैरे लाल । क्रोध गमावै फलतास (भ०) । मान करै जे प्राणियारे लाल । ते जगमें न सुहाय (भ०) ॥ २ ॥ व्रतमें माया आदरीरे लाल । स्त्री पणो पायो मल्लिनाथ (भ०) रूप पराव्रत कीया घणोरेलाल । आषाढ भूति गणिका साथ (भ० ३ बी०) च्यार कषाय छै मूलगारे लाल । उत्तम सोलै भेद (भ०) इम भव २ भ मतो थकोरे लाल । जीव पामें बहु खेद (भ० ४ बी०) एकाशण व्रत जे करैरे लाल । लाख बरस दुख हांणरे (भ०) नीवी व्रत दूजो कह्योरे लाल । एधारो जिन वर वांण (भ० ५) आंबिलनो फल बहु कह्योरे लाल । उपजै लबधि अपार (भ०) उपवास करतां भावसुंरे लाल । पामें भवनो पार (भ० बी० ६) इम दिन शोलै तप करैरे लाल । पूरण एव्रत थाय (भ०) देव गुरु पूजा करैरे लाल । तिणथी पातिक जाय (भ० ७) ए तप आदरथी करैरे लाल । मन बंछित फल थाय (भ०) नर सुर रि द्धि पिण भोगवैरे लाल । निश्चै सुगति जाय (भ० बी०) ॥ ८ ॥

इति १६ कषाय गंजन स्तवन संपूर्णम् ॥ इति शोलिया तप बिधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शोलियै तपकी बिधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्रोध १ । मान २ । माया ३ । लोभ ४ । (यह ४ कषाय में) अनंतान बंधियो १ । अप्रत्याख्यानियो २ । प्रत्याख्यानियो ३ । सं जलणो ४ । (इस माफक) एकेक कषायके च्यार च्यार भेद करनेसें

१६ भेद हुय (यह) १६ भेद कषायके दूर करनें कों । प्रथम एकाशणो १ । निवी २ । आंबिल ३ । उपवास ४ । इसी अनुक्रमसें १६ दिन तप करै । स्तवन सुणें । तप पूर्ण होणेंसें । यथाशक्ति उद्यापन करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४५) पैंतालीस आगम तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन गुरूके पास पैंतालीश आगम तप ग्रहण करै । २ दूज । ५ पांचम । ११ इग्यारस । (इत्यादि) ग्यान तिथिकै दिन । अनुक्रम सें उपवाश (वा) एकाशणा करै । (जिस दिन) जो आगमको तप होय । उसी आगमको गुणनो करै । सिद्धांत लिखावै । सिद्धांत सुणें । पढनें वालुंकों सहाज्य करै । अपनें शक्तिमाफक । सर्व ठिकाणें ज्ञानकी वृद्धि करे । (प्रणमुं श्रीगुरुपाय०) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणें । ऐसें (४५) दिन तपस्या पूर्ण होनेंसें । पैंतालीस (४५) आगम की पूजा करावै । मंदर पोशालमें ग्यानका उपगरण चढावै । (इत्यादि) अत्यन्त खुशी होके (४५) आगमका आराधन करै । यह तपश्या के करनेंसें । मूरखपणा दूर होके । शुद्ध आत्म ज्ञानकी प्राप्ति होय ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

अब (४५) (आगमके नामलिखते हें) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इग्यारै अंगको गुणनो ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीआचाराङ्गजी सूत्राय नमः ॥ १ ॥
२ ॥ श्रीसुयगडांगजी सूत्राय नमः ॥ २ ॥
३ ॥ श्रीठाणांगजी सूत्राय नमः ॥ ३ ॥
४ ॥ श्रीसमवायांगजी सूत्राय नम ॥ ४ ॥
५ ॥ श्रीभगवतीजी सूत्राय नमः ॥ ५ ॥
६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सूत्राय नमः ॥ ६ ॥
७ ॥ श्रीउपाशग दसाजी सूत्राय नमः ॥ ७ ॥
८ ॥ श्री अन्तगड दसाजी सूत्राय नमः ॥ ८ ॥
९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाइजी सूत्राय नमः ॥ ९ ॥
१० ॥ श्रीप्रस्नव्याकरणजी सूत्राय नमः ॥ १० ॥
११ ॥ श्रीविपाकजी सूत्राय नमः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारै उपांग नामः ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीउववाईजी सूत्राय नमः ॥ १२ ॥
२ ॥ श्रीरायपसेणीजी सूत्राय नमः ॥ १३ ॥
३ ॥ श्रीजीवाभिगमजी सूत्राय नमः ॥ १४ ॥
४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सूत्राय नमः ॥ १५ ॥
५ ॥ श्रीजंबुद्वीप पन्नत्तीजी सूत्राय नमः ॥ १६ ॥
६ ॥ श्रीचंदपन्नत्तीजी सूत्राय नमः ॥ १७ ॥
७ ॥ श्रीसूरपन्नत्तीजी सूत्राय नमः ॥ १८ ॥
८ ॥ श्रीकप्पियाजी सूत्राय नमः ॥ १९ ॥
९ ॥ श्रीकप्पवडंसियाजी सूत्राय नमः ॥ २० ॥
१० ॥ श्रीपुप्फीयाजी सूत्राय नमः ॥ २१ ॥
११ ॥ श्रीपुप्फचूलियाजी सूत्राय नमः ॥ २२ ॥
१२ ॥ श्रीवन्हीदसाजी सूत्राय नमः ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ७ छेदको गुणनो ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीव्यवहार छेद सूत्राय नमः ॥ २४ ॥
२ ॥ श्रीबृहत्कल्पजी सूत्राय नमः ॥ २५ ॥
३ ॥ श्रीदसाश्रुतस्कंधजी सूत्राय नमः ॥ २६ ॥
४ ॥ श्रीनिशीथजी सूत्राय नमः ॥ २७ ॥
५ ॥ श्रीमहानिशीथजी सूत्राय नमः ॥ २८ ॥
६ ॥ श्रीजीतकल्पजी सूत्राय नमः ॥ २९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश पयन्ना नामः ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीचोशरण पयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३० ॥
२ ॥ श्रीसंथारपयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३१ ॥
३ ॥ श्रीतंदुलपयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३२ ॥
४ ॥ श्रीचंदाविज्झिया सूत्राय नमः ॥ ३३ ॥
५ ॥ श्रीगणिविज्झिया सूत्राय नमः ॥ ३४ ॥
६ ॥ श्रीदेवविज्झिया सूत्राय नमः ॥ ३५ ॥

७ ॥ श्रीवीरथुवोजी सूत्राय नमः ॥ ३६ ॥
८ ॥ श्रीगछाचारजी सूत्राय नमः ॥ ३७॥
९ ॥ श्रीजोतिष्करंमजी सूत्राय नमः ॥ ३८ ॥
१० ॥ श्रीमहापच्चक्खाणजी सूत्राय नमः ॥ ३९ ॥

॥ ❀ ॥ मूलसूत्रजी का नामको गुणनो ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीआवस्यकजी सूत्राय नमः ॥ ४० ॥
२ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सूत्राय नमः ॥ ४१ ॥
३ ॥ श्रीउघनिर्युक्तिजी सूत्राय नमः ॥ ४२ ॥
४ ॥ श्रीदशमीकालकजी सूत्राय नमः ॥ ४३ ॥
१ ॥ श्रीअनुयोगद्वारजी सूत्राय नमः ॥ ४४ ॥
२ ॥ श्रीनंदीसूत्रजी सूत्राय नमः ॥ ४५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ११ गणधर तपश्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ शुभ दिन गुरूके पाश (११) गणधर तप ग्रहण करै । (११) दिन उपवाश (वा) एकाशणा करै । (जिस दिन) जोगणधर महाराजको तप होय । उसी नामको (२०००) गुणनो करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (११) गणधरोंका नाम लिखते हैं ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीइंद्रभूती गणधराय नमः ॥
२ ॥ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ॥
३ ॥ श्रीवायुभूति गणधराय नमः ॥
४ ॥ श्रीव्यक्तभूति गणधराय नमः ॥
५ ॥ श्रीसुधर्मास्वामी गणधराय नमः ॥
६ ॥ श्रीमंडित स्वामी गणधराय नमः ॥
७ ॥ श्रीमोर्यपुत्रजी गणधराय नमः
८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ॥
९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ॥
१० ॥ श्रीमेतार्यजी गणधराय नमः ॥
११ ॥ श्रीप्रभवजी गणधराय नमः ॥

॥ यह (११) गणधर। भगवंत श्रीमहाबीर स्वामी के पास अर्थ शुणके । सर्व सूत्रके रचना करनें वाले भए । (इसी सें) सर्व भव्यजी व। परम मङ्गल जानके । यह तपस्या करै। शुद्ध भावसें गणधरपद आ राधन करै। गोतमरास सुणें । पूर्ण होनेंसें । गणधर महाराजकी पूजा करै। आचार्यादिककी भक्ती करै । (यथाशक्ति) परमान्न भोजनसें सा हमी बछल करै॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकार तपबिधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन गुरूके पास नवकार तप ग्रहण करै । जिस पदका जितना हरफ होय। इतनाई उपवास करै। उसी पदको (२०००) गुणनो करै। (सो लिखते हें) ॥

१ ॥ णमो अरिहंताणं । उपवास ॥ ७॥
२ ॥ णमो सिद्धाणं । उपवास ॥ ५ ॥
३ ॥ णमो आयरियाणं । उपवास ॥ ७ ॥
४ ॥ णमो उवझायाणं । उपवास ॥ ७ ॥
५ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं । उपवास ॥ ९ ॥
६ ॥ एसो पंच णमुक्कारो । उपवास ॥ ८ ॥
७ ॥ सव्वपावप्पणासणो । उपवास ॥ ८ ॥
८ ॥ मङ्गलाणंच सव्वेसिं । उपवास ॥ ८ ॥
९ ॥ पढमंहवइ मङ्गलं । उपवास ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसें नवकार मंत्रका । ६८ उपवास करै। (किंकप्पत्तरु रे अ याण०) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्भित स्तवन सुणें (सो) पूर्वे लिख्यो है। तप पूर्ण होनेंसें । यथाशक्ति नवपदको उद्यव करै। (यह) नवकार मंत्र १४ पूर्वको सार भूत है । जो भव्यजीव शुद्धभावसें सेवन करेंगे (सो) अनेक सुखकों प्राप्त होंगे। इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥ ❀ ॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै (सो) बिधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (प्रथम) ५ साथिया करैं । (नमंत०) यह गाथा

पढकै। शक्ति माफक ग्यान पूजा करै। इरियावही पम्मिक्कमें। एकलोगस्स को काउसग्ग करै। (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। नीचा बैठकै। मु हपत्ती पम्मिलेहै। दो वांदणा देवै। स्थापनाजीकों खमासमण देई (भ गवन्) अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह। (इसो कहकै) चैत्य वंदन करै। णमोत्थुणं (इत्यादि) अरिहंत चेइयाणं० (अन्नत्थू) कहकै (४) थुई कहै। चोथीगाथा कहकै। नीचाबैठै। णमोत्थुणं कहै। (ऊभा होकै) (श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं)। अनत्थू कहकै १ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) नमोऽर्हत सिद्धा। कहकै॥ श्रीमते शांतिनाथाय। नमः शांति बिधायिने। त्रैलोक्य स्यामरा धीस। मुकुटाभ्यर्चितां घ्रिये॥ १॥ यह थुई कहै (शांतिदेवता आराधना र्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थू० कहै॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्। शांतिं दिशतु मे गुरुः। शांतिरेव सदा तेषां। येषां शांतिर्गृहे गृहे॥ १॥ यह थुई कहै। पीछे श्रुतदेवता। क्षेत्र देवता। भुवन देवताको काउसग्ग अनु क्रम सें करै। एक एक नवकारको काउसग्ग करकै। अपणी २ थुई कहै। पीछे (शासनं) देवताको काउसग्ग १ नवकारको करै॥ या पाति शासनं जैनं। सद्य प्रत्यूह नाशनी। साभिप्रेत समृध्यर्थं। भूयाद्वासनदेवता॥ १॥ यह थुई कहकै (समस्त वेयावृत्तिकर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) अ नत्थू० एक नवकारको काउसग्ग करै। (पारकै) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः। जिनशासन संस्थिताः। देवान् देव्य स्तदन्येपि। संघरक्षत्वपायतः॥ १॥ यह थुई कहकै। नीचाबैसै। नमोत्थुणं कहकै। जयवीयराय तांई। चैत्यवंदन करै। खमासमण देकै। भगवन् (अमुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) लोगस्स कहै। खमासमण देकै। ३ नवकार गुणें। फेर खमासमण देकै (इच्छकार भगवन्) अमुक तप ग हण दंमुक उच्चरावो जी। गुरु कहै उच्चरावेमो। (ऐसा कहै)॥ अहएहं भंते। तुह्माणं समीवे। अमुकतवं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। (तंजहा) दव्व उ। खित्तउ। कालउ। भावउ। दव्वउणं अमुकतवं। खित्तउणं इत्थवाअन्नत्थ वा। कालउणं जावपरिमाणं। भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि। उलेणं न

ञलिज्जामि। सन्निवाएणं नन्नविज्जामि। जाव अरिहंतारा केवलिणं नमुक्कारेणं पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति सर्व तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ सर्व तप पारण बिधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ग्यान पूजा करके । इरियावही पम्मिक्कमें। (अमुक तप पारिवा०) मुहपत्ती पम्मिलेहैं । २ वांदणा देवै । इच्छाकारेण संदिसह ञगवन् तुम्हेञह्मं अमुक तप पारावेह (गुरु कहै पारावेमो) इच्छामि खमासमणो० । इच्छाकारेण संदिसह ञगवन् । अमुक तप निरुवणत्थं काउसग्गं करावेह। (गुरुकहै करावेमो) पीछे देववंदन करके । अमुकतप पारणार्थं करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कहकै। १ नवकारको कावसग्ग करै। स्तुति गाथा कहै । पीछे णमोत्थुणं कहै । (बैठकै) ञगवन् अमुक तप करतां। अविधि आसातनायें करी । जो दूषण लागो होय। सोमन बचन कायाये करी मिच्छामि दुक्कडं । (और) ग्यान । ञक्ति, द्रव्यसें, ञावसें, किया होय (सो) प्रमाण फलदायक होजो । (गुरू कहै नित्थारगपार गाहोह) । पीछे। पच्चख्खाण करै (अमुक तप आलोयण निमित्तं करेमि काउसग्गं) अन्नत्थु कहै। ४ लोगस्सको काउसग्ग करै। प्रगट लोगस्स कहै। पीछे उपगरण पात्र ञत्तपानादिकसें साधु ञक्ति करै। अपनें शक्ति माफक। जैन विद्याभ्यास करावेंवाले। विद्यागुरूकी ञक्ति करै। साहमी बछल करै। पहरावणी करै। पीछे जाचकांकों दान सन्मान करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति सर्व तपस्या पारण बिधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सूतक विचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुत्र जन्म होणेंसें १० दिन सूतक । पुत्री जन्म्यां दिन १२ सूतक । (और) जो स्त्रीकै पुत्र होय । उस स्त्रीकै एक माशको सूतक । पुत्र होते मरण पामें (तो) दिन १ सूतक ॥ परदेशे मृत्यु होइ (तो) दिन १ सूतक ॥ गाय । भेंश । घोडी । सांढ । घर मांह व्यावै (तो) दिन १ सूतक । मरण हुवां कलेवर घर वाहर लेजाय । जहांतक सूतक । दाश दाशी अपनी नेष्टायें रहते । पुत्र पुत्रादिकका जन्म मरण हो (तो) दिन ३ सूतक (और) जितना महिनाको गर्भ गिरै । तितना दिन सूतक । (अब) कोईकै जन्म मरणका सूतक होनेंसें १२ दिन देवपूजा न करै । (जिसमें) मृतककै सूतकमें । घरका मूलकांधिया १० दिन देवपूजा न करै । और घरका तीन दिन देव पूजा न करै । (और) मृतकनें बूवा हो (तो) २४ पहर पडिक्कमण न करै (जो) सदाका अखंम नियम हो । (तो) समता भाव रखके संवर पणामें रहै । पर मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करै नहीं । स्थापना जी कै हाथ लगावै नहीं । और जो मृतक कों बूवा न हो (तो) आठ पहर पम्मिक्कमण न करै । भेंसकै जब बच्चा होय । तब १५ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै । गायकै वच्चो होय (तो) १७ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै । बकरीको दूध दिन ८ पीछै पीणो कल्पै ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ रुतुवंती स्त्री चारदिन भांमादिकनें न बूवै ॥
॥ २ ॥ चार दिन प्रतिक्रमण न करै ॥
॥ ३ ॥ पांचदिन देवपूजा न करै ॥
॥ ४ ॥ रोगादिकारणें तीन दिवश उपरांत कोईस्त्रीके

रक्त चलतादीसै जिसका विशेष दोष नहीं । सुद्ध विवेकसें पवित्र होकर दिन ५ पीछे थापना पुस्तक बूवै । जिन दर्शन करै । अग्रपूजा करै । परंतु । अंग पूजा न करै । साधुकों पम्मिलावै रुतुवंती तपस्या करै सो तो सफल होय (परंतु) रुतुदिनमें जिनपूजा, प्रतिक्रमणादिक किया सफल न होय ॥ ऐसाचर्चरी ग्रंथमें कहाहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होय। तहां १२ दिन साधु आहार पाणी न वहरै॥ सूतकवाले घरका जल अग्निसें १२ दिन देव पूजा न करै॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निशीथ सूत्रके १६ शोलमाउद्देशामें जन्म मरण सूतक घर दुर्गंछनीक कहा है॥ ❀ ॥ गायके मुत्रमें २४ पहरपीछे। जेंशके मुत्रमें १६ पहर पीछै। गाम्र, गधेडी, घोमीके, मुत्रमें ८ पहरपीछे। नरनारीके मुत्रमें चार पहर पीछै। समुर्छिम जीव उपजै॥ ❀ ॥

(इत्यादि) संक्षेप सूतकका विचार इहां लिखा है। विशेष विचार शास्त्रांतरसें जाणना॥ इति सूतक विचार संपूर्णम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ श्रावक चवदै नियमका प्रमाणकरै (सो) लि०॥❀॥

॥ ❀ ॥ सचित्त १। दव्व २। विगई ३॥ पाणहि ४। तंबोल ५। वत्थ ६। कुसुमेसु ७॥ वाहण ८। सयण ९। विलेवण १०॥ बंभ ११। दिशि १२। न्हाण १३। भत्ते सु १४। (अर्थः)॥ श्रावक नितप्रति नियम संभालै। दिनमें जो बस्तु अपनें अंग खातै लगै। उसीका प्रमाण रक्खै। उपरांत त्याग करै। तहां प्रथम (सचित्त वस्तुको परिमाण करै) मट्टी सर्व जाति। पाणी सर्व जाति। जल, अग्नि, वायु। वनस्पतीका छेदन भेदन। तरकारी सर्वजाति। फल सर्वजाति। परवल। तोरी। केला। इत्यादि सचित्तका परमाण करै॥ १॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूसरा द्रव्य परिमाण)॥ तहां धातु वस्तु की शली। (तथा) अपणी आंगुली विनां। जो वस्तु मुखमै दीजै। सो सर्व द्रव्यकी गिणती में आवै। नामांतर। स्वादांतर। स्वरूपांतर। परिणामांतर। द्रव्यांतर होणेंसें द्रव्यांतर होइ। (यथा) गहुं एक द्रव्य। तिसकी पतली रोटी। फीणा रोटी। वेढवा रोटी। बाटी। यह सर्व द्रव्य जूदा कहिये। (इस प्रकारै) सर्व द्रव्य खांणेमें आवै। भात दालि। रोटी। मांम्यिो। पलेव। तरकारी सर्व जाति। पापम। खीचीया। जम सर्व जाति। फिणी घेवर। हेसमी। खाजा। (इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करै) इहां उत्कृष्ट द्रव्यको नाम ले रक्खे (तो) एकही द्रव्य कहीयै। (जैसें) मेवैकी खीचमीका नाम

लेके रक्खे (सो) अनेक द्रव्य निप्पन्न है (परंतु) एक द्रव्य कहियै ।
इति द्रव्य प्रमाण दूसरा नियमः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (तीसरा विगय परिमाण नियमः) ॥ ❀ ॥ (तहां) दश विगयमें च्यार महाविगयका तो त्याग होताहै । (और ६ विगय) घृत १ । तेल २ । मीठा ३ । दूध ४ । दही ५ । कढाह विगय ६ । धारणा प्रमाण रखै ।

॥ ❀ ॥ (अथ चौथा पादत्राणनियमः ।) ॥ ❀ ॥ तहां । जूती । सकाऊ । मोजा । आपणा । इतना विराणा । ऐसें दिन प्रतें धारणाप्रमाण मोकलारखै ॥ इति पाणहि नियमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पांचमा तंबोल नियम मध्ये) ॥ ❀ ॥ पांन (तथा) बीडा । सुपारी । लवंग । इलायची । गोटी, वरी । जायफल । जावंत्री प्रमुख सर्व स्वादिम वस्तु । किरयाणा प्रमुख सर्वजात धारणा प्रमाण रक्खै ॥
इति तंबोल नियमः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (छठा वस्त्र नियम मध्ये) ॥ ❀ ॥ पोसाक १ । तथा ४ । छूटा वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रक्खै । पोसाक १ मध्ये । पघरी १ । जामो १ । कमरबंधो १ । धोती १ । इकपट्टो उतरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक पोसाक कहीयै । अैसें नही कर सकै (तो) ४० तथा ५० कपडा दिन मध्ये मोकला । पराया वस्त्र भूल चूकमें आवै (तो) जयणा ॥ ❀ ॥
इति वस्त्र नियमः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

(❀ ॥ अथ सातमा फूल नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां गुलाब । चंपेली । वेला । केवडा । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजारा कमल (इत्यादि) सर्व फूलका धारणा प्रमाणें परिणाम करै ॥ ❀ ॥
इति फूल नियमः ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (आठमा वाहन नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां रथ । गाडी । घुम्मट हिल । खडसल । कोच । पालकी । घोडा । हाथी । चोपाला म्याना । (इत्यादिक) सर्व थल वाहन जाती ॥ मोर पंखी । बतक । घुडदोड । लचकार । मगर । पनसोई । पलवार । बजरा । (इत्यादिक) सर्व नावजाति ।

सर्व तिरता । फिरता । चरता यह तीन प्रकारके वाहन धारणा प्रमाणें राखै ॥ ❀ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ शय्या नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां पिलंग । खाट । तख त । चौकी । पट्टा गद्दी । खुरसी । वनात । पट्टसूजनी । सेजुंजी । फुलीचा । चांदणी । सीतल पट्टी । सफ । चटाई सर्वजाति । दरखतकी डालका । चम डेका । कांबला । मुखमल । कारचोपी (इत्यादि) धारणा प्रमाणै शय्या प्रमाण करै ॥ ❀ ॥ इति शय्यानियमः ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ दशमा विलेपननियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां । सरसोंका । राईका । आंवेका । तेल । फुलेल । सर्व जातिका । केशर । चंदन । कपूर कस्तूरी । रोली (इत्यादि) शरीर सुख वास्ते । (तथा) रोगादिकारणें औषधादिकका विलेपन फोरां ऊपरि मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन (इ त्यादि) अंगोपांगमें लगाणा (सो) विलेपन धारणा प्रमाणें परिमाण करै इति विलेपन नियमः १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ ब्रह्मचर्यनियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां रात्रिकों (तथा) दिन कों । सूईमोरैके दृष्टांत भोगादिकका प्रमाण करै । स्वप्नकी, मन, वचनकी, जयणा ॥ ❀ ॥ इति ब्रह्मचर्य नियमः ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ दिशि नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां । पूरब १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैरुतकूण ६ । वायव्यकूण ७ । ईशान कूण ८ । अधोदिशि ९ । ऊर्ध्वदिशि १० । यह दश दिशिकों अपनें जा नेंका प्रमाण करै । चिठी लिखणी । आदमी भेजणा । देशांतरकी चीठी वाचणी । तिसकी जयणा ॥ इति दिशि नियमः) १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ तेरमा स्नान नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां । आजदिन म ध्ये स्नान २ । तथा ४ । वेर मोकला । परंतु पाणीका तोल रखै (तथा) धरा प्रमुखका प्रमाण रखै । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करुं । अ धिक नही ढोलुं ॥ ❀ ॥ इति स्नान नियमः १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ चौदमा भात नियमः) ॥ ❀ ॥ दिनमध्ये भात सेर २ तथा ४ । दो वेर (तथा) च्यारवेर खाउं । उपरांत दुविहार । (तथा)

चौविहार धारणा प्रमाणे रक्खे (तथा) दिनमध्ये जल पीणे में आ वे । तिसका प्रमाण रक्खे । तोलसें तथा मापसें ॥ ❀ ॥ ॥
इति चौदह नियम भाषा ॥ १४ ॥ समाप्तम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनभुवन (अथवा) जिन प्रतिमा आगे शुद्ध सपे द वस्त्र पहिरके । चंदन केशरको तिलक करे । चावल चाढे । पीछे । अ खंड तंदुल मुठी ३ थाल मध्ये रक्खे । तिन ऊपर नालेर रोकनाणो धरे । तीन प्रदक्षिणा देके । इरियावही पडिक्कमे । (इच्छकार०) सम्यक्त सामाई आरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह (गुरु कहे वंदावेमो) चैत्यवंदण करे । बाम पासे चावलांको साथियो करे । श्रीफल धरे । पीछे गुरू वर्द्धमान विद्या अभिमंत्रित श्रावक मस्तके वास क्षेप करे । वर्द्धमान स्तुतीसें देववंदन करावे । पीछे सतरे थूईमें नवकार १ एकको का उसग्ग करे । पीछे शासन देवी निमत्ते लोगस्स ४ काउसग्ग करे । (पार के) प्रगट लोगस्स कहे । पीछे नमस्कार ३ गुणके । शक्रस्तव कहे । नमोऽर्हत् सिद्ध० कहके । बडो स्तवन कहे । पीछे जयवीयराय कहे । इति नंदी विधिः ॥ पीछे खमासमण देई । श्रुतसामायक । आरोहणार्थं काउसग्गं करावेह (गुरू कहे करावेमो) पीछे सम्यक्त सामाइ आरोपणा र्थं करेमि काउसग्गं । च्यार ४ लोगस्सको काउसग्ग करे (पारके प्रग ट लोगस्स कहे । पीछे ३ बेर नवकार गुणके । गुरूके पास ३ वेर सम्यक्त दंडक उच्चरे ॥ (गुरू) पाठ बोले । उसीकी मनमें धारणा रखे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (सूत्रं) (अहन्नं भंते) तुह्माणं समीवे मिछत्ताउ पडिक्कमा मि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । नोमेकप्पइ । अज्जप्पभिइ अन्नतीत्थिएवा । अन्नतीत्थि देवयाणिवा । अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिवा । वंदि त्तएवा । नमंसित्तएवा । पुव्विं अणालित्तएणं आलवित्तएवा (तेसिं) असणंवा। पाणंवा । खाइमंवा । साइमंवा दाउंवा । अणुप्पाउंवा । तेसिं गंधमल्लाइं पेसि उंवा । (नन्नत्थ) रायाभियोगेणं । गणाभियोगेणं । बलाभियोगेणं । देवा भियोगेणं । गुरूनिग्गहेणं । वित्ती कंतारेणं । तंचउव्विहं (तंजहा) दव्वउ ।

खित्तउ। कालउ। भावउ। तत्थ (दव्वउ) दंसणदव्वाइं अहिगिच्च। (खित्तउ जाव अरह मज्झिमखंमे (कालउ) जावज्जीवाए। (भावउ) जाव छलेणं न छलिज्जामि। जाव सन्निवाएणं नभविज्जामि। जाव केणइ उम्माइ वसेणं। एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवमइ। तावमे एसो दंसणाभिग्गहो। अन्नत्थणा भोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तिआ गारेणं। वोसिरइ॥ (पीछे) ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुके पाश हाथमें लिखावै। जिनप्रतिमाकों वासक्षेप चढावै। नवकार पढतो थको ३ प्रदक्षिणा देवै (देव गुरू प्रतें वांदै) पीछे श्रुत सामायिक थिरी करणार्थे। सत्तावीश उत्साशप्रमाणें। एक लोगस्सको काउसग्ग करै। एक लोगस्स कहकै पारै। पीछै सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै। अति आनंद सें ऐसा अभिग्रह वचन बोलै॥ अरिहंतो महदेवो। जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो। जिन पन्नत्तंतत्तं। इय सम्मत्तं मए गहियं॥ १॥ पीछे गुरू धर्म्म देशना देवै। मिथ्यात्व वरजै। नित्य चैत्यवंदन इतनी वेर करुंगा। इतना नवकार नित्य गुणुंगा। केशरादि द्रव्य वर्षप्रतें इतना चढावुंगा। ग्यान, दर्शन चारित्रके भक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचूंगा। शील व्रत, इतनी पर्वतिथि पालुंगा। नित्य पच्चक्खांण इस माफक करुंगा (दिनकों) नवकारस्यादि व्रत (तथा) रात्रीकों चउविहार। तिविहार। दुविहार। प्रमुख। और। बावीश अभक्ष। बत्तीश अनंत काय। विदल प्रमुख सर्व छोडुंगा। (इत्यादि) अपनी धारणा माफक सर्वबस्तूका प्रमाण। गुरूके सन्मुख करै १२ व्रत ग्रहण करै। बारेव्रतकी टीप सुणें। जिसमें लिया हुवा व्रतकों अतीचार नलगै। ऐसा उपियोग सदारक्खै॥ इति सम्यक्तारोपण विधिः॥❀॥

॥ ❀ ॥ प्राणातिपातव्रत दंमक लि० (१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते)। तुह्माणं समीवे। थूलग पाणाइ वायं संकप्पि उ निरवराहं पच्चक्खामि। जावज्जीवाए। एग विहं। एगविहेणं (अथवा) दुविहं। तिविहेणं। मणेणं। वायाए। काएणं। न करेमि। न कारवेमि। तस्स भंते। पडिक्कमामि। निंदामि॥ गारिहामि। अप्पाणं वोसरामि॥ यह पहला व्रतका दंमक बार ३ उचरावै॥ १॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते । तुह्माणं समीवे । थूलगं मूसावायं । जीहा छेयाइहेउअं । कन्नालीयं । गोवालीयं । भोमालीयं । थापणमोसा । कूटसा खीयं । पंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसए । दव्वउ । खित्तउ । काल उ । भावउ ॥ दव्वउणं मूसावायं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । बलेणं न बलिज्जा मि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवमइ । ताव अभि ग्गह । दुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा भोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्त रागारेणं । सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसरइ ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे) । अदिन्नादाणं । खत्तखणणाइयं । चोरं काकरं । रायनिग्गह कारयं । सचित्ता चित्त वत्थुविसयं पच्चक्खामि । द व्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं । अदिन्नादाणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । बलेणं न बलिज्जामि । अणेण केणवि रोगाईयं । एसो परिणामो न परि वमई । ताव अभिग्गह । दुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थ० सहस्सा० मह त्त० सव्व० वोसिरइ ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे) । उदारिय वैक्रियभेयं । थूलमेहु णं पच्चक्खामि । अहागहियभंगएणं । दिव्वं । तिरित्थं । माणसियं । एगवि हं । एगविहेणं । पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्व उणं मेहुणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भाव उणं । जावगहेणं न गहिज्जामि० । बलेणं० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे) । परिग्गहंपडुच्च । अपरिमियपरि ग्गहं पच्चख्खामि । धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं । इच्छापरिमाणं नवसंप ज्जामि । अहागहियभंगएणं । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भा वउ । दव्वउणं । नवविहपरिग्गहं । खित्तउणं । इत्थवा अणत्थवा । कालउ णं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं । नगहिज्जामी० । बले० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पच्चख्खामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं । दिशिपरिमाणं । खित्तउणं धारणा परिमाणं । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं । जावगहेणं न गहिज्जामि । जाव ग्रले० । तावअन्निग्गह । अन्न० । सह० । मह० । स व्व० । वोसरइ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे । भोगोवभोगवयं (भोयणउ) अ नंतकाय बहुबीया राईभोयणाइं परिहरामि । (कम्मओणं) पन्नरस क म्मादाणाइं । इंगालकम्माइयाइं । बहु सावज्जाइं खरकम्माइयं । रायाभियो गंच परिहरामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं भोगोवभोगवयं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि० । ग्रलेणं० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व । वोसिरइ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंडं पच्चक्खामि । अव ज्झाण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदांन । प्रमाद चरितं । चउव्विहं अन्नत्थ दंडं । जहा सत्तिए परिहरामि (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भा वउ ॥ दव्वउणं अन्नत्थदंडं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जा वज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं नगहि० । ग्रलेणं० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं । देसावगासियं । अतिथिसंविभागवयं । जहा सत्तीए पडिवज्जामि । इच्चयं सम्मत्तमूलं । पंचाणुव्वयं सत्तसिक्खावयं । दुवालसविहं सावगधम्मं उवसं पज्जत्ताणं विहरामि (तंजहा) । दव्वउ० अन्नत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहि वत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ षट्साख । उ ठंडी । च्यार आगार सहित पालूं ९ । १० । ११ । १२ । ॥ ❀ ॥

इति श्रावककों संक्षेप बारैव्रत उच्चरावण विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुनिमालका लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषभ प्रमुख जिणपाय युग प्रणमुं । शिवसुख दायक मनह उ

ल्लास। पुंमरीक श्री गोतम आदिक। गणधरगुरु मन कमल विकास॥ ॥ १ ॥ (प्रहसम सूधा साधु नमुंनित। आवे श्रमण सुगुरु भगवंत। नाम ग्रहण करि पाप पखालूं। परमानंद सुमति विकसंत॥ २॥ (प्र०) भरथ महामुनि प्रथम चक्रीसर। बाहूबल उपशम भंमार। सूरयसा दिक आठ मुनीसर। पाम्यो विमलाचल भव पार॥ ३॥ (प्र०) रिखभ बंस जे अनुक्रम हुवा। मुनिवर कोमी लाख असंख। श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा। कल मल कालक मुंकी कंख॥ ४॥ (प्र०) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति। साधु महाबल संयम सींह। अचलादिक बलदेव अष्टमुनि। राम रिषीसर नवम अबीह॥ ५॥ (प्र०) श्रीप्रतिबुद्धि प्रमुह छह सुंदर। श्रीमल्लि नाथ पूरवभव मित्र। पहुता परम यतीसर शिवपुर। पाली श्रीजिन आण पवित्र॥ ६॥ (प्र०) बंदुं विस्नु कुमार लबधि निधि। खंदग सूरना सीस सै पंच। कार्तिक सेठ सुसाधु कीर्त्त धर। श्रमण सुकोसल व्रत निरबंच॥ ७॥ (प्र०) श्रीयदुवंस अरिष्टनेम सुसागर। प्रमुख आठ अणगार प्रधान। श्री रहनेमि नेमि जिन बंधव। निरमल गुण गण रयण निधांन॥ ८॥ (प्र०) जाली मयालीनें उवयाली। पुरस सेण वारसेण प्रयुन्न। संब अनें अनिरुद्ध रिषीसर। सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न॥ ९॥ (प्र०) कुमर अनीकज सादिक षट्मुनि। गुणगिरुवो श्री गजसुकमाल। ढंढण रिष श्रीथावचा सुत। सहस साधु संजम सुकृपाल॥ १०॥ (प्र०) (राग धन्याश्री) ॥ ❀ ॥ सहस श्रमणसुं सुक संयम धरो। पंचसयांसुं सेलग मुनिवरो। सिद्ध थया श्री पुंमर गिरवरो। करुणाकर प्रणमुं संपद करो। (उल्ला०) संपदकरो शम दम रिषीसर साधु सारण सोहए। अंतर प्रकासै तिमर नासै भविक जन मन मोहए। प्रत्येक बुद्ध प्रबुद्ध नारद मुनि प्रमुख पेंतालए। दमदंत महा रिष कुंजवारै साधु नमुं त्रिहुं कालए॥ ११॥ (चाल) रंग रिषभदत्त रतन त्रय मुणी। समरुं देवानंदा साहुणी। पांचे पांमव प्रणमुं मुनिपती। केशि पएशी बोधक जिनमती। (उल्लालो) जिनमती कालक पुत्र मेहल थिवर आणंद रक्खियो। अणगारका सब धर्म भाष्यो साधि शिवपुर सरक्खिओ। कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपसमइ। श्रीपुंमरीक

महासुनीसर प्रणमीयै सुन्न संयमी ॥ १२ ॥ (चाल) बंकुंबलकल चीरी केवली । श्रीअैमत्तो मुनिवर मनरली । श्रीकरकंडू कुमह नमि निग्ग या । निज २ देसे नरवर श्रीजुवा । (उल्लालो) श्रीजुवा एरिषन्नादि देखी थया वन वइरागीया । संजम सिरि न्नजि मोह निद्रा तजीय जोगै जागी या । प्रत्येक बुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें । सुप्रसन्न चंद मु निंद निरमम प्रेम प्रणसुं प्रहसमें ॥ १३ ॥ (चाल) खंतै खुल्ल कुमार सु ध्याईयै । लोहच्चासुनि चरणे लयलाइयै । कालउदाई प्रमुख महासुणी । सं जम सुद्ध जयंती साहुणी (उल्लालो) साहुणी जाणी जग वखाणी प रम पद सुख पामीया । श्री श्रमण भद्र सुभद्र सुंदर अचल आतम रामीया । श्री सुप्रतिष्ट यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो । चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुआ गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ (चाल) सिरीसिव राय रिषीसर वंदीयै । दशा रण भद्र नमुं दुख द्वंदीयै । अर्जुन माली सुख संजम धरो । सुदृढ प्रहारी शिवरमणी वरो । (उ०) शिवरमणीवरो श्रीकुरगडू कुमावंत प्रसिद्धउ । वलि च्यार उग्रविहार तपसी सहत सुविहत सिद्धउ । कोडिन्न दिन्न अनें सेवाली पनर शतक तिडोत्तरा । गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणा धरा ॥१५॥ (चाल) गरुआ श्रीगुणसागर गाईयै । प्रथवी चंद्र प्रणम्यां सुख पाईयै । खंद कुमार सदा अभिनंदीयै । नमिह अरहमित्र मन आणंदीयै । (उ०) आणंदीयै मेतार्य मुनिवर भगतिसुं समरी करी । रुष इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी । श्रीइंद्रनाम निग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो । तेतली पुत्र सुबुद्धि बोधित सु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ (चाल) उदय २ कर जगि २ जस तणो । श्रमणसुदंशण शील सुहावणो । श्रीअन्नयसुत आद्रकु मारए । चित्त चतुरनर चित चमकारए । (उ०) चमकार सार सुजात रिषव रदेव सांनिध जश धणी । गांगेय गिरुवो गुणेगाजै सु जिनपालत हित ध णी । श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव ए । श्रीकपिलरिषि ह रिकेश वलिसुनि नित नमुं निरखेवए ॥ १७ ॥ (चाल) जति जयघोष वि जयघोषै जुत । सेवुं श्रुतधर श्री देवजसुत । श्रीइखुकार नृपति कमलाव ती । राणी भृगुसुत पोहित सुभमती । (उ०) सुभमती जेहनी जशा भा

यों पुत्र दोय वखाणीयै । ए बहुं लेई चारु चारित्र मुगति पुहता जाणीयें। क्षत्रिय मुनीसर साधु संजम धर्मरुचि सुमहाव्रती । निर्ग्रंथ नाथ अनाथ बंदुं समुद्रपालसु संयती ॥ १८ ॥ (चाल) कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्यौ । विध सुं शीतल शिवकमला मिल्यौ । धन २ धन्नो सुरगिर धीरए । वीरप्रशंस्यौ तपगुण वीरए । (त्र०) श्रीवीर दिखित श्रीसुबाहु भद्रनंद कुमारए । आदिक दसेरिष चरिय जेहना सुख विपाक उदारए । श्रीचंरुद्र सुशीस खंदग खिमानिधि कहीयै इण कलै । कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्याफलै ॥ १० ॥ (चाल०) अंगप्रसुख रिषच्यारे आदरी । विधिसुं संजम सिद्धि वधू वरी । अन्नै कुमार मुनि अन्नयं करो । हल्ल विहल्ल सु आतम हितकरो । (त्र०) हितकरो दयाधर मेघमुनिवर नंदिषेण आराधीयै । सुनक्ष त्रनें सर्वानुभूती शमर शिवसुख साधीयै । श्रीसींह साधु अनें उदायन चरम राज रिषीसरो । श्रीशालभद्र सुधन्न मुनिवर समरतां मंगल करो ॥ २० ॥ (राग धन्यासरी) ॥ वरु वैरागी वरनमुं । जुगवर जंबूसामि । प्रभव सिव्यं भव परगम्यौ । सुजश यशो भद्र स्वामि ॥ २१ ॥ (महासुनीसर नित नमुं जी । नामें घर नवनिद्ध । (वाधै रिद्ध समृद्ध) ॥ २२ ॥ (म०) ॥ जग संभूति विजै जयो । भद्रबाहु कृतभद्र । जग जोगीसर जागतो । मुनिवर श्रीथूलभद्र ॥ २३ ॥ (म०) भद्रबाहु स्वामी तणा । च्यारि शिष्य मुनिराय शीत परीसह जिण सह्या । सार्या २ आतम काज ॥ २४ ॥ (म०) ॥ अज्ज महागिरि जांणीयै । अज्जसुहत्थि विशाल । संप्रति नृप पडि बोहीयो । श्री अवंती सुकमाल ॥ २५ ॥ (म०) ॥ आरिजसांमि प्रसंसीयो । अज्जसुभद्दमु नीस । अज्जमंगु महिमानिलो । सींहगिरीस मुणीस ॥ २६ ॥ (म०) ॥ धन गिरि थिवर महासुनी । श्रीवयरस्वामि मुनिराय । अरहदिण मुनि अपह र्यो । भद्रगुप्त निरमाय ॥ २७ ॥ (म०) ॥ वयरसेन विद्यावरू । श्रीरक्षत गुरु दक्ष । पूसमित्र गुण गह गहै । प्रभु दुरवलका पक्ष ॥ २८ ॥ (म०) ॥ विंझसाधु सुविधइ भरयो । श्री थंभिल सुमहिद्ध । सूत्र अरथ रतनें भरयो । क्षमाश्रमण देवद्धि ॥२९ ॥ (म०) ॥ पंचमकाल चरमामुनी । श्रीदुपसै शूर दयाल । सुक्रिया खरतर सही । जिन आग्या प्रतिपाल ॥ ३० ॥ (म०)॥

इम पनर कर्मभूमी जिके । हुआ हुस्यै अनंत । वर्त्तमान श्रीसाधुजी । रतनत्रई गुणवंत ॥ ३१ ॥ (म०) ॥ ब्राह्मी सुंदरी राय मई । साहुणी चंदन बाल । आदिक शीलवती सती । त्रिकरण सुद्ध त्रिकाल ॥ ३२ ॥ (म०) ॥ संवत सोल छत्तीसए । श्रीविमलनाथ सुरसाल । दिक्षा कल्याणक दिनें । गुंथी श्रीमुनि माल ॥ ३३ ॥ (म०) ॥ रिणीपुरै रलीया मणो । श्रीशीतल जिण चंद । सूरविजैराजे सदा । संघ अधिक आणंद॥ ३४ ॥ (म०) श्रीमति भद्र सुगुरू तणें । सुपसायै सुखकार । चारित संघ वखाणीयै । सदा २ जय कार ॥ ३५ ॥ (म०) मनहर श्रीमुनिमालका । गुणगण परमलपूर । कंठठ वइ उत्तम जिके । पामें सुखभरपूर ॥ ३६ ॥ (क०) महामुनीसर गावतां सुरतरु सफल समान । अष्ट महा सिद्धि घरफलै । सदा २ कल्याण ॥३८॥ (म०) ॥ इति मुनिमालका संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वर्त्तमान चोवीसीवंदुं । मन सूधै नितमेवरी माई । रुषभ अ जित संभव अभिनंदन । सुमति पदम प्रभुसेवरी माई ॥ १ ॥ (वर०) श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभु प्रणमुं । सुविध शीतल श्रेयांसरी माई । वाशपूज्य विम ल अनंत धरम जिन । शांति कुंथु परसंसरी माई ॥ २ ॥ (व०) अरजि न मल्लि अनें मुनि सुव्रत । नमि नेमि पाश जिणंदरी माई । चो वीशमा श्रीवीर जिणेसर । प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ ३ ॥ (व०) ॥ ढाल २ ॥ प्रहशम सूधा साधु नमुं नित (एहनी) । नित नित अतीत चोवीशी नमी यै । जेहना नाम प्रगट ए जाण । केवलज्यानीनें निरवाणी । सागर महा जश विमल वखाण ॥ ४ ॥ नि०) ॥ सर्व्वानुभूति श्रीधर दत्त जिनवर । दामोदर सुतजा श्री स्वामि । मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन । श्री अ स्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ (नि०) ॥ अनिल यशोधर तेम कृ तारथ । श्री जिनेसर सुधमति सुजगीस । शिवकर स्यंदन संप्रतिनामें । वंदीजै जिनवरचौवीश ॥ ६ ॥ (नि०) (ढाल३) सफल संसारनी ॥ जे भविस्संति अनागए कालए । तेहचौवीश प्रणमीस त्रिहुं कालए । प्र थम महाराज श्रेणक तणो जीवए । श्रीपद्मनाभ प्रणमीस सदीवए ॥ १ ॥ वीरनो पितरीयो नाम सुपासए । हुसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकासए

कोणिक सुत उदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सि ष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साधए । चोथो स्वयंप्रभु नांमआराधए । दृढायुष जी व सिद्धांतमें जाणीयै । पंचम सर्वानुभूति प्रमाणीयै ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण ना म इक जीव कहीजीयै । देव श्रुत तेउठो स्वामि स लहीजीयै । शंषश्रावक हुस्ये उदयजिण सातमो । आणंदनो जीव पेढ्ढाल जिण आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं । शतक श्रावक शतकीर्त्ति दशमो भ णं । देवकी जीव सुनिसुव्रत इग्यारमो । सत्यकी जीव ते अमम जिण वा रमो ॥ ५ ॥ वासुदेव जीव निकषाय जिन तेरमो । बलदेव जीव निपुलाक चवदम नमो । पनरमो निरमम देव सुलसाकही । रोहणी जीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाधि जिन सतरमो श्रावका रेवती । अढारमो शद्दा ल जीव संबर जिनपती । दीपायन जीव यशोधर उगणीसमो । कृष्ण कोई जीव ते विजय जिनबीशमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीशमो जीवनारद तणो । देव बावीशमो अंबम श्रावक भणो । तेवीशमो अमर जीव अनंत वीरज नमो । स्वाति बुध जीव ते भद्र चौवीशमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चौवीश जिण जांणीया । प्रवचन सार उधारथी आणीया । केई पर सिद्धनें केई अप्रसिद्ध कह्या । शास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥ ❀ ॥ (ढाल २) ॥ ❀ ॥ आज नहेजोरे दीसे नाहलो० ॥ ❀ ॥ विहर मान जिण वीशे वंदीयै । महा विदेह विख्यात । सीमंधर युगमंधर बाहुजी । श्रीसु बाहु सुजात ॥ ६ ॥ (वि०) स्वयंप्रभु रिषभानन अनंतवीरजी । सूर प्रभु तेमविशाल । वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी । भुजंग ईसर नेम भाल ॥ ७ ॥ (वि०) वैरसेन महाभद्र नमुं वली । देवयशा यसो रिद्ध । अढी द्वी पमें विचरै आजए । नाम लीयै नव निद्ध ॥ ८ ॥ (वि० ढाल ४) ॥ ❀ ॥ रे जीव जिन धम कीजीयै० ॥ ❀ ॥ च्यार तीर्थंकर शाश्वता । इणहीज अभिधान । रुषभानन चंद्रानन । वारिषेण वर्द्धमान ॥ ९ ॥ (च्या०) अठकोमि बप्पन लाखसुं । सत्ताणुं हजार । चउसै बयासी देहरा । त्रिहुं लो क मझार ॥ २० ॥ (च्या०) नवसै पणवीश कोमीया । बिंब त्रैपन लाख । सहस अठावीश च्यारसै । अठ्यासी भाख ॥ २१ ॥ (च्या०)

छिन्नूं जिणवर नामए । समरयां सुखदाय । प्रणम्यां पाप मिटै परा । समकित सुद्ध थाय ॥ २२ ॥ (च्या०) ॥ कलशः ॥ इम त्रिण चौवीशी वीश विहरमांन चौजिण शाशता । संथुएयां सतरैसै त्रयांजै अधिक आंणी आ सता । जिन रतन चिंतामणि तणी परि प्रघल वंछित पूरए । प्रहसमै त्रि करण सुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूरए ॥ २३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीत्रिण चौवीशी, वीस विहर मान, चौजिण शाश्वता, एवं छिन्नूं नगवंत नाम स्तवनं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ उपधान तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर धरम परगासै । बैठी परषदबारजी । अमृत वचन सुणी अति मीठा । पामें हरष अपारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधान वह्यां विन । किम सूझै नवकारजी । उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययनें । एह नएयो अधिकार जी ॥ २ (सुणो०) ॥ महा निशीथ सिद्धांत मांहे पिण । उपधांन तप विस्तार जी । अनुक्रम सुद्धपरंपर दीसइ । सुविहित गछ आचार जी ॥ २ (सु०) ॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया । तुछ अलप फल जाण जी । जे उपधान वह्या नर नारी । तेहनो जनम प्रमाणजी ॥ ४ (सु०) ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते । जो नवि मानें जेहजी । अरिहंत देवनी आण विराधै । नमस्यै नव २ तेह जी ॥ ५ (सु०) ॥ अघड्या घाटसमां नर नारी । विण उपधानै होय जी । किरिया करतां आदेश निरदेश । काम सरै नही कोइ जी ॥ ६ (सु०) इक घेवरनें खांमै नरियो । अति घणो मीठो थाय जी । एक श्रावक उपधान वहैतो । धन २ ते कहवायजी । ॥ ७ ॥ (सु०) ॥ (ढाल) ॥ नवकार तणो तप पहिलो बीसम जाण । इरिया वहीनो तप बीजो वीसम आण । इण विहुं उपधाने निश्चइ नांण मंमाण । बारै उपवासै गुरु मुख बेबे वांणि ॥ ८ ॥ पेंत्रीसम त्रीजो णमोत्थुणं उपधांन । त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान । अरिहंत चेई तप चोथो चोकम एह । उपवास अढाई वाणएक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो जोगस्स तप अठावीसम नाम । साढापनरह उपवास वायणा त्रिणठाम । पुख्खर वरदी तप छठो छकड सार । साडात्रण उपवासे वांण एक सुविचार ॥ २० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल । उपवास करै इक चौविहार ततका

ल । एक बाणिकरै बलि गुरुमुख सरसरसाल । गछनायक पाशै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवशर आणी मनउमरंग । घर सारू वारू खरचै धन बहु अंग । अति उछव कीजै राती जोगो दिल खोल । गीतगान गवावै पावै अति रंग रोल ॥ १२ ॥ (ढाल) ॥ ए साते उपधा न । विधसों जे वहै । ते सूधी किरिया करै ए । खिण न करै परमाद । जीव जतन करइ । पुंजि २ पगला भरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय । हरु २ हसै नही । मरम केहनो नवि कहै ए । नाणैं घरनोमोह । उतकृष्टी करै । साधु तणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुरसीम सिझाय । करपोरशि भणी । ऊंचै स्वर बोलै नहीं ए । मनमां हें भावै एम । धन २ ए दिन । नरभव मांहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जेसाते उपधान । बिधसेती वहै । पहिरै माल सोहावणीए । तेहनी किरिया शुद्ध । वहु फलदायक । करम निर्जरा अति घणी ए॥१६॥परभव पामै रिद्ध । देव तणा सुख । बत्रीस बद्ध नाटक परै ए । लाभै लीला विलास । अनुक्रम शिव सुख चढती पदवी जे चढै ए॥१७॥ (कलशः)॥इम वीरजिणवर मुवण दिणयर मात त्रिशला नंदणो । उपधानना फल कहै उत्तम भवियजण आणंदणो । जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकल चंद मुनीसरो । तसुशीश वाचक समय सुंदर भणें वंछित सुख करो ॥ १८ ॥ ॥❀॥इति सात उपधांन गर्भित श्रीमहाबीर स्वामी वृद्ध स्तवन संपूर्ण॥❀॥

॥ ❀ ॥ (इस) स्तवनमें उपधान तप करनेंकी सर्व विधि है । इसी मुजब विवेकी जीव करै । और उपधान तप ग्रहण (तथा) माला पहरण विधि इहां न लिखी है (सो) सुद्ध गुरुकै पास । विधि प्रपाक ग्रंथसें जाणकै करै ॥ ❀ ॥ इति तत्वं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राग रागणी स्तवन लि०॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग कल्याण) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ टुक निजर महरदी करणाहो ॥ टु० ॥ मेंहुं अधम पापकी मूरत । मेरा दोस न धरणा हो ॥ (टु०) ॥ १ ॥ अष्ट भवनकी प्रीत हमारी । नवमें भव निरवाहना हो ॥ (टु०) ॥ २ ॥ रूपचंद भगतनकी वीनती । आवागमण निवारणा हो ॥ (टु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लोक चवदके पार किनारै । पूरण ब्रह्मका वासा है । (लो०) पैंतालीस लाख जोजनकी सिला । फिटक रतन उजासा है । निरमल जो त विराजै साहिव । ग्यान ध्यान परकासा है ॥ (लो०) १ ॥ पंच वर ण की धजा फरूकै । क्याकहुं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो । औरनकी क्या आसा है ॥ (लो०) २ ॥ चोसठ इन्द्र खमे वाके द्वारे । खिजमत बंदा खासा है ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन । चरण क मलका दासा है ॥ (लो०) ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सबी सखि वन ठन (सबी०) ठाढे । नाभि नृपत जूके द्वारे आगै । (स०) रिषभ कुमरको जनम भयो है । मंगल मुख्य उचारैरी ॥ (स०) १ ॥ ताल मृदंग रबाव मधुरी धुनि । वीणा वाजै सुरतारे । नाचत हाव भाव करी राजत । तानलेत सुरतारेरी (स०) ॥ २ ॥ सुरवनिता मिल गाइ वधाई । मोतीयन चोक सवारे । जगबंधव जगपतिकुं निरखत । आ नंद हर्ष अपारेरी ॥ (स०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हो जिनतेंमे दरस परवारीयां (हो०) तुम विन भव २ में भट कंदा । अब मेंभी ओर निहारीयां ॥ (हो०) ॥ १ ॥ अष्ट करम मेंमे लार लगे है । उनकुं वेग विमारीयां । चरण सरण गहे आण तुमाढे । रुपचंद गुणगारीयां ॥ (हो०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे ह्मांरा रिषभा जिणंदनें गजरो चढाउंरे (ह्मां०) चंवेली चंपा गुलाब ल्याउंरे । जाइ जुई मोगरो मालती । बिध गुंथाउंरे (ह्मां०) १ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाउंरे । धूप दीप फलसुगंध पुण्य पावुंरे (ह्मां०) २ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ भाव भावुंरे । रिषभ दास पूरो आस गुण गावुंरे ॥ (ह्मां०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन लीनो हमारो जिन चरणारे । पोत जलधि भव तरणारे ॥ (म० टेर) ॥ आदि पुरश जगतारण नि शुणयो । कर्म विकट घन हरना रे ॥ (म०) १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता ॥ नंद रुषभ सुख करनारे ॥ (म०) २ ॥ सल्यादिक प्रगट न जग तत्पर । कुमतांगन दलटरनारे ॥ (म०) ३ ॥ सारंग दृग शशिवदन मनोहर । अंग कनक सम बरनारे (म०) ४ ॥ श्रीजिन हंस सूरीसर जंपै । जिन शमरण दिल धरनारे ॥ (म०) ॥ ५ ॥ इति श्री रुषभ देव स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग झिंझोटी) (२) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित अजित जिन ध्यान । (ह्मारे मनरे) (अ०) (टेरः) जितशत्रु विजयाको नंदनरे । वंदन त्रय युत ग्यान । (ह्मा०) १ ॥ त्रिहुं जग तारन टारन अघ कोरे । वारुं तन धन ज्यांन ॥ (ह्मा० अ०) २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजैरे । केवल निरमल ग्यान ॥ (ह्मा०) ३ ॥ श्री जिन हंस सूरि प्रभु पाएरे । निवृति पुरिंदरम्यान ॥ (ह्मा० अ०) ॥ ४ ॥ इति श्रीअजित नाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारलो गह बहियां । (य०) मैं नांहि जानुं सहियां (य०) । मैं तारण तरण सुणयो जै । मैं यातें शरणो गहीयां । इनतें न्यार लहियां ॥ (मो० य०) ॥ १ ॥ इन करमनकै वस होयकै । में भटक्यो चिहुं गति महियां । मैं नांहि जानुं सहियां ॥ (य०) २ ॥ हित करकै दास निहारै । कर जोडि पग्गिहुं पइयां । शिव देति क्युं न सहियां । (मो० य०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग काफी) (५) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुजरो मानी लीजै हो गोडीराय अरज सुणीनें ह्मारो (मु०) किरपा काज करी सेवकगनें । दिलभर दरशण दीजै हो (गो०) ॥ १ ॥ गुणनिधि गवडी दरशण दीजै । सकल करम दलगीजै हो (गो०) ॥ २ ॥ रूप विबुध कहै मो मन पन्नणें । ग्रह ऊठी प्रणमी जै हो (गो०) ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमेंमा प्रभु इण दिल वसणावे । तेंमा तो गुण सुर गावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ १ ॥ संतके सागर गुणके आगर । जोही ध्यावै सो पावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता । भविजन ताप मिटावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ कहैं जिनचंद ऐसे प्रभुमेरे । चरणकमल चित लावं दाहो (प्र०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हम जानतहै तुम तारोगे । (हम०) नाभिराय मरुदेवी को नंदन । मेरी ओर निहारोगे ॥ (हम०) ॥ १ ॥ आदि जिनेसर अन्तर जामी । खामी कहुन विचारोगे ॥ (ह०) ॥ २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो । एही विरुद संभारोगे ॥ (ह०) ॥ ३ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सुरिंद कुं साहिब । भवजल पार उतारोगे ॥ (ह०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंथीमा पंथ चलैगो । प्रभु भजलै दिन च्यार ॥ (पं०) झूठी काया झूठी माया । झूठो सब परवार ॥ (पं०) ॥ १ ॥ बालपणेंमें खेल गमायो । जोवन माया जाल ॥ (पं०) ॥ २ ॥ बूढापण आयो धरम न पायो । पीछे करत पुकार ॥ (पं०) ॥ ३ ॥ क्याले आयो क्याले जासी । पापपुण्य दोय लार ॥ (पं०) ॥ ४ ॥ दया मया कर पाश ऐवंती । अब तेरोही आधार ॥ (पं०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेवीशमा जिनराज । जोमै थांहरे कौन जुमै गो (ते०) । अस्वसेन तात वामादेवी माता । तूं तारण संसार ॥ (जो०) ॥ १ ॥ कमठ विभारण नागकुं तारण । संभलाव्यो नवकार ॥ (जो०) ॥ २ ॥ विबुध कुशल कर जोमीनें वीनवै ॥ भव २ देज्यो दीदार ॥ (जो०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ (राग खंभायची) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसें काज सरै महाराजा बिन (कैसें०) भ्रमत २ लख चौ

रासीमें । सुख दुखसें जीया रुलत फिरै (म० कै०) । ए रिपु कर्मवैरी न टकावै । जाहीसें मेरो प्राण मरै ॥ (म० कै०) ॥ २ ॥ जो जीव सुखकी बंग चाहै । प्रनु सेव्यां सें सब काज सरै ॥ (म० कै०) ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजरी वधाई वाजै छै (महा०) । सरणाई सिरै नोबत बाजै । घनज्युं गाजैछे ॥ (महा०) १ ॥ इंद्राणी मिलमङ्गल गावै । मोतीयन चोक पुरावैछे ॥ (महा०) ॥ २ ॥ सेवग प्रनुजीसें अरज करैछै । चरणारी सेवा प्यारी लागैछे ॥ (महा०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग अमाणो) (१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोतिनकी माला जिनगलसोहै (मोति०) मस्तक मुगुट सोहै मनमोहन । कुंमल लागत वाला ॥ (जि०) ॥ १ ॥ नजोरी नजो तुम लो क सहिरके । नहीय नजै सो काला । माणकपर प्रनु महिर करो तो । अपणा विरुद संभाला (जि०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठ) (१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन दुराय ॥ (रहे०) ॥ जोव जीवन सखीयनमें प्यारी । हारी हाहा खाय ॥ (र०) ॥ १ ॥ अविरत घुंघट पट उघारी । अनुनव मुख निरखाय । एते परजी मान न मेलै । मूलै व्याज वढाय ॥ (रहे०) ॥ २ ॥ नव परणित परिपाक इतै पर । आई धाई माय । अति आग्रह सब ग्यान सारकुं । लीने कंठ लगाय ॥ (रहे०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हेमाय वांकमी करमगति जायना कही । चिंतत और वनत कछु औरे । होनहार सो होय रही ॥ (हेमाय वां०) ॥ १ ॥ सकल साज सजीयो व्याहनकुं । राजुलकों तब चाह नई । सुनी नेम गिरनार सिधाए । वदन विलख मुरझाय रही ॥ (हेमाय वां) ॥ २ ॥ शीता सतीयोंही पति नगता । जांनत सकल मही । । फूठो दोष दियो जब रुघपति । पावक कुंममें धीज दही ॥ (हे० वां०) ॥ ३ ॥ क्षायक सुदृष्टी श्रेणिक राजा । निज सुत कोणिक बंधठई । सुध बुध विसरगई नरपतकी

आपणकी अपघात लही ॥ (हे० वां०) ॥ ४ ॥ जिनमें रंक जिनकमें राजा । अकल कथा किम जांण कही । उलट पलट बाजी नटसीकी । नवल सरब में व्याप रही ॥ (हे माय वां०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यांनु प्यारो लागै छै जी । थांरो उपदेस । (ह्यांनुं) ॥ ग्यांन जगावण औगुण मेटण । संशय रहै न लेस ॥ (ह्यां०) ॥ १ ॥ मोहतिमिर दुःख दूर करनकुं । जगत वढावत हेत । चंद फतै नित एही चा है । समकित सुखको खेत ॥ (ह्यां०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो पीया परसंग रमत है । में केसें मनावूंरी (मे०) । सो तन संग रैन दिन रमतां । मोहि न बुझावैरी (मे०) ॥ १० ॥ हाहा कर त सषी पइयां परतहुं । कोई पीया मिलावैरी । विरहानल अति दुसह पी या विन । कोन बुझावैरी (मे०) ॥ २ ॥ सुमता संग ले अनुभव आ यो । सब परठ सुनावैरी । ग्यान सार प्यारी दोउं हिलमिल । सोरठ गावैरी (मे०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठ मल्हार) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वरषित वचन झरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) श्रीश्रुत ग्यांन गगन तै झमटी । ग्यांन घटा गहरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) ॥ १ ॥ स्याद बाद नय विजुरी चमकित । देखत कुमति मरी । अरथ विचार गुहर धुनि गरजित । रहत न एक घरी हो ॥ (सुगुरु मे०) ॥ २ ॥ श्रधानदी चढी अति जोरै । सुध सुभावधरी । सुभर भरयो सुमता रससागर । समकित भूमि हरीहो ॥ (सुगुरु मेरे) ॥ ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकूरे चिहुं दिस । पाप जवास जरी । चातक मोर पपइया भविजन । बोलत भक्तिभरी हो ॥ (सुगुरु मेरे व०) ॥ ४ ॥ दया दान बत संयम खेती । भविक किसांन करी । हरषचंद सुर नर शिव सुखकी । सहज सुभाव फली हो ॥ (सु० व०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ या घरी में रंग वन्यो है ह्यांरे । (या०) तत्वारथकी चर चा पाई । साधर्मीको संग (व० या०) ॥ १ ॥ श्री जिनराज दयानिधि भेटे । हरष भयो अंग अंग । ऐसी विध भव २ मांहे मिलीयो । धर्मप्र साद अभंग (व० या०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग मलार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिहुं ओर वदरिया वरसे (आलीरी) । अब घरर घरर घन ग रजै ॥ (चि०) ॥ नेम प्रभु गिरनार सिधाए । देखणकुं जीया तरसै ॥ (चि०) ॥ १ ॥ दादुर मोर सोर सुन श्रवणें । नयनभए घन जरसै ॥ (चि०) ॥ २ ॥ ढुंढत ढुंढ सकल वन वनमें । कबहु पीयानां दरसै ॥ (चि०) ॥ ३ ॥ सो इ सफल जाणेंगे सजनी । दिवस घरी जिन फरसै ॥ (चि०) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ २ घनमें । नेम पीया रहे सहसाव नमें ॥ (मो०) निशि अंधीयारी कारी वीजुरी भरावै । दूजी विरह आकुल भइ तनमें ॥ (मो०) ॥ १ ॥ झिरमिर वरषत गरजत दादुर ॥ सोरकरत रहे नदीयां रनमें । (मो०) ॥ २ ॥ आणंद ए सम देखण चाहै ॥ राजुल भइ है बैरागण जिनमें ॥ (मो०) ॥ ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग विहाग ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समझ नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो । (स०) ॥ पल २ आयु घटत छिन २ ही । गलत जात जैसें नीरो ॥ (स०) ॥ १ ॥ या तनको तोही न भरोसो । छिन मासो छिन तोरो । जो कछु करै सो अबही करलै । पुन परहो जिम भोरो ॥ (स०) ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री गरज २ घनघोरो । रूपचंद त्रिसनाको बांध्यो । जान बूझ भयो भोरो ॥ (स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत कर मान गुमान । योवन धन ठगहै । (म०) वेजूकी

मोंत उसको मोती। कोई घरी कोई पलहै ॥ (यो० म०)॥ १ ॥ नदियां गहिरी नाव पुराणी। तारण हारा जिन है। रूपचंद कहै नाथ निरंजन आखर जंगल घर है॥ (यो० म०)॥ २ ॥ इति पदम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग मारु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निसदिन जोउं थांरी वाटमी घर आवोनी ढोला। (नि०) मुझ सरिखा तुझ लाख है। मेरे तूंही अमोला। (नि०) ॥ १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका। मेरा लाल अमोला। जिसके पटंतर को नहीं। उसका क्या मोला॥ (नि०) ॥ २ ॥ कोन सुनें किसपैं कहुं। किसपे मांडुं खोला। तेरे मुखदीठे टलै। मेरे मनका झोला ॥ (नि०)॥ ३ ॥ मीत विवेक कहै हितकरतुं। सुमता सुन बोला। आणंदघन प्रभु आवसी। सेजमी रंगरोला॥ (नि०)॥ ४ ॥ इति पदम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग जैवंती (१ ॥) ❀ ॥

॥ ❀॥ आज तो हमारे भाग बीर प्रभु आए है। (आ०) चंदनाखमी दुवार चित्तसें करै विचार। देखत दीदार हीये हरष भराये है॥ (आ०)॥ १ ॥ आज मेरी आशफली। अली मेरे रंगरली। विकशी आतमकली। प्रभूपात्र पाएहै॥ (आ०) ॥ २ ॥ धनदिन आजमेरो गयो सब कर्म झेरो। सुकृत बहुतेरो। भगवान दिल भाए है॥ (आ०) ॥ ३ ॥ सिद्धारथ राय नंद सोहत सरद चंद। कहै जिनचंद चित आनंद वधाए है॥ (आ०)॥ ४ ॥ इति पदम्॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग परज ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वावरोरे आज मनवो मारो ॥ (वा०) ॥ आपरंगीला वाकी सेज रंगीली। ओर रंगीलो वाको सांवरोरे॥ (आ०) ॥ १ ॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै। प्रीतकरनकुं संतावरोरे ॥ २ ॥ आनंद घन पीया निजघर आवै। मिटगयो मोह संतावरोरे॥ (आ०)॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ राग जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषभविहारी थांरी तो छवि न्यारी ॥(रि०)॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर। प्रथम यती व्रत धारी हो॥ (रि०) ॥ १ ॥ धनुष पांचसै मान

मनोहर! काया कंचन वानी हो ॥ (रि०) ॥ २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन। वापरजीया कुरवानी हो ॥ (रि०) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण स्वामी। प्रजुओ पर उपगारी हो ॥ (रि०) ॥ ४ ॥ केवल पाय प्रजु मुक्ति सिधाए। आवागमन निवारी हो ॥ (रि०) ॥ ५ ॥ आनंद घन प्रजु एती वीनती। तुमपर जाउं बलिहारी हो ॥ (रि०) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण मन हो न हार नटैरे ॥ (सु०) ॥ चित कबु उर विचारत है नर। उरही उरवनेंरे ॥ (सु०) ॥ १ ॥ ऊपर वाज पारधी नींचै। चिमियां कैसें वचैरे ॥ (सु०) ॥ २ ॥ होनहार वस रुस्योहै पारधी। शर सींचांण मरैरे। (सु०) ॥ ३ ॥ होत पदारथ आवी आइया। क्युं जगचाह धरैरे ॥ (सु०) ॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की। जिनवर क्युं न आजैरे ॥ (सु०)॥५॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रजु पूजन काज ॥ (स०) ॥ समवशरन विच आप विराजै। वीरनाथ महाराज ॥ (स०) ॥ १ ॥ श्रेणिक जूप चेलणा राणी। आकि करत है आज ॥ (स०) ॥ २ ॥ निज निज द्रव्य लीयै पुरके जन। उमंग उमंग सुज साज ॥ (स०) ॥ ३ ॥ वे प्रजु दीन दयाल जगतके। हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग केहरवो) (२) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०) ॥ याजिनजीके दरस सरस तें। दुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०) ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मांनले। आतमसुं लय लायरे ॥ (म०) ॥ २ ॥ भव २ में तो कुं सुखदाई। आनंद बंछित पायरे ॥ (म०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव (चा०) वामानंदन पाशजिनेसर। शिरपररे वाके चवर ढोलाय ॥ (चा०) ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके। नेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ (चा०) ॥ २ ॥ गंगा दरश उमाहोलागो। कवफरसुं वाके मन वच काय ॥ (चा०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ (राग घाटो) (२) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन वशकर लीनो । जिनवर प्रभुपाश (मे०) ॥ १ ॥ अखीयां कमल पांखडीयां । मुख सुंदर जास । (मे०) ॥ २ ॥ काने कुंडल दोय झलकै । शशि सूरज सम भास (मे०) ॥ नीलवरण तन सोहै । त्रिभुवन परकास ॥ (मे०) ॥ ३ ॥ प्रभु तुम शरण रहीनें । समरुं सासोसास ॥ (मे०) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनें । पूरो वंछित आश ॥ (मे०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राखुंरे हमारा घटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ (रा०) ॥ जागै प्रभाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । भागा भया सवेरा ॥ (रा०) ॥ १ ॥ सूरति तेरी रागै । देख्यां विभाव त्यागै । अध्यात्म रूप जागै ॥ (रा०) ॥२॥ मुद्रा प्रमोदकारी । रुषभेसजू तिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ (रा०) ॥ ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही । हम है अनाथ गुन ही । करियै सनाथ हम ही ॥ (रा०) ॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै । जिन हर्ष सूरि भाखै । दिलमां झया ही राखै ॥ (रा०) ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हांरे में खरी पुकारुं नेम तूंही तूंही तूंही । (सु०) ॥ अरज करत हुं मै पइयां परतहुं । इतनी अरज मेरी मांनो सुजाण (नेमजी हां०) ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिब महिर निजर मोपै आणो सुजाण (नेमजी) ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर । हुं भव २ की चेरी सुजांण (नेमजी०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेरै दरसको चाह लग्यो । सखी स्याम वरण वत लाजारे (ते०) । वनमें जाय प्रभु दिक्षा लीनी । हमकुं लार लगा जारे (ते०)॥१॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर । अब कैसें विसराजारे (ते०) ॥ २ ॥ चैन विजै कहै धन २ राजुल । प्रभू चरणां चित लायजारे (ते०) ॥ ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थांरै मुखमारीहो वारी राज। प्यारीछवी वरणी न जाय (थां०) सीस मुगट सोहै सिरटीको। कांने थांरै कुंडल सोभाय (थां०)॥ १॥ मोहन गारी सूरत सारी। देख्यां ह्मांरो मनमो लोभाय (थां०) उरझित नैंन भए निरखत ही। थांसुं प्रभु प्रीतमली लगाय (थां०)॥ २॥ भव २ पाश जिणंदजीकी सेवा। ऐसी ह्मांरै दिलमैंमै चाव (थां०)। बालक है तुमही प्रभु मेरे। ह्मांरे प्रभु तुमही सहाय। (थां० (॥ ३॥ इति पदम्॥

॥ ❀ ॥ (राग काफी कानमो)॥ ❀ ॥

ऐसी विधतैंनै पाईरे। कछु करणी करजा (ऐ०) उत्तम नर भव जैन धरम रुचि। सुगुरु सेवा सुख दाईरे। जसु पातक झरजा (ऐ०) ॥ १॥ हिंसा जूआ झूट परत्रिया। परिग्रह मद फल चोरीरे। घट जायगा दरजा (ऐ०)॥ २॥ तप जप संयम शीलदान कर। आनंद सुमति सुहाईरे। भव जल निधि तरजा (ऐ०)॥ ३॥ इति पदम्॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (राग कालंगमो)॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोहि अपनो कर जांणो प्रभुजी ॥ (मो०)॥ मैं मतिहीण महा हठवादी। सो तुमसें नहीं छानो। राग द्वेष अरु मोह महामद। वाधो खोट खजानो॥ (प्र० मो०)॥ १॥ ए रिपु कर्म पड्यो मुझ के मै। किसविध छूटै पानो। कुमति कदा ग्रह मांहि झलूझ्यो। ज्युं मदपा न वयानो॥ (प्र०)॥ २॥ हुं भववाशी तूं शिववाशी। जानें सकल जिहांनो। विरुद लाखीणो सांम संभारो। तो हिव किम चित तांणो॥ (प्र०)॥ ३॥ भक्ति सदाई शिवसुख दाता। संभवनाथ कहानो। श्रीजिन सौभाग्य सूरिनै निजवर। दीजै सुखप्रधानो॥ (प्र०)॥ ४॥ इति॥

॥ ❀ ॥ (राग भैरवी)(१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम जिणंद जी सें आखडली। मोरी रैन दिवस नित लग रहीरे॥ (मो० ने०)॥ पहली आय उन दोस्ती कीनी। ले पीछै छिटकाय दईरे॥ (ने०)॥ २॥ पशुवन पर प्रभु दया करीनें। शिवरमणीनें वर

लेईरे ॥(ने०) ॥ २ ॥ केइ भविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद पाय लईरे ॥ (ने०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ आज प्रभु तोरे चरण लाग । मिथ्यात नींद में खोईरे ॥ (आ०)॥ दरशण कर परसण भयोमेरे । आनंद चित अब पोईरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ तुम विन ओर न कोइ मेरे । देख्यो त्रिभुवन जोईरे ॥ आ०) ॥ २ ॥ दास तुमारो करत वीनती । तुम प्रभु भव भव होईरे ॥ (आ०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात गई अब प्रात होन भयो । क्या सोवे जीया जागरे (रा०) दोय घडी तमको अब रहीयो । कछ धरम में लागरे ॥ (रा०) ॥ ॥ १ ॥ जिनवाणी उर वीच धारलै । उर भरम सर्व त्यागरे ॥ (रा०) ॥ २ ॥ आणंद सुगुरु वचन हित मानो। ए सूधो शिव मागरे ॥ (रा०) ॥ ३ ॥

॥❀ ॥ पुनः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोन खबर लै मेरी । (तु०) भ्रम । त फिरयो संसार जगतमें । मेटो भवनी फेरी । (तु०) ॥ २ ॥ ॥ भव २ के प्रभु तुम जगनायक । राखो शरणें तेरी । हृदय आसरो पकड्यो तेरो शरन ग्रहीमें तेरी ॥ (तु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग विभास ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भोरभयो अब जाग बावरे ॥ (भो०) कोइ पुन्यतें नर भव पायो । क्युं सूतो अब पाय दावरे ॥ (भो०) ॥ १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों । मोहमगन एह विकल भावरे । को इन तेरो तूं नहीं का को । इह संजोग अनाद सुभावरे ॥ १ ॥ (भो०) ॥ २ ॥ आरज देश उत्तम गुरु संगत । पाई तें बहु पुन्य प्रभावरे । ग्यांनसार जिनमारग लाधो । क्युं डूबै अब पाय नावरे ॥ (भो०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग खट्) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जागरे सब रेन विहानी (जा०) उदयो उदयाचल रवि मंगल

पुन्यकाल क्युं सोवै प्रानी ॥ (जा०) ॥ १ ॥ कमल खंम वन वन विकसानी । अजुवन तेरी द्रग उघरानी । चेतन धर्म अनादि तुमारो । जम संग तसें सुध विसरानी । (जा०) ॥ २ ॥ तुम कुल दोय अवस्ता पइयै । नींद सुपन एजम नीसानी । आतम रूप संन्नार आपणो । कब तुमारे घर कुमती घरानी ॥ (जा०) ॥ ३ ॥ सुध बुध नूली निरुपम रूपकी । तातें घट वध होत कहांनी । निश्चै ग्यान स्वरूप तुमारो । ग्यांनसार पद निज रजधांनी ॥ (जा०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वेलावल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन नावनो । रूप देखाय मेरो मन ललचावनो ॥ (सां०) ॥ १ ॥ तोरणसुं रथफेर चले पीया । ना जानुं ए काहिको रुसावनो ॥ (सां०) ॥ २ ॥ नव नव नेह निन्नाहो नेम तुम । याहीतें कहा वदन फुरावणो । आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी । नयो पीया सुगत सखीको पांवनो ॥ (सां०) इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ललित ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज रुषन घर आवै (देखो माई आ०) रूप मनोहर जगदानंदन । सबहीके मन नावै (दे०) ॥१॥ केई सुगताफल थाल विशाला । केईमणि माणक नावै । हयगय रथ पायक केई कन्या । जेप्रनु वेग वधावै ॥ (दे०) ॥ २ ॥ श्रीश्रेयांस कुमर दानेसर । इक्षुरस दान वहि रावै ॥ उत्तम दांन अधिक अमृत फल । साधुकीरत गुण गावै ॥ (दे०) ॥ ३ ॥ ॥❀॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग रामकली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंगन कलप फल्योरी । हमारे माई (अं०) । रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक । श्रीशांतिनाथ मिल्योरी (ह०) ॥ १ ॥ केशर चंदन मृग मद घोली । मांहि वरास मिल्योरी । पूजित श्री शांतिनाथजी की प्रतिमा । अलग नदेग टल्योरी ॥ (ह० अं०) ॥ २ ॥ शरणें राख कृपाकर साहिब । ज्यूंपारेवो पल्योरी । समय सुंदर कहै तुह्मारी कृपासें । हुंरहिसुं सोहिलोरी (ह० अं०) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऊठोनें मोरा आतमराम । जिन मुख जोवा जइयैरे ॥ जिनजी नो दरसण छै अति दोहिलो । ते किम सोहिलो जाणोरे । वार २ मानव भव एहवो । झुमवो मुसकल टाणोरे ॥ (ऊ०) ॥ १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको । देखीनें मतराचोरे । विनसी जातां वार न लागै । काया घटछै काचोरे ॥ (ऊ०) ॥ २ ॥ अनन्तगुणे भरियो हे जिनवर । पूरब पुण्यैं पायोरे । एहनें देखी दिलमें आनन्द । कर तूं सदा सवायोरे ॥ (ऊ०) ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोलक आयो । मूढ हिवै मति गमजोरे । सहिज सलूणा पास जिणंद जीसुं । राजी हुय चित रमज्योरे ॥ (ऊ०) ॥ ४ ॥ मन मांनीता माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे । लाभ उदय जिनचंद्र लहीनें । वरतूं सिद्ध वधाईरे । (ऊ०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भज मन नाभि नन्दन देव (भ०) ॥ ध्यांन मुनीजन अभि ग धारै । सुर नर करत है सेव ॥ (भ०) ॥ १ ॥ चक्री भूपति वमे सुर पति । वासुदेव बलदेव । नमत ब्रह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥ (भ०) ॥ २ ॥ अशरन शरनहै विरुद जाको । भक्तिबछल भेव । राजसिंह प्रभु रुषभ शिरपर । नाथ है नित मेव ॥ (भ०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल धुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवोनेम रह जावो सदन । हम कोंन संतावोरे (आ०) व्याहन आए सऊके सजन । पसुवनको सुन देख रुदन । गिरनारी चले निज धामि वतन । तकसीर वतावोरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ पूनम जैसे चं द्रवदन । मनमोहन मूरत स्याम वरन । मेरे नीकी लगी नव भवकी लगन मती छेह दिखावोरे ॥ (आ०) ॥ २ ॥ संयम दूती लागी श्रवण । प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन । सब झूठे पर्मेगे कोल वचन । रथ फेरी न जावोरे ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण । राजुल मन वैराग धरन । लेहुं दोड नेम जिनजीके शरण । शिवपुर तो वतावोरे ॥ (आ०) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ (खेमटा ताल दादरा) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अधम जगकाम नये आगीवान । हे ना निकला मुखसें क नी नगवान ॥ यार नहीं देखा समो सरणा । किया नवदधिमें उदर नर णा । दोरुजो लेते प्रनूसरणा । दूर दुःख होते जनम मरणा । बैठ नव वरमें लगाया नहीं ध्यान । राज शिवपुरमें हुवा अपमान । रुरो अब दे खके काल खगवान ॥ हे० ॥ १ ॥ नाम जो जिनके दान देते । तो आ वुं मद तुमसें दूर रहते । यारजो जिनके चरण सेते । तो शषी सुमताकों तुमें देते । रहे तप जपमें सदा जोसूर । वरै वो नव नव अगम सुख चूर । करै कपूर करम चकचूर । देखा जिन नूर हुवे दुख दूर । करो नव पार सुनो महरवान ॥ नानि० ॥ २ ॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग पीलू) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो सही अब जानं कहां शरणागतकों शरणागत तेरी । (आ०) तोहू समान मिल्यो नहीं कोई । ढूंढ फिरयो धरती सब हेरी । (आ०) होय दयाल महा प्रनुजी अब । आन नई तुम सें नट नेरी ॥ (आ०) ॥ १ ॥ दास कल्याण करै वीनती सुन । पारशनाथ सुपारस मेरी ॥ (आ०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग खम्बाज) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घरी २ पल २ छिन २ निश दिन । प्रनूको समरण करलैरे । (घ०) प्रनु समरण सब पाप कटतहै । अशुन करम सब हरलैरे ॥ (घ०) ॥ १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित । ज्ञान हियेमें धर लैरे ॥ (घ०) दोलत राम प्रनु गुणगावै । मनवंछित फल वरलैरे ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ शिखरागिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमतो नले विराजो जी । शांवलिया महाराज शिखरपर न ले विराजो जी ॥ तेरै घाटै चौकी लागै । श्रावक जाण न पावै । हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर । बांह पकरु लेजावै ॥ (तु०) ॥ १ ॥ ऊंचा नींचा परबत सोहै । तलै जिलनका वासा । पैंरु पैंरु पर सिंह धरूके । जिहां लिया तुह्म वासा ॥ (तु०) ॥ २ ॥ टूंक टूंकपर धजा विराजै । झालरकै

झणकारै । झालरके झणकारै सेती । वाजै अविचल वाजा ॥ (तु०) ॥ ३ ॥ दूर देशथी यात्री आवै । पूजा आण रचावै । अष्टद्रव्य पूजामें लावै । मनवंछित फलपावै ॥ (तु०) ॥ ४ ॥ सुर नर मुनिवर वंदन आवै । महा परम सुख पावै । चंदखुस्याल चरणको सेवक । हरष हरष गुण गावै ॥ (तु०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शिखर गिरेंद्र सुहारो । निज पातिक दूर निवारोरे ॥ (भवियां शि०) ॥ इण सम तीर्थ न कोई । में देखा सहु जग जोईरे ॥ (भ० सि०) ॥१॥ वीश जिनेसर आया । इहां मुक्ति पुरी सुख पायारे ॥ (भ०) ॥ कोना कोनी मुनि सीधा । जिहां अजर अमरपद लीधारे । (भ०) वीश चरण जिन सोहै । भविजन चात्रक मनमोहैरे ॥ (भ०) ॥ २ ॥ ध्रुव मठ मंदिर गाजै । जिहां पास प्रभु महाराजरे ॥ (भ०) ॥ ३ ॥ पावन तीरथ एहवो । इहां संसय धरवो न केहोरे (भ०) तीर्थ आसातन टालो । भविजन गहरीव्रत पालोरे ॥ (भ०) ॥ ४ ॥ नर भव लाहो लीजै । इण तीरथ म हिमा कीजैरे ॥ (भ०) सय छगणीस ते तीसै । अगहन सुदि पंचमी दीसैरे ॥ ॥ (भ०) ॥ ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावै । भवि चंद गोविंद गुण गावैरे (भ०) । जात्रा करी मनरंगै । चंदाशिखर भणें अति चंगैरे ॥ (भ०) ॥६॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शांवरिया जैसें वणें तैसें तारो० ॥ (इस चालमें) ॥ शांवरि यामें दीठो दरस तिहारो । मेरी भव भय बाधा टारो (शां०) अश्वसेन नं दन जगवंदन । जगबंधव जगप्यारो । नीलवरण द्युति श्रीजिनवरकी वामा उदर अवतारो ॥ (शां०) ॥ १ ॥ कमठ विमारण शिव सुखकारण । तारण तरण निहारो । अलख अगोचर अगम अरूपी । निर्यामक सत्थवारो ॥ (शां०) ॥ २ ॥ शिखर गिरी मंडन जिनवरजी । अद्भुत महिमा वारो । करजोरी दोनं वीनती करत है । बुधसिंह अरजी धारो ॥ (शां०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पावापुरी स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चरम प्रभु अरज हमारी धारो । मेरो आवागमन निवारो

(च०) (आंकणी) सिद्धारथ कुल जनम लियोहै। त्रिसला उदर अवतारो। सुरगण कोरु मिली सुरगिर पर । स्नात्र महोछव सारो ॥ (च०) १ ॥ व सुविध पूज रचत जिनवरकी। सफल करत अवतारो । जय जय शब्द करत सुर नरवर। जय २ जगदाधारो ॥ (च०) २ ॥ वाल अवस्था अतुल वली प्रनु । सहजा अतिसय चारो । दिक्षा ले प्रनु केवलपायो। श्री संघ आनंदकारो ॥ (च०) ३ ॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत। नाथ निरंजन प्यारो। सीस मुगट सोहै अति सुंदर। गल मोतियनको हारो ॥ (च०) ॥ ४ ॥ समवसरणकी अद्भुत महिमा । देखत नयना ठारो । नविजन चातक अति हरषावै । स्वामी नाथ निहारो ॥ (च०) ५ ॥ चरम चौमाशी पावापुरिमें । कीधी जग हितकारो । शोलै पहर लग अरुग देसना। पदनिरवाण पधारो ॥ (च०) ६ ॥ काल अनन्त नम्यो नव वनमें । कहत न आवै पारो। अब तो प्रनुको सरण ग्रहीमें। कबहु न छोडुं लारो ॥ (च०) ७ ॥ दूगरु गोत्रे इन्द्र चन्द्र सुत । चंद्र गोविंद धरमकारो । जात्रा करी प्रनुकी उजरंगै। जनम कृतारथ म्हांरो (च०) ८ ॥ सय उगणीस ते तीस मनोहर। अगहन दशमी उजारो। सिषरचंद प्रनु शिवसुख दायक। पूरव पुन्य जुहारो ॥ (च०) ९ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कैखो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ में मुख देख्यो गोमी पारसको। मेरो जनम सफल नयो आज ॥ आजरे में मुख देख्यो गोमी पारसको ॥ मेरो० ॥ (टेक) अन्यदेवनकूं बहुत में ध्यायो । तोए न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे० ॥ १ ॥ नव नव नटकत शरणे हुं आयो । अब तो रखोजी मोरी लाज ॥ आजरे० ॥ २ ॥ कमठ हरावन नागकूं तारन । संनलाव्यो नवकार ॥ आजरे० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन। तारण तरण जहाज ॥ (नलां०) तारण तरण महाराज ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ किरपा करोरे गोमीपाश जिनेसर । तुम स्वामी अंतरजामी ॥ टेक ॥ उंचे उंचे गढपर पासजी बिराजे । चारे तरफ ज्ञानी ध्यानी किरपा० ॥ १ ॥ नील वरण तोरो अंग बिराजे । वदनकी जाऊं वलिहा

री किर० ॥ २ ॥ बांहे बाजुबंध बहेरखा बिराजे । कुंमलकी छबि हे न्यारी ॥ किर० ॥ ३ ॥ ढूंढत ढूंढत में प्रभु पायो । पूरण पदवी अब पाई ॥ किर० ॥ ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो । रूपचंद पदवी पाई ॥ किर०॥५॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब । साहेब मुजरा मेरारे ॥ ॥ टेक ॥ साहेब सुविधि जिनेसर स्वामी । चरण पखालुं तेरारे ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगें । फूल चढावुं सेरारे । घंट बजावुं अगर उखेवुं । करुं प्रदक्षिणा फेरारे ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजित्र बजावुं । नृत्य करुं अधिकेरारे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखत । दास निरंजन तेरारे । मुजरा० ॥ ३ ॥ ❀ ॥इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घंट बाजे घननननन । इंद्रलोक हरख भयो । जनमे वर्द्ध मान कुंवर । वीतराग तननननन ॥ घंट० ॥ १ ॥ मृदंग ताल गुण बिशाल । झल्लरी नाद झननननन । घंट० ॥ २ ॥ रूपचंद रागरंग । होत ध्यान मगननन ॥ घं० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरंजन सांइआंरे । सांइ मेरा दुकसा मुजरालेत ॥ टेक ॥ तुम हो तीरथका देवतारे । हम गिरिवरका मोर ॥ रुम झुम रुम झुम मे हुला बरसे । कांइ ठम ठम नाचे मोर ॥ निरंजन० ॥ १ ॥ हम गुण का ली कोयलीरे । प्रभु गुण आंबा मोहोर । मांजरके परसादसें कांइ । करने लागी सोर ॥ निरंजन० ॥ २ ॥ तुमहो अमर देवतारे । हम केशरका गोम ॥ कनक कचोली हाथमां । कांइ पूजा करुं रंगरोल ॥ निरंजन० ॥ ॥ ३ ॥ तुमहो मोतिनकी लरीरे । हमगुण डंडा भोर । रूपचंदकी येही अरज हे । दिलभर दरिशनदोर ॥ नि० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कल्याण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसे सहेर बिच कौनसा दीवानहै ॥ टेक ॥ पानीके कोट पवनके कांगरे । दश दरवाजे मंमान हे ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ पांच इंद्रीके

त्रेवीश तस्कर । नगरकूं करत हैरान हे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजा पुकार सु नी तब जाग्यो । चेतन राय सुजाण हे ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ ज्ञानको वाण वचन रस भेदे । हाथमें लाल कमान हे ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेहनें वारो । दुशमन करत गुमान है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आय रहो दिल बागमें । सुन प्यारे जिनजी ॥ (आंकणी) चुन चुन कलीयों तोरे चरणे चढावुं । गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सुन० ॥ ॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन आदि जिनेश्वर । खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सुन० ॥ ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । जाउं विकसित बन फागमें (सुन० ३)

॥ ❀ ॥ श्री नेमिजिन स्तवन लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दोय घमियां । दोय घमीयांरे अब चार घमीयां ॥ र० ॥ ए आंकणी ॥ प्रेमका प्याला बोहोत मसाला । पीव त मधुरी सेलमीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ हाथशुं हाथ मिलाइ दीयो सांइ । फुलमा बिछावुं सेजमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ राजुल जोगी चले गिरनारे । दीपत मोहन वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । मुक्ति वधू गुण वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री गौडी पार्श्वजिन स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बिराजो बंगलामें । बिराजो मंदिरमें । प्रभु गोमीचा पारश नाथ ॥ बि० ॥ ए टेक ॥ चुवा चुवा चंदन और अरगजा । केशर में गरकाव ॥ बि० ॥ १ ॥ शिरसोनेंको छत्र बिराजे । मोतियमां तपेरे लिलाड ॥ बि० ॥ २ ॥ भव सागरमें आइ पड्यो हुं । बांहे पकरु मुझ तार ॥ बि० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । आवागमन निवार ॥ बि० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिजिन स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीनें देखा हमारा स्वामी । स्वामी अंतर जामीरे ॥ की नें० ॥ टेक ॥ आठ भवनकी प्रीति प्रकाशी । नवमें गया शिवगामीरे ॥ कीनें० ॥ १ ॥ सहसावनकी कुंज गलिनमें । मिल्या मुने अंतरजामीरे ॥ कीनें ॥ २ ॥ आप चले गिरनारकी ऊपर । नारी तारी केवल पामीरे ॥

कीनें ॥ ३ ॥ कहे नथू प्रभू नेम नगीनो । कहुं छनं आज शिर नामीरे ॥ कीनें० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग आशावरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा । उस पदका करेरे निवेडा ॥ अवधू० ॥ टेक० ॥ तरुवर एक मूल बिन गाया । बिन फूले फल लागा । शाखा पत्र नहीं कर उनकुं । अमृत गगनें लागा ॥ अ० ॥ १ ॥ तरुवर एक पंछी दोन बेठे । एक गुरू एक चेला ॥ चेलेनें जुग चुण चुण खाया । गुरू निरंतर खेला ॥ अ० ॥ २ ॥ गगन मंरुलमें अधबिच कूवा । उहां हे अमीका वासा ॥ सुगुरा होवे सो भर भर पीवे । नगुरा जावे प्यासा ॥ अ०॥ ३ ॥ गगनमंरुलमें गउआं बिहानी । धरती दूध जमाया । माखन था सो विरला पाया । छाछ जगत भरमाया ॥ अ० ॥ ४ ॥ थड बिन पत्र पत्र बिन तुंबा । बिन जिभ्या गुण गाया ॥ गावन वालेका रूप न रेखा । सुगुरु सोही बताया ॥ अ० ॥ ५ ॥ आत म अनुभव बिन नही जानें । अंतर ज्योति जगावे । वट अंतर परखे सोही मूरत । आनंदघन पद पावे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू ऐसो ज्ञान बिचारी । वामें कोण पुरुष कोण नारी ॥ अवधू० (टेक) बम्मनके घर न्हाती धोती । जोगीके घर चेली । कल मा पढ पढ भई रे तुरकनी । आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥ १ ॥ सुस रो हमारो बालो भोलो । सासू बाल कुंवारी । पिउजी हमारो पोढे पाल णीये । में हुं झुलावन हारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नहीं हुं परणी नहि हुं कुं वारी । पुत्र जणावन हारी । काली दाढीको में कोइ नही छोड्यो । ह जुए हुं बाल कुंवारी ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ अढी द्रीपमें खाट खट्टली । गगन नशीकुं तलाई । धरतीको छेडो आगनकी पिछोमी । तोए न सोम भराणी ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ गगन मंरुलमें गाय वीआणी । वसुधा दूध जमाई । स गरे सुनो भाइ विलोणां विलोवें । कोइ एक अमृत पाईरे ॥ अवधू० ॥ ५ ॥

नहीं जानुं सासरीए नहीं जानुं पीयरीये । पीयुजीकी सेज विछाइ ॥ आनंदघन कहे सुनो भाइ साधो । ज्योतसें ज्योत मिलाईरे ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बेर बेर नहीं आवे । अवशर । बेर बेर नहीं आवे (ए टेक) ज्युं जाणे त्युं करले भलाई । जनम जनम सुख पावे ॥ अवशर० ॥ १ ॥ तन धन जोवन सबही झूठो । प्राण पलकमें जावे ॥ अवशर० ॥ २ ॥ तन बूटे धन कोण कामको । कायकूं कृपण कहावे ॥ अव० ॥ ३ ॥ जाके दिलमें साच वसत हे । ताकूं झूठ न भावे ॥ अव० ॥ ४ ॥ आनंदघन प्रभु चलत पंथमें । समरि समरि गुण गावे ॥ अव० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कैरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ए जिनके पाये लागरे । तुनें कहीयें केतो ॥ ए जिनकेपा० ॥ (ए टेक) ॥ आठोइ जाम फिरे मद मातो । मोह निंदरीयाथुं जागरे ॥ तुने० ॥ १ ॥ प्रभुजी प्रीतम बिन नहीं कोइ प्रीतम । प्रभुजीनी पूजा घणी मागरे ॥ तुनें० ॥ २ ॥ भवका फेरा वारी करो जिन चंदा । आनंदघन पाये लागरे ॥ तुनें० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे चित्तमें धरोरे प्यारे चित्तमें धरो । एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो । (ए आंकणी) थोमासा जीवनकाज अरे नर । कायेकूं छल परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ कूड कपट परद्रोह करो तुम । अरे नर परभवथी न डरो ॥ एती० ॥ २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो । जनम मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग गौमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू निरपक्ष विरला कोई । देख्या जग सब जोई ॥ अवधू० ॥ टेक ॥ समरस भाव भजा चित्त जाके । थाप उत्थाप न होई ॥ अविनाशीके घरकी बातां । जाणेंगे नर सोई ॥ अवधू० ॥ १ ॥ राव रंकमें भेद न जाणे । कनक उपल सम लेखे ॥ नारी नागणिको नहीं परिचय । तो शिव मंदिर देखे ॥ अवधू० ॥ २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणीनें । हर्ष

शोक नवि आणें ॥ ते जगमें जोगीसर पूरा । नित चढते गुणठाणें ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ चंद्रसमान सौम्यता जाकी । सायर जेम गंभीरा ॥ अप्रमत्त आरंभ परें नित्या । सुर गिरि सम शुचि धीरा ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ पंकज नाम धराय पंकशुं । रहत कमल जिम न्यारा ॥ चिदानंद ऐसा जिन उत्तम । सो साहेबका प्यारा ॥ अवधू० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रभाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालणां जरूर जाकुं ताकुं कैसा सोवणां (ए आंकणी) भया जब प्रातकाल । माता धवरावे बाल । जगजन करत सकल मुख धोव णां ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरभिके बंध छूटे धूवरु भये अपूठे ॥ ग्वाल बाल मिलके । विलोवत विलोवणां ॥ चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग तूंभी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय । वृथा नही खोवणा ॥ चा० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समझ परी । मोहे समझ परी । जग माया अब झूठी मोहे ॥ समज० ॥ ए आंकणी ॥ काल काल तुं क्या करे मूरख । नहीं भरोसा प ल एक घरी ॥ जग० ॥ १ ॥ गाफिल भिनभर नांही रहो तुम । शिरपर घुमे तेरे काल अरी ॥ जग० ॥ चिदानंद ए बात हमारी प्यारे । जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ जग० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग गजल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजुल पुकारे नेम पिया । ऐसी क्या करी ॥ मुझे छोरके चले हो चूक हमसें क्यापरी ॥ राजु० ॥१॥ हुइ आशकी निराश । उदासीनता धरी ॥ प्यारा बस नहीं हमेरा । प्रीतम पीरमें परी ॥ राजु० ॥ २ ॥ हमसें रह्यो न जाये । प्रीतम तुम बिना घरी ॥ संयम लीजीयें दयाल । दया धर्म आदरी ॥ राजु० ॥ ३ ॥ निशदिन तुमेरा नाम । देते ज्ञानकी झरी ॥ मुनि चंदविज य चरण कमल । चित्तमें धरी ॥ राजु० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धन्याश्री ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कौन किसीको मित्त । जगतमें कौन किसीको मित्त ॥ ए आं कणी ॥ मात तात उरजात सजनसें । कांइ रहेत निचिंत ॥ ज० ॥ १ ॥

सबही अपने स्वारथके है । परमारथ नहिं प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी । मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० ॥ २ ॥ उठ चलैगो आप इकेलो । तुंही सुं सुविदीत ॥ कोनहिं तेरो तुं नहीं किसको । एह अनादी रीत ॥ ज० ॥ ३ ॥ तातें एक भगवान भजनकी । राखो मनमें नीत ॥ ग्यान सार कहे येह धन्याश्री । गायो आतम गीत ॥ ज० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बाजत रंग बधाई नगरमें ॥ बा० ॥ जय जयकार भयो जिनशासन । वीर जिणंदकी दुहाइ ॥ न० ॥ बा० ॥ १ ॥ सब सखियन मिल मंगल गावै । मोतीअन चौक पुराइ ॥ न० ॥ बा० ॥ २ ॥ केशर चंदन भरीय कचोली । साहिब ज्योति सवाइ ॥ न० ॥ बा० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु दरशन देखत । आवत नैन भराइ ॥ न० ॥ बा० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀

॥ ❀ ॥ भलांजी मेरो नेम चल्यो गिरनार । एकेली जानमें ॥ मेरो० ॥ राजुल ऊभी अरज करे छे । (भलांजी मेरी) अरज सुनो महाराज ॥ एकेली० ॥ १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी । (भलांजी भवांतो) पशुवनकी सुनी छे पोकार ॥ एकेली० ॥ २ ॥ सहसावनकी कुंजगलिनमें । (भलांजी भवांतो) पंच महाव्रत धार ॥ एकेली० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल विनवे । (भलांजी मेरो) होजो मुक्तिमें वास ॥ एके० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसुपाश जिनराज ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदीसर जिनराज । त्रिभुवनके महाराज ॥ आजहो आयो रे में शरणें प्रभुजी तुम तणें जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ग्यान अंकूर । प्रगट्यो पुण्य पडूर । आजहो जागी रे मुझ मनमें तुमनी सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लागी भरपूर । दोष गये सब दूर । आजहो छोडुं रे नहीं तुम पद सेवा सुखकरूजी ॥ ३ ॥ नाभिराय कुल चंद । मरुदेवीके नंद । आजहो राखो रे प्रभु मुझकुं निज चरणे सदा जी ॥ ४ ॥ अमृत धर्म सुजाण । शीश क्षमा कल्याण । आज हो रागें रे प्रभु आगे आ विनती करेजी ॥ ५ ॥ इति आदिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रसना सफल भई । में तो गुन गाये महाराज ॥ रसना० ॥ (ए आंकणी) ॥ परम आनंद प्रगट भयो मेरे । जब देखे जिनराज ॥ रसना० ॥ १ ॥ अति उज्वल जश सुन जिनजीको । संच्यो सुकृत समाज ॥ नाक नमन करतां प्रभुजीकुं । सार्या आतम काज ॥ रसना० ॥ २ ॥ पदपंकज प्रभुके फरसतही । दूर गई दुःख दाझ । कहत हुमाकल्याण सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोमी गाइयै मन रंग ॥ गो० । एक ध्यानें एक तानें ॥ कर केदारो संग ॥ गोमी० ॥ १ ॥ जात्रा कीजै अमृत पीजै । नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासे । आलस नावे अंग ॥ गो० ॥ २ ॥ पोढतां प्रभु नाम लीजै । आणी मन उमरंग ॥ अभय तेहने ऊंघ मांहे । कदिय न होवे चित्त भंग ॥ गो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे हुं तो मोह्योरे लाल । जिनमुखमानें मटके ॥ टेक ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला । चित्तडुं लीधुं चटके ॥ प्रभुजी केरी भक्ति करंतां । करम तणी कस तटके ॥ हांरे० ॥ १ ॥ मुझ मन लोभी भमरतणी परें । जिनगुण कमलें अटके । रत्न चिंतामणि मुंकी राचे । कहो कोण काच तणे कटके ॥ हांरे० ॥ २ ॥ ए जिण थुणतां क्रोधादिक सहु । आस पासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुखदाणी । कुमति कुगतिने पटके ॥ हांरे० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे । तेतो भूल्या भटके ॥ भाव भक्तिशुं उलग करतां । वंछित सुखमे सटके ॥ हांरे० ॥ ४ ॥ मूरत संभव जिनेश्वर केरी । जोतां हइडुं हटके । नित्य लाभ कहे प्रभु ए मोहोटो । गुण गाऊं हुं लटके ॥ हांरे ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुजीसें लागो म्हारो नेह सखीरी । अब कैसें कर छूटेरी ॥ प्र० ॥ टेक ॥ धिग धिग जगमें वाको जीयो । आपणा प्रभुजीसें रूसेरी ॥

प्र० ॥ १ ॥ जो कोइ प्रभुजीसें नेह करेगो । शिव पुरनां सुख लेहसेरी ॥ प्र०॥२॥ सेवा राम प्रभू गांठ रेशमकी । लगी प्रीति नहीं तूटेरी ॥ प्र० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ राग रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीयें । धर्मनाचार प्रकार ॥ दान शीयल तप भावना । जगमां एतंत सार ॥ रे जीव ॥ १ ॥ वरश दिवसनें पारणें । आदीश्वर अणगार ॥ इक्षुरस दान वहरावीयो । श्री श्रेयांस कुमार ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ चंपा पोल उघामीयां । चालणीयें काढ्यो नीर ॥ शतीय सुभद्रा यश थयो । शीयल मेरु गंभीर ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी । अरस निरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणीयों । धन धन्नो अणगार ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ अनित्य भावना भावतो । धरतो निश्चल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमें । पाम्यो केवल ज्ञान ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो । जेनी शीतल छांय ॥ समय सुंदर कहे सेवतां । मन वंछित फल पाय ॥ रेजी० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । वेरन निद्रा तुं कहांसें आई ॥ सोइ० ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा कहे मेंतो बालीरे भोली । बमे बमे मुनि जनकूं नाखुंरे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निद्रा कहे में तो जमकी दासी । एक हाथमें मुक्ती और दूसरे हाथमें फासी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो भाइ बनीयां । आप डुबे सारी डुब गइ दुनियां ॥ सो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ श्री चंद्राप्रभु स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रा प्रभुजीसें ध्यानरे । मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागील गनवा छोरी न छूटे । जबलग घटमें प्राणरे ॥ मोरी० ॥ चं० ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो । जैन धर्म प्रतिपालरे ॥ मो० ॥ चं० ॥ २ ॥ हाथ जोरु कर अरज करत है । वंदत शेठखुशालरे ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री वीरजिन स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ते मुक्ति पुर गये रहेरे । वारी सकल करम दल खय कर ते ॥ मु० ॥ ए टेक ॥ अविनाशी अविकार हे । परमातम शिवधामरे ॥ समाधान

सरवंगे रूपी । मेरे मन वसे वसेरे ॥ वारी० ॥ १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे । वहे अनादि अनंतरे ॥ वीर प्रभुके आगें गौतम । अमृत पद लहे लहेरे ॥ वारी० २

॥ ❀ ॥ राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खतरा दूर करनां दूर करनां । एक ध्यान प्रभूका धरनां ॥ खतरा दूर करनां ॥ दू० ॥ टेक ॥ जबलग पांचो निर्मल करनां । तब लग जिन अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरनां । सुमति गुप्ति चित्त धरनां ॥ खतरा० ॥ २ ॥ संवर भाव सदा मन धरनां । आतम दुर गति हरनां ॥ खतरा० ॥ ३ ॥ धन कण कंचन कुं क्या करनां । आखर एक दिन मरनां ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु पाए परनां । शिव सुंदरी सुख वरनां ॥ खतरा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पानीमें मीन पियासीरे । सुन सुन आवत हांसीरे ॥ टेक ॥ सुखसागर सब ठोर भरयो हे । तुं कां भयो उदासीरे ॥ पानी० ॥ १ ॥ आत्मज्ञान बिन नर भटकत हे । क्या मथुरा क्या काशीरे ॥ पा० ॥ २ ॥ मान मुनि कहे ए गुरु साचो । सहजे मिले अविनाशीरे ॥ पा० ॥३॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ गरबा चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन रे दीवाली ह्मारे आजुनीरे । मेंतो उबी निरखी जिनराजनीरे ॥ धन धनरे दीवाली ह्मारे आजनीरे ॥ टेक ॥ पहेरी अंगी अलोकिक जातनीरे । मांही बुट्टी दीसे भांत भांतनीरे ॥ धन० ॥ १ ॥ मणी हीरा मुकुटमां जड्या बहुरे । कानें कुंडलनी शोभा शी कहुंरे ॥ धन० ॥ २ ॥ मुने किरपा करी ते हुं कहुं कशीरे । मारे वाहाले मुझ सामुं जोयुं हसीरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ पुनु शांति जिणंद हृदये वस्यारे । थई सूरशशीनी चढती दशारे ॥ धन० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन आजुनो दिन रलियामणोरे । सूरज सोनानो उग्यो सोहामणोरे ॥ धन० ॥ टेक० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्योरे । जिन राज ते माहरे मन गम्योरे ॥ धन० ॥ १ ॥ नव ग्रह समा थया ह्मारे आ

जथीरे । वली दशा ते श्री जिनराजथीरे ॥ धन० ॥ २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरवे गयुंरे । वाजानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युंरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथीखरीरे । सूर शशी ऊपरें करुणा करीरे ॥ धन० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्मारे आज आनंद वधामणांरे । हुं तो लेउंरे वाहलाजीना ना मणारे ॥ ह्मा० ॥ टेक ॥ सुनें दास पोतानो जाणीयोरे । आथरुतां ठेकाणें आणियोरे ॥ ह्मारे० ॥ १ ॥ आप्युं दरशन जे दुर्लभ देवनेंरे । सुने कीधुं तुं रहेजे मारी सेवमेंरे ॥ ह्मारे० ॥ २ ॥ एवो दीधो नरोसो साचा गुरूरे । प्र नु विना जगत् मिथ्या सहूरे ॥ ह्मारे० ॥ ३ ॥ लहेर करीने महारा मन रम्यारे । सूर शशीने जिनराजजी गम्यारे ॥ मारे० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी ॥ स० ॥ ए संसार जैसा सांजेलां । घडपणा आया घोडे चमी ॥ मांगी तुंगीने छत्र धरायो । केनो कंदोरो केनी कडी ॥ सवा० ॥ १ ॥ साधो नाई जिनने संजारो । जन्म दशा जेम आवी चमी । कहे लींबो नजतुं नगवंतनें । मोहजवानी ए वात खरी ॥ सवा० ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लावएयां संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगडुं अगमडुं बाजे चौघडा । सवाइरुंका साहेबका । ननं ग ननं अवाज होता । महेल बनाया गगनोंका ॥ कट्याण पारशनाथ नाम का । नित नित बाजे चौवमा । तीन लोकमें सचा साहेब । पार्श्वनाथ अव तार बमा ॥ १ ॥ बणारशी नगरीमें तेरा जनमहे । माता वामाके नंदा ॥ अश्वसेनके कुलमें शोने । जैसा सरदपूनम चंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आ नंदा । इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीश क्रोम देवता मिलकर । जन्नव करनेकूं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवतां कोइ गावतां । कोइ नाम लेता देवा ॥ चोस ठ इंदर अरज करंता । चंद्र सूरज करता सेवा ॥ केई सुरनर साहेबके आगे । अरज करंता खमा खमा ॥ जिनके सरूपको पारन पावे । जिन का गुण हे सबसें बमा ॥ ३ ॥ दूर देशसें आया जोगी । बहु जोर तपश्या

करता ॥ नीचें लगाता ज्वाला जोगी । बरु बरु झोंकें खाता ॥ बार बरस की कुमर प्रभुकी । छोटे पनमें बहोत कला ॥ बरोबरीके लीये सोबती । तपशीकूं देखन चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें । ऐसी तपस्या क्युं करता ॥ तु जोगी तेरे बरु लकरेमें । बरा नाग इक अध जलता ॥ पारस नाथ जोगीशुं कहेता । तोबी जोगी नही सुनता ॥ लकडे दीये फेंक जंग लमें । लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया बे जोगी तुमने । बरा नाग कों जला दीया ॥ दिया सार नवकार नागकूं । धरणीधर पदवीपाया ॥ बरी नमेदसें आया साहेब । संवत्सरीका दान दीया ॥ मात पिताकी आज्ञा ले कर । महाराजनें योग लीया ॥ ६ ॥ राज छोरके चले जंगलमें । जुगतीसें काउसग्ग कीया ॥ बडे धीर गंभीर प्रभुने । तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्ण कालकी बडी धूपमें । नीरंजन निरंकार खडा । कमठासुरने कीया कडाका । नभमंडल बादल चरा ॥ ७ ॥ तेहि दिनको कमठासुरनें । पीछला दावा जगवाया ॥ मेघमालिकी सेना लेकर । जलकुं जलदी बुलवाया ॥ बडा कीया घनघोर जोरसें । पवन चलाया मतवाला ॥ कडड कडड कर हुआ कराका । चमक बीजका अजुवाला ॥ ८ ॥ मूशल धारा मेघ बरस ता । गगन गाजता चौताला । सात खूरुकी बरी जमीमें । प्रभु खरा हे मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी । नाथ निरंजन धीर बरा । पराजय नहि होय जिनूंका । ऐसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन होल्यो । हूवा घंटका अवाजा । अवधि ज्ञानसें इंद्रें देख्या । धाउ धाउ धरणी राजा । धरणीधर जलदीसें आया । पदमावतीकूं संग लीया । पदमावतीने लीये शीशपर । शेषनागनें छत्र कीया ॥ १० ॥ कोरु उपाय कीये कमठनें । कुछ इलाज नही चलता । तरने वाला साहेब उनकूं । डुबने वाला क्या करता । जीते श्री जिनराज हारके । कमठ हाथ दो जोरु खरा । धरणीधर साहेबके आगे । अरजी करता खरा खरा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिव पुरकूं पहोंचे । पार्श्वनाथ शुभ मत वाला । लगी ज्योतमें ज्योत दीपकी । तपे तेजका अजुवाला । वीशनगर में पार्श्वनाथका । देवल बनाया तेताला । बरु देवलमें इंदर सोहे । घंट

वाजता चौताला ॥ १२ ॥ बनी जुगतमें सिंघासन कर । कोट बनाया देव लका । जगो जगोपर शिखर चढाया । दरवाजा शुभ केवलका । नमंडलके आगें सोभता । मूल गंभारा आरसका । पीछें पचीश देरीयां सोभित । सिरे काम सिंघासनका ॥ १३ ॥ मूलनायकके ऊपर सोहे । सहस फणा प्रभु पारशका । चौमुखकी चतुराइ बनी हे । बहु काम है सारसका । अ ढारसै पंसठ सवाई । मुहूर्त्त फागुणमाश भला । सुदि त्रीजकुं तखतें बेठे । जगो जगोपर नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघ बहु मिलकर । तेरे दर्शनकुं आया । जगत गुरू जिनराज जगतमें । बनी तेरी अकल माया । धर्म चंद जोभता सवाइने । बना सामी वात्सल्य कीया । सकल संघकी आज्ञा लेकर । बडा शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंदनें देवचं दने । खेम चंदने खूब कीया । पारसनाथकुं तखत वेठाके । जगो जगो पर नाम कीया । कीर्त्ति विजय गुरु राजकुं प्रणमुं । पायगुरुका राज बना । गुलाबचंद साहेबके आगें । जिनशासनका काम बना ॥ १६ ॥ तेजा गा वत चंग रंगसें । ग्यान ध्यानसें खना खना ॥ हाथ जोड कर अरजी कर ता । पारसनाथजी तुंही बना ॥ बना काम तेरे हे साहेब । मुखसें नहिं कहणें आता ॥ शिव रमणीकुं वरी हे जिनजी । नविजनकूं सुखके दाता ॥ १७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजै । में हुं दाशी चरनोकी । तोरन आइ फेर मत जाउ । तुमकुं सोगन यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ तुम ब्याहन आए । लारे सेना माधवकी ॥ उग्पन कोम यादव मिल आये । ए अवसर नहीं फिरनेंकी ॥ नेम० ॥ २ ॥ रथ फेरी गिरिवरकुं सि धाये । हमकुं छांमी नव भवकी । मेरे सामरे श्याम सलूने । में इहां नहीं अब रेनेंकी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ सुण जिनजी में तोकुं कउं हुं । देखुं सोभा गिरिवरकी । मात पिता बंधव सब छंडी । जाशुं संगें यादवकी ॥ नेम० ॥ ॥ ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राजुल । बात सुनो पियु मुझ घरकी । हमकुं छोड चले निरधारी । अब हे प्रीतम सरणेकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नेम कहे तुम सुनो हो राजुल । विषया रस है विष सरिखी । ये संसार असार निरंतर ।

कर करनी ए तरनेंकी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ पियुजी पासें संयम लीनो । जिनसें कारज शरनेंकी ॥ तपश्या करीनें उत्तम कीनी । ए भव पार उतरनेंकी नेम० ॥ ७ ॥ पीयुजी पहेलां राजुल नारी । पोहती सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए । येही शोभाहे जिनकी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ चतुर कुशल ये कही लावनी । जिनसें काया उधरनेंकी । अरिहंत ध्यान धरे दिलमां हे । फिर फेरा नाहिं फिरनेंकी ॥ नेम० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनदासजी कृत १० घन लावण्यां ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार । सफल करले अपनो अवतार । ध्यान तुम मनमें धरो नर नार । खाण दुःखकी ए हे संसार । करो प्रभु न्याल अभी जिनदाश । रखो प्रभु मुझ चरणोंके पाश ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरक जा कुमति नार काली । तेरी संगतसें गई जाली ॥ सोवत समताकी में टाली । आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत भव वीत गया खाली । वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदाश मांगे । सदा पद प्रभुजीके लागे ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन । चरण पर चढे केशर चंदन । करत सब इंद्रादिक बंदन । कटत हे कर्मोंका फंदन । साध्यो तें शिवपुर को साधन । सर्व जीवनकुं सुख कंदन । जिनंद गुण जिनदाश गावे । सीस चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बोलत हैया मेरा हसकर । चढावुं चंदन चूवा घसकर । पैठा में धर्मोंमें धसकर । पाप दल दूर गया खसकर । चेतन हुवा खमा कमर कसकर । हटाया कर्मोंका लसकर । श्री जिनराज जहाज खासा । शरण जिनदाश लीया वासा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समझ मन मेरा मतवाला । तुझें नहिं कोइ हटकणवाला । वस्या तेरे हइये कुगुरु काला । दिया तें सुरगतिकुं ताला । फेरतो ममता की माला । वालतो भगवंत पर भाला । दयासें दे दिया ताला । देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीया मैं गणधर प्रेमपती । मुझे वरदायक हे सरसती । करी निर्मल निर्ग्रंथ मती । पूठ पर खमे जागता जती । मुझे बलवंत भई सो ल सती । मिटी मेरी दुर्गतकी सब गती । ऐसा धन जिनदाश गावे । अ चल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ (❀ ॥

॥ ❀ ॥ विकट घट दुरगतका भारी । नीर ज्यां भरती कुमति नारी । बरजो उन नैनोंकी महारी । रुळ्या केइ कामी संसारी । इनोंकी हो रही खुआरी । जीत्या कोइ सत्य धरमधारी । प्रभु तुम परमारथ पाया । शरण अब जिनदाश आया ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चेत नर निगोदका बासी । कराई जगमें तें हांसी । कुमतिकी पगी गले फांसी । सुमतिसुं रखी हे उदासी । कुमतिकी बसी सेज खासी । मान रह्यो ममताकुं मासी । हियो खोल अरिहंतकों परखो । करो जिनदा श आप सरखो ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सुत्रोंकी नहिं मानी ॥ कीया नहिं गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी । कानसें लगी कुमति रानी । जगतमें उतर गया पानी । गति तेरी दुरगतिकी ठानी । सेवक तोरा जिनदाश बाजे । सुधारोगे तुमही काजें ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सूत्रोंकी तें मानी । कि या निज गुरु निर्ग्रंथग्यानी । कानसें लगी सुमति रानी । जगतमें अधिक चढ्यो पानी । गति तेरी सुरगतिकी ठानी । सेवक तेरा जिनदाश बाजे । सुधारोगे तुमहि काजें १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चल चेतन अब उठ कर अपनें । जिन मंदिर जइये । कीसी की चूंगी ना कहीयेंरे । कीसीकी चूंगी ना कहीयें ॥ चल० ॥ (ए आंक णी) । चरन जिनवरजी का भेटो । चर० ॥ भवभव संचित पाप करम स ब । तन मनका मेटो । सुकृत कीजें । महाराज । सुकृत० ॥ जिनवरका गु ण भज लीजै । समकित अमृत रस पीजै । लाज जिनभक्तिको लहीयेंरे ॥ लाज० ॥ चल० ॥ १ ॥ करो मत मुखसें वडाई ॥ करो० ॥ तजतामस तन म

नकी सुमतिसें घर रेनां नाई। रीतसें बोलो। मेरी जान। रीत०। आतम स मतामें तोलो। मत नरम पारका खोलो। मौन कर तन मनसें रहियें रे॥ मौन०। चल०॥ २॥ जोबन दिन चार तणो संगी रे॥ जोबन०॥ अं त समय चेतन नठ चाले। काया पनी नंगी। प्रीत सब तूटी। मेरी जा न॥ प्रीत०॥ आऊखाकी खरची खूटी। चेतनसें काया रूटी। सुख दुःख आप किया सहियें रे। सुख०॥ चल०॥ ३॥ जगतसें रहता नुदा सी रे। जग०। परख्या में जिनराज हरो। मेरी दुरगतकी फासी। तजो सब धंदा। मेरी जान। तजो०। जिनवर मुख पूनम चंदा। जिनदास तुमा रा बंदा। मेरे एक जिन दर्शन चहियें रे॥ मेरे०॥ चल०॥ ४॥ १॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम नजो जिनेशर देव। सुगति पद पाईरे॥ सुगति०॥ अब अचल अखंम्ति ज्योत। सदा सुखदाईरे (ए आंकणी) में रुट्यो चोराशी मांहे नूट्योमें नरम। नूट्यो०॥ महारे नदय अनंता दुःख। बांध्यां जब कर्म॥ में कदियक हून रंक। फिरयो तजि शरम॥ फिरयो०॥ अरु कदियक राजा नयो। गरथको गरम। जब गरब आण कर बोल्यो। पारका मर्म। पार०। पण निर्मल जुगमें जैन। कीयो नहीं धर्म। अब मनख जनममें चेत, धरी सुन आईरे। धरी०॥ अब०॥ १॥ में सुर नरका सुख वार। अनंती पाया॥ अनं०॥ महारे शिव समताका सुःख। हाथ नहिं आया में कुगुरु ने कुदेव। नला कर ध्याया॥ नला०॥ में नलझ्यो अनादि अग्यान। विषयनोग नाया। में पड्यो लोनके फंद। जोनतो माया॥ जोन०॥ पण लग्यो अंत जब आय। कालने खाया। अब परहर सब परमाद। धर्म कर नाईरे॥ धर्म० अब०॥ २॥ अब दुर्लन अवसर ल ही। तुं सुकृत करे। तुं सुकृ०॥ अब दान शीयल तप नाव। हीयामें धरेरे। तुं करमकी माला काट। पाप परिहरेरे॥ पाप० अब वार वार क हुं तोहे। जगतसें तरेरे। तुं निर्मल नयणें देख। नरकसुं नरेरे॥ नर०॥ तुं शीख सुगुरुकी मान। अग्यानी नरेरे। अब पर त्रीया कर जान बेन नें माईरे॥ बेन० अब०॥ ३॥ अब जिनवर मुऊ मन नायो सदा गुन गा

नं ॥ सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो । नरक नहीं जानं ॥ अब भव भव मांहीं देव । जिनेसरपानं जि० ॥ यें मन वच काया करी । चरण चित्त लानं । ए दया धरम हितकार । सदा में चानं ॥ सदा० ॥ ए चौरासीके मांहे । फेर नहीं आनं । युं अरज करे जिनदाश । कीरत ए गाईरे ॥ कीरत० अब० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति कुमति लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे तुं कुमति कलेसण नार । लगी क्युं केमे ॥ लगी० ॥ चल सरक खमी रहे दूर । तुझे कुण डेमे (ए आंकणी) हांरे तुं सुमतिको भरमायो । मुझे क्युं डोमी ॥ मुझे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत । छिनकमें तोमी ॥ तुझ विन सुनी मेरी सेज । कहुं करजोमी ॥ कहुं० ॥ उठ चलो हमारे संग । सुखें रहो पहोमी । युं झूर झूर कुमति आंसु । आंखसें रेमे । आंख० ॥ चल० ॥ १ ॥ हांरे तेरी नरक निगोदकी सेज । सेती में रूठ्यो सेति० ॥ पकड्यो साचो जिनराज । संग तेरो बुट्यो । तेरी मूरख मानें बात । हैयाको फूट्यो ॥ हैया० ॥ में सहेज हुवो हुं दूर तार तेरो तूट्यो । तुं कर दूरसें बात । आव मत नेमे ॥ आ० ॥ चल० ॥ २ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत । पलक नहींपाली ॥ पलक० ॥ सुमतिके लागो संग मुझे क्यों टाली । तुं सुमतिको शिरदार । सुनावे गाली ॥ सु० ॥ तेरी ह म दोनुं हे नार । गोरी और काली । तुं हमकूं ठेले दूर । सुमतिकुं तेमे ॥ सुम० ॥ चल० ॥ ३ ॥ अब कुमतिको ललचायो । रती नही मगियो । रती० ॥ सुन कर सूत्रकी शीख । साच होय लगियो । चेतन कुमतिके सेज । दूरसूं भगियो ॥ दूर० ॥ जिनराज बचनको ग्यान । हैयेमें जगीयो । जिन दाश कुमति तुं बात । खोटी मत खेमे ॥ खो० ॥ चल० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम तजो जगतका ख्याल । इसका गानां ॥ इस० ॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय । नरक उठ जानां । तें दिना चार जुग बीच । लिया हे वासा ॥ लिया० ॥ तेरे शिरपर वेठा काल । करेहे हासा । में बोलुं साची बात । झूठ नही मासा ॥ झू० ॥ तूं सूता हे कुण निंद । किसी कर

आसा ॥ अब सेव देव जिनराज । खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जो बन पतंगका रंग । झूठ सब आसा ॥ अब हीये धरो मेरी सीख । समजरे दिवाना ॥ सम० ॥ तु० ॥ १ ॥ अब बुरी भली सब बात । मोन कर रीजें मोन० ॥ ए मुख मीठा संसार । भेद नही दीजें ॥ कर वीतराग विशवास । हिये धर लीजें ॥ हिये० ॥ पण नीच नारका संग । मांहें मत भीजें । अ ब सात विसनको संग । प्रीत मत कीजे ॥ प्रीत० ॥ तोहे दुरगति दे पहों चाय । तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख दुखका सिरदार । रंक नही राना ॥ रंक० तुम० ॥ २ ॥ तुं बिसर गया जुग बीच । नाम जिनवरका ॥ नाम० ॥ पच रह्या कुटुंबके काज । किया फंद घरका । तें दया धरम बिन खोया जनम सब नरका ॥ जनम० ॥ तें पल्ले बांध्या पाप । कसाई सरखा ॥ अब लि या नही तें लाभ । बखत पर करका ॥ बखत० ॥ तेरीवीति बात सब जाय । जनम ज्युं खरका ॥ अब सुणो सीख सूतरकी । सुलटरे शानां ॥ सुल० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या । आनंद दिल आया ॥ आनं० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास । सुधारस पाया । मेरे सिरपर तुम सिरदार । जिनेसर राया ॥ जिने० ॥ में चानं चरनकी सेव । सफल कर काया । अब द्यो दोलत दरशनकी । मेरे एहि माया ॥ मेरे० ॥ युं अरज करे जिनदाश अलप गुण गाया । अब बुरा कुगुरु उपदेश । सुणो मत भाया ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनेमिनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दे गया दगा दिलदार । सुनो मेरी माई । सु० । लग रही नेम दरशनकी । सरस असनाई (ए आंकणी) । अब अजब अलीजो नेम । मे रे शिर छाजे ॥ मेरे० ॥ जादवकी देखी जान । जगत सब लाजै । एसो नेम नवल एकवींद । अनोखो छाजे । अनो० । सुर नर सब गावे गीत । गगन में गाजे । अब दोम दोम सब दुनीयां । देखन आई । दे० । ल० दे० ॥ १ ॥ अब चढ्या नेम तोरनकुं आनंद दिल धर कर । आनं० । सज आये सुरंगी साज । कीलोला कर कर । में पायो परमानंद हरख हियो भर कर । हर ख० ॥ ले गयो पति नेमनाथ । मेरो चित्त हर कर ॥ सखि सुख संपत आं

गनमें। आज चल आई ॥ आ० ल० ॥ दे० ॥ २ ॥ अब इण अवसरमें सुर त। श्यामकी लागी ॥ श्या० ॥ पशुअनकी सुनी पोकार। दया दिल जागी। जिन लही परवतकी वाट। तृष्णाकुं त्यागी ॥ तृष्णा० ॥ शिवर मणीके शिरबिंद। बन्यो वैरागी। अब महेल चढी राजलकुं। खमी उट काई ॥ खमी० ॥ ल० दे० ॥ ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें। टिके नही पानी ॥ टिके० जिन गुण गाया नहीं जाय। अलप जिंदगानी। अब कठण जीव दुरगतिको। बन्यो मै दानी ॥ ब० ॥ जिनदाश करो भव पार। दया दिल आनी। अब शरण सतीके बेठ। लावनी गाई। ला० ल० ॥ दे० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मगशी पार्श्वनाथकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुलक बिच मगशी पारशका। बाज रह्या डंका। मुगतिगढ जीत लीया बंकारे। मुग० मुलक० (ए आंकणी) करम दल बलकूं क्षय कीया रे कर०। मुगति महेलमें केलि करे। अनुभव अमृत पीया। शाशता जीया। महाराज। शा०। कल्याणक कारज कीया। अमरा पुर पदवी लीया। कमठ जशका कर गये फंका रे क०। मुल० ॥ १ ॥ प्रभु पारश भजले भाईरे। प्रभु० । भाव भरमका मेट जोत। तेरी जगमें सवाई। टेककूं टालो। महाराज ॥ टेक० ॥ चंचल चित्तसें मत वालो। गुमान गरवकुं गालो। गरवसें धूल मली लंका रे ॥ गर० ॥ मुलक० ॥ ॥ २ ॥ मेरे शुभ भाग्य उदय आया रे ॥ मेरे० ॥ इण पंचम आरामां हे प्रभु। मगशी पारश पाया। पापसें डरता। महाराज ॥ पाप० ॥ भवि जीव ध्यान दिल धरता। श्रावक नित समरण करता। मरण दुःख मिट्यां मेरे अंगका रे ॥ मरण० ॥ मुलक० ॥ ३ ॥ महीमा मगशीकी अब जानी रे मही० ॥ लही उघड मेरी आंख बिलोया। परब विना पानी। में जि नवर जाच्या। महाराज ॥ में जिन० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या। मगशी पारश हे साचा। करो मत मनमें कोइ शंका रे ॥ करो० मुलक० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ केशरीयानाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणजो बातां राव सदा शिव। मत चढ जानां धूलेवा ॥ गढपति उनका बडा अटंका। मत छेडो तुम उन देवा। (ए आंकणी)

सकतावत चंमावत बोले । हमहीं नोकर उनहींका । हींडुपति वाकूं हा थ जोमे । तीन उवन शिर हे टीका ॥ सु० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सबेही । सुर नर वांकूं ध्यावत हे । इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे । मन की मोजां पावत हे ॥ सु० ॥ २ ॥ गया राज उनहींसें आवे । निर्धनिया कूं धन देवे । बांझ खिलावे सुंदर लमका । सदा सुखी जेप्रनु सेवे ॥ सु० ॥ ३ ॥ तारे जिहाज समुद्रयें जइनें । रोग निवारे नव नवका । नूप नुजंगम हरि करी नदीयां । चोरन बंधन अरि दवका ॥ सु० ॥ ४ ॥ धौं धौं धौं धौं धौंसा बाजे । दशो दिशामें हे डंका । नाउ तांतीया नहीं नलाइ । मत बतलावो गढ बंका ॥ सु० ॥ ५ ॥ रानाजीके नुमरावकी । मानत नांहीं ये बातां । थांरा किया थेहीज पावो । में नहीं आवुं थां साथां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मूंउ मरोडे चढे अभिमानें । जहेर नरया हे निजरूंमे । रुषनदेव है साहेब सचा । देख तमासा कुजरुंमें ॥ सु० ॥ ७ ॥ मयाराम सुत नणे मूलचंद । बडे सितांबर तुम देवा । फोज विखरगइ घर घर घोडा । ल ज्जाराखो तुम देवा सु० ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैराग्य लावणी लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती । काया मंगलकी । सासो स्वा स समरलै साहिब । आउ घटै दिलकी ॥ १ ॥ (खबर नहीं है जुगमें प लकी । सुकृत करणा हो सोकरलै । कुण जाणैं कलकी) (ख०) तारा मंमल रवि चंद्रमा । सबही चलाचलकी । दिवस च्यारका चमत्कार है । वीजलियां नलकी ॥ (ख०) ॥ २ ॥ यो जग है सुपनैं की माया । उस बूंद जलकी । विनस जावतां बेरन लागै । डुनियां जाय खलकी ॥ (ख०) ॥ ३ ॥ हंसाया देहीमें जब लग । खुसीहै मङ्गल की । हंसा डांम चल्या जब देही । मिटिया जंगलकी ॥ (ख०) ॥ ४ ॥ मन मावत तन चंचल हस्ती मस्ती है बलकी । सदगुरु अंकुश दीया आनकै । वातां नई सलकी ॥ (ख०) ॥ ५ ॥ मात पिता सुत बंधव नाई । सब जन सुतलबकी । काया माया स बे कारमी । ए तेरै कब की ॥ (ख०) ॥ ६ ॥ झूठ कपट कर माया जो मी । कर वातां छलकी । बोझकी गांठ बंधी शिर तेरै । कैसें होय हलकी

(ख०) ॥ ७ ॥ देवधरम साहिबको समरण । ऐ वातां थलकी । राग द्वेष ऊपजै नही जिनकुं । बीनती अखैमलकी ॥ (ख०) ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरज हमारी सुणो दीनपति । कौन भांति तिरणां । हम दुखी फिरत संसार चतुर गति । सो तुमसैं निरना ॥ (अ०) ॥ १ ॥ घोरा घोर नरक कै भीतर । नाना दुख भरना । मारन ताडन छेदन भेदन । और देह धरनां ॥ (अ०) ॥ २ ॥ कबहुक तिरयंच योनि पायकै । गलै पास परना । क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णता । मार मारकरना ॥ (अ०) ॥ ३ ॥ देव विभूति पायकै सुंदर । देख देख झुरना । जब माला मुर झावण लागी । सोच किये मरना ॥ (अ०) ॥ ४ ॥ मनुषा जनम पायकै भटक्यो । कहुं नांही थिरनां । साहिब तुम सरणागत राखो । जनम मरण हरनां ॥ (अ०) ॥ ५ ॥ इति लावणी सं० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुक्ति जाणेंकी सिगरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) तीर्थंकर महाबीरनें । कौशल गणधर साज । कानून प्ररूप्या है दया । सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना । अशल खुलासा सार । जिणपुरषां धारण किया । पोहचा मुगति मझार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु हुवा । आर्या छत्तीस हजार । लाखां श्रावक श्रावका । पाया भव जल पार ॥ ३ ॥ (चाल हीर रंझैका ख्यालकी) ॥ ❀ ॥ मेरी अदालत प्रभुजी कीजियै । जिन सासन नायक मुगती जाणेंकी सिगरी दीजियै (जि० टेर) खुद चेतन मुदई बना है । आठुं करम मुदाला । दावा रस्ता मुगति मारगका । धोखा देजाय टालाजी (जि०) ॥ १ ॥ तप कागद इष्टांम । लिया । तलवाणां खिमा बिचारी । सिझाय ध्यान मजमुंन बनाकर । अरजी आन गुजारी जी (जि०) ॥ २ ॥ में जाता था मुगति मारगमें । कर्मूनें आघेरा । धोखा देकर राह भुलाया । लुंट लिया सब मेराजी (जि०) ॥ ३ ॥ वोहत खराब किया करमुंनें । चौरासीकै मांही । दुक्ख अनंता पाया मेंनें । अंत पार कबु नांही जी (जि०) ॥ ४ ॥ सच्चे मिले वकील कानूनी । पंच महाव्रत धारी । सूत्र देख मसोदा कीना । तबमें अरजी मा

री जी (जि०) ॥ ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्तीए। आवुं गवा बुलावो। शील असेसर वरा चौधरी। उसकुं पूछ मंगावोजी (जि०) ॥ ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी। हुवा सफीना जारी। हाजर आवो जुबाब लिखावो। लावो साबूती सारीजी (जि०) ॥ ७ ॥ आवुं मुदाले हाजर आए। मोह मुगत्यार बुलाये। च्यार कषायरु आठे मदकुं। साथ गवाई में लाए जी (जि०) ॥ ८ ॥ (टेर मुदालेकी) ॥ जिनसासन नायक। झूठा दावा है चेतनजीवका। (जि०) हमनें नहीं लखाया इसकूं। ए हमरै घर आया। करजा लेकर हमसें खाया। ऐसा फरेब मचायाजी (जि०) ॥ ९ ॥ बिषयभोग में, रमिया चेतन। वाटा नफा न जाना। करजदार जब लारै लागा। तब लागा पिस्तानाजी (जि० झू०) ॥ १० ॥ हाजर खमे गवाह हमारै। पूछियै हालजु सारा। बिनां लियां करजा चेतनसें। कैसें करें किनाराजी (जि० झू०) ॥ ११ ॥ (टेर) ॥ चेतन कहै सताबी मांही। सुन शाशन सिरदार। इमानदार है गवा हमारै। जांणें सब संसार जी। (जि० मे०) ॥ १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभूजी। करम फरेबी भारी। जीव अनंते राह चलतकुं। लूंट चौरासीमें मारा जी (जि०) ॥ १३ ॥ बमे २ पंम्डित इणलुंटे। ऐसा दम बतलाया। धरम कहा नर पाप कराया। ऐसा करज चढायाजी (जि० मे०) हिंसा मांहीं धरम बताया। तपस्या सेती झिगाया। इंद्रिय सुखमें मगन करीनें। झूठा जाल फैलाया जी (जि० मे०) ॥ १५ ॥ ऐसा करो इनसाफ प्रभूजी। अपील होन न पावे। हक रसी चेतनकी होवै। जनम मरण मिट जावैजी (जि०)। ग्यांन दर्शन करी मुनसफी। दोनुंकुं समझाया। चेतनकी झिगरी करदीनी। करमुंका करज बताया जी (जि०) ॥ १७ ॥ असल करज जोथा कर्मोंका। चेतनसेती दिलाया। सुध संजम जद करी जमानत। आगैका सूध मिटाया जी (जि०) ॥ १८ ॥ आश्रव ढोर संवरकों धारो। तपस्यासें चितलावो। जलदी करज अदाकर चेतन। सीधा मुगतिकों जावो जी (जि० मे०) ॥ १९ ॥ सुध संजम जदकरी जमानत। चेतन डिगरी पाई। फागुणसुद दशमी दिन मंगल। सन् उगणीसै अठाई जी (जि० मे०) ॥ २० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ अनुभव पद झिगरी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साहब अदालतपर बैठ । श्रीपारश प्रवीण अैन उत्तम चला ए है । शील है सिरदार और दान है दरोगा जाके दयारूपी वारण सत्त श्रावगण पर आए है । ग्यान है चपरासी ताको लग्यो है मोहोसल ताकी मालजामनीमें श्री जिनवरजी लिखाये है । रोसकी रसुम और कमीसन लगे कर्मनकुं मोहकों म्याद इस तार लटकाए है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुबानबंदी तबके कुछ स्वाल जबाव सत्तगुरनें बताए है । ग्रोफ का रसाजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको अनुभवपद पायवैकी झिगरी करा य लाए है । अब तो दरकास मैनें करी है तुमारे पास साहब जिनराज अरज मेरी सुणलीजीयै ॥ अष्टकर्म आडुं जाम करत है कारसाजी साह ब बुलाय इसकुं पिसे मान कीजीयै ॥ २ ॥ में तो हुं गरीब मेरी करैगा नकीली कोन । पारश प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयै । हारुं तो हाजर हजूर हीमें रह्यां करुं । जीतूं तो लगाय जुगल चरनमें लीजीयै । अबतो फरीयाद नाथ करी है तुमारेपास मेरी दाद दीजियै तो रावरी वडाई है । मुनसबकी बात और मामलत अदालतकी अबतोमें अफिलमान अरजी लगाई है । झूठ मूठ कारसाजी करत है पांच तीन साचो मत जैन जा की अैन अधिकाई है । मेरे ही पांच लोक मोहीकों झूठावत है ॥ जातेमें ग्वाही श्री जिनराजकी लिखाई है । ग्रोफ कारसाजी पायो पकडयो अ रिहंत जीको अनुभव पद पायवैकी झिगरी कराय लाए है ॥ ❀ ॥
इति अनुभवपद पाणेंकी झिगरी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपदेशरूप लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुकृतकी बात तेरे हाथ । रतीनां रहीरे ॥ रतीनां० ॥ पुदग लमें मान्यो सुख । कल्पना कहीरे ॥ सुकृत० ॥ जुग मांहे जैन निज सार । संघातें आवे ॥ संघा० ॥ इसकुं तज कर कयुं बेठो । विषय गुण गावे । अमृतकुं अलगो ढोल । विसन विषखावे ॥ विसन० ॥ मुग तिको मारग मेट । नवटमें जावे । थारी तुछ जिंदगानी मांहे । विकल बुद्धि नईरे ॥ विकल० ॥ पुदगल० ॥ १ ॥ थारे धन दोलत भंडार भर्या हे

मोती ॥ नरचा० ॥ शत्रु सज्जन सब बने । जगत होय गोती । कोई म सले तेल फुलेल । धोवे कोइ धोती ॥ धोवे० ॥ सन्मुख उठ आवे अब ला । तेरो मुख जोती । ऐसी संपत एक छिनमांहे । सरब क्षय नईरे ॥ सरव० ॥ पुदगल० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब खजाना खोया ॥ ख० ॥ निशिदिन सुखनर सुंदरिकी । सेजमें सोया । सजिया सोल सणगार । नारि सें मोह्या ॥ नार० ॥ तें अंतर घटका मेल । रती नहीं धोया । या नरक निगोदकी वाट । पकरु कर लहीरे ॥ पकरु० ॥ पुदग० ॥ ३ ॥ मन मा तो आठ मदमांहे । गरवसें बोले ॥ गर० ॥ मैं सुख संपतको नाथ । मेरी कुण तोले । दुर्बल करता पोकार । पलक नहीं खोले ॥ पल० ॥ आकर होय रह्या हजूर । चमर शिर ढोलै । अब अवसर आयो हाथ । चेत तुं सहीरे ॥ चेत० ॥ पुदगल० ॥ ४ ॥ कायासें कीयो लाभ । बनाई चंगी ॥ बना० ॥ पल नर पर वारयो पुन्य । तणो तिहां जंगी । पकमी पर नव की वाट होय कुण संगी ॥ होय० ॥ तेरो हंस गयो आकाश । काया पमी नंगी । जिनदास कहे करमोसुं । जोर तेरो नहींरे ॥ जोर० ॥ पुद गल में मान्यो० ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम तजकर राजुलनार तज्या सब घररे ॥ तज्या० ॥ में नमुं नेमके पाय । गया गिरिवररे । में प्रीत पीयाकी कर कर पछे लागी ॥ पछे० ॥ तुम त्याग चले बन खंरु । हुवे वैरागी । अब राजुल सरखी सती । नावसें त्यागी ॥ नाव० ॥ थारे अंतर घटमें ज्योत । ग्यानकी जागी । युं रोती राजुल नार नयण नर नररे ॥ नय० ॥ में नमुं ॥ १ ॥ में अरज करूं कर जोरु । करो मन परसन ॥ करो० ॥ मेरे शिरपर तुम शिरदार । देजो मोहे दरश न । अबसुख सखीयनका देख लग्यो मन तरसन ॥ लग्यो० ॥ मेरे ॥ आयो नयणमें नीर । लग्यो नित्य बरसन । मेरे नेम मिलनकी आश । मिलुं किम कररे ॥ मिलुं० ॥ में० ॥ २ ॥ में नहिं कीनी तकसीर । चले क्युं रूठे ॥ चले० ॥ मेरे घरमे कुटुंब परिवार । चार दिश चूंटे । में जो रहुं घरके मांहे । जोबन सब लूंटे ॥ जो० ॥ में चलुं पियाके साथ । प्रीत

क्युं तूटे। मेरे नेम विना नहिं ओर । जगतमें वररे ॥ जग० ॥ में० ॥ ३ ॥ तुम तारी राजुल नार । मुगतिमें मेली ॥ मुग० ॥ पीछे नेम गये निरवाण करम सब ठेली । मे नित उगे परभात । नमुं पद पहली ॥ न० ॥ मेरे नेम विना नहि और । जगतमें बेली । युं अरज करे जिनदाश । सुणो जिनवररे ॥ सुणो० ॥ में० ॥ ४ ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आप समझका घर नहीं पाया । दूजेकुं क्या समझावे ॥ बंका फिरे जिनदाश जगतमें । हीयो हाथमें नहीं आवे (ए आंकणी) दरस सवाद चाहनकी चित्तमें । चानक अधिकी आय लगे । इंद्रीका पर वसमे पडियो । ग्यानकला कहो कैसें जगे । तृष्णानें जग लूंट लीयो हे । कपट करी परधनकुं ठगे । खाय खाय लोही मांस वधारयो । प्राणी किस विध चले पगे । विषय विपतकी करे चूंथणी । चरचासुं चित्त नहीं लावे ॥ बं० आ० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकुं नहीं देखे । दूजाका अवगुण भाखे । हिंसाही में हूओ हजूरी । दया दूर दिलसें नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन । अवगुणके रसकुं चाखे ॥ तिनुही प्रणमे रागधरा में । सरणें जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्याई । धन मीसें इनकुं ध्यावे ॥ वं० आ० ॥२॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा । अजान होयसो मोहेपूजे । नहीं गाममें रुंख अंबको । एरंड अंब सरिखो सूजे । पारख नहीं हे हीये ग्यानकी । गुण अवगुनकुं कुण बूझे । गामर देख कहे सुज घरमें । कामधेनु इतनी दूजे ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा । अवगुन किम गाया जावे ॥ ब० आ० ॥ ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो । लोभ मांहें लपट्यो रहतो । गरथ गुमानी गमको गरजी । पीड पारकी नहीं सैतो । भगति नहीं गुरु देव धरमकी । कठण वचन मुखसें केतो । अंतर आंख न खुले हीयाकी । पूठ परम पदकुं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदाश जैनको । माल मुलकको ठग खावे ॥ वंको० ॥ आप० ॥ ४ ॥ २९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुरूकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमुं नमुं में गुरु निग्रंथकुं । वेजिन मुद्राधारी हे । पुन्नज

ऊपर प्रेम न करता । मनकी ममता मारी हे ॥ न० ॥ १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे । गत निग्रंथकी न्यारी हे । कनक कामिनीके नहिंभोगी । वेपूरा ब्रह्मचारीहे ॥ न० ॥ २ ॥ छकायाके जीव अनाथी । उनके वे हित कारी हे । करम काटकर केवल पावे । ज्ञान गरथ गुण भारी हे ॥ न० ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासें सुमति सेवी । निज आतमकुं तारी हे । जिनवरकुं जिनदाश वीनवे । उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुगुरुकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तजुं तजुं में उन कुगुरुकुं । कनक कामिनी धारी हे । ज्ञान ध्यानकी बात न जानें । अष्ट करमसें भारी हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपा लें बजूत लपेटी । शिरपर जटा बधारी है । कान फाडकर मुद्रा पहेरता उसके घरमें नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोग लेई कर जीव विणासे । वे मद्य मांश आहारी हे । कूमा पंथी जगतकुं करता । मुखसें कहे आचारी हे ॥ त० ॥ ३ ॥ कहुं औगुण कुगुरूका कब लग । साध नही संसारी हे । आप डुबे औरनकुं डुबावे । दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ त० ॥ ४ ॥ समकि त श्रद्धा जैन धर्मकी । नहिं कुगुरुकों प्यारी हे । जिनवरकुं जिनदाश वी नवे । कुगुरु संग खुवारी हे ॥ त० ॥ ५ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नवपद लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगतमें नव पद जयकारी । पूजतां रोग टले भारी (ए आं कणी) पथम पद तीर्थ पती राजे । दोष अष्टादशकुं त्याजे । आठ प्रा तीहारज छाजे । जगत प्रभु गुण बारे साजे ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दल जीतके । सकल सिद्ध ते थाय । सिद्ध अनंत भजो बीजे पद । एक सम य शिव जाय । प्रगट भयो निज स्वरूप भारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ सूरि प दमें गौतम केशी । उपमा चंद्र सूरज जैशी । उगारयो राजा परदेशी । एक भवमांहें शिव लेशी ॥ दोहा ॥ चोथे पद पाठक नमुं । श्रुत धारी उ वझाय । सब साहु पंचम पदें । धन धन्नो मुनिराय । वखाणयो बीर प्रभु भारी ॥ जगत० ॥ २ ॥ ॥ द्रव्य खटकी श्रद्धा आवे । सम संवेगादिक पा वे । बिना ए ज्ञान नहिं किरिया । जैन दरशनसें सब तरिया ॥ दोहा ॥

ज्ञान पदारथ सातमें । पदमें आतमराम । रमतां रम्य अध्यातमें । निज पद साधे काम । देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी । चक्रधर जोगी सब राणी । यती दश धरम करी सोहे । मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ दोहा ॥ करम निकाचित कापवा । तपकुठार करध्याय । क्षमायुत नवमुं पद धरे । कर्म मूल कट जाय । भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ पू० ज० ॥ ४ ॥ श्री सिद्धचक्र भजो भाई । अचामल तप बिधिसें थाई । पाप त्रिहुं जोगें परिहरजो । भाव श्रीपाल परें करजो ॥ दोहा ॥ संवत उगणीस सत्तरा समें । जेपुर श्री जिन पाश । चईत्र धवल पूनम दिनें । सकल फली मुझ आश । बाल कहे नव पद छबी प्यारी ॥ जगत० ॥५॥६१॥

॥ ❀ ॥ श्री केशरीयानाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) आदिकरन आदिम जगत । आदि जिणंद जिनराज ॥
धूलेवनाथ जाचो धणी । वरनुं श्री महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ कास्यप गोत्र ईक्ष्वाग वंशमें । मरुदेवा जननी जायो । नाभि नरेसर वंश भजाजन । आदि धर्म जश प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल । मंदिर गिरपै न्हवरायो । इसो रुषभ निधि प्रगट कल्प तरू । सुरनर मुनिजन नित्य ध्यायो ॥ २ ॥ खम्ग देशमें नगर धूलेवें । जास दमामा घुरता हें । जाकी महिमा अपरंपारा । कविजन कीर्त्ति करता हे ॥ ३ ॥ आदौ मूरत काल असंख्यकी । पूजी सुरगण असुरिंदा । सुरपति नरपति वंदित पद जुग । वलि पूजित सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख अग्यार हजार पंचाशी । वरश पांचशे पंचासा । इतनें वरश पर लंका गढमें । पूजित रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन । ए मूरत पूजन ल्याए । नयरी अयोध्या जाते अधबिच । नयर भजेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया । सुंदरि मयणां धरमनकी । बाप करम अरु आप करमकी । भई लकाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आप करमके ऊपर नृपनें । कुष्टी वरपें परणाई । मयणां चिंतें कांई नवाई । करम लखी सो बनि आई ॥ ८ ॥ इकदिन जिन पूजन गुरुवंदन । आई श्री जिन मंदिरपें । वंदन पूजन करके इकचित । ध्यान धरे मन कंदरपें ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ मोतिदाम छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंही अरिहंत तुंही भगवंत । तुंही जिनराज तुंही जगसंत । तुंही जगनाथ तुंही प्रतिपाल । तुंही मनमोहन तुंही दयाल ॥ १ ॥ तुंही भवभंजन भाव सरूप । तुंही अरि गंजन रंजन भूप । तुंही अविनासी तुं ही वीतराग । तुंही महाराज तुंही वरभाग ॥ २ ॥ तुंही गुणधाम तुंही विस राम । तुंही नवनिधि तुंही वरनाम । तुंही अघनाश तुंही अविनाश । तुंही मतिवंत तुंही मतिवास ॥ ३ ॥ तुंही गुन केवल रुप अनंत । तुंही जगतारन तारन संत । तुंही जगध्येय तुंही जगध्यान । तुंही चिद्रूप तुंही जग भा न ॥ ४ ॥ तुंही मम तात तुंही मम मात । तुंही मम भ्रात तुंही मम गात तुंही सरणागत राखण हार । तुंही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लावणीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति । कंत कुष्टसें नहीं डरते ॥ पूरब करमके लिखित लेख जे । किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुझ शासन ज गत हेलना । जगत ढंढेरा बाजत हे । आप कर्म अरु जैन धर्मके । फल पाईयें यो लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसें सह्यो जात नहीं । आदिनाथ जग रखपा ला । करुना करके रोग निवारन । गुन कीजें जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यह प्रस न होय फल बीजोरो । हाथ तणो फल तब दीनो । मयणा तब उल्लास भई । मन चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ तोदिन नमण नीर तनु फरसे कुष्ट रोग सब नासत हे । कामदेव अरु अमर समोवरु । नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल । प्रगट प्रबल हे जश तेरो । आसू चैत्र मासमें महिमा । देश देशमें प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागरु देश वरोद नगरमें । जगपर प्रभु करुना कीनी । कितने वरश लग महीमां महिमा । अविचल भूतल रिद्ध दीनी ॥ ७ ॥ दिल्लीपर तुरकान भयो तब । पादशाह लरवा आयो । भूत भूत पथ्थरकी मूरत । जरु मुल्लांसें उखरायो ॥ ८ ॥ बहुत दिनां लग कीवी लराइ । थाको यों वाचा बोले । देव हिंदको बरो जागतो । युं बोलत फिर फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो बात काजी मु ल्लां तुम । एक बातसें आसेंगा । गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई । गोवधसें

ये नासैंगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब निजरें। देख शके क्यों प्रति पाला। करन युद्धजब भये महाबल। शस्त्र झको झक विकराला ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) महा युद्ध करनें लगे। घाव चोराशी अंग ॥ ❀ ॥
॥ करी मलोखा गामली। आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गाम धुलेवे वंश जालमें। गुप्त रहे हें प्रभु धरती। गाय एक कोडी बनीयनकी। आई वांहां चरती ॥ १ ॥ सवे तिहां पयधारा शिरपर। सांझ समें फिर नहीं दूझे। रीस करी तव गोपालन पर। गौ पाल थरथर धूजे। दूजे दिन गौ लारें आयो। जाण्यो भेद कह्यो बनीयनपें। शेठ आय जब नजरें देख्यो। चकित भयो हें तन मन पें ॥ २ ॥ मध्य रातमें सुपनो दीनो। रुषभ नाथकी मूरत है। बाहिर निकासो करो जाय शी। भीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी। मत काढे तुं नव दिनमें। कियो शेठनें हुकुम प्रमाणें। आये संघ बहु ग दिन में ॥ ५ ॥ कै उपवासी कै व्रतधारी। कै अठुआणे पांचले। कई लोक कुं दुःकर बाधा। कब प्रभुको दरसन मिले ॥ ६ ॥ युं सब लोकां दरस त रसकी। कहे लोक मूरत काढो। लाओ लाओ महाराजकी मूरत। संघ सवे लीनो आनो ॥ ७ ॥ जबर दस्तसें दिवस सातमें। लापशी बाहिर तवकीने। अंस अंसभर व्रण रहा ए। संघ लोक दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें द्रव्य दिखायो। संघे मिल देवल कीनो। मध्य विराजे रुषभ तख तपर। कलियुगमें यों जश लीनो ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) संवत अढार त्रेसठमें। भाद्र सदा शिवराय ॥
॥ ❀ ॥ कियो धंगानो दुष्टनें। भाखुं बरन बनाय ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ मोतिदाम छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदाशिवराय चिंते मन एह। लुंटे बहुधाम जमीपर जेह। जि ह्वां पति नाथ धुलेव कहाय। लखो लग द्रव्य भंमार सुनाय ॥ १ ॥ जावां अब लूंटण गाम धुलेव। ग्रहुं सब माल जई तत खेव। आयो निज फोज लेइ दलगाज। तोपां दोयसाथ लीया बहु साज ॥ २ ॥ कंपु दोय लार जी

ए फीरंगाण । उंठां भर साथ लीये कोकबाण । तवां बहु लोक कहे महा राज । नही इह कारन कृत्य अकाज ॥ ३ ॥ ए तोबह जाजल देव कहाय। रहे नहीं लाज तिहांरिय कांय । तवां फिर बोले सदाशिव भूप । ग्रहुं सब माल अबां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत दुष्ट करूर । कीयो नजराणह नाथ हजूर । रख्यो नहीं नाथ तवां नजराण। भयो मन चकित मान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत भंभारी बुलाय । मीठे वच बोल सबे ललचाय । लई संग आय मुकाम मझार । कियो तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार पुकार । भंभारि सबेय पुकार पुकार । करो अब बाहर नाथ दयाल । गयो किहां आज गरीब निवाज । चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण समें कोऊ शेठको । वहाण तारण काज । गये अधिष्ठायक नाथजी । भेरुं गए वहां गाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी । सहेर धूलेव मझार । किओ अकारज दुष्टनें । शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी । करवा जन संभाल । दो घोरे दोनुं चढे । भेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ भिल्ल कोप आपें कियो । दश दिशि फोज हजार मार मार चौ तरफतें । भई लमाई त्यार ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुकू कुकू कुकू वहे कोक बाणं । सणणं सणणं तीर तरकस्स बाणं । धुबाके धमाकें वहे नाल गोला । जिसा कर्कसा जम्मरा नयण फोला ॥ १ ॥ कितें अंगपें शस्त्रा घाव लागे । कितें मारथें कंपते दूर भागे । कितें दंतपें तिरण लेवें वराका । कितें थरथरे त्रास होवें निराका ॥ २ ॥ किते रसुल्ला इलल्ला पुकारे । किते दीन होके खुदापें संभारे । किते नाथपें केशरां खून माने । किते नाथकुं जागती जोत जाने ॥ ३ ॥ सदाशीवने घाव लग्गो अटारे । पुनी भान जशवंत दोनुं संहारे । बग्गो कोप जानी सबे फोज भाजी । हुइ केशरी नाथकी जीत बाजी ॥ ४ ॥ सदाशीवने आखडी अटक लीनो । सवापांचशौ रुकमरो खून दीनो । इसो नाथ धूलेवरो मर्द गाजी । सदा केशरा नाथरी जीत बाजी ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) या विध कलियुग जगजना । तार्या कै जिनराज ॥
दीप विजय कविराजकुं । महेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ तुंही नवनिध तुंही अष्टसिध । तुंही मन वंछित वंछित रिध । तुंही सिरदार तुंही किरतार । तुंही सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंही काम कुंभ तुंही कामधेन । तुंही सुरवृक्ष तुंही ममसेन । तुंही दक्षणावर्त्त दायक देव । तुंही विसराम तुंही वम्सेव ॥ २ ॥ तुंही मम प्राण आधार जरूर । तुंही मम इछित दायक नूर । तुंही मम नूप तुंही पतशाह । तुंही मम रिध भंडार अगाह ॥ ३ ॥ तुंही मम मंत्र तुंही मम यंत्र । तुंही मम सत्य तुंही मन तंत्र । तुंही गछनायक तुंही श्री पूज्य । तुंही मम पुज्य तुंही जग पूज्य ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके । देश देश नृप आवत हे । केशरमें गरकाब रहेंतें । केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशावर फिरे दुहाई नाथनकी । हिंदु मुसल बरु राणा हाजर । पूरै इछित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमैं । रण रावल दुःख दूर हरे । एकचित्त ध्यानें जे नित समरे । अखय खजाना अन्नर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धमप धमप मप । ताल पखावज राजतहें । गमगम दौ गमगम दौ गमगम । धोंधों नोबत बाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर । श्रीमसिंहके राजनमें । एह लावणी खूब बनाई । सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पचोत्तर वर्षे । फागुण सुदि तेरस दिवशै । मंगलकेदिन दीप विजयकुं । दरशन परसन दो जलसे ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलश अडिल्ल छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरन जब शरन । तीन लोक कलिमल हरन । धुनि बरसत जल धरन । भरन पोष पावन करन । जुगल धर्म नीती हरन । सब करम ओघ घन जरन । मोह मल्ल अरि दरन । सुकलु बरन शुभ चरन इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन । जगद बिरुद तारन तरन । दीप विजय कविराज बहादुर । रुषभ नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषन्न नाथ महाराज । सबे दुःखदालिद्र भंजन । रुषन्न नाथ महाराज । सबे भूप मनरंजन । रुषन्न नाथ प्रथ्विनाथ । समरथों वाहर धायें रुषन्ननाथ पृथ्विनाथ । मंगल नाम गवायें । दीप विजय कविराज बहादुर खलक मुलक हाजर रहे । कलि जुग जयो देवतुं । सुरनर सबकीरत कहे॥२॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमनाथकी जान वर्णन लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमकी जान बनी भारी । देखनकुं आये नर नारी (ए आंक णी) अनंता घोडा और हाथी । मनखरी गिनती नहीं आती । उंठ पर धजा जो फरराती । धमकसें धिरती थरराती ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका लाडला । नेम उनुंका नाम । राजुलदेकुं आये परणवा । उग्रसेन घर ठा म । प्रसन भई नगरी सब सारी । नेमकी जान बनी भारी ॥ १ ॥ क सुंबल बाधा अति भारी । काने कुंमल डबिहे न्यारी । किलंगी तुररा सुख कारी । माल गले मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंमल झग मगे । शीश मुगट झलकार । कोमि भानुंकी करुं उपमा । शोभा अधिक अपार बाज रह्या बाजा टंकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ लूट रही उनकी डहराई । ब्या हमें आये बडे भाई । झरोखे राजुलदे आई । जानकुं देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी देखकें । मनमें करे विचार । बहोत जीव करि एकठा । वाडो भरयो अपार । करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये । पशु जीव सबही कुरलाए । नेमजी वचन फरमाये । पशु जीव कायेकुं लाये ॥ दोहा ॥ याको भोजन होवसी । जान वासते एह । एह बचन सुनी नेमजी । थर थर कांपे देह । भावसें चढगये गिर नारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसुं राजुलदे आई । हाथ जब पकड्यो छिनमां हीं । कहां तुं जावे मेरी जाई । और वर हेरुं मुकताई ॥ दोहा ॥ मैरे तोवर अेकही । होगया नेम कुमार । और भुवनमें वर नही । कोटी करो बिचार । दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम० ॥५॥ साहेल्यां सबही समझावे । हिये राजुलके नहीं आवे । जगत सब झूठो दरसावे । मेरेमननेम कुमर भावे । दोहा ॥ तोड्या कंकण दोरडा । तोड्या नवसर हार । काजल टीकी पान सो पारी । त्याग्यो सब सणगार । सहेल्यां सबही बिलखाणी ॥ नेम० ॥ ६ ॥

तज्या सब सोले सिणगारा । आभूषण रत्नजडित सारा । लगे मोहे सबही सुख खारा । छोम कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकुं । तज तां न लागी वार । विजोग कर चली आपशुं । जाय चढी गिरनार । फू रती छोमी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकी आई । त्याग जब कीनो छिनमांई । नेमि जिन गिरनारे जाई । पशुके बंधन छुडवाई ॥ दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपें । लीनो संजम दान । नवलराम करी ला वनी । उपन्यो केवल ज्ञान । जिनोकी किरिया बुद्धि सारी ॥ नेम० ॥८॥

॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वजिन आरती, लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी । जन्म बनारशी हे जिनका । घननं घननं वाजे घंट घण । ऐसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० ॥ १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तब । स्याम घटा बिजुरी चमका । गिरुओ गाजजल मूशलधारा । धरम धरडका जन शंका ॥ आ० ॥ २ ॥ थररर आ सन कंपे सुरको । तव धरणीधर चित्त चमका । फण विस्तार हजार किये तब । झमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ० ॥ ३ ॥ जब पदमावति सब सि णगारे । ताथेइ नाचतले फिरका । धमक धमक धौं मादल वाजत । घननं घुग्घुरके घरका ॥ आ० ॥ ४ ॥ धीधी २ कट नोबत बाजै । धौंधौं कट दुंद भि धौंका । याविधगीत संगीत बजन सब । गांधर्व गान करे जिनका ॥आ० ॥ ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब । झफ झोंझों करते झंका । नेरण फेर णके झणकारे । झागमदी झालरके झंका ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुर नर इंद्र सब जे जे करते । जीवत सफल भया जिनका । अमृत उदय तिणबेर भयो सुख । को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर पारणो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर कियो पारणो । आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ (टेक) घरा एकसो आठ शेलडी । रस भरियाछे नीका । उलट भाव श्रेयांस वहिरावै । मांगदिवी आ बूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव दुंदुभी वाज रहीहे । सोनइयांरी वरखा । बारे माशशुं कियो पारणो । गइ भूख सब तिरखारे ॥ आ० ॥ २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर घर मंग

लाचार । दुनियां हरख वधामणा सिरै । आखात्रीज तिवाररे ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ संकट काटो विघन निवारो । राखो हमारी लाज । बे कर जोमी नान्हू कहिता । रुषभ देव महाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिनाथ चौमासो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आई घटा गगनमें कारी । राजुलकुं विरह दुःख भारी ॥ आ० ॥ टेक ॥ चौमासा लग्या रस भीना । अलि आषाढ रंग महीनां । चारुं तरफसें वादल पीना । वीजुलीनें चमकनां कीना । दिल होल धमकता सी ना । मैं अबला सखी पति हीना (उमाना) सररररर चलत समीर । थर ररर करत सरीर । फररररर फरत समीर । अलि कैसी करुं तदबीर बुरी तकदीर । पीया बिन प्यारी । राजुलकुं विरह दुःख भारी ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रावनमें श्याम घनघोर । भरजोर बोलते मोर । दादुर मिल करते दोर । पिऊ पिऊ पपैया सोर । झरु लग्यो बुंद झकजोर । बिच चमके दामिनी कोर । (उमावणी) खरूरूरूरू रव घन माला । तडडडडड ज ल परनाला । अडडडडड नाला खाला । मैं दुःखी हुइ बेहाल हीयेमें । साल हुई जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ भाद्रवमें पवन प्राचीना । बादलमें धनु ष रंगीना । जंगलमें नदी स्वरझीणा । ज्युं वाजे मनोहर बीणा । अबए सें कहो क्या जीना । प्रीतमनें मुझे दुःखदीना । (उमाना) युं विलपत मुख मुरझाई । सखीयन मिल दोरु जगाई । युं विलखत वचन सुनाई । सखी देखो पीयाकी रीत । तोरुके प्रीत गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर । याचु चंद भये वे पीर । उठ चली नेमके तीर । काटनकुं कर्म जं जीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर । व्रत संजम समकित हीर । (उमाना) शिव राजुल नेम सिधाये । इंद्रादिक जश गुण गाये । भविजन मिल शीश नमा ये । मुनि कहे कपूरचंद प्रेमसें उंद । जाकुं बलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराजकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराज । गरीबनिवाज । जरूर जिनवरजी । सेवक शिरनामें तनें उबारे अरजी । कर माफी मारावांक । रमलीयो रांक । अनंता भवमें ॥ २ ॥ आव्यो हुं ताराशरण । बली दुःख दवमें । क्रोधादिक

धुकता चार । खरेखर खार । लग्या मुजकेरे ॥ २ ॥ वली पापी ह्मारो नाथ । छेक छेडेरे । आ मुजरो मुज भगवान । करुं गुणगान । ध्यानमां धरजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ १ ॥ में पूरण कर्या छे पाप । सुणजो आप । कहुं कर जोरी ॥ २ ॥ मुऊ जुंमामां भगवान । चूक नहीं थोरी । जीवहिंसा अ परंपार । करी किरतार । हवेथुं करवुं ॥ २ ॥ फूटूं बहु बोली । साधनेंथुं हरवूं । तुऊ खोलामां मुऊ शीश । जाण जगदीश । गमें ते करजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ २ ॥ में किया बहुत कुकर्म । धरा नहीं धर्म पूर्ण हुं पापी ॥ २ ॥ अवलो थई तारी आण । मेंज लत्थापी । में मूरख निंदा घणी । मुनि पर तणी । करी हरखायो ॥ २ ॥ परदारा देखी लबाऊ । हुं ललचायो । किं कर कहे केशवलाज । आणीने व्हाल । दुःख तुं हरजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मम्माई सहरमें चिंतामणि भेट्या चिंताचूरका ॥ टेक ॥ सब देशां काशी सिरै, सिरे नगर वणारशी धार । सहुराजा शिरसेहरो' सिरे अश्वसेन कुल तारजी ॥ म० १ ॥ बामाकूखे अवतर्या, सिरे नीलवरण तनधन्न । सतवरषांको आयु कहीजै, नवकर देहरतन्नजी ॥ म०३ ॥ मस्तक मुगुट काने युगकुंमल, हियमै नवसर हार, आंगियां सहुरयणेजमी, सिरै पीठन्नामंमल सारजी ॥ म० ॥ ३ ॥ तेजै रविजिम दीपता, सिरे मुखजिम पूनम चंद । हियमो हेजे निरख तां, सिरै सब इंद्रिनो वृंदजी ॥ मम्माई० ॥ नगणीसे गुणतीसमें, सिरै चैत्रकृ ष्णपक्ष न्नाण । यात्रकरी सुन्नवेद तिथीकों, संघवी बुधसिंह जाणजी ॥ म० ॥ ५ ॥ लुंपक गणमें सोन्नता, सिरे अजयराज जिनदास । संघ सहाये भेटिया, करे मुक्ति कमल अरदासजी ॥ म० ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री बंबई मंमण श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ लावणी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीठोमा, श्रीगौमी पार्श्वनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीठोडा मांहें प्रगट थयारे गौमी पाशजी ॥ वी० टेक ॥ मरुधर देशमें गाम वीठोमा, उत्तम धरती पाय । चंदनमल लोढाकों सुपनो, मिलियो पुन्यपसायजी ॥ बी० १ ॥ संघसाथ चंदनमल वनमें, जोवे चिहुं दिशफेर । द्वितीयशुक्ल नन्नरुद्र तिथीकों, दीठो अक्षतढे रजी ॥ बी०२ ॥ अक्षतदेख मग

नहुय दिलमें, अरजकरी करजोम। अचरजवाली वात हुई जब, प्रगट भया नुंय फोम्जी ॥ ३ ॥ ताम्रपात्रमें प्रनुमस्तकपर, जीवत अहिफण सार। केशर चंदन पुष्पादिकसें, पूजन अति मनुहरजी ॥ बी० ४ ॥ देशदेशके नविजन सुनके, नमंगधरी चितआय। गोमीचा पारशका दरशन, करतां दिलसुखपा यजी ॥ बी० ५ ॥ रजतवर्ण दोयहीरा झलकत, रविजिम तेजदी पाय। अति शय गुणपूरत प्रनु परितिख, शांति सूरत सुखदायजी ॥ बी० ॥ ६ ॥ अधिक संघकी नक्तिदेखके, प्रनु रहे दिन इकवीस, नाद्रवदसुद तृतिया रजनीको अदृश विशवावीशजी ॥ बी० ७ ॥ कलयुगमें ए अचरजकारी, महमा अध की देख, नविजीवां मन आनंद नपनो, कुमति कदाग्रह रेखजी ॥ बी० ८ ॥ धन्यघमी धन्य नाग हमारो, पायो प्रनुदीदार, नंदअनिल निधि चंद्र संवत्सर, सुनमहुरत तिथिवारजी ॥ बी० ९ ॥ करजोडी पारसप्रनु ध्यावे, सफल हुवे अवतार। लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन हरख अपारजी ॥ बी० १० ॥ इति लावणी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरुषन जिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोढो पोढोजी रुषन विहारे। निद्रावश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रनुआलस अंग हुलशाई। पूछे मरुदेवा माई ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रनु नंदा सुमंगलाराणी। नन रुच रुच सेज संनारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रनु नवलसुं नेह सनेहा। मनवंछित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे सेवक हित कर गावे। मनवंछित फल पावे ॥ पो० ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे। कर जोमी शीश नमावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दीवालीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन मंगल एरे सकल दिन। पूजी प्रनातें चालीरे ॥ ❀ ॥ आज ह्मारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरूने। मोतीने था ल पूरावो। चार चार आगे चतुर सुहागण। चरण कमल चित्त सारीरे ॥ आज० ॥ २ ॥ धन धुन धन तेरश दिवशै। काले काली चउदश। पाप ह णीजे पोसो कीजै। कर्म मेलो सर्व टालीरे ॥ आज ह्मारे० ॥ ३ ॥ अमावस की परब दीवाली। फरती झाक झमाली। घर घर तो दीवडीया झलके

रात दीसे अजुवाली रे ॥ आज ह्यारे० ॥ ४ ॥ अमावसकी पिछली राते । आठ करम सहु टाली । श्री महावीर निरवाणे पोहोता । अजरामर सुख कारी रे ॥ आज ह्यारे० ॥ ५ ॥ पन्निवा नें वली जुहार पटोला । ए रत रूमी सारी ॥ गुरु गौतमनां चरण पखाली । रीऊ पामी रढीयाली रे ॥ आज ह्यारे० ॥ ६ ॥ बीजें तो वली नावरु बीज । बेनरमी अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होय रे पनोता । एवे एवे हरखे गाई रे ॥ आज ह्यारे० ॥ ७ ॥ हरखविजय पंन्नित इम बोले । करोसहु सेव सुंहाली ॥ रूपविजय पंन्नित गुणगावे । जय जय वाजे ताली रे ॥ आज ह्यारे० ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः दीपमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यारे दीवाली रे थई आज । प्रनु मुख जोवाने ॥ सख्या सख्यारे से वकनां काज । नवदुख खोवाने ॥ टेक ॥ महावीर स्वामी मुगतें पहोता ने । गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धनदीवाली ह्यारे । वीर प्रनु निरवाण ॥ जिनमुख० ॥ ह्यारे दीवाली० ॥ १ ॥ चारित्र पाल्या नि र्मलांने । टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एवा प्रनुनें वांदिये तो । उतारे नव पार ॥ जिन० ॥ मा० ॥ २ ॥ बाकुला वोहोरया बीरजी ने । तारी चंदन बाला रे ॥ केवल लई प्रनु मुकतें पोहोता । पाम्या नवनो पार ॥ जि न० ॥ मा० ३ ॥ एवा मुनिनें वांदीयेंजे । पंचमज्ञानने धरतारे । समवसरण देई देशना रे ॥ प्रनु तार्या नरने नार ॥ जिन० मा० ॥ ४ ॥ चौवीशमा जि नेसरू ने । मुकति तणा दातार रे ॥ कर जोमी कवियण एमनणे । मारो न वनो फेरो टाल ॥ जिनमुख० ॥ मा० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आत्मलघुता स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यो जिनदास झूठो रे झूठो ॥ येने लेइ लाकडी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहिं नरतो । ग्यान हीयाको खूटो ॥ सुधार्यो सुधरे न हिंघडतां । जैसो लकडको ठुंठो ॥ यो० ॥ १ ॥ नणवा गुणवाका गुण नहिं आया । कोरोही पकड्यो पूठो ॥ गपोडा सुण कर लोक पूजता । ए अलग कालको वूठो ॥ यो० ॥ २ ॥ पंडित गुरुकी सोबत पाई । चेत्यो नहिं हीयाको फूटो । साचा नरको संग न करतो । कूड कपट नहिं बूटो ।

यो० ॥ ३ ॥ झूठोहि बोले झूठोहि चाले । कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह असार देखके । जिनदास सबसूं रूठो ॥ यो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल स्तवन राग सामेरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीजे मंगल चार । आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥ (आंकणी) ॥ पहेलुं मंगल प्रभुजीकुं पूजूं । घसी केशर घनसार ॥ आज० ॥ १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं । कंठे ठवुं फुल हार ॥ आज० ॥ २ ॥ त्रीजुं मंगल आरती उतारुं । घंट बजावुं रणकार ॥ आज० ॥ ३ ॥ चोथुं मंगल प्रभु गुण गावुं । नाचूं ते थैथैकार ॥ आज० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । चरण कमल जाउं वार ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनेमनाथजीको नवरसो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहली, गर्वाकी देशीमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो । शामलियाजी । शिवादेवी मात मलार । वर पातलियाजी । एक दिन रमवा नीसरया ॥ शा० ॥ आव्या आयुधशाला मांहे ॥ व० ॥ १ ॥ सारंग धनुष चढावियुं ॥ शा० ॥ तेणे मोल्या आकाशें इंद्र ॥ व० ॥ चक्र नपाणीनें फेरव्युं ॥ शा० ॥ गदा लीधी कमरांहे ॥ व० ॥ २ ॥ नेमें शंख वजाणीयो ॥ शा० ॥ तेणें मोल्या माहिना मेर ॥ व० ॥ शेष नाग तिहां सल सल्या ॥ शा० ॥ खल ज लीया सायर सर्व ॥ व० ॥ ३ ॥ गिरिवर टूंक तूटी पड्यां ॥ शा० ॥ थरहर कंपे लोक ॥ व० ॥ कोइक वैरी नपनो ॥ शा० ॥ इम करता कृष्ण विचार ॥ व० ॥ ४ ॥ आव्या तिहां नंतावला ॥ शा० ॥ जिहां छे नेम कुमार ॥ व० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शा० ॥ ताहरुं बल जोवानी खंत ॥ व० ५ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल बीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्णें कर लंबावायो ॥ हसी बोलोजी । तुमें वालो नेम कुमार । अंतर खोलोजी । कमलनाल परें वालीयो ॥ हसी० ॥ कृष्ण नवि लागी वार ॥ अंत० ॥ १ नेमें कर लंबावीयो ॥ हसी० ॥ कृष्णे नवि वाल्यो जाय ॥ अंत० ॥ हाथें कृष्ण हिंचोलिया ॥ हसी० ॥ तिहां हरि मन झंखो थाय अं० ॥ २ ॥ नारी जो परणावीयें ॥ ह० ॥ तो बल उंचेरुं थाय ॥

अं० ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निजअंतेउर समझाय ॥ अं० ॥ ३ ॥ नेम विवाह मनायवा ॥ ह० ॥ सज्ज थाउ सगली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगें मिल्या ॥ ह० ॥ ताहरुं अतुली बलअरीहंत ॥ अंत० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राधाजी ने रुक्मणी । मोरा गिरधारी । सत्यभामा जांबुवती नार । मुकुटपर हुं वारी । चंद्रावती शिणगारीयें ॥ मोरा० ॥ गोपी मली बत्तीश हजार ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी । मने करवाना बहु कोड । ए गुण तोराजी । नारी विनानुं आंगणुं ॥ देवर० ॥ जेम अजूणो धान ॥ ए गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वदे ॥ देवर० ॥ तो पामें प्राहुणा मान ॥ ए गुण० ॥ नारी विना नर हाली जिसा ॥ देवर० वली वांढा कहशे लोक ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥ ओकरवाद न कीजीयें ॥ देव० ॥ ॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर० ॥ हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल चोथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम कहे तमे सांभलो ॥ मोरी भाभी जी । ए किशो काम विकार । में गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी० ॥ ते रमवमिया गति चार ॥ में० ॥ १ ॥ रावण सरिखो एलव्यो ॥ मोरी० ॥ जे लइ गयो शीता नार ॥ में० ॥ नारी विषनी कूंपली ॥ मो० ॥ मायानी मोहन वेल ॥ में० ॥ २ ॥ उपन्न कोमि जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ते वारो वार ॥ में० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी० ॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में० ॥३॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवला बोल न बोलीयें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कुमार । मकरो दिवाजाजी । एकवीश तीर्थंकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्वे परणया नार ॥ मकरो० ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर० ॥ तेनुं मूल्य केणें नवि थाय ॥ मकरो० ॥ नारीमाहेथी नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम सरिखा श्रीभगवान । मकरो० ॥ २ ॥ नेम न बोले मुखथकी ॥ वर० ॥ मांड्यो विवाह मंमाण ॥ मकरो० ॥ उग्रसेन घर बेटडी ॥ वर० ॥ ते

नामें राजुल नार ॥ मकरो० ॥ ३ ॥ लीधुं लगन जतावलुं ॥ वर० ॥ आ प्या लीला श्रीफल हाथ ॥ मकरो० ॥ जीमण लाडू लापशी ॥ वर० ॥ वली सेवइयो कंसार ॥ मकरो० ॥ ४ ॥ आछी जलेवी पातली ॥ वर० ॥ वली मांहे घेवरनो जाग ॥ मकरो० ॥ खारी पुरीने दहीथरा ॥ वर० ॥ व ली खाजाने मगदाल ॥ मकरो० ॥ ५ ॥ लाखण साई हेशमी ॥ वर० ॥ मांहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ मकरो० ॥ कूर रांधो कमोदनो ॥ वर० ॥ मां हे मसूरनी दाल ॥ सबल दिवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजूर नें टोपरा ॥ वर० ॥ वली चारोलीने द्राख ॥ सबल० ॥ लवंग सोपारी एलची ॥ वर० ॥ वली पानना बीमा चार ॥ सबल० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीया ॥ वर० ॥ बहु कीधी पेरामणी सार ॥ सबल० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥ वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सबल० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥ वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सबल० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥ इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल० ॥ ९ ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते नें निरखे राजुल नार ॥ सबल० ॥ रूपचंद रंगें मळ्या ॥ वर० ॥ ए जोवा सरखी जान ॥ सबल० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल छठी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजुल नार हइडुं हींसे जी ॥ काला गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ वली कालो मेघ मलार ॥ हइडुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखमी ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मूल केणे नवि थाय ॥ हइडुं० ॥ काली कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काला कृष्णागरु केश ॥ हइडुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मळ्या ॥ ए दीसे जी ॥ सखि शामलीयो जरतार ॥ हइडुं० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल सातमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पशुअ पोकार सुणी करी । शुध लीधी जी । विचारे श्रीवीतरा ग । तेणें दया कीधीजी । जो परणुं तो पशु मरे ॥ शु० ॥ मूकी अनुकंपा जाल तेणें० ॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरवतां दीनदयाल

॥ तेणें० ॥ पशुबंधन सर्व तोमीया ॥ शु० ॥ ते सर्व गया वनमांहे ॥ तेणें० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शु० ॥ प्रभु दीधुं वरसीदान ॥ तेणें० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल आठमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजिमती धरणी ढल्या ॥ मोरा वहालाजी ॥ अवगुण विण दीनानाथ ॥ हाथ नझाल्यो जी ॥ आंगण आवी पाछा वल्या ॥ मोरा० क्षत्री कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ० ॥ १ ॥ तमें पशु तणी करुणा करी ॥ मोरा० ॥ तमने माणसनी नहिं मेर ॥ हाथ० ॥ आठ भव थया एकठा ॥ मोरा० ॥ कीधा तुमशुं रंग रोल ॥ हाथ० ॥ २ ॥ नवमे भवें तमें नेमजी ॥ मोरा० ॥ मुझने कां मेली जाउ ॥ हाथ० ॥ मारी आशा अंबर जेवडी ॥ मोरा० ॥ तमें केम उपाडी कंत ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूडा कलंक चढाविया ॥ मोरा० ॥ भाख्या अण दीठा आल ॥ हाथ० ॥ में पंखी घाल्या पांजरे ॥ मोरा० ॥ वली जलमां नाखी जाल ॥ हाथ० ॥ ॥ ४ ॥ में साधुने संतापीया । मोरा० । में माय विछोड्या बाल ॥ हाथ० ॥ में कीधी दर उघाडियां ॥ मोरा० ॥ मरमना बोल्या बोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥ अणगल पाणी में भरया ॥ मोरा० ॥ में गुरुनें दीधी गाल ॥ हाथ० ॥ में कठिण करम कीधा हशे ॥ मोरा० ॥ ते आवी लागा पाप ॥ हाथ० ॥ ॥ ६ ॥ इम करतां राजुल आविया ॥ मोरा० ॥ श्रीनेमीशरनी पास ॥ हाथ० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरा० ॥ राजुल लियो संयम भार ॥ हाथ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल नवमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनेम राजीमती एकठा ॥ साहेलडीयां ॥ जइ चढिया श्रीगिरनार । जिनगुण वेलडियां । पूठेथी राजुल आवियां ॥ सा० ॥ संजम वती राजकुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आज्ञा लेइ राजुल एकली ॥ सा० ॥ गिरनार उपर गुफामांहे ॥ जिन० ॥ वाटें जातां वर्षा थई ॥ सा० ॥ चीजाणां राजुलनांचीर ॥ जि० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जइ शूकव्या ॥ सा० ॥ लागुं ते काचुं नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोहामणुं ॥ सा० ॥ राणी राजीम तीनुं शरीर ॥ जिन० ॥ ३ ॥ रहनेमि तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखि राजिमती निचोवे चीर ॥ जिन० ॥ प्रगट थई ते बोलीयो ॥ सा० ॥ भाभी म

करो मन उदास ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो अलुं थयुं ॥ सा० ॥ आप णे करशुं भोग विलास ॥ जि० ॥ उत्तम कुलनो उपनो ॥ सा० ॥ तुं बोल वि चारी बोल ॥ जि० ॥ ५ ॥ संयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ वली कीधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमी तव बोलीयो ॥ सा० ॥ माता रा जीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेमीसर कनें मोकल्या ॥ सा० ॥ फरी ली धो संयम भार ॥ जि० ॥ नेम राजुल केवल लई ॥ सा० ॥ पोहोता मु क्ति मझार ॥ जिन० ॥ ७ ॥ पीयु पहेली मुगतें गयी ॥ सा० ॥ राजीम ती तेणि वार ॥ जि० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ सा० ॥ प्रभु उतारो भवपार ॥ जिन० ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति नवरसो सं० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दान शील तप भाव चौ ढालियो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी । पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शीय ल तप भावना । बोलिश बहु संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसरया । रा जगृही उद्यान । समवसरण देवें रच्युं । बेठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥ बेठीबारे परखदा । सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रभु हुं वखो । मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांभलजो सहुको तुमे । कुंण छे मुझ समान अरिहंत दीक्षा अवसरें । आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहोर दातारनुं । लीये सहु कोई नाम । दीधांरी देवलज चढे । सीझे वांछित काम ॥ ५ ॥ ती र्थंकरने पारणें । कुण करशे मुऊ होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी । साढी बाहर कोम ॥ ६ ॥ हुं जग सगलुं वश करुं । मुऊ मोहोटी छे वात ॥ कु ण कुण दानथकी तरया । ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहेली, ललना कीदेशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन सारथवाह साधुने । दीधुं घृतनुं दान । ललना । तीर्थंकर पद में दीयुं । तिणे मुऊने अभिमान । ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वखो । मुऊ सरिखुं नहिं कोय ॥ ललना ॥ रुद्धि समृद्धि सुख संपदा । दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नामें गाथापति । पभिजा भ्यो अणगार ॥ ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लह्युं । तेतो मुऊ उपगार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं । देतो वोहोरी आण ॥ ल

लना ॥ भरत थयो चक्रवर्त्ति भलो । ते पण मुऊ फल जाण ॥ लालना ॥ दा० ॥ ४ ॥ मास खमणने पारणें । पडिलाभ्यो रुषिराय ॥ लालना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे । दान तणे सुपसाय ॥ लालना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आर्या चन्दना बाकुला । उत्तम पात्र विशेष ॥ लालना ॥ मूलदेव राजा थयो । दानतणां फल देख । लालना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणें । श्री श्रेयांस कुमार । लालना । सेलडीरस वहरावीयो । पाम्यो भवनो पार । लालना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला । पडिलाभ्या महावीर । लालना । पंचदिव्य परगट थया । सुंदररूप शरीर ॥ लालना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडुं । शरणे राख्युं सूर ॥ लालना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति पणें । प्रगट्यो पुण्यपडूर । लालना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजभवें शशलो राखियो । करुणा कीधी सार ॥ लालना ॥ श्रेणिकनें घर अवतरयो । अंगज मेघ कुमार लालना ॥ दा० ॥ १० ॥ एम अनेक में उच्चरया । कहतां नावे पार ॥ लालना ॥ समयसुंदर प्रभु बीरजी । मुऊ पहिलो अधिकार लालना ॥ दा० ॥ ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शील कहे सुण दान तुं । किस्यो करे अहंकार । आडंबर आठे पहोर । याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरे । भोग करम संसार । जिनवर कर नीचा करे । तुऊने पडो धिकार ॥ २ ॥ गर्व मकर रे दान तुं । मुऊ पुठै सहु कोय । चाकर चाले आगले । तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं । नवुं निपावे कोय । सोवन कोडी दान दिये । शीयल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शीलें संकट सविटलें । शीलें जश सोभाग ॥ शीलें सुर सानिध करे । शीयल वडो वैराग ॥ ५ ॥ शीलें सर्प न आभडे । शीलें शीतल आग । शीलें अरि करी केशरी । भय जाये सवि भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भयथकी । में तो भाव्या अनेक । नाम कहुं हवे तेहना । सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारियें ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शील कहे जग हुं वडो । मुऊ वात सुणो अति मीठीरे ॥ लालच लावे लोकनें । में दान तणी वात दीठीरे ॥ शी० ॥ १ ॥

कलह कारण जग जाणीयें । वली विरति नही पण कांइरे । ते नारद में सीझ्या । मुऊ जुउ ए अधिकाईरे ॥ शी० ॥ २ ॥ बांहे पहेरया बेरखा । शं खराजायें दूषण दीधोरे । काप्यो हाथ कलावती । ते में नवपल्लव कीधोरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ रावण घर शीता रही । तो रामचंद्रें घर आणीरे । शीतानुं कलंक उतारीयुं । में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ चंपा बार उ वाम्वा । वली चालणीयें काढ्युं नीरोरे । सतीय सुभद्रा जश थयो । में तस कीधी भीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांग्यिो । राणी अभयायें दूषण दाख्योरे । शूली सिंहासन में कीयो । में शेठ सुदर्शन राख्योरे ॥ शी० ॥ ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें । आवतां अरिदल थंभ्योरे । तिहां पण सानिधमें करी । वली धरम कारज आरंभ्योरे ॥ शी० ॥ ७ ॥ पहिरण चीर प्रगट किया । में अठोत्तरशो वारोरे । पांम्व नारी द्रौपदी । में राखी माम उदारोरे ॥ शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदन बालिका । वली शीलवती दमदंती रे । चेलानी साते सुता । राजिमती सुंदरी कुंतीरे ॥ शी० ॥ ९ ॥ इत्या दिक में उधर्या । नर नारीनां वृंदोरे । समयसुंदर प्रभु वीरजी । पहिले मुऊ आणंदोरे ॥ शी० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तप बोल्युं त्रटकी करी, दाननें तुं अवहील ॥ पण मुऊ आग ल तुं किरयुं । सांभलरे तुं शील ॥ १ ॥ सरसा भोजन तें तज्या । न गमे मीठा नाद । देह तणी शोभा तजी । तुझमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ ना रीथकी करतो रहे । कायर किरयुं वखाण । कूड कपट बहु केलवी । जि म तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुऊ आदरे । ढुंगी सहु संसार । आ प एक तुं भांजतो । बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोडवा । भांजुं भव भय भीम । अरिहंत मुऊनें आदरे । वरश छमाशी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरें । मुऊ लब्धें मुनि जाय । चैत्य जुहारे शाश्वता । आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोयण लाखना । लघु कुंथु आका र । हय गय रथ पायक तणां । रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसे उपशमे । कुष्टादिकना रोग । लब्धि अठावीश ऊपजे । उत्तम तप संजो

ग ॥ ८ ॥ जे में तार्‍या ते कहुं । सुणजो मन उल्लास । चमत्कार चित्त पामशो । देशो मुऊ शाबास ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दृढप्रहार अति पापीयो । हत्या कीधी चार हो । सुंदर । ते पण तिण भव उधर्‍यो । मूंक्यो मुक्तिमझार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरि खुं जगको नही । तप करे कर्मनुं सूरहो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दो हिलुं । तपमां नहीको कूर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो । करतो पाप अघोर हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमालीमें उधर्‍यो । छेद्या कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीषेणनें में कियो । स्त्रीबल्लभ वसुदे व हो ॥ सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अंतेउरी । सुख भोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणों । हरिकेशी चंडाल हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोमी सेवा करे । ते में कीधी चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ४ ॥ विष्णुकुमर लब्धें कियुं । लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे । ए मुऊ शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौ तम चढ्या । वांद्या जिन चोवीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रतिबूझव्या तेणें मुऊ अधिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सहस अण गारमां । श्री धन्नो अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीण जिणंद वखाणीयो । ए पण मुऊ अधिकार हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलें । उकर कार कहाय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रशंसीयो । मुऊ महिमा सवि तेह हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ९ ॥ नंदीषेण वोहोरण गयो । गणिकायें कीधी हास हो ॥ सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवन तणी । में तसु पूरी आश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलभद्र प्रमुख बहु । तार्‍या तपसी जीव हो ॥ सुंदर ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी । पहिलो मुऊ प्रस्तावहो ॥ सुंदर तप० ॥ २

॥ ❀ ॥ ढाल चौथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भाव कहे तप तुं किशुं । छेमुयुं करे कषाय । पूर्व कोमी जो तप तपे । क्षणमां खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रते । तें बाल्यो सवि देश । अशुभ नियांणुं तुं करे । क्षमा नही लव लेश ॥ २ ॥ द्वीपाय

न रुषि दूहव्या। सांब प्रद्युम्न सनाह। ते तब क्रोध करी तिहां। कीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शीयल तप सांभलो। मकरो कुउ गुमान। लो क सहुको साखदे। धर्मे भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक जो त्रणे। द्ये व्याकरण ते साख। काम सरे नहि कोइनुं। भाव भणें में पाख ॥ ५ ॥ रस विण कनक न नीपजे। जल विण तरुअर वृद्धि। रसवति रस न हि लवण विण। तिम मुऊ विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औ षधी। देव धर्म गुरु सेव। भाव विना ते सवि वृथा। भाव फले नितमेव ॥ ७ ॥ दान शील तप जे तुमें। निज निज कह्या वृत्तंत। तिहां जो भा व न हुंत तो। कोइ सिद्धी नवि हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले। तार्या बहु नर नार। सावधान थइ सांभलो। नाम कहुं निरधार ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल चौथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कानन मांहे काउसग्ग रह्योरे। प्रसन्नचंद रुषिराय। ते में की धो केवलीरे। ततक्षण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर। भाव वसो संसार। ए तो बीजो मुऊ परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलोरे। पोहोंचाडुं भवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ (ए आंकणी) बंश उपर चढी खेलतो रे एलापुत्र अपार। केवल ज्ञानीमें कियोरे। प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ भूख तृषा खमें अति घणीरे। करतो कूर आहार। केवल महि मा सुर करेरे। कूरगडू अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घ णोरे। आण्यो मन वैराग। कपिल थयो मुनि केवलीरे। ते मुऊनें सो भाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अर्णिका सुत गछनो धणीरे। क्षीणजंघा बलि जा ण। कीधो अंतगम केवलीरे। गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्न रशें तापस भणीरे। दीधी गौतमें दिक्ख। ततक्षण कीधा केवलीरे। जां मुऊ मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीयें पीलियारे। खंधक सूरि ना शिष्य। जनम मरणथी छोम्व्यारे। आपे मुऊ आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंम रुद्रनें चालतांरे। दीधो दंमप्रहार। नव दीक्षित थयो केवलीरे। ते गुरु पण तेणी वार ॥ सो० ॥ ९ ॥ धन रथ कारक साधुनेंरे। पडिलाभ्यो उल्लास। मृगलो भावना भावतोरे। पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज

अपराध खमावतीरे। मुंक्यो मनथी मान। मृगावतीने में दियुंरे। निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरेंरे। देखी पुत्रनी रुद्ध। मुऊनें मनमांहे धरयोरे। ततक्षण पामी सिद्ध ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर बंदन चाल्यो मारगेंरे। चांप्यो चपल तुरंग। दर्दुरनामें देवतारे। तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रभुपाय पूजन नीसरीरे। दुर्गला नामें नार। काल धर्म्म विचमां करीरे। पोहोती स्वर्ग मझार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा कारिमीरे। रूप किसुं अभिमान। भरत आरीशा भुवनमांरे। पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढभूति कलानिलोरे। प्रगट्यो भरत सरूप नाटक करतां पामियोरे। केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिक्षा दिन कायसग्ग रह्योरे। गजसुकुमाल मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियुंरे। सिद्धि गयो शुभ जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे। सांभलजी पृथिवी चंद। पोतें केवल पामियोरे। सेवकरे सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेकमें उद्धरयारे। मूंक्या शिवपुर वास। समयसुंदर प्रभु बीरजीरे। मुऊने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बीर कहे तुमे सांभलो। दान शीयल तप भाव। निंदा छै अ ति पापिणी। धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां। पापें पिंड भराय। वेढ राढ वाधै घणी। दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापियो। जूंनो कोई न दिठ। वलि चंडाल समो कह्यो। निंदक वदन अ दिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी। करतो इंद नरिंद। लघुता पामें लो कमां। नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे। निंदा ने अ हंकार। आप आपणे ठामें रहो। सहुको भलो संसार ॥ ५ ॥ तो प ण अधिको भाव छे। एकाकी समरत्थ। दान शीयल तप भणे भलां। प ण भाव विना अयकत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां। अधिको आणी रेख। रजमांही तज काढतां। अधिको भाव विशेष ॥ ७ ॥ भगवंत हठ अंजण भणी। चारे समान गणंत। चार करी मुख आपणां। चउविध धर्म भणंत ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर इम भणें रे । बेठी परखदा बार । धर्म करो तु मे प्राणिया रे । जिम पामो भव पाररे । धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चा र प्रकारो रे । भवियण सांभलो । धर्म मुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥ (ए आंकणी) धर्मथकी धन संपजे रे । धर्मथकी सुख होय । धर्मथकी आरति टलै रे । धर्म समो नहिं कोयरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ दुर्गति पडतां प्रा णीया रे । राखै श्री जिनधर्म । कुटुंब सहुको कारीमुंरे । मत भूलो भवि भर्म रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हुआरे । वली होवे होसी जेह ते जिनवरना धर्मथी रे । मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलशें बासठ समेंरे । सांगानेर मझार ॥ पद्मप्रभु सुपसाउलेरे । एह भणयो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे । खरतर गछ कुलचंद । युगप्रधान जग परगडोरे । श्री जिनचंद सूरीस रे ॥ धर्म० ॥ ६॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे । विनय वंत जशवंत । आचारिज चढती कला रे । जिन सिंह सूरिमहंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यनारे । सकलचंद तस शिष्य । समयसुंदर वाचक भणें रे । संघ सदा सुजगीस रे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शील तप भावना रे । सरस रच्यो संवाद । भणतां गुणतां भावशुं रे । रुद्धि समृद्धि सुप्रशादो रे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ चक्रेश्वरी देवी आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय आरति देवी तुमारी । नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी जय० ॥ १ ॥ श्री सिद्धाचलगिरी रखवाली । नाम चक्रेसरी जग सोख्या ली ॥ जय० ॥ २ ॥ सुविहत गछनी शासन देवी । सकल श्री संघने सुःख करेवी ॥ जय० ॥ ३ ॥ निलवट टीलडी रत्न बिराजे । काने कुंडल दोय रवि शशि छाजे ॥ जय० ॥४॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे । नीलवर्ण स हु जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूडी खलके । पा ये घूघरूा घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ वाहन गरुड चड्या बहु प्रे में । तुझ गुण पार न पामुं केमें ॥ जय० ॥ ७ ॥ चूनडी जमामां देह अति दीपे । नवसरा हारे जग सहु जीपें ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी

आरती उतारे। रोग सोग भय दूर निवारे ॥ जय० ॥ ९॥ तस घर पुत्र पुत्रादिक छाजे। मन वंछित सुख संपद राजे ॥ जय० ॥ १०॥ देवचंद्र मुनि आरति गावे। जय जय मंगल नित्य बधावे ॥ जय० ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ बीकानेर, श्री कुंथुंजिनचैत्यप्रतिष्टा स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दादा चिरंजीवो० ॥ (इस चालमें) ॥ ❀ ॥ आज हर्ष भयो त्रिभुवन नायक कुंथु जिनेसर भेटिया ॥ (आ०) प्रभु मस्तक मुगट बिराजैछै । रविजिम कुंडलयुग छाजै छै । गुण सगला अंग समाजै छै ॥ (आ०) ॥ १ ॥ प्रभु चौतीश अतिशय धारक छै । बांणीना गुण बिस्तारक छै । सहु देवेंद्र जिणना पायक छै ॥ (आ०) ॥ २ ॥ प्रभु सिंहासण पर सोहैछै। जसु छत्रचामर शिर होवै छै। भवि यणना मनकुं मोहै छै (आ०) ॥ ३ ॥ प्रभु ध्यानें जे होय रंग राता । ते पामें नवनिधि सुखशाता । अवसानें मुक्तिपुरी पाता (आ०) ॥ ४ ॥ प्रभु कुगुरु कुदेवकुं में ध्यायो । जब काल अनादी दुखपायो । अबतो तुम शरणें हुं आयो (आ०) ॥ ५ ॥ प्रभु बिरुध तुह्मारा चित धरने । भव भय टालो मुनिजर करनें । जिम जगमें सहु जस तुम वरनें (आ०) ॥ ६ ॥ संवत नगणीसै इकतीशै। जेठ उज्वल दशमी मन हींसै । करी चैत्य प्रतिष्टा शुभ दीसै। (आ०) ॥ ७ ॥ प्रभु आज सफल भयो दि न मेरो । रवि जिम प्रगट्या बीकानेरो । सहु आनंदकारक संघ तेरो (आ०) ॥ ८ ॥ जिन हंस सूरीश्वर महाराजा । थाप्या अतिशय धर जिनराजा । गुरु लक्ष्मीप्रधान सेवणकाजा (आ०) ॥ ९ ॥ ❀ ॥

इति बिक्रमपुर मध्ये श्री कुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्टा स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (श्रीशंखेसर पाशजिनेसर) ॥ (इस चालमें) ॥ ❀ ॥

श्रीशीतल जिनचंद अनंत गुणाकरू । महा गोप महामाहण जगपति सुख करू । जगगुरु जगदाधार शरण तोरै सदा । रहतां स्वपनमें दुक्ख पांमुं नहीं हुं कदा ॥ १ ॥ तूंही चिदानंद देव तूंही मुझ गुरु अछै। तूंही तात तुंही मात तूं ही बंधवअछै। कांम धेनुं चिंतामणि सुरतरु तुं सही । अक्षय

सुख दातार तुं ही पायो मही ॥ २ ॥ तुमनांमें अडसिद्ध नवे निध पाइयै। दिन २ बढतो तेज कीरति जगन्नाइयै। इंद नरिंद सहू बस होय तुम सेव तां। उद्भव आनंद होय सहूगुण कैवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम भार कहू नहीं बणसकै ॥ बहुल कर्मकै जोर चित नहिं रहसकै । जो आतम गुण ग्यांन प्रगट होय माहरो। तो पांमुं सहु भेद तिनकमें ताहरो । ब्रह्मा बिष्णु महेश जाणुं मुझ सारषा। बीतरागतुं देव करीमें पारखा । दीनदया ल दया निधि शिवसुख दीजियै। मोहन निजगुण पाय एही जश लीजियै इति जगन्मएरुण श्रीशीतलजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (श्रीसंखेसर पाश०) (और) नदी जमुनाकै तीर भमै दो य पंखिया। (झांरा लाल भ०) इस चालमें ॥ ❀ दृढरथ नंदानंद पूरण अतिशय धरू। बदन कमलको तेज देखी छिपै दिन करू । अंग उपांग लक्षण दीसै सहु दीपता । रूपे सुर नर इंद सहूकुं जीपता ॥ १ ॥ मुगट कुंडल गलहार बाजूबंध सोहता। वक्षस्थल श्रीवत्स तिलक मनमोहता। छत्र चामर भामंडल गुण सहु फरसता। अणियाला दोय नेत्र अमीरस वरसता ॥ २ ॥ देव भुवन जिम चैत्य बणयो बहु भावसें । देखी प्रफुल्लित होय सहू गुण दावसें । अनुपम महमा देखि चित्त अति मोहियो। आनंद अधिक अपार हियामें सोहियो ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव्यो बहुकालमें। मोह मिथ्यातकै जोर पड्यो बहुजालमें । पूरण पुन्य हिव जोग प्रभु दरशण मिल्यो। भव भय संकट दुक्ख सहू निश्चै टल्यो ॥ ४ ॥ तारण भवजल मांहि शीतल प्रभु जाणियो । तुम गुण अपरंपार हिया में पिछांणियो । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान सेवक वद्री भणी । मोहन प्रभु सुख कंद मिलै शीतल धणी ॥ ५ ॥ ❀ ॥
इति कलकत्तामंरुण श्री शीतलनाथजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीरप्रभु तेरी दोस्तीमें । मेरी सुमता सखी मेहरवान भईरे ॥ (वी०) आप नहीं आवै बोधा पठावै । तेरी सुरत कुरबांन भईरे ॥ (वी०)

॥ १ ॥ शासन नायक एही अरज है । दीजे दरश वली वेर अरेरे (वी०) ॥२॥ आश दाशकी पूरन कीजे । चरण शरण लपटाइ रहीरे (वी०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन जीसें मोरी० (इस चालमें) ॥ सदा सहाई शांति जिने सर अवदुख दूर गमाय (अलांजी अला अव०) । विश्वशेनके कुलमें सुर तरु । अचिराके नंद कहाय (अ०) । जनम भूमि हथणा पुर जाके । मृ ग लंछन सुख दाय (अ० ॥ १ ॥ स०) ॥ तीश अधिक दश धनुष प्रमा णें । काया कंचन सोभाय (अ०) कुरुवंश कुल लाख बरश स्थित । केव ल ग्यांन बरदाय (अ० ॥ २ ॥ स०) गर्भ थकां प्रभु शांति करी जब । शांति नाथ पद पाय (अ०) भव भव भमतां शरणें आयो । अबतो करि ये सहाय (अ० ॥ ३ ॥ स०) ज्युं पारेवा ऊपर तुमनें । करुणा अधिक कराय (अ०) परतिख प्रभुपुर कलि कत्तामें । सहु जन बांछित दाय (अ० ॥ ४ ॥ स०) मुक्तिकमल कहे शिवसुख दायक । संकट दूर पुलाय (अ० ॥ ५ ॥ स०) इति कलिकत्ता मंडन श्री शांतिनाथजी स्तवनम् ॥❀॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुजीकी महमा अजब बनीजी मारो मनमो लियोरे लोभाय (अलां जी प्रभु मनडोलियोरे लोभाय जी) । विश्वशेन अचराजीके नं दा । शांतिनाथ मन भाय (अ० प्र०) मस्तक मुगट काने युग कुंडल । अर अंगियां रही छाय (अलां० प्र०) ॥ १ ॥ मोहनी मूरत सोहनी सूरत सहु जनके सुखदाय । नाम ग्रहण करतां जिनजीको । सुरगण पमै सहु पाय (अलां० प्र०) ॥ २ ॥ ईत उपद्रव दुख सहु टाले । नित प्रति मंगल थाय (अ०) मुक्तिकमल कहे सुरतरु सरिखा । मनवंछित फल दा य (अलां० प्र०) ॥ ३ ॥ इति द्वितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ काती महोछव बधाई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रथ चढ जादु नंदन आवत है । (इस चालमें) ॥ ❀ ॥ आज नगरमें हरख वधाई । समवसरण प्रभु आवतहै । (आ०) धरम

जिनेशर जग परमेशर । शांति सूरत मनभावतहै (आ०) ॥ १ ॥ अ नुपम रयण जमी उर अंगियां । मुगट कुंमल चित्त चावत है (आ०) ॥ २ ॥ छत्र चामर भामंमल दीपत । नवसर हार सुहावत है (आ०) ॥ ३ ॥ सरदशशि मुख कमल बिराजत । रविजिम तेज फैलावत है (आ०) ॥ ४ ॥ नर नारी सहु अंग आभूषण । झुल झुल शीश नमावत हैं (आ०) ॥ ५ ॥ मणि मुगता फल अक्षत श्रीफल । भर भर थाल बधावत है (आ०) ॥ ६ ॥ बीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी गुण गावत है ॥ ७ ॥ सहुपुर इंद्र धजा अति दीपत । बिबिध बाजित्र सुहावत है ॥ ८ ॥ इत्यादिक आमंबर बहुविध । कहतां पार न आवत है ॥ ९ ॥ (आ०) कार्त्तिक सुद पूनम दिन उछव । देख सहू सुख पावत है (आ०) ॥ १० ॥ धन्यभाग कलिकत्ता पुरमें । मोहन प्रभु गुण गावत है । (आ०) ॥ ११ ॥ इति कलकत्ता कार्त्तिक महोछव वर्णन श्रीधरमनाथ स्वामी बधाई सं० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शासन नायक बधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (केशरियानें जाजको लोक० इस चालमें ॥ ❀ ॥

हमारै आज आनंद बधाई । प्रभु बीरचरण सुखदाई । (हमारै आज आनंद बधाई) सिद्धारथ नंदन जगबंदन । त्रिशला मात कहाई । क्षत्री कुंममें ज न्म लियो है । सुर नर आवै धाई (ह० आ०) ॥ १ ॥ कंचन वरण अ धिक तन सोभित । लंछन व्याघ्र सुहाई । तीन ग्यान संयुत प्रभु कहिये । भवियणकुं सुखदाई (ह० आ०) ॥ २ ॥ केवल पाय सबी सुरसंगै । पा वा पुरमें आई । समवसरण विच देशनादेतां । परखदा बार बनाई (ह० आ०) ॥ ३ ॥ भूमंमल बिच बहुत जीवकुं । भवजल पार लंघाई । च रम चौमासि पावा पुरि करके । शिवपुर पंथ सिधाई (ह० आ०) ॥ ४ ॥ चौराशी लख जोनीमें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगै प्रभु तुम जेव्या । पातिक दूर पुलाई (ह० आ०) ॥ ५ ॥ तारण तरण जग तिजन बछल । सिवरमणी बरदाई । लक्ष्मी प्रधान सेवै कर जोमी । मोहन कहै सुखपाई (ह०) ॥ इति वधाई संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रावककी करणी लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक तूं उठे परभात । च्यारघमी ले पिछलीरात । मनमें स मरे श्री नवकार । जिम लाभै भवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म । कवण हमारे छे कुलकर्म । कवण हमारे छै व्यवसाय । एहवो चिंतवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामायक लेजे मनशुद्धि । धरम तणी धरी हि यमै बुद्धि । पडिकमणो कर रयणी तणो । पातक आलोए आपणो ॥ ३ ॥ काया सगति करे पच्चखाण । सूधी पाले जिनवर आंण । भण जे गुण जे तवन सिझाय । जिण हुंती निसतारो थाइ ॥ ४ ॥ चीतारे नित चउदै नेम । पाले दया जीवै तां सीम । देहरै जाय जुहारे देव । द्रव्यत भावित कर जे सेव ॥ ५ ॥ पोशाले गुरु वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय । निरदूषन सूझतो आहार । साधानें दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी बछल करि जे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । दुखिया हीणा दीना देख । करि जे तास दया सु विसेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारै दीजे दान । मोटासूं मकरे अभिमान । गुरुनें मुख लेजे आखडी । धरम न मेल्हे एका घडी ॥ ८ ॥ वारूशुद्ध करे व्यापार । उंचा अधिकानों परिहार । मभरे केहनी कूमी साष । कूमासोंस कथन मत भाष ॥ अनंतकाय कहियै बत्तीस अभक्ष बावीसे विसवा वीश । ते भक्षण न करी जै किमैं । काचा कवला फल मत जिमैं ॥ १० ॥ रात्री भोजननो बहु दोष । जाणीनैं करिजे संतोष । साजी साबू लोहने गुली । मधु धाहडी मवेचे वली ॥ ११ ॥ वलि मकरावे रंगण पास । दोषण घणा कह्या छै तास । पाणी गल जे बे बे वार । अणगल पीधां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन्न । पात क डोडी करिजे पुन्न । छाणां इंधण चूल्है जोय । वावर जे जिम पाप न होइ ॥ १३ ॥ घृतनीपर वावर जे नीर । अणगल नीर मधोए चीर । वारै बत सूधा पाल जे । अतीचार सगला टाल जे ॥ १४ ॥ कहिया पनरै क रमा दान । पाप तणी पर हरि जे खान । शीश मलेजे अनरथ दंड । मि थ्या मैल मभरिजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हीयमै राख जे । बोल विचारीनें भाख जे । उत्तम ठामें खरचे वित्त । परउपगार करे शुभचित्त

॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधनैं दही । उग्घाम्या मतमेले सही । पांचे तिथ मकरे आरंभ । पाले शील तजे मनदंभ ॥ १७ ॥ दिवश्चरम कीजे च उविहार । च्यारे आहार तणोपरिहार । दिवश तणा आलोए पाप । जिम भाजै सगला संताप ॥ १८ ॥ संध्या आवश्यक साचवे । जिनवर च रण शरण भव भवे । च्यारे शरणां दृढ करि रए । सागारी अणशण ले सुए ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा । जाऊं तीर्थ शेत्रुंजै जेहवा । समे त शिखर आबू गिरनार । भेटीस कबहुं धन अवतार ॥ २० ॥ श्राव ककी करनी छै एह । एहथी थायै भवनो छेह । आठे करम पडै पात ला । पापतणा टूटै आमला ॥ २१ ॥ वारू लहीये अमर विमान । अ नुक्रम पावै शिवपुर थान । कहै जिन हर्ष घणें ससनेह । करणी दुख हरणी छै एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकके अहनिशि कर्त्तव्य संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण अर दाशा सुगुण निवाशा । अमचीपूरो प्रभु आशा रा ज (सु०) ॥ देख उदाशा अपणा दाशा । दीजै कबुक दिलाशा राज ॥ १ ॥ (सु०) ॥ चामी चटकी भव मांहे भटकी । नाच्यौ में विध न टकी राज (सु०) हिव मन हटकी आपसुं अटकी । लागुं प्रभुपाय लटकी राज ॥ २ ॥ (सु०) ॥ ते हम टाली सुगति संभाली । प्रीत अमे हीज पाली राज (सु०) एक हथाली वाजै ताली । वात अचंभा वाली राज ॥ ३ ॥ (सु०) ॥ ते उपगारी पाश तुह्मारी । सेवामें विध सारी राज (सु०) ॥ तत्व विचारी मन सुध धारी । श्रीधर्मशी सुख कारी राज ॥ ४ ॥ (सु०) ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौपड खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठी) ॥ ❀ ॥ अरे माहरा प्राणीया (चतुर नर) चौ पड इणविध खेलरे । अशुभ करम मल झारकै (च०) । जाजम कर वै राग रे । वर्णीय विभायत वैसजो (च०) । जहां नहीं कुमतिको लागरे (अरे०) ॥ १ ॥ दान शील तप भावना (च०) । चोपड एह पसाररे । आठ दाव एक बोल में (च०) आतुंई करम निवाररे ॥ २ ॥ (अरे०)

देव गुरु धर्म तीनुं भजा (च०) । पाशा एही जाणरे । अवशर कर हा थे जीया (च०) उजल लेश्या आणरे ॥ ३ ॥ दरशण ग्यांन चारित्र भला (च०) तीनुंई गुपती विचाररे । नव तत्व सात हिरदे धरो (च०) । एसब शोला साररे ॥ ४ ॥ (अ०) पड्या अठा रै रहणदे (च०) पोबा रा व्रत धाररे । दस लक्षण दस धरमहै (च०) । हितकर हीयै विचाररे ॥ ५ ॥ (अ०) षट्काया छकमीपमी (च०) हिरदै दया विचाररे । पु न्य उदै पंजमी पमी (च०) पंच महा व्रत धाररे ॥ ६ ॥ (अ०) च्यार तीन काणा पडया (च०) । सातुंई विसन निवाररे । जे दुरगति दायक सही (च०) । वाधै अनंत संसाररे ॥ ७ ॥ (अ०) चिहुं गति वाजी लग रही (च०) दुक्ख सह्या भरपूररे । करमकटै सुख उपजै (च०) रतनसागर कहै सूररे ॥ ८ ॥ (अ०) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीचौपरु खेलन हित उपदेश सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेत्रुंज खेल खिलारी । सब समझ देख सेत्रुंजकी घात । ल ख दोउं दल अपनें परायें की जात । काऊ बिध कर मोह बादस्याहकों मात । जब जाणुं तोय चतुर खेलन खिलार (हे से०) ॥ १ ॥ आतुं कर्म पिया दे आगै फूकतेही आवै । काम क्रोध गज चलत थंभत नहीं थंभै । लोभ ऊंठ चारुं खूंटकी मरोड चल ध्यावै । मान मायाके तुरंग चालचपल देखावे । मिथ्या मत सो वजीर वीरवाकै ढंग ठामो । वाकै मारवैकों दल अपनो संभार (हेसे०) ॥२॥ तेरो ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठामो । आठों अंग समकि तके पियादे हलकारो । त्याग सांढिया सवार पर सांढियां को मारो । सत्य व चन तुरंगसुं तुरंग निवारो । क्षमा शील दोय फील राखो दलकै अगाम्मी । परद ल कर मारो छिन में संहार (हे से०) । जप तप सत व्रत याकै घेरै चिहुं ओर जब वाकै चलनें की काइ रहै नई ठोर । जब तेरी होगी जीत दूजो हा रैगौ खेलारी । जब सुजश को तेरै शिर वधैगो मोड । ठामे इंद्र धरणिंद्र तोरै ढोलैंगे चवर । तेरो भजन भजैगौ गुण अगाह (हे से०) ॥ ३ ॥ इति सज्जनपुरुषोंकै सेत्रुंज खेलन विचार संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीको पारणो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) ॥ श्रीअरिहंत अनन्त गुण । अतिशय पूरणगात्र । मुनि जे ज्ञानी जे संयमी । ते कहीयै उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमोदना । करतो जीरणसेठ । श्रावक अच्चुय गति लहै । नव ग्रैवेकां हेठ ॥ २ ॥ दश चउमाशा बीर जी । विचरत संयम वास । वेशालापुर आवीया । इग्यारमी चौमाश ॥ ३ ॥ ढाल । एकघर घोमा हाथीया जी (एहनी) ॥ चौमाशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर । वेशालापुर बाहिरै जी । आव्या श्री महावीर ॥ १ ॥ (जगतगुरु त्रिशला नन्दनजी) अलैमें अै व्या श्री जिनराय । सखीरी चौक पूरावो आय । मेरै आग अनोपम थाय (ज०) ॥ २ ॥ बलदेवनो अै देहरोजी । तिहां प्रभु कावसग्ग लीध । पच्च क्खाण चउमाशनो जी । स्वामी ए तप कीध (जग०) ॥ ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां रहैजी । पालै श्रावक धर्म । आकरै तिण उलख्या जी । जांणै श्री जिन मर्म ॥ (ज०) ॥ ४ ॥ आज अठै उपवासीया जी । स्वामी श्री वधमान । काल्हि सही प्रभु जीमस्यै जी । सैं हथ देस्युं दान ॥ (ज०) ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवै जी । होसी सफल मुझ आस । पख माश गिणतां थकां जी । पूरी थई चउमाश ॥ (ज०) ॥ ६ ॥ सामग्री आहार नी जी । जीरण कीध तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी । बैठो घरनें बार ॥ (ज०) ॥ ७ ॥ घरि आवै अै प्राहुणा जी । निहुत्या एकणबार । प्रभुजी कान पधारसी जी । मैं निहुत्या वारंवार ॥ (ज०) ॥ ८ ॥ पीठै करि स्युं पारणो जी । हुं प्रभुनैं पडिलाभ । होय मनोरथ एहवो जी । तो विन वरसै आज ॥ (ज०) ॥ ९ ॥ अवसर ऊठ्या गोचरी जी । श्रीसिद्धारथ पूत । वेशालापुर अवतां जी । पूरण घरेय पहुत्त ॥ (ज०) ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जांणै नहीं जी । जंगम तीरथ एह । चेमीनें कहै एहवो जी । कां इक भिक्षा देह ॥ (ज०) ॥ ११ ॥ चाट्टभरनै बाकुला जी । प्रभुनें आणी दीध । नीरागी तेहीलीया जी । तिहांप्रभु पारणो कीध ॥ (ज० ॥ १२ ॥ देव वजावै दुंदुभी जी । जय बोलै करजोमि । हेम वृष्टि हुई तिहां जी । साढी बारह कोमि ॥ (ज०) ॥ १३ ॥ कहो सेठ तूझेस्युं दीयो जी । की

यो पारणो वीर। लोकां प्रतें इम कहै जी। में वैराई क्षीर ॥ (ज०) ॥ ॥ १४ ॥ राजादिक सहु ए कहै जी। धन धन पूरण सेठ। ऊंची करणी तैं करी जी। अवर सहू तुझ हेठ॥ (ज०) ॥ १५ ॥ जीरण सेठ सुणैं तबैजी। बाजित्र दुंदुनी नाद। अनन्त कीयो किहां पारणोजी। मनमें थयो विखवाद ॥ (ज०)॥ १६ ॥ हुं जगमें अभागीयो जी। मेरै नाथा सांम। कल्पवृक्ष किम पामीयै जी। मारू मंडल ठाम॥ (ज०) ॥ १७॥ जेता मनोरथ में कीया जी। तेता रह्या मनमांहि। निरधन जिम जिम चिं तवैजी। तिम तिम निरफल थाहि॥ (ज०) ॥ १८ स्वामी तिहां कीयो पारणोजी। कीयो अनेथ विहार। आया पाश संतानीया जी। तिहां सुनि केवल धार ॥ (ज०) वेशालापुर राजीया जी। लोकांसुं आणंद। राय प्रश्न पूछै तिहांजी। सुगुरु चरण अरविंद॥ (ज०)॥ २० ॥ मेरै नगरमें को अछे जी। जीवपुन्य जशवंत। कहै केवली आजतो जी। जीरण सेठ म हंत ॥ (ज०) ॥ २१ ॥ राय कहै किण कारणैंजी। जीरण सेठ महंत। दान दीयो जिनवीरनेंजी। पूरण ते जसवंत ॥ (ज०) ॥ २२॥ रायप्रतें कहै केवलीजी। पूरण दीनो दान। हेमवृष्टि फल तेहनें जी। अवरन कोई प्रमाण (ज०) ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमैंजी। जीरण घाल्योबंध। विना दान दीना लह्यो जी। उत्तम फल संबंध॥ (ज०) ॥ २४ ॥ धनी एक सुर दुंदुनी जी। जो न सुणं तो कान। लहि तो जीरण तो सहीजी। केवल अविचल ठाण ॥ (ज०) ॥ २५ ॥ राजा जीरणनें दीयोजी। अधिक मान सन्मान। मुख्य नगरमें थापीयोजी। जोवो पुन्यप्रमाण॥(ज०) ॥ २६ ॥ दान दीयो सुपात्रनें जी। ते निष्फल नवि जाय। पात्रदान अनु मोदतांजी। जीरण जिम फल थाय॥ (ज०) ॥ २७ ॥ इम जाणी अनु दनाजी। दान सुपात्र रसाल। दान देवै सुपात्रनें जी। तेहनें नमें सुनिमा ल ॥ (ज०) ॥ २८ ॥ इति श्री महावीर स्वामीको पारणो संपूर्णम्॥

॥ ❀ ॥ अथ सब पापादिक आलोयण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बेकरजोमी वीनवूंजी। सुणि स्वामी सुविदीत। कूरु कपट मूंकी करीजी। बात कहुं आपवीत॥ १॥ (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार)

तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी। मुझनें दुत्तर तार ॥(कृ०)॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी। दीठा दुःख अनन्त । भाग संयोगें भेटीयोजी। भय भंजण भगवंत ॥ (कृ०) ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणोजी। तेहनें कही यें दुःख। परदुःख भंजण तूं सुणयो जी । सेवकनें द्यो सुक्ख ॥ (कृ०) आलोयण लीधां पखेजी। जीव रुलै संसार । रूपी लक्ष्मणा महासतीजी । एह सुणो अधिकार ॥ (कृ०) ॥ ५ ॥ दूषम कालै दोहिलोजी । सूधो गुरु संयोग। परमारथ पीछै नहीं जी। गरुर प्रवाही लोग ॥ (कृ०) ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगलि आपणाजी । पाप आलोऊं आज । माय बाप आग लि बोलतां जी। बालक केही लाज ॥ (कृ०) ॥ ७ ॥ जिन धर्म २ सहू कहै जी । थापै अपणी वात । सामाचारी जूई जूई जी। संसय पडु मिथ्यात ॥ (कृ०) ॥ ८ ॥ जाण अजाण पणें करी जी। बोल्या उत्सूत्र बोल । रतने काग उडावतां जी । हारयो जनम निटोल ॥ (कृ०) ॥ ९ ॥ भगवंत भाष्यो ते किहां जी। किहां मुझ करणी एह। गजपाखर खर किम सहै जी। सबल विमासमण तेह ॥ (कृ०) ॥ १० ॥ आप परूपुं आकरो जी । जांणें लोक महंत । पिण न करुं परमादीयो जी। मासाहस दृष्टांत ॥ (कृ०) ॥ ११ ॥ काल अनंतै मैं लह्या जी। तीन रतन श्रीकार। पिण परमादै पाम्यिा जी। किहां जई करुं पुकार ॥ (कृ०) ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टी करुंजी । उद्यत करुंअ विहार। धीरज जीव धरै नहीं जी। पोतै बहु संसार ॥ (कृ०) ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी। नगमें रूडीवात। परनंद्या करतां थकां जी । जायै दिननें रात ॥ (कृ०) ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी । आलस आणें जीव। धरम पखै धंधै पड्योजी। नरगै करस्यै रीव ॥ (कृ०) ॥ १५ ॥ अण हुंता गुणको कहै जी। तो हरखुं निशि दीश । को हितसीख भली कहै जी । तो मन आणुं रीश ॥ (कृ०) ॥ १६ ॥ वाद भणी विद्याभणी जी। पर रंजण उपदेश। मन संवेग धरयो नहीं जी। किम संसार तरेश ॥ (कृ०) ॥ १७ ॥ सु त्र सिद्धांत वखांणतांजी। सुणतां करम विपाक। खिण एक मनमांहि उपजै जी। मुझ मरकट वैराग ॥ (कृ०) ॥ १८ ॥ त्रिविध २ करि उचरुं जी। भ

गवंत तुह्म हजूर। वारवार नांजुं वलीजी। बूटकवारो दूर ॥ (कृ०) ॥ १९॥ आपकाज सुख राचितां जी। कीधा आरंन्न कोम। जयणा न करी जी वनीजी। देव दयापर ढोम ॥ (कृ०) ॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी। दाख्या अनरथ दंम। कूम कपट बहु केलवी जी। व्रत कीधा शत खंम ॥ (कृ०) ॥ २१ ॥ अण दीधो लीजे त्रिणो जी। तोही अदत्तादान। ते दूषण लागा घणाजी। गिणतां नावे ग्यान ॥ २२ ॥ (कृ०) चंचल जीव रहै नहीं जी। राचै रमणी रूप। काम विटंबण सीकहुं जी। ते तूं जाणें सरूप ॥ २३ ॥ (कृ०) माया ममता मैं पड्योजी। कीधो अधिको लोन्न। परग्रह मेल्यो कारमो जी। न चढी संयम सोन्न ॥ २४ ॥ (कृ०) लागा मुऊनैं लालचै जी। रात्री नोजन दोष। में मनमूंक्यो माहरो जी। न धरयो धरम संतोष ॥ २५ ॥ (कृ०) इण नव पर नव दूहव्याजी। जीव चौराशी लाख। ते मुऊ मिछामि डुक्कडंजी। नगवंत तोरी साख ॥ २६ ॥ (कृ०) करमा दांन पनरै कह्याजी। प्रगट अढारै पाप। जेमैं कीधा ते सहूजी। बगश २ माई बाप ॥ २७ ॥ (कृ०) मुऊ आधारठै एतलोजी। सरदहिणाठै सुद्ध। जिन धरम मीठो जगतमेंजी। जिम साकरनैं दूध ॥ ॥ २८ ॥ (कृ०) रिषन्नदेव तुं राजीयोजी। सेत्रुंजगिरि सिणगार। पाप आलोया आपणाजी। करप्रनु मोरी सार ॥ २९ ॥ (कृ०) मर्म एह जिन धर्मनोजी। पाप आलोयां जाय। मनसुं मिछामि डुक्कमंजी। देतां दूर पुलाय ॥ ३० ॥ (कृ०) तुं गति तुं मति तूं धणीजी। तुं साहिब तुं देव। आणधरुं शिरताहरी जी। नव २ ताहरी सेव॥ (कृ०)॥ ३१ ॥ (कलशः)॥ इम चढीय सेत्रुंज चरण नेट्या नानि नंदन जिनतणा। करजोमि आदि जिणंद आगै पाप आलोया आपणा। श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजश घणें। गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि नणै ॥ ३२ ॥ ❀ इति आलोयणागर्निंत स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः पद्मावती आलोयण सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै राणी पदमावती। जीवराशिखमावै। जाणपणुं जगदो हिलो। इणवेला आवै ॥ १ ॥ (तेमुऊ मिछामि डुक्कडं)। अरिहंतनी सा

ख। जेमें जीव विराधिया । चउरासी लाख ॥ २ ॥ (ते०) सात लाख प्रथ वीतणा। साते अप्पकाय। सातलाख तेऊकायना । सातेवली वाय ॥ ३ ॥ (ते०) दस प्रत्येकवनस्पती । चउदह साधारण । विति चउरिंद्री जीव ना। बेबेलाख विचार ॥ ४ ॥ (ते०) ॥ देवता तिरयंच नारकी। च्यार २ प्रकासी। चउदह लाख मनुष्यना। एलाख चउरासी ॥ ५ ॥ (ते०) इण भव परभव सेविया । जे पाप अढार । त्रिविध २ करि परिहरुं। दुरगति दातार ॥ ६ ॥ (ते०) हिंसा कीधी जीवनी । बोल्या मिरखावाद । दोष अदत्तादानना। मैथुन तनमाद ॥ ७ ॥ (ते०) परिग्रह मेल्यो कारिमो। कीधो क्रोध विसेष । मांन माया लोभमें कीया । वलि रागनें द्वेष ॥ ८ ॥ (ते०) कलहकरी जीव दूहव्या । दीना कूडा कलंक । निन्दा कीधी पार की। रति अरति निस्संक ॥ ९ ॥ (ते०) ॥ चाडी खाधी चौतरै । की धो थांपण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । भलो आएयो भरोसो ॥ १० ॥ (ते०) ॥ षाटकीनें भवमें किया । जीवना वधघात । चिरीमार भव चि डकला। मारया दिनराति ॥ ११ ॥ (ते०) माछीगरभव माछला । झाल्या जलवास। धीवर भील कोलीभवे । मृग मारया पास ॥ १२ ॥ (ते०) ॥ काजी सुल्तानें भवै। पढी मंत्र कठोर । जीव अनेक जबै किया। कीधा पा प अघोर ॥ १३ ॥ (ते०) ॥ कोटवालनें भवमें किया । अकराकर दं ड। बंदीवांन मराविया । कोरडा छती झूंड ॥ १४ ॥ (ते०) ॥ परमाधर मीनइं भवै। दीधा नारकी दुख्ख। छेदन भेदन वेदना । तारुणा अति ति क्ख ॥ १५ ॥ (ते०) ॥ कुंभारनें भवमें कीया । निम्माह पचाव्या। तेली भव तिल पीलीया । पापी पेट भराय ॥ १६ ॥ (ते०) हालीनें भव ह ल खड्या। फाड्या पृथवी पेट । सूड निदान घणा किया । दीधा बलध चपेट ॥ १७ ॥ (ते०) मालीनें भव रोपिया । नानाविध वृक्ष । मूल प त्र फल फूलना । लागा पापना लक्ष ॥ १८ ॥ (ते०) ॥ अधोवाई आंगमी। भरया अधिकाभार । पोठी कंठ कीडा पड्या । दया नावीलि गार ॥ (ते०) १९ ॥ छीपानें भव छेतरयो । कीधा रांगणि पास । अग नि आरंभ कीया घणा। धातुरवाद अभ्यास ॥ (ते०) ॥ २० ॥ सूरपणें

रण फूफता । मारया मांणस वृंद । मदिरा मांश भक्षा घणा । खाधा मूल नें कंद ॥ (तें०) ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी । पाणी फलंच्या । आ रंभ कीधा अति घणा । पोतें पापज संच्या ॥ (ते०) ॥ २२ ॥ अंगार कर्म कीया वली । धरमे दव दीधा । सुंसलेई वीतरागना । कूमा कोशज पीधा ॥ (ते०) ॥ २३ ॥ विल्ली भव फंदर लिया । गीलोई हत्यारी । मूढग मार तणें भवे । में जूं लीख मारी ॥ (ते०) ॥ २४ ॥ भामूंजातणें भवे । ए केंद्री जीव । ज्वारी चिणा गहुं सेकिया । पामंता रीव ॥ (ते०) ॥२५॥ खांमण पीसण गारना । आरंभ अनेक । रांधण इंधण आगिना । कीया पाप उदेग ॥ (ते०) ॥२६॥ विकथा च्यार कीधी वली । सेव्या पंच प्रमाद । इष्ट वियोग प ड्यां किया । रोदन विषवाद ॥ (ते०) ॥ २७ ॥ साधु अनें श्रावक तणा । व्रत लेई भागा । मूल अनें उत्तर तणा । दूषण मुफ लागा ॥ (ते०)॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा । शिकरानें शमली । हिंसक जीव तणें भवे । हिं सा किधी सवली ॥ (ते०) ॥ २९ ॥ सूआवमै दूषण घणा । वलि गरभ गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घणा । सीलव्रत भंजाव्या ॥ (ते०) ॥ ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां । कीया कुटंब संबंध । त्रिविध २ करि बोसरुं । तिणसुं प्रतिबंध ॥ (ते०) ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परै । कीधा पाप अखत्र । त्रिविध २ करि बोसरूं । करुं जनम पवित्र ॥ (ते०) ॥३२॥ राग बैरागी जे सुणें । एत्रीजी ढाल । समय सुंदर कहै पापथी । छूटै ततकाल (ते०) ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ इति श्री आलोयण सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुन्य प्रकाश आलोयण वृहस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा । चौवीशे जिनराय । सद्गुरु सामिनी सरसती । प्रेमें प्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशलातणो । नंदन गुणगंभीर । शासन नायक जगजयो । वर्द्धमान वमवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीरजिणंदनें । चरणें करी परिणाम । भविकजीवना हित भणी । पूछै गौ तमस्वामि ॥ ३ ॥ सुगतिमारग आराधिइं । कहो किणिपरि अरिहंत । सु धा सरस तव वचनरस । भाषें श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार १ आलोइए । व्रतधरीइं गुरुशाखि । जीव खमावो सयलजे । योनि चोरासी लाख ३ ॥ ५ ॥

विधिसुं वलिवोसरावीइं । पापस्थानक अठार ४ । च्यारशरण नित अनुसरे५। निंदोडुरितआचार६॥६॥शुभकरणी अनुमोदिइं ७ । भाव भलो मनआंणि८। अणशण अवशर आदरी ९ । नवपद जपो सुजाण॥१०॥ शुभगति आराधन तणा । एते दश अधिकार । चित्तआणीनें आदरो । जिम पामोभवपार॥८॥

॥ ❀ ॥ (ढाल १) एलिंडी किहां राखी । इस चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज । ए पांचे आचार । एहतणा इहभव परभवना । आलोइयें अतीचारे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखांणी । वीरवदें इमवांणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुउंतवीये नही गुरु विनयें । काले धरी बहुमांन । सुत्र अर्थ तदुभय करी सूधा । भणीइं वही उपधांनरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी । ठवणी नोकरवाली । एहतणी कीधी आशातना । ज्ञान भक्ति नसंभालीरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी । ज्ञान विराध्युंजेह । आभव पर भव वलिय भवो भव । मिछामिदुक्कम तेहरे ॥ प्रा०॥४॥ (समकितल्यो शुद्ध जांणी) ॥ जिनवचनें शंका नविकीजें । नवि परमत अभिलाष । साधुत णी निंदा परिहरजो । फल संदेह मराखिरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ स० ॥ मूढपणुं डंभो परशंसा । गुंणवंतनें आदरीइं । साहमीनें धर्में करी थिरता । भगति प्र भावना करीयेरे० ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्राशाद तणोजे । अवर्ण वाद मनलेख्यो । द्रव्य देवको जे विणसारयो । विणसंतां उवेख्योरे ॥ प्रा०॥ ७ ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी । समकित खंडयुं जेह । आभव० ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ (चारित्रल्यो चितआंणी) पांचसुमति त्रिणगुपति विराधी । आ ठे प्रवचनमाय । साधुतणें धरमें प्रमादें । अशुद्ध वचन मन कायरे॥ प्रा० ॥ ९ ॥ चा० ॥ श्रावकनें धर्मे सामायक । पोसहमां मनवाली । जे जयणा पूर्वक जे आठे । प्रवचनमायनपालीरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चा० ॥ इत्या दिक विपरीतपणाथी । चारित्रमहोटपुंजेह । आभव० ॥ मिछामि० ॥ ११ ॥ चा० ॥ वारें भेदें तप नवि कीधो । छतें योगें निजशकतें । धर्मे मन वच का या वीरज । नविफोरविउं भगतेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चा० ॥ तप वीरज आचारें इणपरें । विविध विराध्याजेह । आभव० ॥ मिछामि० ॥ प्रा० ॥

॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्रकेरा । अतीचार आलोइयें । वीरजि णेसर वयणसुंणीनें । पापमयल सविधोइयें रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ढाल २॥पृथवी पाणी तेउ । वाउ वनस्पती । ए पांचे थावरकह्या ए । करीकरसण आरंन । खेत्रजेखेरीयां । कूवा तलाव खणावीयाए ॥ १ ॥ घर आरंनअनेक । टांकां जोइरां । मेडी माल चिणावियाए । लिंपण गुंपण का ज । एणिपरे परपरें । पृथवी काय विराधीयाए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी । ऊलण अप्पकाय । जोति धोति करि दूहव्याए । नाठीगर कुंनार । लोह सोवनगरा । नाकुंजा लिहालागराए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजें । वस्त्र निखारण । रंगण रांधण रसवतीए । इणिपरेंकर्मादान । परिपरेंकेलवी । तेउ वाउ विराधीयाए ॥ ४ ॥ वाडी वन आरांम । वावी वनस्पती । पान फूल फल चूंटीयाए । पोंहक पापड शाक । सेक्यां सूकव्या । छे द्यां छुंद्यां आथीयांए ॥ ५ ॥ अलसीनें एरंड । घाणी घालीनें । घणा तिलादिक पीलीयाए । वाली कोछु मांहिं । पीलीशेलडी । कंद मूल फलवेचीयाए ॥६॥ एम एकेंद्री जीव । हण्या हणावीया । हणतांजे अनुमोदीयाए । आनव परनवजेह । वलीय० ॥ तेमुऊ० ॥ ७ ॥ कृमी सरमीया कीडा । गाम्र गंडोला । इअज पूरा अलशीआए । वाला जलो चूरेल । विचलित रसतणा । वली अथाणां प्रमुखनांए ॥ ८ ॥ इमबेइंद्रीजीव । जेमें दूहव्या । ते मुऊ० ॥ नदेही जूंलीख । मांकड मकोडा । चांचड कीडी कंथुआए ॥ ९ ॥ गद्दहीया घी मेल । कांनखजूरा । गींगोला धनेरीयाए । इमतेइंद्री जीव । जेमें दूहव्यां तेमुऊमि० ॥ १० ॥ माखी मछर मांस । मसा पतंगीया । कंशारी कोलि या वमाए । ढींकण वीच्छू तीम । नमरा नमरीय । कौंता बग षम मांकडीए ॥ ११ ॥ इमचौरिंद्री जीव । जेमेंदू० ॥ तेमुऊ० ॥ जलमांनांखी जाल । जल चर दूहव्या । वनमां मृग संतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव । पाडी पासमां । पोपट घाल्या पांजरेंए ॥ इम पंचेंद्री जीव । जेमेंदू० ॥ तेमुऊ०॥१३॥

॥ ❀ ॥ ढाल ३ प्राणी वाणी हितकरीजी ॥ एचाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्रोध लोन नय हासथी जी । बोल्या वचन असत्य । कूडकरी धनपारकाजी । लीधांजेह अदत्तरे ॥ १ ॥ जिनजी मिछा

मि दुक्कड आज । तुह्मसाखें महाराजरे । जिनजी । देई सारू काजरे ॥ जि० ॥ मि० ॥ (आंकणी०) ॥ देव मनुज तिर्यंचनाजी । मैथुन सेव्याजेह । विषयारस लंपटपणेंजी ॥ घणुं विटंव्यो देहरे ॥ २ ॥ जि० ॥ परिग्रहनी ममता करीजी । भव २ मेली आथि । जेहाजिहां ते तिहां रहीजी । कोईन आवै साथिरे ॥ ३ ॥ जि० ॥ रयणी भोजन जे कर्याजी । कीधा भक्ष अभक्ष । रसना रसनी लालचेंजी । पापकर्या परतक्षरे ॥ ४ ॥ जि० ॥ व्रत लेई वीसारीयाजी । वली भांग्यां पचखांण । कपटहेतू किरियाकरीजी । कीधा आप वखांणरे ॥ ५ ॥ जि० ॥ त्रिणढाले आठे दूहेजी । आलोया अतीचार । शिवगति आराधन तणोजी । एपहिलो अधिकाररे ॥ ६ ॥ जि० ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ४ ॥साहेलडीनी देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचमहाव्रत आदरो ॥ साहेलडीरे० ॥ अथवा लघो व्रत बार तो सा० ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरती चारतो । व्रतलीधा संभारीये ॥ सा० ॥ हीयडै धरीय विचारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकारतो । जीवसवे खमावीइं ॥ सा० ॥ योनि चौराशीलाखतो । मनशुद्धें करो खांमणां ॥ सा० ॥ कोईशुरोषनराखि तो० । सर्वेमित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रुतो । रागद्वेष इम परीहरो ॥ सा०॥ कीजै जन्म पवित्र तो० । साहमी संघ खमाविये ॥ सा०॥ जेउपनी अपतीत तो० । सज्जन कुटुंब करी खांमणा ॥ सा०॥ ए जिनशासन रीततो० ॥ २ ॥ खमीयें अनें खमावीयें ॥ सा० एहीज धर्मनो सारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ एत्रीजो अधिकारतो । मृखावाद हिंसाचोरी ॥ सा० ॥ धनमूर्छा मेथुन्नतो । क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेमद्वेषपैशून्यतो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीइं ॥ सा० ॥ कूडा न दीजे आलतो । रति अरती मिथ्यातजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजालतो ॥ ८ ॥ त्रिविध २ वोशरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान अठारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ एचोथो अधिकारतो ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ हवैनिसुणो इहां आवीयाए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जनमजरा मरणें करीए । ए संसार असारतो । करयाकर्म सहु

अनुन्नवेंए । कोइन राखण हारतो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुंए । शरणसिद्ध नगवंत तो । शरणधर्म श्री जैननोए । साधुशरण गुणवंततो ॥ २ ॥ अवरमोह सवि परिहरीए । चार शरण चित्तधारतो । शिवगति आराधनतणोए । ए पांचमो अधिकारतो ॥ ३ ॥ आन्नव परन्नव जे कर्याए पापकर्म केई जाखतो । आत्मशाखें निंदीयेंए । पन्निक्कमीयें गुरु शाखितो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तोविआए । जे नाख्या उत्सूत्रतो । कुमति कदाग्र हनेंवर्सेए ॥ वलि उत्थाप्या सूत्रतो । घड्या घडाव्या जे घणाए घरटी हल हथियार तो । नव २ मेली मुंकीआए । करतां जीव संहारतो ॥ ६ ॥ पापकरीनें पोषीआए । जनम २ परिवारतो । जनमांतर पुहतापडीए कोइन कीधी सारतो ॥ ७ ॥ आन्नव परन्नव जे कर्याए । इम अधिकरण अनेकतो । त्रिविध २ वोसरावींइंए । आणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःक्कत निंदा इम करीए । पापकर्या परिहारतो । शिवगति आराधन तणोए । ए नवो अधिकारतो ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल बही ॥ आदितुं जोइनें आपणी ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

धन २ ते दिन माहरो । जिहां कीधो धर्म । दान शीयल तप आदरी । टाल्या दुष्कर्म ॥१॥ ध० ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी । जे कीधी यात्र । युगतें जिनवर पूजीया । वली पोष्या पात्र ॥ २ ॥ ध० ॥ पुस्तक ज्ञान लिखावीया । जिणहर जिणचैत्य । संघ चतुर्विध साचव्या । ए सातेखेत्र ॥३॥ध०॥ पडिक्कमणां सुपरें करया । अनुकंपादान । साधू सूरि नवज्झायनें । दीधा बहुमान॥४॥ध० ॥धर्मका रज अनुमोदिये । इम वारोवारि । शिवगति आराधन तणो । सातमो अधिकार ॥ ५ ॥ ध० ॥नाव नलो मन आणीये । चित्त आणी ठामि । समताजावे नावीयें । ए आतमराम ॥ ६ ॥ ध० ॥ सुख दुःख कारण जीवनें । कोई अ वर न होइ । कर्म आपजे आचर्या । जोगवींयें सोय ॥ ७ ॥ ध० ॥ समता विणजे अनुसरे । प्राणी पुन्यकाम । ठारि ऊपरिते लीपणुं । झांखर चित्राम॥८॥ ध० ॥ नाव नली परें नावीइं । ए धर्मनोसार । शिवगति आराधन तणो ॥ आठमों अधिकार ॥ ९ ॥ ध० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल सातमी रैवत गिरि ऊपरे (एचाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हवेअवसर जांणी करीय संलेखण सार । अणशण आद रीयें पच्चखी चारआहार । जछुता सवीमुंकी गांडी ममताअंग । एआ तम खेलें समता झांनतरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आहारअ नंत निःशंक । पण तृपतिनपाम्यो जीव लालचीउ रंक । उसहो ए वली वली अणशणनो परिणाम । एहथी पामीजै शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिभद्र खंधो मेघकुमार ॥ अणशण आराधी पा म्यां भवनोपार । शिवमंदिर जास्यें करी एकअवतार । आराधन केरो ए नौमो अधिकार ॥३॥ दशमें अधिकारें महामंत्र नवकार । मनथी नवींमूंको शिव सुख फलसहकार । एजपतां जायें उर्गति दोषविकार । सुपरें ए समरो चउद पूरवनोसार ॥४॥ जन्मांतरें जातां जो पामें नवकार । तोपातिक गाली पामें सुरअवतार । एनवपद सरिखो मंत्र न कोईसार । इहभवनें परभवै सुखसंपति दातार ॥५॥ जुउभील भीलणी राजा राणीथाय । नवपद महिमाथी राजसिं ह महाराय । राणी रतनवती वेहुं पाम्यांछे सुरभोग । इकभवथीलेस्यें सिद्धव धूसंयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनें एवली मंत्रफल्यो ततकाल । फणिधर फीटीनें प्रगटथई फूलमाल । शिवकुंमरें योगी सोवन पुरसो कीध । इम एणेंमंत्रे काज घणांनां सिद्ध । एदश अधिकारें वीरजिणेसर भाख्यो । आराधनकेरो विधि जिणें चित्तमाराख्यो । तिणेंपापपखाली भवभय दूरेंनाख्यो । जिन बिनय करंतां सुमति अमृत रसचाख्यो ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमोभविभावशुंए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धारथराय कुलतिलोए । त्रिशला मात मल्हारतो । अव नीतलै तुह्मे अवतर्याए । करवा अह्मउपगार ॥ १ ॥ (जयो जिन वीर जीए) टेक ॥ में अपराध करयाघणाए । कहतां नलहुं पारतो । तुह्मचरणे आव्याभणीए । जो तारै तो तारि ॥ २ ॥ ज० ॥ आशकरीनें आवीउए । तुमचरणें महाराजतो । आव्यानें उवेखशोए । तोकिमरहस्यें लाज ॥ ३ ॥ ज० करम अलूजण आकराए । जनम मरण जंजालतो । हुंहुं एहथी ऊभग्योए । भोगविदेवदयाल ॥ ४॥ ज०॥ आजमनोरथ मुझफल्याए । नाठाडुःखदंदोल

तो। तूठो जिनचौवीशमोए। प्रगट्या पुन्यकल्लोल ॥५॥ ज० ॥ भव २ वि नय तुह्मारमोए। भावभगति तुह्मपाय तो। देवदया करी दीजीयेंए। बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलशः॥ इयतरणतारण सुगतिकारण दुःखनिवारण जगजयो। श्री वीरजिणवर चरणथुणतां अधिकमन उल्लटथयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव सूरिंदपटधर। तीरथजंगम इणजगें। तपगछपति श्रीविजयप्रभसूरि सूरितेजें झगमगें ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्यवाचक। कीर्त्तिविजय सुरगुरु समो। तस शिष्य वाचक विनय विजयें। थुण्योजिन चौवीशमों। सइसत्तर संवत् भग णत्रीसें रही रानेर चौमाशए। विजयदशमी विजयकारण किउ गुण अभ्या सए। नर भवआराधन सिद्धिसाधन। सुकृतबीज बिलासए। निर्जराहेतें स्तवन रचियुं। नामें पुण्यप्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन पुन्यप्रकाश० ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमि राजीमती सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देशी झमादे भटियाणीरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहिली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा। लागुं थुरांरै पाय। प्रभु गुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिन तणा। सुभमत आपे मोरी माय ॥ १ ॥ सोरी पुरहुंती हो नेमीसरसाहिब थेचढ्या। जानकरी यादुराय हसतीतो सिणगारयाहो नेमीसर साहिब थेभला। धोलांरी गिणती नकाय वाजातो अथकाहो नेमीसरसाहिब वाजता ॥ आया तोरणवार। महिल चढी नेंहो राजुल जोवै हरखसुं। मनमांहें हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूकै हो सहेली म्हांरी जीमणी। फिरताई दीसैछै भरतार। वामो तो भरीयोहो नेमीसर साहिब जीवनो। पसुवानी सुणीरे पुकार ॥ ४ ॥ झलो तो रथनेंहो नेमीसर साहिब राखीयो ॥ अे पशु वांध्यां छै किणकाज। गोरो तो होसीहो नेमीसर साहिब तुमतणो ॥ सारथी कहैछै महाराज ॥ ५ ॥ थोडा तो सुखनेंहो इ ण राजुल नारी रै कारणें। होसीहो जीवांनोसंहार। जीव बंध्यानेहो नेमीसर साहिब छोडिया। जीवसवेतिणवार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुलहो नेमीसरसा हिब छोडनें। जायचढ्या गिरनार। आठेतो करमांसुंहो नेमीसरसाहिब जीतवा। लीधो संयम भार ॥ ७ ॥ राजुल तो झूरैहो नेमीसरसाहिब एकली।

जलविनमछली जेम। नवभवांरोहो नेमीसरसाहब गोम्नें। नेमविन जीवुंकेम ॥ ८ ॥ सहीयां तो समझावैहो राजुल दुःख मत करो। एतो कालोछे भरतार पाछोतो राजुल भाषैहो सहेलीमारी थेसुणो। इणभव ए भरतार ॥ ९ ॥ राजुलतो चालीहो नेमीसरसाहिब वांदवा। साथे तो घणुंरे परवार। गिरनारे चढतांहो सब आगै पाछै नीकट्या। एकली रही छै राजुलनार ॥ १० ॥ मेहा तोवरस्याहो नेमीसरसाहिब अतिघणा। भीज्याछै सब सिणगार। गुफातो देखीहो राजुलनारी अतिभली। चीरनिचोवै राजुल नारी ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुल नारी रै अंगना। घूघरना झणकार। झणकातो सुणियाहो रह नेमि बैठे ध्यानमें। खोली छै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपै तो मोह्यो हो रहनेमि बैठो ध्यानमें। कहै सुंदर करो मोसुं प्यार। बोलीतो सुणकरहो राजुल अंग ढांकीयो। मांनै गोली छै नेमभरतार ॥ १३ ॥ भोजनतो जीम्योहो रहनेमि खीरखांम्नो। उलटी करी नाखै तेम। वैनेंतो माणसहो रहनेमि पाछो नही भखै। भखसी कागकुत्ताजेम ॥ १४ ॥ हुं तो माताहो रहनेमि थारै सारखी। हुं बहा भाईनी नार। पापतो धरस्योहो रहनेमि मारै ऊपर। तो पडस्यो थेनरक मझार ॥ १५ ॥ एहवा वचनें हो रहनेमि राजुल पाए नम्यो। पापख भावै वारंवार। कपडा तो पहरया हो राजुल नारी आपणा। पुहती छै प्रभु दरबार ॥ १६ ॥ राजुलतो हरखैहो नेमीसर साहिब वांदीयां। वांदीनें लीधो संयम भार। केवलतो पालीहो नेमीसर साहिब निरमलो। पुहती छै मुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पालीहो नेमीसरसाहिब आगलै। मिलीयाछै मुगति मझार। माणक्य रंगैहो नेमीसरसाहिब गाईयो। ह्यारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति श्रीनेमि राजीमती सिझाय संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शालिभद्रको शिलोको लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सरसत सांमण समरूं मुखदाई। वधमानस्वामी प्रणमुं बरदाई। कुंवर शालिभद्रो कहुं सिलोको। एक मनांथे सांभलज्यो लोको ॥ १ ॥ राजगृही नगरी जिनधरम राजा। श्रेणक नांमें मोटो महाराजा। राणी चेलणा चोखी पटरांणी। शील संतोषै साची वखांणी ॥ २ ॥ मंत्रीसरकहियै अभै कुमारो। सगली सभामें ते हीज सिरदारो। सेठ गोभद्र नगरीमें सोहै। भ

द्रा सेठांणी ते मन मोहै ॥ ३ ॥ सुख सेती रहता कितरे के दिवसे । सुत साल भद्र जन्म्यो शुभ दिवसै । बहिन सुभद्रा वीरो रमावै । मनमारै कोडै माता हुलरावै ॥ ४ ॥ इण विध बधतां हुवो जुवानो । पिता परणावै मोटी कर जांनो । बत्रीस गोरयांरो वालम कहीजै । सातमी भूमें सुखसेती रही जै ॥ ५ ॥ विहार करंता वन मांहै स्वांमी । आय ऊतरीया अंतर जांमी । गोभद्र शेठ वांदणनें वैठो । समकित धारी श्रावकसेठो ॥ ६ ॥ महावीर स्वा मी देशना दीधी । समझ्यो श्रावकते दीख्याजीलीधी । व्रत लेईनें विधसुं वि चारै । अंतकाल आयां अणशण उच्चारै ॥ ७ ॥ वैमानिकवासी देवता वदीतो । साधु गोभद्र हुवो सुवदीतो । अविध प्रयुंजी जांणें विरतं तो । जोगी सालभद्रनूं देखै एकांतो ॥ ८ ॥ भवपूरवरी वात संभालै । नयणें आप रो वेटो निहालै । मन मांहे देवता इसमो विमासै । आई निसरुं आगै जी पाशै ॥ ९ ॥ आगै तो लक्ष्मी इधकेरी हुंती । दैवतानी दीधी हूई अनं ती । पेई तेत्रीसे देवता पुहुचावै । सोनै में ग्रहणा जडीया शहु आवै ॥ १० ॥ तेत्रीसमी पेटी तिणमांहै नीकलै । सूरज चंदा ज्यूं तेजै झल हल्लै । मांणकनै हीरा सोनांमें जडीया । घाट सुघाटै देवतारां घडीया ॥ ११ ॥ सेहरो साहूनें साल भद्र जोगो । लाखां कोडांरा आंके त्रैलोको । शाठां घडीयांरी अंतै शगलाई । नाखे आभूषण निरमायल खाई ॥ १२ ॥ दिन२ पेई देवता ते ल्यावै । शोनईया हीरा मांणक लावै । उत्तरीया ग्रहणा निरमायल थावै । बलती पेयांरी शार नकरावै ॥ १३ ॥ राजा चक्रवर्त्ति शुहणे न देखे । एहवा आभूषण पहरनें नाखै । केशर कस्तूरी मलया गि वासै । चोवानें चंदन फुलवाद बाशै ॥ १४ ॥ आठ पोहरनें बत्रीशे वडिया । पात्रांतो नाचे मुह आगै खडीयां । अपछरा शरिखी उपमा पावै । भांमणि बत्रीशे ते मन भावै ॥ १५ ॥ सुकलीणी सुंदर बत्रीशे राणी । पुन्य जोगे शेती एण दिन आणी । दिन २ बध ते हेतशुं निरखै । नारी पत भगती हितशुंजी परख ॥ १६ ॥ एक दिन व्यापारी परदेशी आ या । वशात अमोलक विध २ री ल्याया । व्यापारी चोहटे वशतां देखाले । नगरीरा लोक आवीनेंहाले ॥ १७ ॥ रतन मै कांबल शालै निरखीनें । वां

णी या देखै बिधशुंपरखीनें। वांणीया पूछै मोलवतावो। सवा लाख शोनइया नगद दीरावो॥ १८॥ मोल शुणीनें शाहजी शलकै। कर २ नें वातां माहो मां मुलकै। वलता वांणीया नेमानही आवै। कूमी शुण गल्लां कुशले घर जावै॥ १९॥ इस बिध व्यापारी नगरीमें नमीया। जायै राजाकै चर्णोजी नमीया। व्यापारी बोलै शुणो महाराजा। शोलैई कांबल शहूवै ताजा॥ ॥ २०॥ इण कांबल में गुणवै एक मोटो। आपरे आगे न वोलुं खोटो। आगमें धोयां मेलज लूंटै। मोल कांबलनो इधको तिणमां टै॥ २१॥ गुण शुणीनै राजा गह गहीयो। कांबल एक लेवा घणु नमहीयो। नगद शोनई या नहीं नंमारो। महीनारी मोलत करो नधारो॥२२॥ वलता व्योपारी वोलै इमवांणी। रावलीवांणी शाचीमें जांणी। शुणो महाराजा एक अरदाशो। पइशाखरचीरा नही अह्म पाशो॥ २३॥ खरची दिवरावो कांबल रखवावो दूर देशांतर अह्मनेंवै जावो। परदेशी किम कर आपै नधार। नगद सोनइया कांबलल्योसार॥ २४॥ इम कहि व्यापारी मेरैजी आया। आए मेरैनें घणुं पिछताया। माहोमां मिलनें मित्रांणो कीधो। आंपणो एको कारिज नसीधो॥ २५॥ अबै अठासुं आधेरा चालो। सहिर सख रोसो नयणे निहालो। किरीयांणो वेची कारज सारीजै। सुंवारी मासी इण परि मारीजै॥ २६॥ मुखसूं इम कहिता परदेशी आवै। मनमें इधकेरो न खाट थावै। वांणी सुण इसमी नद्रा वोलावै। वहता व्यापारी नमारखावै॥ २७॥ सूरा व्यापारी दीसोवो वीरा। बोलोवो इम किम वोल अधीरा। वसतां देखावो मोल वतावो। आखता हुयनें परामतजावो॥ २८॥ व्यापारी कहै वमी विणयांणी। सही या लेसी वस्त अह्मांणी। फोकटणीवातां कहि २ नें फेरै। एवमोही मोल कठासुं अरै॥ २९॥ माई कहीने नद्रा समझावै। इण घर रुधीरो अंतन आवै। मोलै मूलावो किणरा मिम काया। दीसोवो झोलांतणा दडकाया॥ ३०॥ नद्रा तुंसांमल मोली विण यांणी। लीधी नहीं कांबल राजारी राणी। फूटरा घणुं फूंदालासाहो। पै ढीयां वैठा दीसे पतिसाहो॥ ३१॥ कांबल देखीनें नमाहो कीधो। मो लसुणीनें विलखो मुंह कीधो। सवालाख सोनइया एकणरा लागै। इस

मी नविजायै लीधी तुझ आगै ॥ ३२ ॥ वलती सेठाणी वाणी इम भाषै । वीरा व्यापारी इम किम दाखै । कांवलसोलेने कामण वत्रीसो । सरचाडुं किम कर वहुअर वत्तीसो ॥ ३३ ॥ वैत विचारी टूकाकरावो । ठीक कहीनें मोल ठहराबो । व्यापारी बोलै सुणो सेठाणी । लाख वीशरी आंणो हिमाणी ॥ ॥ ३४ ॥ भंमारी तेमीनें भद्रा इम भाषै । रती एकरो अंतर मतराखै । व्यापारी एहै बोलरासूरा । दामगिणीनें देज्यो थे पूरा ॥ ३५ ॥ खोलै भंमारी मोटो भखारो । तीजो गिणवाने साथे हुवो त्यारो । व्यापारी मोटो इकलो रैजी लेवै । दांम गिणींनें जिणनें सहु देवै ॥ ३६ ॥ पुखतो व्यापारी को ठार जोवै । अहिनांणे इंद्रपुर एहीज होवै । मोती परवाला मांणक मन मोहै । हीरा सोनइया सखरा ते सोहै ॥३७॥ पांचरत्नांरो पारन पेखै । रोक रुपइया दह दिश देखै । विधि २ रो नांणो व्यापारी निरखै । पुखतो व्यापारी ले लेनें परखे ॥ ३८ ॥ चितमें व्यापारी एहवोज चिंतै । रहीहुं देखुं सुहणो सुभरीतै । चकचूंदी आख्यां आवीनै चमकै । ठीकसेती चालै पगल्यारैं ठमकै ॥ ३९ ॥ अमवमतो पडतो आखडतो अरकै । षम हडतो खिसतो खूणांसुं खरकै । तितरै भंमारी तडकनें बोलै । ल्यो बेगोनांणो वाजां थां खोलै ॥ ४० ॥ मालहमालांमाथे दिरावै । व्यापारीपाछा मेरै ते आवै । तिण वेला श्रेणक राजातेडावै । व्यापारी प्रतें आदर दिवरावै ॥ ४१ ॥ राजाजी कहै सुणो परदेश्यां । कांबल तुह्मांरी एक ह्मे लेश्यां । मोटी महाराणी हठनमूंकै । कांबल लेदीधां सहु धंध चूकै ॥ ४२ ॥ जिम तिम करीने जिनसां ह्मे देवां । लाखसवारो लेखो भरदेवां । मांनो व्यापारी कांबल ले आवो । नहिं अवथे माहरो वचन फिरावो ॥ ४३ ॥ व्यापारी सुखसुंएहवो प्रकासै । सोले ईज कांबल हुंता अह्मपासै । सेठांणी भद्रा ते सहु लीया । दाम गिणीने अह्म नें तिण दीया ॥ ४४ ॥ अचरज पांमीनें राजा इम दाखै । सोदागर इसको कूको कांई भाखै । एहवो कुणनै नगरीमें आज । लाखांबीशांरो काढै ते काज ॥ ४५ ॥ सोदागर जंपै सूणो महाराजा । सोवनमें घर नें रतनांरा गाजा । माल अलेखै तिणरे ह्मे दीठो । सालभद्र नांमें मोटोछै सेठो ॥ ४६ ॥ भूगो आथमीयो तेनवी जांणै । मांनवरी देह सुर सुख मांणै । दरसण तेहनो दी

ठां जाणीजै । महाराजा मनमें सांसो नांणीजै ॥ ४७ ॥ सोदागिर मुखसुंवात सुणीनें । दिवरावै सीखसिरपाव देनें । ततखिण तिण वेला राजा तेमावे । अन्नै कुमार हजूर आवै ॥ ४८॥ कुंवरजी आवे मुजरोजी कीधो । महाराजा मोटो सन मांनदीधो । भाषै इमराजा सांभल कुमार । बेगाजिहां जावो भद्राघरवार॥४८॥ भद्रानो बेटो सालभद्रसाह । अम्हनें देखणरो इधको ऊछाह । तुरत कुंवरनें तेमीनें ल्यावो । वेगाहुइ जावो वारमल्यावो ॥ ५० ॥ कांबल एकलावो मोलकरीनें । सेठाणी प्रतै शनमांनदेनें । आया कुंवरजी शेठाणी आगै । वि धि शेती कांबल एकजमांगैः ॥ ५१ ॥ वोलै इम कूंवर सुणौ शेठांणी । ह ठि करनें बैठी मोटी महाराणी । महाराजा कांबल एक मंगावै । परबारो मोल पूरो दिरावै ॥ ५२ ॥ इण वातै तिलभर कूरुम जांणो । ऊठो घरमै शुं कांबल एक आंणो । शालि कूंवरनें मेलो मो शाथ । वोलावै वेगो श्रेणक नर नाथ ॥ ५२ ॥ अन्नै कुमारश मुखशुं ए वात । शुणी शेठांणी जंपै इम वात । आया थेभलै कुमरजी आप । दरशण तो दीठां सहुपुलीयाजी पाप ॥ ५४ ॥ तुझ शरिखा पुन्यवंत घरांगण आया । दुख दोहग टलिया शहु शुख पाया । अरज अम्हारी एक अवधारो । सेवक मनरा सहु कारज सारो ॥ ५५ ॥ शोलैमें कांबल शगलाईलीया । तिके वधारी बत्तीशकीया । कांब ल एकेको वहुअरनै दीधो । ऊपर नविरहियो कांबल कोई बीयो ॥ ५६ ॥ देवता दीधा आभूषण आवै । तिके पहिरंता तनसुख पावै । वहुअर किम उंढै कांबल ते करमा । खरखरा लागै अंगै ते खरमा ॥ ५७ ॥ मेलेई मुक्या नुत्तम जांणेनें । उलंभो दीधो वहुअर आंणेनें । शाशुजी एशुं महिमांनी कीधी । एहवी अलविध शुं आंणीनै दीधी ॥ ५८ ॥ ऊवटणो करनें वहूवां पगलूहै । नाख्या ते परहा निरमायल कूवै । कहोनें निरमायल किमकर दिरावै । निरमायल देऊं तो दूषण मुऊथावै ॥ ५९ ॥ मोलायक बीजो का रिज फुरमावे । महाराजा कुमर स्यांनै तेमावै । नांन्हमीयो माहरो लीलानो लाभो । गहभरीयो शोभै गणकेरो गाभो ॥ ६० ॥ सातमी भूमें शुखशेती पोढै । नाटकीया नाचै अहिनिशि गोढै । काया मांनवरी कुमर ते दीशै । सोभां सुररायां इधको ते दीसे ॥ ६१ ॥ दरसण तो कोई देखण न पावै । लखगांनें लोक आवै

न जावै । चालो हुंचालुं महाराजापासै । भद्रा इम भाषै मनरैउल्हासै ॥ ६२ ॥ दरबार आवै भद्रा मन भोली । शाथे शोगानें सहीयारी टोली । बे कर जोडी भद्रा इमबोलै । प्रथवीपति राजा शमकुण तोलै ॥ ६३ ॥ अरज अमारी एक अवधारो । महाराजा आंगण ह्मारै पधारो । सेवकरै ऊपर सुनिजर कीजै । शाल कुमरनें दरशण दीजै ॥ ६४ ॥ वयणशुणीनें बोलै महा राज । तूठा तुझ ऊपर आवां घर आज । जायै आगैनें जुक्त करावो । शा ल कुमरनें सन्मुख ल्यावो ॥ ६५ ॥ अशवारी करनें राजाजी आया । मिल २ नै सुहब मोतीयां वधाया । सिंघासण आशण सोवनरा देवै । आरतीयां कर२ नवारणा लेवै ॥ ६६ ॥ राजारै आगै भद्रा ते आवै । भोजनरी भक्ती मुझनें फु रमावै । राजाजी कहै युक्त करावो । महल तुमारा अमनें देखावो ॥ ६७ ॥ आलश छोरीनें भद्रा ते आवे । हुकमति होदा जल ऊनो दिवरावै । पीठी न गटणा प्रथम करावै । शाथी शगलांनै शिनांन करावै ॥ ६८ ॥ क्रीडा पांणीरी करता तिण वेला । मंत्री महाराजा सगला शमेला । उत्तम अंगूठी राजाजी पारी । विलखाहुय जोवै शगली गोवारी ॥ ६९ ॥ राजाजी श्रेणक मनमें बिचारै । शगली रिद्धरो शारथो ह्मारै । चिंता करीनै मनमांहे शोचै । पछ तावै पगीयां ऊभाआलोचै ॥ ७० ॥ सेठाणी भद्रा तुरतज शमधी । वाणीयां होवै आगल बुधी । जल कल नवागी ऊनी जोवावै । पाणी वीछरीयां अंगूठी पावै ॥ ७१ ॥ मुंद्रगली लेई घरमांहे आवै । केई अंगुठी अवर निकलावै । त्यां भेली करनें भद्रा ते ल्यावे । उंलखनें राजा मनमें नमावै ॥ ७२ ॥ स्नान करीनै शहुकोई शाथ । शालकुंवरनी देखे सहु आथ । पुन्यरो पूरो ए दीशै अं कूरो । शाहां शिरशोहै परतख्यशूरो ॥७३॥ शोनाराथाल रूपारी चोकी । मुख मलरी गादी दीधी ए कोकी । रतनारा झारा पाणीरा भरया । खाशा गंगोदक षसबोवे करिया ॥ ७४ ॥ सेवांनै साकर सेलगी ल्यावै । खारक खजूरां पालै पुरशावै । खोपरा खासा खुरमाणी आवै । दाखांनें निमजा दाडमभावै ॥ ७५ ॥ अखरोट आंबा केला नारंगी । पिसता सदाफल जंबेरी चंगी । रायण बीजो रा खरबूजा खासा । ककडी साकरीयां भेला पतास । ॥ ७६ ॥ सरदा अंजीर अंगूर सखरा । बोर विदाम पुरसै ले सखरा । इण विधरायेवानें आणीनें पुरसे

सगला आरोगै मनरै ते हरसै ॥ ७७ ॥ सीरा सावूनी सखरीसुहाली । लाडू बि धरा ल्यावै नरथाली । लाडू सेवीया खासा गुलावी । सिंघकेशरीया ल्यावै सतावी ॥ ७८ ॥ बाजणा लाडू गाजणा लावै । कीटीरालाडू केशरिया आवै । नाजणालाडू मिरचाला जावै । लाजणांलाडू बाजणानावै ॥ ७९ ॥ मगदरालाडू दालीया मुगता । लाडू कस्तुरिया ल्यावै ते गलता । मोतीजीचूर मिश्रीरालाडू । दीसैते मोटा देहरारा गाडू ॥ ८० ॥ ऊगरीया लाडू गुंदीयाँ ऊंखै । सहूकोपुरसंता जीजी मुख नाषै । पुर २ की पुरकी गुप चुप आवै । गूंदबना घेवर जलेबी लावै ॥ ८१ ॥ पूरी कचोरी पेना हेसमीयां । खुरमा नै दोठा षाजा मनगमीया । दरनिस्त फीणा इंदरसारूना । आठी अकब री दहीथरा पूरा ॥ ८२ ॥ सकर पारानें लापशी आवै । सगला तिनसेती ओकरनें थावै । तरकारयां आवै ततखिणताजी । बालोर बथवो चिणारी ना जी ॥ ८३ ॥ सोवानें मेथी सरशुं सांगरिया । कैर कारेला पापर मोगरीयां कचनार कलीयां केवलानै फोग । आरोग्यां जाये तिणशुं सहुरोग ॥ ८४ ॥ बरीयांनै मोगी नीलाबली वोर । करूंदा कोठ करपटा जोर । चवलानी फलि यां घेघराकाचा । आलन पेठा अद्रक साचा ॥ ८५ ॥ अरवी बांवलीयां खासी काचरीयां । मिरचानें शुंठ मुखसुं आचरीया । हलदीनें लूंण हींगसुं ना जी । तोरूं लुंगनें टींडसी ताजी ॥ ८६ ॥ आंवलीया आंबा नीबू आचार । रा इरै नेला राईता त्यार । खाटो मिरचांरी खासोपलेव । होसों पुरसावै हितकर नें हेव ॥ ८७ ॥ वासमतीचावल मुंगांरी दाल । सुरहाघी ऊपर पुरसे रसाल । सि खरणनेयुक्त बूरो सिरावै । पाणी परघलसुं चलुआं करावै ॥८८॥ बीनापानारा लुंग सुपारी । तिलक करे देसूहव नारी । आभूषण बागा पंचमाआवै । सिर दार देखी सहुनें पहरावै ॥ ८९ ॥ राजा श्रेणक इणबिध फुरमावै । इणघर रो स्वामी निजर न आवै । अस्त्रीयां ऊभी हुकम हलावै । ह्यां घरआयां मु जरो क्युं नावै ॥ ९० ॥ आवीनें भद्रा एम पयं पै । एकवार देखो घररी सहुसं पै । महल महिपति शूं ऊपर जोवो । आराम करनें शाश्तइक शोवो ॥ ९१ ॥ पहलीज भूंम प्रथवी पति चढीया । पूरा पुरषोत्तम शास्त्रे जे पढीया । मंगांण घररो मनशुं आलोचै । रचीयो जाणे कर शास्त्रनें शोचै ॥ ९२ ॥ ऊपरली बी

जी झूंमते आवै । ज्यौतिझिगामिग निजरे देखावै । भद्रा कहै सुणीयै मोटा भू पालो । ताजी देखावुं तीजी है मालो ॥ ९३ ॥ तीशरी पोल चढीया तिण बेला । रतनारी जोत दीपै अतिकेला । आंख्यारै आगै अंधाली आवै । मन मां हे जांणै भद्रा भरमावै ॥ ९४ ॥ चौवारै चौथे चढीया तिण शेती हाथे कर झालै भद्रा हित शेती । निजर करीनें निरखै ते झूम । धरू २ आ वै धक्का करधूम ॥ ९५ ॥ श्रेणक राजा एम विचारै । फशीया फंदमांहे आ वीइयां रै । कुशलै घर जावां किणही प्रकार । दिन झगै करशी कवण दरबार ॥ ९६ ॥ आवीनें भद्रा एम पयंपै । प्रथवीपति मोटा क्युंमन कंपै । सुख से ती कीजै इहां बिशरांम । तेमीहुं ल्यावुं ताहरो गुलाम ॥ ९७ ॥ शाल कु मरनें सुखमै वतलायो । घर आंगण वेठो श्रेणक आयो । वखतावर मोटा लेख विया राजा । आप चढीनें आया महाराजा ॥९८॥ ऊठो सिज्यासुं आलश मोमो राजा मिलनेंरो राखै अतिकोमो । पूतपधारो राजारै पावै । तसलीम करनें तु रत तुंआवै ॥९९॥ मातारा मुख सुं वांणी शुणवोलै । किरीयांणो श्रेणक नां खो ले खोलै । माताजी पूछो काशूं इण मोलै । भार भलायो घररो शहु तोलै ॥ १०० ॥ इतरा दिन थेई कांम चलायो । मन मान्यो माता हुकम हलायो अमकांणा काम रहोने अवै । भंमारभरीया मणिमांणक सवै ॥ १०१ ॥ नाणा रीतोट झारे घरनांही । मुंहमांग्यो देइ नाखो घरमांही । किरियांणो कोई पा छो मत फेरो । कहोने कासुंथे पूछोछो एरो ॥ १०२ ॥ सतवंती भद्रा वाणी इम वोलै । सुण२हो वेटा झूलोमतभोलै । पृथवीपति राजा श्रेणक सभहीजै । आ पणरोस्वामी एह कहीजे ॥ १०३ ॥ रूठोए राजा विषरूप जाणो । तूठोए राजा सुरतरु सुपीयाणो । इणरी सुनिजरसुं अपनीरिध्योपै । करै निरधनीया कहीये जो कोपै ॥ १०४ ॥ आशइणांरी वेटा बहु कीजै । पिण आसंगो पूरो नविकीजै । राजा वेसनर सरिखा जाणीजे । इण बातें कोई शांसो नां णीजें ॥ १०५ ॥ मातारा हुकम माने तेसेठो । पावै लागै नआवै फिरऊठो । श्रेणक राजारो सभावझूठो । खिणमांहे रूठो खिणमाहे तूठो ॥ १०६ ॥ जा णेंरो विलंब वेटा नहुकीजे । जाए राजारो दरशण कीजे । तो सूरत दीठां राजाजी रीझै । अण चिंत्या कारज इण बातै सीझै ॥ १०७ ॥

मातारा वचन मीठा सुणकानें । विषधर वहु कोपै जुं पयपानें । मनमां हे कुंवर वैराग आणें । भवसागर माया काची सहु जाणें ॥ १०८ ॥ पूर्वलै भवमें ऊंचो पुन्य कीधो । साधांनै फासु अशन नवि दीधो । वीतराग बचनें शांशोमें धरीयो । दरशण देवांरो में नवि करियो ॥ १०९ ॥ सामा यक पोशो अवशर नवि कीधो । साधांरै मुखसें शमकित नविलीधो । ऊंचो पुण्य कारण इण भव अवतरीयो । नारी शिवरमणी मुझनें नवि वरि यो ॥ ११० ॥ परवश शेती पर शेवा करणी । मातारी शीख मन मांहे ध रणी । एहवो विचारी आयो मन भंगै । नरपति ले वैठो आपण ऊरंगै ॥ ॥ १११ ॥ शाल कुमररी शोभा सराहै । मुखडो देखीनें राजा ऊमाहै । सुर गांरो बाशी सुरपति जुं ओपे । काया कुंवररी अधकीज जपै ॥ ११२ ॥ मोटो महीपत मनमें विचारै । ए दीशै पुन्य एणसंसारै । माया घर सुंकी महला मतवंती । काया कंचण जुं उत्तम दीपंती ॥ ११३ ॥ मांखणसम काया कोमलछै इणरी । राग राखी नें राजा कर फेरी । कुमररी काया परसेवो व लीयो । कर फरसै ततखिण शील पर घलीयो ॥ ११४ ॥ भद्रा तिण वेला राजा प्रति भाषै । सीख कुमरनें द्यो शहुशाखै । जाये जनमंतर इण २ काया । परसेवा करनें फरिस्या नहु पाया ॥ ११५ ॥ स्वछंदाचारी सुख मांहे रहीयो आगम राजरो आजमें कहीयो । ऊठै सिय्यासुं भोलो भावडियो । अवसर राजरो इण भव लहीयो ॥ ११६ ॥ राजी होय राजा सीख समापी । रि द्धी अविचल सालनें आपी । कठ पंजर बंधन सुं सुक छूटे । वलतो फिर नावै वेगो तिण खूंटे ॥ ११७ ॥ उतरी कांचलीये अहिरुं जिमत्रासै । पा छो नवि जोवै परहो ते नासै । कुंवरजी चितरे उचाट बेठा । आवीने पोढ णरीखाट जे सेंठा ॥ ११८ ॥ सहु त्रीया आवी शनमुख ऊभी । मुख सेती उत्तर नवि दीयै मोभी । माहो मांहि पूछै महिला मन भोली । रीसांणो सा हब ना रंगरोली ॥ ११९ ॥ दोय चार घमीयां परखीनें दीठो । नाहरे चित्त सुं नेहभलो नीठो । सासू सुं बोलै सरम खोलीनें । मुलकंती अंचल मुख ऊपर देनें ॥ १२० ॥ रावलो जायो राजी नही आज । मन खांचीयो दी सै सहीय आज । आवी कुमरनें समझावो आप । गुण अवगुण गुनो

करावो माफ ॥ १२१ ॥ पूत पनोती पारकी जाई । विन अवगुण कां ना खो धसकाई । नेहडलै नीनी गुणवंती गोरी । तिणसेती कीजै कांइ चित चोरी ॥ १२२ ॥ माता इतरा दिन हुं नवि समधो । सुन्न करमी होइने सम कित सही लधो । कायानें माया काची सहु जांणी । गोरी ए दीसै दुरग त सहिनांणी ॥ १२३ ॥ माताजी मोनें अनुमति आपो । सदगुरु पस वामे दिक्षा समापो । रहि २ रे वेटा एहवो कांई दाखै । शाश्वत नर नसरै ह्मारै तो पाखै ॥ १२४ ॥ सुंहणेंही बेटा इसमो मति सोचे । वैत विचारी झंडो आलोचे । नरमायै किणरै बेटा नवि नमीयै । आपणा घररो कांई नवि गमीयै ॥ १२५ ॥ सहु वाते पूत तूंढै सधीरो । बाई सुन्नद्रा तणें इक वीरो । नांन्हमीया तो विण ह्मारै नवि सरसी । कुटंबरी सार बेटा कुणकर सी ॥ १२६ ॥ कितराई वचन मोन्नीनें कहीया । मनमैं कुमरैं ते नवि र हीया । नीनो रंग चोल नगवंत धर्मे । मायारा जाल मूंक्या सुन्न कर्मे ॥ ॥ १२७ ॥ हठकर माता हठ करी राखै । तपस्या चारित्र नहुवै तो पाखै हल फलीयो हिवणा बालक बुध करिनें । सही हुं जासुं नव सागर तरिनें ॥ १२८ ॥ पंडित हुइनें बेटा सुणि बात । हुं जानुं ताहरी सगली अंगधात । तो सेती चारित्र न पलै तिलमात । सुणरे बेटातूं वातरी वात ॥ ॥ १२९ ॥ माता ए जांणयो हुकम करि राखुं । दिन दस आमा जिम ति महुं नांखुं । इतरामें इणरी बुद्धी फिरजासी । लालचांणो कांमणि लोनी योथासी ॥ १३० ॥ पोतारी काया पहिली वसि कीजे । कांमणि एकेकी दिन प्रति नोगीजै । वसि करि इंद्री घर वास वसीजै । करि २ तपस्यानें काया वसि कीजै ॥ १३१ ॥ सूधी सुण वात हियमामे धारे । कांमणि एकेकी दिन प्रतिवारै । निरलोनी हुइनें लूखो मन राखे । चितसेती वेठो चारित्र रस चाखै ॥ १३२ ॥ सातमें दिन संझ्यारी वेला । धन्नोजी धर्मी आवै एकेला । सालानें सीख देनें इम नाखै । झंमो तूंसोच इवडो कांई राखै ॥ १३३ ॥ थिर मन करिनें चालोथे आगै । पूठ पूरव सुं हुं मन रागै । आंपे मिल दोऊं करणी आदरस्यां । वेगा नव सायर पार उतरस्यां ॥ १३४ ॥ एक मन दोनुं होइ नीसरीया । सिंह पाखरीया जांणे केशरिया । सांजल स्वा

मीरी देशना सूधी । समझा मन मांहे तुरत सुबुद्धी ॥ १३५ ॥ आयाघर पू
ठा आग्या ते मांगै । झुलि २ मातानें पाए ते लागै । बंधन संकट सुं माता
मुंकावो । कल्यांण माहरो कोई जो चावो ॥ १३६ ॥ कूडो कथन अब कीजै
नवि माता । महाबीर वचनें अह्मे रंग राता । चारत्रिया होसां चित्तमांहे
चोंका । धर्म करणी करनें ओगां भव धोंका ॥ १३७ ॥ आजूणा वचन भद्रा
ते आखै । संजम लेसी ए सहू साखै । आगी अंतराय हुंस्यानें होजं । ब
हिनोई सालो व्रतलो थे दोजं ॥ १३८ ॥ सामग्री मेलै सहु साथे आ
वै । गीत गुणवंती गुण बहु गावै । ढोल नगारा ढमके वजावै ।
महछठी दरशण इण विधि पावै ॥ १३९ ॥ इरियावहि पडिक्कम पाप
आलोवै । मेल करमरा लागा सवधोवै । महाबीर स्वांमी माथे कर दीधा
साल धन्नारा कारज सहु सीधा ॥ १४० ॥ आलामण देई भद्रा घरि
आवै । सुभ मति देनें गोरयां समझावै । तिन दिन सेती तपश्या ते साधे ।
मास खमणादिक करे मन बाधे ॥ १४१ ॥ करमांरी गोठ काटे बेभाई ।
किरीयारी कमणा राखे नही काई । अणसण करीनें आलखो पावै । सर्वा
रथ सिद्धे वासो सुख पावे ॥ १४२ ॥ महाविदेह मांनव भव लहिसी ।
करणी कर आठे करम ते दहसी । सुपसा ए दांन सहु कारज सरसी । सालो
बहिनोई दोनुं शिव बरसी ॥ १४३ ॥ सालभद्र धन्नो साधु कहाया । महसम
छठे प्रणमुं ते पाया । गुण तिणांरा भवि जन गाया । मन सुध समरयां मुक्ति
दे माया ॥ १४४ ॥ मुहता महाजन मोटा मति धारी । देवी धर दीपे गांव
गुण कारी । मोटी महमाइं थांन विराजै । आया तिणरी इधकी ते आजै ॥
॥ १४५ ॥ संवत सतरै इक्यासी वरसै । चौमासौ कीधो चितचूंप हरखै । खे
मकीरतरी साख सवाई । तिणरा संतानिक वाचक वरदाई ॥ १४६ ॥ सो
म हरखनामें श्रमण कहीजै । लक्ष्मी समुद्र पाटे स लहीजै । गणी कनक
प्रिय गुरु सुपसाया । गुण तिणरा में सिंहा मुनि गाया ॥ १५७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शांतिजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सारद मात नमुं शिरनामी । हुंगानं त्रिभुवनके स्वामी । शांतिज
शांति जपै सबकोई । त्यां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांति जपीनें

कीजै कामा । सोही काम हुवै अभिरामा । शांति जपी परदेश सिधावै । ते कुशले कमला लेई आवै ॥ २ ॥ गरभ थकी प्रभु मार निवारी । शांतिज नाम दियो महतारी । जेनर शांतितणा गुण गावै । रिधि अचिंती जेनर पावे ॥ ३ ॥ ज्यांनरकों प्रभुशांति सहाई । त्यां नरकों काई आरत नाई । जो कछु बंछै सोई पूरै । दालिद्र दुष्ट मिथ्या मति चूरै ॥ ४ ॥ अलख निरंजन जोत प्रकाशी । घट घट भीतरके प्रभु वासी । स्वामि स्वरूप कह्यो नहिं जावै । कहतां मोमन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मारदिये सबही हथियारा । जीता मोहतणा दलसारा । नारतजी शिवसुं रंगराचे । राजतजी पिण सा हिब साचे ॥ ६ ॥ महाबल वंतज कहिये देवा । कायर कुंथुन एक हणेवा । रुद्धिसयल प्रभु पाश कहीजे । भिक्षा आहारी नाम भणीजै ॥ ७ ॥ निं दक पूजक है समभायक । पिण सेवकही कों है सुखदायक । तज्यो परिग्र हतें जगनायक । नाम अतीत सबे बिधलायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र समचित्त भणीजै । नामदेव अरिहंत भणीजै । सयलजीव हितवंत कहीजै । सेवक जाण महापद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंभीरा । दोष नहीं इक मां ह सरीरा । मेरुअचल जिम अंतर जामी । पिण न रहै प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहै जिनजी सहु देखे । पिण सुपनो कबहु नविपेखे । री सविना बावीस परीसह । सेन्याजीती ते जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनायो । माया विना सबसुं लय लाई । लोभ विना गुण राशि ग्रहीजै । भिक्षु भए त्रिगरो सेवीजै । निग्रंथपणें शिर छत्र धरावै । नाम जती पिण चवर ढोलावै । अभयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र च लै अरिदारण ॥ १२ ॥ श्री जिनराज दयाल भणीजै । करम सबे कोही मूलखणीजै । चोवीह संघज तीरथ थापै । लछघणी देखै प्रभु आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावै ॥ नां काहुकों शीश नमावै । अकिंचनको विरुध धरावै । सोपद पंकज आतम ठावै ॥ १५ ॥ तजतरुणी निज गुणकों ध्या वै । शिवरमणीकों साथ चलावै । रागनही पिण सेवककों तारै । द्वेष नहीं नि गुणा संगवारे ॥ १६ ॥ तेरी महमा अद्भुत कहियै । तेरा गुणको पार न लहियै । तुं प्रभु समरथ साहिब मेरा । हुं मनमोहन सबके तेरा ॥ १७ ॥

तूंरे त्रिलोक तणो प्रतिपाला । हुंरे अनाथ अबुंरे दयाला । तूं सरणांगत रा खण धीरा । तूंवलि तारक बै वडवीरा ॥ १८ ॥ तूंही जिसो वरु नागज पायो । तो मेरो कामचड्योरे सवायो । करजोडी प्रनु वीनवुं तो सुं । करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारण वारो । नवसायरथी पारउतारो । सारंग हथणा पुर मंरुण सोहै । तिहां श्री शांति सदा मनमोहै ॥ २० ॥ पदम सागर गुरु पाय पसाया । श्री गुण सागर के मन नाया । जे नरनारी इक चित्तगावै । ते मन वंछित शिवसुख पावै ॥ २१ ॥ ❀ ॥
इति श्री शांतिजिन स्तवनं शांतिकरणार्थं ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जीवचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नुवण पइवं वीरं । नमिऊण नणामि अबुह बोहत्थं । जीव सरूवं किंचिवि । जह नणियं पुव्व सूरीहिं ॥ १ ॥ जीवा मुत्ता संसारिणोअ । तस थावराय संसारी । पुढवी जल जलण बाऊ । वणस्सई थावरा नेया ॥२॥ फलिअ मणि रयण विद्रुम । हिंगलू हरियाल मणसिल रसिंदा । कणगाइ धाउ सेढी । वणी अरणेटय पलेवा ॥ ३ ॥ अब्नय तूरीउसं । मट्टी पाहाण जाइउ णेगा । सोवीरंजण लवणाई । पुढवी नेयाइं इचाइं ॥ ४ ॥ नूमंत रिरक मुदगं । उसाहिम करग हरितणु महिया । हुंतिघणोदहि माई । नेया णेगाउ आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जाल मुम्मुर । उक्कासणि कणग विज्जुमा ईया । अगणिजीयाणं नेया । नायव्वा निउणबुधीए ॥ ६ ॥ उब्नामग उक्क लिया । मंरुलि मुह सुद्ध गुंजवायाय । घणतणु वायाइया । नेयाखलु वाउ कायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया । वणस्सई जीवा दुहासुए नणिया । जेसि मणंताणतणु । एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥ कंदाअंकुर किसलिय । पणगा सेवाल नूमिफोडाय । अल्लत्तिय गऊर मोत्थ । वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥ कोमल फलंच सव्वं । गूढ, सिराइ सिणाइ पत्ताइं । थोहरि कुमार गुग्गुल । गिलोइ पमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥ इचाइणो अणेगे । हवंति नेया अणंत कायाणं । तेसिं परिजाणणत्थं । लरकण मेयं सुए नणियं ॥ ११ ॥ गूढ सिर संधि पव्वं । सम नंग महीरगंच छिन्नरुहं । साहारणं सरीरं । तव्विवरित्थं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एग सरीरे एगो। जीवो जे सिंतु तेअ पत्तेया । फल फुल्ल छल्लि

कछा । मूला पत्ताणि बीयाणी ॥ १३ ॥ पत्तेय तरु मुत्तुं । पंचवि पुढवाइणो सयलजोए । सुहुमा हवंति नियमा । अंतमहुत्ताउ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥ संख कवड्डय गंमोल । जलोय चंदणग अलस लहुगाइ । मेहरी किमि पूअरगा । बेइंदिय माइ वाहाई ॥ १५ ॥ गोमी मंकण जूआ । पिपीलि उद्देहियाय मक्कोडा । इल्लिय घयमिल्लीउ । सावय गोगीम जाईउ॥१६॥गद्दहय चोरकीडा गोमयकीमाय धन्नकीमाय । कुंथु गोवालिय इल्लिया । तेइंदिय इंदि गोवाई ॥ १७ ॥ चउरिंदियाय विच्छू । ढिंकुण ममराय मारिया तिड्डा । महिय मंसा मसगा।कंसारी कवल मोलाई॥१८॥ पंचेंदियाय चउहा । नारय तिरिया मणुस्स देवाय । नेरइया सत्तविहा । नायव्वा पुढविनेएणं॥१९॥जलयर थलयर खयरा । तिविहा पंचेंदिया तिरिक्काय । सुसुमार मच्छ कच्छव । गाहा मगराय जलचारी ॥२०॥ चउपय उरपरि सप्पा । भुय परि सप्पाय थलयरा तिविहा । गोसप्प नवल पमुहा । वोधव्वाते समासेणं ॥ २१ ॥ खयरा रोमय परकी । चम्मय परकीय पायडाचेव । नर लोगाउ वाहिं । समुग्ग परकी विअय परकी ॥ २२ ॥ सव्वे जल थल खयरा । समुछिमा गब्भया दुहा हुंति । कम्मा कम्मग भूमि । अंतर दीवा मणुस्साय ॥ २३ ॥ दसहा भुवणाहि वई । अठ विहा वाण व्यंतरा हुंति । जोइसिया पंचविहा । दुविहा वेमाणिया देवा॥२४॥ सिद्धा पनरस भेया । तित्थ अतित्थाइ सिद्ध भेएणं । ए ए संखे वेणं । जीव विगप्पा समरकाया ॥ २५ ॥ ए ए सिं जीवाणं । सरीर माऊठिई सकायंमि पाणा जोणि पमाणं । जेसिंजं अछितं भणमो ॥ २६ ॥ अंगुल असंख भागो । सरीर मेगिंदियाण सव्वेसिं । जोयण सहस्स महियं । नवरं पत्तेय रुक्काणं ॥ २७ ॥ बारस जोयण तिन्नेव गाउआ । जोयणंच अणुक्कमसो । बेइंदिय तेइंदिय । चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥२८॥ धनुसय पंच पमाणा । नेरइया सत्तमाइ पुढवीए । तत्तो अद्धद्धूणा । भेया रयणप्पहाजावा॥२९॥ जोयण सहस्स माणा । मच्छाउरगाय गब्भया हुंति । धणुअ पहुत्तं पक्की । भुयचारी गाउ अपहुत्तं ॥ ॥३०॥खयरा धणुअ पहुत्तं । भुरगा उरगाय जोयण पहुत्तं । गाउय पहुत्तमित्ता समुछिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥ अच्चेव गाउआइं । चउप्पया गब्भयामुणे यव्वा।कोस तिगुच्च मणुस्सा । उक्कोस सरीर माणेणं ॥ ३२ ॥ ईसाणंत सुराणं ।

रयणीउ सत्त देह उच्चत्तं । उग उग उग चउ गेविज्ज । णुत्तरे इक्किक्क परि हाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुढवीए । सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स । वासस हस्सा दशतरु । गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥ वासाणि वारसाऊ । वेइं दिय ते इंदियाण अणुक्कमसो । अउणापन्न दिणाइं । चउरिंदीणं तु छम्मासा॥ ॥ ३५ ॥ सुर नेरइयाण ठिई । उक्कोसा सागराणि तित्तीसं । चउपय तिरिय मणुस्सा । तिन्निय पलिउवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उर उयगाणं । परमाऊ होइ पुव्वकोडीऊ । परकीणं पुण भणिउ । असंख भागो अ पलियस्स ॥ ३७ ॥ सव्वे सुहमा साहारणाय । सम्मुछिमा मणुस्साय । उक्कोस जहन्नेणं । अंतम हुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥ उगाहणा उमाणं । एवं संखेवउ समरकायं । जे पुण इछविसेसा । विसेस सुत्ताउ तेनेया ॥ ३९ ॥ एगिंदि याय सव्वे । असंख उसप्पणी सकायंमि । उववज्जंतिचयंतिअ । अणंत काया अणंताउ ॥ ४० ॥ संखिज्ज समा विगला । सत्तठ भवा पणिंदि तिरि मणुया । उववज्जंति सकाए । नारय देवाअ नोचेव ॥ ४१ ॥ दसहा जियाण पाणा । इंदिय ऊसास आउ बलरूवा । एगेंदिएसु चउरो । विग लेसु छसत्त अठेव ॥४२॥ असन्नि सन्नि पंचेंदिएसु । नव दस कमण बोधव्वा । तेहिंसह विप्पउगो । जीवाणं भन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोर पारे । संसारे सायरंमि भीमंमि । पत्तो अणंत खुत्तो । जीवेहिं अपत्त धम्मेहिं ॥ ४४ ॥ तह चउरासी लरका । संखा जोणीण होइजीवाणं । पुढवाईण चउएहं । पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं । चउदस लरका हवंति इयरेसु । वि गलें दियेसु दो दो । चउरो पंचेंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउरो नारय सुरेसु । मणुआण चउदस हवंति । संपिंमियाय सव्वे । चुलसी लरकाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिद्धाण नत्थिदेवो । न आउ कम्मं न पाण जोणीउ । साइ अणंता तेसिं । ठिई जिणंदा गमे भणिया ॥ ४८ ॥ काले अणाइ निहिणे । जोणी गहणम्मि भीसणे इत्थ । भमिया भमिहंति चिरं । जीवा जिनवयण मलहंता ॥ ४९ ॥ तासंपइ संपत्ते । मणु अत्ते दुल्लहे विसम्म त्ते । सिरि संति सूरि सिठे । करेह भो उज्ज मंधम्मे ॥ ५०॥ एसो जीव वियारो सेखवं रुईण जाणणा हेऊ । संखित्तो उधरियो । रुंदाउ सुअ समुद्दाउ ॥ ५१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवतत्व प्रकरण लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीवा जीवा पुन्नं पावा । सव संवरोय निज्जरणा । वंधो मुरकोय तहा । नवतत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥ चवदस चवदस वयालीसा । वयासीया हुंति बायाला । सत्तावन्नं वारस । चउनव जेया कमेणेसिं ॥ २ ॥ एग विह दुविह तिविहा । चउविहा पंच छविहा जीवा । चेयण तस इयरेहिं । वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥ एगिंदिय सुहु मियरा । सन्नियर पणिंदिया य स विति चऊ । अपजत्ता पजत्ता । कमेण चउदस जीय ठाणा ॥ ४ ॥ आहार सरीर इंद्रिय । पजत्ती आणपाण भास मणे । चउ पंच पंच छप्पिय । इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ५ ॥ धम्मा धम्मा गासा । तिय तिय जेया तहेव अद्धाय । खंधा देस पएसा । परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ६ ॥ धम्मा धम्मा पुग्गल । नह कालो पंच हुंति अजीवा । चलण सहावो धम्मो । थिर संठाणो अहम्मोय ॥ ७ ॥ अवगाहो आगासं । पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा । खंधा देस पएसा । परमाणु चेव नाइव्वा ॥ ८ ॥ समया वलिय महुत्ता । दीहा परकाय मास वरिसाय । भणिउ पलिया सागर । उसप्पणी सप्पणी कालो ॥ ९ ॥ एगा कोडी सतसठि लरक । सत्तहत्तरि सहस्साय । दोयसया सोलहिया । आवलियाणं महुत्तंमि ॥ १० ॥ तिन्नि सहस्सा सत्तय सयाइं । तेउत्तरिंच ऊसासा । एसमहुत्तो भणियो । सव्वेहिं अनंत नाणीहिं ॥ ११ ॥ सा उच्च गोय मणुदुग । सुरदुग पंचेंदि जाइ पण देहा । आइति तणूण वंगा । आइम संघ यण संठाणा ॥ १२ ॥ वन्न चउक्का गुरु लहु । परघा उसास आय वुज्जोयं । सुभखगई निमिण तसदस । सुरनर तिरियाउ तित्थयरं ॥ १३ ॥ तस वायर पजत्तं । पत्तेय थिरं सुभंच सुभगंच । सूसर आइज्ज जसं । तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १४॥ नाणंतराइ दसगं । नवदीए नीय साय मिछत्तं । थावर दस नरयतिगं । कसाय पणवीस तिरिय दुगं॥१५॥इग विति चउ जाईउ । कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स । अपसत्थं वन्न चऊ । अपढम संघयण संठाणा॥ १६ ॥ थावर सुहम अपजं । साहारण अथिर असुभ दुभगाणि । दूसर अणाई जेहिं अजसेहिं वीय दसगंतु ॥ १७ ॥ इंदिय कसाय अव्वय । जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा । किरियाउ पणवीसं । इमाउ ताउ अणुक्कमसो ॥ १८ ॥ काइय

अहिगरणिया । पाउसिया पारितावणी किरिया । पाणाईं वाया रंभिय । परि ग्गहिया माय बत्तीया ॥ १९ ॥ मिछा दंसणवत्ती । अपच्चरकाणाय दिठि पुठीय । पारु छिय सामंतो । वणीय नेसत्थि साहत्थी ॥ २० ॥ आणवणि वियारणिया अणभोगा । अणवकंख पचइया । अन्ना पउग समुदाण । पिज्ज दोसे रिया वहिया ॥ २१ ॥ समई गुत्ती परिसह । जइधम्मो भावणा चरित्ताणि । पण तिग चुवीस दस बारह । पंच भेएहिं सगवन्ना ॥ २२ ॥ इरिया भासै सणा दाणे । भंडारे समई सुय । मणगुत्ती वयगुत्ती । काय गुत्तीय अठहा ॥ २३ ॥ खुहा पिवासा सी उन्हं । दंसा चेला रइथिउ । चरिया निसीहिया सिज्जा । अक्कोस वह जायणा ॥ २४ ॥ अलाभ रोग तणफास । मल सकार परीसह । पन्ना अन्नाण सम्मत्तं । इय बावीस परीसहा ॥ ॥ २५ ॥ खंती मद्दव अज्जव । मुत्ती तव संजमेय बोधव्वे । सच्चं सोयं अकिंच णंच । बंभंच जइ धम्मो ॥ २६ ॥ पढम मणिच्च मसरणं । संसारो एगयाय अन्नत्तं । असुइत्तं आसव संवरोय । तह निज्जरा नवमी ॥ २७ ॥ लोग सहावो बोही । दुलहा धम्मस्स साहगारिहा । एयाउ भावणाउ । भावेयव्वा पयत्तेण ॥ २८ ॥ सामाइयत्थ पढमं । छेउठावणं भवेबीयं । परिहार विसु द्धीयं । सुहमंतह संपरायंच ॥ २९ ॥ तत्तो अहरकायं । खायं सव्वंमि जीव लोगंमि । जं चरिऊण सुविहिया । वच्चंति अयरा मरंठाणं ॥३०॥अणसण मूणो इरिया । वित्ती संखेवणं रसच्चाउ । काय किलेसो संलीणयाय । बज्झो तवोहोइ ॥ ३१ ॥ पायछित्तं विणउ । वेया वच्चं तहेव सझाउ । झाणं उस्सगोविय अब्भिंतरउ तउ होइ ॥ ३२ ॥ बारस विहं तवो निज्जराय । बंधोय चउ विग प्पोय । पयइ ठिई अणुभागो । पएस भेएहिं नाइव्वो ॥ ३३ ॥ पयई सहावा वुत्ता । ठिई कालावहारणं । अणुभागो रसोणेउ । पएसो दल संचउ ॥ ॥ ३४ ॥ पड पडिहार सि मज्जा । हड चित्त कुलाल भंडगारीणं । जह एएसिं भावा । कम्माणवि जाण तहभावा ॥ ३५ ॥ संतपय परूवणया । दव्व पमाणंच खित्त फुसणाय । कालोय अंतरं भाग । भावे अप्पाबहुं चेव ॥ ३६ ॥ संतं सुद्ध पइत्ता । विज्जंतं ख कुसुम वन असंतं । मुरकासि पयं तस्स उ परूवणा मग्गणा इहिं ॥ ३७ ॥ गइ इंदिय काए ।

जोए वेए कसाय नाणेसु। संजम दंसणलेसा। भव सम्मे सन्नि आहारे॥३८॥ नर गइ पणिंदि तसभव। सन्नि अहरकाय खइय सम्मत्ते। मुरकोणहार केवल। दंसण नाणे नसेसेसु॥३९॥दव्वपमाणे सिद्धाणं। जीव दव्वाणि हुंति णं ताणि। लोगस्स असंखिज्जे। भागे इक्कोय सव्वेवि॥ ४०॥ फुसणा अहिया कालो। इगसिद्ध पडुच्च साईयाणंतो। पडिवाया भावाउ। सिद्धाणं अंतरं नत्थि॥ ४१॥ सव्वजीयाण मणंते। भागे तेतेसि दंसणं नाणं। खइए भावे परिणामिएय। पुण होइ जीवत्तं॥ ४२॥ थोवा नपुंस सिद्धा। थीनर सिद्धा कमेण संखगुणा। इय मुरकतत्तमेयं। नवतत्ता लेस उ भणिया॥ ४३॥ जीवाइ नवपयत्थे। जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं। भावेण सद्दहंतो। अयाण माणेइ सम्मत्तं॥ ४४॥ सव्वाइं जिनेसर भासियाइं। वयणाइ नन्नहा हुंति। इय बुद्धी जस्समणे। सम्मत्तं निच्चलंतस्स॥ ४५॥ अंतो मुहुत्त मित्तंपि। फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं। तेसिं अवड्ढ पुग्गल। परियट्टो चेव संसारो॥४६॥ उसप्पणी अणंता। पुग्गल परियट्ट मुणेयव्वो। तेणंता ती अद्धा। अणगयद्धा अणंतगुणा॥ ४७॥ जिण अजिण तित्थ तित्था। गिहि अन्न स लिंगथी नर नपुंसा। पत्तेय सयं बुद्धा। बुद्धबोही कणि काय॥ ४८॥ जिण सिद्धा अरिहंता। अजिण सिद्धाय पुंडरिआ पमुहा। गणहारि तित्थसिद्धा। अतित्थ सिद्धाय मरुदेवी॥ ४९॥ गिहि लिंग सिद्ध भरहो। वल्कल चीरीय अन्न लिंगम्मि। साहू सलिंग सिद्धा। थी सिद्धा चंदणा पमुहा॥ ५०॥ पुंसिद्धा गोयमाई। गांगेय पमुह नपुंसया सिद्धा। पत्तेय सयंबुद्धा। भाणिया करकंडु कविलाई॥ ५१॥ तह बुद्ध बोहि गुरु बोहिया। इग समय इक्क सिद्धाय। इग समये वि अणेगा। सिद्धात्ते णेग सिद्धाय॥ ५२॥ इति नवतत्व विचारः

॥ ❀ ॥ अथ दंडक प्रकरण लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिऊं चउवीस जिणे। तस्सूत्त वियार लेस देसणउ। दंडग पएहिं तेचिय। थोसामि सुणेह भोभवा॥ १॥ नेरइया असुराई। पुढवाई वेंदीया दउचेव। गब्भय तिरिय मणुस्सा। वितर जोइसिय वेमाणी॥ २॥ संखत्तरिउ इमा। सरीर मोगाहणाय संघयणा। सन्ना संठाण कसाय। लेसें दिय उ समग्घाया॥३॥ दिठी दंसण नाणे। जोगु वओगो वधाय चवण ठिई।

पज्जत्ति किमाहारे। सन्नि गइ आगई वेए ॥ ४ ॥ चउगप्प तिरिय वाउसु। मणुआणं पंचसेस ति सरीरा। थावर चउगे दुहउ। अंगुला संख भागतणु ॥ ५ ॥ सव्वेसिंपि जहन्ना। साहाविय अंगुलस्स संखंसो। उक्कोस पणसय धणुं। नेरइया सत्तहत्थ सुरा॥६ ॥ गब्भतिरि सहस्स जोयण। वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं। नर तेइंदिय तिगाऊ। वेइंदिय जोयणेबार ॥७॥ जोयण मेगं चउरिंदि। देह मुच्चत्तणं सुए भणियं॥ वेउव्विय देहंपुण। अंगुल संखं समारंभे ॥ ८ ॥ देवनर अहिय लक्खं। तिरियाणं नव जोयण सयाणं। दुगुणंतु नारयाणं। भणियं वेउव्विय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत महुत्तं निरए। मुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु। देवेसु अद्धमासो। उक्कोस विउव्वणा कालो ॥ १० ॥ थावर सुर नेरइया। असंघयणाय विगल जेवट्ठा। संघयण दुगं गब्भय। नर तिरिएसु मुणेयव्वं ॥ ११ ॥ सव्वेसिं चउदह वासन्ना। सव्वेसुराय चउरंसा। नर तिरिय छसंठाणा। हुंडा विगलेंदि नेरइया ॥ १२ ॥ नाणाविह धय सूई। बुब्बुअ वण वाउ तेउ अप्पकाया। पुहवी मसूर चंदा। कारा संठाणउ भणिया ॥ १३ ॥ सव्वेवि चउ कसाया। लेसदुगं गब्भतिरिय मणुएसु। नारय तेऊ वाऊ। विगला वेमाणीय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइ सिय तेऊ लेसा। सेसा सव्वेवि हुंति चउलेसा। इंदिय दारं सुगमं। मणु आणं सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयणा कसाय मरणे। वेउव्विय तेयए आहारे। केवलिय समुग्धाए। सत्तइमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवली। तेय आहारग विणाउ चत्तारी। ते वेउव्विय वज्जा। विगला सन्नीण तंचेव ॥ १७ ॥ पण गब्भय तिरि सुरेसु। नारय वाउसु चउर तिय सेसे। विगल दुदिठी थावर। मिस्सती सेस तिय दिठी ॥ १८ ॥ थावर विगिसु अचख्खु। चउरिंदिसु तद्दुगं सुए भणियं। मणुआ चउ दंसणिणो। सेसेसु तिगं तिगं भणियं ॥ १९ ॥ अन्नाण नाण तियं। सुर तिरि निरिए थिरे अन्नाण दुगं। नाणा नाण दुविगले। मणुए पण नाण तिअ नाणा ॥ २० ॥ इक्कारस सुर निरए। तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु। विगले चउ पण वाए। जोग तिग थावरे होइ ॥ २१ ॥ नवगा मणुएसु। बारस नव निरय तिरिय देवेसु। विगलदुगे पणजुगं। चउरिंदिसु थावरे तियगं ॥ २२ ॥ संखम संखा समए।

गब्भय तिरि विगल नारय सुराय । मणुआ नियमा संखा । वण अणंता थावर असंखा ॥ २३ ॥ असन्निनर असंखा । जह नववाउ तहेव चवणेवि । वावीस सगति दसवास । सहस्स उक्किठ पुढवाई ॥ २४ ॥ तिदिणग्गि तिप लाऊ । नर तिरि सुर निरय सागर तित्तीसा । विंतर पल्लं जोइस । वरिस लख्खा हियं पलियं ॥ २५ ॥ असुराण अहियअयरं देसूण पुपल्लयं नवनिकाए । वारस वासाणपण दिण।उम्मास उक्किठ विगलाऊ॥२६॥पुढवाई दस पयाणं । अंतमहुत्तं जहन्न आउठिई । दससहस्स वरस ठिईआ । नवणाहिव निरय विंतरिया ॥२७॥ वेमाणिय जोइसिआ । पल्ल तयठंस आऊआहुंति । सुरनर तिरि निरएसु । उपज्जत्ती थावरे चउगं ॥ २८ ॥ विगले पंच पज्जत्ती । उदिसि आहार होइ सवेसिं । पणगाई पए नयणा। अहसन्नि तिगं नाणिस्सामि॥२९॥ चउविह सुरतिरिएसु । निरएसु दीह कालगी सन्ना।विगले हेउवएसा । सन्ना रहिया थिरासवे ॥ ३० ॥ मणु आण दीह कालिआ । दिठीवाउ वएसिआकेवि। पज्जपणतिरि मणुचिय । चउविह देवेसु गछंति ॥३१॥ संखाउ पज्जत्त पणिंदि। तिरिय नरेसु तहेव पज्जत्ते । चूदग पत्तेय वणे । एए मुचिय सुरागमणं॥३२॥ पज्जत्त संख गब्भय । तिरीय नरा निरय सत्तगे जंति । निर उवट्टा एएसु । उ व वजंति नसेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आऊ वणस्सई । मझे नारय विवजि आ जीवा सव्वेवि उव वजंति । निय निय कम्माणु माणेणं ॥३४ ॥ पुढवाइ दस पएसु । पुढवी आउ वणस्सई जंति । पुढ वाइ दस पएहिय । तेउ वाऊ मुउव वाउ ॥ ३५ ॥ तेऊ वाऊ गमणं । पुढवी पमुहंमी होइ पय नवगे । पुढ वाई ठाण दसगा । विग लाइं तिय तहिं जंति ॥३६॥ गमणा गमणं गब्भय । तिरि आणं सयल जीव ठाणेसु । सव्वत्थ जंति मणुआ । तेऊ वाऊहिं नोइंति ॥ ३७ ॥ वेय तिय तिरि नरेसु । इत्थी पुरि सोय चउविह सुरेसु । थिर बिगल नारएसु । नपुंस वेउ हवइएगो ॥ ३८ ॥ पज्ज मणु वाय रग्गी । वेमाणिय न वण निरय विंतरिआ । जोइस चउपण तिरिआ । वेइंदिय ते इंदिय चू आऊ ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई विय । अहिआ अहिआ कमेणमे हुंति । सव्वेवि इमे नावा । जिणामएणंत सोपत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुम्हं नत्तस्स । दंसुकपय नमण नग्ग हीयस्स । दंसु तिय विरय सुलहं । लहु मग्गं दिंतु सुरक पयं ॥ ४१ ॥सि

रि जिणहंस मुणीसर । रज्जे सिरि धवलचंद सीसेण । गज सारेणं लिहिया । एसा विन्नत्ती अप्पहिआ ॥ ४२ ॥ इति दंडक प्रकरणम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीलघुसंघयणी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिय जिणं सव्वन्नुं । जग पुज्जं जगगुरु महावीरं । जंबूद्दीव पयत्थे । वुच्छं सुत्ता सपरिहेऊ ॥ १ ॥ खंभा जोयण वासा । पवय कूडाय तित्थ सेढीउ । विजयद्दह सलिलाउ । पिंमेसिं होइ संघयणी ॥ २ ॥ नउय सयं खंभाणं । भरह पमाणेण भाइए लक्खे । अहवा नउअ सय गुणं । भरह पमाणं हवइ लक्खं ॥ ३ ॥ अहबिग खंभे भरहे । दो हिमवंतेअ हेमवई चउरो । अठ महा हिमवंते । सोलस खंभाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ बत्तीसं पुण निसढे । मिलिया तेसठि वीय पासेवि । चउसठिउ विदेहे । तिरासि पिंमेइ नउ असयं ॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं । समचउरंसाइं इक्क खंभाइं । लक्कस्सय परिहीए । तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥ विक्खंभ वग्ग दहगुण । करणी वट्टस्स परिरउ होई । विक्खंभ पाय गुणिउ । परिरउ तस्स गणिय पयं ॥ ७ ॥ परहि तिलक्ख सोलस । सहस्स दोय सय सत्तवीस हिया । कोस तिगं अठावीसं । धणुसय तेरं गुलअहियं ॥ ८ ॥ सत्तेवय कोडिसया । नउआ लप्पन्न सय सहस्साइं । चउणउयंच सहस्सा । सयं दिवड्ढंच साहियं ॥ ९ ॥ गाउअ मेगं पन्नरस । धणुसया तह धणूणि पन्नरस । साठिंच अंगुलाइ । जंबुद्दीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥ भरहाइ सत्तवासा । वियड्ढ चउ चउ रतिं सवट्टियरे । सोलस वक्खार गिरि । दो चित्त विचित्त जमगा ॥ ११ ॥ दो सय कणय गिरीणं । चउ गय दंताय तह सुमेरूय । ब वासहरा पिंमे । एगुण सत्तरि सयाउन्नि ॥ १२ ॥ सोलस वक्खारेसु । चउ चउ कूडाय हुंति पत्तेयं । सोमणस गंधमायण । सत्त छय रुप्पि महाहिमके ॥ १३ ॥ चउतीस वियड्ढेसु । विज्जुप्पह निसढ नील वंतेसु । तह मालवंत सुरगिरि । नव नव कूडाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥ हिम सिहरिसु इक्कारस । इय इगसठी गिरिसु कूडाणं । एगत्ते सव्वधणं । सय चउरो सत्त सठीय ॥ १५ ॥ चउसत्त अठनवगे । गारस कूमेहि गुणह जहसंखं । सोलस दुदुगुणयालं । दुवेय सगसठ सयचउरो ॥ १६ ॥ चउतीसं विजएसु । नसुकूमा अठमेरु जंबुम्मि । अठय देव कुराइं । हरी कूरू हरिस्सहेसठी ॥ १७ ॥ मागह वरदाम

पन्नासं । तित्थविजयेसु ऐरवयन्नरहे । चन्तीसा तिहिगुणिया । उुरुत्तर सयंतु तित्थाणं ॥ १८ ॥ विज्जाहर अनिउगीय । सेढीउ उुन्नि उुन्निवेयड्ढे । इय चउगुण चउतीसा । बत्तीस सयंतुसेढीणं ॥ १९ ॥ चक्की जेयबाइं । विजयाइं इत्थहुंतिचउतीसा । मह दह ब प्पउमाई । कुरूसु दसगंति सोलसगं ॥ २० ॥ गंगा सिंधू रत्ता । रत्तवई चउनइउ पत्तेयं । चवदसहिं सहस्सेहिं । समगं वच्चंति जलहिंमि ॥ २१ ॥ एवंअन्निंतरया । चउरो पुण अठवीस सहस्सेहिं । पुणरवि ब प्पन्नेहिं । सहस्सेहिं जंतिचउसलिला ॥ २२ ॥ कुरूमज्झे चउरासी । सहसा तहय विजय सोलसेसु । वत्तीसाण नईणं । चउदस सहस्साइं पत्तेयं ॥ २३ ॥ चउदस सहस्सगुणिया । अमतीस नइउ विजय मज्झिल्ला । सीउयाए निवडंति । तहय सीयाइं एमेव ॥ २४ ॥ सीयासीउयावियं । वत्तीस सहस्स पंचलरकेहिं । सवेवि चउदस लख्खा । ब प्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥ ब जोयण सकोसे । गंगासिंधूण वित्थरोमूले । दशगुणिउ पजंते । इयउु गुणणेण सेसाणं ॥ २६ ॥ जोयणसय मुच्चिठा । कणय मया सिहरि चुल्ल हिमवंता । रूप्पि महा हिमवंता । उुसुचा रूप्प कणयमया ॥ २७ ॥ चत्तारि जोयणसए । उच्चिठो निसढ नीलवंतोय । निसढो तवणिज्ज मउ । वेरुलियो नीलवंतोय ॥ २८ ॥ सवेवि पवयरा । समय खित्तंमि मंदर विहूणा । धरणी तले सुवगाढा । उस्सेय चउत्थ नायंमि ॥ २९ ॥ खंमाई गाहाहिं । दसहिं दारेहिं जंबूद्दीवस्स । संघयणी सम्मत्ता । रइया हरिभद्द सूरीहिं ॥ ३० ॥

॥ ❀ ॥ इति श्री जंबुद्दीव संघयणी प्रकरणम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ नवकारस्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनवकार जपो मनरंगे । श्रीजिनसासन सारी माई ॥ सर्व मंगल मांहे पहिलोमंगल । जपतां जयजयकारी माई । श्री० ॥ १ ॥ पहिलेपद त्रिभुवन जन पूजित । प्रणमुं श्रीअरिहंतरी माई । अष्टकर्म बरजत बीजे पद । ध्यावुंसिद्ध अनंतरी माई । श्री० ॥ २ ॥ आचारिज तीजे पदसमरुं । गुणउत्तीस निधानरी माई । चौथेपद उवझाय जपीजे । सूत्र सिद्धांत सुजाणरी माई ॥ श्री० ३ ॥ सर्वसाधु पंचम पद प्रणमुं । पंचमहाव्रत धारी माई ॥ नवपद अष्ट इहां जे संपद । अडसठ वरण संभारी माई ॥

श्री० ४ ॥ सातइहां गुरु अक्षर एहना । एकअक्षर उच्चारी माई । सातसागरना पातिक जावै । पद पंचास विचारी माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ संपूरण पणसे सागरना । पाप पूलाये दूरी माई ॥ इहभव खेमकुशल मनबंछित । परभव सुख भरपूरी माई॥श्री० ॥६ ॥ ईरति सोवन पुरिसो सीधो । सिवकु मार इणध्यानरी माई ॥ सर्पफीटि हुई फूलमाला । श्रीमतिनें परधांनरी ॥ माई॥श्री०॥७॥ जक्ष उपद्रव करतो निवारयो ॥ परचो एह परसिद्धरी माई ॥ चोरचंम पिंगलने हुंमक ॥ पामें सुर नर रिद्धरी माई॥श्री० ८ ॥ पंच परमेष्टी मंत्र जगउत्तम ॥ चवदैपूरव सारी माई ॥ गुणबोलै श्रीपदमराज गुरु । महिमाजासु अपारी माई ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति नवकार स्तवनम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतम स्वामी अष्टक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रहऊठी गौतम प्रणमीजै । मन बंछित फलनो दातार । लबधि निधान सकल गुणसागर । श्रीबरधमान प्रथम गणधार । प्रह० ॥ १ ॥ गोतम गोत्र चवद विद्यानिधि । प्रथवी मात पिता वसुभूत । जिनवर बांणि सुणी मनहरष्यौ । बोलायो नामे इंद्र भूति । प्र० ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत लेई प्रभूपासै द्यैजिनवर त्रिपदी मनरंग । श्रीगोतम गणधर तिहां गूंथ्या । पूरब चवद कु वालश अंग । प्र० ॥ ३ ॥ लवधई अष्टापद गिर चढीयो । चैत्यवंदन जिनवर चौवीस । पनरैसै तिरोत्तर तापसप्रतिबोधीकीधा निजसीस ॥ प्र०॥४ ॥ अद भुत एह सुगरुनो अतिसय । जसुदीखे तसु केवलन्यांन । जावजीव छठ छठ तपपारणै । आपणपै गोचरिय मध्यान॥प्र०॥५॥कामधेनु सुरतरु चिंतामणि । नाम माहीं जसु करेरे निवास।ते सदगुरुनो नाम जपंता । लाभै लखमी लील विलास ॥ प्र० ॥ ६ ॥ लाभघणौ विणजै व्यापारै । आवै प्रवहण कुशले षेम ते सदगुरुनो ध्यांन धरंता । पामें पुत्र कलत्र बहु प्रेम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ गो तम स्वांमितणा गुणगातां । अष्ट महासिद्ध नवेरे निधांन । समय सुंदर कहै सुगुरु प्रसादै । पुन्य उदय प्रगटयौ परधांन॥प्र० ॥८॥ इति गोतम स्वामि अ० ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चिंतामणि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आणी मनसूधी आसता ॥ देव तुहारुं सासता । पार्श्वनाथ मनवं छित पूर । चिंतामण मोरी चिंता चूर ॥ १ ॥ अणियाली तोरी आंखडी ।जाणै

कमलतणी पांखडी मुख दीठां दुख जावै दूर ॥ चिं ॥ २ ॥ को केहनें को केहनें नमें । ह्मारे मनमें तूहिं जगमें । सदा जुहारूं नगैसूर ॥ चिं ॥ ३ ॥ वीजडीया वाले सर मेल । वैरी दुसमण पाछा ठेल । तूं छै ह्मारै हाजरा हजूर ॥ ॥ चिं ॥ ४ ॥ मुजमन लागी तुमसूं प्रीत । बीजो कोयन आवै चीत । करो मुझ तेज प्रताप पनूर । चिं ॥ ५ ॥ येह स्तोतर मनमें धरै । तेहना चिंत्या कारज सरैं । आधि व्याधि दुख जावै दूर । चिं॥६॥ नव नव देज्यो तुम पाय सेव । श्रीचिंतामणि अरिहंत देव । समयसुंदर कहे सुख नरपूर ॥ चिं ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८ कर्मकी मूलोत्तर प्रकृतिका नाम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम आठ मूल प्रकृतिका नाम ॥ ❀ ॥

१ ज्ञानावरणीय कर्म । २ दर्शनावरणीय कर्म । ३ वेदनीय कर्म । ४ मोहनीय कर्म । ५ आयुः कर्म । ६ नाम कर्म । ७ गोत्र कर्म । ८ अंतराय कर्म । पहेला ज्ञानावरणीय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ मतिज्ञानावरणीय । २ श्रुतज्ञानावरणीय । ३ अवधिज्ञानावरणीय । ४ मनःपर्यवज्ञानावणीय । ५ केवलज्ञानावरणीय ॥

॥ ❀ ॥ दूजा दर्शनावरणीय कर्मकी उत्तर प्रकृति नव ॥ ❀ ॥

१ चक्षुदर्शनावरणीय । २ अचक्षुर्दर्शनावरणीय । ३ अवधिदर्शनावरणीय । ४केवलदर्शनावरणीय । ५ निद्रा । ६ निद्रा निद्रा । ७ प्रचला । ८ प्रचला प्रचला । ९ थीणद्धी ॥

॥ ❀ ॥ तीजा वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृतिदो ॥ ❀ ॥

१ शातावेदनीय. २ अशाता वेदनीय

॥ चोथा मोहनीय कर्मकी उत्तर प्रकृति अठावीश ॥

१ सम्यक्त्व मोहनीय. २ मिश्रमोहनीय. ३ मिथ्यात्वमोहनीय. ४ अनंतानुबंधी क्रोध. ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध. ६ प्रत्याख्यानी क्रोध. ७ संज्वलन क्रोध. ८ अनंतानुबंधी मान. ९ अप्रत्याख्यानी मान. १० संज्वलनमान. ११ प्रत्याख्यानी मान. १२ अनंतानुबंधीमाया. १३ अप्रत्याख्यानी माया. १४ प्रत्याख्यानीमाया. १५ संज्वलन माया. १६ अनंतानुबंधी लोज. १७

अप्रत्याख्यानी लोभ. १८ प्रत्याख्यानी लोभ. १९ संज्वलन लोभ. २० हास्य नोकषाय. २१ रति नोकषाय. २२ अरति नोकषाय. २३ शोक नोकषाय २४ भयनोकषाय. २५ जुगुप्सा नोकषाय. २६ पुरुषवेद नोकषाय. २७ स्त्रीवेद नोकषाय. २८ नपुंसकवेद नोकषाय. ॥

॥ पंचमा आयुः कर्मकी उत्तर प्रकृति चार ॥

१ देवायु. २ मनुष्यायु. ३ तिर्यगायु. ४ नरकायु.

॥ ❀ ॥ छठा नामकर्मकी उत्तर प्रकृति १०३ ॥ ❀ ॥

१ नरकगति नामकर्म. २ तिर्यग्गति नामकर्म. ३ मनुष्यगति नामकर्म. ४ देवगति नामकर्म. ५ एकेंद्रिय जातिनाम. ६ बेंद्रिय जातिनाम. ७ तेंद्रिय जातिनाम. ८ चतुरींद्रिय जातिनाम. ९ पंचेद्रिय जातिनाम. १० औदारिक शरीरनाम. ११ वैक्रिय शरीरनाम. १२ आहारकशरीरनाम. १३ तैजसशरीर नाम. १४ कार्मणशरीर नाम. १५ औदारिक अंगोपांग. १६ वैक्रिय अंगोपांग. १७ आहारक अंगोपांग. १८ औदारिक औदारिक बंधन. १९ औदारिक तैजस बंधन. २० औदारिक कार्मण बंधन. २१ औदारिक तैजसकार्मण बंधन २२ वैक्रियवैक्रिय बंधन. २३ वैक्रिय तैजसबंधन. २४ वैक्रियकार्मण बंधन. २५ वैक्रिय तैजस कार्मण बंधन. २६ आहारक आहारक बंधन. २७ आहारक तैजसबंधन. २८ आहारक कार्मण बंधन. २९ आहारक तैजस कार्मण बंधन ३० तैजस तैजस बंधन ३१ तैजस कार्मण बंधन. ३२ कार्मण कार्मण बंधन ३३ औदारिक संघातन. ३४ वैक्रिय संघातन ३५ आहारक संघातन. ३६ तैजस संघातन. ३७ कार्मण संघातन. ३८ वज्र रुषभ नाराच संघयण. ३९ रुषभ नाराचसंघयण. ४० नाराचसंघयण. ४१ अर्धनाराचसंघयण ४२ कीलीका संघयण. ४३ छेवठो संघयण. ४४ समचतुरस्रसंस्थान. ४५ निग्रोध संस्थान. ४६ सादिसंस्थान. ४७ वामन संस्थान ५८ कुब्ज संस्थान. ४९ हुंडक संस्थान. ५० कृष्णवर्ण नाम. ५१ नीलवर्ण नाम, ५२ लोहितवर्ण नाम. ५३ हारिद्रवर्ण नाम. ५४ श्वेतवर्ण नाम कर्म. ५५ सुरभि गंध. ५६ दुरभि गंध. ५७ तिक्तरस नामकर्म. ५८ कटुकरस नामकर्म. ५९ कषायरस नामकर्म. ६० आम्लरस नामकर्म. ६१ मधुररस नामकर्म. ६२ कर्कशस्पर्श नाम

कर्म. ६३ मृदुस्पर्श० ६४ गुरुस्पर्श नामकर्म. ६५ लघुस्पर्श नामकर्म ६६ शीतस्पर्श नामकर्म. ६७ उष्णस्पर्श नामकर्म ६८ स्निग्धस्पर्श नाम कर्म. ६९ रूक्षस्पर्श नाम कर्म ७० नरकानुपूर्वी. ७१ तिर्यगानुपूर्वी. ७२ मनुष्यानुपूर्वी. ७३ देवानुपूर्वी.७४ शुभ विहायोगति. ७५ अशुभ विहायोगति. ७६ पराघात नामकर्म. ७७ उछ्वास नामकर्म. ७८ आतप नामकर्म. ७९ उद्योत नामकर्म. ८० अगुरुलघु नाम कर्म. ८१ तीर्थंकर नाम कर्म. ८२ निर्माण नामकर्म. ८३ उपघात नामकर्म. ८४ त्रसनाम कर्म. ८५ बादर नाम कर्म. ८६ पर्याप्त नाम कर्म. ८७ प्रत्येक नाम कर्म. ८८ स्थिर नामकर्म. ८९ शुभ नाम कर्म. ९० सौभाग्य नाम कर्म. ९१ सुस्वर नाम कर्म. ९२ आदेयनाम कर्म. ९३ यशः कीर्त्ति नाम कर्म. ९४ स्थावर नाम कर्म. ९५ सूक्ष्म नाम कर्म. ९६ अपर्याप्त नाम कर्म. ९७ साधारण नाम कर्म. ९८ अस्थिर नाम कर्म. ९९अशुभ नाम कर्म. १०० दुर्भाग्य नाम कर्म. १०१ दुःस्वर नाम कर्म. १०२ अनादेय नाम कर्म. १०३ अयशोऽकीर्त्ति नाम कर्म.

॥ ❀ ॥ सातमा गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकृति दो ॥ ❀ ॥

१ उच्चैर्गोत्र. २ नीचैर्गोत्र.

॥ आठमा अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ दानांतराय. २ लाभांतराय. ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय. ५ वीर्यांतराय. (इसप्रमाणे आठ कर्मकी एकशो अठावन उत्तर प्रकृति जाणनी.)

॥ ❀ ॥ अथ नव तत्व नामः ॥ ❀ ॥

जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ पुन्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रवतत्व,६ संवर तत्व, ७ निर्जरातत्व, ८ बंधतत्व, ९ मोक्षतत्व. ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ इति ॥



॥ ❀ श्री जिनार्चन विधिः ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अर्हत्कल्पानुसारें सदैव जिन पूजन विधि किंचित्मात्र लिखते हैं ॥ भगवंतके मंदिर (वा) घर देरासरके विषे । चोटीकूं बांधकै शुद्ध वस्त्र पहरके, उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोससहित । एकांतके विषे पूर्व दिश, उत्तरदिश तरफ, बेठके परमेश्वरकी पूजा करै ॥ प्रथम जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजांकूं मंत्रों सें पवित्र करै (यथा) ॥ ॐ आपो अप्य काया एकेंद्रिय जीव निर्वद्या ई त्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्ञतयः संतु । नमेस्तु संघट्टण हिंसापापमर्हदर्च्चने॥ इस मंत्रसें जल मंत्रणा ॥❀॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिका या जीवा एकेंद्रिया निरवद्याईत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । स ज्ञतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्च्चने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अग्निमंत्रण मंत्र ॥❀॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया नि रवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्ञतयः संतु । नमे स्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्च्चने ॥ इति वन्हि दीपाद्यग्निमंत्रणं ॥ फेर बास चूर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासनः सुमेधा एक चित्तो निरवद्याईदर्च्चनै निर्व्यथोभूयासं । निःपापोभूया सं । मत्संश्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्याईदर्च्चने निर्व्यथा भूयासुः निरुपद्रवा भूयासुः ॥ इस मंत्रसें केशर मंत्रके अपणें तिलक करे ॥ ❀ ॥ पुष्पसें अपनें मस्तककी पूजा करे (फेर) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तन्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया

एक द्वि त्रि चतुः पंचेंद्रिया स्तिर्यङ् मनुष्या नारक देवगति गता श्चतुर्दशर ज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः । इह जिनार्चने कृतानुमोदना संतु । निः पापाः संतु । निरपायाः संतुः । सुखिनः संतुः । प्राप्त कामाः संतुः । मुक्ताः संतुः । बोध माप्नुवंति ॥ इस मंत्रसें मंत्रकै दशदिशामें गंध जल अक्षतादिक क्षेपन करे । फेर यह श्लोक कहे ॥ शिवमस्तु सर्व्व जगतः । परहित निर ता भवंति भूतगणाः । दोषा प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ १ ॥ सर्व्वेपि संतु सुखिनः सर्व्वेसंतु निरामया । सर्व्वे भद्राणि पश्यंतु माकश्चिद्दुक्ख भाग्भवेत् ॥ २ ॥ फेर मंत्र पढे ॥ ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु । अधिवासितास्तु । इस मंत्रसें मंत्रितजलसें जमीन पवित्र करे (फेर) स्थि रायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः ॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरकुं पट्ट ऊपर स्थापन करे । थिरबिंब होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे ॥ पीछे इस मंत्रकूं पढे ॥ ॐ अत्रक्षेत्रे । अत्रकाले । नामार्हतो । रूपार्हतो । द्रव्यार्हतो । भावार्हतः । समागताः । सुस्थिताः । सुनिष्टिताः । सुप्रतिष्टाः संतु ॥ इति अर्हत्प्रतिमा स्थापन मंत्र ॥ फेर मौनसहित अगामी पुष्पग्रहण करके मंत्र पढे । ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः । स्तीर्णेभ्यः । स्तारकेभ्यः । बोधकेभ्यः । सर्व्वजंतुहितेभ्यः । इह कल्पना बिंबे भगवंतोर्हतः सुप्रतिष्टिताः संतु ॥ यह मंत्र मौन सहित पढके भगवंतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे । फेर पुष्प जल हाथमें लेके कहे ॥ यथा ॥ स्वागतमस्तु । सुस्थितिरस्तु । सुप्रतिष्टास्तु पुष्पाभिषेकेन अर्घ्यमस्तु । पाद्यमस्तु । आचमनीयमस्तु । सर्वोपचारैः पूजास्तु ॥ इस मंत्रसें मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावे ॥ (फेर) जलग्र हण करके मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हतं तर्पणंपद्यं । प्राणदं मलनाशनं । जलंजिनार्चने त्रेव । जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥ इस मंत्रसें मंत्रित जल करके अभिषेक करावे । फेर चंदन कुंकुम कस्तुरी आदिगंध वस्तु हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हतं ॥ इदं गंधं महामोदं । वृंहणं प्रीणनं सदा । जिनार्चनेच स त्कर्म । संसिद्ध्यौ जायतांममः ॥ १ ॥ ऐसा पढके विवधगंध वस्तूका विलेपन करे । फेर । पुष्पपात्रिका हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र पढे । ॐ अर्हतं । नानावर्णमहामोदं । सर्व्वत्रिदशवल्लभं । जिनार्चनंच संसिद्ध्यौ । सुखंभवतु

मेसदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अक्षत ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । प्रीणनं निर्म्मलं थल्पं । मांगल्यं सर्व्वसिद्धिदं । जीवनं कार्यसंसि द्ध्यौ । ध्रुयान्मेजिनमंदिरं ॥ १ ॥ इस मंत्रसें मंत्रित अक्षतका तीनपुंज करे । फेर पूंगीफल जातीफलादिवस्तु ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । जन्मफलं स्वर्गफलं । पुन्यमोक्षफलं फलं । दद्याज्जिनार्च्चने त्रैव । जिनपादाग्र संस्थितः ॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥ (फेर) धूप ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । श्रीखंडागरु कस्तूरी । द्रुमनिर्यास संभवः । प्रीणनः सर्व्व दे वानां । धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥ इस मंत्रसें धूप क्षेपन करे । फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । पंचज्ञान महाज्योति । र्म्मयायध्वांत घातने । द्योतनाय प्रतिमायाः । दीपो ध्रुयात्सदार्हते ॥ १ ॥ इति दीपमध्ये पुष्पन्यासः ॥ फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं भगवद्भ्यो अर्हद्भ्यो जल गंध पुष्पाक्षत फल धूपदीपैः संप्रदानमस्तु । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ । भगवंतोर्हत स्त्रिलोक्यस्थिताः । नामाकृतिः द्रव्यभावयुताः स्वाहाः । इति पुनर्जिन पूजनं ॥ पीछे वास चूर्ण ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक बुध गुरु शुक्र शनैश्चर राहु केतु मुख्याग्रहाः इह जिन पादा ग्रे समायांतु पूजां प्रतीच्छंतु । ऐसा कहके नवग्रहोंकी वासचूर्णसें पूजा करे ॥ फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ पीछे अनुक्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल धूप, दीप, नेवेद्य करके नवग्रहोंकी पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक शुक्र बुध गुरु शनैश्चर राहु केतु प्रमुखाग्र हाः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांग ल्यदाः संतुः । महोत्सवदाः संतु ॥ ऐसा कहके ग्रहोंकूं पुष्प चढावे ॥ इसी रीतीसें ॥ ॐ इंद्राग्नि यम नैरुति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकः सक्षेत्रपालाः इह जिन पादाग्रे समागच्छंतु ॥ इस मंत्रसें पूजापट्ट ऊपर लोकपालांकी वास चूर्णसें पूजा करे । फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु । पुष्पमस्तु । अक्षतमस्तु । फलमस्तु । धूपोस्तु । दीपोस्तु । फेर । अनुक्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीप, नेवेद्य करके लोकपालोंकी

पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ इंद्राग्नि यमनैरुति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः । सविनायकाः। सक्षेत्रपालाः । सुपूजिताः संतुः । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । महोत्सवदा संतुः ॥ ऐसा कहके लोकपालोंकी फूलसें पूजा करे । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ अस्मत्पूर्व्व गोत्र संभवाः देवगति गताः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु । (ऐसा कहकै) जिन पादाग्रे पट्टोपरि पुष्पांजलि चढावै । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्ट नवत्युत्तरशतं देव जातयः स देवाः पूजां प्रतीच्छंतु । सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु । ऐसा कहके परमेश्वरके चरण कमलआगे पुष्पांजलि चढावै ॥ फेर हाथमें पुष्पांजलि ग्रहण करके । अर्हन्मंत्र स्मरणकरके तिस पुष्पोंसें जिन प्रतिमाकी पूजा करे । तन्मंत्रोयथा ॥ ॐ अर्हं णमो अरिहंताणं । ॐ अर्हं णमो सयंसंबुद्धाणं । ॐ अर्हं णमो आयरियाणं ॥ श्लोकः ॥ अयंतु त्रिपदोमंत्र । श्रीमतामर्हतांपरः । भोगमोक्ष प्रदोनित्यं । सर्वपाप निकृंतनः१॥इस अर्हत्मंत्रकों अपवित्रपणेंसें नहिंजपना । (तथा) नास्तिकांकूं मिथ्यात्वियोंकूं न देना । फेर१०८वार इस मंत्रका जाप करे । तिसके बाद । नेवेद्य दोय रकेबीयोंमें रखके । अंजलीमें जलग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं । नाना षड्रस संपूर्णं । नैवेद्यं सर्व्वमुत्तमं । जिनाग्रे ढोकितं सर्व्वं । संपदा ममजायते ॥ १ ॥ यह कहके नैवेद्यपासे, जलक्षेपन करे । फेर जल ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सर्व्वे गणेश क्षेत्रपालाद्याः सर्व्वग्रहाः सर्व्वोदिग्पालाद्या । सर्व्वे अस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः । सर्व्वे अष्टनवत्युत्तरशतं देवजातयः। सदेव्योर्हद्भक्ताः । अनेन नैवेद्येन संतर्प्पितास्संतु । तुष्टिं पुष्टिं संतुः । मांगल्यं० महो० ॥ ऐसा कहके दूसरे नैवेद्य पासे जल नाखे ॥ पीछे पुष्पांजली हाथमें लेके पढे ॥ योजन्मकाले पुरुषोत्तमस्य । सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च । देवैः प्रदत्त कुशमांजलि प्रीतिप्रभक्त्या । ददातु सर्वाणि समीहितानि ॥ १ ॥ राज्याभिषेक समये त्रिदशाधिपेन । छत्रध्वजांकरजयोः पदयोर्जिनस्य । ह्रिमोतिभक्तिः कु

शुमांजलीयं । स प्रीणयत्वानुदिनं सुधीयां ॥ २ ॥ देवेंद्रोकृत केवले जिनपतौ सानंद भक्त्यागतेः । संदेहं व्यपरोपण क्षमशुभ व्याख्यान बुद्ध्यात्रयैः । आ मोदान्वित पारिजात कुशुमैर्यत्स्वामि पादाग्रतो । मुक्तः सः प्रतनोतु चिन्मय हृदां भद्राणि पुष्पांजलि ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह तीन वृत्त कहके तीन पुष्पांजलि क्षेपन करे ॥ फेर जवण हाथमें लेके यह वृत्त पढे ॥ लावण्य पुण्यांग भृतोर्हतोयः । स्तद्वृष्टि भावं सहसैवधत्ते । सविश्वभर्तुर्ज्वरणावतारो । गर्भावतारं सुधिया विहर्तुं ॥ १ ॥ लावण्यैक निधेर्विश्व । भर्तु स्तत्वृद्धिहेतुकृत् । जवणो त्तारणं कुर्या । द्भवसा गर तारणं ॥ २ ॥ यह दोय वृत्त कहके दोयदफे जवण उतारे ॥ फेर जव णमिश्र जल लेके यह वृत्त पढै ॥ सद्भारता सदा भक्तां । निहंतु कर्म सो द्यमः । जवणार्चि र्जवणांधुः । पिषाते सेवते पदौ ॥ १ ॥ ऐसा कहके जवण जल उवारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ सप्तमीति विघातार्हं । स प्तव्यसन नाशकृत् । यत्सप्तनरकद्वारा । सप्तारिरितुलांगतं ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य फलदान कृतप्रमोदं । सत्सप्त तत्वविदनंतवृतप्रबोधं । तववक्त्र हस्तधृतसंगत सप्त दीप । मारात्रिकं भवतु सप्तम सद्गुणायां ॥ ऐसा कहके आरती उतारे ॥ फेर मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय भवेज्जीवैः । सदेवा सुर मानवैः । चिन्मं गलं श्रीजिनेंद्रात् । प्रार्थनीयं दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगलं भगवतः प्रथमार्हतः श्री । संयोजनैः प्रतिबभूव विवाहकाले । सर्वाःसुरासुर वधूमुख गीयमानं । स र्वर्षिभिश्च सुमनोभि रुदीर्यमासा ॥ २ ॥ दास्यं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु । राज्येर्हतः प्रथम सृष्टि कृतोयदासीत् । सन्मंगलं मिथन पाणिग तीर्थवारि । पादाभिषेक विधिनान्युपचीयमानं ॥ ३ ॥ यद्भिश्वाधिपतेः समस्ततनु भृत्सं सारनिस्तारणे । तीर्थपुष्टि मुपेयुषिप्रतिदिनं वृद्धिर्गतं मंगलं । तत्संप्रत्युपनीतपू जनविधौ विश्वात्मना महतां । भूयान्मंगल मक्षयंच जगते स्वस्त्यस्तु संघायच ॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती उतारे ॥ फेर सक्रस्तव पढै ॥ यह सदैव जिन पूजन करणेंकी विधि कही ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौतीसे अतिशय जुत । वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख

भवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ (ढाल) सिंहासण बैठा जगभाण । देखी भविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठै तुझ निम्मल झाण । लहीयै परम महोद य ठाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरण कम ल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस वैरागी ॥ चौवीस जिनन्दा कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ❀ ॥ इतना कही । कुसुमांजली चढाई जै । चरणां टीकी दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोर्हत् सि द्धा० कही । पढै ॥ ❀ ॥ (गाथा) जोनिअ गुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥१॥(ढाल) जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर निज पदलीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुसु मांजली चढाई जै । गोमां टीकी दीजै । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके नमो ऽत्तसिद्धा० कही पढै ॥ ❀ ॥ (गाथा) निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥ (ढाल) लोका लोक प्रकासक नाणी । भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानन्द तणी नीसाणी । तसुभगतें सुझमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ कुसु०। दोनुं हाथे टीकी दीजै । मुखै पढै । नमो ऽत्तसिद्धा० ॥ ❀ ॥ (गाथा) जे सिझ्झा सिझ न्तिजे । सिझिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अ रिहन्त ॥ १ ॥ (ढाल) शिव सुख कारण जेह त्रिकालै । समपरिणामें जगति निहालै ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखालै । इन्द्रादिक जसु चरण पखालै ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं खांधे टीकी । दीजै । मुखै पढै नमो० ॥ ॥ ❀ ॥ (गाथा) सम्म दिठी देशजय साहु साहुणी सार ॥ आचारज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चौवीह संघें जे मन धारयो । मोक्ष तणो कारण निरधारयो ॥ विविह कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमां जलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ कुसु० मस्तक

टीकी दीजै । नमो क्षत्तिसिद्धा० कही । चमर हाथमें लेवै ॥ ❀ ॥ (वस्तु) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरङ्ग ॥ कल्लाण कविह संठविअ । करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इकसमय विहर न्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जन्म समय इगवीस । भत्ति ह भावें पूजीया । करोसंव सुजगीस ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकदिन अचिरा हुलरावती । ए चाल ॥❀॥ भव तीजय समकित गुण रम्या । जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना । करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता । मनभाव ना एहवी भावता ॥ सबजीव करूं शासन रसी । ऐसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलूं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आ नबंधै विचइ एकभव करी । श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ ल हे नरभव उदार । भरते तिम ऐरवत तेजसार ॥ महाविदेह बिजयपरधान । मझखंमे अवतरै जिन निधान ॥ ४ ॥ (ढाल) पुन्यें सुपनाहे देखै । मनमां हरष विसेषै ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निरमल वृषभ मनोहर ॥ १॥ निरभय केसरी सींह । लखमी अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरम ल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै । इन्द्रधजा जगजीपै ॥ पूरण कलस पंफूर । पद्मसरोवर पूर ॥ ६ ॥ इग्यारमें रयणायर । देखै मा ताजी गुणसायर ॥ बारमें भुवन बिमान । तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अग नि शिखा निरधूम । देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें भासै । राजा अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्यै पुत्र मनोहर ॥ इं द्रादिक जसु नमसै । सकल मनोरथ फलसै ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (वस्तु) ॥ ❀ ॥ पुन्य उदय २ ॥ कपना जिननाह । माता तब रयणी समें । देखि सुपन हरखंत जागीअ । सुपन कही निज कंतने । सुपन अरथ सांभलै सोभागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी । होस्यै पुत्र नि धान । इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसै सिधि विधान ॥ ❀ ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चंद्रा उल्लालानी ॥ ❀ ॥ सोहमपति आसन कंपीयो । देई अ वधे मन आणंदीयो ॥ सुभ आतम निरमल करण काज । भवजल ता

रण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अम्बी पारग सत्थवाह । केवलनाणा ईअ गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तब रोमराय । वलयादिकमां निज तनुं नमाय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअम्ब पय समुहा आवितत्थ । करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ मुख भाषे एकृण आजसार । तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मि थ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवि । तव देव देवी हरखे सुणे वि ॥ ६ ॥ गावै तब रंभा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नर खेत्रें आरज वंसठाम । जिनराज बधे सुर हर्ख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उछव अशेष । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर खसंग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुभवेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव ॥ बधाई ब धाइ थई अतीव ॥९॥❀॥ फूल अक्षतसें वधावै । ३ प्रदक्षिणा देवै । (पीछे) शक्रस्तव, ठाणं संपाविउंकामस्स । तक कहै । पीछे । रोली (तथा) केसरका हाथमें साथिया करै । धूपखेवै ॥ (ढाल) श्री शांति जिननो कलश कहि सुं० ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइयै सुखकार । नर खेत्र मंझण दुह विहंझण । भविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख उछव । थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी । लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुणछंद ॥ जिन जननी पासे आय पहुती । गहकती आणंद ॥ हेमायतें जिनराज जायो । शचि वधायो रम्म । अमजम्म निम्मल करण कारण । करिस सूई अकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि सोधन दीप दरपण बायवींझणधार ॥ ति हां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखडी जिनपा णि वांधी । दीयै इम आसीस ॥ युगकोड कोडी चिरंजीवो । धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ (ढाल) उछालानी ॥ ❀ ॥ जिनरयणीजी दश दिश उजाजता

धरै ॥ सुन्नजगनेंजी ज्योतिस चक्रते संचरै । जिन जनम्याजी जिण अव सर माता घरे ॥ तिण अवसरजी इंद्रासण पण थर हरे ॥ (त्रुटक) थरहरै आसन इंद्रचिंतै कौन अवसर एबन्यो । जिन जन्म उछव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपनो ॥ निजसिद्ध संपति हेतु जिनवर जाणि नगतें नमह्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ (ढाल) तब सुरपति जी घंटानाद करावए ॥ सुरलोके जी घोषणा एहदि रावए । नरक्षेत्रें जी जिन वर जनम हुवो अछै । तसुनगतें जी सुरपति मंदि र गिर गछै ॥ (त्रूटक) गछै मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनत णो । जिन जन्म उछव करण कारण आवज्यो सविसुर घणो । तुम सुद्ध समकित थास्यै निरमल देव देवी निहालतां । आपणा पातिक सर्व जास्यै नाथ चरणपखालतां ॥ २ ॥ (ढाल) इम सांन्नलजी सुरवर कोमि बहू मिली । जिन वंदण जी मंदर गिरि साहमी चली । सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वांदी स्वामि बधा विया । (त्रू टक) बधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्यहुं कृतपुन्य ए । त्रैलोक्य नाय क देवदीठो मुझ समो कुण अन्यए । हे जगत जननी पुत्र तुह्मचो मेरु म ज्जन वरकरी । उछंग तुह्मचै बलिय थापिस आतमा पुन्यें भरी ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पांच रूपें जी अति सय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तब बत्तीस आगल बहै । सुर कोमी जी जिन दरसणनें नमहै (त्रूटक) सुर कोमि कोमी नाचती बलि नाथ शचि गुण गावती । अपछरा कोमी हाथ जोमी हाव भाव दिखावती जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदै आसी सए । अह्मत्राण शरण आ धार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी पांडुक व नमें चिहूं दिसै । गिरसिल परजी सिंहासण सासय वसै । तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या । चौसठे जी तिहां सुरपति आवी रह्या (त्रूटक) आविया सुरपति सर्व नगतै कलश श्रेणि वणाव ए । सिद्धार्थ पमुहा ती र्थनषधि सर्व वस्तु अणाव ए । अच्चुय पति तिहां हुकमकीनो देव कोमा कोमिनें । जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सबे सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥ ❀ ॥

सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेकै खडा रहै । मुखसें पढै (ढाल) शांतिनें कारणै इंद्र कलशा भरै । ए चाल ॥ ❀ ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी । उल्लसीनें धसी खीरसागर दिसी ॥ पौमदह आदि दह गंग पमुहानई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कल श करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणें सुन्नतरा । उपगरण पु प्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें भासिया तेम आणीठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिय करकलश करि देवता । गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता । धन्य अह्म सगति सुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ सम कित बीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसें भक्तिजल सीं चता । मेरु सिहरो वरै सर्व आव्या वही । शक्रउद्वंग जिन देषि मन गह गही ॥ ४ ॥ ❀ ॥ (गाथा) ॥ ❀ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो आदिठ पुव्वो । तिलोय तारणो । तिलोय बंधु । मिछत्तमोह विद्धंसणो । आणाइ ति न्ना विणासणो । देवाहि देवो दिठ्ठवो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥ ❀ ॥ (ढाल तेह ज) ॥❀॥ एम पन्नणंति वण नुवण जोईसरा । देव वैमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा केई बरममण बयणेण अइउल्लगा ॥ ५ ॥ (व स्तु) तत्थु अच्चुय २ इंद्र आदेश । करजोमि सर्व देवगण । लेयकलश आदेस पामीय । अदभुत रूप सरूपजुय । कवण एह पुछंत सामीय ॥ इंद्र कहै जगतारणों । पारग अह्मपरमेस । नायक दायक धम्मनिहि । करीयै तसु अभिषेस ॥ १ ॥ (ढाल ९ मी) तीर्थ कमल वर उदक भरीनें । पुषकर सा गर आवै (एचाल) ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगै न्हामें । आतम निरमल भाव करंता वधतें शुभ परिणामें । अच्युता दिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषे क करंत ॥ १ ॥ पू० (गाहा) ॥ तव ईशान सुरिंदो । सक्कं पन्नणेइ करि हु सुपसावो । तुह्म अंके मह नाहो । खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १ ॥ ता सक्किंदो पन्नणई । साहमीय वछलंमि वहुलाहो । आणाइवंतेणं गिण्हह होउ कयत्थाओ ॥ २ ॥ ❀ ॥ इतना कहके । सर्व स्नात्रिया, भगवान ऊपर कलश ढाले । मुखेपढै ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि ।

न्हवण करै प्रभु अंगै । करिय विलेपण पुष्फ मालठवि । वर आभरण अभंग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुर वर बहु जय २ रव करै । नच्चेधर आणंद । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो । भांजिसु हिव भवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोम्बि त्तीस सोवन्न भवारी । वाजंतै वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें । जननीनें सुप्रसाद । ३ सो० ॥ आणीथापै एम पयंपै । अह्म निसतारिया आज । पुत्र तुह्मारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें । तुह्म सुत अह्म आधार । सुरपति भगति सहित नंदीसर । करै जिन भगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर । कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिन आणा रंगी । राज सागर उवझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणै सुपसाय ॥ सो० ७ ॥ देवचंद निज भगतें गायो । जनम महोछव छंद । बोधबीज अंकूरो उच्छ स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥ (ढाल) ॥ इम पूजा भगतै करो । आतमहित काज । तजिय विभाव निजभावना । रमतां शिवराज ॥ १ ॥ इ० ॥ काल अनंतें जे हुवा । होस्यै जेह जिणंद । संपइ सीमंधर प्रभु । केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोछव इणि परै । श्रावक रुचि वंत । बिरचै जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ देवचंद जिन पूजनां । करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी । कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) गंगामागध क्षीरनिधि । तीरथ मिश्रितसार । कुशुमें वासित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ (ढाल) मणि कनकादिक अष्टविध करि भरी कलश सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनही दुरित प्रचार । मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान । करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ १ ॥ (छंद) हर्ष भरी अप्सरावृंद आवै । स्नात्र करि एम आसीस भावै । जिहां लगै सुरगिरि जंबुदीवो ।

अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (श्लोकः) ॥ बिमल केवल भासन भास्करं । जगति जंतु महोदय कारणं । जिनवरं बहुमान जलौ घतः । शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञान शक्तये । जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्री मज्जिनेंद्राय । जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥ ❀ ॥ जलसें न्हवण करावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) बावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनें घन सार ॥ जि न तनु लेपै तसुटलै । मोह संताप विकार ॥ १ ॥ (ढाल) सकल संताप निवारण तारण सहु भवि चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त ॥ निज रूपै उपयोगी धारी जिनगुण गेह । भावचंदन सुह भाव थी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥ (चालि) जिन तनु चरचतां सकल नाकी कहै कुग्रह उष्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज ह्याकी । भ व्यता अह्म तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकलमोह तिमश्र वि नासनं । परम शीतल भावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शनै । सहज तत्व विकाश कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये ॥ जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेंद्राय । चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ केसर चंदन चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) शतपत्री वर मोगरा । चंपक जाइ गुलाब ॥ केतकी दमणो वौलसिरि । पूजो जिन भरि भाव ॥ १ ॥ (ढाल) अमल अखंडि त विकसित सुभ सुमनी घन जाति । लाखीणो टोरुठवो अंगीरचो बहु भांति ॥ गुण कुसुमें निज आतम मंडित करवाभव्य ॥ गुणरागी जगत्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ (चालि) जगधणी पूजतां विविध फूलै । सुरवरा ते गिणें क्षण अमूलै ॥ खंति धर मानवा जिनपद पूजै । तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) विकच निर्मल शुभ मनोरमै । विंशद चेतन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनेर्नवैः । परमतत्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ४ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरक लोबान । मेल सुगंध घनसार घन । करो जिननें धूपदान ॥ १ ॥ (ढाल) धूपघटी जिम म हमहै तिम दहै पातिक वृन्द ॥ अरति अनादिनी जावै पावै मन आणंद ॥ जे जिन पूजै धूपैं भव कूपैं फिर तेह ॥ नावै पावै ध्रुवघर आवै सुक्ख अ छेह ॥ २ ॥ (चालि) जिनघरे वासतां धूपपूरै । मिछत्त दुर्गन्धता जाइ दूरै ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्व गत स्वभावै । कारिका उच्चगति भाव पावै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकल कर्म्म महेंधन दाहनं । विमल संवर भावसु धू पनं ॥ असुभ पुग्गल संग विवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति धूप पूजा ॥ धूप अगरबत्ती खेवै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ५ दीपपूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) मणिमय रजत ताम्रना । पात्रकरी घृत पूर । वत्ती सूत्र कसुं बनी । करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल) मंगलदीप वधावो गावो जिन गुण गीत ॥ दीपथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतणी सुभ ज्योती द्योती जिन मुखचंद ॥ निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णा नंद ॥ २ ॥ (चाल) जिन गृहे दीपमाला प्रकासैं । तेहथी तिमर अज्ञान नासैं ॥ निजघटै ज्ञानज्योति विकासै । तेहथी जगतणा भावभासै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) भविक निर्म्मल बोध विकासकं । जिनगृहे सुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विसुद्ध समन्वितं । दधतुभाव विकास कृते जैना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति दीपपूजा ॥ ❀ ॥ मंगलदीप चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) अक्षत २ पूरसुं । जे जिन आगें सार । स्वस्तिक रचतां विस्तरै । निजगुण भर विस्तार ॥ १ ॥ (ढाल) उज्जल अमल अखंडित मं डित अक्षतचंग । पुंजत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावै रंग । निज सत्तानें

सन्मुख उनमुख भावे जेह। ज्ञानादिक गुणठावै भावे स्वस्तिक एह॥ २॥
(चाल) स्वस्तिक पूरतां जिनप आगै। स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागै। जन्मजरा मरणादि असुभ भागै। नियत शिव सर्म रहै तासु आगै॥ ३॥
(श्लोकः) सकल मंगलकेलि निकेतनं। परम मंगल भावमयं जिनं। श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्। दधतु नाथ पुरोकृत स्वस्तिकं॥ १॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। अक्षतं यजामहे स्वाहा॥ ❀॥ ॥ ❀॥
इति अक्षतपूजा॥ अखंड चावल चढावै॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ अथ ७ नैवेद्यपूजा॥ ❀॥

॥ ❀॥ (दूहा) सरस सुची पकवान बहु। शालि दालि घृतपूर। धरो नैवेद्य जिन आगलै। क्षुधा दोष तसु दूर॥ १॥ (ढाल) लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर। सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर। साकर द्राख सींघोडा भक्तिव्यंजन घृतसद्य। करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै सुख अनवद्य॥२॥ (चाल) ढोवतां भोज्य पर भाव त्यागे। भविजना निज गुण भोज्यमांगे। अक्षभणी अक्षतणो सरूप भोज्य। आपज्यो तातजी जगत पूज्य॥ ३॥ (श्लोकः) सकल पुद्गलसंग विवर्जनं। सहज चेतनभाव विलासकं। सरसभोजन नव्य निवेदनात्। परम निर्वृति भाव महं स्पृहे॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। नैवेद्यं यजामहे स्वाहा॥ ४॥ ॥ ❀॥
इति नैवेद्यपूजा॥ ❀॥ नैवद्य मिठाई पकवान चढावै॥ ❀॥

॥ ❀॥ अथ ८ फलपूजा॥ ❀॥

॥ ❀॥ (दूहा) पक्व बीजोरुं जिन करै। ठवतां सिवपद देइ। सरस मधुर रस फल गिणें। इह जिन भेट करेइ॥ १॥ (ढाल) श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार॥ अंजीर वंजीर दाडिम करणा षट्बीज सफार॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह। वरण गंधादिक रमणीक बहुफल ढोवै तेह॥ २॥ (चाल) फलभर पूजतां जगत स्वामी। मनुजगति बेलहै सफल पामी। सकल मनुध्येय गतिभेद रंगै। ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै॥ ३॥ (श्लोकः) कटुक कर्मविपाक विनासनं। सरस पक्वफल व्रज ढोकनं। वहति मोक्षफलस्य प्रभोपुरः। कुरुत सिद्धि

फलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) इम अरु विधि जिनपूजना । विरचै जे थिरचित्त । मानवभव सफलो करै । वाधै समकित वित्त ॥ १ ॥ (ढाल) अगणित गुण मणि आगर नागर वांदित पाय । श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर उवझाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन । श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ (चाल) संवत गुणयुग अचल इंदु । हर्ष भरिगाइयो श्रीजिनेंदु । तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी । लहैज्ञान उद्योत धन शिव निसानी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) इति जिनवरचंदं भक्तितः पूजयंति । सकल गुणनिधानं देव चंद्र स्तुवंति । प्रति दिवस मनंतं तत्व मुद्भास यंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ च्यारे खूंणे धार दीजै ॥ इति अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला । सिंहासनो परिमित स्नप नावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गंध धूपैः । कृत्वा र्चनंतु विदधाति सुवस्त्र पूजा ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना उंकार वस्त्रादिकं । पूजा तीर्थ कृतां करोति सततं शक्त्या तिभक्त्याहतः । नीरागस्य निरंजनस्य विजता रातेः त्रिलोकीपतेः । स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षया कांक्षया ॥ ॐ ह्रीं ॥ वस्त्रं० ॥ वस्त्र चढावै ॥ इति वस्त्रपूजाः ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ ❀ ॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अह पभिन्नगा पसरं । पया हिणं मुणिवयं करि ऊणं । पभ इ सलूण त्तण लङ्घियंच । लूणंहू अवहरंती ॥ १ ॥ पिक्खेविणुं मुह जिण वरह । दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मत्थह भरिय । जलेण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जिणवरह । तिन्नि पयाहिणि देव । तम तम शब्द करंतिये । विज्जा विज्ज जलेण ॥ ३ ॥ जंजेण विज्जव थुई । जलेण तं तहइ अत्थसहस्स । जिणरूवा मत्थरेणवि । फुट्टइ लूणं तरु तमस्स ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करै ॥ (पीछै) लूण पाणी लेई। मुखें गाथा कहै ॥ ❀ ॥ सव्वे मुणवई जलविजल। तंतह नमरुइपास। अह वि कयंतस्स निम्मलउ। निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विणु जलणहि पास। नरवि कयजल नावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दि न्नि य पास। जिम जिय वुट्टै नव दुहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमले हि लेविणुं। सुरवइ नावहि मुणिवई सेवणुं। पनमइ जिणवर तुहपइ सरणं। नयतुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ए कही लूण उतारी जल सरण कीजै ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उन्नय पयय नत्तस्स। नियठाणे संठियं कुणं तस्स। जिण पासै नमिय जणस्स। पिहुतुह हुय वहे पनमणं ॥ १ ॥ सव्वो जिण पन्नावो। सरिसा सरिसेसु जेण रचंती। सव्वन्नूण अपासे। जनस्स नमणं न संक मणं ॥ २ ॥ अचंत दुःकरं पिहू। हुयवह निवडेण जडेण कयं। आणा सव्वन्नूणं। न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चढाईजै ॥

॥ ❀ ॥ अथ बूटा फूल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उवणेव मंगलेवो। जिणाण मुह लालि संवलिया। तित्थ पव त्तण समई। तियसे विमुका कुसुम बुठी ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
ए कही फूल उगालीजै प्रनु आगै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सतर नेद पूजाकी विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम स्नात्र करै। पीछे। अष्ट प्रकारी पूजा करै। फिर सोना रूपा प्रमुखकी रकेबीमें। कुंकुम (तथा) केसर प्रमुखको साथियो करै। पीछे सुंदर कलश, केसर प्रमुख मिश्रित शुद्धजल नरी। रुपियो थापनाको कल शमेंरखी। कलश रकेबीमेंधरै। पीछे। स्नात्रिया मुख कोस उत्तरासण करके। तीन नवकार गुणें। तीन नमस्कार करी। हाथे धूपदेई। रकेबी हाथ धरै। मनथिर राखै। ढीक वर्जे। स्नात्रिया प्रनुजी सन्मुख खमा रहै। कलश अडिग्ग राखै। मुखै इम पढै। नावनलै नगवंतनी (इत्यादी)।

॥ ❀ ॥ अथ सतर भेद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) भावभले भगवंतनी । पूजा सतर प्रकार । परसिध कीधी द्रौपदी । अंग छठै अधिकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग सरपदो) ॥ ❀ ॥ ज्यो ति सकल जग जागती ॥ (हांरेअइ०) ॥ सरसति समरिसुंनिंद ॥ सतर सुवि धि पूजा तणी । पभणिसु परमानन्द ॥ १ ॥ (गाहा) न्हवण (१) विलेवण (२) वत्थयुगं (३) गंधारुहणंच (४) पुप्फरोहणयं (५) । मालारोहण (६) वन्नयं (७) । चुन्न (८) पभागाय (९) आभरणे (१०) ॥२॥ मालकला सुयवंसुघरं (११) पुप्फंपगरंच (१२) अठमंगलयं (१३) धूव नखेवो (१४) गीययं (१५) । नट्टं (१६) वज्जं (१७) तहाभणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं । ज्ञाता अंग मझार । द्रुपदसुता द्रोपदि परै । क रियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं । अहत धोती धरी उचित मानी । (अइयो०) ॥ विहत मुखकोसके खीर गंधोदकै । सुभृत मणिक लश करि विवध वांनी ॥ (अ०) ॥ १ ॥ नमवि जिनपुंगवं लोमहस्ते नवं । मार्जनं करिअ वावारि वारी । (अ०) । भणिय कुशमंजली कलश विधि मनरली । नवति जिनइंद्र जिम तिम अगारी । (अ०) ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ परमानंद पीयूष रस । न्हवण सुगति सोपान । धरम रूप तरु सींचवा । जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा साचवै । श्रावक शुभ परिणाम । शुचि पखाल तनु जिणतणें । करइ सुकृत हित काम ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (राग सारंग) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकारी । सुण जैनकी । (पू०) परमानन्द तिण उल्योरी सुधारस । तपतबुझीय मेरै तनकी ॥ (पू०) ॥ १ ॥ प्रभुकूं विलोकि नामि जतन प्रभारजित । करत पखाल सुचि धार वनकी । (पू०) न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत । पंककुंवरष जिम घनकी । । (पू०) ॥२॥ तरणि तारणि भवसिंधू तिरणकी । मंजरी संपद फल बरधनकी । शिवपुर पंथ

दिखावण दीपी । धूमरी आपदवेल मरदनकी (पू०) ॥ ३ ॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति संग । जागी सुदिशा सुज मेरे दिनकी । कहै साधु कीरति सारंग नरकरतां । आसफली मेरे मनकी (पू०) ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ पंचामृतसुं न्हवणकीजे (तथा) भावै पांवके अंगूठै जलधार दीजै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुंदर अङ्ग लूहणें करी । बिंब प्रमार्जी । केसर चंदन मृगमद अगरादिकसें । कचोली भरी । लेकर खडारहे । मुखे० ॥ (रागरामगिरी) गात्र लूहै जिन मन रगङ्गसूंरे । (देवा) सखरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं(हांरे देवा) वा० । गंध कसायसुमेलियै ॥ १ ॥ नन्दन चंदन चंदमेलियै रे (देवा) ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीयै ॥ करलीयै (हांरे देवा) क० । रय ण पिंगाणि कचोलीयै ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधै सिरै रे (देवा) भाल कंठ उर उदर न्तरै । दुखहरै (हांरे देवा) सुखकरै । तिलक नवेअंग की जीयै ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरै ॥ श्रावक दू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै । तिमकरै (हांरे देवा) ति० । जिणपर जनमन रंजीयै ॥ गा० ४ ॥ राग ललितमें । दूहा ॥ ❀ ॥ करहु विलेपन सुखसदन । श्री जिनचन्द शरीर । तिलक नवे अंङ्गपूजतां । लहै भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटै ताप तसु देहको । परम शसिरता संग । चित्तखेद सब उपसमें । सुखमें समर सीरंग ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बिधि (राग ललित) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विलेपन कीजै जिनवर अंगै । जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम । अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ क्रम जानु कर खंधै शिर भाल कंठ । उर उदरन्तर संगै । विघ्नपति अघमेरो करत विलेपन । तपत बुझति जिम अंगै ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही । मिलत नवेनिध चंगइ । कहै साधु तन सुचि करसु ललित पूजा । जैसें गंग तरंगै ॥ वि० ३ ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ एकही विलेपन कीजै । नव अंग पूजीयै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्र युगल पर । केसरनो सा थियो करी । प्रभुजी आगै खडा रहै मुखें इम पढै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ वसन युगल उज्जल बिमल । आरोपें जिन अंग । ज्ञान ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ (राग गौडी) ॥ कमल कोमल घन चन्दन चरचित । सुगंध गंधै अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अइ यो० ॥ कनक मंडित हिय लालपल्लव शुचि । वसन जुग कंति अधिवा सिया ए ॥ (हांरे) अ० ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो यथा । करिय यहिरवाणी ढोइयै ए ॥ (हांरे) अ० ॥ पापदूहण अंग लूहणो देवनें । वस्त्रयुग पुंज मल धोइयै ए ॥ (हांरे) अ० २ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः (राग बैरामी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव दुष्य युग पूजा वन्योहै जगतगुरु । (हे हांए) आछो व न्योहै जगतगुरु । देव दुखखहर अब इतनो मांगुं । तुंहीहै सवहि हितु तुं हीहै मुगतिदाता । तिण नमि २ प्रभु जीकै चरणें लागूं ॥ दे० १ ॥ कहै साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण । देव दुष्य मिसदेहु उत्तम वागूं । श्रव ण अंजलि पुट सुगुण अमृतपीतां । सबरामी दुख संशय घुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥ एकही वस्त्र युगल चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर, चन्दन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीका, चूर्ण करी । कचोली भरी । आगै खडा रहै । मुखें इम पढै ॥ (गोमी रागमें । दूहा) ॥ पूज चतुर्थी इण परै । सुमति वधारै वास । कुमति कुगति दूरै हरै । दहै मोह द वासपास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ ❀ ॥ (हां होरे देवा) बावना चंदन घस कुमकु मा । चूरण विधि विरचै वासुए । (हां होरे देवा) कुसुम चूरण चंदन मृगमदा । कंकोल तणो अधि वासुए ॥ (हां०) २ ॥ वास दशोदिश वा सतें । पूजै जिनअंग उवंगूए ॥ (हां०) ॥ लाडि भवन अधिवासीयो । अनुगामिक सरम अभंगूए ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः (राग पुर्वी गौरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरै प्रभुजीकी पूजा आनन्द मेलै ॥ पू० ॥ बासभवन मोह्यो सबलोए । संपदा भेलै ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा । विजय देवा तत्ताथेई ॥ वि० ॥ अप्रमत्त गुण तोरा । चरण सेवै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन वासै । पूजीयै जिनराजता थेई । चतुरगति दुक्ख गोरी । चतुर्थी धनकि ॥ पू० ॥ ३ ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ एकही वासचूर्ण प्रभुजीके बिंब उपर झांटै । मंदिर मैं चूर्ण उछालै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुलाब, केतकी, पांचे तरै का फूल रकेबीमें रक्खी । मुखै इम पढै ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ मन विकसै तिम विकसतां । पुहप अनेक प्रकार । प्रभु पूजा ए पंचमी । पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग कामोद) ॥ चंपक केतकी मालती ए । (हांरे अ०) कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूइका । वउल सिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए॥ (हांरे उ०)मुकुलित कुशम अनेक । सिव रमणीसें वर वरै । विध जिन पूज बिबेक । वि० । इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (राग कानरा) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोहैरी माई बरणें । मन मोहैरी माई वरणैं । (अहो बरणें) बिविध कुशम जिन चरणें । (अ०) । विकसी हसीय जंपें साहिबकुं । राख प्रभू हम सरणें ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी (कु०) पंच विषै (हां० पं०) दुख हरणें ॥ सो० ॥ कहै साधु कीरति भगति भगवंतकी । भविक नरा । (हांरे भ०) । सुख करणें ॥ २ ॥ सो० ॥ ❀ ॥ इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पांच जातना पुष्प चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी पुष्पमाला रोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाग, पुन्नाग, दमणो, गुलाब, पारुल, मोगरा, सेवती, चंपेली, मालती (इत्यादि) पंच वरण फूलांनी माला हाथे लेई खमा रहै । (मुखै इम पढै) (दूहा) ॥ छठी पूजा ए छती । महा सुरभि पुष्पमाल । गुण गुंथी थापै गलै । जेमटलै दुख जाल ॥ १ ॥ (राग रामगिरी गुजरी)

॥ ❀ ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिका सोग पारिध कलीए (ज्ञलां पा०) ॥ २ ॥ मरुक दमणक बकुल तिलक वासंतिका । जाल गुलाल पाम्हल खिलीए । (ज्ञलां पा०) ॥ १ ॥ जासुमणि मोगरा वेनला मालती । पंचवरणै गुंथी मालतीए । (ज्ञलां गुं०) हेमाल जिनकंठ पीठे ठवी लह लहै । जाणि संताप सब पालतीए । (ज्ञलां०) ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः । (राग आसावरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतनंदै । चकोरकुं देखि जिम चंदै । (दे०) ॥ १ ॥ पंचविधि बरणरची कुशमांकी ॥ जैसी रयणाहे (जै०) बलि सुह मंदै (देखी०) ॥ २ ॥ छठीरे तोम्हर पूजा तबमार धूजै सब अरियण (हांरे स०) होइ तिम छंदै । (दे०) ॥ ३ ॥ कहै साधु की रत सकल आस्या सुख । ज्ञविक ज्ञगत (हांरे ज्ञ०) । जे जिन बंदै । (दे०) ॥ ४ ॥ इति छठी टोम्हर फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ एकही प्रभुजीके कंठे फूलमाला चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तमी अंगरचन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवरणा फूल केसरसें अंगीरचै । सो हाथे लेई । मुखै इम पढै ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ केतकी चंपक केवरा । सोज्ञै तेम सुगात । चाढो जिम चढता हुवै । सातमी यै सुख सात ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ (राग केदारो गौरी) ॥ ❀ ॥ कुंकुम चरचित बिविध पंच वरणक कुशमसुंए ॥ (हांरे अ०) कुंद गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुंए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीयै । अंग आलंक मिसमाननी सुगति आलिंगियैए ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बिधि (रागभैरवी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती । (पं०) । कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि । कर करणी सोवन जाती । (पं०) ॥ १ ॥ दमणक मरु क पाम्हल अरविंदो । अंश जुई बेनलवाती । पारधि चरण कलार मंदारो । विण पट कूल बनी ज्ञाती । (पं०) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमणि गाती । भैरवी कुगति बततिदाती । (पं०) ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥ ७ ॥ सुगंध पुषपै करी अत्यन्त भक्तीसें ज्ञगवंतके शरीरै अंगी रचै ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घनसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसें सुगंध बट्टी करि। जिनेश्वर नें आगै ले खमा रहै ॥ (दूहा) ॥ अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आठमी। गंधवटी घनसार। लावै जिनतनु नावसुं ॥२॥(राग सोरठ) ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी (देवा) । पावन घस घन सारो जी। सुरनि सिखर मृगनाभिनो जी (देवा) । चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरियो जी (देवा) । अशुन्न करम चूरी जै जी । अंगण सुरतरु मोरियो जी (देवा) । तब कुमती जन खीजै जी । (तब सुमती जनरीझै जी) ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (राग सामेरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधै (जिन० पू०) । गंधवटी घनसार उदारै। गोत्रतीर्थंकर बांधै। (नलां०२) (पू) ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस। लावै जिन तनु रागै। धारकपूर नाव घन वरषत। सामेरी मति जागै ॥ (नलां २) (पू०) ॥ इति आठमी वरासचूर्ण पूजा॥८

॥ ❀ ॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे सधव स्त्री भेली होके ऊजल थाल में । कुंकुमको साथियो करै। अक्षत थाल में धरै। श्रीफल रूपानांणो धरै । धजा थालमें धरि सधव स्त्री माथै रक्खी। गीत गान गावतां। सर्व वाजित्र बाजतां। तीन प्रदक्षिणा देवै। पीछे ध्वजा ऊपरि गुरु पासें वासक्षेप करावै । प्रभू सन्मुख गुहली करै ॥ ऊपरि अक्षतांसें साथियो करै। सुपारी चढावै। मुखै ऐसा कहै।

॥ ❀ ॥ (दूहा) मोहनध्वज धर मस्तकै। सुहव गीत समूल । दीजै तीन प्रदक्षिणा। परसिध नवमी पूज ॥ १ ॥ (रागमेघगौरी) ॥ (वस्तु) सहस जोयण २ हेममय दंड युतपताक पंचेवरण । घुमघुमंत घुग्घरीय वाजै। मृदुसमीर लहिकै गयण (ल०) । जाण कुमतिदल सयल भाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजाए (हांएवि०) नवमी पूज सुरंग। (न०) तिणपर श्रावक धजवहन। (ति०) आपै दान अभंग । (आ०) १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ (राग नट्टनारायण) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन । ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना ॥ (जि०) मोहन सुगुरु अधिवासीयो । कर पंचसबद त्रि प्रदक्षिणा ॥ (क०) सधव वधू सिर सोहना ॥ २ ॥ (जि०) नांतिवसन पंच बरण वन्योरी । विधकरी ध्वजको रोहण ॥ साधु भणति नवमीपूजा नव । पाप नीयांणा खोहणा । शिव मंदिरकुं अधिरोहणा । जन मोह्यो नट्टनारायणा (जि०) ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा० ॥ ❀ ॥ एकही ध्वजा चढाई जै ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पिरोजा, नीलम, लसणिया, मोती माणकसें जड्या । आभरण लेई मुखे इम पढे ॥ ॥ (राग केदारेमें) ॥ (दूहा) ॥ दशमी पूजा आभरण । रचना यथा अनेक । सुरपति जिम अंगे रचै । तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ शिर सोहै जिनवर तणें । रयण मुगट झलकंति । तिलक भाल अंगदभुजा । श्रवणकुंडल अति भांति ॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग अधभास धुंमछहार। आशावरी) ॥ ❀ ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया । मोती माणिक लाल रसणीया । (हीरा सोहैरे) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुभग अंक अंजना (मनमोहैरे) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जडयो । काने कुंडल (हांरे) अति झुगतै जडयो । (उरहारूरे) । (मन वारूरे) ॥ भालतिलक बांहे अंगदा । आभरण दशमी पूजा मुदा । (सुखकारूरे) । (दुखहारूरे) ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु सिरसोहै ॥ मुगटमणि रयणे जडयो । (र्य०) । अंगद बाहु तिलक भालस्थल । यहुनीको कौन घड्यो ॥ (प्र०) १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरुण मंडल जीपै । सुरतरुसें अलंकर्यो । दुखकेदार चमर सिंहासन । छत्र शिर नवर धर्यो । अलंकृत उचितवर्यो ॥ २ (प्र०) ॥ ❀ ॥ इति दशमी आभरण पूजा ॥ १० ॥ एकही आभरण (तथा) रोकनांणो रुम्बल चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फुलघर हाथे लेई । मुखै इम पढै ॥ ❀ ॥

(दूहा) ॥ ❀ ॥ फूलगरो अतिसोभतो । फूंदे लहके फूल । महके परिमल फलमहा । इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग रामगिरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका । कुंद सुचकुंद बर बिच कलूए (हां रे अईयो) तिलक दमणक दलं मोगरा परमलं । कोमला पारिध पामलूए ॥ (हां० अ०) प्रमुख कुशमै रचै त्रिजुवन कुं रुचै । कुशमगेहं विचि तोरणूं ए ॥ (हां० अ०) गुह्य चंद्रोदयं फूंबका उन्नयं । जालिका गोख चितचोरणूंए । (हां० अ०) ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बिधि ॥ (राग रामगिरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन मोह्यो माई री । फूलघर आनंद झीलै (फू०) अ सत उसत दाम वधरी मनोहर । देखत तबही सब दुरितखीलै (फू०) ॥ ॥ १ ॥ कुशम मंमप थंन गुह्य चंद्रोदय । कोरणी चारु विनाण सजै । इ ग्यारमी पूज वणीहै रामगिरी । विबुध विमान जैसें तिपुरिजजै (फू०) ॥ २ मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥ एकही फूलवर चढाईजै ।

॥ ❀ ॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवर्णफूल गुलाबजल लेई । मुखै इम पढै ॥ (राग मल्हार) ॥ (दूहा) वरषै बारमी पूजमें । कुशम वादलिया फूल । हरण ताप दुःख लोकको । जानुसमा बहुमूल ॥ १ ॥ (राग नीममल्हार) करुखानी जाति॥

॥ ❀ ॥ मेघ बरसै झरी पुष्फवादल करी । जानु परमाण कर कुशम पगरं । पंचवरणे वण्यो विकचि अनुक्रम चिण्यो । अधोवृंतै नही पीडपस रं ॥ १ ॥ मे० १ ॥ वासमहके मिलै । झमर झमरीमिलै । सरस रस रंग ति ण दुख निवारी । जिनप आगै करै सुरप जिम सुखवरै । बारमी पूज ति णपर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः (राग नीममल्हार) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुष्फ बादलीया बरसै । सुसमां (अहो०) । योजन असु चिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां (पु०) गमन आगमन की पी रनही तसु । इह जिनको अतिसय सुगुणें । गुंजत २ मधुकर इम पन्नणै ॥ गुं० ॥ मधुर वचन जिन गुण थुणइ ॥ २ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करै ।

तसुपीरु नही सुम्मणें । (पु०) । समवसरण पंचवरण अधोवृंत । बि बुध रचे सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ बारमी पूज भविक तिम करै । कुशम विकस हस ऊचरै । तसु भीमबंधन अधरा हुवै । जेकर हिं जे जिननमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति बारमी पुष्पवृष्टी पूजा ॥ एकही फूलउछालै ॥

॥ ❀ ॥ अथ तेरमी अष्ट मंगलीक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टमंगलीक लेकर मुखे इम पढै ॥ ❀ ॥ रागवसंत ॥ ❀ ॥ (दूहा) तेरमीपूजा अवसरै । मंगल अष्टविधान । युगति रचै सुमतै सही । परमानंद निधान ॥ ❀ ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ❀ ॥ अतुल विमल मिल्या । अखंमगुणे झिल्या । शालि रजत तणा तंडुलाए । श्लषण समाजक विय पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा ऊजलाए ॥ १ ॥ (अ०) ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल आखै । जिनप आगलि सुथांनक धरै ए । तेरमीपूजा विध तेरमी मन मेरै । अष्टमंगल अष्टसिद्धि करै ए ॥ (अ०) ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः (राग कल्याण) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांहो पुजावणी ते रसमें (हांहो रसमें ३) ॥ ते० ॥ अष्टमंगल लिख कुशल निधान । तेज तरुणके रसमें ॥ पू० ॥ १ ॥ दप्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ । मद्दयुग श्रीवत्स तसुमें । वर्द्धमान स्वस्तिक पूजा मंगलकी । आनंद कल्याण सुख रसमें ॥ २ ॥ (पू०) ॥ ❀ ॥
इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अष्ट मंगलीक चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ धूप रकेबीमें धर मुखै इम पढै ॥❀॥ (दूहा) ॥❀॥ गंधवटी मृगमद अगर । सेल्हारस घनसार । धरि प्रभु आगलि धूपणा । चवदमी पूजाचार ॥ १ ॥ (राग वेलाउल) ॥❀॥ कृष्णागर कपूरचूर । सोगंध पंचेपूर । कुंदरुक सेल्हारस सार । गंधवटी घनसार ॥ १ ॥ ❀ ॥ गंधवटी घनसार चंदन मृग मदारस भेलि यै । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरभि बहु द्रव्य मेलियै । वेरुलिय दंम कनक मंडित धूप धाणो कर धरै । भववृत्तिधूपकरंति भोगं रोग सोग अशुभ हरै ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (राग मालवी गौरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं । करति गंध रसालरे । (देवा क०) धाम धूमा वलिय धूसर । कलुष पातिक गालरे (देवा) ॥ १ ॥ उ र्द्धगति सूचंति भविकुं । मघमघै कर नालरे (देवा) चवदमी वामांग पूजा । दीये रयण विशालरे । आरती मंगल मालरे । मालवी गौरी तालरे (देवा० स०) ॥ इति चौदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ एकही धूप धाणो प्रभूके बायें अंग धरी खेईजै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (प्रभुजीके मुख आगै मधुर स्वरे गुण ग्राम गावै) ॥ ❀ ॥ (दूहा) कंठ भलै आलाप कर । गावो जिन गुण गीत । भावो अधिकी भावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ (श्रीरागै आर्या) यद्भदनंत केवल म नंत फलमस्ति जैन गुण गानं । गुण वर्णतान वाद्यै । मात्रा भाषा लयै र्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः । स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च । चंचुर चा री चारी । गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (श्रीराग) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन गुणगानं श्रुत अमृतं । तारमंद्रादि अनाहत तानं । केव ल जिम तिम फल अमृतं (जि०) ॥ १ ॥ बिबुध कुमार कुमरि आलापै मुरज उपांग नाद जनितं (जि०) । पाठ प्रबंध धूयो प्रतिमानं । आयति छंद सुरति सुमतं (जि०) ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं । सुरनर गावै जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं । पनरमी पूज हरै दुरितं रे । (जि०) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समान अवस्थावाली सधव स्त्रीयां (वा) कुमरयां भेली होके प्रभूके सन्मुख संका कंखा रहत नाटक करै । स्त्रीयोंका जोग नबणें (तो) समान अवस्थावाला पुरष नाटक करै । (वा) कुमर कुमरयां मिलकै नाटक करै नाटक करणेंसें केई जीव तीर्थंकर गोत्रबांधाहै । नाटक करतां सुखै इम पढै ॥ ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ कर जोगी नाटक करै । सजि सुंदर सिणगार ॥

भव नाटक ते नविभमें । सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ (राग सुद्ध नट्ट) (काव्य) भावादि प्यमणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना । सप्पिम्मा सम रूव वेसवयसो मत्तेन्न कुंजत्थणा । लावणा सगुणापि कस्सरवई रागाइ आलावणा । कुम्मारी कुमरा विजै न पुरनं नचति सिंगारणा ॥ १ ॥ (गद्यं) तएणंते अठसयं कुमारि कुमरीउ । सूरियाभेणं देवेणं संदिठा । रंग मंरुवे पविठा । जिणनमंता । गायंता । वायंता । नचंतेत्ति ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (राग नट्ट त्रिगुण) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाचंती कुम्मार कुमरी द्रागरुदि तत्ता थेइय (अ०) ॥ द्रागरु दि २ कि थौंगि २ न । मुखें तत्ता थेइय (अ० १ ना०) वेणु बीणा मुरज बाजै । सोलही सिणगार साजै । तननननन्नेईय (अइयो) ॥ घणण घण णण घुग्घरु घमकै । रणणणणेईय (अ० २ ना०) कसंती कंचूकी तरु णी । मंजरी झेंकार करणी । सोजंती कुमरीय (अइयो) हस्त कंहा वा दि भावै । ददन्ती भमरीय (अ० ना०) ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी । सूरीयाभै रावण कीनी ॥ सुगंध तत्तात्थेईय (अ०) जिमप भगतें भविक लीणा । आणंद तत्तात्थेईय (अ० ना०) ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सतरमी बाजित्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सतरमी पूजामें सब जातिका बाजित्र बजावै । मुखै इम पढै ॥ तत घन सुखिरै आनिधै । बाजित्र चौविध वाय । भगत भली भगवंतनी । सतरमी ए सुखदाय ॥ १ ॥ (गाहा) सुरमद्दल कंसालो । महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो । सुरनारि नंदितूरो । पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १ ॥ (रा ग मधुमाधवी) ॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दी । चरण कमल जंतु ज गत्रय वन्दी ॥ (तूं०) ॥ ज्ञाननिर्मल वावन मुखवेदी । तिबलवोलै रंग अति हि आनन्दी । (तूं०) ॥ १ ॥ भेरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जैन जैणावंती । जैन शाशन जइवंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परि परिय वदंती॥(तूं०) ॥ २ ॥ सेवभविक मधुमाधन फेरी । भवनी फेरी नप्पभणंती । कहै साधु स तरमी पूजा वाजित्रसब । मंगल मधुर धुनिकर कहंती (तूं०) ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवितूं नण गुण जिनके सब दिन । तेजतरण सुखराजै । (ते०) कवितशतक आठ थुणत सक्रस्तव । थुय २ रंगै हमगजै । (नवि० १) अ णहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुवि ध श्रावक की । नणीमें नगति हितकाजै (न० २) श्रीजिनचंद्रसूरि खर तरपति । धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अढार श्रावणधुरि । पंचमि दिवस समाजै (न० ३) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसायै सु विध हुइ गाजै ॥ कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुख साजै (नवि० ४) ॥ ❀ ॥ इति सतरभेदी पूजा समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरतीकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजाकियां पीछै । सब कपरा । पाघ प्रमुख पहरकै ॥ नत्तरास ण करै ॥ पीछै प्रभू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपकै निलाडे कुंकूंको ति लक करै । पीछे पट दूरि करि । रकेबीमें साथियो करे । मांहि रूपाना णो । चावल सुपारी धरे । पीछे आरती दीपकसुं संजोयनें प्रभूके सन्मुख दहिण आवर्त्तसुं । वाजित्र सब बाजतां । आरती करै । मुखै पढै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैजै आरती शांति तुह्मारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं ब लिहारी ॥ (जैजै०) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ (जैजै० २) ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंछण प्रभु चरण सुहाया ॥ (जै०) ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहै । सोलम जिन वर सुर नर मोहै ॥ (जै०) ४ ॥ मंगल आरती नोरहि कीजै । जन्म जन्म को लाहो लीजै ॥ (जै०) ॥ करजोमी सेवक गुण गावै । सो नर नारी अमरपद पावै (जै०) ५ ॥ ❀ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी बमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखियै है ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ परम मंत्र प्रणमीकरी । तासधरी नर ध्यान । अरिहंतपद पूजा क रो । निज २ सक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ (काव्य) नुप्पन्न सन्नाण महो

मयाणं । सप्पाभि हेरा सण संठियाणं । सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं । न मो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं । प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय । थया जेहना ध्यानथी सौख्य भाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ करया कर्म, दुर्मर्म चकचूर जेणें । भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें । करी पूजना भव्यभावै त्रिकालै । सदा वासि यो आतमा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीनै । दियै दे शना भव्यनें हितधरीनें । सदा आठ महा पाभिहारे समेता । सुरेसै नरेसै स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करया घातिया कर्म च्यारे अलग्गा । भवोपग्रही च्यारेउ जे विलग्गा । जगत्पंच कल्याण कै सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष गामें ॥ ५ ॥ ❀ ॥ (ढाल०) ॥ ❀ ॥ तीरथपति अरिहा नमुं । धरम धुरंधर धीरो जी । देशना अमृत बरसता । निज बीरज वडबी रो जी । (उद्वालो) । वर अखय निरमल ज्ञानभासन सर्वभाव प्रकासता । निजशुद्ध श्रद्धा आत्मभावै चरण थिरता वासता । जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज सोभता । जगजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर साहिब आगै ए देशी ॥ ❀ ॥ त्रीजै भव वर थानक तपकरि । जिनबांध्युं जिन नाम । चउसठ इंद्रै पूजित जेजिन । कीजै तास प्रणामरे ॥ ❀ ॥ (भविका) सिद्धचक्र पद वंदो । जि म चिरकालै नंदोरे (भ०) उपशम रसनो कंदो रे (भ०) रत्नत्रयीनो वृं दो रे (भ०) सेवै सुर नर इंदोरे (भ० सिद्ध० ७) (आंकणी) जेहनें होइ कल्याणक दिवसै । नरकै पिण अजुआलुं । सकल अधिक गुण अतिशय धारी । जेजिन नमी अघ टालुंरे । (भ०) जे तिहुं नाण सम्म ग्ग उप्पन्ना । भोग करम क्षीण जाणी । लेइ दिक्षा शिक्षा दिइं जगनें । ते नमीइं जिननांणीरे (भ०सि०) ९ ॥ महागोप महामाहण कहीयै । निरया मक सत्थवाह । उपमा एहवी जेहनें छाजै । तेजिन नमीइं उछाहरे (भ०सि०) ॥ १० ॥ आठ प्राती हारज जसुछाजै । पेंत्रीस गुणयुत वाणी जे प्रतिबोध करै जगजननें । तेजिन नमिइं प्राणीरे (भ०सि०) ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ अरिहंत पद ध्यातो थको । दवह गुण पर्या

यैरे । नेद नेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायैरे ॥ १२ ॥ बीर जिणे सर नपदिसैं । सांनल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुधि मिलै सब आईरे । (बी०) ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचक्राय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । यथामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल । अशुन्न करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❀ ॥ (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्काणं । समग्ग कम्मक्खय कार गाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि नय जेणवाम्या । निरावरणजे आतम रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिन्नागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्नवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ सकल कर म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रनुता मयी । आ तम संपति नूपो जी । (उलालो) जेनूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल नावै गुण अनंता आदरी । स्व स्वनाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परनणी । मुनिराज मानसर हंस सम वरु नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ समय पए संतर अणफरसी । चरम तिन्नाग विशेस । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ (न०सि०) पूरब प्रयोगनें गति परिणामै । बंधन नेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ १८ ॥ (न० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकं त । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (न० सि०) जाणें पिण न सकै कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

उपमा विण नाणी अवमांहें । ते सिद्ध दीउ उल्लास रे ॥ २० ॥ (अ०सि०) ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम । विरमी सकल उपाधि । आतम राम रमापति समरो । ते सिद्ध सहज समाधिरे ॥ २१ ॥ (अ० सि०) ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ ❀ ॥ रूपातीत स्वभाव जे । केवल दंसण नाणीरे । ते ध्याता निज आतमा । होइं सिद्ध गुण खाणीरे (वी०) ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं०॥ ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय श्री सिद्ध पदस्य कलश पूजा ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय आचारज पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) हिव आचारज पदतणी । पूजा करो विशेष । मोह तिमर दूरै हरै । सूझै भाव असेस ॥ १ ॥ ❀ ॥ सूरीण दूरी कय कुग्गहाणं । नमो नमो सूरि सम प्पहाणं । सद्देसणा दाण समायराणं । अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा । जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्य भाजा । षड्वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पालवै सावधाना ॥ २ ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकालै । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आलै । जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा । जगत्ते चिरंजीव ज्यो सुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण छत्तीसे धामो जी । चिदानंद रस स्वादता । पर भावै निकामो जी। (उल्लालो) निकाम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निरधारथी । वरज्ञान दरशण चरण वीरज साधना व्यापार थी । भवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल गुण संपतिधरा । संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आदरा ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ पांच आचार जे सूधा पालै । मारग भाषै साचो । ते आचारज नमियै नेहसुं । प्रेम करीने जाचोरे ॥ (अ० सि०) २६ वर छत्तीस गुणें करि सोहै । युग प्रधान जग बोहै । जग मोहै नरहै खिण को है । सूरि नमूं ते जोहैरे ॥ (अ०सि० २७) नित अप्रमत्त धरम उवएसै । नहीं विकथा न कषाय । जेहनें ते आचारज नमीइं । अकलुस अमल अमायरे ॥ (अ० सि० २८) जेदिइं सारण वारण चोयण । पडिचोयण वलि जननें । पटधारी गच्छथंभ आचारज । ते मान्या मुनि मनेंनेरे ॥ (अ० सि० २९) अत्थमिइं जिन सूरज केवल । वंदीजै जगदीवो । भुवन पदार

थ प्रगट नपटुते । आचारज चिरंजीवोरे (न० सि०) ३० ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ ध्याता आचारज नला । महामंत्र सुन ध्यानीरे । पंच प्रस्थानें आतमा । आचारज होइ प्राणीरे (वी०) ३१ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ❀ ॥

इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा (३) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौथी पाठक पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (दूहा) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सोभित गात्र । नव झाया पद अरचियै । अनुभव रसनो पात्र॥१॥(काव्य)सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं । नमो २ वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं । सव्वप्पणाव ज्जिय मद्दराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पिण सुरि गुणनें सुहाया । नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें । जिके सावधानें निरुद्धानिधानें ॥ २ ॥ धरै पंचनें वर्ग वर्गित गुणौघा । प्रवादि त्रिपोद्वेदनेंतुल्य सिंघा । गुणी गद्द संधारणें स्थंन्न पूता । नपाध्याय ते वंदिइं चितप्रभूता ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ❀ ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ता जी । सव्वंसोयं अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी । (नद्धालो) जेरम्या ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता सुमति सुमता श्रुतधरा । स्याद्वादवादइं तत्वसाधक आत्मपर विन्नजनकरा । नवनीरु साधन धीर शासन बहन धोरी मुनिवरा । सिद्धांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ द्वादश अंग सिझायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ विस्तार रसिकते । नमो नवझाय नद्धासरे ॥ (न०सि०) ॥ ३४ ॥ अर्थ सूत्रनें दान विन्नागै । आचारज नवझाय । नवत्रिएहे जेलहै सिवसंपद । नमीयै ते सुपसायरे (न०) ॥३५॥ मूरखशिष्य निपजायै जेप्रनु । पाहण पल्लव आणें । ते नवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सबिजाणेंरे ॥ (न०सि०) ॥ ३६ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक । आचारज पदयोग । जे नवझाय सदा ते नमतां । नावै नव नय सोगरे ॥ (न० सि०) ३७ ॥ वावना चंदन रस सम वयणें । अहित ताप सवि टालै । ते नवझाय नमी जै जेवालि । जिनशासन अजुवालेरे ॥ (न०सि०) ॥ १८ ॥ ❀ ॥

(ढाल) ॥ ❀ ॥ तपसिझायें रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव जगभ्रातारे ॥ (बी० तु०) ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति चोथे पदे श्रीपाठकजीकी कलश पूजा सं० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा लि०॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) मोक्षमारग साधन भणी । सावधान थया जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायै देह ॥ १ ॥ (काव्य) साहूण संसाहिय संयमाणं । नमो २ शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पय ठियाणं ॥ ४० ॥ करै सेवना सूरि वायग गणीनी । करुं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसुमती त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नहीं कांमभोगेषु लिप्ता ॥ ४१ ॥ बली बाह्य अभ्यं तरै ग्रंथटाली । हुइं मुक्तिनें जोग चारित्र पाली । शुभष्टांग योगै रमै चित्तवाली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सकल विषय विष वारिनें । निकामी निस्संगी जी । भव दव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी (उल्लालो) । जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा । कायस्सग्ग मुद्रा धार आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म्म जीपै नैव जींपै परभणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमो हित भणी ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जिम तरु फूलै भमरो बैसै । पीडा तसुन उपाय । लेई रस आतम संतोषें । तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ (भ० सि०) ॥४४॥ पांच इंद्रीनें जेनित जीपै । षट काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार आराधै । बंदूं दीन दयालरे (भ० सि०) ॥ ४५ ॥ अढार सहस शीलांग ना धोरी । अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी । कीजै जनम पवित्ररे (भ० सि०) ॥ ४६ ॥ नवबिध ब्रह्मगुपति जेपालै । बारह विह तपसूरा । एहवा मुनि नमीयै जो प्रगटै । पूरब पुन्य अंकूरारे (भ० सि०) ॥ ४७ ॥ सोनातणी परै परिक्षा दीसै । दिन २ चढतै वानें । संयम खपकरता मुनि नामिइं । देश काल अनुमानरे ॥ (भ० सि०) ॥ ४८ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ अप्रमत्त जेनित रहै । नवि हरखै नवि सोचैरे ।

साधु सूधा ते आतमा । स्युं सुंमै स्युं लोचैरे ॥ (बी०) ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीँ० । इति पांचमे पदै श्रीसाधुजीकी कलश पूजा ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी दर्शन पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) जिनवर भाषित सुद्धनय । तत्वतणी परतीत । ते सम्यग् दरसन सदा । आदरियै सुभ रीत ॥ १ ॥ ❀ ॥ (काव्य) जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स । नमो २ निम्मल दंसणस्स । मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स ॥ विपर्या सहो वासना रूप मिथ्या । टलै जे अनादी अछै जे कुपथ्या । जिनोक्तै हुइं सहज थी शु द्धध्यानं । कहीइं दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ ५० ॥ विना जेहथी ज्ञान मज्ञा न रूपं । चरित्रं विचित्रं भवारणय कूपं । प्रकृति सातनें उपसमइ क्षय तेह होवै । तिहां आप रूपें सदा आप जोवै ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ❀ ॥ स म्यग् दरसन गुण नमो । तत्त्व प्रतीत सरूपी जी । जसु निरधार स्वभाव छे । चेतन गुण जे अरूपी जी (चाल) जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल पर ईहा टलै । निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊछलै । बहुमान परणिति वस्तुतत्वें अहव सुरकारण पणें । निज साध्यदृष्टै सरब करणी तत्वता संपति गिणै ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म्म परिक्षा । सद्दहणा परिणाम । जेह पामी जै तेह नमी जै । सम्यग् दर्शन नामरे (भ० सि०) ५३ ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेह थी । जे हो इ त्रिविध अभंग । सम्यग्दर्शन तेह नमीजै । जिन धरमें दृढ रंग रे ॥ (भ० सि०) ५४ ॥ पांचवार उपशम लही जै । क्षय उपशमीय असंख । एकवार क्षायक ते सम्यक्त्व । दर्शन नमीइं असंख रे (भ० सि०) ५५ ॥ जेविण नाण प्रमाण न होवै । चारित्रतरु नवि फलिउ । सुख निरबाण न जे विण लहिइं । समकित दर्शन वली उरे ॥ (भ० सि०) ॥ ५६ ॥ सरु सद्ध बोलै जै अलंकरिउ । ज्ञान चारित्रनुं मूल । समकित दर्शन ते नितम णसुं । सिवपंथनुं अनुकूलरे ॥ (भ० सि०) ॥५७॥❀॥ सम संवेगादिक गुणा खय उपशम जे आवैरे । दर्शन तेहिज आतमा । स्युं होय नाम धरावैरे ॥ (बी०तुमे०) ॥५८॥ (ॐ ह्रीँ०) ॥❀॥ इति छठै दर्शनपद कलश पूजा॥६॥

॥ ❀ ॥ अथ ७ में श्री ज्ञानपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मां हि । आराधी जै सुभमनें । दिन २ अधिक उछाह ॥ १ ॥ (काव्य) अ न्नाण सम्मोह तमो हरस्स । नमो २ नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥ होइं जेहथी ज्ञानशुद्ध प्र बोधै । यथा वर्ण नासै विचित्रा विबोधै । तिणें जाणीइं वस्तु षद्द्रव्य भा वा । न होवै विकल्पा निजेछा स्वभावा ॥ २९ ॥ होइं पंचमत्यादि सुग्यान भेदै । गुरुपासथी योग्यता तेह वेदइं । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपै । लहै चित्तमां जेमध्यान प्रदीपै ॥ ६० ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकाशक भावै जी । परयाय धरम अनंतता । भेदा भेद स्वभावै जी ॥ (चाल) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध वास विलासता । मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्या द्वाद शंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु स कल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ भक्ष अभक्षन जे वि ण लहीयै । पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञानते सकल आधाररे ॥ (भ०) ॥ ६२ ॥ प्रथम ज्ञाननें पछे अहिंसा । श्रीसि द्धांते भाष्युं । ज्ञाननें बंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयै शिवसुख चाख्युं रे ॥ (भ० सि०) ॥ ६३ ॥ सकल कियानुं मूलते श्रद्धा । तेहनुं मूलजे कही इं । तेह ज्ञान नित नित वंदीजै । ते विण कहो किम रहीइंरे ॥ (भ० ६४) ॥ पांच ज्ञान मांहें जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दीपकपरै त्रिभुवन उपगारी । वलि जिम रवि शशि मेहरे ॥ (भ० सि०) ॥ ६५ ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् जोतिष । वैमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्र गट सवि जेहथी । तेज्ञानें मुझ शुद्धीरे ॥ (भ० सि०) ॥ ६६ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म छै । क्षय उपशम तसु थायैरे । तो होइ ए हीज आतमा । ज्ञान अबोधता जाइंरे ॥ (वी० तु०) ॥ ६७ ॥ (ॐ ह्रीँ परं०) ॥ ❀ ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) अष्टमपद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद । पूजत अ नुभव रस मिलै । पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ ❀ ॥ आराहिया खंखिअ स कियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स । सज्झावणा संग विवढ्ढियस्स । नि व्वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ वली ज्ञान फल ते धरीयै सुरंगै । निरासंसता द्वाररोध प्रसं गै । भवां बोध संतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ६८ ॥ होइं जास महिमा थकी रंक राजा । वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै । थई सिद्धते कर्मनें पार जायै ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो । तत्व रमण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी । (चाल) । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व थिरता दममयी । सुचि पर म खंती मुनि दसेपद पंच संबर उपचयी । सामायिकादिक भेद धरमें यथा ख्यातै पूर्णता । अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूरणता ॥ ७० ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ देशविरतिनें सर्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजै तास प्रणाम रे । (भ० सि०) ॥ ७१ ॥ तृणपरै जेषद्दखंम सुखउंमी । चक्रवर्त्ति पिण वरिउ । ते चारित्र अख य सुख कारण । ते मैं मन मांहि धरिउरे (भ० सि०) ॥ ७२ ॥ हुआ रांक पणें जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण चरण ते वंदुं । वरिउ ज्ञा न आनंदरे (भ० सि०) ॥ ७३ ॥ बारमास परजाइं जेहनें । अनुत्तर सुख अतिक्रमिइं । शुक्ल सुकल अभिजात्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइं रे (भ० सि०) ७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह । चारित्र नाम निरुक्ते भाष्युं । तेवंदुं गुण गेहरे (भ० सि०) ७५ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वभाव मांहि रमतो रे । लेश्या शुद्ध अलंकर्यो । मोहवनें नवि भमतो रे । (वी० तुमे०) ७६ ॥ ॐह्रीं प० ॥ ❀ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै ९ मी तप पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) करमकाष्ट प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते

तप पद पूजो सदा । निरमल धरियै ध्यान ॥ १ ॥ कम्मदुमोन्मूल न कुंज रस्स । नमो २ तिव्व तवोयरस्स । अणेग लद्धीण निबंधणस्स । दुस्सझ अ त्थाणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धिं लद्धि विज्जा समिद्धं । पयम्मि य सर वग्गं क्लींतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि पीढावयारं । तिज य विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टा ले । निकाचित पणें बांधिया तेहवालै । कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यंतर दु भेदै । क्षमा युक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदै ॥ ७८ ॥ होइं जास महिमाथकी लब्ध सिद्धि । अवांछक पणें कर्म्म आवरण शुद्धिः । तपो तेह तपजे महानंद हेतें । होइं सिद्धि सीमंतनी निज संकेतें ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै । नव भव शिव जावै देव नर भवज पा वै । ज्ञान विमल गुण गावै सिद्ध चक्र प्रभावै । सब दुरति समावे विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इच्छा रोधन तप नमो । बा ह्य अभ्यंतर भेदै जी । आतम सत्ता एकता । पर परणित छेदैजी ॥ १ ॥ (छंदालो) छेद कर्म्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ । सुभयोग संग आहार टाली भाव अक्रियता करै । अंतर मुहुरत तत्व साधै सर्व संवरता करी । निज आत्मसत्ता प्रगट भावैं करो तप गुण आदरी ॥ ८२ ॥ ॥ ❀ ॥ (ढाल) इम नव पद गुणमंडलं । चउनिक्षेप प्रमाणैं जी । सात न यें जे आदरै । सम्यग् ज्ञानें जाणैं जी । (चाल) निरधार सेती गुणें गुण णो करइ जे बहुमानए । जसुकरण ईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए । इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुण पुरंदर सिद्ध चक्र पदावली । सविलद्धि विज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली । नवझाय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता । गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥ ८४ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत । ते भव मुगति जिणंद । जेह आदरै करम खपेवा । ते तप सुरतरु कंदरे ॥ (भ० सि०) ॥ ८५ ॥ करम निकाचित पणि क्षय जाइं । । क्षमा सहित जेकरतां । ते तप नमीइं तेह दीपावै । जिन शासन

ऊजमंतां रे ॥ (ऋ सि०) ॥ ८६ ॥ आमो सही पमुहा बहुलद्धी । होवै जास प्रजावै । अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटै । नमीयै ते तप जावैरे ॥ (ऋ० सि०) ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नरवर । संपति जेहनुं फूल । ते तप सुर तरु सरिषो वंडुं । शम मकरंद अमूलरे ॥ (ऋ० सि०) ॥ ॥ ८८ ॥ सर्व मंगल मांहि पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथ । ते तप पद त्रिकरण नित नमिइं । वर सहाय शिवपंथरे ॥ ऋ०सि०) ॥ ८९ ॥ इम नव पद थुणतो तिहां लीणो । हुउ तनमय श्री पाल । सुजस विलास ढै चोथे खंमे । एह इग्यारमी ढालरे ॥ (ऋ०सि) ॥ ९० ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इछा रोधन संवरी । परणित समता योगै रे । तप ते एहिज आतमा । वरतै निज गुण जोगै रे ॥ (बी०) ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो । जाव ते जांणो साचोरे । आतम जावै थिरहुउ । परजावे मत राचोरे ॥ (बी०) ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी । घट मांहि रुद्धि दाखीरे । तिम नव पद रुद्धि जाणज्यो । आतमराम ढै साखीरे ॥ (बी०) ॥ ८३ ॥ योग असंख्य ढै जिन कह्या । नवपद मुख्यते जाणोरे । एह तणें अविलंबने । आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ (बी०) ॥ ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी । चोथे खंमै पूरीरे । वाणी वाचक जस तणी । कोईनय रहीय अधूरीरे ॥ (बी०) ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञान शक्तिये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वासं । पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं । यजामहे ॥❀॥ इति श्री देवचंदजी, जस विजयजी महोपाध्याय कृत सिद्धचक्र महात्म, श्री नवपद पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो लि०॥❀॥

॥ ❀ ॥ (पंचामृत) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुद्धजल ॥ केसर । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तूरी । अंबर । रोली । मोली । बूटा फूल । फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप । चावल प्रमुख (नव) जातके धान । (नव) प्रकारके नैवेद्य । (नव) प्रकारके फल (नव) प्रकारके पक्कवस्तु । मिश्री । पतासा । ऊला । विदाम । सुपारी । प्रमुख । अंगलूहणा

खातर सपेद वस्त्र । पहरावणी खातर उत्तम रेसमी प्रमुख वस्त्र । बासक्षेप । गुलाबजल । अत्तर । इत्यादिक । और (नव) नालीके कलस (९) रकेबी । परात । तसला आरती । मंगलदीप । भगवानके अंगी । समोसरण । इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रक्खे । इससें । पूजामें । विघ्न न । होय । (इहां) संक्षेपविधि कही । विसेषविधि गुरूके मुखसें जाण लेणा॥

॥ ❀ ॥ अथ सबके जाणनेंकों । नवपदजीके पूजा करणेंकी कलस ढालणेंकी बिधि कहते है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ चैत्र सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन । श्रात्रिया नव करै । पंचामृत मोटै घरै प्रमुखमें करे । थापना में श्रीफल रोक नाणो धरै । पीछे गुरुके पास मंत्रायकै । केसरसें तिलक करै । कांकणडोरा हाथमें बांधै । दहणें हाथमें साथियो करिके । बिधि संयुक्त स्नात्र पढावे । पीछे श्री अरिहंत पदमें चावल (तथा) चंदन । पुष्प । धूप । दीप । नैवेद्य(प्रमुख) अष्टद्रव्य । वासक्षेप । नागरवेल पांन । रकेबीमें धरके । हाथमे रक्खे । नव कलशके मोली बांधै । कुंकुमका साथिया करै । पंचामृतसें भरिके कलश हाथ में लेके पूजा पढै । संपूर्ण होणें सें कलश ढाले । बरी परातमें प्रतिमा जी पधरावै । ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं । इस माफक कहतो थको । अरिहंत पदकी पूजा करै । अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावै ॥ इति प्रथम पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ १ ॥ (दूसरे) सिद्धपद रक्तवर्ण । गहूं रकेबीमें धरै । श्रीफल (तथा) अष्टद्रव्य लेकर । (९ कलश) पंचामृतसें भरिके पूजा पढे । (पूर्ण होणें सें) ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं कही । (कलश ढालै) । अष्ट द्रव्य चढावै ॥ इति द्रितीय पूजा बिधि २ ॥ ❀ ॥ (तीसरै) श्री आचार्यपद । पीलेवर्ण । चिणाकी दालि । अष्टद्रव्य । श्रीफल प्रमुख लेके । कलश (९) पंचामृत सें भरिके पूजा पढे । पूर्ण होणेसें । ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं (कही) । कलश ढाले । द्रव्य चढावै ॥ ❀ ॥ इति तृतीय पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (चौथे श्री उपाध्याय पद । नीले वर्ण । मूंग प्रमुख अष्ट द्रव्य लेके पूर्वोक्त विधि सें पूजा करै । संपूर्ण होणेंसें ॥ ॐ ह्रीँ णमो उवझायाणं (कही) कलश ढालै । अष्ट द्रव्य चढावै ॥ इति चोथी पूजा बिधि ॥ ४ ॥ ❀ ॥ (पांचमें)

श्री सर्व साधुपद। स्यामवर्ण उमद प्रमुख लेवै। और पूर्वोक्त विधिः। (पूर्ण हो नेसें) ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इति पंचमी ५ ॥❀॥ (छठे) दर्शनपद स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें। ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स ॥ इति छठी पूजा विधि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (सातमें) श्री ज्ञान पद। स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वो०। ॐ ह्रीं णमो नाणस्स ॥ ❀ ॥ इति सातमी० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (आठमें) चारित्रपद। स्वेतवर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः। ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स ॥ इति आठमी पूजा विधि ॥ ८ ॥ ❀ ॥(नवमें)तपपद। स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधसें। ॐ ह्रीं णमो तवस्स (कही) कलश ढाले । अष्टद्रव्य चढावे। पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करे। आरती करै ॥ ❀ ॥

इति नवपदजीकी पूजा विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वासक्षेप पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीरथपति अरिहानमूं। धरम धुरंधर धीरोजी। देशना अमृत वरसता । निज बीरज बरु वीरोजी ॥ १ ॥ (चाल) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता। निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावै चरण थि रता वासता। जिन नाम कर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता । ज गजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० ॥ वासं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति अरि० वासक्षेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सकल कर्म मलक्षय करी। पूरण शुद्ध स्वरूपो जी। अव्याबाध प्रभुता मई। आतम संपति भूपोजी । (चाल) जे भू प आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी। स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावें गुण अनंता आदरी। स्वस्वभाव गुण पर्याय परिणत सिद्ध साधन परभ णी। मुनिराज मानसर हंस सम वरु नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ आचारज मुनिपति गणी। गुण छत्तीसे धामो जी। चिदानन्द रस स्वादता। परभावै निकामो जी ॥ ३ ॥ निकाम निर मल शुद्ध चिदघन साध्य निज निर धारथी। वरज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापारथी। भविजीव बोधक तत्वसोधक सयल गुण संपतिधरा।

संबर समाधी गत उपाधी त्रिविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ❀ ॥
इति आचार्य पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । स च्चं सोय अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ (चाल) जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादें तत्वसाधक आ त्मपर विज्ञजन करा । भव भीरु साधन धीर सासन वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॐ० ॥
इति उपाध्याय पद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल)॥❀॥ सकल विषय विषवारिनें । निष्कामी निस्संगीजी। भवपद ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ (चाल) ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा । कायसग्ग मुद्राधारि आसण ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै पर भणी । मुनि राज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमुं हितभणी ॥ ५ ॥ ॐ० ॥ ❀ ॥
इति साधु पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्व प्रतीत सरूपीजी । जसु निरधार सुभाव छे । चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ (चाल) जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा टलै । निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊछलै । बहुमान परणित वस्तु तत्वें अहव तसु कारण पणें । निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपतिगिणें ॥ ६ ॥ ॐ० ॥
इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकासक भावें जी । पर्याय धर्म अनन्तता । भेदाभेद स्वभावें जी ॥ १ ॥ (चाल) जे मो क्ष परणित सकल ग्यायक बोध भावें सजहणा । मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वादशंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ❀ ॥
इति ज्ञान पूजाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ चारित्रगुण वलि वलि नमुं । तत्व रमण जसु

मूलो जी। पर रमणीय पणो पणो टलै। सकल सिद्धि अनुकूलो जी॥ १॥ प्रतिकूल आश्रव त्यागसंवर तत्व थिरता दममई। सुचि परम खंती मुनि दसे पद पंच संवर उपचई। सामायकादिक भेदधरमें यथाख्याते पूर्णता। अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूर्णिता॥ ॐ ह्रीं० ॥ ८॥ इति चारित्र पूजाः॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इच्छारोधन तप नमुं। बाह्य अभ्यन्तर भेदं जी। आतमसत्ता एकता। पर परणित उछेदं जी॥ १॥ उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरै। सुभ जोग संग आहार टाली भाव अक्रियता करै। अन्तर मुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी। निज आतम सत्ता प्रगट भावें करो तपगुण आदरी॥ ९॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इम नवपद गुणमंगलं। चौनिक्षेप प्रमाणें जी। सातनयें जे आदरै। सम्यग् ज्ञानें जाणो जी॥ १॥ (चाल) निरधार सेती गुणें गुणनो करै जे बहुमान ए। जसुकरण ईहा तत्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए। इम सुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरै। अक्षय अनन्त महन्त चिदघन परम आनंदता वरै॥ १०॥ (कलश) इम सयल सुखकर गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली। सविलद्धि विद्या सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली। उवझाय वर श्री राजसारह ग्यान धरम सुराजता। गुरु दीपचंद सु चरण सेवक देवचंद्र सुसोभिता॥ ११॥ ॐ ह्रीं० ॥ ❀ ॥ इति श्रीनवपद वासक्षेप पूजा संपूर्णम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंडल पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ प्रणमी श्रीपारस विमल। चरणकमल सुखदाय। ऋषिमंडल पूजन रचुं। वर विधियुत चितलाय॥ १॥ नंदीश्वर मंदरगिरै। शाश्वताजिन महाराज। अरचै अष्टविध पूजसें। जैसें सहु सुरराज॥ २॥ तिम चित जिनपति गुणधरी। श्रावक समकित धार। विरचै जिन चौवीसकी। अष्टविध पूजउदार॥ ३॥ ❀ ॥ (गाथा) ॥ ❀ ॥ सलिल १ सुचंदन २ कुसुममरं। दीवगकरणंच ४ धूवदाणंच ५। बरअक्षत ६ नेविज्जयं ७। सुभफल ८ पूजाय अठविहा॥ १॥ ए अष्टविध

पूजा करणं । सुणियें सूत्रमझार । जे भवि विरचै प्रभूतणी । ते पामें भव पार ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । जोगीश्वर नरराय । प्रथम भए युग आदिमें । सकल जीव सुखदाय ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग देशाख) ॥ ❀ ॥ (पूर्वमुख सावनं करि दशन पावनं । इस चालमें) ॥ ❀ ॥ विमलगिरि उदयगिरि राज सिखरो परै । तरुण तर तेज दीपत दिणिंदा । युगल भ्रम वारकरी धरम उद्योत किय । विमल इक्ष्वाकुकुल जलधि चन्दा ॥ (१) मात मरुदेवी वर उदर दरि हरि वरा । सकलनृप मुगुटमणि नाभिनन्दा । अखिल जगनायका मुगति सुखदायका । विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥ (२) वृषभ लांछनधरा सकल भवभय हरा । अमर वरगीत गुणकुसल कन्दा । गहिरसंसार सागर तरणि शम धरा । नमत शिवचन्द प्रभुचरण वंदा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (काव्यम्) ॥ ❀ ॥ सलिल (१) चन्दन (२) पुष्प (३) फलव्रजैः (४) । सुविमलाक्षत (५) दीप (६) सुधूपकैः (७) । विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै (८) । र्जिन ममीभिरहं वसुभिर्य्य जे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने ऽनंतानंत ज्ञान शक्तये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् ऋषभ जिनेंद्राय । जलं । चन्दनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति श्रीप्रथम जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२)श्रीअजितजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥) दोधक) जय जिणंद दिणंद सम । लखि भविकज विकसात । परमानंद सुकंदजल । विजया मात सुजात ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग) आयरहो दिलवागमें । प्यारेजिनजी । (इस ख्यालके चालमें) ॥ ❀ ॥ एक अरज अवधारियै । (अजितजिन) एक अरज अवधारियै ॥ (आं०) अजित जिनेसर जग अलवेसर । कूरम निजर निहारियै । (अजितजिन एक०) तारण तरण विरुद सुणितेरो । आयो सरण तिहारियै ।) अजित जिन एक०) ॥ १ ॥ चरमसिंधु भव भय जल निपतित । चरण पतित मोहि तारियै । (अजित० एक०) । परमानन्द घन शिव वनिता नन । कज मधुपा

न सुकारियै । (अजित० एक०) ॥ २ ॥ चिरसंचित घन दुरित तिमिर हर । तुम जिनभये तिमिरारियै । (अजित०) कहै शिवचंद्र अजित प्रभु मेरे । एह अरज न विसारियै । (अजित०) ३ ॥ (काव्यं) सलिल चं० ॥ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं० श्री मदजित जिनेंद्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥ ❀ ॥ इति श्री अजित जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (३) श्रीसंभवजिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ जय जितारि संभव सदा । श्रीसंभव जिन राज । सकल लोक जिण जीतलीय । जीतो मोह समाज ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग) गंधवटी घनसार केसर मृगमदारस भेलीयै (ए चाल) ॥ ❀ ॥ अपरिमित वर शिखर सागर धार संभवकार ए । जिनराज संभव पाय वं दो लहो भवजल पार ए । वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंभ भंजन जानियें । तसु जनक नाम समान नामा भये जिनवर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो । मिलकरि सुरा सुर खचर व्यंतर भमर नितचित भमह्या ॥ जसु चरणकमलै प्लवगलांछन कनक सुवर ण कायए । सहु भुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणी जगबखाणी तीस शर (३५) गुणधारिणी ॥ संसार सागर भय भराभर पतित पारउतारिणी । स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा कुम ति मद तरु दारिणी । प्रभुवाणी नित शिवचंद्र गणिकै हुवो मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ (काव्यं) ❀ ॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमत्संभव जिनेंद्राय वसुद्रव्यंय० ॥ ❀ ॥ इति तृतीय श्री संभव जिन पूजा ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४) श्रीअभिनंदन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो भवि चितला य । भगति युगति संकट हरण । करण तीन सुध थाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग सोरठी ।) कुंद किरण शशि झुजलोरे देवा० । (ए चाल) ॥ ❀ ॥ संवर नंदन जिनवरू रे (वाल्हा) अभिनंदन हित कामीरे । जग दभिनंदन जय करूरे । (वा०) दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रका सतारे (वा०) । करता अविचल धामीरे । अव्याबाध अरूपिता रे ।

(वा०) । विमल चिदानंद रामीरे ॥ २॥ वांछित पूरण सुरमणी रे (वा०) ए प्रभु अंतर जामीरे । ऐसे जिन महाराजकुंरे । (वा०) चंद्र नमें सिर नामीरे ३ । (काव्यं) ४ ॥ ❀ ॥ सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमद जि नंदनजिनें० । वसु०॥❀॥इति श्रीचतुर्थाभिनंदन जिनेंद्रस्याष्टविध पूजा ४॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) श्रीसुमति जिन पूजा लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ पंचम जिन नायक नमुंपंचमि गति दातार। पंचनाण वर विमल कज । वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग कै रवो) वंसी तेरी वैरिणि वाजैरे । बैरिणि बाजै (ए चाल (॥❀॥ सुध भाव चित्त थिर धरिकैरे । (चित्त०) पूजो सुमति जिणिंद । (सुधभाव०) जिन भक्ति करण रसीला । लहो परम आनंद ॥ १ ॥ (सुधभाव०) जिनराज सुमति समंद । करै कुमति निकंद । (सुध०) प्रभुना चरण अरविंदा । वंदै असुर सुरिंद (सुध०) ॥ २ ॥ कनकाभ तनु द्युतिसोहै । प्रभु सुमंग ला नंद (सुध०) करुणो पशम रस भरिया । वंदै नित शिवचंद । (सुध०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिलचं० ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुमति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० इति श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) श्री पद्मप्रभु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ हिवे षष्टम जिनवर तणी पूजन करहु उदार । भवि चित भक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग सारंग) हांहों० । भावना चंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) । (हां हो रे वाला) पदमप्रभु मुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०) हरि सुर असुर चकोरभा । नित निरख रह्या ललचायरे॥ १ ॥ (हां०) जिन मुख वचन अमृत तणो । जे श्रवण करै भविपानए (हां०) । ते अजरा मरता लहै । हरिगण करे जसु गुण गानए (हां०) ॥ २ ॥ धर नृप कुल नभ दिन मणि । प्रभु मात सुसीमा नंदए (हां०) । प्रभु दरसणतें प्रतिदिनें हुइ ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ० । श्रीपद्म प्रभु जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री पद्मप्रभु जिन पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ❀ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूरण काज । जो भवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥ (राग कल्याण) मेरा दिल लग्या जिने सरसें (ए चाल) ॥ ❀ ॥ मेरी लगी लगन जिन वरसें (मेरी०) जैसे चंद्र चकोर भमरकी । केतकि कमल मधुरसें (मेरी०) । एह सुपारस प्रभु भए पारस । गुण गण समरण फरसै (मेरी०) चेतन लोहपणो परिहरकै । हुयल्यै कांचन सरिसै ॥ १ ॥ (मेरी०) ए प्रभु करुणा करकुं धरिज्यै । भर जिम कमल भमरसै (मेरी०) जे भवि जिनपद लगन धरै तसु । नही भय मरन असुरसै (मेरी०) ॥ २ ॥ मात पृथवि तनु जात तनु द्युति । सम शुभ कांचन सरसै (मेरी०) कहै सिवचंद्र चित्त नित मेरो । रहो प्रभुपद लय भरसै ॥ ३ ॥ (मेरी०) (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुपार्श्वजिनेंद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ❀ ॥ इति श्रीसुपार्श्वजिन पूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (८) श्रीचन्द्रप्रभु पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ अष्टम जिनपद पूजिये । विविध कष्ट हरतार । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग गुंरु मिश्रित मल्हार) ॥ मेघ बरसै भरी कुसुम वादल करी । (ए चाल) परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता । चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला । कलित सोभित सदा जिन महन्ता ॥ १ ॥ (परमपद०) । कुमतिमत तिमिर भर हरीय पुन भूरि भवि । कुमुद सुख करीय गुण रयण दरिया । गहिर भवसिंधु तारण तरणि गुण । धारि भव तारि जिनराज तरिया । (परमप०) ॥ २ ॥ राखियै आज मोहि लाज जिनराज प्रभु । करण सुख चरण जिन सरण परीया । परम शिव चंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित करण ततपर भरीया ॥ ३ ॥ (पर०) (काव्यं) सलि० । ॐ ह्रीं० श्रीमच्चन्द्रप्रभु जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री चंद्रप्रभु पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (९) श्रीसुविध जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ सुविध २ समरण थकी । कामित फल प्रक टाय । अतिह गहन संसार वनि । वहुल अटन मिट जाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग (चंपक केतक मालती (एचाल (॥ ❀ ॥ सुविध चरणकज वंदीयै ए । (अइयोवं०) नंदीयै अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विघन कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो । (हांए सफ०) दीठो प्रभुदीदार । तनु मन दृग विकसित भये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । (हां० अइ० व०) भवि नर क्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु लगीयो । शिवफलनो दातार ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । श्रीमत्सुविधि जिनें वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीसुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१०) श्रीशीतल जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) मुझ तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल जिनराय । तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति पुलाय ॥ १ ॥ (राग वाटो । दादा कुसल सुरिंद० इस चालमें) ॥ ❀ ॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लो क प्रतिपाल । (आ०) सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज । (मेरे दी०) न नमुं सहु सविकारी देव । करिसुं चरणक मलनी सेव । (मेरे०) ॥ १ ॥ जैसें सुरमणि करतल पाय । कुणल्यै काच शकल जलसाय । (मेरे०) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर २ जग निरख्यो जोय (मेरे०) ॥ २ ॥ प्रभु दरसण जलधर घनघोर । लखिय नि रतकरे भविजन मोर (मेरे०) । पद शिव चंद्र विमल भरतार । अरज एह धरियै सार (मेरे०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीं० श्रीमद्धी तल जिनेंद्राय वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनेंद्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (११) श्रीश्रेयांस जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्रपद । नद स्तुति सलिला धार । जे नेत्रे मज्जन करे । ते सुचि हुइ विधुतार ॥ १ ॥ (राग) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि (इस चालमे) ॥ ❀ ॥ श्री श्रेयांस जिणेसर जग गुरु । इंद्रिय सदन सनंदहे । जसु वसु विध पूजनसें अरचो । भर धरि पर

मानंदहे । ए समकित धर श्रावक करणी । हरिणी नव मनरंग हे । विजयदेव जिन प्रतिमा पूजी । जीवाभिगम नवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरियाभ प्रभुपूजन करियो । राय पसेणी उपांगहे । ग्याता अंगे द्रुपदि श्राविका । पूज्या जिन प्रतिबिंबहे । काल लगै नमसी नव वनमें । मन्दमती नयभ्रांत हे ॥ (श्री०) ॥ २ ॥ विष्णुमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर हंस हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिरो वरि प्रभु अवतंस हे इम सुखवरनी परि श्रावक जे । पूजै जिन नवरंग हे । ते शिव चंद्र परमपद लहिस्यै । निश्चय करी नवभंग हे (श्री) ॥ ३ ॥❀॥ (काव्यं०) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० श्री श्रेयांस जिनेंद्राय ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१२) वासुपूज्य जिन पूजा लि० ॥ ❀

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ हिवबारम जिनवर तणी । पूजन करियै सार । भाव भक्तियुत भवि सदा । द्रव्यभक्ति चितधार ॥ १ ॥ (राग) सब अरति मथनमुदार धूपं (एचाल) ॥ ❀ ॥ सकल जगजन करत बंदन । जय नंदन सामिरे (देवा) दुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे (देवा) ॥ १ ॥ (सकल०) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । बिपिन नंदन जातरे (देवा) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन । नन्द मदकिय घातरे (देवा) ॥ २ ॥ (स०) वासु पूज्य जिणेंद्र पूजो । सकल जन महाराज रे । (देवा) करत नुति शिव चंद्र प्रभुए । निखिल सुर सिरताज रे । देवा । (सक०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमद्वासु पूज्य जिनेंद्राय वसु द्रव्यं ॥ ❀ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१३) श्री विमल जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ विमल २ जिन कर मुझै । मलिन करम करि दूर । तेरम प्रभु रमियै सदा । मुझउर मझि गुणपूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग) सिद्धचक्र पद वंदोरे भविका । ए चाल) ॥ ❀ ॥ विमल चरण कज बंदोरे । (सूरीजन) विम० (वंदनसें आनन्दोरे । (सू०वि०) जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर । सेवत पद अरविंदो । श्यामा उदर सुगति सुगता फल । कृत वरमा नृप वंदोरे (सूरी०) ॥ १ ॥ सहु जग मंगल विमल करणकूं ।

निज शासन नभचंदो। उदय भयो भवि कमुद विकसिवा। वर गुण रयण समंदोरे (सूरी०) ॥ २ ॥ यदि भव बंदि हरण भवि चाहो। प्रभुवंदी चिरनंदो। विमल चिदानंद वनमयरूपी। नित वंदत शिवचंदो रे (सूरी० ॥३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं० । श्रीमत् विमलजिनें० ॥ ❀ ॥ इति श्रीविमल जिनपूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ हिव चवदम जिनपूजतां। हरियै विषय विकार। भो भवियण सुणियै सदा। ए प्रभु सरणाधार ॥ १ ॥ पंचवरणी अंगीरची० (ए चाल) ॥ ❀ ॥ पूजकरणी प्रभुनी दुरित निवारी। (दुरि) (आं०) अनन्त तरणी हिमकिरण तरुणतर। किरण निकर जीताहे भारी । अनन्त नाणवर दरसण तेजै । प्रभुसु यशोदरहै अवतारी (पूज०)॥ १ ॥ लोका लोक अनंत द्रव्यगुण । पर्याय प्रगट करण हारी । तातै अन्वययुत जिन धरियो। अनंत नाम अति मनुहारी (पूज०) ॥ २ ॥ सिंहसेन नृप नन्दन वंदन। करत इंद्र चंद्र सुखकारी । सादि अनंत भंग थिति धरियो। पद शिव चंद्र विजयधारी (पूज०)॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० श्रीमच्चतुर्दश अनंत जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री अनंत जिनपूजा ॥१४॥

॥ ❀ ॥ अथ (१५) श्रीधर्मजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ भानु भूप कुल भानु कर। पनरम जिन सुर सार। सोभित सहुजग विपिन जन। हरख फलद जलधार ॥ १ ॥ (राग) धार समीरे यमुना तीरे। वसती वने वनमाली (ए चाल)॥❀ ॥ धर्म जिणे सर धरम धुरंधर। जगबंधव जगबाला। (में बारी जाउं। जग० धरम०)। सुव्रता नंदन पाप निकंदन। प्रभुजये दीन दयाला (मेंबा०। धर्म०) ॥ १॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि। लाजि लीनो अचला धारा। (मैंबा०) जिन गंभीरता चमरसिंधु लखि। किय लोकांत विहारा । (में०। धर्म) ॥ २ ॥ एजिनचंद्र चरण अरचनतें। लहि जिनपति अवतारा। (मेंवा०)। करम वैरि दलकरि भवि लहिस्यो। पद शिव चंद्र उदारा। (मेंवा० धर्म०)

॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं । श्रीप० श्रीमत धर्म जिनें० वसुद्र व्यं० ॥ ❀ ॥ इति श्री धर्मजिन पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१६) श्री शान्तिजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) अचिरा नयरे अवतरी । शांति करी सुखकार । मारि विकार मिटाय करि । नाम धरयो शांति सार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग विन्नास) नाव धरि धन्य दिन आज सफलो गिणुं (ए चाल) ॥ ❀ ॥ शांति जिन चंद्र निज चरणकज शरणगत । तरणि गुणधारि नववारि तारी । कुमत ज न विपिन जनि कुमति घन वृतनि तति । छितिनि शितधार तरवारि वारी ॥ (शांति०) ॥ एक नव पद नजय चक्रधर तीर्थंकर । धारिया वारिया विघन सारा । सकल मदमारिया विमल गुण धारिया । सारिया नक्ति बांछित अपारा ॥ (शांति०) हरिण लांछन धरा वरण सुवरण करा । सुखरा हितधरा गतवि कारा । मोहनट धरणिधर गण हरण वज्रधर । कुमुद शिव चंद्र पद रजनि कारा ॥ (शां०) ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमत् षोमशम शांति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० ॥ ❀ ॥ इति शांति जिन पूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१७) श्रीकुंथुजिनपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) सतरम जिनवर दीवसम । मजि नव सागर जाण । नक्ति युक्ति नित पूजियै । लहीयै अमल विनाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग) अरिहंतपद नित ध्याइयै (एचाल) ॥❀॥ कुंथुजिणंद गुणगाइयै । (वारि) मनबंछित फल पाइयै रे । प्रनु समरण लय लाइयै । (वा०) नवि नवत जि शिवजाइयैरे (कुंथु०) ॥ १ ॥ नवजल गत निज आतमा । (वा०) करुणा नर धरि ताइयै रे । चरण करण उपयोगिता । (वा०) ग्रहण करणकुं धाइयै रे । (वा० कुं०) ॥ २ ॥ ए प्रनु दरसण जीवनें । (वारि) अ नुनव रसनो दाइयै रे । वर शिवचन्द्र विमल वधै । दिन २ सोल सवाइयै रे । (कुं०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिलचं० । ॐ ह्रीं श्रीप० । श्रीकुंथु जिनें० । वसु० ॥ ❀ ॥ इति कुंथुजिन पूजा ॥ १४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१८) श्रीअरनाथ पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ जिनअढारमोध्याइयै । नवियण चित्तमझार

करण तीन इक करमुदा। प्रतिदिन जय जय कार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग वसंत) संग लागोही आवै। कुणखेलै तोसुं होरी रे। संग० (ए चाल) ॥ ❀ ॥ निज बिमल भक्तिसें। अरजिनसें नितरमियै रे। (निजबि०)। जिनगुण निजगुण तुल्य करणकुं। चंचल चित हय दमियै रे। (नि०) ॥ १ ॥ सुमति युवति संयम नर धरिकै। कुमति नारि संग गमियै रे ॥ (निज०) ॥ अनुभव अमृत पान करण तैं। विषय विकृत विष दमियै रे। (निज० अर०) ॥ २ ॥ जिनवर संग रमण दवअनलै। पंक सघन वन धमियै रे। कहै शिवचंद्र जिनेंद्र रमणसें। भव रनमें नही भमियै रे ॥ ३ ॥ (निज०) (काव्यं) सलिल चं० ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं०। श्रीमदष्टादश अरजिनें०। वसु० ॥ ❀ ॥ इति अरजिनपूजा ॥ १८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१९) श्रीमल्लिजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ नगुणीसम जिन चरणकज। भमर होय जयलाय। सेवै तसु भवि भमरता। अगणित तुरित विलाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग) मल्लिजिणंद नपगारी रे वाला। मल्लिजिणंद नपगारी (हांरे होरे बाला) वारी जाउं वारहजारी रे (वा०। मल्लिजि०) कुंभनरेसर गग नांगणमें। सहसकिरण अवतारी रे (वाला० म०) ॥ १ ॥ पूरब भव षट्मित्र नरिंद प्रति। बोधि सिंधु भवतारी। वेदत्रयी चिरही तनु धार्यो सकल संघ सुखकारी रे (वाला मल्लि०) ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि चंदन तरुवर। नंदनवन अनुकारी। संघ चतुरविध नूरिखचरगण। प्रणत चंद्र अनुहारी रे (वा० मल्लि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल०। ॐ ह्रीं०। श्रीमल्लिजिनें० जलं० ॥ ❀ ॥ इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२०) श्रीमुनिसुव्रताजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) पद्मोदर वर पद्मनद। गतपर पद्म समान। विंशति तम प्रभु पूजिये। केवल लब्धि निधान ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग गरबो) सुणिचतुर सुजाण। परनारीसुं प्रीतडी कवहुं न कीजियै (एचाल) ॥ ❀ ॥ सुणिसुव्रताजिनेंद्र सुनिजर धरि मुझपर वर दरसण दीजियै। प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता। करियै लहियै शिव साधकता। तब तुरत मिटै भव बाधकता।

॥ १ ॥ (सुणि०) अमृतमें साध्यपणो विलसैं । प्रभु दरसण साधनता उलसैं । तदमुझमें साधकता मिलसैं । (सुणि०) ॥ २ ॥ भिन्नादिकरण ता यदि विघटै । एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद मुझ शिव साधकता प्रग टै । (सुणि०) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुझ करियै । भिन्नाधिकरणता परि हरियै । शिव चंद्र विमल पद तद वरियै (सुणि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । विंशतितम श्रीमत् मुनिसुव्रतजिनें० ॥ ❀ ॥

इति मुनिसुव्रत जिन पूजा ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२१) श्रीनमि जिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) अंतरवैरि नमाविया । तब लहियो नमि नाम । भवि यण ए प्रभु पूजसें । सरीयै बंछित काम ॥ १ ॥ (राग) हमआए है सरण तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० (एचाल) । ❀ । श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें । नयन भ्रमर युग धरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसें चेतन मद मत करियैरे । (वारी) चेतन मद मत करियैरे (श्रीनमि०) ॥ १ ॥ एह चरण कज अह निश विकसै । पर कज निसि कुमलावैरे । (वारी पर) एन बलै बलि तुहिन अनलसें । अपर कमल बल जावै रे । (वारी० अप०) ॥ २ ॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत । जीव अमरता पावै रे (वारी०) । अवर कमल रस लोभी मधु कर । कजगत गज गिल जावै रे (वारी०) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लहिपात्रहै । पद कज संपद देवै रे । तातै पदशिवचंद्र जिणिंदके । अहनिशि सुर नर सेवैरे (वारी०) । श्री० ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ ॐ० श्री नमिजिनें० ॥ ❀ ॥

इति श्री नमिजिन पूजा ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२२) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) बावीसम जिन जगगुरु । ब्रह्मचारी विख्यात । इण बंदन चंदन रसै । पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥ (राग रामगिरी) गात्र लूहै जिनमन रंग सुरे । देवा (ए चाल) । नेमि जिणंद उर धारीयै रे (वाला) विसय कसाय निवारीयै (वाला) । (वारीयै) हांरे(वाला वारीयै) । ए जिन नैंन विसारीयैरे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजतारे (वाला) देशना

अमृत वरसतारे (वाला) (देस०) । वरसता हांरे वाला वरसता । भविक मोर सुणि जलसतारे ॥ २ ॥ समवसरण गिरि परि रह्यारे (वाला) । भामंडल चपला वह्यारे (वाला) । चपला वह्या । (हांरे) चपला वह्या सुर नर चातक ऊमह्या ॥ ३ ॥ बोध बीज उपजावीयोरे (वाला) । भवि उर क्षेत्र बधावीयो हांरे (वाला धा०) । भविक मुगति फल पावीयोरे॥४॥ (काव्यं) सलिल० ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमन्नेमि जिनें० ॥ ❀ ॥

इति नेमि जिन पूजा (२२) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२३) श्री मत्पार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ अश्वसेन नंदन सदा । वामोदर खनि हीर । लोक सिखर सोभै प्रभु । विजित करम वरवीर ॥ १ ॥ वाजै तेरा बिलुआ (इस कैरवाकी चालमै) ॥ ❀ ॥ पास जिणंदा प्रभु मेरै मन वसीया । पास जिणिंदा० । मेरै मन वसीयारे । मेरै दिल वसीया (पास जि०) । शिव कमलानन कमल विमल कल । तर मकरंद पान अतिरसीया (पास जि०) ॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकल लोक जन मन किय वसीया (पास जि०) । परमज्योति मुख चंद विलोकित । सुर नर निकर चकोर ह रसीया (चकोर ह०) (पास जि०) ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनु दुति जिन जलधर । देशना अमृत धार वरसीया (धारवर०) (पास जि०) । पीय करि भवि चिरकाल तिरसीया । सुगति युवति तनु तुरत फरसीया (पास जि०) कुमुद सुपद शिवचंद्र जिणेंदनी । वारीजाउं मन मेरो अतिह उल सीया (पास जि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं (सलिल० । ॐ ह्रीं । त्रयो विंशत्तम श्रीमत्पार्श्वजिनें० ॥ इति श्रीपार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२४) श्रीमद्वीरजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ वर इक्ष्वाकुकुल केतु सम । त्रिशलोदर अवतार । ए प्रभुनी नित कीजीयै । विविध भक्ति सुखकार ॥ १ ॥ (राग तेजतरणि मुखराजै) । (हांरे मुखराजै) (प्रभु जीको ते०) (एचाल) ॥ ❀ ॥ चरम वीर जिन राया (हांरे) जिनराया । मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया (आं०) । सिद्धारथकुल मंदिर धजसम । त्रिशला जननी जाया । निरु

पम सुंदर प्रभु दरसण तें । सकल लोक सुखपाया । (हांरे सुखपाया) (मेरे प्रभुच०) ॥ १ ॥ वामचरण अंगुष्ट फरसतें । सुरगिरि वर कंपाया इंद्रभूति गणधर मुख मुनिजन । सुरपति वंदित पाया । (हांरे) (मेरे प्र०) ॥ २ ॥ वर्त्तमान शासन सुखदाया । चिदानंद घन काया । चंद्रकिरण गुण विमल रुचिर धर । शिवचंद्रगणि गुण गाया । (हांरे० मेरे प्र०) ॥ ३ ॥ बरस नंद मुनि नाग धरणि मित । द्वितीयाश्विन मनभाया । धवलपक्ष पंचमि तिथि शनियुत । पुरजय नगर सुहाया (मेरे०) ॥ ४ ॥ श्रीजिन हरख सूरीसर साहब । वर खरतर गछराया । क्षेमकीर्त्ति शाखा भूषण मणि । रूपचंद्र उवझाया (मेरे०) ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु भूरि नरेश्वर । बंदै पद उलसाया । तासु शीसवाचक पुण्यशील गणि । तसु शिष्य नाम धराया (हांरे० मेरे प्र०) ॥ ६ ॥ समयसुंदर अनुग्रही ऋषिमंगल । जिनकी सोभ सवाया पूजरची पाठक शिवचंदै । आनंद संघ वधाया (हांरे० मेरे०) ॥ ७ ॥ (काव्यं) सलिल चंदन० ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० चतुर्विंशति तम श्रीमद्वीरजिनेंद्राय वसुद्रव्यं ॥ इति श्रीमहावीरजिन पूजा विधिः ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ स्रग्धरावृत्तद्वयं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुर्व्वार स्फार विघ्नोत्कट करटि घटोत्पाटन स्पष्ट जाग्रद । वीर्यप्राग्भारोत्पाट चंचत् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्नतानां । संसारापार सिंधु त्तरण तरतरी भक्तिभाजा मजस्रं । भव्यानां ब्रह्मपद्म प्रवण मधुकरी शंकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोका स्खलित विमल सद्दर्शन ज्ञान भानुः । श्रीमज्जैनेश्वरीयं त्रिभुवन विदुतापि श्रतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धा नंत नाथालय विशदलसत् सर्वलोकाग्रभाग । प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति ऋषिमंगल स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय जगजन वंछित पूरण । सुरतरु अभिरामी । आतमरूप विमल करतारक । अनुभव परिणामी । (जय २ जगसारा २) । आरती पार उतारा । सिद्धचक्र सुखकारा ॥ १ ॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा । भज श्रीभगवन्ता । आतमराम रमा सुखभोगी । सिद्धा जयवंता । (जय० २)

पंचाचार दीपै आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक वाचक सूत्र अर्थना पाठक अवतारी (जय०) ॥ ३ ॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक । मोटा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक । संजम तपन्नाया (जय०) ॥ ४ ॥ नव पदसार परम गुरु आषै । सिद्धचक्र सुखकारी । ए अव परम व रिद्ध सिद्ध दायक । अव सायर वारी (जय०) ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै । मनवंछित पावै । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत । शिव कमला पावै (जय०) ॥ ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंडल आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय जिनराजा । (वारी ज०) आरती करुं शिवकाजा । अव अय दुख नाजा (जय०) ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव जिन राया । अभिनंदन सुमति । पद्म सुपारस चंद्राप्रभुतै । दूर हुवै कुमति । (जय०)॥२॥ सुविध शीतल श्रेयांस सवाई । करि बारम जिनकी । बिमल अनंत धर्म्म अनु शांति । हर आरति तनकी । (जय०) ॥ ३ ॥ कुंथुनाथ अरमल्लि मुनिसुव्रत । नमि नेमि श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आतमहि तकारा । (जय०) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे अवि करसी । अवसायर तरसी । श्रीजिनचंद अखयपद फरसी । शिव कमला वरसी । (जय०) ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषिमंडल आरती ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंडल सुननेंकी (वा) पूजनेंकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (प्रथम) ॥ ❀ ॥ आद्यन्ताक्षर संलक्ष० । यह । ऋषमंडलस्तोत्र । धूप, दीपादि, बिधि संयुक्त, आठ महिनेतक प्रभात समय सुणें । ऋषिमंडल में (जो) मूलमंत्र है (सो) शुभदिन शुभघमी । हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेई । गुरूकै पास जावे । भेट धरके । विनयसंयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करै । (उसका) ८००० जाप, आठ महिनामे करै । आंबिल करणेंकी शक्ति होय (तो) सदा करै । नहिं तो । आठम । चवदस । दो आंबिल जरूर करै । आठ महिनां हुयां बाद उजमणो करे । उजमणेंके दिन १०८ वेरसुणें । पीछै शक्ति होय (तो) विधिसंयुक्त । ऋषिमंडल स्थापन करायके पूजा करे । विशेष शक्ति होय तो (२४) प्रकारी पूजा करावे ।

पूजामें सामग्री ज्यो पहली नवपदजीकी बिधके ठिकाणें लिखीहै (सो) सर्व सामग्री इहां (२४) चोईस लेणी। एक एक महाराजकी पूजा पढायके। प्रथम जल। पीछै चंदन। ऐसें अष्टद्रव्य अनुक्रमसें चढावे। (पीछै) संपूर्ण पूजा हुयां बाद। गुरुभक्ति करै। साहमी वछल करै। (इहां) विशेषविधि गुरूके मुखसें समझके करणी॥ (यह) ऋषमंगल सुणनेंवाले पूज णेंवाले भव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा। सदा आनंद उछाह रहेगा। इत्यलंविस्तरेण। इति ऋषिमंगल सुणनें (वा) पूजन करनेंकी विधि॥

॥ ❀ ॥ अथ विंशतिपद पूजा विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सुखसंपति दायक सदा। जगनायक जिनचंद। विघनहरण मंगलकरण। नमो नाभि नृप नंद॥ १॥ लोकालोक प्रकाशिका। जिनवाणी चितधार। विंशतिपद पूजनतणो। कहिस्युं विधि विस्तार॥ २॥ जिनवर अंगै भाषिया। तप जप बहु परकार। विंशतिपद तप सारिसो। अवरन कोई उदार॥ ३॥ दान शील तप जप किया॥ भाव विना फलहीन। जैसें भोजन लवण विन। नही सरस गुणपीन॥ ४॥ जे भवीयण सेवै सदा। भावै थानक वीश। ते तीर्थंकर पदलहै। वंदै सुर नर ईश॥ ५॥ (ढाल) श्री अरिहंतपद १ सिद्धपद २ ध्यावो। प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो। स्थविर पंचमपद ५ पुन रुवझाया ६। तपसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनभाया १ (उल्लालो) मनभाय विनया १० वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानीयै। तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेयावच्च १६ समाधि १७ वखानीयै। हितकर अपूरब नाणसंग्रह १८ धरौ मन सुजगीसए। श्रुतभक्ति १९ फुनि तीरथप्रभावन २० एह थानकवीसए २॥ (ढाल) एथानकवीस २० जग जयकारा। जपतां लहीयै जिनपद सारा। करम निकंदै विसवावीसै। भाष्या जग तारक जगदीसै॥ ३॥ (उल्लालो) जगदीश प्रथम जिणेंद जगगुरु चरम जिनवर जी मुदा। भव तीसरै पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा। बावीस जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुणगाइयै। इक दोय तिण सहुपद जपी नें तीर्थपति पद पाइयै॥ ४॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ अरिहंतादिक पद सदा । भजीयै तपकरी शुद्ध । अति निरमल सुभयोगता । करिकै तसुगुण लुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठ त्रिक तऊपरै । थवीयै जिनवर वीस २० । पूजन उपग्रण मेलि करि । अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी । द्रव्यपूजा परकार । पंच ५ अष्ट ८ विध जानीयै । सत्तर १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि । विमलजलै भरि पूर । पूजो भवीयण पद सहू । होय सकल दुखदूर ॥ ४ ॥ सोहै सहु परमेष्टिमें । जिनवर पद अभिराम । वेद ४ निक्षेपै समरीयै । वधतै शुभ परिणाम ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ (राग देसाख) पूर्वमुख सावनं करिदसन पावनं ए चाल ॥ ❀ ॥ सकल जगनायकं परमपद दायकं । लायकं जिनपदं विमलज्ञानं (अईयो वि०) चतु रधिक तीस ३४ अतिशय अमल बार १२ गुण । वचन पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥ १ ॥ (अइयोम०) ॥ सुखकरण जिन चरण पद्मसेवित सदा । भमर सुर असुर नर हृदयहारी (अईयो) एह जिनवर तणी आण पूरण सदा । दाम जिम जगत जन शिरसि धारी (अइ०) ॥ २ ॥ जिनपपद दरस पारस फरसतें हुवै । प्रगट निजरूप परि णति विभासं । तजी बहिरात्म गिरीसारता भविलहै । अनुपमं आत्मकांचन प्रकासं (अ०) ॥ ३ ॥ हुवई जिनराज पद जाप रवि किरणतें । तुरत बहु दुरित भर तिमिरनासं । घन चिदानंद वरकंद घन भविलहै । तीर्थकर चरण कमला विलासं । (अ०) ॥ ४ ॥ वर विबुध मणिलही काच लघु सकलकौं । ग्रहण करिवा कवण कर पसारै । तिमलही जिन चरण सरण शुभयोगतें । अवर सुर सरण कुण रिदय धारै ॥ ५ ॥ प्रभुतणै पंचकल्याण केरै दिनें । प्रगट त्रिहुं लोकमें हुइ अजेरो । भविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिनन यो । बांधीयो गोत्र जिनराजकेरो ॥ ६ ॥ जेह त्रिणकाल नितनमें जिन हरखसुं । तेह भवजल तिरै जनम तीजै । अधिक भव यदिकरै तदपि नि श्चय करी । सप्त बलि अष्ट भव करीय सीजै (अइयोक०) ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (काव्यं) ॥ ❀ ॥ णमोणंत विन्नाण सद्दंसणाणं । सयाणंदिया सेस जंतूग

णाणं । नवां नोज विघ्ने यणे वारणाणं । णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ इति प्रथमपदे श्री जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२) श्री सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ तनु त्रिभागके घटनतें । घन अवगाहन जास । विमलनाण दंसण कीयो । लोकालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनाशी अ स्रित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । णमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग सोरठ) कुंदकिरण ससि ऊजलोरे देवा ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ अनुभव परमानंद सुंरे वाला । परमातम पद वंदोरे । करम निकंदौ वंदिनेंरे वाला । लहि जिनपद चिरनंदोरे ॥ १ ॥ गगन पए संतर वलीरे वाला । समयांतर अण फरसीरे । द्रव्य सगु ण परजायनारे वाला । एक समय बिद दरसीरे ॥ २ ॥ एक समय रिजु गति करीरे वाला । नयेय परमपद रामीरे । नांगै सादि अनंत एरे वाला निरुपाधिक सुख धामीरे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरीरे वाला । सिद्ध सकल सुखकारीरे । विमल चिदानंद घन थयारे वाला । वर इगतीस गुण धारीरे ॥ ४ ॥ उतपन्नता १ वलि विगमतारे वाला २ । ध्रुवता ३ त्रि पदी संगैरे । प्रनुमें अनंत चतुकतारे वाला । सोहै सम क्रम नंगैरे ॥ ५ ॥ पन्नर नेद ए सिद्धथयारे वाला । सहजानंद स्वरूपीरे । परम ज्योतिमें परिणम्यारे वाला । अव्याबाध अरूपीरे ॥ ६ ॥ जिनवर पिण प्रणमें मु दारे वाला । एहनें दीक्षा अवसैरे । तिण प्रनुपद गुण मालकारे वाला । कंठै धरीयै सुपैरे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल नवि नगति सूंरे वाला । सिद्ध परम पद नजिनेंरे । पद श्री जिनहरषै लह्योरे वाला । परगुण परिणति तजि नेंरे ॥ ८ ॥ (काव्यं) लोगग्गनासे परिसंठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिं दियाणं । निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं । णमो सया मंगल धारगाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ इति द्वितीयपदे श्री सिद्ध पूजा ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय प्रवचन पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ पद तृतीय प्रवचननमो । ज्यंनन्नमो संसार । गमो

कुमति परिणमनता। दमो करण नयकार ॥ १ ॥ जैसें जलधर वृष्टितें। अ खिल फलद विकसाय। तैसें प्रवचन भक्तितैं। सुनयपरणित उलसाय। २ (श्रीराग) जिनगुणानं श्रुत अमृतं ए चाल ॥❀॥प्रवचन ध्यानं सुखकरणं। परिहरिये सहु विषय विकारं। करीयें प्रवचन आदरणं॥ प्रवचन० १ ॥ सप्त भंगि नूषित ए प्रवचन। स्यादवाद मुद्रानरणं ॥ सप्तनयात्मक गुणमणि आगर। बोधिवीज उतपति करणं॥ प्रवचन० ॥ २ ॥ जैसें अमित पान कर णतें। हुवई सकल विष संहरणं। तैसें प्रवचन अमित पानें। कुमति हला हल प्रविशरणं॥ ३ ॥ प्र० ॥ प्रवचनकौं आधेय कहीयें। सकलसंघ तसु अधि करणं। तिण एसंघ चतुरविध प्रवचन। एपद अखिल कलुषहरणं ॥४॥ प्र० ॥ यदि नविजन तुमए चाहतुहै। मुगतिरमणि जन वशकरणं। करणतीन इककरि तदकरीयें। प्रवचन पद समरण धरणं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जिनवरजी पिण ए तीरथनें। प्रणमें मध्य समवसरणं। नवजल तारण तरणि समानं। एतीरथ अशरण शरणं॥ ६ ॥ प्र०॥ जिम नरतेसर संघ नगतिकरी। ल हीयो पुएय फलाचरणं। चक्रीपद अनुनवि वलि शिवपद। लीधकरीय क म निरजरणं ॥प्र० ॥७ ॥ नरपति संनव जिनहरषै करि। आराधी प्रवचन चर णं। करम निकंदि थया जगदीसर। जिन परमानर आनरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥ (काव्यं) ॥ अणंत संसुद्ध गुणाकरस्स। दुक्खंधया रुग्ग दिवाकरस्स। अ णंत जीवाण दयागिहस्स। णमो णमो संघ चनव्विहस्स॥ ९॥ (ॐ ह्रीं श्री प्रवचनायनमः) ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदे श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥ ॥❀॥

॥❀॥अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा लि०॥❀॥

॥❀॥ (दूहा) ॥❀॥ पदचतुर्थ नमीयें सदा। सूरीसर महाराज। सोहम जंबू सारिसा। सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सारण वारण चोयणा पमि चोयण करतार। प्रवचन कज विकसायवा। सहसकिरण अवतार ॥ २ ॥ (राग रामगिरी) गात्रजूहै जिनमनरंगसुंरेदेवा (ए चाल) ॥❀॥ आचारिज पद ध्याईयैरे वाला। तासबिमल गुणगाईयै॥ पाईयै (हांरेवाला) पाईयै ॥ जिनपतिपद जग शिरतिलो रे ॥ १ ॥ आचारिज० ॥ जिनशासन नन्नुवालतारे वाला। सकलजीव प्रतिपालता ॥ पालता (हांरेवाला)

पालता ॥ चरण करण मग चालतारे ॥ २ ॥ आचारिज० ॥ सूरि सकल गुण सोहतारे वाला । सुर नर जन मनमोहता ॥ मोहता (हांरेवाला) मो० । नवीयणनैं पमिबोहतारे ॥ ३ ॥ आचा० ॥ पंचाचार विराजितारे वाला । सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता (हांरेवाला) गाजता ॥ सूरि सकल शिर ब्राजतारे ॥ ४ ॥ आ०॥ नपदेशामृत वरसतारे वाला । डुरिततास सहु निरसिता ॥ निरसिता (हांरेवाला) निरसिता ॥ परमातम पद फरसतारे॥५॥ आचा० ॥ धरम धुरंधरता धरारे वाला । जगबांधव जगहितकरा ॥ हितकरा (हांरेवाला) हितकरा ॥ स्व परसमय विन गणधरारे ॥ ६ ॥ आ० ॥ पद श्री जिनहरषै ग्रह्योरे वाला । सूरीशर पद तपवह्यौ । तपवह्यौ (हांरेवाला) तपवह्यौ । पुरुषोत्तम नृप शिव लह्योरे ॥ ७ ॥ आ० ॥ (काव्यं) कुवादि केली तरु सिंधुराणं । सूरीसराणं मुणि बंधुराणं । धीरत्त संताजिय मंदराणं । णमोसया मंगल मंदिराणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनमः)॥४॥❀॥ इति चतुर्थपदे श्री आचार्यपूजा ॥ ४॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम थिवर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ (दूहा) ❀ ॥ डुविध थविर जिनवर कह्या । द्रव्य नाव प्रकार । लोकिक लोकोत्तर वली । सुनियै नेद विचार ॥१॥ जनकादिक लौकिक थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचमपदमें जानियै । डुतीय थविर अधिकार ॥ २ ॥ (सारंगराग) ॥ नितनमीयै थविर मुनीसरा । पंचमहाव्रत धारक वारक । कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ ॥ नितनमीयै० ॥ २ ॥ संयमयोगै सीदत बालक । ग्लानादिक सहु मुनिवरा । एहनें नचित सहाय दीयणतें । वारै एहना डुखन्नरा ॥ २ ॥ नित० पर्याय वय श्रुति त्रिविध एथविरा । वीसरु साठ समोपरा । बयधर समवायादिक पाठक । एहथविर गुणआगरा ॥ ३ ॥ नित० ॥ तीजेअंग कह्या दशथविरा । रतनत्रयी ना गुणधरा । तेश्ह निरमलनावै ग्रहिवा । नविक सरोज दिवाकरा ॥ ४ ॥ नित० ॥ क्षीर जलधि सम अतिह गंनीरा । सुरगिरी गुरु धीरज धरा । शरणागत तारणता धारा । ग्यान बिमल जल सागरा ॥ ५ ॥ नित० ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान करणतें । द्रव्यादिक ग्याताबरा । तेह स्वरूप रमण थवि

राकह्या । नहिय धवल केशांकुरा ॥ ६ ॥ नित० ॥ एह थविर पद सेवी नग तै । पदजोत्तर वसुधेसरा । पद श्रीजिनहरषै तिण लहीयो । मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ ७ ॥ नित० ॥ (कलश) सम्मत्त संयम पतित नविजन अ हित थिरकरता नला । अवगुण अदूषित गुणविभूषित चंद्रकिरण समुज्ज ला । अष्टाधिका दशसहस शीलांगरथ रुचिर धाराधरा । नवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थविरमुनी सरा ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीस्थविरायनमः) ॥५॥ ❀ ॥ इति पंचमपदे श्रीस्थविरपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्टपदे श्री उपाध्याय पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ प्रवर नाण दरशण चरण । धारक यतिधरम सार । समितिपंच त्रिणगुप्तिधर । निरुपम धीरजधार ॥ १ ॥ ❀ ॥

(राग नैरव) ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल) ॥ ❀ ॥ नावधरी उवझायावंदो विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदी । लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ १ ॥ नाव० ॥ कुमती मदतरु नंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी । अंगउवालस नणय नणावै । शिष्यनणी चित हितधारी ॥ २ ॥ नाव० ॥ सकल सूत्र उपदेश दीयणते । वाचक अति विमलाचारी । नव तीजै अभ्रित सुखपामें । सुर असुरेंद्र मनोहरी ॥ ३ ॥ नाव० ॥ हय ग ज वृष पंचानन सरिषा । करमकंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृप दिन कर । विधु नंमारि तुलाधारी ॥ ४ ॥ नाव० ॥ जंबू शीतानदि कांचनगि रि । चरमजलधि उपमनारी । एउपमा बहुश्रुतनी जाणो । उत्तराध्ययन कहीसारी ॥ ५ ॥ नाव० ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि । स कल जुवन जन उपगारी । शंशय तिमिर हरण वासरमणि । पाप ताप आतपवारी ॥ ६ ॥ नाव० ॥ प्रवर शंख पय नरीयो सोहै । तिमए ग्यान चरण चारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । लहीयो जिनपद विजितारी ॥ ७ ॥ नाव० ॥ (काव्यं) सव्वोहिबीजं कुरकारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुबोहिदंती हरिणेसराणं । विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायेभ्योनमः) ॥६॥ इतिषष्टपदे श्रीउपाध्यायपूजा ॥६॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाणें जिनवाणी सरस । स्यादवाद गुणवंत । मुनिकहीयै सिव पंथनें । साधै साधुकहंत ॥ १ ॥ समतारस जलझीलता । विशदानंद सुरूप तिण पांम्यो पद सप्तमें । नमोनमों मुनिचूप ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

(राग गुंमिश्रित नीम म०) मेघवरसेनरी पुष्फवादल करी ए चाल ॥ भक्तिधरि सातमें पद भजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा । गुण सत्तावीस भूषणकरी शोभिता । क्षोभिता विकट कर्म सुभट सारा ॥१॥ भक्ति० ॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा । शिवकरण नाण किरिया प्रधा ना । प्रतिदिनें दोष आहारना वरजिता । सप्तचालीस यतिश्रम निधाना ॥२॥ भक्ति० ॥ मदनमद भंजता कुमति जन गंजता । भक्तजन रंजता क्षांतिधरी या । सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना । तारीया ग्यान गंभीर दरीया ॥ ३ ॥ भक्ति० ॥ त्रिणमणी समगिणें चतुरविध धरमना । परम उपदेश दा यक उदारा । बहिर भ्यंतर निदा बारविध अतिकठिन । तपतपै सकलजीव अभयकारा ॥ ४ ॥ भक्ति० ॥ बलि अठावीस मनहरण गुण लबधि निधि । सातमें छठ गुणठाण वसीया । सप्त भयवारका प्रबर जिन आगन्या । धारका स्वगुण परिणमन रसीया ॥ ५ ॥ भक्ति० ॥ पंचपर माद कल्लोलता कुलमहा । पारसंसार सागर जिहाजा । विविध नववाभि युत शीलव्रतके धरा । मधुर निजवाणि रंजित समाजा ॥ ६ ॥ भक्ति० ॥ कोभि नवसहस थुणीये महा मुनिवरा । वीरभद्र जिमकरीय साधुसेवा । परमपद जिनहरष सुग्रह्यो तसुतणा । चरणकज युगनमें सकलदेवा ॥ ७ ॥ भक्ति० ॥ (काव्यं) संतज्झिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गि हाणं । सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं । णमोणमो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्री सर्व साधुभ्योनमः) ॥ ७ ॥ इति सप्तमपदे श्री साधु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ विमलनाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकाश । जीतलई निजतेजसें । जिन अनंत रविभास ॥ १ ॥ सहु संशय तम अपहरै । जय जय नाणदिणंद । नाण चरण समरण थकी । विजय होय सुखदंद

॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग घाटो) मेरो मन वसकर लीनो । ए चाल ॥ ❀ ॥ आवै ग्यान वंदन करीयै । शिवसुख तरुकंद । आवै० ॥ जिनचंद्र पद गुण धरीयै । वरीयै परम आनन्द ॥ १ ॥ आवै० ॥ मतिनाण श्रुत २ अुनरवधिं ३ । मनपर्यव ४ जाण ॥ आवै० ॥ लोका लोकआव प्रकाशी । वर केवल नाण ५ ॥ आवै० ॥ २ ॥ पंच ए इक्कावन ५१ भेदै । क ह्यो जिनवर आन ॥ आवै० ॥ जगजीव जन्तु अुछेदै । ग्यानामृत रसपान ॥ आवै० ॥ विणग्यान कीधी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ आवै० ॥ अज्ञानअंक प्रगट ए करीयै । जिम पय जल हंस ॥ आवै० ॥ ४ ॥ वरनाण स हितसु किरिया । करी फल दातार ॥ आवै० ॥ हुवो ग्यान चरण रसीला । लहो अवजल पार ॥ आवै० ॥ ५ ॥ ग्यानानंद अमृतपीधो । अरतेसर म हाराय ॥ आवै० ॥ तिणसें अमृतपद लीधो । सुरपति गुणगाय ॥ आवै० ॥ ॥ ६ ॥ सेवीग्यान जयत नरशै । अये जिन महाराज ॥ आवै० ॥ सोहैग्यान ए त्रिभुवनमें । सहुपरि सिरताज ॥ आवै० ॥ ७ ॥ (काव्यं) उद्दव प ज्जाय गुणुक्करस्स । सयापयासी करणोद्धुरस्स । मिछत्त अन्नाण तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीज्ञानायनमः) ॥८॥ ॥❀॥ इति अष्टमपदे श्रीज्ञानपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी दर्शन पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ दर्शण आश्रय धर्म्मनो । एहना षट् भेद मान । दरशण विण नहि चरणविद । उत्तराध्ययने जान ॥ १ ॥ जिणदर शण फरस्यो अलो । अंतर महुरति मान । अरधपुग्गल परियटरहै । तसु संसारवितान ॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग कामोद) चंपक केतक मालतीए । अइ यो मालती ए ॥ (ए चाल) ॥❀॥ जिनदरसण मुझ मनवस्यो ए । (अइयो मनवस्यो ए) । उपजत परम आनंद । जिनदरशन दरशन दीयै । विमलना ण तरुकंद ॥ १ ॥ दरशण मोहरिपु जीतीया ए ॥ (अइयो०) वर दरशण उलसंत । दरशण घट परगट हुआ । अवीयण अव नअमंत ॥ २ ॥ जिनव रदेव सुगुरु व्रती ए । केवली कथित जिनधर्म । तीनतत्त्व परिणतिरमें । ते दरशण करै शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रभु वचनो धरि सदा ए ॥ (अइयो०) ॥ थिर

शरदहण धरंत । इण लक्षणतें जानीयें । समकितवंत महंत ॥ ४ ॥ इग, दुग, ति, चौ, शर, दश, विहा ए । (अइयो०) सतसठि ६७ भेद विचार । वलि परीति समकित भणयो । द्रव्य भाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्यें जिनदरशण कह्योए । भावै समकित सार । द्रव्यत दरशण भावतो । दरशण कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतबलीये । तदपि उत्तर हितकार । शय्यंभव जिनदरशणें । पायो दरशण सार ॥ ७ ॥ दरशण विण किरिया हता ए । अंकविना जिम बिंदु । बलि हणीयो विण चंद्रिका । वासरमें जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतोए । दरशण पद आनिराम । पद श्रीजिन हरषै धरयोए । वधतै शुभपरिणाम ॥ ९ ॥ (काव्यं) अणंतविन्नाण सुकारणस्स । अणंत संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स । णमो णमो निम्मल दंशणस्स ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्री दर्शनायनमः) ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति नवमपदे श्रीदर्शनपूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१०) बिनयपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ विनय भुवन रंजन करै । विनयै जस विसतार । विनय जीव भूषित करै । विनयै जय जय कार ॥ १ ॥ विनयमूल जिनधर्म्मनो । विनय ग्यान तरु कंद । विनय सकलगुण सेहरो । जय जय विनय सनंद ॥ २ ॥ (राग सामेरी) पूजोरीमाई जिनवर (ए चाल) ॥ ❀ ॥ ध्यावोरीमाई विनय दशमपद ध्यावै । पंच भेद, दश विध, तेरस विध । बावन भेद गणेशै ॥ ध्या० ॥ बासठ भेद कह्या आगममें । विनयतणा सुविसेसै ॥ १ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघा ५ । किरिया ६ भ्रम ७ वरनांणा ८ ॥ ध्या० ॥ नांणी ९ आचारिज १० मुनिथविरा ११ । पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ २ ॥ ध्या० ॥ ए अरिहादिक तेरसपदनो । विनयकरै जेनावै ॥ ध्या० ते तीर्थंकरपद अनुभविनें । अमृतपद सुखपावै ॥ ३ ॥ ध्या० ॥ जिमकांचनमें मृदुगुण लाभै । नहीय कालिमा पावै । ध्या० ॥ तिणए सकल धातुमें उत्तम । नाम कल्याण कहावै ॥ ४ ॥ ध्या० ॥ तिमविनयीमें छै मृदुतागुण । कुमति कठिनता नासै ॥ध्या०॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलीनता । जायै विनयगुण भा

सै ॥ ५ ॥ ध्या० ॥ दोयसहस अरु अधिक चिहुत्तर । देववंदन निरधारो ॥ ध्या० ॥ गुरुवंदन विधि च्यारसै बाणुं । भेदकरी उरधारो ॥ ६ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकरादिकनों मनरंगै । विनय चरण शुभध्यायो । धननामा भवि नमि जिनहरषै । तीर्थंकर पद पायो ॥ ७ ॥ ध्यावो० ॥ (काव्यं) आणंदिया सेस जगज्जणस्स । कुंदिंदु पादा मलता चणस्स । सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स । णमो णमो श्रीविनयालयस्स ॥८॥ (ॐ ह्रीं श्री विनयायनमः) ॥१०॥ इति दशमपदे श्रीविनयपूजा ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (११) चारित्र पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ इग्यारम पद नितनमुं । देश सरब चारित्र । पंक मलिनता दूरकरि । चेतन करै पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करै । रंकथकी सुरराय । तीन जगतपति पद दीयै । जसु सुर नर गुणगाय ॥ २ ॥ (राग सारंग) बावना चंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) ॥ चरण शरण गुरु मन हरयो । सुखकरण हरण घन पापए । (हांहो रे वाला) । एह चरण जलधर हरे । अग्यान तरुण तर तापए ॥ १ ॥ हां० ॥ आठ कषाय निवारतां । देशविरति प्रगट हुवै खासए ॥ हांहो रे० ॥ बार कषाय निवारीया । सम विरतिलहे गुणवासए ॥ २ ॥ हां० ॥ इगवासर सेव्यो थको । शुध सरबसंबर चारित्रए ॥ हां० वाला ॥ परमानंद घन पददीये । सुरलोक जनित सुख चित्रए ॥३॥ हां० वाला ॥ भव भय तरुगण छेदिवा । एसंयम निशित कुठारए ॥ हां० वाला ॥ ग्यान परंपर करणहै । अभ्रितपदनो हितकारए ॥ ४ ॥ हां० वाला ॥ चरण अनंतर करणछे । निरवाण तणो निरधारए ॥ हां० वाला ॥ सरबविरति सुचरणमें । पामें अरिहंत पदसारए ॥ ५ ॥ हां० वाला ॥ वरस चरण परजायमें । अनुत्तरसुख अतिक्रम होयए ॥ हां० ॥ वाला ॥ सतरभेद चारित्रना । कहीया जिनआगम जोयए ॥६॥ हां० वाला॥ देशथी सम संयम विषै । उज्जलता अनंतगुण थायए ॥ हां० वाला ॥ अरुणदेव सेवी चरणनें । भये जगगुरु जिन महारायए ॥ हां० ७ ॥ (काव्यं) कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महोदयानंद जयाजलस्स । विन्नाण पंकेरुह

काणएस्स। णमोचरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री चारित्रायनमः ११ ॥ इति एकादशपदे श्री चारित्र पूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१२) ब्रह्मचर्य पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा) ॥ ❀ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी। कामकलश अवधार। ब्रह्मचर्य इणसम कह्यो। कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिषीयां रज निकर। सुरगणमें सुरराय। तिम सहुव्रत शिर सेहरो। ब्रह्मचारज कहिवा य ॥ २ ॥ (राग ख्याल) भला प्रभुगुण वालाहो (ए चालमें) ॥ ❀ ॥ भव भय हरणा, सिवसुख करणा, सदा भजोब्रह्मचारा (मेंवारी जातं) सदाभजो० हो ॥ भव० ॥ शील विबुध तरु पालन करिवा। कहि जिनवर नववाराहो। दिव्योदारिक करण करावण। अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ १ ॥ भव० ॥ त्रिकरण जोगे ए परिहरीयै। भवीयै भेद अढाराहो ॥ भव० ॥ कनक कोम्निो दानदीयै नित। कनकचैत्य करताराहो ॥ भ० ॥ २ ॥ एह थी ब्रह्मचारज धारकनो। फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ॥ सहस चौरासी श्रमणदानफल। ब्रह्मव्रत फल समसाराहो ॥ भ० ३ ॥ विजयसेठ विजयासेठानी। उभयपक्ष्य ब्रह्मधाराहो ॥ भ० ॥ भये सुदर्शन सेठ शीलसें मुगतिबधू भरतारा हो ॥ भ० ४ ॥ सहस अढार शीलांग रथधारा। धारिकरै निसतारा हो ॥ भ० ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन। कुंजर मद मतवारा हो ॥ ४ ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदरिषि सरिषे। तरया भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण विरति नहि एहमें। ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो। भ० ॥ ५ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर। धरीय भगति हितकाराहो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारज व्रत धर नरवरके। प्रणमें चरण उदारा हो ॥ भ० ६ ॥ दशम अंग भणियो नरवर्मा। नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारिज व्रत पालि लह्योपद। जिनहरषै जयकारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ (काव्यं) सग्गापव गग्ग सुहप्पयस्स। सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स। सच्चव्वयाभूसण दूसणस्स णमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री ब्रह्मचर्यायनमः) ॥ १२ ॥ इति द्वादशपदे श्री ब्रह्मचर्य पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१३) किरियापद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ करम निरजरा हेतुहै । प्रवर क्रिया गुणखाण जिनशासननी स्थिति रही । किरिया रूपै जाण ॥ १ ॥ भुवनमांहि किरियाम ही । सकलशुद्ध विवहार । प्रवरनाण दरशण तणो । शुधकिरिया शिणगार ॥ २ ॥ (राग मालवी गौरी) ॥ सब अरतिमथन मुदारधूपं (ए चालमें) शुभध्यान किरिया हृदय धरिनें । भ्रम सुकल उर धारे । आर्त्त रोद्रनी हेतु किरिया । अशुभ पणवीस बारे ॥ १ शु० ॥ ग्यानवंत अशस्त्र भटहै । क्रि या शस्त्र वतंसरे। सुभटनाणी क्रियाशस्त्रे । करयकम अरिध्वंसरे ॥ २ ॥ शु० ॥ ग्यानसेती वदै शिव यदि । तेरमें गुणठाणरे । एकनाणें तद जिणेसर । कि मुनलहै निरवाणरे ॥ ३ ॥ शु० ॥ जिनप शैलेशी करण करि । चवदमें गुण ठाणरे । सरवसंवर चरण करणें । लहै पद निरवाणरे ॥ ४ ॥ शु० ॥ ए अ नंतर अमृतकारण । कह्यो जिनवर भांणिरे । सरव संबर चरण किरिया । न शिव इणविनु जाणिरे ॥ ५ ॥ शु० ॥ एकनाणें इक क्रियामें । नशिव वितरण शक्तिरे । कहै जिनवर उभययोगे । लहै भविजन मुक्तिरे ॥ ६ ॥ शु० ॥ गर लमिश्रित सरस भोजन । अशुभ परिणति धारे । अमृतसंयुत तेहभोजन रुचिर परिणति कारे ॥ ७ ॥ शु० ॥ ग्यानसहिता तेमकिरिया । करिकरै नि सतारे । ग्यानविन किरियानदीपै । मनोमत फलसारे ॥ ८ ॥ शु० ॥ ग्या नपरिणति रमी क्रिया । तेह किरिया सारे । भयो हरिवाहन जिनेसर । सुद्ध किरिया धारे ॥ (काव्यं) विशुद्ध सद्धाण विभूषणस्स । सुलद्धि संप त्ति सुपोषणस्स । णमो सदाणंत गुणप्पदस्स । णमोणमो सुद्धक्रिया पदस्स । ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीँ श्री क्रियायैनमः ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति त्रयोदशपदे श्री क्रियापद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) तपपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ शमतारस युत तप रुचिर । भणियो जिन जगभांन । शिव सुरसुख चंदन फलद । नंदन विपिन समान ॥ १ ॥ स घन करम कानन दहन । करन विमल तपजांन । विपिन धूमकेतन समो । जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥ (राग कल्याण) तेरी पूजावनी हे रसमें

(ए चाल) ॥ मेरीलगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशलए । दुरित निकाचित हरणें ॥ १ ॥ मेरी० ॥ जैसें चक्रवाककी अरुणें । चकोरकी हिमकर किरणें ॥ मेरी० ॥ जैसें गणधरकी जिनचरणें । चातककी जलधरणें ॥ २ ॥ मे० ॥ जिनवर पिण तदभव शिवजांणें । त्रिण चउ नाण सुकरणें ॥ मे० ॥ तदपि सुकोमल करण चरणनें । ठवय कठिन तप करणें ॥ ३ ॥ मे० ॥ क षटसहित तप चरण धरणतें । वांछित फल नवितरणें ॥ मे० ॥ नितए दं भ रहित तपपदके । सुरपति गण गुण वरणें ॥ ४ ॥ मे० ॥ पीठ महापी ठ मुनि मल्लीजिन । पूरव भव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहीया तदपि कपट नवि ढंड्यो । भये स्त्री गोत्रा चरणें ॥ ५ ॥ मे० ॥ दृढप्रहारि पांरुव घन करमी । ढंड्या करमा वरणें । तपसें शोभलही त्रिभुवनमें । केवल कमला भरणें ॥ ६ ॥ मे० ॥ लाख इग्यारह असीहजारा । पंचसय शर दिन खिरणें । मासखमण करि नंदन मुनिवर । पाम्यो फल शिव धरणें ॥ ७ ॥ मे० ॥ त पकरीयो गुणरयण संवछर । खंधक समता दरणें । चवदसहस मुनिमें क ह्यो अधिको । धन्नों तप आचरणें ॥ ८ ॥ मे० ॥ बाहिर भ्यंतर भेदै एत प । बारभेद अधिकरणें । वसिनें कनककेतु पांम्योपद । जिनहरषै भवतर णें ॥ ९ ॥ (काव्यं) लक्ष्मी सरोजा वलिता वणस्स । सरूव संजग्ग सुपा वणस्स । अमंगला नोकुह दुदवस्स । नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्रीतपसे नमः) ॥ १४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीतपपूजा ॥ १४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१५) गौतम गणधर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ गौतमगणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न । ब लि सहु जिन गणधर नमो । चवदैसै बावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस करै । दानहरै दुरितारि । मन वांछित सहु सुख दीये । दान धरम हितकारि ॥ २ ॥ (राग सोरठ) ॥ मेंतेरी प्रीति पीछानीहो प्रभुमें (ए चाल) पनरम पद गुनगाना हो भवी । पनरमपद गुणगानाहो ॥ आं० ॥ भावधरी करीयै मनरंगै । परम सुपात्रै दानाहोभवी ॥ पनर० ॥ १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव भेदै । द्रव्य लक्षन ए जाना हो भवी ॥ पन० ॥ सरबोत्तम उत्तम हुवै भाजन । रतन कनक रूपाना हो भवी ॥ २ ॥ पनर० ॥ मध्यमपात्र

कहीजै एहवा । ताम्रधातु निपजाना होभवी ॥ पनर० ॥ पात्र लोहादिक अ पर जातिना । तेह जघन्य कहाना हो भवी ॥ पन० ॥ ३ ॥ भावपात्रनो लक्षन कहीयै । सुनीयें सुगुण सयाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचम चरण धरै वलिवरतै । क्षीणमोह गुणठाना होभवी ॥ पन० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम । पात्र कह्या जिनभानाहो भवी ॥ प० ॥ प्रवरनाण किरियाधर मु निवर । लाभालाभ समांना हो भवी ॥ प० ॥ ५ ॥ ते कांचन भाजन सम कहीया । भवजल तारन यांना हो भवी ॥ पन० ॥ सुधमन द्वादशव्रत धर शनधर । तारपात्र सम जांना हो भवी ॥ पन० ॥ ६ ॥ सुध समकित धर श्रेणिक परमुख । रह्या अविरत गुनठाना हो भवी ॥ प० ॥ ताम्रपात्र सम एहनें कहीयै । भावी गुण मणि खाना हो भवी ॥ पनर० ॥ ७ ॥ अपर सकल जन मिथ्यादृष्टी । लोहादिपात्र गिनाना होभवी ॥ पन० ॥ जिनशासन रंगै रंगाना । वाचंयम सुप्रमाना हो भवी ॥ पन० ॥ ८ ॥ एहनें दानदीये शि व लहीयै । एह सुपात्र पहिचाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचदान, दसदान, नि करमै । अभय सुपात्र महिराना हो भवी ॥ पन० ॥ ९ ॥ नरवाहन सुभपात्र दानतें । भये जिनहरष निधानाहो भवी ॥ पन० ॥ सालिभद्र वलि सुरसुख लहीयो । सुरनर करय वखाना हो भवी ॥ पनर० ॥ १० ॥ (काव्यं) अ णंत विन्नाण विन्नाकरस्स । कुवालसंगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जरगो यमस्स । णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री गौतमाय नमः) ॥१५॥ इति पंचदशपदे सुपात्रदानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१६) वेयावच्च पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सोलमपदमें जानीये । वेयावच्चविधान । अ खिल विमलगुण मणितणो । सोहै प्रवरनिधान ॥ १ ॥ जिन, सूरी, पाठक, मु नी । बालक, वृद्ध गिलांन, । तपसि, चैत्य, संघनो, करौ । वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥ (राग) बालोह्यांरो कब मिलसी मन मेलू (ए चाल) सेवो भाई सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दश पद नो । करउ वेयावच्च जारी ॥ सेवो० ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिजुवन शंकर । अवर केवली हारी । मन पर्यव धर अवधिनाण धर । चउद पूरब श्रुतधारी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ दशपू

वीं उत्कृष्ट चरणधर । लब्धिवंत अणगारी । एजिन कहीयै इनवंदनतें । भविहुवै जिनअवतारी ॥ ३ ॥से०॥ जिनमंदिर बिंब करण भरावै । पूजकरै म नुहारी । बेयावच्चकही ए जिनकी । करीयै भवजल तारी ॥ ४ ॥ से० ॥ आचारज परमुख नवपदको । बेयावच्च विजितारी । भगतिपूर्व वस्त्रौषध अन्नजल । देवै गुण विस्तारी ॥ ५ ॥ से० ॥ पंचसय मुनिनी करीय बेयावच्च पूरवभव व्रतचारी । भरत बाहुबल चक्रीपद नुज । बलभद्रो वरी शिवना री ॥ ६ ॥ से० ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी । करीय बेयावच्च सारी । तिणसें सरगलोकमें हुयकी । भईय प्रसंसाभारी ॥ ७ ॥ से० ॥ इत्यादिक सो लमपद धरै । बहुलभव्य क्रमजारी । तिणसें इणबेयावच्च पदकी । वारी जाउं वारहजारी ॥ ८ ॥ से० ॥ नृपजीमूत केतु सोलमपद । सेवीभयेदुख वारी । श्रीजिनहरष धरी हरिवंदत । शरणागत निसतारी ॥ ९ ॥ (काव्यं) मणुणसव्वा तिसयासयाणं । सुरासुराधीशर वंदियाणं । खवींदुबिंबा मल सग्गु णाणं । दयाधणाणं हि नमोजिणाणं ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः)॥ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ इति षोम्शपदे श्रीवैयावृत्यपूजा ॥ १६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१७) समाधिपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सतरमपदमें सेवीयै । सहु सुखकरण समाधि । जिण सेवनतें भविकनो । गमें व्याधि अरुआधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पथि विचरतां । वर पाथेय समान । ए समाधिपद जानीयै । सुरमणि किय हैरान ॥ २ ॥ वाजै तेराविहुआ (इस कैरवारी चालमें) ॥ ❀ ॥ मेरोरे समाधि चरण चित वसीयो ॥ चर० ॥ तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुभव रंगै अतिह विकसीयो ॥ १ ॥ मे० ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि । सुरतरु मांनुं नित नुवन विलसीयो । मे० । अशन वसन सलिलादिक भक्ती । करय संघनी करुणा रसीयो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्यसमाधि प्रथम एसुनियै । कह्यो जिन लोकालोक दरसीयो ॥ मे० ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखै । पतित सुथिरकरै भ्रममें हरसीयो ॥ मे० ॥ ३ ॥ भावसमाधि दुतीयए कहीयै । जोकरै सो जिनचरण फरसीयो ॥ मे० ॥ सकल संघकों जो उपजावत । दुविध समाधि दुरित तसु नसीयो ॥ ४ ॥ मे० ॥ सु

मति पंच त्रिण गुपति धरैनित । सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो ॥ मे० ॥ जगतजंतु अघतपति हरणकुं । अनुभव अमित धार वरसीयो ॥ ५ ॥ सुक ल अनिल करमेंधन दाहत । जिणसें परगुण परिणति खिसीयो ॥ मे० ॥ ए मुनि तरणि तेज सम दीपत । अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ ६ ॥ मे० ॥ इणपदमें अैसे मुनिजनके । समरणतें हुय जग अवतसीयो ॥ मे० ॥ एप दसेवी नृपतिपुरंदर । भये जगपति जिनहरष जसीयो ॥ ७ ॥ (काव्यं) सर्विंदिया पार विकार दारी । अकारणा सेस जणोवगारी । महाभवातंक ग णापहारी । जयोसदा सुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्योनमः

॥ ❀ ॥ अथ (१८) अपूर्व श्रुतग्रहण पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पदमांहि । इणपद सेवक जनतणा । सहु संकट भय जांहि ॥ १ ॥ जैसी कुमति विशुद्धता । घोर तपैकरि होय । तत् अनंत गुणि शुद्धता । सुग्यानीकी जोय ॥ २ ॥ ❀ ॥ दिलदार यार गबरू । राखुंरे घुंघटदा पटमें (ए चाल) ॥❀॥ जिनचंद्र ग्यान तेरा । होजीतेरे विकट भवभटनें (आं०) ॥ सदपूर्व ग्यान धरणा । वितरै जिनेंद्र चरणा । करि सर्व कर्म हरणा ॥ १ ॥ जीते० । (जि नचंद्र०)॥ जगमें महोपकारी । भवसिंधु वारितारी । कुमतां धता बिदारी॥२॥ जी० ॥ जि० ॥ सहुभावनो प्रकासी । परमस्वरूप भासी । समकित स भवासी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जि० ॥ विणुहेतु विश्वबंधू । गुणरत्न राशिसिंधू । शमता पीयूष अंधू ॥ ४ ॥ जीते० ॥ जिन० ॥ स्याद्वाद पक्षगाजै । नयसप्तसैं विराजै । एकांतपक्ष भाजै ॥५॥ जी० ॥ जि० ॥ लहि तीर्थ पावतारा । इणसें जिनेंद्रसारा । किया भव्यके उधारा ॥६॥ जी० ॥ जि० ॥ पद सेविए नरिंदा । भये सागरादि चंदा । जिनहर्षके समंदा ॥ ७ ॥ जी० ॥ जि० ॥ (काव्यं) सुधक्रिया मंगल मंगनस्स । संदेह संदोह विखंगनस्स । मुत्ती उपादान सु कारणस्स । नमो ही नाणस्स जयो धणस्स ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीअपूर्वश्रुत ग्रहणरूपा ज्ञानपूजा ॥ १८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१९) श्रुतपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ पाप ताप संहरण हरि । चंदन सम श्रुतसार ।

तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ इगुनवीस पदमें भजउ । जिनवर श्रुतनी भक्ति । इन पद वंदनसें लहै । अमल नाण युत मुक्ति । ॥ २ ॥ (राग) व्रजवासी कांन तें मोरी गागर ढोरी रे (अपर) आजआयोरे उछाह । जीवभानाच जिणंद आगै (इस चालमें) ॥ ❀ ॥ भविजन श्रुत भक्ति चरणशरण उर धरीयेरे । ए श्रुत भक्ति सुमंगल माल । विमल केवल कमला वरमाल ॥ भविजन० ॥ १ ॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय । प्रगट करण एश्रुत मनभाय ॥ भवि० ॥ अतुल अनंत किरण समवाय । धरण तरणिगण सम कहिवाय ॥ भ० ॥ २ ॥ एश्रुत कुमति युवतिनें संग । अगणित रमणितणो करैभंग ॥ भवि० ॥ अरथै भाष्यो श्री जिनराज । सूत्रै गणधर मुनि सिरताज ॥ भवि० ॥ ३ ॥ ए श्रुतसागर अगमअपार । अनंत अमलगुण रयणाधार ॥ भवि० ॥ भव भय जलनिधि तरण जिहाज । निसुणि मगनभई सकल समाज ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवकोटी लगि तपकरि जीव । अग्यानीकरै जितनी सदीव ॥ भवि० ॥ करम निरजरा तितनी होय । ज्ञानीकै इकखिणमें जोय ॥ भवि० ॥ ५ ॥ एक सहस कोमि १०००००००००, बस्सय कोमि ६०००००० । चतुरतीस कोमि ३४०००००००, अक्षर जोमि ॥ भवि० ॥ अडसठ लाखरु ६८००००० सात हजार ७०००। अडसय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ (१६०३४६८७ ८८०) भवि० ॥ ६ ॥ इतने वरणसें इकपद होय । एक श्लोकका गणितए जोय ॥ भवि० ॥ इकपदको परिमांण एजाण । इणपदसें आगम परिमाण ॥ भवि० ॥ ७ ॥ तीन कोमि ३०००००० अरु अडसठ लाख ६८००००० सहस बयालीस ४२००० एपदभाख ॥ भ० ॥ इतने पदसैं अंग इग्यारं । केरी गणना भवि चितधार ॥ भ० ॥ ८ ॥ बारम दृष्टिवादको मान । असंख्यात पदको पहिचान ॥ भ० ॥ इणको चउदपूरब इकदेश । इसको पारलह्यो है गणेश ॥ भ० ॥९॥ एह दुवालस अंग उदार । एहनी जईयै नित बलीहार ॥ भ० ॥ एहनी द्रव्य भाव बहुभक्ति । करीयै धरीयै जिनपद युक्ति ॥ भवि० ॥ १० ॥ रत्नचूरु नृप सुखमाधार । जिन श्रुतभक्ति करी हितकार ॥ भ० ॥ भये जिनहरष परमपददाय । जिनके सुर नर पति गुनगाय ॥भ०॥

॥ ११ ॥ (काव्यं) अन्नाणवल्ली वन वारणस्स । सुबोहि बीजांकुर कारण स्स । अणंत संसुद्ध गुणालयस्स । णमो दयामंदिर सद्धुयस्स ॥ १२ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री श्रुतायनमः ॥ इति श्री श्रुतपूजा ॥ १९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २० तीर्थप्रन्नावन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ प्रावचनी १, अरु धर्मकथी २। वादि ३, निमत्ती ४ जांण । तपसी ५, विद्या ६, सिद्ध ७, बलि । कवी ८, एहमुनिन्नांण॥ १ ॥ न्नावतीर्थ प्रन्नूकह्या । प्रन्नावीक एअष्ट । तीर्थप्रन्नावन जेकरै । ते फलजहै विशिष्ट ॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग धन्यासिरी) तेजतरणि मुखराजै (ए चाल) ॥ पर न्नावन जयकारा । (अहो जयकारा) तीरथ परन्नावन जयकारा ॥ जिन सेंन्नवसागर जलतरीयै । ते तीरथ गुणधारा । तीर० ॥ १॥ जिनके गणधर तीरथ कहीयै । बलि सहु संघ सुखकारा । एह महातीरथ पहिचानो । वंदि लहो न्नवपारा ॥ तीर० ॥ २ ॥ अनसठ लौकिक तीरथ ताजि करि । न्नज लोकोत्तर सारा । द्रव्यन्नाव दोयन्नेद लोकोत्तर । थिर जंगम न्नयहारा तीरथ० ॥ ३ ॥ पुंमरीक परमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा । एह वर तीरथ थावर कहीयै । दीठां दुरित विदारा ॥ तीर० ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख वीशजिन । विहरमान न्नवतारा । दोयकोमि केवलि विचरंतां । जंगम तीर्थ उदारा ॥ तीर० ॥ ५ ॥ संघ चतुर विध जंगम तीरथ । जिनशासन न्न जीयारा । वरअनंत गुण न्नूषण न्नूषित । जिनकूं नमत जिनसारा ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ ए तीरथ परन्नावना करीयै । सुन्नन्नावना आधारा । शिवकज जल विंशति तम पदकी । जानुं प्रतिदिन बलिहारा ॥ तीर० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परन्नावना करतो । मेरुप्रनू अविकारा । पद जिनहरष लहीनें तरीया । न वन्नय जलधि अपारा ॥ ८ ॥ तीर० ॥ ॥ (काव्यं) महा महा नंद पद प्रदाय । जगत्त्रयाधीश्वर वंदिताय । जिनश्रुतज्ञान पयोनदाय । नमोस्तु तीर्थाय शुन्नंददाय ॥ ९ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री तीर्थायनमः) ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विंशति पद स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (गरबो) सुणिचतुर सुजाण परनारीसुं प्रीतनी० (ए चाल) ॥ ॥ ❀ ॥ चितहरषधरी, अनुन्नवरंगै, वीश परमपद वंदीयै । शिव रमणि

वरी, केवल सखीय सहाय, करी चिरनंदीयै (आं०) एवीशचरण अशरण शरणा। चिरसंचित दुरित तिमिर हरणा । नित चित एपद समरण धरणा। चि० ॥ १ ॥ एपद समरण जिण चितधरीया। तरीया तरसै तरै भवदरीया। सदनंत भविक सहु भयहरीया ॥ चि० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर मनुहारा। वरणन तरणीयै वहुहारा। इंद्रादिक सुरन लह्यो पारा ॥ चि० ॥ ३॥ एपद अतिशय महिमाधारा। आश्रितपद कमला भरतारा। जिनचंद्रा नंद घनपद कारा ॥ चित० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदकै शिवकरणा। चंद्रामल गुण विंशति करणा। हुइज्यो प्रभुअरजए अवधरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति श्री समस्त विंशति पदस्तुति ॥ २१ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एवीशथानक भुवननंदन अघ निकंदन जानीयै। विबुधेंद्र चंद्र नरेंद्र वंदित पद जिनेंद्र बखानीयै । ए वीशपद भव जलधि तारन तरण गुन पहिचानीयै । इमजानि भविजन कुशलकारन वीश पद उर आनीयै ॥ १ ॥ इहवरस चंद्र दिनेंद्र हरिमुख विधि नयन गिति मिति धरू। तिह मासभाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रविवासरू । बंगाल जनपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरू। सहु नगर सोभित अजीम गंजपुर दुतीय वालूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतर गणेसर विजित सुरगुरु विमल गुण गिरिमाधरा। गुणभवन भविजन नलिन कानन नित विकासन दिनकरा मुनिचंद्र श्री जिनलाभ सूरिंद सुगुरु महीयल युगवरा। सकलेंद्र वंद्य जिनेंद्र शासन मंमना नित हितधरा ॥ ३ ॥ तसुपट्ट उज्जल शिखरि गणवर उदय गिरि वासरकरा। योगींद्र वृंद नरेंद्र वंदित चरण पंकज गणधरा । आचार पंच छत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा। युगप्रवर श्री जिनचंद्रसूरी गुरु सकल सूरीसरा ॥४॥ तसुचरण कमलज युगलसेवन अहनिशिमधुकरता धरी। वलि सुगुरुपद अरविंद युगनी कृपा नित चित आदरी । गणधार श्री जिनहरषसूरी हरष धरी घन अघहरी। या वीशपदकी विविधि पूजन विधितणी रचनाकरी ॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुतिमयःपूजा विधि ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीशस्थानककी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण नवपदके गुन गायरे (एचाल) ॥ ❀ ॥ पियाविंशतितिथान मंगल आरती गायरे (आं०) सुमति प्रिया कहै चेतन पति को । निसुण वचन मनआयरे ॥ पि० ॥१॥ यदि निजगुण परणति तुमचहीयै तिनको एह उपायरे । ॥ पि०) ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक । साधु सकल समुदायरे ॥ पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशतिपद समरण । नवनय हरण विधायरे ॥ पि० ॥ एह आरती दुरति वारती । अनुपम सुरसुखदायरे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसें जगतै करत आरती । सकल सुरा सुर रायरे ॥ पि० ॥ तैसें नवितुमे करन आरती । एपद गुण चितलायरे ॥ पि० ॥ ४ ॥ पंच प्रदीप सें करय आरती । जेनित चित उलसायरे ॥ पि० ॥ तेलही पंच चिदा नंद घनता ॥ अचल अमर पद पायरे ॥ पि० ५ ॥ पंचप्रदीप अखंडित ज्योतै । दुरमती तिमिर विलायरे ॥ पि० ॥ एहआरती तुरत तारती । नवजल निपतत घायरे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पद जिनहरषतणी एकरणी । मन हरणी कहिवायरे ॥ पिया० ॥ चंद्र विमल शिव सिद्धि निधि धरणी । वरणी किणविध जायरे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति वीश थानक आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्रग्धरा छंद काव्य तीन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ योजीमुतां जनोघां, जन गिरिसदृशां, काग्निकेतु प्रमुक्तो । दुर्वार स्फार पंको त्कट तर समर, व्रातता गम्परूपा । अव्याबाधा व्ययो द्यत् पर म पद दशां सदृशां योविनर्त्त । योनित्यं क्षायिकाख्या क्षय विमल लसत्तै लपूर्त्ति दधानः ॥ १ ॥ स्वाभ्रादौ द्दामध्वामो ज्वलद तुलकल प्रज्वल ज्ञात वेदौ । ज्वाला माला कुलांगा जनित भव महा रण्य जातंक संगाः । यत्रा नेके पतंगाः कुमत मिमतयो जीजनन्नष्टरंगा । नस्मी भावं स्वकीयं सकल भयहरः शंकर प्राणनाजां ॥ २ ॥ प्रध्वस्तां नंतचंच त्किरण गणलस त्सप्त संतिप्रतापो । लोका लोकाव लोका स्खलित विमलतो दग्रजाग्रत्प्रकाशः। त्रैलोक्या नंदन स्सप्रकृत कुशलक्ष क्रंदन श्चामरेंदै । श्रीवामानंदनोयं जगति विजयतां जैनचंद्रः प्रदीपः ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

यह तीन काव्य आरती कियां पीछे, दोनुं हाथ जोडके कहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वरा ष्टमद्वीपांतर्गत द्वापंचाशज्जिनप्रासाद शाश्वत जिनप्रतिमार्च्चन विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण जयकार । अश्वसेन नंदन चरण । शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी समरणकरी । सकल जीव सुखकार । कहिशुं नंदीश्वर जगत । पति पूजन विसतार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ अखिलद्वीप सिरताज विराजै । अष्टमनंदी श्वर द्वीप द्वाजै । बलयाकार जगत सुखकारी । निरुपम अतिशय गुण म णि धारी ॥ ३ ॥ (उल्लालो) ॥ मणिधारि वावन विमलगिरवर जैनमंदिर युतसदा । शुभभक्तिधर निर्जर पुरंदर निरखिपांमे संपदा । इककोटि शत त्रि ण सठिकोटिय चौरासिलख योजना । इण द्वीपनो चक्रवाल विष्वंभ मान जाणो भोजना ॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ इणद्वीपै पूरब दक्षिण आसा । पश्चिम उत्तर दिश चउ पासा । चक रंजनगिरि सुखमा धारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ ५ ॥ (उल्लालो) धरचारि निज द्युति भर विनिर्जित, सजल जलधर घनघटा । वलि चतुरशीति सहस्रयोजन तुंगता धरतास्फुटा । इणप्रवर अंजन शिखर शिखरें शाश्वता जिनमंदिरा । चउसंख्य सुंदर कनक कल शोपमधरा जग सुखकरा ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ इक इक अंजनगिरि चउपासा । चउपुष्करिणी प्रकट प्रकासा । विस्तर इगलख योजनसारा । ता सुमांहि इक इक उदारा ॥ ७ ॥ (उल्लालो) इक इक उदारा सहस्र चउ सठि योजनोन्नतता कुला । जिनराज मंदिर मंडिता सहु चंद्र किरण समु ज्वला । दधिमुख धरा धर दीर्घका प्रति विदिशि दोय दोय रतिकरा । दश सहस्र योजन उन्नता धर उदय करुणा रुणवरा ॥ ८ ॥ (ढाल) ॥ जिनमं दिर युत रतिकर विमला । पूरबदिशि तेरस सहु अचला । एहरीतिपर त्रिणदिशि जांणो । इम वावन्न गिरेंद्र वखाणो ॥ ९ ॥ (उल्लालो) ॥ इक खाण शतयोजन सुदीर्घा बहुत्तर योजन प्रमा । अतिउन्नता पंचासयोजन विस्तरा जिनगृहसमा । शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा पंचशत धनुरुन्नता । इणरीति प्रतिप्रासाद प्रतिमा जाणीयें बिंबशाश्वता ॥ १० ॥ ❀ ॥

(दोधक) रुषभानन चंद्रानना । वारिषेण वधमांन । एजांणो शाश्वत

सकल । जिनप्रतिमा अभिधान ॥ ११ ॥ सुरगिरि सिखरै जिनतणो । जिन न्हवणोत्सव सार । करिकैं नंदीश्वर जई । हरिगण विबुध उदार ॥१२॥ अनुभव रसयुत भक्तिधर । हृदय सरोज मझार । इणपरि शाश्वत जिनतणी । करइ पूज अतिसार ॥ १३ ॥ पूरबदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जिनराज । अरु विध पूजायें सदा । अरची जै हितकाज ॥ १४ ॥ प्रथम पूज जिनराजनी । विमलजलै भरपूर । करियै न्हवण सदाभवी । होइ सकल दुखदूर ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशिझलहोरे देवा (ए चाल) ॥ ❀ ॥ मिलिकरि सकल सुरासुरारे वाला । निज सेवक सुरपासेंरे । क्षीरजलधि मागध थकी रे वाला । सिंधुनदी गंगासेंरे ॥ १ ॥ बलि वरदाम सुतीर्थसेंरे वाला । विमल सलिल अणावैरे । मणि कनकादि कलस भरीरे वाला । औषधि कुसुम मिलावैरे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु सुरगणारे वाला । शाश्वत जिन न्हवरावैरे । विमल सलिल धाराकरीरे वाला । कुमति तापनें गमावैरे ॥ ३ ॥ इण परि जेभगते भवीरे वाला । न्हवणकरै जिनअंगैरे । ते सुरवर सुख अनुभवैरे वाला । लहै शिवपद मनरंगैरे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरारे वाला । करइ जिणिंद गुणगानारे । कुशल कुमुद विकसायवारे वाला । प्रभु शिव चंद्र समानारे ॥ ५ ॥ (काव्यं) दुरितदाव वना तप वारणं । सकल भाव विकाशन कारणं । जगति भव्य भवोदधि तारणं । जिनगणं स्नपयाम्य महं जैर्जलै ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मनेभ्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः । प्रणत सकल सुरासुरेंद्र वितेंद्रवृंदविहितभक्तिभ्यः । कठिन कर्मशैलमालोन्मूलनवा रणेभ्यो । जन्म मृत्यु निवारणकारणेभ्यो । नंदीश्वराष्टमद्वीपगत । पूर्वांजनगिरी शिखरस्थ । सिद्धायतन मंम्नाय मानेभ्यः । श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधाना ष्टोत्तरैकशत शाश्वतजिनेंद्रेभ्यो । जलं यजामहे स्वाहा इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोधक ॥ ❀ ॥ द्वितीय पूज जिनराजकी । करहु भक्ति भरसार । वर सुगंध द्रव्यें करी । तरहु सिंधु संसार ॥ १ (राग भीमपल्हार) मेघव रसै भरी पुष्पबादल करी (ए चाल) ॥❀॥ भक्तिधरि भवीयजन पूज महा

राजकुं। एह वरगंध द्रव्यै सदाई। विमल घनसार चंदन सरस मृगमदा। कुंकुमें कर विलेपन मुदाई॥ १ ॥ भक्ति० ॥ जेभवी सुरभितर गंध द्रव्ये करी। सुरभि तनुकरै जिनराजकेरो। तेहनी चंद्रकर अमल यशवासना सुरभितम करइ सहुजग घणेरो ॥ २ ॥ भक्ति० ॥ एमवर सुरभितर द्रव्य सें सुखरा। अरचकरि जगतपति बिंबसारा। परम शुभभावना भावता। गावता। विशद जिनवरगुणा अति अपारा ॥ ३ ॥ भ० ॥ सकल सुरगण मिली एमजंपै मुदा। भोसुरा आज जिनराज अरचो। विरति गुण रहि त निजजन्म सफलो कीयो। सुमति संयोग कुरमति विगूचो ॥ ४ ॥ भ० ॥ तीय इमपूज करतां हरइ भव्यनो। पाप घनताप आपें अपारा। सरग निरवाण पुरपंथ प्रकटीकरण। विशद शिवचंद्र करगण उदारा ॥ ५ ॥ (काव्यं) मृगमदो ज्ज्वल कुंकुम चंदनै। श्चिरतनांतर ताप निकंदनैः। जिन वरानव तामस भास्करान्। स्वहित कृद्भिथयेच समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमात्मनेभ्यो ऽनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः। कठिन कर्मशैल मालोन्मूलनवारणेभ्यो। जन्म जरा मृत्यु निवारण कारणेभ्यो। नंदीश्वरा ष्टमद्वीपगत पूर्वांजनगिरि शिखरस्थ। सिद्धायतन मंरुनाय मानेभ्यः। श्री रुषभानन चंद्रा नन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो। श्रंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीय गंध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ दोधक ॥ ❀ ॥ तृतीयपूज जिनराजनी। विकसित अतिहि रसाल सुरभि कुसुमकरी भविकजन। करीयै भक्ति विशाल। १ (राग भैरवी) पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल) ॥ एह जिनकी पंकहरणी भगती सारी। मिलकरि हरिवर सकल सुरासुर। त्रिकरण इककरि हितकारी ॥ १ ॥ (एहजिनकी०) अनुभव रसयुत चित्त भक्तिधरि। पूरव पुण्य उदयभारी ॥ एह० ॥ इण विध कुसुम भक्ति जिनवरकी। करइ हरइ घन दुरितारी॥ एह० ॥ २ ॥ मालती नाग पुन्नाग केवडा। दमणक कुंद सुगंधि धारी ॥ एह० ॥ मरुक केतकी पद्म मोगरा। कुसम मालकरि मनुहारी ॥ एह० ॥ जिनवर कंठठवै प्रभुआगलि। कुसुम पुंज धरि दुःखवारी ॥ एह० ॥ इण विध पुष्प

भक्तिकरी भविजन । वरइ सकलजग शिरनारी ॥ ४ ॥ करिकै शुक्ल ध्या न पावकसें । भस्म विषम सम कम वारी ॥ एह० ॥ चिदानंद घन शिव चंद्रोपम । पामें अति गुण विस्तारी ॥ एह० ॥ (काव्यं) भव दवानल ताप घनाघनं । कुशल चंदन नंदन काननं । विशद शारद चंद्र समाननं । जि नगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मनेभ्यो अनंता० ॥ प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना भिधानाऽष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्योपुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ४ धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ जगनायक जिनचंदनी । एह चतुर्थी जांण । धूप पूज करीयें सदा । हरीयें कुमती अनाण ॥ १ ॥ (राग मालवी गोमी) ॥ सव अरतिमथन मुदारधूपं (ए चाल) ॥ जग कुशलकारि अघालिहरणं । धूपपूज उदाररे । धूप अनलै कुगति दुखभर । फलद दहत अपाररे ॥१॥जग० सरस चंदन अगर अंबर । मृगमदा घनसाररे । कुंदरुक वली सेउहारस । करी यें गंधवटि सारे ॥ २ ॥ जग० ॥ रतनमय वर धूप धाणो । धूपभृत कर धारे सुर पुरंदर पूजकरतां । लहै लाभ अपाररे ॥ ३ ॥ जग० ॥ धूप परिमल म हमहै जिम । तेम भुवन मझारे । धूपपूजा ते भविकनो । गुणसुगंध विचारे ॥ ४ ॥ जग० ॥ भवअंध कूप पतंग उधरत । धूप अरचन धारे । कहत ग णि शिवचंद पाठक । पूज चउथी सारे ॥ जग० ॥ ५ ॥ (काव्यं) भवसु दुस्तर वारधितारकं । विषयसौख्य विकार निवारकं । निरुपमोत्तर मंगलका रकं । जिनगणं घृत धूप करायजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्म० श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो धूपंयजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति चतुर्थी धूपपूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) दीपकपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ दीपपूज इह पंचमी । करीयें विविध प्रका र । दीपपूज करतो भविक । दीपै जगतमझार ॥ १ ॥ (राग कल्याण) तेरी पूजाभणी तेरसमें (ए चाल) ॥ मेरी लगीय प्रीति प्रभुचरणें २ ॥ निजगुण

परणति करण करावण । सकल लोक सुखकरणें ॥ मेरी० ॥ १ ॥ गहिर सिंधु नव निपतीत तारण । तरण तरणि गुणधरणें ॥ मेरी० ॥ अनंतरूप धर दुरगति नयहर । परमज्योति अधिकरणें ॥ २ ॥ मेरी० ॥ करुणाधार विमलगुण आगर । निरुपम अशरण शरणें ॥ मेरी० ॥ ए जिनचरण दीप पूजनसें । अरचीजै दुखहरणें ॥ ३ ॥ मेरी० ॥ केवल विमल चिदानंद ल हीयै । दीपपूजके करणें ॥ मेरी० ॥ रतनदीपसें करै आरती । हरषित जिन गुण वरणें ॥ ४ ॥ मेरी० ॥ ए प्रनुचरण सेव नवि जनकुं । अमित पद सुवितरणें ॥ मेरी० ॥ कुमति रजनी अग्यान तिमिरहर । वर शिवचंद्र सुकिरणें ॥ मेरी० ॥ ५ ॥ (काव्यं) मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरुकषाय करेणु समीरणं । मदधरा धरता बल वैरिणं । जिनगणं प्रयजे सुप्रदीपकै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने० । प्रणत० । कठिन० । नंदीश्वर० । श्री रुषभा नन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना, भिधाना ऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जि नेंद्रेभ्यो । दीपं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ (दूहा) ॥ उठी अक्षत अरचना । करियै धरि सुनभाव । वरियै सिद्धिवधू परम । अक्षय सुखनोदाव ॥ १ ॥ (राग सारंग) हां होरे देवा बावन्नाचंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) ॥ हांहोरेवाला ॥ एजगदीशर हि तकरू । अलवेसर जिनमहाराज ए (हांहोरेवाला) अतिगहिरा नव जल धि तें । प्रनु तारण तरण जिहाजए ॥ १ ॥ (हांहोरे०) नीमकरम कुंजर घटा । नंजन मृगराज समानए (हांहोरे०) नव्यकमल प्रतिबोधवा । ए प्रनु वासर महिरानए ॥ २ ॥ (हांहोरे०) रजतशालि तंउलमयी । अक्षत पूजन अग्रसारए (हांहोरे०) ए पूजा जिनचंद्रनी । वांछित सुखनी दातारए ॥ ३ ॥ (हांहोरे०) ठवण जिनंद दरशण अजे । अनुनव रस तरुनो कंदए । (हांहोरे०) नाव जिणेसर दरशनो । कारण कह्यो सकल जिणंदए ॥ ४ ॥ हां० ॥ ए पाठक शिवचंद्रनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ हां० ॥ प्रतिनव हुइज्यो एकही । उठी अक्षत पूजा सारए ॥ ५ ॥ (काव्यं विजित मं दर नूधर धीरतं । निहत सागर राज गंनीरतं । प्रजित पातक योध सुवीरतं

जिनगणं यजे ऽक्षतपूजया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्योऽनंता० प्रणत० । कठिन० । नंदीश्वरा० श्री रुषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना भिधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो ऽक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति छठी अक्षत पूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) हिव पूजा नैवेद्यनी । सप्तम अतिह रशाल । करीयें जिनवरनी अचल । लहीयें मंगल माल ॥ १ ॥ (राग) जिनगुणगानं श्रुत अमृतं (ए चाल) ॥❀॥ जिनवर दरसण वर अमृतं । एजिनदरसण अम्रित फरसैं । पामें अनुपम कांचनतं । तिणसें सुरपति प्रभुदरसण वरि । भगतें गावै जिनचरितं० ॥ २ ॥ जिन० ॥ मोदक घृत वर खज्जक परमुख । वरनै वेद्य सरस धरितं । हरि गण गज प्रभु आगलि ढोवै । मणि मय कनक थाल भरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥ जेनैवेद्य करी जिन पूजन । करइतेह जग मन हरितं । अतिही स्वादु सुर गति शिव पद सुख । तति नितसेवै भविं तुरितं ॥ ४ ॥ जिन० ॥ विंशति पदमें एजिनपति पद । वर शिवचंद्र विमल अनितं । इण पद सेवक भविजन केरो । संचित भूरि हरइ दुरितं ॥ ५ ॥ जिन० ॥ (काव्यं) अनंत विज्ञान मयस्वरूपं । समस्त लोक त्रय भूति भूपं । जसद्गुणौघा मृत चारु कूपं । यजेसु नैवेद्य चया जिनौघं ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो० । प्रणत० । कठिन० । नंदी० । श्रीरुषभानन, चंद्रानन, वारिखेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैक शत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (८) फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ जिन फल पूजा अष्टमी । कष्ट अनिष्ट विदार । करीयें सुभभावें सदा । भरीयै पुण्यभंडार ॥ १ ॥ (राग धन्या सिरी) तेज तरणि मुखराजै (ए चाल) ॥ सुरनायक जशगावै । जिनजीको सुर० (आंकणी) निरमल मन वच काय करणतें । झुकि २ सीस नमावै । सुर अवतार सफल भयो मेरो । जिनपूजन सुपसावै ॥ १ ॥ जिनजीको सुर० नयन चकोर चंद्र समज्योती । संचित दुरित पुलावै । निरखि निरखि मन

मोहन मूरति । आनंद अंग न मावै ॥ २ ॥ जिनजीको० ॥ नालिकेर ना रंगी कवला । केला आम्र अणावै । पुंगीफल दाडिम परमुख फल । जि नवर चरण चढावै ॥ ३ ॥ जिन० ॥ जेनवि फल पूजा जिनवरकी । करै करावै भावै । अनुमोदै तेपरम चिदानंद । घन अमित फलपावै ॥ जिन० ॥ ४ ॥ वरसअढार द्विहोत्तर जेठे । प्रतिपद सुकल सुहावै । चंद्र सूनु वासर जयनगरै । खरतरगछ जगचावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिन हर्षसू रि सूरीसर । विजयमान वडदावै । रूपचंद्र गणि पाठक पारिंद्र । वादींद्र विरुद धरावै ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ तासुशीश वाचक पुण्यशील शिष्य । स मय सुंदर कहिरावै । तासुशीश पाठक शिव चंदें । पूजरची मनभावै ॥ ७ ॥ जिनजी० ॥ जेनंदीश्वर शास्वत जिनकी । वसुविध पूज रचावै । ते जन सकल लोकके ईश्वर । तीर्थंकर पद पावै ॥ ८ ॥ जिन० ॥ (कलश) सुर पति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकज मघहरं । सद्द्वीप नंदीश्वर जिनालय, परमतर सुखमाकरं । अतविशद हिमकर चंद्रिकामल निखिलगुण मणि सागरं । जिनराज गण मह मर्च्चये वर फलचयैः करुणाकरं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो० । प्रणत० । कठिन० । नंदी० । श्री रुषभानन, चं द्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना भिधानाष्टोत्तरकैशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो फलं यजा महे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इत्यष्टमी फल पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूरबदिशि अंजन गिरी । मंदिरगत जिनराज । अष्टविध पूजायै सदा । अरचीजै हितकाज ॥ १ ॥ पूरब प्रमुख चिहुंदिशै । पुष्करणी अभिराम । दधिमुख चनमंदिर जिना । अरचीजै शुभकाम ॥ २ ॥ ईशानादिक विदिशि गत । वसु रतिकर गिरिराज । मंदिरगत जिनराजकी । रचीयै पूजसमाज ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशिअंजनगिरी । मंदिरगत महाराज । वसुविध पूजायै सदा । पूजीजै हित काज ॥ ४ ॥ दक्षिण अंजन शैलनै । चनदिशि दधिमुख सार । चनमंदिर जिनरायकी । करीयै पूजउदार ॥ ॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकै । विदिशें अतिह उदार । अष्ट रतिकर गिरिवर जिना । पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशि अंजन गिरी ।

मंदिर जिन महाराज । वसुविध पूजायें सदा । पूजो भविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधिमुखधार । चउ मंदिर जगनाथकी । पूजकरो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै । विदिशै जग हितकार । अरु रतिकर गिरि जिन प्रतें । अरचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्त रदिशि अंजनगिरी । मंदिर गत जगराय । अष्टविधार्चनसैं भविक । अर चो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजन शैलनें । चउ दिशि दधिमुख । नाम । चउ मंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुभपरिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशाना दिकै । विदिशै रुचिराकार । वसु रतिकर गिरि जगप्रभू । पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वजि जेठमल । कोठारी चितचंग । इनके आग्रह सैं करी । एहपूज मन रंग ॥ १३ ॥ इति नंदीश्वरद्वीपकी पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीप वरेष्टमेहम् । सुगंधि तीर्थामि जलैः सुभक्तए । जिनेश्वराणां स्नपयामि मूर्त्तीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरे । अष्टम द्वीपे । श्रीमत्शाश्वत जिनेश्वरेभ्यो । जलं० ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूर स चंदन कुंकु मैश्च । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ २ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा०।नंदी०।विकास भाक् शुद्धसुगंधि पुष्पैः । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ ३॥❀॥स्वर्वासिवा से० नंदी० । तुरुक्क कृष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयच्छामि जिनेश्वरेभ्यः॥ ४ ॥ ॥❀॥स्वर्वासिवा०। नंदी०। सुनिर्मलाज्येन भृतैः प्रदीपैः । कुर्वे प्रमोदा ज्जिन राज पूजाम् ॥ ५ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयं पुरस्ता ज्जिन पुंगवानां। सदक्षतौघा नुप ढौकयामि ॥ ६ ॥❀॥ स्वर्वासि० । नंदी०। स्वयं पुरस्ता० । नैवेद्य जातान्युप ढौकयामि ॥ ७॥ ❀ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयंपुर० । फलानि चाग्रयाण्युप ढौकयामि ॥ ८ ॥ ❀॥ इत्थं जिनानां प्रविधाय पूजां। सद्द्रव्यतो भाव विशुद्धिभाजः । भव्यांगिनो मुक्तमतो लभंते । स्वर्गंच मोक्षं विरहाद्भवस्य ॥ ९ ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनंदीश्वराष्टमे द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय पूजा विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तहां पहला पूर्वदिशिमें चौमुख पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व दिशिके बीचमें अंजन गिरीके चौमुख आगे । अष्टद्रव्य ना लेर पांन थापना लेकर खमा रहै ॥ नमोर्हत् सिद्धा० ॥ शिखरणी छंद ॥ दि शी श्रीपूर्व्वस्यां सुरवर युतै देवरमणैः । स्फरत् तुंगे शृंगे जलदसदृशौ कज्जल गिरौ ॥ जगत्पूज्ये सिद्धायतन नदिते भूमि विदिते । नमो नंदीद्वीपे रुषभ जिननाथादि विभवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हंपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्ति ये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीरुषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाननामा नो एकशत चतुर्विंशति अधिक शाश्वत जिननाथाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं । दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं ॥ यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥❀॥दधिमुखपर्वतपूर्वदिशिमें(पूर्ववत्)द्रव्यलेकेखडारहै।❀॥

॥ ❀ ॥ शिखरणी छंद ॥ ततः प्राच्यां वापी विमलसलिला देव रमणा । दनंद्या नंद्याकाजल जलजिता तोरणभृता । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्य निलये । नमंस्तत्र श्रीमद्दषभजिननाथादि विभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँपरमा० अष्टद्रव्यंयजा० ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ दधिमुखपर्वत दक्षिणदिशिमें ॥ शिखरणी छंद ॥ तदैताद्रेरम्या च लद नल सत्तोय निवहा । शुभ्रा मोघाप्राच्यां भ्रमर निकरैर्नंकृतितरा।तदुत्सं गाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्य निलये । नमस्तत्र श्रीमद्दषभजिननाथादि विभवे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुखपर्वतमें ॥ शिखरणी छंद ॥ प्रतीच्या माशा यां तदधि गिरितौ मंजुलधरा । सुवापीगोस्तूपा सुर सरदिवा भांति सततं । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्यनिलये । नम स्तत्रश्री मद्वृषभजिननाथा दिविभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशिमें दधिमुख पर्वतपर ॥ शिखरणी छंद ॥ उदीच्यां सो पाना वतर दमरस्त्री व्रजवदा । सुदर्शाद्यानांता तदचलवरा त्पुष्करणिका॥तदु

त्संमाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्यनिलये । नमस्तत्र श्रीमद्वृषभ जिननाथादि विम्बवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं य० स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईसानकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ वसंततिलकाछंद ॥ वाप्यंतरे र तिकरः प्रथितावदातः । ईशानगो गिरिवरो मगनाश्रितश्च॥ तत्रस्थ चैत्य रुष भादि जिनेश्वराणां । वंदे मुदाविशद बिंब मुदारवृत्त्या॥१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॥ ❀ ॥ ईशानकूणमें दूसरा रतिकरपर्बतपर ॥ काव्यं ॥ तादृक्वरो रति करोपि तथा द्वितीयः। शैल स्सहोदरइव प्रचकास्ति यत्र । तत्रस्थ चैत्य रुषभा दि जिनेश्वराणां। वंदे मुदा विशदबिंब मुदारवृत्त्या ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्ट द्रव्यंय० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्नि कूणमें प्रथम रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ अग्न्याश्रितो रति करो रति मूर्त्तिरूपः । स्वर्गागणो वसुमतीव तथेव तस्य । तस्मिन् जिनालय वरेजगदीश्वराणां । रूपं ततोस्मि नरजन्म फलाभिलाषो ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीऽर्हं० अष्टद्रव्यं० य० इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀॥ ॥❀॥

॥❀॥अग्निकूणमें दूसरा रतिकर पर्वतपर ॥काव्यं॥तत्रैव तत्समधरस्समपंक्ति तोभ्यो।गोत्रोत्तमो रतिकरो नरदेवकाम्य॥तस्मिन्जिना०रूपंततो०ॐ ह्रीं०॥९॥ ॥ २ ॥ नैरुतकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नैरुत्यगो रतिकर स्सुरशैल कीर्त्तिः ॥ विस्फूर्त्तिमूर्त्ति विजितः शुशुभे सदैव ॥ तत्रस्थ जैनभुवने भुवनो त्तमत्वे । संस्तोमि साधुरुषभादि प्रभुं सदाभं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं अष्ट द्रव्यंय० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुतकूणमें दूसरे रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैव पार्श्वप रिवर्त्ति नगाधिराज ॥ स्तदुल्यगो रतिकरो द्युतिभृद्दिगंतः । तत्रस्थजैन० ॥ संस्तोमि० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० । अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकूणमें पहिले पर्वत रतिकरपर ॥ काव्यं ॥ गीर्वाण वर्गग तिदः शुभदो जनानां । वायव्यगो रतिकरः कुधर स्तथैव । तत्रापि पारगत मंदिरबिंब वृंदं । नित्यं नमामि वृषभादि जगत्प्रभूणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकूणमें दूसरे रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्सदृशो रति करः सुख चारुभूमिः । पद्मानुराग इतरः कलकेलि सद्म । तत्रापिपारग० । नित्यं नमामि० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं । अष्टद्रव्यं यजा० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरि पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्राछंद ॥ योदक्षिणस्यां दिशिजातिनित्यं । द्योतांजनाद्रीरमणीय ताद्रः । तस्योपरस्थे जिनराज चैत्ये । नौमि स्वयंभू रुषभादिजातं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० ॥१४॥

॥ ❀ ॥ पूर्वदिशि पुष्करणी दधिमुख पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्पर्वता त्प्राक दिशि राजमाना । नंदोत्तरा पुष्करणी प्रधाना । दद्याननाद्रेः तदगाधतोये । चंद्राननाद्यं प्रणमामिसद्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० स्वाहा ॥ १५ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरिदधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नित्योद्योता दंजना दक्षिणस्यां । नंदावापी सार्वनाम तदंतः ॥ दध्यास्याद्रौ चंद नाद्यै र्नजामि॥प्राशादै श्रीवर्द्धमानादि सार्वं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥१६ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिमदिशि दधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं॥तस्यैवाद्रेः पश्चिमायां सु नंदा । तस्यामध्ये श्रीदधिस्यान्न गेंडुः । तस्मिन्चैत्ये श्रीजिनाधीश जालं । नामंनामं तंनमामि प्रकामं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० स्वाहा ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि वाप्यां दधिमुखे ॥ काव्यं ॥ उदीचीना दीर्घिका नं दिवर्द्ध नीसान्वर्था तन्नगा तत्रसंस्थै । जैनावासै वारिषेणादिबिंब । मत्वानाथे मुक्तिसौख्यंनितांतं॥१॥ॐ ह्रीँ श्रीँ॥अर्हंपरमात्म० अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥१८॥

॥ ❀ ॥ इशानकूणें प्रथमरतिकरविषै चैत्य० ॥ काव्यं ॥ रतिकरोस्ति जि नालय माश्रितो । विदिशि नैरव दैवत एतयोः । तदचलै रुषभादिजिनेश्वरं समनुनम्य रामितदंतिके ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० स्वाहा ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईशानकूणे द्वितीयरतिकरपर्वते ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ तदपरोपि तथैव तदन्वितो । जिननिकेतन केतु सुमंडितः । तदचले रुषभादि जिनेश्वरं । समनुनम्य रामित दंतिके ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मा० स्वाहा ॥२०॥

॥ ❀ ॥ अग्निकूणें रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ रतिकरो जिनराज गृहांकितो । लसतिवन्हि बिदिग् क्षितिभूषितः । तदपरस्तदगे रुषभादिकं । नमत नाथ मनाथ सनाथकं ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्म० ॥२१॥

॥ ❀ ॥ अग्निकूणेंदूजे रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ तद परापरगो नग नायको। रतिकर स्तादितै जिनमंदिरै । नति तति प्रतिरोह तुमामकी। लसदनं त गु णाकरते प्रभो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमा० स्वाहा ॥ २२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैऋतिकूणें प्रथमरतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ विदिशि नैर्ऋतिगे जिनपालये । रतिकरे रुषभादि स्वयंभुवं । सुमनसा सुमनोभि रितोजनात् । यजत भव्यजना अतिभावतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुतें दूजे रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ तदितरः सम सीम धरा धरो । रतिकरो विभवेश्म विभर्त्तियः । तदचले जिनराज जगद्गुरु सतत नौमि मुदा रुषभादिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमा० स्वाहा ॥ २४॥❀॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकूणें प्रथमरतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ अनिल देव विदिग्धरणीधरो । रतिकरो जनतोस्ति तदिद्रगे ॥ भवतुमे रुषभादि ज गत्पतौ । सतविधानमनंत मनंतशः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्ये दूजे रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ रतिकरोपि तदन्यतरस्तथा । शिरसितस्य जिनायतने यथा । दधतुमे जिनपुंगवचंदना ॥ विधिवदंग भव त्यदपंकजै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं ॥ २६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरि विषै चैत्यपूजाः ॥ काव्यं ॥ नंदीश्वरे नंदित पश्चिमायां । स्वयंप्रभः सुप्रभ यांजनाद्रिः॥ तज्जैन सद्मे गतभीतिभद्मे । भजामिभक्त्या वृषभादिवृंदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ २७ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरिसें पूर्वदिशि दधिमुखपर्वतें चैत्यगृहआगें ८ वस्तुलेईपढे ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ दधिमुखगिरि भद्रा वाप्यां रराजत दंजना । दधिनिचैत्ये पौरस्त्याया सुरासुर सेवितः । जिनपतिगृह तस्मिन्नृधौ जिनं रुषभादिकं ॥ नमनविषयी कृत्यास्वादं सुधारस जं लभे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ २८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशि दधिमुखरेविषे चैत्यचौमुखआगें अष्टप्रकारपूजा ॥ ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ कलजलविशालायांवाप्यांतदेवनगांजनात । दिनकर करा धौ धौ पाच्यां दधीतमुखा चलः । तदचलवरे देवावासे प्रभोचरणां बुजे । परमशरणं प्राप्यानंतं मुदं लभितोस्मिते ॥१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥२९॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुख चैत्यः ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ कमकु मुदा वाप्यांतस्मा द्विलोचयतो जनात् वरुणककुभिः श्रीदध्यास्य स्तदङ्ग परि स्थिते। जिनपवसतौ श्रीमज्जैना कृतिं विधिवदनृशं। प्रणति तति निर्नत्वा नाथे स्वकीयसुखास्पदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि दधिमुखचैत्यआगे अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिर णीछंद ॥ जलधिसदृशां पुंडरियाद्याकिणीकिलदीर्घिका। दधिमुखनगःकौवैरी या तदंतरतौजनात्। तदुपरिगतेऽर्हत प्रासादे जिनेंद्रकदंबकं। तडित दुरितौ जातो जातु प्रणम्य प्रभोः पुरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥उत्तरदिशि अंजनगिरिविषें अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ जलधिसदृशा पुंडरियाद्या किणीकिल दीर्घिका।दधिमुखनगःकौवैरीया तदंत रतौ जनात्। तदुपरिगते ऽर्हत्प्रासादे जिनेंद्र कदंबकं। तडितदुरितौ जातो जातु प्रणम्यप्रभोः पुरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दिर्घिकावापिके ईशान कूणमें प्र थम रतिकरैचैत्य ॥ काव्यं ॥ दीर्घिकयो रंतराल ईशांनग रतिकर नाम। तत्र विचित्र चरित्र जिनेश्वरध्यान। तद्गृहीत साधतसद्मिनि श्रीऋषभादि राजान। मंतर्गत धृतिमत्यां वंदन सद्भान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दीर्घिकावापीके ईशानकूणमें द्वितिय रतिकरपर्वते जिनालयआगें ऽष्टप्रकारद्रव्यजेईऊजार है ॥ काव्यं ॥ तैनैव रीत्या रतिकर इतर स्तस्य समेन। शोभति सोन्नत यशसासोयं सोश्च गुणेन। तद्गृहीत साधित सद्मनि श्रीऋषभादिराजान। मंतर्गतै धृतिमत्यां वंदे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ ३३ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे ऽग्निकूणकेविषे दोयरतिकरहै तिसमें पहिले रतिकरें॥ काव्यं॥ धन्यतम स्त्वं रतिकरगिरवर रत्नसमान। विदिशि कृशानौ मत्तमितानां पुण्य प्रधान। श्रीऋषभानन प्रभृति प्रभूणामूर्ध्वस्थितेन। सिरासिद्धतः श्रीसिद्धायतनै त्वयिकायेन ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३४ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अग्नि कूणे दूसरा रतिकर चैत्य आगै ॥ काव्यं ॥ समश्रेणि स्थित विस्तृत पर्वत इतर स्वमेव। रतिकर रुचिर प्रभा खर जिनवर सद्म त

देव। शक्त्या त्रिकरण भक्त्या नम्यां नंदत एव। त्वामेव ददतु महोदय मेव श्री देवाधिदेव ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ नैरुतकूणें प्रथम रतिकर पर्वत चैत्य आगे ८ प्रकारें पूजा ॥काव्यं॥ भवत्रय त्रायक शिव सुख दायक ऋषभादि देव। त्वद्बिंबावलिमालित्य चैत्य विराजित एव। जातो नैरुत बिदिश जग द्रतिकर कारक ईश। रति कर नत श्रयितो स्मि त्वा महमेवमुनीश॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्यकूणें २ रतिकरे पूजा ॥ काव्यं ॥ अपरे रतिकर ऊपरि न भोचर चर्चित चैत्य। चंचुमुदं चचराचर केतु मुदार मुपेत्यं। श्री ऋषभादि पदोत्पल भ्रम्वल अकल कृपेश। चेतो मधुकर भ्रपरम तिस्म मे मुक्तिरमेश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं श्री परमात्म० ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य कहे ॥ समराधीश विदिशित्वदा श्रयतो रतिकारः। भदया चलति धरातल भत्तम जिनपविहार॥ तत्र चतुर्विध शुभ्रसुधा निधि बिबुध विवंद्य। श्रीऋषभादि प्रभुं प्रणमामि यशोभर नंद्य१॥ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म०३८।

॥ ❀ ॥ अन्यतरे रतिकर गिरि शिषरे प्रवर प्रासाद। भद्यत चातुर्द्वार भ दार अपार अनादि। चातुर्गत भव भ्रांति निवारक अभिनव भान। श्री ऋष भादि जिनाय नमो नमो भानु समान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं ॥ ३९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरस्यां अंजन गिरि चैत्ये ॥ काव्यं ॥ चतुर शीति सहस्र योजन समुच्छिते सांजन गिरि। मूलतो दश सहस्र योजन विस्तृतः शिरसोपरि। एक सहस्र योजन भदीचीनौ रम्य श्री रमणायकः। स्तूयते तत्र सदैवमनका सार्व श्री ऋषभादिकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ ततोंजनतोऽद्रु योजनगते विजया सुनृता। प्राच्या सुवापि सत योजन लक्षमायत विसृता। अति कांत दधिमुख गिरि स्तस्यां अंबु मध्य गतोमता। स्तदुपरि प्रभु श्री ऋषभ प्रभुत सनमामि प्रमोदतः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म० ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ परिपूर्ण पथो वैजयंति दाक्षिणात्या तदगिरे। विपुल गगनोत्कर्ष दधिमुख पर्वत स्तदभ्यंतरे। तस्य शिषरे धर्मनिकरे विशदतर जिनमंदिरे। गतदुर्मतोहंजिन नमन्न पि पुण्ययुक्तस दीदिरे ॥ १ ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ जलधि जयनि प्रतिचीनाजयंती वापीततः । तन्मध्य दधिमुख नूनृडुचै त स्तथै वात्र समासतः।जिनराज नुवनं शर्म सदनं कर्म शत्रु निकंदनं। रुषन्नादिपत्कज पुनीतंमे नवतुन्नूयो वंदनं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४३ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ अपराजितां नूराजितांजन पर्वता डुत्तरन्नूवि । निर्मत्स्यकजकल्लोलकलिता द्योतयंती नुवोनुवि । नगमुख्य दधिमुख नदगमध्यै तडुपरि चैत्यालयै । रुषन्नादि बोधिदमयिकरोवि बोधिलान्न गुणाशये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (काव्यं) रमणीयकांजन रसाधरतो रतिकरो धरणी धव । ईशा ननूमौ तस्यमोलौ विश्वपति गृहपुंगवः । तत्र तादृश तदाकारं ऋषन्नप न्नृति कृपानिधिः । संस्मर्यचेतसि नमनलान्नं लन्ने देव दयानिधिः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (काव्यं) तत्साम्य द्वितीयो चजा द्वितीये रतिकर द्युती मती सदा । सकल मंगलमाल दातरि दीनबंधु गृहे मुदा।ऋषन्नादि दीनानाथ सेवे प्रतिदिनत्वा प्रतिततः । तत्र नवन्नय डुःखनिकरा न्मुच्यतां मां प्रति यतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं॥ वहुल विदिशि विन्नर्त्तिसोयं रतिंविनुवर गृहं । विश्वनूषण मखिलदूषण डुष्टडुर्मति निर्गृहं । सद्भाव न्नावित नव्यन्नविजन व्यनीत खी श्रमः । ऋषन्नादि पुरुषोत्तम पुनीतं जयंतु योहि नगोत्तमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ अपर नूधर रूप सुंदर रतिकरे नत सुरनरे । विश्वेशविश द विहारधारे रत्नमय आनंदकरे । नाथ करुणाकर कृपालो श्रीश ऋषन्नादि प्रनो । त्वच्चरणसेवा सरण करणं दिशतु मांप्रतिहे विनो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हे नविजन नैरुति विदिशि । नगेंडु रतिकरोपरि जि नालये । नविजन रुषन्नप्रनृति जिन । चंद्रमनिनौमि विशदाशये । ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेरतिकर धन्यतमोऽसि । तदन्य आप्त निकेतन शोनित

हेतारक चेतो रमतु त्वदंत । उत्तम मे विज्ञवोन्वितः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं०॥५०॥

॥ काव्यं ॥ हेज्ञविजन वायुविदिशि रतिकार । सानुनि जिन सद्मनि ततः हेजीवन श्रीऋषज्ञादि स्वरूप । मनुज्ञव तपस्यतु यतः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० ॥ ५१ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेज्ञविजन तत्सम रतिकरनाम । तत्रैवास्ति गुणोत्करः ॥ हेजिनपति चैत्यालय ऋषज्ञादिदेव । ममैधी श्री सुखकरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ कलश ॥ युगवराः श्रीकरा दुःखकश्मलहरा नूरिसूरीश्वराःसुचितराए । धर्मरुचिकारका ज्ञवसमुद्रतारका धीर्य गांज्ञीर्य गुणसागराए ॥ दीपनंदीश्वरे, पंचज्ञिजिनगृहे, ऋषज्ञप्रमुखाः सतां बंधुराए । जैनचंद्राः सदा, त्रिज्ञुवने सु कृतिनो, जयतु मद मान वन सिंधुराए ॥ ५३ ॥ इति श्रीनंदीश्वर मंमल५२ चैत्यपूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वरद्वीपतपस्याविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दीवालीसें तपश्या अंगीकारकरै ॥ प्रतिक्रमणादि पूजा देववंदन पर्यंत सर्वकृत्यकरकै गुणनो करै ॥ यथा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीऋषज्ञादि वर्द्धमानांताशास्वता जिन सर्वज्ञायनमः ॥ इसको २००० गुणनोकरै । उठतपकरै । पीछे बारे मास अमावसको अमावस १२ उपवास करे । फेर दूसरी दीवाली आवै जब तेलोकरै । नंदीश्वर ५२ जिना लयकी थापना करके जूदा २ काव्य पूजापढके ॥ जल चंदनादि अष्टप्रकारसें पूजाकरे । सब फल धजा दीपक बावन चैत्ये चढावै ॥ इसीतरै उद्यापन सा हमी वज्ञलकरै ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर दीपकी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ (ए चाल) ॥❀॥ जीया अष्टपद्रीप । मंगल आरती गायरे । परमानंद पद एहीज जपतां । अजरामर सुख पायरे ॥ जी० ॥ १ ॥ ऋषज्ञानन चंद्रानन वारिषेण । ब्रध मांन पद ज्ञायरे ॥ जी० ॥ एच्यारे जिन सास्वत सोहै । समरण मंगल था यरे ॥ जी० ॥ २ ॥ अष्टप्रकारी पूज मनोहर । मनशुद्ध कर मन ज्ञायरे ॥ जी० ॥ जन्मजरा दुःख दूरकरणतै । कीजै एह उपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंच

प्रदीपसें आरती कीजे । भवे आवर्त्त कहायरे ॥ जी० ॥ जैन आरती पढै पढावै । तोथायै सुरायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ मंगलकारी विघननिवारी । सुख कारी जय लायरे ॥ जी० ॥ पंचमगति पामें एहनां मै । जेगावै चितलायरे जी० ॥ ५ ॥ एहआरती भविजनमोहै । नामें नव निध थायरे ॥ जी० ॥ सुखकारी ए सकल मनोहर । कर्पूरचन्द्र गुणगायरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति नंदीश्वरजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथैक विंशतिविध जिनेंद्रपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोधक ॥ मंगल हरिचंदन रुचिर। नंदन बिपिन उदार । वामानंदन पद पदम । वंदन करि जयकार ॥ १ ॥ प्रवचन में प्रभुनी कही ॥ इकवीस परम प्रकार । पूजा हित सुख क्षेम शिव । पद करणी मनुहार॥ २ ॥ राग ॥ वासु पूज्यजिन अंतरजामी॥एचाल॥ए इकवीस विध पूजनकरीयै । जिननो भवभय हरियैरे । स्नपन । विलेपन २ भूषण ३ निरुपम । पुष्प ४ वास ५ उर धरियैरे ॥ ए० १ ॥ सुरभिधूप ६ फल ७ दीपक ८ तंदुल ९ । वरनैवेद्य । १० मधु करियैरे । पत्र ११ पुंगीफल १२ निरमल जलभृत । कलश १३ बिंब पुर धरियैरे ॥ ए० २॥ वसन युगल १४ सितछत्र १५ चमर१६धुनि । मधुरतूर नी १७ करियैरे गीत १८ नटन १९ जिनवर गुणनी स्तुति २०।कोशवृद्धि२१ शुभ धरियैरे । ए० ३ ॥ इति इकवीस विधि पूजानाम पदम् ॥ १ ॥

(दूहा) प्रथम पूज ए जाणियै।न्हवण करै जिन अंग।इण अरचनतें भव्य नौ । होइ कुमति मलभंग ॥१॥कलश सुंगध अवोटजलसुं भरी लेकरि खडौ रहै ॥ रागदेशाख ॥ पूर्वमुखसावनं एदेशी॥ अन्यदा कनकगिरि राजशिखरो परै । जिन निलय तत्र जिनचंद्रवसिया । विविध वरभक्ति भरकरणकूं सुरग णा।प्रभुचरण पद्मनतिकरण रसिया॥अ०१॥आवि चउसठि जिनभक्ति धरि ह रिगणा । मिलिकरी सुर असुर कोमि कोडी।तीर्थपति ध्यावता विमलगुण गा वता । प्रभूदरश पावता पाणि जोडी ॥ अ० २ ॥ तीर्थ वरदाम परभास माग धपदम।क्षीरसागर प्रमुख सलिल भरिया॥सुरवरा कनक माणि रयण रजतादि मय।कलश करकमल ऊपरि धरिया अ०॥३॥कलश मुख पतितघन चंद्रकर वि मलतर । सलिल उरुधारसें सहुसुरेंद्रा । सुर गिरैं सकल जिनराजकौ न्हवण

करि।सफल किय निजजनम विगततंद्रा ॥ अ० ४ ॥ इणपरें सुन्नमती शुद्ध श्रावक सदा । विमलजलसें करै न्हवण जिनकौ । तेह शिवचंद्र कर विमलप दकुं लहै॥ हरिय संसरण संसारवनकौ ॥ अन्य० ५ ॥ काव्यं ॥घनतरांतर ताप विनाशनं । सकल मंगल शाल घनाघनं । जिनगण प्रमुदा जल धारया हितकृते स्नपयामि रमारया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवरेंद्र वृंद विहित भक्तिभ्यो जन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुम तिमत तरुणगण कानन समूलोन्मूलना वारणेभ्यो एहिलौकिक श्रीरुषभादि श्रीवर्द्धमान पर्य्यंतेभ्य श्चतुर्विंशतिजिनें द्रेभ्यो जलंयजामहे स्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥ इति प्रथम जल पूजा ॥ १ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा॥द्वुतियपूज चंदन सरस । कुंकुम अरु घनसार । घसिकै करियै जिनतणैं । तिलक विलेपन सार ॥ १ ॥ अंगणवाऊं एलची रेवाला एचालमें । हरिचंदन वर मृगमदारे वाल्हा । कुंकुम वलि घनसाररे । म्हांरौमन जिनचरणे हो लगगयौ । घसिकरि कनक कचौलीयारे वाल्हा । भरिकर धरि गंधसाररे ॥ म्हां० १ ॥ मिलिकरि सकल सुरेसरारे वाल्हा । जिन अरचन चितधाररे ॥ म्हां० ॥ करइ तिलक नव अंगमैरे वाल्हा । जिनके विलेपन साररे ॥म्हां०२॥ जिन नवतनु तिलकार्चनेरे वाल्हा । नपजितफल असमानरे ॥ म्हां० ॥ सुगतिरमणि भालस्थलैरे वाल्हा । भविहोय तिलक समानरे ॥ म्हां०॥ ३ ॥ लेभवियण इणपरिकैरेरे वाल्हा । चंदन पूजरसालरे ॥ म्हां० ॥ तेशिवचंद्र विमललहैरेवाला । निरुपम गुण मणि मालरे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विमल भाव भरान्वित यार्चया । सुरभिचंदन जातसपर्यया । जिन वरेंद्रसुभूघनमर्चया । निशमहं सम पूजन वर्यया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रींअ० श्रीरु षभादि चतुर्विंशतिजिनें द्रेभ्योश्चंदनं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ इति द्रितीय चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ आभूषणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीजीपूजामें आभूषण अथवा रोकनाणौलेखमोरहै ॥ दूहा ॥ तृतीयपूज जिनराजनी । करहु भविक सुखदाय । मंगन मंडित

जिनतनू। करियै भक्ति मिलाय ॥ १ ॥ राग ॥ पासजिनेसर अरजसुणीजै एचाल ॥ भूषणपूज तीसरी हरिगण। विरचै हित सुख कारीरे। भूषणधरि जिनअंगें निरुपम। अनुभवरस लहै भारीरे ॥ भू० १ ॥ विविधरयण मणिमय अतिसुंदर।मौलिमुकुट अतिराजैरे। अरध चंद्र सम प्रभु भालस्थल।विमल तिलक द्युतिगाजैरे ॥ भू० २ ॥ पूरणचंद्र तरणि मंडल द्युति। कुंडल युगल सु सोहैरे। श्रवणे अंगद बाहुयुगलमें। त्रिभुवन जन मन मोहरे ॥भू० ३॥कांचन थाल विसाल उरस्थल। हारि तार मणिहारारे। इणविधिपूजी शाश्वत जिनकुं। सफल गिणें अवतारारे ॥ भू० ४ ॥ इणपरि सुधसमकितधर नरवर ॥ पूजै जिन जयकारूरे। ते शिवचंद्र विमल जिन पतिपद। संपदलहै अतिवारूरे ॥ भू० ५ ॥ काव्यं ॥ अतिमनोहरि निर्गतदूषणै। विविध दीप्ततरा द्युत भूषणैः। जिनवरौघ महं प्रयजामिस। त्तममनंतमनुत्तर सद्गुणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रीऋषभादि चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्य भूषणंयजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति तृतीय आभूषण पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौथीपूजामेंपुष्पमाला बूटाफूलजेईकभोरहै ॥ दूहा ॥ जे भविय भगवंतनी। पूज चतुर्थी सार। रचई सुरभि कुसुमें करी। लहै सिंधु भवपार ॥ १ ॥ रागभीममल्हार। धुंममिश्रित ॥ मेघबरसैभरी ॥ एदेशी ॥ सुरभितर कुसुम पूजन भणी क्रमह्या ॥ शाश्वताजिनतणी सकलइंद्रा। कुंद मचकुंद अरविंद मंदारजुहि। विभुलसिरि बकुल दमणक वितंद्रा॥सु० ॥ १ ॥ तिलक सुम मोगरा मालती मल्लिका । नाग पुन्नाग नवमालिकाली। केतकी लाल गुलाल शरवरणयुत। जलज वलि थलज गुणशालि काली ॥ सु० ॥ २ ॥ घनघना घन घटाकार बादल विरचि। पुष्पके कुसुम जलधार बरसैं। वेग मिथ्यामतीदेषकै अवगिणें। समकिती बहुलनर भमरहरसै ॥ सु० ॥ ३ ॥ इणपरैं जिनतणी कुसुम पूजन करी। जिन चरणपद्म हरि हुइ भमरिया। इणविधैं जेहजन कुसुम अरचन करै तेह अति गहिर भवसिंधु तरिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ का० ॥ त्रिभुवनेश्वरता कमलालयं। सकलभाव निभाल

नतालयं । जिनचयं विमलाक्षय चिन्मयं । सुकुसुमैः प्रमहासि सदोदयं ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीं० कुसुमंयजामहेस्वाहा ॥ इति कुसुमपूजा ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमी वासक्षेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ वास पूजए पंचमी । विरचै सुरवर सार । सुगतिवास करिवाजणी । नरधरि नावअपार ॥ १ ॥ एचूरण नरपूर । दुरितकरै चकचूर । एजिनेंद्र पूजन करतार । दुत्तर तरइ संसार ॥ २ ॥ राग वेलावल । गंधवटी घनसार ॥ ए चाल ॥ बावनाचंदन विपिननंदन जनितसुनघनसारये । वलि तगर कृष्णागरसु कुंकुम मृगमदागंधसारये । कंकोल अंबर द्रव्यघसिकरि रुचिर चूरण करिनलौ । जिनराज अंग उपांग पूजौ लहौ पदजगसिर तिलौ ॥ ३ ॥ दूहा ॥ नावधरी नरपूर । सुरवर चढतै नूर । अरचै श्रीजिनपद सार । वधतैहरष अपार ॥ ४ ॥ ढालतेहिज ॥ वर वासपूजन नगति करतां गंध दहदिशि महमहै । इण नगतिकारक विमलजससें सकलजग सुरनित रहै । इण वासनगतै नगत नयहर अखिलमंगल नितलहै । शिवचंद्र विमल सुनाव पावक कुगति तति तरुवन दहै ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ वरतराङ्गुत वाससद र्चया । निखिलपूजन सद्गुण धुर्यया । सकल विश्वगुरु गुणसङ्गुरं । जिनवरं प्रयजे मुनिशंकरं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० वासंयजामहेस्वाहा ॥ इति पंचमी वासक्षेपपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ए छठी पूजा मुदा । करै सकल सुरराय । इण दशांग वर धूपसें । अरचै जिन मननाय ॥ १ ॥ राग ॥ साहिबा मोती द्यौनें हमारौ ॥ए चाल॥ ❀ ॥किसनागरसेल्हारस सारा । सुरनि मृगमदा वर घन सारा ॥ नावधरी जिनपूजा करीयै नाव धरीप ॥ कुंदरुक सुरनित द्रव्य सारा । करइं गंधवट्टि अतिहिउदारा ॥ ना०१ ॥ कनक जात वैडूर्य दंमजाणौ । गंध वटीधर कर धूपधाणौ ॥ ना० ॥ धूपपूज करता सुन नरता । जिनवर अंग सुगंधि विरचिता ॥ ना० २ ॥ धूपधूम ऊरध दिसि जातै । करिहरिकूं ऊरध गति तातै ॥ ना० ॥ जैसें धूप अनलमें जलियै । इण पूजनसें करमदल बलियै ॥ ना० ॥ ३ ॥ जैसें धूप गंध दिशि पसरै । तिम पूजकना वरगुण वि

स्तरै ॥ ना० ॥ तीननुवनकुं सुरनित करियै । तातैं धूपपूज नर धरियै ॥ ना० ॥ ४ ॥ इम शिवचंद्र कहै नोनविका । इण पूजनसैं अंतकर नवका ॥ ना० ॥ सुरपति धूपपूज करिसारा । लहै जिनदरशसैं हरष अपारा ॥ ना० ५ ॥ काव्यम् ॥ सुरनिधूप सुपूजनतः सदा । निज मनोमत मद्रकरं मुदा । सकल विघ्नहरं वरसिद्धये । जिनवरेंद्र कदंबक मंचये॥६ ॐ ह्रीं श्रीं०धूपंयजामहे स्वाहा॥ इति षष्टी धूपपूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) करण तीन इककरि नवी । करियै विगत विकार फलपूजा ए सातमी । वांछितफलदातार ॥ रागकामोद ॥ चंपक के तकिमाजती ॥ एचाल ॥ नवरंगी नारंगीया हांरेनारंगीयाए अमल आम्रफल सार।सुखकरणा करणा नला।वरएया कविमनुहार ॥ १ ॥ जंबू नीबू करमदा हांरेअइयो क० ए । कर्कटि दाडिमसार।कदलीफलखारक वली फणस विदाम विचार ॥२ ॥ श्रीफल अरु जंबेरीयाए । निमजा पिसता दाष । इत्यादिक गतदोष वर । सुरनि स्वाउफलनाष ॥ ३ ॥ एह विविध फलसैं नरचो हांरे० फ० ए। कंचनथाल विशाल । जगनायक आगलिधरै । सुरपति नगति रसाल ॥ ४ ॥ इणपरि नविजन सुधमती हांरे० ए । फलपूजा करतार सुरसुख फल लहि तेहुवइ । शिववनिता नरतार ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अति सुगंधियुतै र्गतिदूषणै । र्विविधसुंदरशाल विनूषणैः । प्रवरकांचनपात्र गतैः फलै । सुवि मलैः प्रयजे जिनमंमलं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० फलंयजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति सप्तमी फलपूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा॥ जगगुरु पूजा अष्टमी।सुरपति नक्ति मिलाय । जिनमंदिर दीपक करै।हरै कुमति समुदाय॥१॥राग सारंग॥हांहोरे देवा बावना चंदन घस एचाल ॥ हांहोरेवाल्हा ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा । करै दीपक नक्ति र सालए ॥ हां० ॥कनक रयण मणि रजतना।वर पात्र करै घृतगाल ए ॥ हां० ॥ अनल ज्योतियुत वर्त्तिका।तसु माहि धरि विमलप्रकासए॥हां०॥ करइ मंदिर मणि मालिका । नासै सहु तिमिर विलासए(हां०)२॥मंगलदीपक कर धरी मं

गल मंदिर सुरराय(हां०)करि जिन आरति पुर धरै । प्रभु मुख लषि चित उलसायए ॥ हां०३॥ दीप पूज करतारनो । दुरितांतर तिमिर विलायए (हां०) लोकालोक प्रगट करू । केवल सूरज उलसायए (हां०) ४ ॥ शैवचंद्र जिन पूजसें । इणपरि श्रावक मनभायए ॥ हां० ॥ तेह होइ दीप क समो। त्रिभुवन मंदिर दीपायए ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ जलशनाग्नि कजासन जालया । क्रूरगवेश्वर तामलमालया । विमल मंगल दीपकमालया कमलया कलया जिनमर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इत्यष्टमी दीपपूजा ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथाक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा)॥ एनवमी पूजा सुमति । करियै धरि सुभभाव। विमल चारु तंदुल तणी । हितकरणी एदाव ॥१॥ राग आनंद कल्याण ॥ पूजावणी तेरसमे ॥ एचाल ॥ प्रभु पूजा प्रवचने वरणी ॥ प्र० ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरासुर । समकित धर नर करणी ॥ प्र० ॥ अति अपार संसार जलधि जल ॥ निपतित तारण तरणी ॥ प्र० ॥ १ ॥ हित सुख क्षेम परमपद परमा । नंद वृंद निधि धरणी ॥ प्र० ॥ ग्याता अंगेद्वपदि श्राविका ॥ दृढ समकित गुण धरणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ जिन महाराज तणी किय अरचा । सतरभेद श्रुतवरणी ॥ प्र० ॥ जेह अभव्य मंदमति कुमती । भव अनंत वन भ्रमणी ॥ प्र० ३ ॥ पूजअथापै परतिख प्रभुनी । चितधरी कुमति कुरमणी ॥ प्र० ॥ वर शिवचंद्र किरणगण उजल । अक्षत तंदुल हरणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ सेवकरैं सुरराय समकिती । इणविध श्रावक करणी ॥ प्र० ॥ इह विपरीत मंदमति भाषै । पूजा शिवपुर सरणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अशकलोज्वल तंदुल मंगलै । रजत शालिमयैः कृतमंगलैः । सकल विश्वपति सुरसेवितं । जिन वरेंद्र महं प्रयजेत्वहं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंप० अ० अक्षतंयजामहेस्वाहा इति नवमी अक्षतपूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पूज एह नैवेद्यनी । दशमी अतिहउदार । भविक रियै हरियै विषम । दुर्जय विषय विकार ॥ १ ॥ रागरामगिरी ॥ गात्रजूहै

जिन ॥ ए चाल ॥ लपनश्री वर वृतवरारे वाल्हा ॥ सिंहकेसरीया सुखकरा । सुखकरा हां रेवाल्हा सुखकरा ॥ दालि शालि घृत युतिधरा ॥ ल० ॥ १ ॥ दाली यामोदक सेवियारेवाल्हा ॥ मोतीचूर जलेबीया । मनहरा हां रेवाल्हा म० द्राख सरकरा दुःखहरा ॥ २ ॥ इत्यादिक निरवद्यनैरे वाल्हा । थालभरी नैवेद्यनै ॥ ढोईयै हां रेवाल्हा ढो० ॥ प्रभुपुर पातक धोईयै । ल० ॥३॥ एहपूज सुखदायिनी रेवाल्हा ॥ दुरगति दुःख भरजायनी ॥ हरिकरै हां० हरि० ॥ तिम वलि श्रावक चित्त धरै ॥ ल० ४ ॥ काव्यं ॥ नैवेद्यपूजार्चित मिंद्रवंद्यं ॥ युतं समग्रा तिशयै रनिंद्यं । जित व्रजंवासवतांप्रगद्या । नैवेद्यभूपं प्रमुदाभिवंदे ॥५॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० अनंता नंतज्ञानशक्तिभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी नैवेद्यपूजा ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पत्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तमवृक्षकाअखंडसुगंध सुवर्णपत्रलेकैकेमारहै ॥ (दूहा) पत्र पूज इग्यारमी । रिदय रमें सुरराय । करणदमीं करियै मुदा ॥ दरशन सुद्ध मिलाय ॥ १ ॥ रागभैरवी ॥ पंचवरणी अंगीर० ॥ एचाल ॥ पूजकरणी प्रभु जीनी कुशलकारी ॥ पू० ॥ नाग पुन्नाग मंदारसु मरवौ कुंद अरविंद सुचुकुंद हारी ॥ अंब कदंब अशोक मल्लिका जाइजूही शतपत्रिवारी ॥ पू० ॥ १ ॥ भुजं गवल्लि परमुख सुरभितवर वर्णफलदल लेईसारी ॥ कनकपात्र धरि जिनबिंब आगलि ॥ ढौवै परमभक्तिमनधारी ॥ पू० २ ॥ एह भगतिकर सहु सुर ना यक ॥ दायक संपद फल भारी । इणपरसुध समकित धर भविजन ॥ पत्र पूज करणी सारी ॥ पू० ३ ॥ पद शिवचंद्र जिनेंद्रनौ अरचन । करतांहोय सरण कारी । कुगति पतित जग जीवकुं उधरत । जिम सागर गति तरिवारी ॥ पू० ४ ॥ काव्यं ॥ सुरभि पत्र सदर्चन पूजितं ॥ परमचित्रकरातिशयैर्युतं ॥ सम सुरा सुर वासव वंदितं । जिनगणं मदनारिमहंयजे ५ ॐ ह्रीँ० पत्रंयजा महेस्वाहा । इति इग्यारमी पत्रपूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पूंगीफलपूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) अति सुंदर तर पुंगफल । जिनवर चरण चढाय । पूज बारमी जानीयै । करियै भवि मनभाय ॥ १ ॥ श्रीचंद्रप्रभु जिनवर साहि० एचाल

अरचीजें जिनचंद्र चरणकज भ्रमरहोय भ्रविसारा ॥ में वारी जावं ॥ भ्र० ॥ जैसे कीट फीट हुय भ्रमरी । ऐसाध्यानउपगारा ॥ अ० १ ॥ इह अखंम सुभ्र सरस पूंगफल । करलेई अमृत आहारा ॥ में० ॥ क० ॥ अ० ॥ भ्रगति युगति धरि जिनवर आगलि । ढोवै हरष अपारा ॥ में०ढो० अ० २ ॥ इम सुरनायकनी परि जेभ्रवि । निरखी जिन दीदारा ॥ में० ॥ सुंदर करियै जिनपद पूजन । तजि जंजाल अपारा ॥ में० ३ ॥ पूंगीफल पूजाफल सारा । चितधरि भ्रवि मनुहारा ॥ में० ॥ पद शिवचंद्र लहो अवतारा । इम कहै प्रव चनसारा ॥ में० ॥ इ० अ० ४ ॥ काव्यं ॥ सकल विश्वजनौघ वशंकरं । चरण पद्मनता खिल शंकरं । दिनकरं हरणोघ तमोर्चिषां । जिनवरं वर पूंगफलैर्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं० पूंगीफलं यजामहे स्वाहा ॥ इति बारमी पूंगीफल पूंजा॥१२॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) कलश पूज एतेरमी । सहु मनगमी सुहाय । एह पूजसें भ्रविकनो । पातिक दूर पुलाय ॥ १ ॥ राग ॥ दादा कुशल सुरिंद तुमद० ॥ ॥ एचाल ॥ बारी जय जिनराज जय २ सकल देव सिरताज ॥ वा० ॥ जय२ त्रिभुवनजन महाराज । सोहै प्रभुपुर बार समाज ॥ वा० ॥ तुम प्रभु जगमें दीनदयाल ॥ तुम प्रभु शरणागत प्रतिपाल ॥ वा० १ ॥ कलशपूज प्रभुनी अ तिसार । करीयै लहीयै भ्रवजल पार ॥ वा० ॥ गंगा मागध वलि वरदाम । तीरथ जलभ्ररीया सुखधाम ॥ वा० २ ॥ रयण कनक मणिना अवदात । सुषमा मंदिर कलश सुजात ॥ वा० ॥ अखिल पुरंदर कर परिधार । प्रभु पुर धरियै हरष अपार ॥ वा० ॥ ३ ॥ जैसें कलश पूजसें इंद । पूजै जगनायक जिनचंद ॥ वा० ॥ तेसें श्रावक समकिति वृंद । जिनपति पूजै परमानंद ॥ वा० ४ ॥ कहै शिवचंद्र हृदय सुविशाल । प्रभुगुण समरण दीपक माल ॥ वा० ॥ धरि हरि पापतिमिर गत पार । भ्रगति करौ भय निकर विदार । ॥ वा० ५ ॥ काव्यं ॥ कलशपुंज मनोरम पूजितां । जिनवरेंद्र तति धृतस न्मतिं । सुदृढि भक्तिजनैः कृतसन्निधं । प्रतिदिनं प्रयजेविजितस्पृहां ॥६॥ ॐ ह्रीं० कलशं यजामहे स्वाहा ॥ इति कलश पूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ वसन युगल पूजा हिवै । चउदमि मन उल्लसाय । करियै श्री जिनराजनी ॥ सकल जीउ सुखदाय ॥ १ ॥ राग वेलाउल । चित सेवा प्रभु चरण की क० ॥ एचाल ॥ देववसन युग अतिभलो । पल्लव सुकुमाल चंद्र किरण गण ऊजलो । अद्भुत ज्योति विशाल ॥ दे० ॥ अखिल विबुध वर ऊमह्या ॥ चितधारि भगति अपार । वसन युगल मंडितकरै ॥ जिनवर बिंब उदार ॥ दे० ॥ २ ॥ एसमकितधर हरितणी । करणी सुखकार । इणपरिदेस विरति करै । कुमति अनल जलधार ॥ दे० ॥ ३ ॥ यदि शिव चंद्र पद कमलनी । सुख मधुर सनी आस । तद भवियण प्रतिदिन करौ । एपूजन शिव वास ॥ दे० ४ ॥ काव्यं ॥ वसन युग्म सुमंडित भूघनं । परमशांति सुधारस सद्घनं । जिनमिनंच महामिव सूचयै । वसन युग्म चयैर्नितरांमुदा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० वस्त्र युग्मं यजामहेस्वाहा ॥ इति चवदमी दिव्य वसन पूजा ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छत्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ पूजछत्रनी पनरमी । दुरित तमी दिनकार । ए पूजन करता धरै । तीन छत्र सिरसार ॥ १ ॥ म्हां रै भलैरे ऊगो दिहाडौ आजनोरे । एचाल ॥ जिनराज पूज जयकारिणी रे । सित चंद्र मंडल छत्रधारिणीरे ॥ जि० ॥ दुरितांतर ताप निवारिणी रे । अति गाहिर सिंधु भव तारिणी रे जि० ॥ १ ॥ सुमतीजन हर्ष बधारणीरे ॥ कुमती जन हरष विदारिणीरे ॥ जि० ॥ सहु जगजीउ जन मन हारिणी रे ॥ कुमतीनी कुमति सुधारिणी रे ॥ जि० ॥ २ ॥ यातो त्रिभुवन यश विसतारिणीरे ॥ काल कुशल व्रतति आसारिणीरे ॥ जि० ॥ सिरसोहै तसु मनुहारिणी रे । करै छत्र पूज शिवचारिणीरे ॥ जि० ३ ॥ हरि जिम भवि सुधाचारिणीरे ॥ भवसायर पार उतारिणी रे ॥ जि० ॥ नरकादि कुगति दुख मारिणीरे ॥ शिवचंद्र किरण अनुकारिणी रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ काव्यं सकल लोक शिवंकरताभरं ॥ कुमति घूक मत क्षिति भास्करं । सुविमलातप वारण पूजया । ह्यलमलंकृत मात्म महंयजे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० छत्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति छत्र पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चामर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ चमरपूज ए सोलमी । करियै भक्ति समाज । चमरयुगल करकमलधरि । पूजीजै जिनराज ॥ १ ॥ रागकेदारोगौडी ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलोजी देवा ॥ ए चाल ॥ धवलरयण मणि जातनारे ॥ वाल्हा ॥ वाला अति सुकुमालारे । चंद्रतरणि किरणोज्वलारे ॥ वाल्हा ॥ विविध रयण दंमजालारे ॥ १ ॥ प्रतिजिनदोयपासैखमारे वा० । सकल अमर प्रतिपालारे । ऊपरैं जिन महाराजनेरैं ॥ वा० ॥ बींजै चमरविसालारे ॥ २ ॥ चामरयुग हरि बींजतारे ॥ वा० ॥ गत चामरता लहिस्यैरे । अमर अजर शिवपद लहीरे ॥ वा० ॥ सफल अमरता वहिस्यैरे ॥ ३ ॥ चमर पूजकरि सुरवरारे ॥ वा० ॥ अनुभव अमित चाखैरे । इणपरिश्रावकजनकरैरे ॥ वाल्हा ॥ सुमतिवंत श्रुतभाषैरे ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विशदचामर पूजन भूषितं ॥ विगतमार विकार मदूषितं । जिनगुणं विमलाखिल सद्गुणं । भयहरंचदधे हृदयांबुजे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रामरयुगंयजामहेस्वाहा ॥ इति चामरपूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पूज सतरमी मनरमी । करौभविक चितलाय । मधुरतूर धुनि कीजीयै । पूजनमें उलसाय ॥ १ ॥ रागकाफी ॥ अष्टापदगिरि यात्रकरणकुं ॥ ए चाल ॥ द्रागिडिदि द्रागिडिदिकि धपमपधौंधौं । सुरज मधुरस्वर वाजै । भो त्रिभुवन महाराजभजध्वं ॥ इमसुरदुंदुभिगाजै । मनसु धभावै होलाल ॥ श्री जिनवंदन करीयै । भावै पूजी हो लाल ॥ जिनपद कमला वरीयै ॥ ताल कंसाल भेरि शंख झल्लरि । निज निज धुनिसेंगाजै ॥ झणण २ वलि रुणण २ कर । ताल माल करवाजै ॥ म० ॥ २ ॥ वेणुवीणा दिक सुर संबंधी । सुर बाजित्र वजाया ॥ तूरि तूर रव मिलित मधुरस्वर । सुररांणी गुणगाया ॥ म० ॥ ३ ॥ इणविध श्रावक पूजरचावै । विविध बाजित्र बजावै । बहुविध भववन सरण तजीनें । पद शिवचंद्र सुपावै ॥ म० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विबुध वादित तूररवाश्रितं । प्रवरपूजन मंचित सत्पदः ।

सुरगणैः सुरराज समुन्वितैं । जिनगणस्य मुदा विदधेसदा ॥ ५ ॥ इति सतरमीवादित्रपूजा ॥ १७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गीत पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ दूहा ॥ गीतपूज अठारमी । चित्तरमी सुखकार । गीतगान जिन आगलै ॥ करहु भक्ति धरिसार ॥ राग वसंत ॥ व्रज मंडल देश दिखावो रसीया ॥ एचाल ॥ बलिहारी तेरी नाथ सूरिति परीया ब० ॥ जानुं बलिहारी बारह जारी ॥ एसूरति गुणमणि दरीया ॥ ब० ॥ १ ॥ जेसूरति नलिनी गुणमणि सम ॥ पानकराणि हुय मधुकरीया ॥ ब० ॥ ते भवसागर पार उतरीया ॥ चिदानंद घनपद वरिया । ब०॥२॥ इंद्रादिक वर सकल सुरासुर ॥ एजिन चरण शरण धरिया ॥ ब० ॥ इंद्राणी परिकर परिवरीया ॥ गीतगान सुंदर करीया ॥ ब० ॥ ३ ॥ जलतरंग शिवचंद्र बिमलयश । सुरभिगंध जग विसतरीया ॥ ब० ॥ एजिनगीत पूज करि हरिगण । इण विधि भविकर गुण भरीया ॥ ब०४ ॥ काव्यं ॥ मधुरगीत सुपूजन पूजितं । प्रबल मोहनरेन्द्र बलाजितं ॥ परमशांति सुधारस सागरं । जिनवरं प्रणमामि मुदाकरं ॥ ५ ॥ इति अठारमी गीतपूजा ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नाटक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ भवअटवी भटकनतणी । विघटनता प्रकटाय । नटन पूज न गुणीसमी । करतां संकट मिटाय ॥१॥ आर्यावृत्ते ततःवीणाप्रभृतिकं । तालप्रभृतिघनं । वंशादिकंतु सुषिर । मानद्धं मुरजादिकं ॥१॥ ततघन शुषिरा नद्धा द्यनेकगीर्वाण तूर्यरव मिलितैः ॥ सप्तस्वरैश्च षडजादिभैः सुधास्पर्धिश्रमाधुर्यैः ॥ २ ॥ भक्तिरताः सुरवनिताः । श्रीमज्जिनचंद्र चंद्र गुणगानं । मधुरतरामृत मधुरं । प्रकुर्वते सत्वरं सुतरां ॥३॥ युग्मं ॥ काव्यं ॥ सध्यानामदभ्रजंद्रगमनाः कल्याणकुंभस्तनाः । सद्भक्त्याकृत जैनपादनमनाः संपूर्ण चंद्राननाः । चंचद्भिर्दशभिः षडुत्तरगतैः शृंगारकैः शोभिता । नृत्यंतित्रिदशेंद्र वृंद वनिताः सौंदर्यदर्पोद्धताः ॥ ३ ॥ राग कैरवो ॥ बाजै तेरा बिबुआरे । वा० ॥ एचाल ॥ निरत करत सुरकुमर कुमरीया ॥ नि० ॥ बाजै सुर डुंडुभिगगन मधुरीया ॥ नि० ॥ जिनमुखकजमाझि दृग मधुकरीया । निरखि हरषि सुरदेत भमरीया

॥ नि० ॥ १ ॥ अरधचंद्रसम भालविराजत ॥ शरदचंद्रमुख अभ्रित झरीया ॥ ॥ नि० ॥ अति विशाल सारंग विलोचन ॥ निरषित सहु सुर जनमन हरीया ॥ नि० ॥ २ ॥ सकलालोक जनमन जीतणकुं ॥ मदनि सेन मनु प्रकटन करीया ॥ नि० ॥ तब सुरवनिता सुरसमलोहित । जलदघटा मझि जैसी विजुरीया ॥ नि० ३ ॥ झणण झणण रणकित नेउरीया ॥ ठमिक२ पाय वजित घुघरीया ॥ नि० ॥ तत्ताथेई तत्ताथेई चलतचरण गति ॥ त ननन री री गान उचरीया ॥ नि० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल वेणु वीणादिक ॥ विविध तूर धुनि गयण पसरीया । नि० । द्रागझिदिकी २ धपमप ध्रौंध्रौं । द्रें द्रें वाजित मुरज मधुरीया ॥ नि० ५ ॥ विविध तूर धुनि करत बधरीया ॥ अ नुभव अमृत धार उछरीया ॥ नि० ॥ नटनकरंती अमर कुमरीया ॥ जिन गुण गावत मधुर सुसुरीया ॥ नि० ६ ॥ सझीय सोल सिणगारसुंदरीया ॥ सकलदेव थुति धर सुर तिरीया ॥ नि० ॥ परम रूप लवणिमकी दरीया । मनुयवासकिय कामकेसरीया ॥ नि० ७॥चिरंजीव चिरनंद जिणेसर॥भवजल तारण तरण सुतरीया॥नि०॥चिदानंदघन सुख आगरीया॥वारीजाउंजिनजी नींसूरति उपरीया ॥ नि० ८ ॥ जय जगबांधव जय जगवछल । जय२ जिन महाराज शंकरीया ॥ नि० ॥ जेप्रभु समरण तरणि पकरीया । तेह चरम सा गर भवतरीया ॥ नि० ९ ॥ सूरीयाभ दशकंधरनीपरि । जेह नटन जिनपति पुरकरीया । नि० । ते शिवचंद्र अमल जिनपद युत । अभ्रित कमला लिंग नधरीया ॥ नि० १० ॥ काव्यं ॥ भववनाटन नाटन नाशकं । कुशल पद्मदि नेश विकाशकं । कुमतिशंचटनं नटनं मुदा । न्वहमहं विदधे पुरतोऽर्हतां ॥ ११ ॥ इति उगणीसमीनाटकपूजा ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जिनगुणस्तुति ॥ ❀ ॥

(दूहा) जिनगुणनुति पूजन सदा । करोसुमति गुणधार । इणपूजन कर्त्तातणो । करै स्तवन दनुजार ॥ १ ॥ विचखरे मधुवनके वावरे । में कैसें भरनजाउं पानीरा ॥ एचाल॥ मेरी लगीय लगन जिनराजचरणसैं ॥ में अब तरीया भवदरिया ॥ मे० ॥ तुम प्रभु जीतलीये सुरगिरिया । धीरज गुण सुखकरिया ॥ मे० १ ॥ जीतो अतिह गंभीर गुणें करि । परम

चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवित अतिरसिया । हरिगण अमर नमरिया ॥ मे० २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर । तूं प्रभु जगदीसरिया ॥ मे० ॥ अशरण शरण चरण निपतित नवि । जनगण तारण तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलबन विकसित । तुम प्रभुवासर करिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जगजनको । तुम दरसण दृग ठरिया ॥ मे० ४ ॥ मंगलकैरव कानन विकसन । प्रभु शिवचंद्र निकरिया॥मे० ॥ जे नविमुख जिन तवन उच्चरिया । तेजिन कमलावरिया ॥ मे० ५ ॥ इणविध श्रावक करियै जिननुति । अनुनवरस गुणनरिया ॥ मे० ॥ जिननुति कारक नविजनकुं नित । प्रणमत नुवन विसरिया ॥ मे०६ ॥ काव्यं ॥ बिबुध संस्कृत सन्नुति राजितं । सकल सगुण संग विन्नासितं । जिनगणस्य सदा स्तवनं मुदा । सुखकरं सुतराविदधेतरां ॥ ७ ॥ इति जिनगुणस्तुति ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ अथ कोशवृद्धिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) कोशवृद्धि इकवीसमी । जिनपूजा मनुहार । करो नविक तिणसें नरो । विमल पुण्य नंमार १ ॥ सब अरति मथनमु० ॥ एचाल ॥ रजतमणि कलधौत वरतर रयण द्रव्य नदारे । अखिल हरिगण लेइ बहुतर नरय जिननंमारे ॥ रज० १ ॥ जेह सुमती नचित बहु धन । नरै कोश अपारे । तेह निज जीवकोश माहें । नरय ज्ञान नदारे ॥ र० २ ॥ जे अधरमी मंद कुमती । हरै पूजनसारे । तेहि निज चेतन सदनकुं । करै व्यसनागारे र० ३ ॥ निसुणिनवि शिवचंद्र जंपै । पूज एह विसालरे । करो तुमे तिण नित्य लहिस्यौ । अमल मंगल मालरे ॥ र० ४ ॥ काव्यं ॥ अमल कोश विवृद्धिसु पूजना । चिंतमनंत सुखव्रज संगतं । यतिनतं त्रिजगज्जन सम्मतं । निहत दुर्मत मात्र महंयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंत अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवरेंद्रवृंद विहित नक्तिभ्योजन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुमति मततरुगण काननसमूलोन्मूलनवारणेभ्यो ऐहि लौकिक श्रीऋषनादिश्रीवर्द्धमानपर्य्यंतेभ्यःश्चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यः कोश वृद्ध्यर्थं दिव्य द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति कोश वृद्धि पूजा ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धन्या सिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि मुखराजै ॥ एचाल ॥ जिनजीको सुरपति गण गुण गावै ॥ सु० ॥ जे इकवीसनेद जिनपूजा ॥ करइ करावै भावै ॥ ते जन सकल दुरित अरि हरकरि ॥ तीर्थंकर पदपावै ॥ जि० ॥ वरसनाग रुषि वसु धरणी मित ॥ सकल संघ सुखपावै ॥ माघमास सित पंचमि दिनकर ॥ वासर सहु दिनरावै ॥ जि० २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खरतरपति । पटनभ तरणि कहावै ॥ श्रीजिन हर्ष सूरि सूरीश्वर ॥ विजयमान वरुदावै ॥ जि० ३ ॥ संघा ग्रह हुंती जय नगरे ॥ महो वछाय पद चावै ॥ रूप चंद्र वादींद्र विरुद धर ॥ जसुगुणि जनगुण गावै ॥ जि० ४ ॥ तसु विनेय वाचकवर पदधर ॥ पुण्य शील शुभ भावै । समय सुंदर गणि तसुपद पंकज । सेवन भमर कहावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ सु० ॥ समरण करि जिन वर गिरको तसु॥चरण कमल सुपसावै ॥ पूजरची पाठक शिव चंदे ॥ परमानंद वधावै ॥ जिन० सु० ॥ ६ ॥ ❀ ॥

इति शिवचंदजी उपध्यायकृत इकवीश प्रकारी पूजा सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसमेताशिषरपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौवीसे जिनवर तणा।प्रणमीभावे पाय।समेतशिखर गिरिरायनी। पूजकरूंमनलाय ॥ १ ॥ शिखरसमेतासिरोमणी । एगिरवरकैलास। अतिउत्तंग मनोहरू । एजोगिंद्र विलास ॥ २ ॥ वीशप्रभू मुगतें गया । कर अणशण इह ठोर । तातैं सुर किंनरसवे । वंदतहै करजोर ॥ ३ ॥ महिमा जाकी महियलै । कहि न सकै कवि कोय । मुक्ति महिल निश्रेणिकी । एतीरथजगहोय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या ॥ तिनकुं ए न सुहाय । घूकतणें मन किमगमें । दिनकर सब सुखदाय ॥ ५ ॥ अजितजिणंद दिणंद सम । दूषम सुषमा काल । कुशल करन भव भय हरन । प्रगट भए प्रतिपाल ॥ ६ ॥ श्रीराग ॥ हांहोरेदेवा भावना चंदनघसकुमकुमा ॥ एचाल ॥ हांहोरेदेवा ॥ समेताशिषरगिररायना । गुणगावो मनधर प्रेम ए । हांहोरेदेवा । सुरगुरु पिण एगिरतणी । बहु महिमा वरणै केमए ॥ १ ॥ हांहोरेदेवा ॥ वीसप्रभु मुगतें गया ॥ अजितादिक श्रीजिनचंदए ॥ हां होरेदेवा ॥ इणकारण एगिरवरू । निश्रेयस सुरतरु कंदए ॥ २ ॥ हांहोरेदेवा । कोडाकोडी मुनिवरू । सीधावहु इणगिर आयए ॥ हांहोरेदेवा ॥ एगिर फरस्यां

नावथी। पापी पिण पावन थायए ॥३॥ हांहोरेदेवा। श्रावक सुध समकित धरे ते विधपूर्वक धर प्रेमए ॥ हांहोरेदेवा ॥ बालकहै जिनचंद्रनी। करै नक्ति सदा निजखेमए । हांहो० ॥ ४ ॥ इति । १ । ढाल दूजी। पूर्वमुषसावनंकरिदश नपावनं । एचाल ॥ आजित जिनचंद्र सुरवृंद सेवित सदा ॥ सुनग पतकज तणी सेवना । हांरेअईयोसेवनाए । जगत दुर्लनमणी रत्नपर जीवकुं । पूजीयै चरण जिन देवनाए ॥ हांरे० ॥१॥ तरण तारण नवोदधि नविकजीव केई ॥ परम उपगार कर निस्तरया । हांरे०। शिखरगिर राय पर पाय निर्वाणपद ॥ सिद्ध निजरूप गुण संनरया ॥ हांरेअ० ॥२॥ अष्टविध पूजना द्रव्य नावै करै॥ नाव मन सौच धर जेनरा ॥ हांरेअ० ॥ तेशिखरतीर्थ शिवसौख्य संपदवरै॥ बाल जिननक्तवत्सलकरा । हांरेअईयो वत्सल० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्रीपर मात्मनेअनंतानंत ग्यानशक्तए जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीअजितजिनें द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीयपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंनव नवदव अनल । जलधर सम जिनराज । परउपगारी परमगुरु । नए नविक सुखकाज ॥ १ ॥ रागवेलाउल ॥ विलेपन कीजै श्री जिनवर अंगै ॥ ए देशी ॥ पूजियैजिन मनरंगै जिनेसर ॥ पूजि० ॥ जल कुंकुमाक्षत धूप दीप करी । नेवजफल मनचंगै ॥ जिने० १॥ सेना मात जितारी तात सुत । श्रीसंनव जिन अंगै । हार मुगट कुंमल वर नूषण। चाढो नवि सुनढंगै ॥ जि० पू० ॥ २ ॥ शिखर शिखर पर शिखरनएहै अनंतचतुष्क सुरंगै । बालचंद्र प्रनु अधम उधारन । प्रनुता परम प्रसंगै जिनेसर पूजियै० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने० संनवजिनेंद्रायअष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः । इति द्वितीयपूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीयपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ अनिनंदन जिनचंदकी । महिमा वरणी न जाय। परमरूप परमातमा । सदानंद सुखदाय ॥ १ ॥ रागसारंग ॥ सांजसमें जिन बंदो नवि० ॥ ए चालमें ॥ अनिनंदनजिनवंदो । नविजन । अनि० । आंकणी ॥ संवरतात सिद्धारथमाता । जाके कुलनन्न चंदो ॥ न० अ० ॥ १ ॥

अधम उधारन भवदुःख वारन । सिव सुरतरुनो कंदो । इंद्र चंद्र असुरेंद्र नमैं नित । वंदित सुर नर वृंदो ॥ भ० अ० ॥ २ ॥ समेतशिखर पर सिवसुख पायो । मिटगयो भवभय फंदो । बालचंद्र प्रभु तरण तारणको । पूजनकरी चिरनंदो ॥ भवि० अ० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थीसुमतिजिनपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ सुमतिनाथ समसंपदा । सदा सुमति दातार । सेवै सुर नर अमरसहु । चरन सरन चितधार ॥ २ ॥ रागसारंग ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारीजाउं मैं० ॥ ए चाल ॥ बलिजाउं मैं सुमति जिनंदकी ॥ व० ॥ आंकणी ॥ पूरनब्रह्म भए परमातम । मेघकुलांबर चंदकी ॥ बलि० ॥ १ ॥ भविकुल कमल बिकास करनकुं । प्रगट प्रताप दिणंदकी । सवि गुणनायक वंछित दायक । शासन सुरतरुकंद की ॥२॥ बलि०॥करन सुसेवा खचर अमरनर । मात सुमंगला नंदकी । बाल चंद्र प्रभु पतित उधारन । सबगुन रतन समंदकी ॥ बलि० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुमतिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ पदम प्रभूपद पद्मकी । सरनगही सुखदाय । दर्शन विन अनदेवको । संग कबून सुहाय ॥ १ ॥ राग सोरठ मल्हार ॥ अणियारे नैन जिनके । सखि मुनि संग बालक किनके ॥ एचाल ॥ प्रभुसेती प्रीत लागी । मेरी भाग्यादिसा अब जागीरे ॥ प्रभु० आंकणी ॥ पद्मप्रभुजीकै दरसण अंतर । आगल अब मेरी भागीरे ॥ प्रभु० १ ॥ प्रभु परमातम में बहिरातम । अनुभव आतम सागी । प्रगट प्रताप प्रभू प्रभूतालख । अब में भयौ अनुरागी ॥ प्रभु० २ ॥ अंतरगतकी वैहीज बूझै । क्या बूझै जो दागी । बाल चंद्र निज नाथ निहारत । कुमति कुटलता त्यागीरे ॥ प्रभु० ३ ॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने श्रीपद्मप्रभूजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्टी सुपार्श्वजिन पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (दूहा)॥ लोहधातु सम आतमा । परमातम चिद्रूप । कंचनरूप करै

प्रगट। श्रीसुपास जिन भूपा॥१॥श्रीसुपास जग जीवको पारससम जिनराज। अण घड आतम लोहकुं । कंचन करै सुकाज ॥ २ राग वसंत ॥ दादा कुसल सुरिंद तुम दरसणतैं परमानंद ॥ दादा०॥ ए चाल ॥ भवि पूजो सु पास । सहुनी बंछित पूरै आस ॥ भवि० । जाको कमल सम सुगंध सास । आहार नीहार अदस्य जास ॥ भवि० ॥ १ ॥ न घटै न वधै नख केस पास । मांसासृग उज्वल वर्णतास ॥ भवि० ॥ अतिसय चौतीस तणो प्रकास । तरण तारण जग जस सुवास ॥ भवि० ॥ २ ॥ श्री समेतशिखर पर कर निवास । प्रभु पायो मुक्तिमहिलसुवास ॥ भवि० ॥ प्रभुके समरणसें कर्मनास। कहै बाल सदा मैं प्रभुकोदास ॥ भवि० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुपार्श्वजिन अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ चंद्रा प्रभुकी चंद्रसम । मुखसोभा मनुहार ॥ देखत दृग आनंद लहै। सूरत अति सुखकार। मल्लि मनोहर तुझ ठकुराई॥ए राग॥ श्री चंद्रा प्रभु अरज सुणीजै। श्री चंद्रा०आंक०॥त्रिभुवन नाथ गरीबके ऊपर। दीनदयाल निवाज सकीजै ॥ श्रीचंद्रा० १ । अधम उधारन विरुदतुमारो । मोसो अधम न और कहीजै ॥ श्री० ॥ इह संसार अपार अगाधमै । साहिब सरणागत रषलीजै॥ श्रीचं० ॥ २ ॥ मोपतितनकुं पार उतारो ॥ निज निर्यामक विरुद वहीजै ॥ श्री० ॥ बालचंद प्रभुशिव सुख दायक। आतम संपद अवमोहिदीजै॥श्रीचं०॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यांन० जन्म० श्रीम० श्रीचंद्रा प्रभू अष्ट द्रव्यं यजा महेस्वाहा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दूहा)सुबिध जिनंद दिनंदसम। जग जीवन हितकार। मिथ्या मोह अग्यानतम । दूर हरन दिनकार ॥ १ ॥ राग ॥ जियाचतुर सुजांण नवपदके गुणगायरे ॥ एहनी ॥ भेटो भविक सुजाण सुबिध जिणंद सुभभावरे ॥भे०॥ उत्तम कुल नरभवतें पायो ॥ फिर अैसो नही दावरे ॥ भे० १ ॥ भक्त उधारन भवि निस्तारन । भवसागरकी नावरे ॥ भे० ॥ तन मन वसकर निज आतमकों । प्रभु समरण जय लावरे ॥ भे०२॥ द्रव्य भाव युत पूजन करियै।

मनधर अधिक उल्हासरे ॥ भे० ॥ बालचंद प्रभुपतित उधारन । मिलगए पुन्य पसासरे ॥ भे० ॥ ३ ॥ इति ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री सुविध जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अष्टमी पूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ श्रीशीतल मुनिइंद्रकी । महिमा अजब अपार । ज्ञानानलथी जिणदीया । कर्मअष्टेंधनजार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धाचलगिरि भेट्यारे धनभाग्य हमारा ॥ एहनी ॥ श्रीशीतलजिनवंदोरे भविजनसुखकारा श्री० पतित उधारन दुरगति वारक । दायक शिवसुख सारारे ॥ भ० ॥ १ ॥ भक्तभविक भव भय अपहारी । ए प्रभु परम सुप्यारारे । भ० मिथ्या श्रीषम ताप निवारन । प्रभुचंदन अनुकारारे ॥ भ० २ ॥ परउपगारी परम महागुरु । परमातम अविकारारे ॥ भ० ॥ बालकहे प्रभुको भवभवमें चरणसरणमनवारारे ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्री शीतलजिनेंद्राय अष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमीपूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) श्री श्रेयांसजिणंदनी । चरन सरन सुखकार॥ पुन्यप्रशाद मिल्यो मुजे । भव २ सुखदातार ॥ १ ॥ ढाल ॥ दादाचिरंजयो सेवकजन सुखदाई दरसण सदादियो ॥ एचाल ॥ भवि भावधरी श्री श्रेयांसजिनेसर पूजो मन रली ॥ भ० एप्रभुसम अवरन कोदेवा । जाकी चौसठइंद्र करे सेवा ॥ तेलहे सुरसुख सिवसुख मेवा ॥ भ० १ ॥ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी । जाकी पुन्यप्रसाद सेवा पामी । प्रभु जगजीवन अंतर जामी ॥ भ०२ ॥ प्रभु दीनदयाल परमदाता । जगवत्सल जगबंधव त्राता । कहे बाल सकलदायक साता ॥ भ० ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने श्री श्रेयांसजिनेंद्रायअष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमीपूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) परमातमपरमेसरू । श्री तेरमजिनराज । ध्यावो सेवोभविकजना । ज्युंपावो सुखसाज ॥ १ ॥ रागकनडो । मेरी लागीलगन जिनचरणे ॥ मेरी० एचाल ॥ मनमोह्योरी मेरो जिन चरणे म०॥दुःख दोहग सबहरणे । मन० ॥

विमलजिनंदकी अद्भुत तनुछवि। सोभत सोवनवरणै। म० ॥ १ ॥ दीन दयाल दयानिध दाता । सवजीवन सुखकरणै ॥ म० ॥ परमातम प्रभुपरम परमगुरु। प्रभुगुण तारण तरणं ॥ म० २ ॥ पुन्यप्रसाद लह्यो प्रभु दरशन। सास्वत शिवसुख धरणें। म० । बालकहै प्रभु सेवकजाणी। रख लीजै मोहि सरणै ॥ म० ३ ॥ इति। ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्मज० श्रीमत्० श्री विमल जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ श्री अनंत जिन देवकी। सेवकरो मनलाय। मनवंछित सुख झिमलहै । दुरगत दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौरी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं ॥ करतगंध रसालरे ॥ देवा० ॥ एचाल ॥ ध्यावो सेवो भविजन भक्ति।अनंतजिनंद महाराजरे देवा ॥ एसुरतरुसम जगमें जिन वरतारणतरण जिहाजरे ॥ देवा ॥ ध्या०१ ॥ कृपासिंधु भगवान परमगुरुतीनभुवन सिरताजरे। देवा ॥ जिनसेवातें शिवसुख पामें । सफलहुवै सब काजरे। देवा। ध्यावो० ॥ २ ॥ इह संसार असार भजनविन। कैसें रहै निज लाजरे। देवा। बालचंद्र प्रभु परउपगारी। दायक अविचल राजरे। देवा।ध्यावो०३। ॐ ह्रीं परमात्मने अनंत जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः१२॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ तेरमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ धर्म जिनेसर परमगुरु । परउपगारी देव। परमातम प्रभु चरणकी। कीजै नितप्रति सेव ॥१॥ राग भैरवी॥पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती। कुसुमजातीरे अईयो कुसुम० पां० एचाल ॥ सुखकारीरे देवा सुखकारी। धर्मजिनंद सेवो सुखकारी। सुखकारीरे देवा।ध०। तीन भुवनके साम शिरोमणि। सब जीवनकोहै हितकारी॥ धर्म० १॥जगजीवन जगबंधव जगगुरु। परम पुरुष प्रभु उपगारी। अकल सकल अघहर पर अनुपम।अचल अगोचर अविकारी । धर्म० २। भवसंताप निवारण तारण । जिनसेवा मोहि अतिप्यारी। सुरतरुसम प्रभु चरणशरणकी। बालचंद कहै बलिहारी। धर्म०३ इति। ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० श्रीधर्मजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चवदमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) शांति करण सब दुःखहरण । शांतिजपो सुखकार । शिव सुखदायक जगतगुरु । परमातम अविकार ॥ १ ॥ राग गौरी ॥ केसरीयानें ज्याजको लोक तिरायो । ए अचिरिज मोहि आयो के० एचाल ॥ शांतिजि नेसर ध्यावो।भविजन शांति०। तरण तारण भवसागर जिनको । तीनजगत जस चावो ॥ भ० शां० १ ॥ शांति सुधारस नाम प्रभुको । समरण कर मन भावो । कर्मकोट सतखंड हुवै तब। सुद्ध सरूपी थावो ॥ भ० शां २ । भक्ति करो मनसुध भगवंतकी।मन सुध प्रभुगुण गावो । बालकहै प्रभुके सेवनसैं । मनवंछित फलपावो । भ० शां० ३ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० श्रीशांतिजि नेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पनरमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोरठो ॥ कुंथुजिनेसर देव । भविजन पूजो भावथी । चरण कमल की सेव । इंद्रादिक नित प्रति करै ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण ससि ऊजलोजी देवा । पावन घसि घनसारोजी आगो ॥ एचाल ॥ चंद्र किरण जेसो ऊजलोरे देवा । जग जश प्रभुविस्तारोजी ॥ आगो ॥ अनंत गुणेंकरी सोभतारे ॥ देवा ॥ कुंथुजिनंद जग सारोजी ॥ १ ॥ आगो ॥ कामि त दायक सुरतरूरे देवा ॥ सर्व जीवन प्रति पालोजी ॥ आगो ॥ भवि जन पूजो भावथीरे ॥ देवा ॥ ए प्रभुपरम आधारोजी ॥२॥ आगो शिवसुख दायक साहिबरे ॥ देवा ॥ पतित उधारन हारोजी । आगो वालचंद्र जिनचंद नोरे ॥देवा॥सरणगह्यो सुखकारोजी ॥आगो॥ चंद्र० ३ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने श्री कुंथु जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सोलमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ श्री अरनाथ जिनंदनी । पूजा अष्टप्रकार । करियै मन सुध भावसों, भवभव सुखदातार ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ मनारे जिन चरणा चितलावो, मनारे एहनी ॥श्री अरनाथ कुं ध्यावो मनारे त्रिभुवन पति गुण गावो ॥म० त्रिभु०॥ऐसो अवरन देव जगतमैं । जाको जगजश चावो ॥ म०त्रि०१॥ सूर नरेसर नंदन प्रभुजी ॥ मात प्रभावती जावो ॥तन मन लगन

लगावो प्रभूसें ॥ नरक निगोद नजावो ॥ म०त्रि० २ ॥ परम पुरुष परमेशर प्रभुको । चरण शरण मनभावो । दीनदयाल दयानिध पूजत । बाल परम सुख पावो ॥ म०त्रि० ३ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री अरनाथ जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सतरमी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ कुंभ समुद्भव जगधणी । मल्लिजिनेसर देव । जसु पद पंकज की करै । इंद्र चंद्र नितसेव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजावनी तेरसमैं ते० एचाल ॥ मेरी लगन लगी जिन चरणें । मल्लिजिनंद सुखकरणै । होमेरी० ॥ त्रिभुवन नायक सब सुख दायक । एप्रभु अशरण शरणें ॥ होमेरी० १ ॥ अनुपम रूप विराजित प्रभुजी । सोभत सोवन वरणै ॥ होमेरी० २ ॥ अकल अगोचर प्रभु उपगारी । ध्यावो सब दुख हरणै । होमेरी० ॥ जो निज आतम कुं सुखचावो । लावो चित्त समरणै ॥ होमेरी० ॥ बालकहै प्रभु अधम उधारन रखलीजै मोहि सरणै होमे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री मल्लिजिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठारमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ विंशतितम जिनवर नमुं । मुनिसुव्रत जिनचंद । भावै भविजन भेटियै । दूरटलै भविफंद ॥ १ ॥ रागमल्हार ॥ चिहुंउर बदरियाबरसै ॥ ए चाल ॥ मुनिसुव्रतस्वामीदरसै ॥ आजआनंद घनवरसैहो मु० ॥ समेतशिखरपर प्रभुपद पंकज । पुन्यप्रसादै फरसैहो ॥ मु० ॥१॥ प्रभुदरशन घनघोर घटालख । मोरनयनयुग तरसै ॥ हो मु० ॥ भविजनचात्रक प्रभुगुन गावत । भावत भावन झरसै ॥ हो मु० ॥ २ ॥ धर्मध्वनिजाकै उपजत खेती । कर्म निरसहोय निरसै ॥ हो मु० ॥ बालप्रसाद प्रभुजीके आतम । परमातम प्रभु सरसै ॥ हो मु० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० अनं० जन्म०श्रीमत्० श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्रायअष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥१८॥

॥ ❀ ॥ अथ उगणीसमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ नमिजिन पूजो भावसों । भविक भक्ति मनलाय । भावसुध जिन पूजतां । दुरगति दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौडी ॥ सब

अरतिमथनमुदारधूपं ॥ ए चाल ॥ नमिजिनेशर जगदिनेशर । पूजो भविजन भावरे । जगतपति जिनराज साहिब । भवसमुद्रनो नावरे ॥ न० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र सुरेंद्र नर सुर । पूजनको जसुचावरे ॥ तरण तारण कृपासागर । सेवनको अवदावरे ॥ न०॥ २ ॥ पुन्यउदै प्रभु दरसनपायो । आनंदकंद सुभावरे । बालकहै प्रभुके चरणकी । सरणमोहि सुहावरे ॥ न० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० अनं० जन्म० श्रीमत्० श्रीनमिजिनेंद्रायअष्ट द्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बीशमीपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ पारश पारशनाथका । गुणगातां गहिगट्ट । कष्टटलै संपति मिलै । मनवंछित फलथट्ट ॥ १ ॥ राग । सांवरीयास्वामीजीअबमो हितारो ॥ ए चाल ॥ शांवरियासाहिबकी बलिहारी सां० ॥ अश्वसेनतात वामा देवीमाता । पाशजिणंदहैसुखकारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जाकेगुनको पारनपावै । इंदनरेंद नरनारी ॥ सां० ॥ भवभवभ्रमतां प्रभुजीमैंपाया । दुरगति दूर निवारी ॥ सां० ॥ २ ॥ अबमें प्रभुबिन और नचाहुं । एहीमुझमन इकतारी । बालकहै प्रभुसाहिब मेरै । शिवसुखदो मोहितकारी ॥ सां० ॥३॥

॥ ❀ ॥ ढाल दूसरी ॥ तेजतरणसुखराजै । हांउ मुख० एचाल ॥ भविजन शिखरसमेतवधावो । भ०। वीसजिनेशर मुगतसिधाए । ए तीरथ जगचावो । भ० १॥ द्रव्य भावकरी पूजरचावो । त्रिभुवनपति गुणगावो । समकित पुष्टालंबन कारन । एसम उर नभावो ॥ भ० २॥सकल संघ मकसूदावादमें । आनंद अधिक बढावो । भक्ति भावसें प्रभुजीकुं पूज्या । मनवंछित फल पावो ॥ भ० ३ ॥ संवत सिधि नभनिधि वसुधा सुभ । कार्त्तिक सुदि पणचावो । जिन सौभाग्य सूरीसर गुणनिधि । खरतर गछपति चावो ॥भ० ४॥अमृत लाभ समुद्र पसायै॥पूजरची भवि भावो॥ बालचंद परमातम प्रभुका ॥ हरष हरष गुण गावो॥भ० ५॥इति ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानशक्तये जन्म० श्रीमत् पार्श्व जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ २० ॥ राग कन्हडो ॥ शिखर गिरितीर्थकर वीश जिनवर सुदा । भक्ति भर भविकवर पूज करियै । अष्टविध विविध धरि सिद्धि नवनिधि सही । सुवट घट संपदा प्रगट वरियै । शि० १ । विकट वट

कर्मकी जोट दूरै करी । विबुध बुध आत्म निज सुधि धरियै । चरण जिनस रण गहि भवतरण जन लहै । चरण दरसण लही ज्ञान चरियै । शि० २ । धन्य दिन आज जिनराज गिरराज चढ । दरस लहि सरस संसार दरियै । धर्म धर मगन जिन भक्ति पूरनगही । दुरति गति दुःखसें दूर टरियै । शि० ३ । अष्ट नव निधि सदा सिधि सुद मावमें । पूज करि शक्ति निज भक्ति भरियै । बाल प्रतिपाल सुविसाल गुनगावतां । धार भव वार निधि पार तरियै । ॥ शि० ॥ ४ ॥ इति श्रीबालचंदजी उपाध्याय कृत समेत शिखरगिरी पूजा संपूरणम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम समकित द्रढ करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत बारै आदर करी । पूजा तेर विधान । आनंदादिक संग्रही । सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती हां० ॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल जगझलहलै । हांरे अइयोऊ० ए । शाशन पति जिनचंद । त्रिकरण प्रणमन करिनमूं । वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ बासनी ३ । हांरे० । माल ४ दीवंच ५ धुवणियं ६ ॥ फूल ७ सुमंगल ८ तंदुला ९ ॥ हांरे० ए० ॥ अमलं दप्पणंच १० नैवद्यं ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृंद १३ एमेलियै । हां० ए । पूजा त्रिदश प्रकार । हांए । व्रत ग्रहि अनुक्रम अरचीयै । जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो । हांरे० । दायक गुणमणि खांण । हांए । कुशल कला कलना थकी । प्रगटै परम निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो । मेटो निज मन भर्म । दूर थकी ए परि हरो । कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण अणसण धीर वीर्य वखानियै । तपइम सकलना सिधि गज वसु पण ति वार सुठानियै । व्रत बारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानियै । करित्याग राग प्रशस्त धरिमन विमल संबर मानियै ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ गात्रजूहै जिनमन रंगसूंरे देवा । स० । ए चाल ॥ धुर समकित व्रत चित धरोरे बाल्हा । भवभय दुःख दल परिहरो । परिहरो हांरे बाल्हाप० । शिवरमणी वर लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर बंदीयैरे बाल्हा । जिम चिरकालसुं नंदीयै ।

नं० हारेवा० ॥ कुमति कुरति सरकीजीयै ॥ २ ॥ चरण करण गुण माणे निलोरे बाल्हा० । जगजन तारण सिरतिलो । सिं० हां० ॥ सदगुरुचरण नमीजीयै ॥ ३ ॥ जिन भाषित श्रुतसागरोरे बा० भेद विविध विधि आगरो । आगरो० हांरे० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन शासन जिनधर्म नोरे बा० । रागदलन वसुकर्मनो । कर्म० । हां । कुश लकला रसभीजीयें ॥ ५ इति ॥ दूहा ॥ सकल करमदल मलहरण । पूजा धुर जलधार । जगनायक जिनतुंगनी । उरधर भगति उदार ॥ १ ॥ रागझिं झोटी ॥ निरमल होय भजलै प्रभुप्यारा । सव० ॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण करण सुखदाई । छूटै जनम मरण दुःखदाई । जि० । टेर॥ खीरजलधि गंगोद कसांहि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन० ॥ १ ॥ निरमल शकल परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलश भराई ॥ जिन० ॥ २ ॥ या जिन जीके नवण करणतें । भवभय दुःखदल दाघसमाई॥ जि० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विधि समकित फरसै । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥ ४ ॥ यातें भवि जनके दुःख नासै । कपूर कहै सुरहोत सहाई ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति० ॥ काव्यं परमलंकृत संस्कृत श्रद्धया । स्नपति यो जिनचंद्र मिमंमुदा । भवभयं परिमु च्य सदोदयं । भजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अ नंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा० श्रीमद्र० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विरमण व्रतें । डंको जंतु विनास । इणसुं शिवसुख नामिलै । हिंसा दोषविलास ॥ १ ॥ हमकुं ढांढचले बनमा धो । राधा० ॥ ए चाल ॥ भविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणा म संभारोरे । भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणियै । भाषै जगदा धारोरे । देशविरति धरनें पिण भाख्यो । विन अपराध न मारोरे । भ० गो गज सैंधव महिषा दिकनें । बंधन वध न विचारोरे । कीजै न अवयव छेद त्रिकालै । जल चारो न विसारोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीरी कुंजरनें सम गिणीयै । सुख दुःख जोग विकारोरे । थावर त्रस पंचेंद्रयादिकनो । होय रहि

यै हित कारोरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें । सुर नर गण मन प्यारोरे । तेहिज लोभ महाभटमार्यो । सकल करम परिवारोरे भ० । ४ थूलथकी ए व्रत जे पालै । तेलहै शिवसुख सारोरे । कुशल कला कलना करी प्रगटै । अनुभवरंग उदारोरे । भवि० ॥ ५ ॥ दूहा ॥ भव दव दाघ सवे मिटै । पूजो परम दयाल । भावठ भंजन सुखकरण । दूजी पूजरसाल ॥ १ ॥ (राग घाटो) । जिनराजनाम तेरा म्हाराज० । ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा । होतारोरे विकट भवजलसें । हो० । टेर ॥ हांरे घनसार चंदन वासै । हांरे सुकुरंग नाभि जासै । दुःख नारकादि नासै ॥ होता० ॥ १ ॥ घसि सूकमा दि भेली । नाना सुगंध मेली । शिवदैन कर्म ठेली ॥ होता० ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो । वर भावनापि भावो । शिवसौंधमे समावो ॥ होता० ॥ ३ ॥ विधि भाव द्रव्य धारो । हिंसाको दोष वारो । प्रभुनाम नां विसारो । होता० ॥ ४ ॥ तज पाप भार फंदा । शिवशं कलाप कंदा । साधै कपूरचंदा ॥ होता० ॥ ५ ॥ इति प्रथम पूजा ॥ काव्यं ॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै । जिनपतेर्युगपा द समर्चनं । हरति सो भवदाघ मसुंदरं । रचतियो घनसार सुचंदनै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत० प्राणातिपात विरमण व्रत भपदेशकाय चंदनं यजामहे स्वाहाः ॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मृषावाद व्रते वासक्षेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दूहा ॥ मृखात्याग व्रत दूसरो । कुमति दुरति हरतार । भविजन भावै आदरो । शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ सब अरति मथन मुदारधूपं । कर० ॥ ए चाल ॥ सुण भविक नर धर दुतिय व्रत मन । मृखावादन बोलरे । बाला मृखा० । टेर ॥ मृखावाद कुवाद शेखर कुजशवाद न ढोलरे । बाला । कुजश० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम भ्रमरवि । ढकण राहु निटोलरे । शिवपुर नगर पथि शवर सरिखो । अरति व्यापन घोलरे । बाला । अरति० बाला० । सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कला प करिनें । परगुपति मतखोलरे । रुणविधौ धनधान्य निकरै । कपट कूट न तोलरे ॥ बालाक० सु० ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख भरिनें । रचयमां भमको लरे । अन्य सिरसि कलंक धरिनें । चरित जांनुं न बोलरे । बाला चरित०

सु० ॥ ४ ॥ वसुनरेसर वृथा रचिनें । लह्यो कुगति कचोलरे । तृतीय व्रत रस राग नैरवी । कुशलसार विमोलरे । बालाकुश० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ दूहा ॥ जगदाधार जिनंदनें । पूजौ वासरसैण । शिववनिता वस कीजियै । पूजा त्रयतम एण ॥ १ ॥ राग गरबो ॥ नवि चतुर सुजाण परनारी सुं प्रीत मी कबहुन कीजियै ॥ न० । ए चाल ॥ नविभाव धरी नवसागर निस तार क जिनपति सेवियै ॥ न० ॥ टेर ॥ बावनाचंदन खंभन करियै । तेहमां वलि कुंकुमरस नरियै । मृगमद परिमलता अनुसरियै ॥ नवि० ॥ १ ॥ कंकोल सुवासित वलि कीजै । तिम विवध कुसुम रस कस दीजै । ए चूरण विधि निज वसकीजै ॥ नवि० ॥ २ ॥ इम वासरसैं जे जिन पूजै ॥ तिणसैं स वि करम सबल धूजै ॥ सुखसंपति जायन घर दूजै ॥ नवि० ॥ ३ ॥ सुर किंनर नर सासन धारै । विनसमरयां सहुसंकट वारै । ए पूजन मनवंछित सारै ॥ नवि० ॥ ४ ॥ विमला कमला सबला पावै । जे प्रनुगुण गण नावन नावै । इम चंदकपूर सुजशगावै ॥ नवि० ॥ ५ ॥ इति काव्यं ॥ मृगमदां वर घश्रण मिश्रितै । वैरवरास सुचंदन संस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन मंजसा । सलनते निवृतिं किलवासकैः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत नपदेशकाय वा सक्षेपं यजामहेस्वाहाः । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चोथी अदत्तादांन व्रते पुष्प माल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रततृतीय हिवसांनलो । नाखै जगतजिनंद । स्तेयकरण सब सुख हरण । अष्टकरम दलकंद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हांहोरे देवा । बावन चंदन घसि कुमकुमा । चूर० । ए चाल ॥ हांहोरे वाला । परधनहरण गमन करो । धरि त्रिकरण शुद्ध विलाशए । हांहोरेबाल्हा । ए नवजल जलधर समो । व लि समकित वृंद विनास ए । व० ॥ १ ॥ हांहोरे बाल्हा ॥ कनक रजत माणि धातुनो । जल थल खज पशु पटकूलए । ज० ॥ हांहोरे बाल्हा ॥ इमतनु थू ल जगतिनरया । लही सकल पदारथ मूलए । ल० ॥ २ ॥ हांहोरे बा ल्हा । कुमति कुरति रमणी तणो । छै सदन ए चोरीनो कर्मए । छै० । हांहोरे बा० । विपद जलधि पिण जाणियै । सचपल थई नासैधर्मए । स० ॥ ३ ॥

हांहोरे बा० ॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए । शि० हांहोरे बाल्हा । कुशल कलायुत कीजियै । लहियै नवजलनोपार ए । ल० ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करियै नक्ति वशेण । मोहति मर नर उपशमें । प्रगटै बोध खिणेण ॥ १ ॥ राग खंनायची । नवनय हरणा । शिवसुख करणा । सदा नजो व्रम० में० एचाल ॥ नविजन पूजो जिन ग्रीवा धरि । बर फूलनकी माला । मेंवारी० ब० ॥ ए पूजन दुरगति घरछेदी । विरचै शिवसुख साला । मेंवा० विर०नवि० ॥१॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली । पाटल लालगुलाला । मेंवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजै अलि मतवाला । मेंवा० । नत० नवि० ॥२ ॥ जाई दमण जूही कोरंटक । मालती मरुक रसाला । मेंवा० मा० । ऐसें पंचवरण कुसुमें करि । माल रचन परना ला । मेंवा० मा० नवि०॥३॥ ए मालापूजन करीनासै । कोटि करम दुःखजा ला । मेंवा० को० । सुमति सुरति अनुनव वलि प्रगटै । त्रासै कुमति कुचाला । मेंवा० त्रा०। नवि० ॥ ४ ॥ ए विधि संबरद्वार विकासै । पापसदन मुखताला । मेंवा० पा०। कपूरकहै प्रनुचरण शरणमैं । मंगल माल विशाला । मेंवा० मं० नवि ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्यं । सरस सुज्ञर चंपक पाटलै। मरुक मालति केतकी सत्कजैः । विधि विगुंफ्याजिनं परिपूजयेत । सज मजश्रम मीन्निरजेन्नकः १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानं० जन्मजरा० श्रीम० अदत्तादान विरमण व्रत नपदेशकाय । मालं यजामहेस्वाहाः॥ इति अदत्तादांन व्रत चोथी पूजा ॥४॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रते दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ ❀ ॥ व्रत चोथे मैथुन तजो । नजो नविक नगवान । शीला राधन योगसें । लहियै शर्म्म वितान ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशी क जलोरे देवा । पाव० ॥ ए चाल ॥ मन वच काया थिरकरीरे । बाल्हा । कलु ख कुशील निवारोरे । आलो । एह नरक रमणी तणोरे । बाल्हा । शोदर अति हित कारोरे । आलो ॥ १ ॥ नर सुर पशु सहुजातनोरे बाल्हा । विषय कलित बहु दोषैरे । आलो । ते परिहरिनें थिररहोरे बाला० । निजदा रासंतोषैरे ॥ २ ॥ आलो । लंकापति नरकै गयोरे । बाल्हा एमैथुनरस धारूरे आलो । एहनें तजकरि केईलह्यारे । बाल्हा । जीवसकल सुखसारूरे

॥ २ ॥ आलो । शील रत्न जतनें धरोरे बाल्हा । तसदूषण सविडंमीरे आलो।कुशलकला करिनें लहोरेवा० । शिवसुख माल प्रचंमीरे । आलो ॥४॥ इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पंचमी । करै सकल दुःखनास । ज्ञायक लोका लोकनो । प्रगटै बोधिविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेंझाऊ को० ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ नावधरी दीपक पूज रचावो । यातें शिव सुखसंपति पावो । ना० । रक्त पीत सित वरण विचित्रत । सूतनीवाट वणावो । गोघृतमां हि अधिक तरकरिनें । सुन्नमन दीपजणावो । ना०१ । दीपकनेंमिस मनमंदि रमै । ग्यांनकोदीप जगावो । जन्मतातिमर कलापहरीनें । मंगलमालवधावो । नाव० ॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमें । एपूजन मनन्नावो । सुर नर पायनमें ततखिणही । यातें नरकनजावो ॥ नाव० ॥३॥ अनुन्नव नावविशाल करीनें । आतमसुं लयलावो । कपूरकहै नविजनसें प्रनुके । वर गुणगण ज श गावो ॥ नाव० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ आत्मप्रबोधै कविवर्धनाय । जाड्यांधकार व्रजमर्दनाय । नव्यप्रदीपं कुरुनक्तिवृंदैः । प्रनोगृहे वायघतर्ज्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत० जन्मजरा० श्रीमज्जि० मैथुन विरमणवत नपदेश काय दीपंयजामहेस्वाहाः ॥ इति पांचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नविकीजै व्रत पंचमै । सकल परिग्रह मांन । ए मोहा दिक शवरनो । नूधर दुःखनी खांन ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ अतुल विमल मेल्या अखंम गुणे । मेल्या० ए चाल ॥ सकल नविकनरथा विमल गुणे बाल्हा । मांन परिग्रहनो करो ए । सकल० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए समगिरि नेदन । दोष दिवश पति वासरो ए । स० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादिक पशुनो । धातु निकर तिम जांणियै ए । इत्यादिक नवनेद विधांने । दशवै कालिक नाणियै ए ॥ सक० ॥ २ ॥ एहनें मूलथकी जेहरै नर । तेहनें मोक्ष मिलै सहीए । सुचिर काल ग्रहवास वसै जे । तेहनें देश विधै कहीए । सक० ॥३॥ नरक निवास इणें विनपाम्यो । सुम्मण सेठ ते नाखियै ए । नवि जन ए व्रत नावथी पालो । कुशल कला निजदाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ छठी पूजन धूपकी । धूवो जिनवर अंग । कुथुर

नि करमतणी हरे। दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारी जि-ववरणी न जाय। प्यारी०। थां रे मुखमारी हो वारीराज। प्या ॥ ए चाल ॥ ऐसी विधि पूजन नाई दिलधार। धूप धूम घनसार धार करि। ऐसी०। टेर ॥ या नवनीम वारिसागरमें। तरस तरंगक तरज विचार। धूप० ॥ १ ॥ चंदन देवदारु बलि अंबर। मृगमद गंधवटी घनसार। धूप० ॥ २ ॥ ऐसें सुरनिद्रव्य बहुमेली। तिणमें सेठहारस नविसार। धूप० ॥ ३ ॥ म णियुत कंचन धूपदानमै। बिमलानलथी करि सुप्रचार। धूप० ॥ ४ ॥ क पूर करत नुतिया जिन पूजा। नविजन गणकी तारणहार। धूप० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूपं। चाकर्षितं भ्रमरवृंद मतिर्हियेन ॥ श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य बिशालभक्त्या। धूपे जिनाधिपतिनं शिवदं मुदावै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत नपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत छठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ छठो व्रत दिशमानको। गमनागमन निवार। अकुश लता सवि नपशमै। श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरबो। सिद्धाचलमंरुण स्वा मीरे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे। नवनय दुखवार ण करियैरे। करिदिशि परिमाण जेचरियै। रसीला। नाव विमल दिल धरियैरे। वाल्हा धरियै तो समरस नरियै। र० ॥ १ ॥ अध ऊर्धनें तीरछ वखाणोरे। दिश विदिशनें तेम प्रमाणोरे। ए छे संकट जलधिनोराणो ॥ रसी० ॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे। ओछै कुमति दुरति नरतारोरे। इकच की लह्यो दुखनारो। रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंगोरे। तुमे नविजन एहन खंगोरे। कहै कुशलकला नितमंगो। रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवियण पूजा सातमी। कीजे नक्ति विशाल। ससुरनि नाना जातना। विमल कुशम नरथाल ॥ १ ॥ ❀ ॥ रागधन्याशरी ॥ कबहुमें नीके नाथन ध्यायो ॥क०एचाल॥ प्रनुजीकी फूलै पूजन सारो।प्र०॥टेर॥श्रीजिन जीके चरणकमलमें। अलि समता गुणधारो। प्रनु०॥१॥ चंपक कुंद गुलाब केवरा। पारधिनाग कलारो। जासु दमण वासंति मोगरा। पाउल लाल मं

दारो । प्रभु० ॥२॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । भाव विमल जलझारो तोलहियै भविजन ध्रुव करिनें । अचिरथकी भवपारो । प्रभु० ॥ ३ ॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूज तजे जगतारो । कपूर कहत जिन चर ण सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितैर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥ संसेवये द्विविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोद्य चिराच्छिवंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत उपदेशकाय पुष्पंयजामहेस्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥अथ आठमी अष्टमंगलीक भोगोपभोग व्रतपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनभृंग । भोग अनें उप भोगनो । एसहुव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥❀॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे । भविकासि० ए चाल ॥❀॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । बाहन बलि तंबोल । वसन कुशम दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण घोलेरे । भविका । इण व्रतमें मनमंमो। शिवसुख रयण करंमोरे । भविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण भत्त इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन भाव हृदयधरि करियै । एहनी सार संभालरे । भवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अभक्ष करोत्तर त्रिंशत । अ खिल विपुल महिकंदो । कालखीण सहु द्रव्य अजाणयो । फल निशिभो जन वंदोरे । भ० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल पुप्पोल विभेदै । अशना दंभ विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालरे । भ० ॥ ४ ॥ इण० ॥ एभंमै ते शिवसुखमंमै । खंमै कुगति दुकाल । सहजानंद शस्यसुख मगटै । प्रवदै त्रिजगकृपालरे । भ० । इण० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर भरियै । तरियै भवजलपार । अनभव चंद्र सुधा झडमंमै । कुशलकला निर धाररे । भ० इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग ठुमरी ॥ ❀ ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोनखबरलै मेरीरे । तु० । ए चाल ॥ भ

विजन आवै श्रीजिनवरकी । मंगलपूजा कीजैरे० । बालामंग० ॥ टेर ॥ श्रीलायन शरलासन नंद्या । वर्त्त कुंज निरमीजैरे।मीनजुगल श्रीबद्ध सरावनो संपुट स्वस्ति करीजैरे । बाल्हा । संपु० । आवि० ॥ १ ॥ ए अष्टमंगल मंगल कारण । कंचन थालरचीजैरे । रुचिराखंड विमल गुणधारी । तंदुलसें लिखलीजैरे । आवि० ॥ २ ॥ निजमन आक्तिआव धरि आविका । प्रभुसनमुख धरदीजैरे । तोसुखधाम मुक्तिपुट आदन । निवसन कृत्य लहीजैरे । आवि० ॥ ३ ॥ स्वांत गगनसम सूर्योदयथी । कोटिकरम तम छीजैरे । प्रगट प्रताप पीन जिन चरणें । चंदकपूर नमीजैरे । आवि० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ यःसत्कांचनआजने शुचितरे मण्युत्तमैर्मंडिते । श्रीखान्यष्ट सुमंगलानि विधिना मंत्र्यप्रभो सन्मुखे । आत्तयात्मा परिढोकये द्रुचिपरः सोघव्रजं नाशयेत् । प्राप्ते दुर्गति आधरं च लभते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्यांनसक्तये जन्म० श्रीमज्जि० आगोपआगव्रत उपदेशकाय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहाः ॥ इति आगोपआग व्रत आठमी पूजा ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी अनरथ दंडव्रते तंदुल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ आवि ए व्रत अष्टमधरो । अनरथ दंड विचार । पाप चिंतन उपशमै । प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगणसनेही साजन श्रीसीमंदिरसामि । अ० ॥ ए चाल ॥ त्रिकरणशुद्ध निसुणआवि अनरथ दंड विचार । समकित सुआटनो गंजन आंजन संबर प्रार । मनमथ बोधविकासक शास्त्र पठन अधिकार । मुख भ्रू दृग तनुथी करै अंगकुचेष्टागार ॥ १ ॥ हास्यथकीवली कुबचन आषण मुखरप्रबंध । कुखल मूशल घरट्टादय अतिधरण कुरंध । स्नानसमें जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध । पापविधाना देशप्रकाशन दूषणखंध।सरस वस्तुभृत पात्र मात्र विन आदनठान। धरणकरण सुविवेकविकल तिम दानादान । इम सहु अनरथ करम अवरपिण दुःखनी खान । व्यर्थ पणें मनमान्यां छेदै पुन्यप्रधान ॥ २ ॥ इण करिपूर्वै केइगया नरसंकटधाम । व्रतग्रहिनें रहियै तव लहियै शिवसुखठाम । ए व्रत तरणी आवोदधि तारण तरण प्रकाम । कुशलकला नितकरतां प्रगटै अभिनवमांम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलाश । विमलाक्षत भरिभाजनें । भविजन करो प्रकाश ॥ १ ॥ राग पीलू ॥ अबतो उधार्‌यो मोहि वहीयै जिनंदराय । राखुं भरोसोमें रावरै चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनवरजीकी सेवा सारै । सो भवभय दुःख दूरनिवारै । श्रीजि० ॥ तंदुलविमल सकलगुण मंडित । खंडितदोष रहित उरधारै । कंचनपात्र भरी जिन आगै । ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचारै ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन तन मनरंजन । गंजन कुगतिकुं बोधविदारै । सबल करम नग भेदनहारो । सघन भवोदधि पारउतारै ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति सानुभव आन मिलावै । तेपिण पद दिवशर्म समारै । पीनमहोदय धार भावधरि । चंदकपूर सनूर निहारै ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ यःखंडजाति गुणवृंद समन्वितानि । नाढोकये प्रिपुलनिर्मल तंदुलानि ॥ कर्म्मावलिं झटिति भेद्य हिमाद्रिनाथे । सोवैभजे द्विवसुखं सुतरामनंतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानं० ज० श्रीमद्भि० अनरथदंड विरमण व्रत उपदेशकाय अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ इति नवमी अनर्थ दंड विरमण व्रत पूजा ॥ ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमो नव निधि जाणियै । सामायकव्रत सार । सुर जे हनी आसाकरै । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरहो दिल बाग मैं होप्यारे जिनजी । आय० ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पालरे । भ विकजन । सामाय० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगै इकमहुरत । निरतीचारै । चालरे । भवि० ॥ १ ॥ सा० गृहव्यापार तजीनें सुभमन । धरि निरवद्य विशालरे । भ० ॥ २ ॥ सामा० ॥ मन वच वपु प्रणिधांन असेवन । स्मृति विहीनता टालरे । भ० ॥ ३ ॥ सा० ॥ द्वात्रिंशत दूषण परिहरिनें । पंचम गुण घरआलरे । भ० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम धनमित्र तणीपर सीझो । कुशलकला परनालरे । भ० ॥ सा० । इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दशमी दर्पण पूजना । कीजै श्रावक सुद्ध । सुरपादपसम शंकरण । हरणपाप संकुद्ध ॥ १ ॥ राग कालिंगमो ॥ नेम प्रभुजीसुं कहज्योजी म्हांरा । नेम० ॥ ए चाल ॥ जिन पूजनमें रहीयैरे । म्हांरा जि० । मन बंछित फल लहीयेरे । म्हां०जि०

॥ टेर ॥ कंचनमणी रतनेकरि जड्यिो । वर दरपण करगहीये । जिनवर सनमुख दाखन विधिसें । सकल करम वनदहीयैरे । म्हांरा । जिन० ॥ १ ॥ प्रभुजीकीसेवा सब सुखदाई । भावभक्ति उरचहीयै । शिववनिता तुम प्रेम विजूधै । अपर अधिकस्युं कहीयैरे । म्हां० ॥ २ ॥ जि० निजकसरीर प्रमाद वसै करि । भवदल भीतिनसहीयै । सुभमन समकित वीरसंगजे । चंदकपूर निवहियैरे । म्हां० ॥ ३ ॥ जि० । इति ॥ काव्यं ॥ रुचिर निर्मल दर्पण दर्शनं । विनयनृष्टदयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा भवसंगमं । सचनिरस्य भजे शिवमंजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये जन्मजरा० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पणं यजामहे स्वाहाः ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव भवियणा । धारो धरि वर भाव । संसारार्णव गहिरनो । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरिनेट्यारे । धन्य भाग हमारा । सिद्धा० ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रद्धा धर मन भाजैरे । घनपाप तिहारा । श्रद्धा० । भाजै० । टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीनें । गुरु मुख वचन हजारा । ए व्रत सुंदर दिल धरो भविजन । देशावकास विचारारे । घनपा० । श्रद्धा० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगें । सब्द रूप अनुसारा । पुग्गल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयै दूषण धारारे । घनपा० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यांन प्रचार । सहु व्रतनो आगमन ए व्रतमें । गुणमणि रयण भंडारारे । घनपा० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनें छेदै । चउगति गेह विहारा । अजरामर धनदैलह्योनिरमल । कुशलकला करिसारारे । घनपा० ॥ ४ ॥ श्रद्धा० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विविध भांति नैवद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजावणी है रसमें । होते० । एचाल ॥ ❀ ॥ सेवासारो श्रावक जिन चरणै । होसे० । टेर ॥ मोदक लपनश्री वर घेवर । शिता सुरस घृत झरणें । मुक्त चूर विंद्रादिक बहुतर । नैवेद्य नानावरणै । होसे० ॥ १ ॥ रयणांकित कंचन भाजन भरि । मन वय तनु थिरकरणें । करिढोकन विधि परम विन

य धरी । रहियै नित प्रभु सरणें । होसेवा० ॥ २ ॥ दुःखदल नासन या पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख झरणें । चंदकपूर कहत भविजनके । क लिमलमाला हरणें । होसेवा० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ धवल धाम शिता र्पि समुद्भवै । विमलभक्ति समन्वित कर्पू रै । जिनपते विंदधाति वियूषनं । सलभते शिवशं प्रवरान्नकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० ग्यां न सक्तिये जन्म० श्रीमज्जि० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशकाय नै वेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । भावो भविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसंहरै। भाकृतकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालऊभादोयराजवी । म्हां रालाल ऊभा० ए चाल ॥ भविजन भाव विसाल प्रमाद नीवारीयै । म्हां० प्र० टेर ॥ पोसहव्रत चितमांहि विनयधरि धारीयै । म्हांरा० वि० ॥ ते पिण दुविधप्रकार चतुर न विसारियै । म्हां० च० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व्व सजौतिम सारियै । म्हां० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हां० स० ॥ परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां० म० षटकाया संघट्ट तजीनें संचरो । म्हांरा० त० ॥ अचपल थई पचक्खांण विविधमनसंभरो । म्हां० ॥ २ ॥ वि० ॥ बलिसहु दूखण टालिनें पापनिकंदियै । म्हां० पा० ॥ चौगति च्यार कषाय करमदल गंदियै । म्हां० ॥ इण विधि तारण तरण सुगु रुपदवंदियै । म्हां० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनंदियै ॥ ३ ॥ म्ह० क० इति ॥ दूहा ॥ द्रादशमी धज पूजमें । घोषणदेई अमार । धरियै द्रादश भावना । तरियै भवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुबजानें जादु मारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसें प्रीतजाना । करीध्वजपूजन विविधानाहो । प्र० ॥ १ ॥ टेर ॥ जोयण सहस मानमणि मंडित । कंचनदंड रचानाहो । प्र० ॥ २ ॥ पंचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० । ३ ॥ ढक्कनाद करी तीन प्रदिक्षणा । रोहणविधि मनभानाहो । प्र० ॥ ४ ॥ या विधिसकल करम रिपुदारण । जोतिमें जोतिसमानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ ज गतारण श्री जिनदरशणसें । चंदकपूरहुभानाहो । प्र० ॥ ६ ॥ इति काव्यं ॥

भव्यार्चंति ध्वजवरैः सशुभैः सलीलै । जैनेश्वरं कनकदंड युतैः सशोभैः ॥ कर्मारि वृंदजय उद्य समन्वितैर्यो । वैसोभजे ह्यिव दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ द्वादशमोव्रत सुखफलद । साधु दानसनमान । अजरा मर पदसंपजै । सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोह्यो माई आणंदजिलै आ० ॥ ए चाल ॥ साधुदान व्रत भवि हृदय धरो । हृदय धरोरेभाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेर ॥ व्रतसंयम गत परलिंगीनें । पखिला भन मति रिजुनकरो । रिजु० ॥ १ ॥ भा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजै । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुकृ० भा० । सा० ॥ २ ॥ वलि पंचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० भा० ॥ ३ ॥ सा० श्रीश्रेयांसनें चंदन वाला । अनुमानें पदनिर्वृतिचरो निर्वृ० भा० ॥ ४ ॥ सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । भरिभाजन कमनीय । भविक रचो भगवाननी । भवविषधर दमनीय ॥१॥ राग प्याल ॥ लोभी नैनारे लोभी नैना । हो दरशणके० ए चाल ॥ ❀ ॥ लोभीसैणारे लोभीसैणा हो पूजन के लोभीसैणा ॥टेर॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरलै । थिर करि मनतनु वैणा । हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पुंगी वीजपूर वलि । आम्र कदली फल लेणा । हो पू० ॥ २ ॥ इम नानाफल गहिप्रभु आगै । भरिभाजन धर दैणा । हो० पू० ॥ ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा । हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पंकजमें । पदपद भए जुगनैणा । हो पू० ॥ ५ ॥ इति ॥ कलश ॥ हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश धारा ॥ टेर ॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सींचन । बचन सजल घनकारा ॥ हांहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशलानंदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वाद श व्रत पूजन विधि पभणी । भवियण गण हितकारा ॥ हांहोहि० १ प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चंद्र सूरिवर । राजै विगति विकारा । श्रीमति भा

धृति रादि कलितके । धरि मनं बचन अगारा । हांहो० आ० प्र० २ ॥ संवत रस त्रिक निधि रात्रिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपक्ष प्रतिपद तिथि सोभन ॥ रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न सूरिसाखाधर । पाठकपद विसतारा । रूपचंदगणि चरण कमलमें । कुशलसार मधुकारा । हांहो म० प्र० अपर नामकरि चंदकपूरा । राचि जिनपति नुतिसारा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवरकी । प्रेरणया सुविचारा । हांहो०प्र० ५ इति ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जंवाम्रादि फल व्रजैः ससुरसै र्गंधादिभि र्मिश्रितै । नूनं । द्रव्य हतु श्चैवेश्च विधिना कुर्यात् प्रभोरर्चनं । भक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो भूयोपि भूयो भवे । धर्म्मस्वर्ग तरोरकं सुखफला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंता० श्रीमद्भि० अतिथि संविभाग व्रत उपदेशकाय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री साधुकपूरचंदजीकृत बारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल जिन मंदर अथवा धर्मशालामें त्रिगढ पीठ सम वसरण की स्थापना करै । जिसपर पूर्व दिशकी तरफ श्रीमहाबीर स्वामी, एवं चारे दिशें चार प्रतिमा स्थापन करै । आगे एक चौखूणा अछा चांदी पीत लादिकका पट्ट स्थापन करै । जिसपर एक वीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे एवं १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुंज करै । ऊपर व्रतनाम युक्त १३ चिठी स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दहिणें पासे धजा अष्टमंग लीकादि सोभता अतिशय स्थापन करै ॥ अब १३ चिठी लिखनेकी रीति ॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व धर्म मूल श्री सद्दर्शनायनमः ॥
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मैथुन विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री भोगोपभोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥
॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दंड विरमण गुण व्रतायनमः ॥
॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविभाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करै । तीन नवकार गुणके वाशक्षेपसें प्रतिष्टत करै (और) जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमंगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामें लगाय दोनूं तरफ रखै । पीछै स्नात्र करायके पूजा करावै । जो पद की पूजा सरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै (परंतु) नालेरका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और धजा १३ व्रतका मांम्हलापर व्रत दीठ च ढावै । बाकी द्रव्य सर्व थाल्यांमें दोनुं तरफ रखै । दीपक पूजामें १३ दीपक तो एक थालीमें रखै । और बारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौवीस दीपक मांम्हलैके चारुं तरफ सोभता श्रेणीवद्ध रखै इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसें पूजनविधि करै, करावै, करतां की अनुमोदना करै । विशेष चित्तकी उमंग होय तो वाजित्रादि उछवके साथ मोटी धजा, कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक नगरमें फिराकर लावै । उत्तम उत्तम द्रव्य भगवानके भेट करै ॥❀॥ इति बारह व्रत पूजा विधि संपूर्णम् ॥

॥❀॥ अथ पाठक बालचंदजी कृत पंच कल्याणक पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनो, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ❀ ॥ चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ ❀ ॥ कल्याणक उछव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते आवे आविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हांरे जगदीशनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जिनादिक जिन कह्या, आगममांहि प्रधान ॥१॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणा जिण नामा । ठवण जिणा ड जिणंद पडिमाउ ॥ दव्वजिणा जिण जीवा । भाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का० ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रधानता । कारज रूपें सिद्ध ॥ १ ॥ विण आकारें द्रव्यनो ॥ हां० ॥ द्र० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो, प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां० ॥ का० ए ॥ इन विन भाव न होय ॥ भाव विशुद्धें जिनतणी । पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ व्यवहारें निश्चय लहे ॥ हां० नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावरु शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ ज्ञानकला कलितातमा । लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकभावें थिर रह्यो । शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहोरे देवा, जोति सकल जिन राजनी । सहु लोका लोक प्रकाश ए ॥ हांहोरे देवा, राजत श्रीजिनराजनी । वाणी प्रवचन शुभ वास ए ॥ १ ॥ हांहोरे देवा, मात नमुं नित्य शारदा । गुरुपंच कल्याणक सार ए ॥ हांहोरे देवा, तीर्थंकरना वरणवुं । गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ (दूहा) ॥ शासन नायक जग धणी । त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहोरे देवा, वीश थानक करि सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० ॥ दिव्य अमर सुख अनुभवे । प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥ १ ॥ हांहो० ॥ निरमल तर वर ज्ञानना । धारक कारक शुभयोग ए ॥ हांहो० ॥ शब्द वरण रस गंधना । शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हांहो० । शाश्वत सिद्धायतण तणा । नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० ॥ बालचंद पाठक कहे । नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ पुण्य पूर्व भव प्रभुतणो । प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी नित प्रति करे । नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ शुद्ध निज दर्शनें, करिय गुणकर्षना । जिनचरण सेवना विविधकारी ॥ हे अइयो विविधकारी ॥ ए आं० ॥ एक निजधर्ममय परमजय लीनता । दीनता सकल तज रज निवारी ॥ हे अई० ॥ र० ॥ १ ॥ आत्मगुण अंतरातमप णे वृत्तिता । तजिय वहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अ० ॥ आ० ॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुभ धर्म रुचि भास सारी ॥ हे अ० भा० ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्ननी जोति झगमग जगे, चंद्रिका भास भासित करारी ॥ हे अ० भा० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखें मुदा ॥ आयुकर बंध नर भव सुधारी ॥ हे अ० भ० ॥ गर्भ अवतार निज मात उदरें लहे । वाल शुभ लग्न शुभ योग चारी ॥ हे अ० ॥ शु० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ शुभदिन शुभ मुहुरत घमी । शुभ उच्च ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रभु लहे । मातु उदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात स्वप्न देख सुख सेजमें । जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी भजो भवि प्यारा । या तें आनंद अधिक अ पारा ॥ जि० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखे सुपना मनभाता ॥ चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार, लक्ष्मी दाम शशी दिनकार ॥ धज कुंभ पदमसर सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरुसमान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी । शुभसूचक पुण्य संभारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरिकारंगें, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ इहां एक पुष्पमाला चढावे ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

परम पुरुष परमातमा, भावी भगवन भास ॥ प्रवचन प्रगटीकरण प्रभु पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें । चौद सुपन सूचित गुण जेहना,

अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन वहु सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज गनमें ॥ पुत्र रतन फल वचत नृपति कुल, परम कल्याण होत जनजनमें ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रफुलित हरख भरत हीय उल्लसत, जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन बढत प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र हुकमतें, भरत भंभार नृपके सदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल मधु वीण वजावत, गीत गान गावत तन ननमें ॥ दुन्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाह । निशिदिन होत जनजनपदमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग भयो । शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद भयो हे तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तिये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय चवनकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम चवन कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारन काज ॥ नृपकुलमांहे अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग सोरठ ॥ ❀ ॥

॥❀॥आज अधिक आनंद भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे ॥ आवो, जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधुवन मिल आई रे ॥१॥ आवो आज आनंदघन उलट्यो रे वाला, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आवो दशदिश निर्मलता थई रे वाला, फूल रही वनराई रे ॥२॥ आवो फूलें फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे ॥ सब जन मन हरषित भयो रे वाला, भूमंडल छवि छाई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महूरतघरी रे वाला, शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥

जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ॥ ए पढी पुष्प तथा गुलाबजलकी वर्षा करे ॥ ❀ ॥

॥ (सोरठो) ॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजित्र वजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रावण निरत वणावे हो भला एचाल ॥ ❀ ॥

॥❀॥ आज आनंद वधाई रे, देखो, आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सब भागे, खार समुद्रे जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, ॥ जिनवर जनम्या भाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आईरे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर उर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे । स्नान करावत उभय शरीरे, तैलाभ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग विलेपन, देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्पण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल ढुलाई रे दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगजननी, निजगृह मांहे ठाई रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशि कुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

(दूहा) ॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग गोडी ॥ सांझ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥❀॥ आज उछव मन भायोरे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥ बनठन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायोरे ॥ सुरकुमरी वरभूषण भू

षित, अद्भुत रूप बनायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयोरे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेघ घटा घरारायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर मोर सुहायोरे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी ऊर लायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधमउधारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट भयो जग दिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रभु अरज करतहुं सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ में सेवक तुम सुत चरणनको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसें लायके, सिंहासण ऊपर स्थापन करे (पीछे) स्नात्र पूजा करावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥(दूहा) ॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंडुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उछ रंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इतनो गुमान न करियें बबीजी राधा हे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ जिनजीको पूजन करियें, हांरे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव बेहुभेदें करतां, भव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अष्टविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धें जिन गुण गावो, नाटक नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न तरियें ॥ वो आनंद देखे सोइ जाने, दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥

पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय दिक्षा कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां, अगणित भरे भंडार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गात्र लूहे० ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, भये प्रात करत उछरंगशुं ॥ रंगसुं हां रे देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे रे देवा, जगजश कीरत विस्तरे ॥ वि० हां०॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर वधु मिल सुरसंगशुं रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशुं ॥ रंग० हां रे० ॥ बालक्रीडा जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ देवा ॥ इंद्रादिक मन मोहता ॥ मो० हां रेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीडा अतिशयवता ॥ अ०हां० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं रे ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं ॥ रं० हां० ॥ वर्जित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीडातिशय, अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच वरणी अंगी रची ए देशी ॥ ❀ ॥

॥❀॥ वरणी न जाती रे, व० ॥ जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत, उरन एसो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि शोभित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशि दिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारें, प्रात भये सुख संघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥

॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिशि आवन आवत, देख दरश अति हरखाती ॥ दुन्दु भि प्रमुख वाजित्र वजत नित । सुरवधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥ ए पढके प्रभुकों पुष्प वासक्षेप चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें । प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण ग्राहक गृह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग तुमरी ॥ तुम विन दीनानाथ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोईरे ॥ प्र० ॥ गृहवासें शुधसंयमधारी, शुद्धसुभावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनभ वनिर्वेदें, स्वतनकी जर खोई रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरनें, सुर नर नारी मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमें नित । आतम निरमल धोईरे ॥ आतमरूप निहारत निजघर । संगसुमति जह जोई रे ॥ प्र० ॥ ॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्म उजियारे । साम कहावत सोई रे ॥ गृहवासें शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभु जीनो लीनो, अंतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना छीण भई लख । आतम शक्तिशुं होई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ दाता दीन दयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करै दारिद्र जग, त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मरुदेवानंदकी, क्या उबि लागत प्यारी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगपति जिनवरकी, क्या उबि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत प्रभुकें मोहनरूपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतराय कर्म कछु, क्षीण भए निरधारी ॥ दानसंवत्सर घन जिम बरसत, पृथ्वी प्रमुदि तकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सबे मिल, हाजर होय सुचारी ॥ जय जय मंगल शब्द उच्चारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो त्सव अतिभारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें, संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव

वर ज्ञान न्नयो तब, विहरत पर न्नपगारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज० श्री दी० अष्टद्रव्यं० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोना कोन ॥ जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रन्नुकुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे । जयजय त्रिन्नुवन साम ॥ २ ॥ तजि आश्रव संबर गहे, संयमन्नाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, न्नए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धारी धारी धारी, जिन न्नए संयमपद धारी ॥ चरणकमल व लिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर । सब जीवां सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत लिये न्नपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणन्नारी ॥ न्नयजैरवतें निःप्रकंप न्नए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोन्न अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरंजन अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रन्नु अप्रतिघाती । खेसम निराश्र यारी ॥ खड्गी शृंग परे एकाकी, अप्रतिबंध बिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) ॥ रत्नत्रय परिग्रह करी । मुक्तिमार्ग अभिराम ॥ निशि दिन करत विहारक्रम । प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद न्नारंरुसुचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषन्नपरें सुविहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर बीर प्रन्नु सिंहतणी पर । कुंजर करम बिदारी ॥ अतिगंन्नीर सायरसम शोन्नित । सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दि नकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वछ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुबजानें जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाके रागद्वेष नया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥ जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें, अपकारें नपकारा रे, ॥ सो० ॥ १ ॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख दुःख सम नपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत, जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसुख अरु नवसुख हू न वांछे, वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ, मोहनी मल्ल पिछारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ क्षायिक संयमने शुभ योगें, अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठक विजय विमल कहे प्रभुके, चरणकमल बलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा (घनघाती चउ कर्मकों, क्षयकर क्षायिक ज्ञान ॥ दर्शन लोकालोकको । प्रगट प्रकाशी भान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी ॥ वस मन क्षत्री कुंथके तीर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पायो प्रभु नवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वरवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमासुधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दवआर्यव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संबरजोग क्रिया नवि विणठी, रही ईर्या सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरन दर्शन प्रगट नयो हे, निज आतम गुणहीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद, नयो अनुकूल समीर ॥ दे नपदेश नविक प्रति बोधत, वचनातिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु, कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम, प्रनुता परम सुधीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर सब मिली, तीन नुवन शिरदार ॥ सब दरशी सर्वज्ञनो, महिमा करे अपार ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणें० ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इंद्र उछव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कंगुरा ए ॥ वृक्ष अशोक सिंहासन शोभित, तीन छत्र चामर धुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ दुंदुभि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जल थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यग् विद्याधर, द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणें उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए ॥ प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥ ए पढके वासक्षेप करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणें प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रगटी प्रभुता परमसम । परमातम पदभूप ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बिगरी कौन सुधारे नाथ विना ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भूमंडल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ भू० ॥ अणहुंते इक कोमी अमरपद, पंकज भमर लुभाया रे ॥ भू० ॥ १ ॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इंद्र करे जाकी सेवा, तन मनसें लयलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक संघसकलकुं । प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ भू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ भू० ॥ ५ ॥ ए कहके वासक्षेप करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) ॥ निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥ मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कहेरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदवामिल गयोरे, दोय चरणुं परध्या न ॥ शुक्ल मन गह गह्योरे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनोरे, सबदरसी जिनचंद ॥ सुरतरु सम जग वालहोरे, सेवत सुर नर इंद ॥ धर्ममैं लह लह्योरे ॥ दो० ॥ १ ॥ चौदम गुण थानक करेरे, आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी क्रियारे, सूखम बादरकंत ॥ बंध सब टर गयोरे, सरब संवर भयोरे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनोरे, कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल दूरें कियारे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्योरे ॥ दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान किया कर कर्मकोरे, क्षय कर पर अनुबंध ॥ निजआतम रूपें लह्युंरे, शाश्वत सुख संबंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयोरे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद, चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिमुखराजे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसमयप्रभु ऊरध गतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वत वर, अनंत महासुख गाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्धस्वरूप बिराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके, कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत अगणीसे तेरोत्तर, श्रावण शुदि पख राजे॥ श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ४ ॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगच्छ नायक ज्ञायक, युगप्रधान पद गाजे ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीत विलास धर्म्मसुंदर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे ॥ श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्मप्रभावन काजें ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं प० ॥ अनं० ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणायः श्री मज्जिनेंद्रेभ्यो नि र्वाणकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्री पाठक विजयविम लजीविरचित पांच क० पू० सं० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्तें, करो भविक रसालरे ॥ प्रथ मधूप सुगंधजिनकुं, उखेवो जिननालरे ॥ १ ॥ भाल निजकर तिलक सुंदर, पहर पुष्प सुमालरे ॥ दक्षिणकर जिन राजभुके, कर आवर्त्त सुथालरे ॥ शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुद्धभगतें, करो दिल खुशियालरे ॥ द्रव्यभावें वि विधपूजा, भविकभाव विशालरे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो, प्रभुपरम दयालरे ॥ जन्म सफलो करो भविजन, कहे पाठक बालरे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें (तथा) रुघीवंत सेठ सत्कारादिककी तरफसें (तथा) संघ समुदायके तरफसें, जो पांच कल्याणकका उछव होय (तबतो) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उछव करे। पांच दिनमें पांच कल्याणक करै (और) जल यात्रा, चोवीस प्रकारी बीश स्थानक, सतर भेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उछव विस्तार वि धिसाथ करावै। ऐसें १० दिनका उछव करै ॥ (यथा) पहले दिन पूठिया चंद्रवा तोरणादिकसें मंडपकी स्थापना करावे ॥ १० दिग्पालाकों बलवाकुल दिरावे। जल यात्रादि उछव करके मंगल कलश थापन करै (इत्यादि) ॥ दूशरै दिन चवन कल्याणकको उछव करै (जैसें) देवलोकसें चवके माताके गर्भमें आवै (तैसें) भगवानकी माताको काष्टमई घरादिकमें पभि बिंबो स्थापन करै (पीछे) ऊपर सेती काष्ट विमानमें भगवानको प्रतिबिंब स्थापन करके नीचै उतारै (पीछे) चवदै स्वप्नांको क्रमसें उतारै। माताके मंडपकेपा स रख्के। तीन नवकार गुणके उतारै (और) तीन नवकार गुणके स्था पन करै। (पीछे) एक (वा) २४ रत्न (अथवा) एक (वा) २४

रुपियांसें। चवन कल्याणककी थापना करै (और) चवन कल्याणककी पांच पूजा पढै ॥ ❀ ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधिः ॥ ❀ ॥

॥ तीशरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उछव करै (जैसें) छप्पन दिश कुमरीका आगमन, और यावन्मात्र केली गृह रचना, दर्पण दर्शनादिक उछव करै ॥ तिस पीछे सुमेरु पर्वतकी थापनाके ऊपर इंद्रादिकका रूप करके भगवानकों थापन करे। सोनें, रूपे, तांबा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरै का कलश वन सके तो १००८ कलश गंगानदी आदि अनेक ठिकाणेंका जलसें भरभरके स्नात्र उछव करावै ॥ शृंगार १। दर्पण २। रत्न करंमक ३। स्थाल ४। पुष्प चंगेरिका ५। इत्यादि उपगरण पूजाका सर्व भगवान आगे रखै ॥ सर्व क्षेत्रांकी सुगंधी उषधीयांसें स्नात्र करावे। गुलाबजलकी, पुष्पां की, रत्नांकी, वर्षा करे। तदनंतर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उछव कियो उस माफक अपनेसें वन सके जिस मुजब संपूर्ण उछव करे । (तदनंतर) घृतसेर २४, । नैवेद्य सेर २४। गुम सेर २४। फल अछा २४ । चढावे। २४ सधव स्त्रियां मिलके २४ गवली करै ॥ जन्मकल्याणककी पांच पूजा पढै। आरती मंगल दीप उतारे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दिक्षा कल्याणक विधिः ॥ ❀ ॥

॥ चोथे दिन दिक्षा कल्याणकको उछव करै । खाशा पालखीमें भगवा नकों वेठाके, वर घोमो वाजित्रादि सहत वरे उछवसें निकाले । अछा वाग वगीचामें लेजाके । अशोक, आम्रादि, उत्तम वृक्षके नीचे सिंघासनपर स्थापन करके स्नात्र उछव करावे। २४ गज उत्तम वस्त्र चढावे। वाश क्षेप देके नवीन चंद्रवा चढावे। दिक्षा कल्याणककी पांच पूजा गवावे। जैन याचकादिककों दान देवै। साहमीवछल करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचमें दिन त्रिगमा समोशरणकी रचना करे। मुगट छत्र चामरादि अनेक तरैके रत्नजडित आभूषण सहत भगवानकों स्थापन

करै । पंचवर्णी सुगंधी फूलांकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र वजावे केवल ग्यान कल्याणककी मीठा स्वरसें पांच पूजा गावे ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शांतिपूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन शुभ महुर्त्ते जिन मंदरमें समोसरणपर जिन प्रतिमा स्थापन करावे (आगे) पंच परमेष्टी पट्ट स्थापन करे (तथा) नव वानके दहिणेंपासे दश दिग्पाल पट्ट (और) वामपासे नवग्रह पट्ट स्थापन करे (पीछे) एक मोटा, एक छोटा, तांबे, पीतल, मट्टी आदिकका हंमा ऊपर खमी सपेद मिट्टी पोतके, चार चार केशर कुंकुका साथिया करे ॥ पीछे ऊंची नींची दोय टिंवची काठकी धरावे । नींची टिवचीपर मोटा हंमा धरे । ऊंचीपर छोटा हंमा धरे । छोटा हंमाके तले एक छिद्र करे । दोनुं मटकाके भीतर साथिया करे ॥ वमा मटकाकी टिवचीके नीचे । चावलका साथिया करके । ऊपर नालेर रुपियो थापनाको धरे ॥ दोनुं मटका ऊपर मोली सुत्रवटके पंचरंगी खजली । एकेक खूणें २१ इकीस पोकर । चारुं खुणे ८४ खजली पोके तणी बांधे ॥ नालेरके आकार मोली सुत्रको दमो नीचला मोटा हंमामें लटकतो रखके । ऊपरकी मोली छोटा हंमाके छिद्रमें पोकर, ऊपर जो चोखुंणी तणी बांधीहे । जिसके बीचमें गांठ देवे (पीछे) जो संघ संमुदायकी तरफसें शांतिपूजा होय (जबतो) मंदरको कलश लेवे (और) एकजनकी तरफसें होय । (तब) शांतिकारकके गृह सेती सधवस्त्री, जिसका । माता, पिता, सासू, सुसरा, चोरमाईत जीता होय जिस स्त्रीकुं अछा वस्त्र आभूषण पहरायके, कलशके मांह, कुंकु केशरको साथियो करके, चावल, सुपारी, पंचरत्नकी पोटली धरके । मुखपर नालेर ढकणें माफक लगाय, कसुंबल कपमो मोली सेती बांधे । ऊपर चार साथिया कर पूर्वोक्त स्त्रीके मस्तकपर रखके । गीतगान पूर्वक नानाप्रकार वाजित्रादि उछवसहित जिनमंदरमें लावे ॥ समवसरणके सन्मुख चावलांको साथियो करके । ऊपर कलश थापन करे ॥ (पीछे) पांच दश जणा द्रव्ये भावे अपना अंग शुद्ध करे ॥ गुरूकेपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ॥ दहिणा हाथके मोली कांकणडोरा मंत्रायके बांधे ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं० ॥

इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावे ॥ (पीछे) एक थालीमें १० । एक थालीमें ९। एक थालीमें ९। नागरवेलका पान सर्व २८ लगावे (जिसपर) फूल, अक्षत नेवेद्य, फल,. रोक नाणो, सब पानपर बराबरधरायके तैयार रक्खे ॥ और पिण, पंचामृत, फूल, फूलमाला, अक्षत, नेवेद्य नानाजात का, लीला, सूका, फल, अत्तर, गुलाबजल, केशर, कपूर, रोली, मोली आ दिपूजापेको सर्व सरंजाम यथाशक्ति तैयार मंगायके रक्खे (पीछे) पूजा सरू करे ॥ ❀ ॥ प्रथम स्नात्रपूजाकी थापना रखके । कुशुमांजली लेके स्नात्रपूजा (तथा) अष्टप्रकारी पूजा करावे (पीछे) पंचपरमेष्टी पट्टा ऊपर चावलांका तीन ढिगला करके । ग्यान, दर्शन, चारित्र, की थापना करे (ऊपर) वासक्षेप करके, चढाये सूधा तीन पान चढावे । उसके आगे दो चावलका ढिगला करके, चैत्यदेवता क्षेत्रदेवताकी, थापना करावे, पान दोय चढावे ॥ ऊपर कसंबल कपमो बांधे (पीछे) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका छांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके । एकेक चढापे सूधो नागर वेलको पान चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन्जंबुद्वी पे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपूजा म होत्सवे । आगच्छ २ । बलिं गृहाण २ । उदयमभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ❀ ॥
ॐ इंद्रायनमः इतिइंद्रआह्वान पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
पूर्वादिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबु द्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महो त्सवे । आगच्छ २ बलिंगृहाण २ । उदय मभ्युदयंकुरु २ स्वाहाः ॥
ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० ।

अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिंगृहाण २ । नदय म० । स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ❀ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नेऋत दिग्पालपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नैऋताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगच्छ २ । वलिं० । नदय० कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ नैऋतायनमः ॥ नैऋत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ वरुणाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० शांति पूजा० । आ० । वलिं० । नदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ वायवे । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । वलिंगृहाण २ । नदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिणभर० । शांति० । आ० । बलिं० । नदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० । अमुक० । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगच्छ २ । बलिं० २ । नदय म भ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन्० दक्षिणभ

र० । शांति० । आ० २ । वलिं० नदय मभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ नर्ऋदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० सप० । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० शां तिपूजा० । आगच्छ २ । वलिं० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोजीसें वांधे (पीछे) ॐ दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकडी द्रव्य सहत नागरवेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पट्टाके, दशुं दिशकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती खडी धरके जगावे । (वा) एक दीपक आगे जगाकर रखे ॥ ॥ ❀ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा महोछवे आगच्छ २ । बलिपूजा गृहाण २ नदय मभ्युदयं कुरु २ अत्रपीठेतिष्ट २ स्वाहाः ॥ ॐ सूर्यायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति सूर्यपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ चंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन जंबु० । दक्षि० । शांतिपूजा० आ० २ । बलि० । अत्रपीठे तिष्ट २ । नद यमभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ चंद्रायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसें चंद्रमाकी पूजा करे ॥ ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो भौमाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि० । अमु० । शांतिपूजा महोछवे । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे २ । नदय० । स्वाहाः ॥ ॐ भौमायनमः ॥ मंगलकी पूजा करे ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुधपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो बुधाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन जं० । दक्षि

ण० । अमुक० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । वलि० २ । अत्रपीठे तिष्ट २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

॥❀॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० शांति० आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो शुक्राय । सायु० । सवा० । सप० । अ० दक्षिण० अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० । अमु० । शांति० । आ० २ । बलि० । अत्रपीठे० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो राहवे सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायु० । सवा० । सप० अस्मिन्० । दक्षि० । अ० । शांति० । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय० स्वाहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरै क्रमसें भगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) नागरवेल पान आदि सर्व द्रव्य (तथा) शक्ति मुजब रोकम नाणो ऊपर भेट करे (ऐसा कहे) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक (वा) एक दीपक धरे ॥ ❀ ॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरें, अन्य मंगल प्रतिष्टादिकमें (जब) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय (तो) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उछव होय। उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय। सो गुरूके मुखसें समझके करावे ॥ (पीछे) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका वाकुला (तथा)पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करवो, मालपूवा, पांच रंगका लाडू, (इत्यादि) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके। एक परातमें सब द्रव्य भेला करे (और) घृत, खांड, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलवाकुल तैयार करे ॥ (पीछे) गुरु, वासक्षेपकी मुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलवाकुल ऊपर वाशक्षेप करे ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ वासक्षेप मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ फ्रूं फ्रीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आयरियाणं। ॐ णमो उवझायाणं। ॐ णमो लोए सव्वसाहुणं। ॐ णमो आगास गामीणं। ॐ णमो चारण लद्धीणं। जे इमे किन्नर। किंपुरस। महोरग। गरुड। गंधर्व। जक्ख। रक्खस। पिशाअ। भूअ। काइण पन्नइउ। जिणवर निवासिणो। सन्निहि याय। तेसव्वे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं। बलिपमिछंता। तुठिकरा भवंतु। पुठिकरा संतिकराभवंतु। सव्वं जणं कुर्वंतु। सव्वजिणाणं संहाणप्रभा वउ। पसन्नभावतणे। सव्वत्थ रक्कंतु कुर्वंतु। सव्व दुरियाणी नासंतु। सव्वा सिव सुवसमंतु। संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलवाकुलकों शुद्ध करे।(पीछे)आधा बलवा कुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमत्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे। आ धाबलवाकुल लेके घरके (तथा) चैत्यकेऊपर ११ स्नात्रिया शुद्ध होके जावे। (जिसमें) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बल वाकुल दोनुं हाथांमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खमा रहै ॥ १ ॥ दूशरो केशरकी कटोरी २। तीशरो फूलकी चंगेरी ३। चोथो आरीसो ४। पांचमो धूपदानो ५। छठो दीपक ६। सातमोचामर ७। आठमो घंटा ८। नवमो जलको कल

श ९। दशमो वलिवाकुलकीथाली १०। इग्यारमो मंगल वाजित्र ११। इसी तरेंसें सब स्त्रात्रिया एकेक दिशतरफ खमारहै । (जब) शुद्ध हरफ उच्चारण करनेवाला पंक्ति गुरू, जो दिग्पालकी पूजा बोलचूके (तब) क्रमसें जल वाला, जल, केशर, फूल, वलवाकुल चढावे। चामरकरे। काच देखावे। वा जित्र वजावे। इत्यादि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल आह्वान मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐरावतः समारूढः। शक्रःपूर्वदिशिस्थितः। संघस्य शांतयेसोस्तु वलिपूजां प्रयछतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशकीतरफ जलचंदनादि वलवा कुल चढावे ॥ १ ॥ (अग्निकूणके सन्मुष) ॥ सदावन्हि दिशोनेता। पाव को मेषवाहनः। संघस्य शांतिये सोस्तु। वलिपूजां प्रयछतु ॥ २ ॥ ऐसा कह के वलवाकुल चढावे ॥ (दक्षिण दिशकीतरफ) दक्षिणस्यां दिशःस्वामी। यमोमहिषवाहनः संघस्य०। वलि० ॥ ३ ॥ वलवाकुल चढावै। वाजित्रव जावे ॥ ४ ॥ (नेरुत कूणकीतरफ) ॥ यमापरांतरालोको। नैरुतः शिववा हनः। संघस्य०। वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमादिशि) ॥ यः प्रतीची दि शोनाथः। वरुणो मकरस्थितः। संघस्य०। वलि० ५ ॥ (अथ वायवकूण) हरिणो वाहनंयस्य। वायव्याधिपतिर्मरुत्। संघस्य०। वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तरदिशि) निधान नवकारूढ। उत्तरस्यां दिशिप्रभुः। संघस्य० वलि० ॥ ॥ ७ ॥ (अथ ईशानकूण) सितेवृषेधिरूढश्च। ईशानांच दिसोविभुः। सं घस्य०। वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशी) ॥ पातालाधिपतियोस्तु। सर्व दा पद्मवाहनः। संघस्य०। वलि० ॥ ९ ॥ (अथ ऊर्द्धदिशि) ॥ ब्रह्मलो क विष्णोयस्तु। राजहंस समाश्रितः। संघस्य०। वलि० ॥ १० ॥ ऐसा कहके, ऊर्द्धदिशिकों जलचंदनादि वलि चढावै ॥ ❀ ॥

इति दशदिग्पाल आह्वान वलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ❀ ॥

॥ (पीछे) कलशके ऊपर श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चल पणें रक्खे। पंचरत्नकी पोटलीरक्खे। केशर पुष्पादिकसें कलशकी पूजा करे। गुरू वासक्षेप करे। तिसकेबाद कलशके आगे। कुशमांजली १। लवण उतारण २। पहरावणी ३। मंगलदीप ४। करे। मंगलदीपकमें मोलीकी वट्टी

घृतऐसा रक्खे । कि । शांतिपूजा पूरण होय उहांतक तो अवश्य अखंम रहे (पीछे) चतुर्विध संघसहत गुरू इरियावही पडिक्कमें । चारनोकारको कावसग्ग करके लोगस्स कहै ॥ बेठके दहिणो गोमो धरतीपर रक्खे । मा बीगोमो नम्रीभूत करके चैत्यवंदन करै । णमोत्थुणं० कहके अरिहंत चेइ याणं० । वंदणवत्तिया० अन्नत्थू० । एक नवकारको कावसग्ग करे । नमोर्हत् सिद्धा० कहके । थुईकी गाथा कहे (यथा) ॥ यदंघ्रि नमना देव । देहिनः संतिसुस्थिता । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्न विघातिने ॥ १ ॥ लोगस्स० बंदन० अनत्थू० कहके १ नवकार० ॥ दूजीथूई कहे ॥ सुरपतिनत चरण युगा । ज्ञानेयजिनादि जिनपती नौमी । यद्वचन पालनपराः । जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ इहां पुक्खरवरदी० । वंदनवत्तिया० कहके कावसग्ग करे ॥ तीसरी स्तुति कहे ॥ वदंति वंदारु गणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्वच यंति सूत्रतः । गणाधिपास्तीर्थ समर्थ नक्षणे । तदंगिना मस्तु मतंनमुक्तये ॥ ३ ॥ इहां । सिद्धाणं बुद्धाणं० । अनत्थू० कहके १ नवकारको कावसग्ग करे ॥ चौथी स्तुती कहे (यथा) शक्रःसुरा सुरवरैः सहदेवताग्निः । सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताग्निः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतिप्रवृत्तान् । भव्यान् जनाः भवतु नित्य ममंगलेभ्यः ॥ ४ ॥ (पीछे) बेठके णमोत्थुणं० कहके खमा हुवे ॥ श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि काउसग्गं ॥ वंदन वत्तिया० । अन्नत्थू० कहके १ नव०॥ रोग शोगादिग्निर्दोषै । रंजिताय जि तारये । नमः श्रीशांतये तस्मै । विहितानत शांतये ॥ ५ ॥ (ततः) श्रीशांति देवता निमित्तं करेमि० । अन्नत्थू० १ नव का० ॥ श्रीशांतिजिन भक्ताय । भ व्याय सुखसंपदं । श्री शांतिदेवता देया । दशांति मपनीयते ॥ ६ ॥ (ततः) श्रीश्रुतदेवता नि०॥ सुवर्णशालनी देयात् । द्वादशांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदामह्य । मशेष श्रुतसंपदं ॥ ७ ॥ (ततः) श्रीभुवनदेवता नि० । चतुर्वर्णाय संघाय । देवीभुवन वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतु सुखमक्षतं ॥८॥ (ततः श्रीक्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति । साधवःश्रावकादयः जिनाग्यां साधयं तस्था । रक्षंतु क्षेत्र देवता ॥ ९ ॥ (ततः श्रीअंबिका देवता निमित्तं क०) अंबानिहित किंवामे । सिद्धबुद्ध समन्विता । सिते सिंहे स्थि

तागौरी । वितनोतु समीहितं॥१०॥(ततः श्रीपद्मावती देवता निमित्तं क०) धराधिपतिपत्नीया । देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रो पद्रवतःसामां । पातुफुल्लत्फ णावली ॥ ११ ॥ (ततःश्रीचक्रेश्वरी देवता निमित्तं क०) । चंचच्चक्रधराचा रु । प्रवालदलसन्निभा । चिरंचक्रेश्वरीदेवी । नंदता निवभाद्यमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअजुप्ता देवता निमित्तं०) खड्गखेटक कोदंरु । वाणपाणिस्तडित् द्युतिः । तुरंग गमना अजुप्ता । कल्याणानि करोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेर देवतानिमित्तं०) मथुरापुरी सुपार्श्व । श्रीपार्श्व स्तूप रक्षिका । श्रीकुबेरा नग रारूढा । सुतांकावतुवोन्नयात् ॥ १४ ॥ (ततः श्रीब्रह्मदेवता निमत्तं०) ब्रह्म शांति समांपाया । दपाया द्वीरसेवकः।श्रीमत्सत्य पुरेसत्या । येनकीर्त्तिः कृता निजः ॥ १५ ॥ (ततः श्रीगोत्र देवता नि०) यागोत्रं पालयत्येव । सकला पायतःसदा । श्रीगोत्रदेवतारक्षां । शंकरोतु नतां गिरां ॥ १६ ॥ (ततःश्री शक्रादि समस्त देवता नि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षाः । जिनशासनसंस्थिताः । देवादेव्यस्तदन्येपि । संघरक्षंत्व पायतः ॥ १७॥ (ततः श्रीसिद्धायिका श्री शासन देवता नि०) अन्नत्थू० चारलोगस्सकोका० स्तुति कहे । श्रीमद्भिमान मारूढा । यक्ष मातंग सेविता । सामां सिद्धायिका पातु । चक्र चापेषु धारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स० । कहके बैठे । चैत्यवंदन० । णमोत्थुणं० । जयवी यरायपर्यंत कहै ॥❋॥ इसी तरे १८ स्तुतीसें देववांदै ॥ (पीछे)सुंदर अंगो पांगवाले ।सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित । विवेक गुणधारक,आठ स्नात्रिया मुख कोश बांधके तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासक्षेप, चढातो रहै ॥ दो स्नात्रिया लोटामें जल भरके दोनुं तरफ धारा देनेंवाला कलशानें पूरता रहे । दोजणा दोनुंतरफ चामर ढालता रहै ॥ (प्रथम) गुरू आदि, सकलसंघ सात सात नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे । ऐसें सात धारा दे चूके (तब) गुरू, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें । नमो ऽर्हत् सिद्धाचा र्यो० कहके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । (पीछे) भक्तामर बडीशांति, छोटी शांति, गुणें ॥ (तथा सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण

शांति शुरु आती होय। जब तो गुरूकेसाथे, अपनें मनमें साते स्मरण शांतिगुणें (ओर) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहै ॥ साते स्मरण (तथा) शांति गुणें जहांतक अखंरु ऊपरले ढोटे कलशेमें धारा देता रहै। ढींककोई न करै। कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करै ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूकें (पीछे) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरै (पीछे) नीचेका कलशमेंसें। जिन प्रतिमाकों निकालके अछीतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ भगवानकी अछी अंगीरचना करावे। नानाप्रकारका नेवेद्यफल चढाके। आरती उतारै। मंगलदीप करे ॥ पीछे शांतिजल सर्वसंघ लगावे। घरमें लेजाके छांटे। शांतिपूजाकी मोली गुरूकेपास लेके राखडी बांधे ॥ (इससें) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांति होय। अनेक प्रकारसें रुधी वृधी सुख सौभाग्यकों प्राप्त होय ॥ (पीछे) जो आधा बलिवाकुल परातमें रखा हुवा है। सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरूकेसाथ मंदरुपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है (कि) आगछ २ के ठिकाणें गछ २ कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (यथा) ॐ नमो इंद्राय। पूर्वदिग् अधिष्टाय काय। ऐरावण वाहनाय। सहस्र नेत्राय। वज्रायुधाय। सपरिकराय। अस्मिन् जंबुद्वीपे अमुक नगरे। अमुक मंदरे। अमुक महोछवे। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ गछ स्वाहा ॥ पूर्वदिशकीतरफ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॥ ॐ नमो अग्निमूर्त्तये। शक्तिहस्ताय सायु०। सवा०। सप०। अस्मि० अमु०। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २। गछ २ स्वाहाः ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशे) ॥ ॐ नमो यमाय। दक्षिण दिगाधिष्टायकाय। महिषवाहनाय। दंरु आयुधाय। कृष्ण मुर्त्तये। सायु०। सप०। अस्मिन्०। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ स्वाहाः ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ ॐ नमो नैरुताय। खरुगहस्ताय। सायु० सवाहनाय। सप०। अस्मि०। अमु०। सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ स्वाहाः ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशे) ॥ ॐ नमो वरुणाय। पश्चिमदिगधिष्टा

यकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० । गह्न २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये । ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोप द्रवा० गह्न २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ (उत्तरदिशे) ॐ नमो धनदाय । उत्तरदिगाधिष्टायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० २ । गह्न० २ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ईशान कूणे) ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । स प० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गह्न २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्ध्वलोके) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधि ष्टायकाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गह्न० २ स्वा हाः ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॥ ॐ नमो नागाय । पाताजनिवासाय । पद्मवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गह्न२ स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरै क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ❀ ॥ (पीछे) नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करै ॥ (यथा) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्म्मसक्ताः । आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो यांतु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । त त्सर्वं क्षमृतंदेवः । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आह्वानं नैवजानामि । नैवजाना मि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ (पीछे) यथा शक्ति ग्यानपूजा, गुरूपूजा, साहमीवात्सल्य करै ॥ जैनयाचकानेंदानदेवै ॥ इति शांतिक स्नात्र पूजाविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद मंत्रका पूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥ (जलमंत्र) ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा (इसमंत्रसें) जलमंत्रे (पीछे) ॐ ह्रीँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ जलोपमें पांपां वांवा अशुचि शुचिभवामि स्वाहा ॥ (इस मंत्रकों) सात

वेर पढता हुवा स्नान करे (पीछे) ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रों नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे (पीछे) ॐ आँ ह्रीं क्रों अर्हते नमः ॥ (इस मंत्रसें) सातवेर गुरूपासे केशर मंत्रायके तिलक करे (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्गु २ । सुमणसे । सोमणसे । मह म हुरे । ॐ कवली कः क्रः स्वाहाः ॥ (इस मंत्रसें) मोली मेंढल मरोमा फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ (और) जब मंगलजीके चारुं तरफ मोली मेंढल बांधे । सोभी, इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सन्मुख हाथ जोमके बैठे ॥ (जब गुरू) ॐ पर मेष्टी० स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करंवज्र । पंजराजं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ णमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ णमो सव्वसिद्धाणं । मुखे मुखपटंबरं ॥ २ ॥ ॐ णमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ णमो उवज्झायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं । मोच के पादयोशुन्ने । एसो पंचनमुक्कारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव्व पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोबहिः । मंगलाणंच सव्वेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदैसदा ॥ तस्यनस्या द्भयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥ ❀ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥ (पीछे) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ (तथा) तीन नवकार गुणके सर्व स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ (इतनी विधीतो) हरकोई पूजा प्रतिष्टा मंगलादिकमें स्नात्रियांकों प्रथम अवश्य करणी करा णी चहियै ॥ (पीछे मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) चंपेलीका तेलमें, हिं गलू (वा) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग (वा) मालीपन्नासें अंग रचना करै । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप नेवेद्य

फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य(ॐ क्षेत्रपालायनमः) ऐसा बोल ता हुवा चढावे ॥ (पीछे) मंगलजीके दहिणेंपासें, १० दश दिग्पा लके पट्टेकी थापना करे । एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरवेलके पानसुद्धा चढाता रहे ॥ दशुं दिग्पालकी पूजा हुए पीछे । ऊपर कसुंबल वस्त्र बांधे । आगे सर्व द्रव्य चढावे । दीपक करे ॥ (पीछे) वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करे॥ (पीछे) सर्व स्नात्रियांकुं १८ स्तुतीसें देव वंदन करावे ॥ (इहां) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र (तथा) देव वंदनकी विधि विस्तारके भयसेती न लिखी है (सो) पूर्वेशांति पूजामें लिख आए हें(उसी मुजब) सर्व विधि करावे (पीछे) मंगलजीकी प्रतिष्ठा करे ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगल प्रतिष्ठा विधि॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दोनुंपासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करे ॥ इन दोनुं दीपककों चार पहर अखंम रक्खे । (पीछे) सोनें, चांदी, आदिका कलशमें अबोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करे । हाथमें कल श लेके । ७ सात नवकार गुणें ॥ ॐ ह्रीं जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें ७ वार जलकों मंत्रके । मंगलजीके चारुं तरफ धारा देवे । ऊपर जरा छांटा देके पवित्र करे । धूप खेवे (पीछे) नवतारी मोली सुत्रका साढा तीन आंटा मंगलजीके बाहर कर देवे । पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली (तथा) मेंढल मरोमा फली चारुं तरफ बांधे ॥ (पीछे) केशरकी कटोरी हाथमें लेके (ॐ आँ ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः) इस मंत्रसें मंत्र के मंगलके ऊपर केशरका छींटा देवे । (ऊपर) चावलको साथियो करे । टीकी देवे । मंगलके अगाडी चावलको साथियो (वा) नंद्यावर्त्त करके ऊपर नालेर रुपियो भेट धरे ॥ (पीछे) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मंगल जीके चारुं तरफ तीन रेखा आलेखन करे ॥ (पीछे) वाशक्षेप, पुष्प, हाथ में लेके (ॐ भूरसी भूतधात्री विश्वाधारैनमः ॥) इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके मंगलभूमि, तथा, पीठकी पूजा करे ॥ फेर, आचार्य गुरू वाशक्षेप हाथमें लेके (ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्पीठायनम) इस मंत्रसें ७ वेर मंत्रके मंगल पीठकी

पूजा करे ॥ (पीछे) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन वेर मंरु लकों वधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके । रुपियो नाजेर थापनाको धरै । (पीछे) स्नात्रिया मंदरके नीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगरा ऊपर मंत्र पढके स्थापन करै ॥ (स्थापन मंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमे श्वराय । चतुर्मुखाय परमेष्टिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासु रेंद्र सेविताय । देवाधिदेवाय । त्रैलोक्य महिताय । अत्र पीठे तिष्ट २ स्वा हा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढके । नवप्रतिमा (वा) एकप्रतिमा स्थापन करै ॥ (इसीतरे) मंरुल प्रतिष्टा करके (पीछे) सिद्धचक्र पूजा सरू करे ॥ ❀ ॥ (प्रथम) एकरकेबीमें । सपेद गोलो, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पद की पूजा पढै ॥ (यथा) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आविर्नुतोल्लसद्बोधा । नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषें धन धूम केतुः । नपार संसार समुद्र सेतून् । यजै समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जि नानांबुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मंत्रसे अर्हंत पदकी थापना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ (पीछे) रकेबीमें । लाल गोलो, लाल धजा, लाल वस्त्र, ८ माणक रत्न, ३१ मूंगा, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढै ॥ (यथा) तस्य पूर्व दले सिद्धान् । सम्यक्तादि गुणात्मकान् । निःश्रेय संपदं प्राप्तान् । निदधे भक्ति निर्झरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्व पत्रे परितः प्रणष्टः । दुष्टाष्ट कर्मा धिगम्य शुद्धि । प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनंतबोधान् । सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशकी तरफ सिद्ध पदकी स्थाप ना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥ (पीछे) रकेबीमें पीलो गोलो, पीली धजा, पीलो, वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल, जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढे ॥ (यथा) स्थापयामितत: सूरीन् । दक्षिणेस्मिन् दले मले । चरतः पंचधाचारान् । षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरी सदाचार विचारसारा । नाचारयंतः स्वपरान् यथेष्टं । व्यापसर्गैक निवारणार्थः । मभ्यर्च्यया म्यक्षतगंधधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ

ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशकी तरफ आचार्य पदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ (पीछे) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामुंगकालडडू, हरीधजा, ४ इंद्रनील, २५ मरकतरत्न पन्ना, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढै ॥ (यथा) द्वादशांग श्रुता धारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् ! निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै । पठंतियेन्यानपि पाठयंति । अ ध्यापकां स्तांनपराब्जपत्रे । स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ॥ पश्चिमदिशकीतरफ उपाध्याय पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति॥ ❀॥(पीछे)रकेबीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा । उडदकालडडू, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें ले के साधूपदकी पूजा पढै ॥ (यथा) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुध्या नैक मानसान् । उदक पत्रगतान् वारान्। साधुवासीस सुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैरा ग्यमंतर्वचसि प्रसिद्धं । सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे । येषा मुदक्यवगतान् सुकृतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व साधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरदिशकी तरफ साधुपदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ (पीछे) रकेबीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके। दर्शन पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (यथा श्लोकः) जिनेंद्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्या त्व मथनं शुद्धं । नस्त मीशान् सद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहाः ॥ ६ ॥ ईशान कूणें दर्शनपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ (पीछे) रकेबीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लडडू आदि श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) मशेष द्रव्यपर्याय । रूपमेवाव भासकं । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हि तावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकूण कीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ॥ (फेर) रकेबीमें सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र आदि श्वेत द्रव्य हाथमें लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) सामायिकादि

निर्नेदै । श्चारित्रं चारु पंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रैह नैरुते क्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैरुत कूणकी तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ❀ ॥ (पीछे) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोला, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके, तप पदको श्लोक बोलके चढावैं ॥ (श्लोकः) त्रिधा द्वादशधाभिन्नं । पूतेपत्र तपःस्वयं । निधाययामि भक्त्यात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀॥ (अथ अर्घं) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशय मयतनून् श्री जिनेंद्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्तादि प्रकृष्टाष्टक गुणऋदा चार साराश्चसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराएयादि संज्ञं । स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थमष्टदलं पद्मं । पूरये दर्हदादिभिः । स्वाहांतै प्रणवाद्यश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंत चतुष्टय । परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ (इति मूलमंत्रः) ॥ इति सिद्धचक्र प्रथमवलय मूलपूजा विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम वलयमें एक मध्य, चार दिश, चार विदिश, एवं अष्टदल कमलके आकार नवकोठा मंत्रके मध्यभागमें होय । तनोंकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ (पीछे) दूसरा वलयमें चूलीके आकार १६ कोठा होय । (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठामें, अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै । (और) एकेक कोठा बीचमें खाली रहा है (तसमें) अनाहत पद (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) ऐसा पदस्थापन करै ॥ (पीछे) एक रकेबीमें, मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां लेके खडा रहै । अनाहत पदमें मिश्री, लवंग, चढावे ॥ और आठ वर्गमें दाषा चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग चढावै ॥ १ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ ह्रीं स्वर वर्गाय नमः ॥

(इहां) १६ दाख चढावै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । ॐ ह्रीं व्यंजन कवर्गायनमः ॥ १६ ॥ दाखच० ॥ ४॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ५ ॥ चछजझञ । ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ टठडढण । ॐ ह्रीं टवर्गायनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ९ ॥ तथदधन । ॐ ह्रीं तवर्गायनम ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ११ ॥ पफबभम । ॐ ह्रीं पवर्गायनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ १३ ॥ यरलव । ॐ ह्रीं यवर्गायनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ १५ ॥ शषसह । ॐ ह्रीं शवर्गायनमः ॥ १६ ॥ पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढावै ॥ सब ९६ द्राख (और) यरलव १ । शषसह २ । यह दो वर्गमें ६४ द्राख चढावै ॥ ❀॥ इति दूसरा वलय पूजनविधिः ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अब (तीसरा वलयमें) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्टी, पद स्थापन निमत्त आठ कोठा करै ॥ इस आठ कोठाके वीच वीचमें वलाका तीन तीन देवे ॥ तीनुं वलाकामें २४ खाना हुवै ॥ एकेक खानेमें दो दोय लब्धि पद स्थापन करनेसें । चोवीस घरमें ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना॥

॥ ❀ ॥ अथ लब्धिपद पूजन विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आठ परमेष्टी पदोंमें । ॐ ह्रीं परमेष्टिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८ वेर कहके ८बीजोरा चढावै (और) लब्धि पदका नाम बोलके, खारकां ४८ चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धाणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं

णमो विउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग निमत्त कु शलाणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लद्धीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आ गासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिया सवाणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइ महावीर वद्धमाण बुद्धरि । सीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥ ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ण मो घोर परिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं ॥ ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसही पत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण वलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं॥४८॥ ॐ ह्रीं अ र्हं अमृयासलब्धि पदेभ्योनमः ॥ ❀ ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चौथे पांचमे वलयमें खारकां सब ४८ चढावे ॥ (पीछे) मंगल जीके गलेके स्थानके ह्रीं कारजी स्थापन किया है (जहांसें) साढातीन वलाका, मंगलजीके चौतरफ देके नीचे (क्रों) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें, आठे दिशाये, आठ गुरु पादुका स्थापन करके ८ दाम मफल चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं अर्हत् पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ (दाम्म चढावे) ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्य पादुका

भ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमगुरु पादु काभ्योनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनंत गुरुपादुकाभ्योनमः ॥७॥ ॐ ह्रीं अनंतानंत गुरुपादुकाभ्योनमः ॥८॥ॐह्रींश्रीअष्टगुरु पादुकाभ्योनमः स्वाहा ॥ इसीतरें आठवलयमे ८ दाम्म चढावे ॥ (पीछे) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन कर के।८नारंगी चढावे ॥(यथा) ॐ ह्रीं जयायैनमः स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं जंभायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं थंभायैनमः स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं जयंत्यैनमः स्वाहा॥५॥ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अपराजितायैनमःस्वाहा ॥ ७॥ ॐ ह्रीं अंधायै नमःस्वाहा ॥८॥ (ऐसें) सातमा वलयमें८ नारंगी चढावे ॥ ❀ ॥ (पीछे) आठमा वलयमें । १६ विद्या देव्याकों स्थापन करके चांदीका वरग लगाई नई १६ सुपारयां चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं रोहण्यैनमः ॥१ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रशृं खला यैनमः ॥ ३ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरष दत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं काल्यैनमः ॥ ७॥ ॐ ह्रीं महाका ल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं वैरोट्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं महामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ (इसीतरें) आठमा वलयमें चारुं तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावे ॥ ❀ ॥ (पीछे) नवमा वलयके वामवासे । २४ शाशनदेव्यांकों स्थापन करके २४ सुपारयां चढावे॥ (यथा) ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितवलायैनमः ॥ २॥ ॐ दुरि तारयैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्या मायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतार कायनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंमायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धारण्यैनमः ॥ १८॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ॥२०॥

ॐ गांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥२३॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इसीतरै वामपासे ॥ २४ देव्यांकी स्थापना करै ॥ (पीछे) दक्षिणपासे, २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐ भृगुट्येनमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐ गंधर्वायनः ॥ १७ ॥ ॐ गरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ पाताजायनमः॥ ॥ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षरा जायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयायनमः ॥ ९ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इसी तरै नवमा वल यके दाहिणेपासे २४ यक्षकी थापना करके २४ सुपारी चढावै ॥ (पीछे) चारे दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला वल वाकुल चढावै ॥ (यथा) ॐ कुमुदायनमः ॥ १ ॥ (पूर्वादिशि) ॥ ॐ अंजनायनमः ॥ दक्षिण० ॥ २ ॥ ॐ वामनायनमः ॥ (पश्चिम) ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ❀ ॥ (पीछे) चार विदिशकीतरफ चार वीर पदे कृष्ण वलवाकुल चढावे ॥ (यथा) ॐ माणभद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ पूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐ कपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ इसी तरै दशमा वलयमें आवुं दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्था पन करै ॥ (पीछे) पूर्ण कलशके आकार, ऊपरसें किया हुवा, सिद्धचक्र जीके गलैके स्थानक, नवनिधान पदे, नव सोनें चांदी आदिकका कलशामें यथाशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करै ॥ (यथा) ॐ नैसर्प्पिकायनमः ॥ १ ॥ ॐ पांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाका लायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरै सुखस्थानके नवनिधानपदे ९ कलश स्थापन करे ॥ ❀ ॥ (पीछे) को

हलोफल हाथमें लेके । दक्षिण नेत्रके बरावर पासमें बंगलीका आकार किया है ॥ (जहां) ॐ ह्रीं विमल स्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ऐसा कहके चढावे । (फेर) कोहलोफल हाथमें लेके वामनेत्रपासे वंगलीमें (ॐ क्षेत्रपालायनमः) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ २ ॥ (पीछे) तीसरो कोह लोफल हाथमें लेके, अधःपींदीके दहिणेंपासे वंगलीमें (ॐ चक्रेश्वर्यैन मः ॥) ऐसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चोथो कोहलोफल हा थमें लेके नीचे पींदाकै वामपासे वंगलीमें (ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्टाय कायनमः) ऐसा बोलके चढावे ॥ ४ ॥ (पीछे) दशोदिशायें इंद्रादिक दशदिग्पालकों स्थापन करे (वनसकेतो) अपना २ वर्ण मुजब वस्त्र नेवे द्य पुष्पादि द्रव्य चढावे (अथवा) सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण । चंदन, केशर, चंपो, द्राख, पीलोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढावे ❀ ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिशि) ॐ यमायनमः ॥ ३ ॥ कालेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ (नेरुतकूणे) ॐ नैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रा दिक द्रव्य चढावे ॥ (पश्चिमदिशि) ॐ वरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सब द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ वायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ (उत्तरदिशि) ॐ कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ (ईशानकूणे) ॐ ईशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ (अधोदिशिः) ॐ नागायन मः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ (ऊर्ध्वदिशि) मस्तके । ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै ॥ ❀ ॥ (पीछे) नीचे पींदी स्थानकके बीचमें ९ कोठा किया हुवा है (जहां) नवग्रहकी स्थापना पूजा करै ॥ (यथा) ॐ सूर्यायनमः ॥ १ ॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ १ ॥ ॐ सोमायनमः ॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐ भोमायनमः ॥ लाल रंग वस्त्रादिक द्रव्य० ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥

मुंगे रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः॥ पीलेवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ सपेदवर्ण नांदोल वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चरायनमः नीलेरंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ काले रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ बींट रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इसीतरै नीचै नवग्रहकी स्थापना करै (पीछे) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके। आरती नवपदजीकी करै पीछे नवपदको चैत्यवंदन करै ॥ उप्पन्नसन्नाण० (तथा) जोधुरि श्रीअरिहंत मूलदृढ पीठपइठियो। सिरु सूरि उवझाय साहु चिहुं साह गरहिउ। दंशण नाण चरित्त तव पम्हिशाहे सुंदरू ॥ तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद लमंबरू। दिशिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो। सो सिद्धिचक्क गुरु कप्पतरु अह्ममन वंछिय दियउ ॥ १ ॥ (पीछे) । जंकिंचि णमोत्थुणं०। नमोर्हत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं० आदिस्तवन कहके । जयवीयराय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करे ॥ नवपद स्तुति कहै ॥ (पीछे) गुरूकेपास आयके वाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरूपूजा करै ॥ धूप खेवै । रोकनाणो चढावे ॥ (पीछे) यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करै॥इति नवपद मंगल पूजन विधिः ॥ ॥ अब जाणना चाहियै (कि) जब कोई श्रीमंत उजीकी तपस्या करै तब तो उए महिने मंगल पूजा विस्तार विधीसाथ कराता रहै॥ और तपस्या ४ ॥ साढाचार वरसमें पूरण होय (तब) वरघोडवकेसाथ मंगल रचना पूजा करै ॥ उद्यापन करै ॥ संपूर्ण देवखातै, ग्यानखातै, गुरुखातैका उपगरण नव नव करायके। प्रथम धर्मशालामें सुशोभित करै । दशपनरैदिन जलजात्रादि अनेक तरैका उछव करै ॥ (पीछे) देवका देवखातै देवै । ग्यानका ग्यानखाते। गुरूका गुरूखातै। उपगरणादि द्रव्य देवै ॥ (और) रुद्धीरहित किया भावसें संपूर्ण करै। द्रव्यपूजा अपनी शक्ति मुजब करै ॥ (और) पंचायती संघ तरफसें मंगलीक अर्थ उए महिने मंगल रचना नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहै ॥ उजी करनेका विधि (तथा) नवपद पूजा, स्तवन, थूई, संपूर्ण, रत्नसागरका प्रथम भागमें

लिखा हुवा है (इससें) इहां न लिखा है । तसमुजब करै, करावे ॥ ॥ ❀ ॥ इति विशेष विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भगवंतके (९) अंग पूजन दूहा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलभरी संपुट पत्रनां । युगलक नरपूजंत । रिषभ चरण अं गूठमे । दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं बलें काउसग रह्या । विचर्या देश विदेश । खमा खडा केवल लह्या । पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक बचनें करी । वरस्या वरशी दान । करकंमै प्रभु पूजनां । पूजो भवि बहु मांन ॥ ३ ॥ मानगयुं दोअंशथी । देखी वीर्य अनन्त । भुजाबलें भवजल तर्या । पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली । सकल सुगुण विशराम । नाभि कमलनी पूजना । करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बलें । बाल्यो रागनें रोष । हेम दहै वन खंमनें । हृदय तिलक संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना । कंठ विवर वर तूल । मधुर ध्व नी सुर नर सुणें । तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुन्य थी । त्रिभुवन जन सेवंत । त्रिभुवन तिलक समा प्रभु । भाल तिलक ज यवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली । लोकांतिक भगवंत । वसियातिण कारण सही । शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना । तिम नव अंग जिणंद । पूजो बहुविध भाव थी । कहे सहु वीर मुणिंद ॥ १० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शिक्षाकारक दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीवमा जिनवर पूजिइं । पूजाना फल जोय । राज नमें परजा नमें । आंण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे । जल विना कुंभ न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥ १ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु वाणी वेगला । रम वमिया संसार ॥ १ ॥ भावे जिनवर पूजियें । भावे दीजै दान । भा वे भावना भाविये । भावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रभू नामकी उषधी । शुद्ध चित्तसें खाय । रोग पीमा व्यापे नही । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोमीनें फूलमे । पाम्या देश अढार । कुमार पाल राजा थयो । वरत्यो जैजै कार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिट्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मू

रत देखके । मोहन चित आनन्द ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसें । सहु सं कटमिटजाय । ईत उपद्रव भय टलै । मोहन गुण प्रगटाय ॥२॥ इति दूहा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत पदपूजा करो । निज निज शक्ति प्रमाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जियंतरंगारिजणे सु नाणे । सप्पाभि हेराइ सयप्पहाणे । संदेह संदोह रयं हरंते । झाएहनिच्चंपि जिणे रिहंते ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उप्पन्न सन्नाणमहोमयाणं । सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सद्देस णाणं दियसज्जणाणं । णमो णमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्र मोद प्रधानं । प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौ ख्यराजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म च कचूर जेणें । भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीनें । दियै देशना भव्यनें हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाभिहारे समेता । सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म चारे अ लग्गा । भवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगत् पंचकल्याणकै सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ त्रीजे भव विधिसें करी । वीश स्थानक तप करिनें रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं । समकित शुद्ध मन धरिनेंरे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नित वंदियें । करम कठिन जिम डंमीये रे ॥ (ए आंकणी) ॥ जनम कल्याण कनें दिनें । नारकी सुखिया थावेंरे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता । जसु उप म कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मनें । मन पर्यव आदरि युंरे ॥ तप करि कर्म खपाइनें । ततखिण केवल वरियुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ च उत्तीश अतिशय शोभता । वाणी गुण पेंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थई, पूरे संघजगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने । अरिहंत पद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही । अरिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आवि र्भूत जसद्बोधा । नावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेष दोषेंधनधूमकेतु नपार संसार समुद्र सेतून् ॥ यजे समस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिनानं बुजकर्णिकायाम् ॥ २ ॥ (ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः) ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । कीजें दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म दूरें टले । फले मनोरथमाल ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ दुहठ कम्मावरण प्पमुक्के । अणंतनाणाइ सिरी चउक्के । समग्ग लोग ग्गपयप्पसिद्धे । झाएहनिच्चंपि मणं मि सिद्धे ॥ २ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । णमो णमो णंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खय कारयाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारयाणं ॥ १ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिजा गोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णादि लेशा ॥ सदानंत सौ ख्याश्रिता ज्योतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सकल करमनो क्षय करी । सिद्ध अवस्था पाई रे ॥ गुण इगतीस विराजता । उपम जसनही कांई रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्ध पद वंदियें (ए आंकणी) जनम मरण दुःख निर्गम्या । शुद्धातम चिदरू पी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता । अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे ॥ भव भव संच्यां जीवरे । कठिण करम तें कापें रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं । पूजंतां मन रागें रे ॥ अविचल पदवी पाईयें । कह्युं जिनवर वरू नागें रे ॥ म० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान् । विदधे भक्ति निर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान् । सिद्धान्यजे शांति करा नराणाम् ॥ (ॐ ह्रीं सिद्धेभ्योनमः) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ॥ हिव आचारज पद तणी । पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे । सूझे भाव अशेष ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ नतं सुहंदेहि पिया न माया । जंदिंति जीवाणिह सूरि पाया । तुम्हा हु तेचेव सया महेह । जंमुरक सुरकाइं लहुं लहेह ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं । णमो णमो सूरसम प्पहाणं ॥ सद्देशणा दाण समायराणं । अखंरु ब्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा । जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यभाजा । षड्वर्ग व र्गितगुणें शोभमाना । पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकाले । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा । जगत्ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ गुणब्तीशे दीपता । पाले पंच आचारो रे ॥ जिन मारग साचो कहे । युगप्रधान जयकारोरे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीयें । (आंकणी) ॥ सारण वारण चोयणा । पडिचोयण चौ शिक्षारे ॥ भव्यजी व समझायवा । देवानें ते दिक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथ म्या । परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे । ज्ञानमयी जसु दे हा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशुं पूजा साचवे । ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ पावे लघुतर कालमां । आचारज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (श्लोक) ॥ स्थापयामि ततःसूरीन् । दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरतः पंचधाचारं । षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचार रतांश्च सारा । नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ ब्योपसर्गौक निवारणार्थं । मभ्यर्चया म्य द्भुत गंध धूपैः ॥ २ ॥ (ॐ ह्रीं सूरिभ्योनमः) ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना । सुंदर शोभित गात्र ॥ उव झाया पद अरचियें । अनुभव रसनुं पात्र ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ सुत्तत्थ संवेग मयेसुएणं । संनीर खीरामय विस्सुएणं । पीणंति जेते उ वझायराये । झाएह निच्चंपि कयप्पसाए ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ सुत्तत्थविंत्थारण तप्पराणं । णमो णमो वायग कुंजराणं ॥ गणस्स संधारण सायराणं । सव्व प्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मदमोह माया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिमानें ॥ धरे पंचनें व र्ग वर्गित गुणौघाः । प्रवादि द्विपोद्भेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणी गच्छसंधारणे स्तंभभूता । उपाध्याय ते वंदियें चित्तप्रभूता ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ द्वादशांगी वाणी वदे । सूत्र अरथ विस्तारेरे ॥ पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारेरे ॥ १४ ॥ श्रीउवझाया वंदियें (ए आंकणी) ॥ दायक आगम वाचना, भेद भाव युत सारीरे ॥ सूरखकूं पंडित करे, जगतजंतु हितकारीरे ॥ १५ ॥श्री०॥ शीतलचंद कि रण समी, वाणी जेहनी कहियेंरे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखना लहीयेंरे ॥ १६ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवे शयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशां त्यै । पठंति येऽन्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्योनमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मु निवरपद वंदतां । निर्मल थाये देह ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ खंतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते । मुत्ते पसंते गुण जोग जुत्ते । गयप्पमाए हय मोह माए । झाएह निच्चं मुणि राय पाए ॥ ५ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं । णमो णमो सुद्ध दयादमाणं ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पयठियाणं ॥ १ ॥ करे सेवना सूरि वायग गणीनी । करूं वर्णना तेहनीशी मुणीनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नही काम भोगेषु लिप्ता ॥ वली बाह्य अभ्यं तरें ग्रंथि टाली । हुये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ॥ शुभष्टांग योगें रमे चित्त वाली । नमूं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) सकल विषय विष वारिनें, आतमध्यानें रातारे ॥ उपशम रसमां झीलता । निज गुण ज्ञानें मातारे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनि पद वंदियें (ए आंकणी) रतनत्रयी आराधतां । षट्काया प्रतिपालेरे ॥ पंचेंद्री जीपे सदा । जिन मारग अजुवालेरे ॥ हि० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावी श अलंकरया । पंच महाव्रत धारीरे ॥ द्वादशविध तप आदरे । चिदानंद सुखकारीरे ॥ हि० ॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्मचरिज धरे । करम महा भट जी त्यारे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा । ते नर जगत विदीतारे ॥ हि० ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । शुभध्यानैक मानसान् ॥ उदकपत्रगतान्नित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रशिक्षं सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदकपत्र गतान् पवित्रान् । साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्टमदर्शन पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते स म्यग्दर्शन सदा । आदरियें शुभरीत ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जं दव्वछक्काइ सु सद्दहाणं । तं दंसणं सव्व गुणप्पहाणं । कुग्गाहवाही उवयंति जेण । जहा विसुद्धेण रसायणेण ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्खणस्स । णमो णमो निम्मल दंसण स्स ॥ मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सव्वम्म महादुमस्स ॥ १ ॥ विपरियासहो वासनारूप मिथ्या । टले जे अनादी अछे जे कुपथ्या ॥ जिनोक्ते हुवे सहजथी सुध्यानं । कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञानअज्ञानरूपं । चरित्रं विचित्रं उवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपश मकृयें तेह होवे । तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी । सद्दहणा चित्त धरियेंरें ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी । क्षायिक समकित वरियेंरे ॥ २१ ॥ दरशण पद नित वंदियें (ए आंकणी) इण विण ज्ञान निःफल कह्युं । चारित्र निःफल जा णेरे ॥ शिव सुख ए विण नां मीले, बहु संसारी थायेरे ॥ द० ॥ २ ॥ सतसठि

भेदें शोभतुं । अजरामर फल दातारे ॥ जे नर पूजे भावशुं । ते पामें सुख शातारे । दरशण पद० ॥ २३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा । लक्षणं दर्शनंयजे ॥ मिथ्यात्वमथनं शुद्धं । न्यस्तमीशानसद्मजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥६॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्धचक्रतप मांहि ॥ आराधी जें शुभ मनें । दिन दिन अधिक उछाहि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ नाणं पहाणं नय सिद्ध चक्कं । तत्तावबोहिक मयं पसिद्धं । धरेह चित्तावसहे कुरंतं । माणक दीवुब्ब तमो हरंतं ॥ ७ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स॥ पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पया सगस्स ॥ १ ॥ हुवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणीयें वस्तु षडद्रव्य भावा । न होवे वितद्या निजेद्या स्वभावा ॥ हुवे पंच मत्यादि सुज्ञान भेदें । गुरूपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपें । लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) भक्ष अभक्ष विचारणा । पेय अपेय निर्धारोरे ॥ कृत्य अकृत्य नें जाणियें । ज्ञान महा जयकारोरे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥ (ए आंकणी) ॥ ज्ञान विना जयणा नही । जयणा विण नही धर्मोरे ॥ धर्म विना शिव सुख नही । ते विण न मिटे भर्मोरे ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजे सदा । ते लहे केवल खासोरे ॥ २६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवावभासकम् ॥ ज्ञानमाज्ञेयपत्र स्थं । पूजयामि हितावहम् ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं । पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभव रस मिले । पातक होय उछेद ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ सुसंवरं मोह निरोह सारं । पंचप्पयारं विगयाइ यारं । मूलोत्तराणेग गुणं पवित्तं । पालेह निच्चंपिहु सच्चरित्तं ॥ ८ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ आराहियाखंमिय सक्कियस्स । णमो णमो संयम वीरिय स्स ॥ सज्झावणा संग विवड्ढियस्स । निव्वाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ १ ॥ वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें । निराशंसता द्वाररोध प्रसंगें ॥ नवां नोधिसंतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १ ॥ हुवे जास महिमाथकी रंक राजा । वली द्वादशांगी नणी होय ताजा ॥ वली पाप रू पोपि निःपाप थाये । थई सिद्ध ते कर्मनें पार जाये ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) सर्व विरति देशविरतिथी । अणागार सागारीरे ॥ जय वंतो थावो सदा । ते चारित्र गुण धारीरे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥ (ए आंकणी) षट्खंड सुख तजि आदरे । संयमशिव सुखदायीरे ॥ सत्तर नेदें जिन कह्यो । ते आदरियें नाईरे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल छे । सकल आश्रवनो त्यागीरे ॥ विधिसेती पूजन करे । नाव धरी वडनागीरे ॥ चा० ॥ २९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥श्लोक ॥ सामायिकादिभिर्नेदै । श्चारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापया मि पूजार्थं । पत्रे हि नैरुते क्रमात् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्चारित्राय नमः॥८॥

॥ ❀ ॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ दोहा ॥ कर्मकाष्ट प्रति जालवा । परतिख अगनिसमान ॥ ते तप पद पूजो सदा । निर्मल धरियें ध्यान ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ वज्झं तहाब्भिंतर नेयमेयं । कयाइ दुप्पेय कुकम्मनेयं । दुक्खक्ख यत्थंकय पावनासं । तवं तवेहा गमियं निरासं ॥ ९ ॥ एयाइं जेकेवि नवप्पयाइं । आराहियंतिठफल प्ययाइं । लहंति ते सुरक परंपराणं । सिरि सिरीपाल नरेसरुव ॥ १० ॥❀॥ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कम्महुमोन्मूलण कुंजरस्स । णमो णमो तिव्वतवोन्नरस्स ॥ अ णेग लद्धीण निबंधणस्स । दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिका लिकपणें कर्म कषाय टाले । निकाचितपणें बांधियां तेह बाले ॥ कहुं तेह तप बाह्य अभ्यंतर दुनेदें । क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ हुवे जास महि

माथकी लब्धि सिद्धि । अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तप जे महानंद हेतें । हुवे सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) निज इछा अवरोधीयें । तेहिज तप जिन भाख्युंरे ॥ बाह्य अभ्यंतर भेदथी । द्वादशभेदें दाख्युंरे ॥ ३० ॥ अनुपम तप पद वंदियें (ए आंकणी) तदभव मोक्ष गामीपणुं । जाणे पण जिन रायारे ॥ तप कीधा अति आकरा । कुत्सित करम खपायारे ॥ अ० ॥ ३१ ॥ करम निकाचित क्षय हुवे । ते तपनें परभावेंरे ॥ लब्धि अठावीश ऊपजे । अष्ट महासिद्धि पावेरे ॥ अ० ३२ ॥ एहवुं तपपद ध्यावतां । पूजंतां चित्त चाहेरे ॥ अक्षयगति निर्मल लहे । सहु योगिंद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ क्रिया द्वादशधा भिन्नं । पूते पत्रे तपश्चयं ॥ संस्थापयामि भक्त्यात्र । वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्तपसे नमः इति ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इम नवपद ध्यावे, परम आनंद पावे । नव भव शिव जावे, देव नर भव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रभावे । सहु दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय, साधु दंसण नाण ए ॥ चारित्र तप नवपद थकी, इहां सिद्धचक्र प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुक्ख ताजा, लह्या सिद्धचक्र ध्यानसों ॥ भविजन भजो जिन भाव जाणी, हिये आणी भाव सों ॥ २ ॥ इय नवपय सिद्धिं, लद्धि विज्जा समिद्धं । पयमि य सरवग्गं, ह्रीं तिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं । तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥३॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या तिशयमयतनून् श्री जिनेंद्रान्सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टगुणगणभृदा, चार सारांश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचनरचना सुंदराएयादिशंत । स्तत्सिद्धयै पाठकानां यतिपति सहितानर्चया म्यर्घदानैः ॥१॥इत्थमष्टदलं पद्मं । पूरयेदर्हदादिभिः॥ स्वाहांतैः प्रणवाद्यैश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादिचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥ ❀ ॥ इति श्री नवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम गत सासय सुख पावो ॥ (ए आंकणी) धुरथी अरिहंतपद ध्याईजें । थिरतायें श्री सिद्ध थुणीजें ॥ ए० ॥ १ ॥ आचारज तीजें आराधो । सूधे मन जिन कारिज साधो ॥ ए० ॥ २ ॥ उवझाया पंचम अणगारा । प्रणमंतां पामें भवपारा ॥ ए० ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण भल दीपे । तप तपतां क्रम अरिनें जीपे ॥ ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणतां । गिरुवा नरभव सफल गिणंता ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रनी कीजै सेवा । मनवंछित लहियें नित मेवा ॥ ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो । रूडे मनसें नित प्रति राचो ॥ ए० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचपरमेष्टी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ॐकारबीज आदै नमुं ॥ गीर्वाणी सुखदाय । तुं तू ठी पंक्तिकरै ॥ पूजै सुर नर राय ॥ १॥ॐ नमो गुरु देवकुं । भाषासरस वनाय ॥ पाहणथी पल्लवकरे । उपगारी सिरराय ॥ २ ॥ प्रथम नमुं अरिहंतजी ॥ दूजा सिद्ध अनंत । तीजा सूरि सदानमुं । उपगारी भगवंत ॥ ३ ॥ वलि उव झाया वंदियै ॥ गुण पचवीस प्रधान । द्वादश अंग प्ररूपता ॥ नही विकथा नहिमान ॥४॥ पंचम पद मुनि राजनो । वंदो भवि इकतार ॥ गुण सत्तावी-स सोभता । करुणारस भंडार ॥ ५ ॥ पांचो पद सेवेनहीं । मूरख लोक अजाण । ए पांचूं परमेष्टिहै ॥ अनुपम सुखकीखाण ॥ ६ ॥ उज्जल वरण विरा-जता ॥ कुमति हरण सुभलेश ॥ अरिहंत पद पूजा करो । सेवन सदा सुरेस ॥ ॥७॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । पूजो अरिहंत देव । पूजत अनुभव रसमिलै । पावो सुख नितमेव ॥ ८ ॥ प्रथम पद श्रीकारहै । अतिसय जास अनंत । तीनलो-कना राजवी । सेवे सुर नर संत ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाल होजीरी ॥ वलिहारी सुखकर जिनवरकी । सबदेवनमें देव नगीनो । महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ ब० ॥ कोईध्यावै हरि हर ब्रह्मा । कोई कहै मेरे बालाकी ॥ ब० ॥ १ ॥ कोई नरसिंह देवकुं ध्यावै । कोई कहै मेरे ज्वालाजी ॥ ब० ॥ मेरे परसन तुमही आए । वीतराग गुण वालाजी ॥

ब० ॥ २ ॥ अवरदेव सब काच कथीरा । तुमहो अमोलक हीराजी ॥ ब० ॥ राग द्वेष तुम पास नहीं हैं । वाईस परीसह धीराजी ॥ ब० ॥ ३ ॥ तेरी सूरत की वलिहारी । क्याकहुं अजब अमीराजी ॥ ब० ॥ कोड देवता हाजर रहता अणहुंतै वडवीराजी ॥ ब० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । तुमसम अवरन धीराजी ॥ ब० ॥ तेरे गुणको पारन पायो । सुरनर राय वजीराजी ॥ ब० ॥ ५ ॥ बारै गुणो प्रभू ऊपर सोहै ॥ वृक्ष अशोक उदाराजी ॥ ब० ॥ तीनछत्र प्रामंमल पूठै । ध्वजा फुरक रही साराजी ॥ ब० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपीठ सिंहासन ऊपर । राजत हो वडवीराजी ॥ ब० ॥ पान फूल करके बहु सो भत । राजतहो गुणपूराजी ॥ ब० ॥ ७ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वज प्रभु । आगे चालत सारा जी ॥ ब० ॥ महागोप महामाहण कहिये । निर्यामक सत्थ वाराजी ॥ ब० ॥ ८ ॥ ऐसै अरिहंत पदकी महिमा । सुणियो तुम सब प्यारा जी ॥ ब० ॥ तीन लोकमें इनका झंडा । पूजतहै इकताराजी ॥ ब० ॥ ९ ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजा करतां । सदा हुवै जयकाराजी ॥ ब ॥ धर्म विशाल दयाल पसायै । सुमति कहै गुणसाराजी ॥ ब० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने पंचपरमेष्ठी महामंत्र राजाय अरिहंत पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंत पद पूजा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूजी सिद्धपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । करो भविक गुणवंत । धजा चढावो भावसुं । लालवरण मतिवंत ॥ १ ॥ गुण इकतीस विराजता । तीनलोक सिरछत्र । अनंतचतुष्टय धारता । जगजीवन जगमित्र ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल ॥ भविपनरमपदगुणगानाहो ॥ भ० ॥ एचाल ॥ भविसिद्ध पदके गुणगानाहो ॥ भ० सि० ॥ पनरेभेदे सिद्ध विराजै । भवितुम चितमें लानाहो ॥ भ० सि० ॥ जिना जिन तीरथा तीरथ कहियें । अन्य सलिंग कहानाहो ॥ ॥ भ० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगें जायै । कृत्य नपुंसक गानाहो ॥ ॥ भ० ॥ प्रत्येकबुद्ध नें सहसंबुद्धा । बुद्धबोधित सुप्रमानाहो ॥ भ० सि० २ ॥ एक अनेक और एकसमयें। गुरुमुखथी सुख पानाहो ॥ भ० सि०॥ अष्ट सिद्धि नव निधिके दाता । तुमहो देव निधानाहो ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत

तुम सुखके जोगी। जोगीसर जयजानाहो ॥ भ० सि० ॥ शब्दरूप रस गंध फरसकुं। जीतभए मुनि भाना हो ॥ भ० सि० ॥ ४ ॥ अव्याबाध सुखके तुम रसिये। भव्य सकल सुख दानाहो ॥ भ० सि० ॥ घाति अघाति दूर करीनें। जोतमेंजोत समानाहो ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥ पेंतालीसलख जोजन सिला। उजलवरण कहानाहो ॥ भ० सि० ॥ ऊपर जोजन भागचोइसमें। सिद्धप्रभु ठहरानाहो ॥ भ० सि० ॥ ६ ॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता। परमगुरु परधानाहो ॥ भ० सि०॥ अनंतगुणाकर ज्ञान दिवाकर। इनके गुण नितगानाहो ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ लबधि रिद्धि सब सिद्धिके दाता। परम इष्ट सुखदानाहो ॥ भ० सि० ॥ धरमविशाल दयाल पसायें। सुमति कहै बुधवानाहो ॥ भ० सि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धपरमात्मने अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तीजी आचार्यपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ तीजेपदकूं नितनमूं। आचारज गुणवान। गुणछत्तीस वीराजता। जिनवरके परधान ॥ १ ॥ प्रतिरूपादिक गुणकरी। राजेसूर समान। जातिवंत कुलवंतहै। नहीविकथा नहीमांन ॥ २ ॥ भव्य सकलकूं तारवा। देसाचो उपदेश। कुमति सदादूरे करै। सुमती पाले हमेश ॥ ३ ॥ रुद्धि सिद्धि कारण पूजियै। पीलेरंग प्रधान। गणधारक गुरु गछपती।युगपरधान सुजान।

॥ ढाल ॥ मल्लीजिनंद सुखकारी रेवाला ॥ एचाल ॥ आचारज सुख कारी रे वाला ॥ आ० ॥ पंचाचार विराजत जगमणि। सहस किरण अवतारी रे वाला ॥ आ० ॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु लाजै। मोह माया परिहारी रे वाला ॥ आ० ॥ १ ॥ रागद्वेषकुं दूर निवारै। सुमतारस भंडारीरे वाला ॥ आ० ॥ क्रोध मान माया नहि जिनके। विकथा दूर निवारीरे वाला ॥ आ० ॥ २ ॥ तेजकरी सूरज सम सोभित। मिथ्यातमके वारीरे वाला ॥ आ० ॥ क्षमा अधिक जगमें जसुराजे। विषयविकार निवारीरे वाला ॥ आ० ॥ ३ ॥ हृदय गंभीर महायश निर्मल। रूपादिक मनुहारीरे वाला ॥ आ० ॥ देश जात कुल उत्तम जिनके। मोह्या सब नर नारीरे वाला ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुरवर नरवर सेव करतहै। जय २ तुम सुखकारीरे वाला ॥ आ० ॥ मीठी

अमृत वाणी बोलै । सुणतां हरख अपारीरे वाला ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूर्वचवद जणया श्रुतसागर । जबधि अढाईस धारीरे वाला० ॥ द्रव्यानुजोगी चरणानुजोगी । करणजोगके धारीरे वाला ॥ आ० ॥ ६ ॥ गणतानुजोगरू धरमानुजोगी । जाणें आगमसारारे वाला० । धर्मप्रवाहक एह कहीजै । सूरि मंत्रके धारीरे ॥ वाला० आ० ॥ ७ ॥ गणधारी गछनार धुरंधर । सारण वारण कारीरे ॥ वाला ॥ आ०॥ ज्ञान उजागर विद्या सागर । वारीजाऊं वार हजारीरे ॥वाला०॥आ०॥८॥ धरम विशाल दयाल पसाये । सुमति कहै जय कारीरे॥वाला०॥आ०॥एसै गौतमस्वामी कहिये।पूजोकर इकतारीरे॥वाला । आ० ॥ ९ ॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चोथी श्रीउवझाय पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीउवझाया वंदिये । प्रेमधरी मनरंग ॥ चोथे पदमें सोभता । पूजो धर उछरंग ॥ १ ॥ नीलवरण ध्वज सुंदरू । धरलावो सुभथाल । अष्टद्रव्य लेईकरी । सेवो दीनदयाल ॥ २ ॥ ढाल ॥ जिनगुणगानं श्रुतऽमृतं ॥ ए चाल॥श्रीउवझाया जयहरणं । जयहरणं रे देवा जयहरणं ॥श्री॥ परिहर विषय विकार प्रकारं । ए गुरु है असरण सरणं ॥श्री ॥१॥ गुण पचवीस विराजत सुंदर । देखत सबको मनहरणं ॥ श्री० । तेजपुंज रवि शशि समदीपत । मिथ्या तम दूरेकरणं ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र अर्थ दाता जगमां है । मुनि मानसमें जय करणं । सारण वायण चोयण करता । पडिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री ॥ ३ ॥ द्वादश अंग पढ्या श्रुतसागर । सुमती धर कुमती हरणं ॥ श्री ॥ अतिशय विद्याचूरण योगे । जिनसासन उन्नतिकरणं ॥ श्री ॥ ४ ॥ धरम प्रभाविक है उपगारी । ऐसे गुरु तारण तरणं ॥ श्री० ॥ तप जप आदिकनी खप करता भव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री ॥ ५ ॥ नवविध ब्रह्मचर्यके धारक । दशविधि विनय सदाकरणं ॥ श्री ॥ ॥ माया ममता दूर निवारी । द्वादश भेदे तपधरणं श्री ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकूं ज्ञानदानदै । मूरखथी पंडित करणं ॥ श्री ॥ जग जीवनके हौ प्रतिपालक । तुमविन अवरन आभरणं ॥ श्री ७ ॥ विनकारण जगमें उपगारी । धन २ तुमरी आचरणं ॥ श्री० ॥ पंचपरमेष्टी महामंत्रको । इष्ट सदा दिलमें धरणं ॥ श्री ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये । सुमति

करे तुम्ह नितवरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला । पूजत जगमें जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म० शक्रस्तपाठक राजाय ऽष्ट द्रव्यंय० ॥ इति पाठक पदपूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमी साधु पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ पंचमपदमें सोभता । साधु सकल गुणवंत । गुण सतवीस विराजता । महिमावंत महंत ॥ १ ॥ स्यामबरण मुनिवर कह्या । तप करवा अति सूरि । भविक कमल प्रतिबोधता । धरता निरमल नूर ॥ २ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ ढाल ॥ सदा सहाई कुसल सू०॥एचाल॥सदा सहाई वीर पटोधर । सुणियो भविक उदार ॥ भलाजी ॥ सु० ॥ सुधर्म स्वामी अंतरजामी । तसु नंदन सुखकार ॥ भ० ॥ जंबूआदिक गुणके सागर । तेप्रणसुं हितकार ॥ भ० स० ॥१॥ प्रभवादिकसय पांच उदारा । प्रतिबोध्या सुखकार । भ०। सिज्जंभव आदिक जे सूरि । तेहना शिष्य सुविचार ॥ भ० । स० २ ॥ थूलभद्र मोटो ब्रह्मचारी । दुकरदुकरकार । भ० । सिंहगुफावासी जेमुनिवर । भाषे दुकर कार ॥ भ० स० ३ ॥ वज्र कुमार बरे उपगारी । प्रतिबोध्या नर नार । भ० । श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी । राखी जगमें कार ॥ भ० स०४ ॥ विक्रम आदिक नृप अठारै । प्रतिबोध्या सुखकार । भ० । एकतीरथकुं परगट करके । गुरुचरणां व्रतधार । भ०॥स० ॥ ५ ॥ देवद्धिगणी ए सबमें मोटा । राख्यो ज्ञानज सार॥ भ०॥सूत्र ताडपत्रे लिखराख्या । जेशलमेर मझार ।भ०स०॥६अभयदेव सूरी उपगारी । नव अंग टीका कार । भ०। हेमाचारज है बरुभागी जिणकीनो हेमनोभार । भ० । ७ ॥ कुमार पालनें जिण प्रति बोध्यो । साखीधरमनो राख । भ०। श्रीजिनदत्त सूरीसर मोटा । श्रावक किया सवा लाख भ० स० ८ ॥ रतन प्रभु सूरी उपगारी । ओस्यानगर मझार । भ० । ओसवंसकी थापनाकरके । मोटो कियो उपगार । भ० स० ॥ ९ ॥ इत्यादिक गुण गणके दरिया । सेवो भविक उदार ॥ भ० ॥ ढंढणआदिक महातपसूरा । नांमलियां जयकार । भ० स० ॥ १० ॥ गजसुकुमाल महामुनिवंदुं । भावकरी इकतार । भ० । धन धन्ना अरु शालभद्रजी । कीनीकरणीसार । भ० स० ॥ ११ ॥ खंधकसूरिना शिष्य पांचसै । सूरवीर व्रतधारं

। भ०। पंचमपदमें ए मुनिपूजो । सदाहुवै सुखकार । भ० स० ॥ १२ ॥ पंच मआरे छेहनै होसी । डुपसहसूरि दयाल । भ० । इत्यादिक एद्वीप अढीमें । वंडु साधु कृपाल ॥ भ० स० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयाल पसायै । पूज रची सुखदाय । भ० । सुमतिकहै एपंचपरमेष्टी । कामधेनु कहवाय भ० स० ॥

॥ ❀ ॥ ढाल दूजी ॥ चालपाणिहारीकी ॥ ❀ ॥

॥ सुणप्याराजी । सुणतांआसीस्वाद प्याराजी । धरम सनेही साधुजी ॥ सु० ॥ करता परउपगार प्या० ॥ लालच लोभ न जेहनें । सु० । नहिरा खे द्वेषलगार प्या० । ममता माया छोम्नें ॥ सु० ॥ धारै व्रत सुखकार प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणैं सु० । करता धर्म व्यापार।प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजनें ॥ सु० ॥ नहीकोई विषय विकार प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिरसेह रो । सु० । कुमतिकरे परिहार प्या० । विनकारण मुनिराजजी ॥ सु० ॥ भव्य जीव हितकार प्या० ॥ ३ ॥ ग्यानी ध्यानी सूरमा । सु० । महमा करत नरेस प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी । सु० । सुणतां हरख हमेस प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीवप्रतिबूझिया । सु० । धरमतणा परधान । प्या० । मायानकरे साधुजी सु० नहिविकथा नहीमांन प्या० ॥ ५ ॥ पंचमहाव्रत धारता । सु०॥ ऐसे दीनदया ल । प्या० । सुमति धारक पांचछै । सु० । गुपतीना रखवाल प्या० ॥ ६ ॥ उद्देसक आदेकरी । सु० । कृतकरुनें बलिदूत । प्या० । सिज्यातर रायपिंडकूं । सु० । नहिंधारै अवधूत प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांभलजी । सु० । न धरै मनमें क्रोध । प्या०। मधुकरनीपरै मालता।सु० । उंचनींच कुलसोध प्या० ॥ ८ ॥ लाधेआमौ देहनै । सु० । अणलाधै तपधार । प्या० । ओसरमोसर देखनें । सु० । रसलंपट नहीहोय । प्या० ॥ ९ ॥ किरियां करतां साधुजी।सु० आलस नकरे कोय ॥ प्या० ॥ परिसहजीते आकरा । सु० । कर्मकरे सबदूर प्या० । मुनिवर मधुकर समकह्या । सु० । दिन २ वधते नूर । प्या० ॥ १० ॥ जंगम तीरथ सारषा ॥ सु० ॥ धरमतणा आधार । प्या० । एहवा मुनिवर पूज तां । सु० । पावै वंछित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरमविसाल दयालनो । सु० सुमति कहै करजोम । प्या० । एहवा श्रीमुनिराजजी । सु० । मुझ माथेका मोम । प्या० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म० सर्वसाधुभ्योऽष्ट द्रव्यंयजामहे० ॥ इति

॥ ❀ ॥ अथ कलसकी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी । सुणियो तुम नर नार । सांभलतां सुख पामसो । सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी सारु मोहनी । सज्या सहू हरखाय । सेवो जगतकी मोहनी । ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्रमांहि सिरदारहै । पंच परमेष्टी एह । सरवारथ सिद्धी कह्यो । गणधर गौतम जेह ॥ २ ॥ जेहनें एहनी आसता । तेहनें एह सहाय । भागहीन नर मूढकुं । होत नहीं फलदाय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी । चंगीमेंचंगी जान जिणंद पद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन भावना । सुखी वोही संसार परम पद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव कहो कुण जाणना । सब देवनमें देव वडो जिन जांणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्यांन कहो कुण सा जना । सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणनां ॥ ४ ॥ धरम वडो जगमांहि कहो कुण साजना । दया धर्म जगमांह वडो है साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुण साजना । शिव रमणीको नाथ सर्व सिद्ध जाणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कोण कहो मेरे साजना । धरममांहि सुभभाव सुणो मेरे सा० ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन भावना । गुरू बडे दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन भावना । मीठी जिनकी वाणि धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी । जिणसें अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना । सब व्रतमें व्रतसार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गछ पति चंदसूरीश्वर सोहता । सकल विमल गुणगेह भविक मन मोहता ॥ १२ ॥ प्रीतसागरगणि सीस सकल गुण राजता । अमृत धर्म उदार वाचक पद छाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधांन क्षमा गुण सारता । तसु शिष्य धर्म विशाल मुनीव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहै गुणसार भविक मन सोहता । बीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु भावसुं । पूजरची चितलाय अधिक बलदावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय उगणीसक

तेपन जाणीयै । माह सुद चवदश बार मंगल मन आणीयै ॥ १७ ॥ जणतां गुणतां एह सदा सुख पामसै । घर घर मंगल माल हुवै जिननामसैं० ॥१८॥
॥ इति श्रीसुमति मंरुणजीकृत पंचपरमेष्टी पूजा संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥अथ श्री सिद्ध गिरि निनाणुं प्रकारी पूजा लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ श्रीरुषभायनमः ॥ दूहा ॥ रुषभादिक जिनवरनमी । प्रणमी सद्गुरुपाय । पुंरीक गिररायनी । पूजकरुं सुखदाय ॥ १ ॥ सजल शिखर गिरवर सरस । फरस्यां पाप पुलाय । कनकाचल सहुशिरतिलो । वंद्यां सहु दुःखजाय ॥२॥ नाम लियां सुख संपजै । घर बैठां सुभ भाव । सफल जन्म जात्रा करै । भव जल तारन नाव ॥ ३ ॥ भव भव भमता मानवी । पामे दुःख अनंत । पुंरगिर भेटे तिके । तुरत लहै भव अंत ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणी । जंत्रमंत्र जग जोय । ए महिमा सहुकारमी । गिरवर सम नहिंकोय ॥ ५ ॥ प्रथम ध्वजा लेईकरी । चाढो गिरवर शृंग । विजय सदा जगमें हुवै । दिन दिन अधिक सुरंग ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ॥ चित हरखधरी । अनुभवरंगे बीसपरमपदसेविये ॥
॥ एचाल ॥ गिरराज जयो श्रीसिद्धाचल तीरथ रयणे पूजियै । महाराज जयो श्रीरिसहेसर भविजन भावै पूजीयै ॥ वर मोहन ध्वज पूजा करियै । चितचोखे जगमै जसचरियै । जिनराज सरण भवि अनुसरियै ॥ गि० १ ॥ इहां पुंरीक गण धर आया छै । तिणपुंरीक नाम कहाया छै । सिद्धक्षेत्र नमी सुख पायाछै ॥ गि० ॥ २ ॥ विमलाचल गुण मणि दरियोछै । सुरगिर महागिरि गुण भरियोछै । वलि पुन्यरासि मन धरियोछै ॥ गि० ॥ ३ ॥ वलि श्रीपत परबत सुखकारी । वलि इंद्र प्रकास ते चितधारी । सास्वत ए गिरवर वलिहारी ॥ गि० ॥ ४ ॥ दृढसक्ति मुक्तिनिलो कहियै । अरु पुष्पदंत मन सरदहियै । महापद्म सुठाम सदा कहियै ॥ गि० ॥ ५ ॥ वलि पृथ्वीपीठ सुभद्र वारु । कैलास गिरि कहियै सुखकारु । पातालमूल भविहेतारु ॥ गि० ॥ ६ ॥ वलि अकरम नामें एह जाणो । सर्व कांमद वलि मनमें आणो । गिर गुण गातां मन हुल साणो ॥ गि० ॥ ७ ॥ ए इकवीस गिरंद नामा । ध्यावो भवि

जन तुमे सुखकामा । कहै सुमति सदा ए अभिरामा॥गि०॥८॥इति॥काव्यं॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर भव्य मनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजादि परिवार विभूषितेभ्य ॥ नित्यंनमो सिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानसक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थ स्थित जिनेंद्राय ध्वजां यजा महे स्वाहा ॥ पचरंगी धजा चढावै ॥ इति ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूसरी जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कलसा भरी । पूजो श्रीजिनराय । पूजत अनुभव गुणलहै । पाप पंक मल जाय ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ आज आयोरे उछाह जीवडा नाच जिणंद आगै ॥ ❀ ॥ आज हरख धरी गिरवर पूजन करियैरे॥ आ० ॥ कलस अठोत्तर सो मनरंगा निरमल जल भरियै अतिचंग ॥ आ० ॥ गंगादिक तीरथना जाण । अवर सुजल पूजो जग भाण ॥ आ० ॥ इणपर न्हवण करो जिनराज । भवियण सारो वंछित काज ॥ आ० ॥ इणगिर ऊपर रुषभ जिणंद । समवसरया भवियण सुखकंद ॥ आ० ॥ २ ॥ महियल मोटो ए गिरि जाण । भवियण भेटो सुखनी खाण ॥ आ० ॥ कंकर २ साधु अनंत सिद्ध थया भाष्यो भगवंत ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सुणज्यो सगलो अधिकार । चित थिर राखी करो गुण धार ॥ आ० ॥ मन तन उलसै सुणतां एह । तत खिणपावै करमनो छेह ॥ आ० ॥ पातिक टाली पूजो देव । जिम सुख पावो नित्य अछेह ॥ आ० ॥ महियल मोटो ए गिरराय । श्री मुख भाखे श्री जिन राय ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रथम अजित सोलम प्रभु ध्यांन । करके पूजो गिरराजा न ॥ आ० ॥ इणपर सुमति कहै हित आण । जिनपद सेव्यां कोड कल्याण ॥ आ० ॥ ६ ॥ काव्यं॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः, पापः प्रणा सकर भव्य मनो हरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः । नित्यं नमोसिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थाय जलं यजा महे स्वाहा॥ इति जल पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तीसरी चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल केसर चंदनें । पूजो श्रीजगदीस । प्रेम धरी पूजा करो । सुखपावो निस दीस ॥ १ ॥ नगर अजोध्यानो धणी । श्रीजितशत्रु नरेस । विजयाराणी शीलनी । सोभाकरे सुरेस ॥ २ ॥ जिण जायो सुत जग धणी । जीत्या रिपु दल जास ॥ अजित कुंवर राजा कियो । नाम जिसो परकास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ श्रीचंद्रप्रभू जिनवर साहिब, (इस चालमें) अजित जिनेसर जग परमेसर । तुमहो पर उपगारा ॥ मेंवारीजाऊं तु० ॥ बावनाचंदन केसर घोली । कस्तूरी घनसारा ॥ में० ॥ भाव भगतसुं प्रभु गुण गावो । पूजो जग भरतारा ॥ में० अ० ॥ १ ॥ मिथ्यातम भर दूर निवारी । सेवो प्रभु अविकारा ॥ में० ॥ राज राजेसर जगपति जिनवर । चक्री अजित उदारा ॥ में० अ० ॥ २ ॥ परउपगारी तुं परमेसर । भेट्यां जय जय कारा ॥ में० ॥ जिम २ परमल पसरै तेहथी । सोभा अधिक उदारा ॥ में० अ० ॥ ३ ॥ भूमंडल विचरंता प्रभूजी । बहु चेतन सुखकारा ॥ में० ॥ पुंडरीक पर अजित जिनेसर । चौमासोतिहां धारा ॥ में० अ० ॥ ४ ॥ सिंहसेनादिक गणधरथापी । पंचाणू हितकारा ॥ में० ॥ एक लाख मुनि मुद्रा धारी । भरिया गुण मणि धारा ॥ में० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आरानें मध्यज भागै । अजित हुवा अविकारा ॥ में० ॥ बोहत्तरलख पूरबनो आऊ । कीधा जग जयकारा ॥ में० अ० ॥ ६ ॥ सोलम जिनवर शांतिजिनेसर । अचिरा नंद उदारा ॥ में० ॥ विमलगिरिंद पर कर चौमासो । करम कलंक निवारा ॥ में० अ० ॥ ७ ॥ विश्वसेन कुलभांण विराजै । जगजीवन हित कारा ॥ में० ॥ श्रीहथणापुर मंडण स्वामी । सुमति सदा दातारा ॥ में० अ० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र० पूर्वलीपेरें संपूर्ण कहीजै ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० ॥ इति चंदन पूजा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौथी पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी इणपरें । कुसुम सुगंध सुजोय । भव्य मनो रथ पूरवै । घर घर मंगल होय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जिनराज नाम तेरा । हो महाराज नाम तेरा ॥ हो०

॥ ❀ ॥ विमलगिरि नाम तेरा । हो कनकगिरि नाम तेरा ॥ हो सेवोरे उज्जलगिरि रसमें ॥ हो० उ० ॥ मचकुंद कुंद जाणो । चंपो गुलाब आणो । पूजो जिनंद आणो ॥ हो० उ० ॥ १ ॥ कर्मावसी जुराजै । जिनबिंब बहोत गाजै । जोतां मिथ्यात भाजै ॥ हो० उ० ॥ २ ॥ मोतीवसी जुहारो मनकामना जु सारो । दिलमां हैं एहि धारो ॥ हो० उ० ॥ ३ ॥ बालावसी जिणंदा । निरख्यांहि सुक्ख कंदा । अठारे चैत्य बंदा ॥ हो० उ० ॥ ४ ॥ पेमावसीजु प्यारा । भेटो जिनंद सारा । वंद्यांथी सुख्ख कारा ॥ हो० उ० ॥ ५ ॥ हेमावसी जु वंदो । अजितादि सुख्ख कंदो । सेवो जिनंद चंदो ॥ हो० उ० ॥ ६ ॥ उज्जमवसी जु राजै । नंदीश्वर भाव गाजै । सेवोथे सुख्ख काजे ॥ हो० उ० ॥ ७ ॥ साकरवसी जु भावै । भेट्यांसुं पाप जावे । देख्यासुं सुख्ख थावे ॥ हो० उ० ॥ ८ ॥ रूंपावसी जु ध्यावो । वंछित सुख्ख पावो । मनमांहि भावलावो ॥ हो० उ० ॥ ९ ॥ खरतरवसी जु सोहै । जिनराज मन मोहै । निरख्यांसुं सुख्खहोवै ॥ हो० उ० ॥ १० ॥ इत्यादि भावजाणो । गुरुभ्यांन मन्न आणो । संकादिचित्त नांणो ॥ हो० उ० ॥ ११ ॥ सुमतादि ध्यानध्यावो । गुण नाथनाजु गावो । मन भाव एहि भावो ॥ हो० उ०॥१२॥ ॥ काव्यपूर्वनीपरें ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० ॥ इति पुष्प पूजा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) धूपपूज ए पांचमी । करता भवि सुखदाय । धूपघटी जिम महमहे ॥ तिम तिम पातिक जाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥यात्रानिनाणुं करिये विमलगिरि यात्रा० ॥ए चाल॥❀॥

॥ ❀ ॥ इण विधि पूजन करियै विमलगिरि ॥ इ० ॥ कृष्णागरनें मृगमद अंबर । गंधवटी अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ १ ॥ चीनसेउहारस तुरक भलेरो । इणविध पूजन करियै ॥ वि० इ० ॥ केसर चंदन मृगमद कुंकुम । भाव भलै अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ २ ॥ उज्जल अमल अखंडित तंदुल । दीप अखंड जु धरिये ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलाबना लेइ । पूजो इणगिरिवरियै ॥ वि० इ० ॥ ३ ॥ साधू साहमी भगति करीनैं । आतम निरमल करियै ॥ वि० इ० ॥ पांचे पांडव इणगिर पूजो । नवनारद मुनि वरियै ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥

गिरवर ऊपर पांचे ठामें । पूजकरी अघ हरियै ॥ वि० इ० ॥ कलस अठोत्तर सो लेईनें । न्हवण भली विध करियै ॥ वि० इ० ॥ ५ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेसर । इण गिरिपर समोसरियै ॥ वि० इ० ॥ भाव भगतसुं जिननी पूजा । करतां सहु सुख वरियैं ॥ वि० इ० ॥ ६ ॥ जहि अवतार ए गिर नहीं फरसे । तो किम भवजल तरियै ॥ वि० इ० ॥ पुंडरगिरिनो ध्यान धरीनें पुन्य खजानो भरियै ॥ वि० इ० ॥ ७ ॥ ए गिरनी आसातना टाली । जात्र करी निसतरिये ॥ वि० इ० ॥ सगतबतां जो संघ लेईनैं । आवै इण गिर वरियैं० इ० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिनैं । पाप पंक अपहरियै ॥ वि० इ० ॥ सुमतिकहै धन २ ए गिरवर । पूजो भवि सुख करियै ॥ वि० इ० ॥ ९ ॥ ॥ काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० ॥ इति धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी दीपपूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) छठी पूजा दीपनी ॥ करो भविक सुखकार । विमलबोध पावो तुमे । ज्ञानदीप सुविचार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पासजिनंदा प्रभु मेरे मनवसिया ॥ पा० ॥ एचाल ॥ आदि जिणंदा प्रभु सेवो सुखकारी ॥आ०॥ निरमलबोध विकासक दीपक । दिन २ जोत अधिक सुखकारी ॥ आ० ॥ १ ॥ अनुभवदीपक प्रगट भयोहै । सकल चराचर भाव विचारी ॥ आ० ॥ केवल ज्ञानी प्रथम तीर्थंकर । समोवसरया भवियण हितकारी ॥ आ० ॥ २ ॥ फागुण सुद आठमनें दिवसै । रुषभदेव आया सुविचारी ॥ आ० ॥ भरथपुत्र चैत्रीपूनमदिन । इणगिर आया भवि मनधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥ नमि विनमी राजा विद्याधर । पुंडर गिर सेवै इकतारी ॥ आ० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा । द्रावडनें वारखिल्ल विचारी ॥ आ० ॥ ४ ॥ कातीसुदपूनम दिन सीधा । दसकोडी मुनि साथ उदारी ॥ आ० ॥ पांचे पांडव इणगिर सीधा । नव नारद निज काज सुधारी ॥ आ० ॥ ५ ॥ संब प्रद्युम्न गया इहां सुगतै । आठ करम दल दूर निवारी ॥ आ० ॥ नेमि बिना तेवीस तीर्थंकर । समवसरिया भवियण उपगारी ॥ आ० ॥ ६ ॥ ए गिरराजना गुणगणगातां । सफल हूवै आतम सुविचारी ॥ आ० । ए गिरराजनी पूजा जगमें । भवजल पार उतारण हारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ द्रव्य

भाव सुं पूजन करियै । कुमति कुटलता दूर निवारी ॥ आ० ॥ कहै सुमति सेवो इकतारी । इण तीरथनी जावूं बलिहारी ॥ आ० ८ ॥ ❀ ॥
इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमी अक्षतपूजा ॥ ❀ ॥

॥(दूहा) उज्जल तंदुल लेयनैं । पूजो दीन दयाल । स्वस्तिक करतां वि स्तरै । घर २ मंगल माल ॥ १ ॥ तुमविन दिनानाथ दया निध कोंन खबरले मेरीरे ॥ एचाल ॥ गिरिवर भेटण भविजन आवे । मनवंछित फल पावैरे । उज्जल तंदुल थाल भरीनैं । वधावो गिरिरायारे । अष्टमंगल प्रभु आगल धरियै । निरमल सुख सुहायारे ॥ नि० ॥ २ ॥ ए गिरिमहिमा जिनमुख सुणके । चक्री मन हुलसावैरे । भरथराय षट्खंम्को नायक । संघ लेई इहां आवैरे ॥ गि० ॥ २ ॥ सोनानो प्रसाद करावै । रयणनी मूरती ठा वैरे । भाव भगतिसुं पूजा रचावै । प्रभु चरणे चितलावैरे ॥ गि० ॥ ३ ॥ भरततणें अष्टम पट्टसोहै । दंमवीरज महाराजारे । संघलेई उधार करावै । संचे सुभ फल ताजारे ॥ गि० ॥ ४ ॥ ईशानेंद्र करायो तीजो । चोथो माहेंद्र करावैरे । पांचमो उद्धार ब्रह्मइंद्रनो । सुर नर मिल जस गावैरे ॥ गि० ॥ ५ ॥ छठो उधार भुवनपतीनो । सातमो सगरनो जाणोरे । आठमो व्यंतर इंद्र करावै । भविजन मनमें आणोरे ॥ गि० ६ ॥ चंद्रजसराय उधार करावै । नवमो भविसुख कंदारै । शांतिनाथ सुत दशमो भावै । उधार करे आनंदारे ॥ गि० ॥ ७ ॥ दशरथराय सुतन गुण आगर । रामचंद्र भल भावैरे । उद्धार इग्यारमो एह करायो । बारमो पांडु करायोरे ॥ गि० ॥ ८ ॥ तेरमोउद्धार जावडशाहनो । चवदमो वाहडदेह नोरे समरेसाह करायो भावै । पनरमो सहुसुखदैनोरे ॥ गि० ॥ ९ ॥ संवतसतरैसै सित्यासै । वैशाखवदि सुभवारोरे । करमेंमोसी करायो भावै । एसोउमउद्धा-रोरे ॥ गि० ॥ १० ॥ तिणकारण ए तीरथ मोटो । सहुतीरथ सिर राजारे ॥ कहै सुमति पूजो भलभावै । पावोज्यूं सुखपाजारे ॥ गि० ॥ ११ ॥ इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा० ॥ इतिअक्षतपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमी नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । सींहकेसरिया सार । इत्यादिक नैवेद्यले । पूजकरो सुखकार ॥ १ ॥ ॥ सिद्धचक्रपदवंदोरे । भविका ॥ ॥ एचाल ॥ श्री सिद्धाचल पूजोरे । भविका । इणसम गिरिनहीं दूजोरे भविका ॥ श्री० ॥ मोदक मोतीचूरना लेई । नैवेद्यपूजा करियेरे ॥ भ० ॥ सिंहकेसरिया दालिया केई । मोदक इण विध धरियेंरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १ ॥ ललितसरोवर पेखो भावै । वलि सत्तानीवावरे ॥ भ ॥ तिहां विसरामो भविजन लेवै । वन्नैं चोतरे आवरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेत्रुं जानीपाजै चढतां । आणंद अंग नमावेरे ॥ भ० ॥ दूरथकी सेत्रुंजो दीसै । सुंदर रूप सुहावैरे ॥ भ० श्री ॥ ३ ॥ हिंगुलाजहमै चढके पूजो । कलि कुंड पासकुमाररे ॥ भ० ॥ बारी मांहेपैसी भविजन । भेटो आदि दीदाररे ॥ भ०श्री० ४ ॥ मरुदेवीटुंक मनोहर दीसै । गजपर वैठा सोहैरे ॥ भ० ॥ शांतिनाथ सोलम जपगारी । भविजनना मन मोहेरे ॥ भ० श्री० ५ ॥ वंस पोरवाडे जगत वदीतो । सोमजी साह मल्हाररे ॥ भ० ॥ रूपजी साह करायो भावै । चौमुख मूल उद्धाररे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ नेमनाथ चवरीदेखीने । देखो धरमदुवाररे । भ० ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो विविध प्रकाररे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ भमतीमांहे बिंब विराजै । कहतांनावै पाररे ॥ भ० ॥ पुंडरीकगणधर गुरु पूजो । शांतिनाथ सुखकाररे ॥ श्री० ८ ॥ चेलणात लाई सिद्धसिलानें । सिद्धबरुजूनो कहियेरे ॥ भ० ॥ पुंडरगिरनी भमतीमांहे एहसहुसरदहियेरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ उलकाजोलनें भाडवडूंगर । हस्तगिरीफिरनमियैरे ॥ भ० ॥ कदमगिरीपरचरणजिनेश्वर । भेट्यांसहुसुखलहियेरे ॥ भ० ॥ १० ॥ घरवैठां जो भावकरीनें । मनशुद्ध भावनाभावैरे ॥ भ० ॥ सुमतिकहै ते धनधन कहिये । जात्रानो फल पावैरे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥ काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी फलपूजा ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल फलपूजा करो । उत्तमफल सुखकाज । भविजन पूजो भावसुं । सरै सहुसुभकाज ॥ १ ॥ ढाल ॥ रामतरमवामैं गइथी । मोरी

सहीयरकै० ॥ एचाल ॥ आदीसर पूजाकरो । एतो सिद्ध गिरीनो रायो हेमाय सदगुरुनें परसादथी । एतो दरसणदेवनो पायो हेमाय ॥ आ० ॥ १ ॥ आंबा दाडिम लेयनें । एतोफलपूजा इमकीजैहै माय । श्रीफल पूंगीफल जला । एतोनेटकरी फललीजै हे माय ॥ आ० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनी । एतो सेवाथी चितलायो हे माय । मिथ्यामत राचै थकै । एतो काल अनंत गमायो हे माय ॥ आ० ३ ॥ हिवसेवा प्रभु ताहरी । एतो चाहुं देव सवायोहे माय । सिद्धाचल गिरिरायनो । एतो मंरुण आदि कहायो हे माय ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य दिवस धन्यते घरी । एतो धन मरुदेवी जायो हेमाय ॥ पूरबनिनाणूं समोसरया । एतो आदीसर महारायोहेमाय ॥ आ० ॥ ५ ॥ अष्टोत्तर सत नामछे । एतो शास्त्रथकी तेजाणो हेमाय । एसहु नामजप्यां थकां । एतो प्रगट्यो परम कल्याण हेमाय ॥आ०॥६॥ सुकराजा इहां आयनें । एतो ध्यान धरै षट्मासी हे माय । चंद नृपति गिरि नेटतो । एतो पाम्यो सुखनीरासी हे माय ॥आ० ७॥ अनंतजीव मुगतेगया । में तो नमणकरुं चित धारीहे माय गिरवर दरसण देखतां । एतो मोहै सहु नर नारी हे माय ॥ आ० ८ ॥ धन २ ए गिरिरायना । एतो गुणगायो सुखदायो हे माय । सुमतिकहै जिन राजनी एतो सेवाथी सुखपायो हे माय ॥ आ० ॥ ९ ॥ काव्यपूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म० ॥ इति फलपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कुसुमै करी । वासित सरस सुगंध ॥ पूजो जिनवर जग धणी । दूरकरो दुख धंध ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धचक्रपद बंदोरे भविका ॥ एचाल ॥ श्रीविमलाचल पूजोरे ॥ भविका । तीरथ एहवोन दूजोरे । भविका ॥ श्री ॥ सुरभि गंधोदक लेई आवै । छिमको जिनवर अंगरे ॥ भ० ॥ कुसुमेंवासित उत्तम जलनी । वृष्टिकरो मनरंगरे । भ० । श्री० १ ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो उठ पर भातरे ॥ भ०॥ गुणनो लख नवकार गुणीजै । दोय अठम छठ सातरे । भ०। श्री० २ ॥ रथजात्रा परदक्षिणादीजै । पूजा विविध प्रकाररे । भ० । धूप दीप फल नैवेद्य मुंकी । नमियै नामहजाररे । भ० । श्री० ३ ॥ आठ अधिक शत

टुंक जलेरी। मोटी तिहां इकवीसरे ॥ ज०॥ सेत्रुंजय गिरि टुंक ए पहिलुं। ना म नमो निसदीसरे ॥ ज०। श्री०४ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे। बाहु बली शिवठामरे ॥ ज०। तिणकारण ए गिरवर कहियै। त्रीजो मरुदेवीनामरे। ज० श्री० ५ ॥ पुंमरीक गिरि नाम एचोथुं। पांचकोमि मुनि सिद्धरे। ज०। पांचमी टूंक रेवतगिरि कहियै। तिण ए नाम प्रसिद्धरे ॥ ज०॥ श्री०६ ॥ विम लाचल सिद्धराज जागीरथ। प्रणमीजै सिद्धक्षेत्ररे ।ज०। उरीपाली इणगिर जे टो। करियै जन्म पवित्ररे। ज०। श्री०॥ ७॥ पूजाकरी प्रजुना गुणगावो। सा धोकाम अनेकरे ज०। पुंमर गिरना गुणगण गातां। निरमल आत्म विवेकरे। ज०। श्री० ८ ॥ देवकीनंदन पूजो जावै। थूलजद्र मुनिरायरे। ज०। सुमतिमं मण जिनराज पसायै। दिन २ आणंद थायरे ॥ ज०। श्री० ९ ॥ इति काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० ॥ इति गुलाब जल पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्रजु पूजो इग्यारमी। क्षोमयुगल लेई सार। निरमल गुण धारी करी। पूजो जगजरतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग घाटो ॥ मेरोमन वसकरलीनो। जिनवर प्रजुपास ॥ मे० ॥ गिरवर मंमणआदि। मुऊमनथांसुंलागो ॥ मु० ॥ विमलाचल तीरथराजै। तीनजुवन आल्हाद ॥ मु० ॥ १ ॥ सूरत मोहनीलागै। जागै प्रीत अनाद ॥ मु०॥ सुरनर वंदन आवै। पावै प्रजु परसाद ॥ मु०॥ २ ॥ देश देशका जात्री आवै। पावे हरख अपार ॥ मु० ॥ मरु देवी नंदन वंदो। गावो गुण गण सार मु० ॥३ ॥ हेमनी चोरी कीनी। ए आलोयण तास ॥ मु० ॥ चढ चैत्री पूनम जावै। करै इक जपवास ॥ मु०४॥ वस्त्रनीचोरी रे जेणें। कीनी जोजै जाव ॥ मु०॥ वारसात आंबिल करियै। जवियण सुज मन जाव ॥मु० ॥५॥ रतननी चोरी कीनी। तेजन सुख इमहोय ॥ मु० ॥ गिरिपर तपस्या कीजै ॥ आतम निरमल होय ॥मु० ॥६ ॥ पित्तलादि चोरी कीनी। ते सुख थायेकेम ॥मु०॥ पुरमट्ठसातजु करियै। धरियै मनमें प्रेम ॥ मु० ॥७॥ मोतीनीचोरी जुकीनी। आंबिल कर जवितीन ॥मु०॥ धानादि चोरी कीनी। दैते वस्तु प्रवीण ॥८ ॥ देवादिधन जो वांजै। तो सुधथाये एम ॥मु०॥ अधिको वित्तजोखरचै। मुनि

पोषैवहुप्रेम ॥ मु०॥९॥ चौपद चौरीकीनी । दैते वस्तुनोदान ॥मु०॥ सरधासुं तपस्या कीजै ॥ दीजै मुनि सनमान ॥ मु० ॥ १० ॥ पुस्तक पारका देखी । लिखै जो आपणो नाम ॥ मु०॥ षट्मासी तपस्या कीजै । सामायकतिणठाम ॥ मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिव्राजका जाणो । सधव अधव गुरुनार ॥ ॥ मु० ॥ तिन संग व्रत जो न्राजै । छम्मासी तपसार । मु० ॥ १२ ॥ ॥ गो स्त्री बालक रुषिनी । आसातनाजेकीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनिने दीजै । न्रावधरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिन पूजन कीजै । क्रोम युगल अतिचंग ॥ मु ॥ इशविध पूज रचावो । सुमतिक है मनरंग ॥ मु० ॥ १४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र नरनागरमर्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर न्रव्यमनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजा दिपरिवार विन्रूषितेभ्यः । नित्यंनमो सिद्धगिरेंद्र जिना लयेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने नंतानंत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहाः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ रागधन्यासिरी ॥ तेज तरण मुख राजै ॥ एचाल ॥

॥ प्रन्नुजीकी पूजरची सुखकाजै । हांत्रो सुख काजै ॥ श्रीसिद्धाचल गिरवर ऊपर । मंरुण आदि विराजै । नान्ननृपति मरुदेवीके नंदन । दरशण सुं दुःख न्राजै ॥ हां० प्र० ॥ १ ॥ बीकानेर नगर अतिसुंदर । मरुधर देश विराजै । श्रीजिन सौन्नाग्य सूरि पटोधर । सकल गुणैंकरी गाजै ॥ हां० प्र० ॥ २ ॥ श्रीजिन हंससूरि खरतरपति । गुण गिरुवा गुरुराजै । प्रीत सागर गणि सिष्य सुवाचक । अमृत धर्म सुन्राजै । हां० प्र० ॥ ३ ॥ तसु सेवक पाठक पदसोहै । क्रमा कल्याण गणि राजै । तसु चरणांबुज सेवक अहनिस । धर्मविसाल विराजै ॥ हां० प्र० ॥ ४ ॥ सुमति मंरुण ए गिरनी पूजा । रचिय संघ सुखकाजै । कुशल करण सहू मुनिवरकी । प्रेरणया सुखकाजै ॥ हां० प्र० ॥ ५ ॥ चूंपधरी चोखै चितचाहै । लिखी सकल सुन्नकाजै संवतसय नगणीस तीसमें । पूजरची हितकाजै । हां० प्र० ॥ ६ ॥ जेठसुदी तेरस रविवारै । सुणतां सहु दुःखन्नाजै।न्रावधरी गिरनां गुणगाया।

दिन २ अधिक दिवाजै ॥ हां० प्र० ॥७॥ इति श्रीपाठक सुमति मंरुणजी कृत सिद्धगिरीपूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीआबूजी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीजिनवर आराधियै । धरियै हियरै ध्यांन । रुषभ जिणंद दिणंद सम । दिन दिन चढतै वांन ॥ १ ॥ आबू गिर पूजन रचुं । महियल मोटो ठाम । देस देसका संघवी । आवी करै प्रणाम ॥ २ ॥ आबू अचल गढ दीपतो । महियल जाण सुमेर । देवलवाको अति दीपतो । महिमा थई चिहुं फेर ॥ ३ ॥ विमलसाह मंत्री थयो । मोटो पुन्य पसाय । पातसाह बारै नणी । वस करिया सुखदाय ॥ ४ ॥ तिणए तीरथ थापियो । आबूगिर सिरदार । चैत्य कराया नावसुं । खरची द्रव्य अपार ॥ ५ ॥ सुद्धोदक लेईकरी । पूजो आदि जिणंद । स्नात्रकरी जिनराजनी । पावो परमानंद ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इक सुणजै नाथ अरज मेरी० ॥ एचाल ॥ बलिहारी आबू गिरवरकी ॥ ब० ॥ आबू गिरिपर अद्भुत सोहै । मूरत आदि जिनेसर की ॥ ब० ॥ आस पास बहु झाझी झंगी । मांहि गुफा जोगीसरकी ॥ बलि० ॥ ॥ १ ॥ देश देशके जात्री आवै । पूजरचै परमेश्वरकी ॥ ब० ॥ विमलै मंत्री वस करलीनी । पातसाही बारै घरकी ॥ ब० २ ॥ तिणए बिंब नराया नावै । महिमा आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आठसै बहुत्तर जिनवर ग्राजै । न दियां नीर सजल नरकी ॥ ब० ३ ॥ कोरणी खूबबणी अति सुंदर । दिल नर दरसण सुखकरकी ॥ ब० ॥ देराणी जेठाणीरा आला । कोरणि करी हदवेसरकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ अंगी चंगी अजब वणी है । सोवन वरण रतन वरकी ॥ ब० ॥ सुमति कहै एतीरथ उत्तम । इनकुं उपम सुरगिरकी ॥ ब० ॥ ॥५॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीरथ सीरोमणाय । श्रीआदिस्वराय जलं ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूसरी चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ केशर चंदन लेयके । पूजो श्री गिरराज ॥ पूजत अनुभव गुणलहै । तारण तरण जिहाज ॥ अचल गढै जिनराजनो ॥ अति उत्तंग

प्रसाद । देख भविक हर्षितहुवै ॥ पावै परम आल्हाद ॥ २ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि झुजलोरे देवा ॥ एचाल ॥ आबू तीरथ पूजीयैरे ॥ वाल्हा ॥ तीरथ महिमा वंतोरे ॥ आगो जिनवर सहूभवि सेवियैरे ॥ वाल्हा ॥ आणी भाव अनंतोरे ॥ १ ॥ आगो ॥ वस्तपाल तेजपालजीरे ॥ वा० ॥ लीनो लखमी लाहोरे ॥ आ० ॥ मुद्रा बहु खरची करीरे ॥ वा० ॥ जसलीनो जगमांहोरे ॥२॥ आगो ॥ कोरणी झीणी सुंदरूरे । वा० । कीधी धर मन रंगैरे ॥ आ० ॥ सुरगुरु पिणनहि कहीसकैरे ॥ वा० ॥ महिमा अधिक सुरंगैरे ॥ ३ ॥ आगो ॥ बारैकोम ऊपर सहीरे ॥ वा० ॥ लागा तेपन लाखोरे ॥आ० इतनो धन खरच्यो सहीरे ॥ वाला ॥ श्री संघकैरी साखोरे ॥ ४ ॥ आगो ॥ मूलनायक नेमी सरुरे ॥ वा० ॥ ब्रम्हचारी सिरदारोरे ॥ आगो ॥ च्यारसै अम्सठ सुंदरूरे ॥ वा० ॥ जिनवर बिंब उदारोरे ॥ ५ ॥ आ० ॥ सुमति सदा इमवीनवैरे ॥ वा० ॥ तीरथनी बलिहारीरे ॥ आ० ॥ मन वंछित सगला फलैरे ॥ वा० ॥ पूजत गिर सिरदारीरे ॥ ६ ॥ आ० ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरंद्राय तीर्थसि० श्री आदीस्वराय चंदनं यजा महे ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ तीसरी फूल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ब्रह्मचारी जोगीसरू । जगपति नेम जिनंद ॥ बावीसम जिन पूजतां । नितप्रति होत आनंद ॥ १ ॥ चंपक केतकि केवनो । विनज सिरी मचकुंद ॥ मोगर मालति कुशमसैं । पूजो भवि सुख कंद ॥ २ ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागै म्हांरा राजिंदा ॥ से० ॥ एचाल ॥ आबू तीरथ भेटो म्हांरा राजिंदा ॥ भेटो म्हांराराजिंदा भे० ॥ आ० ॥ इण सम तीरथ ओरन कोई । मिथ्यातम सब मेटो । म्हां० । अमीझरो महाराज कहावै । देख्यां अति सुखपावै । म्हां० आ० १ । मनसुद्धजात्र करौ भविप्रांणी । सुर नर मुनि गुणगावै । म्हां । सुंदर सूरत मूरति सोहै । देख्यां प्रीत लगावै । म्हां० आ० २ । अवर अनेक जिन बिंब कहावै । दरस करत दुख जावै । म्हां० । एगिर सहु सिरदार कहावै । जोगीसर बहुध्यावै । म्हां० । आ० ३ ॥ दूरथकी एगिरवर निरखी । मोतियन थाल भरावै । म्हां० । दांन मांन सनमान करीनें । तीरथ महमा गावै । म्हां० आ० ४। विधसेती गिरवर

नितपूजै । लाभ अनंत उपावै । म्हां० । संघपती संघ लैकै जावै । धन २ तेह कहावै । म्हां० आ० ५ । पुष्पमाल गुंथी भविभावै । जिनवर पूज रचावै म्हां० । सुमतिकहै गिरराजकुं ध्यावै । वंछित सफल लहावै । म्हां० आ० ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोम० श्रीआदीश्वराय पुष्पंयजामहे ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौथी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ धूप दशांग लेई करी । पूजो तीरथ राय । सुरभि सुगंधी महमहैं । इमभाखै जिनराय ॥ १ ॥ विमल अश्व वाहन धरी । सेवकरै जिनराज । अंबादेवी पूजतां । सफलकरै सबकाज ॥ २ ॥ मैं निरष्या गुरुमहाराज मतिआं हरखभरी मैं० ॥ ए चाल ॥ दिल मैं हरखधरी भविपूजो गिरवर सार ॥ दिल० ॥ धूप दशांग लेई करीरे । पूजो जग भरतार । बोधबीज निरमल करोरे । सफलकरो अवतार ॥दि०॥ संघकरी संघ वीघणारे । भेटै श्री गिरसार। अष्टद्रव्य लेई करीरे। पूजै जिन इकतार।दिल० भ० २ ॥ अचलगढे जिनराजनारे । मोहन मंदिर च्यार । विमलै साह करावियारे । धन धन तसु अवतार ॥दि० भ० ३॥ सुंदर मूरत गुण भरीरे। चौमुख प्रतिमा च्यार । साजन म्हारा थे सुणोरे । भाखुं गिरि गुणधार ।दिल०भ०४॥ चवदैसै चौमालनीरे । मूरत गुण भंभार । हेममई जिनराज नीरे । सोभे अधिक दीदार ॥दिल०भ०५॥ धन जेहनी माता पितारे । धन जेहना कुलसार द्रव्य प्रबल खरची करीरे । लीनो लाभ अपार ॥ दि० भ० ६ ॥ इणपर ए गिर रायनीरे । महिमा अधिक अपार । सुमतिसदा कर जोभिनेंरे । प्रणमें वारंवार । दिल० भ० ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय धूपं यजामहे ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दीपक पूजा पंचमी । करो भविक गुणवंत । दीपक सम गुण पामियै । केवल ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ तीरथनी महिमा करो । भाव धरी मतिवंत । द्रव्य भाव विहुं भेदसुं । पूजो भवि विकसंत ॥ २ ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोन खबर ले मेरीरे । भ० ॥ एचाल ॥ आबू गिरपर आदि जिनेसर । दरसणकी बलिहारीरे । आ० । नगरसीरोही

नांम कहावै । जिनवर बिंब जुहारीरे। तिहांथी प्रादस गाऊ निरखो । हणादरो सुख कारीरे ॥ आबू० १ ॥ आबूगिरकी पाजे चढतां । पाप सकल परिहारीरे। ए गिर देखी सुर नर मोहै। महिमा अधिक उदारीरे ॥ आ०२ ॥ आस पास बहु झाली सोहै । बिच मंदिर मनुहारीरे । नाभिरायके नंदन क हियै । मरुदेवी मात मल्हारीरे ॥ आ० ३ ॥ जुगला धरम निवारण स्वामी त्रिभुवन जन हितकारीरे। नगर अजोध्या आप विराजो। आदिनाथ उप गारीरे ॥ आ० ४ ॥ आदीसर अलबेसर कहियै। सबको तुं अवतारीरे। सब जोगीसर तुमकुं ध्यावै। अद्भुत कीरत थारीरे ॥आ०५ ॥ तुं भय भंजन तुंहि निरंजन। लोकालोक विहारीरे । जोगीसर जिनराज जगतगुरु। नेमीसर ब्रह्मचारीरे ॥ आ० ६ ॥ तारण तरण दयानिध स्वामी। सेवकजन साधारीरे। सुमति कहै भवि निरमल भावै। सेवो प्रभु सुखकारीरे ॥ आ० ७ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तिर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय दीपं यजामहेः ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहाः ॥ अक्षत पूजा साचवै । भविजन मंगल काज । तीन भुंज प्रभु आगलै । करौ भविक सुखसाज ॥ १ ॥ मंगल आठ करोसही। प्रभुआगैं धरप्रेम। अभसिद्धि नवनिध संपजै। सुजस हुवै नितनेम ॥ २ ॥ ढाल तुमतो भलेविराजोजी सांवलिया माहाराज सिखरपर भलेविरा जोजी॥तु० ॥ ए चाल ॥ तुमतौ भले विराजोजी। आबूके सिरदार सिखरपर भले विराजोजी ॥ तु० ॥ नाभिरायके नंदन कहियै। तीन भवन विसरांमी। केसर चंदन मृगमद घोली। पूजो अंतर जामी ॥ तुम० ॥ १ ॥ विखम पहाडां विचमैं राजै । साहिबतुं सिरनामी । आदीसर जोगीसर पूजी। वंछित सगला पामी ॥ तु० ॥ २ ॥ द्रव्य भावसें पूज रचावो। मनमें आणंद पावो भर सुगताफल थाल वधावो। तीरथ महिमा गावो ॥ तु० ३ ॥ आबू गिरको ध्यान धरावो । तपस्यासुं फलपावो । घरसारू बलिदांन दिरावो संघभगत करवावो ॥ तु०४॥ अचलगढै जिनदरसण करवा। संघसकल मिल आवै। आदीसर नेमीसर पूजी। मनवंछित सबपावै ॥तु० ॥५॥ तीरथ महिमा भविजन करियै। दिलमैं भावजधरियै। सुमतिकहै तन मन कर उजल ।

पुन्य खजानो भरियै ॥ तुम० ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्री आदीस्वराय अक्षतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । ओर सुगंध रसाल । पूजो तीरथ रायनै । भावकरी गुण माल ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजा सातमी ॥ करो भविक धरप्रेम । तीरथनी महिमा करी । गुणगावो धरनेम ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब सुणियो अरज हमारी ॥ में० एचाल ॥ ❀ ॥ ॥ श्रीआदीसर जिनवरसाहिब । तुमपर जाउं बलिहारा । मैं वारिजाउं ॥ ॥ तु० ॥ आबू गिरपर आप विरा जो । साहिब पर उपगारा । में० श्री० ॥ तूं हिं जिनेसर तूं परमेसर । अंतरप्राण आधारा । में० । जोगीसर तेरी लयजांणें । परमातम अविकारा । में० ॥ श्री० २ ॥ मनमोहन तुं नाथ निरंजन । जगजीवन हितकारा । में० । सुर नर किन्नर सेवकरतहै । जय २ जग भरतारा ॥ में० श्री० ३ ॥ तेरीमहिमा अधिक विराजै । सबजीवन सुखकारा ॥ में० ॥ अनंतज्ञांन दरसणको स्वामी । मनमोहन सबप्यारा ॥ में० श्री० ॥ ४ ॥ लोकउचित व्यवहार प्रवर्त्यो । बोधबीज दातारा । में० । तुमकुं जो तन मनसैंध्यावै । पावै वंछित सारा ॥ में० श्री० ५ ॥ भविकलोकको तुं उपगारी । मिथ्यातम घनवारा ॥ में० ॥ सुमति कहै गिरपूज रचावो । एगिरसबसिरदारा ॥ में० ॥ श्री० ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदी श्वराय नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमीधजा तथा फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ प्रभुपूजा एआठमी । मंगल आठ कराय । पंचवरण ध्वज मोहनी । पूजकरो सुखदाय ॥ १ ॥ आंबा दाडम आददे । विवध भांत मनरंग । प्रभु आगल ढोवो सही । भावधरी उछरंग ॥ २ ॥ सब सुंदर आवो सही । सजसोले सिण गार । रतन जडत कंचुक धरी । पहरी नवसरहार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पनरमपदगुण गानाहो भविप० ॥ ए चाल ॥ भवि जिनगुण मंगल गानाहो ॥ भवि० ॥ फलपूजा ए गिरकी करकै । जगमैं सुजस वधानाहो । भ० । मंगल आठ

रचोप्रभु आगल । चंदमुखी मनआनांहो ॥ अवि० ॥ १ ॥ पंचवर णकी ध्वजवर कहियै । हित चितसैं करवानाहो । सुंदरनारी सब सि णगारी । प्रेमधरी सबआनाहो ॥ अवि० ॥ २ ॥ कंचू कसिआ हरख अंग सिआ । आभूखण पहरानाहो । अ० । रतनजडित सब सुंदरचूनी । हाथे बाहु सोभानाहो । अ० । अवि०॥ ३ ॥ थेई थेई तानकरै प्रभू आगल । मधुर सुरै गुणगानाहो । अ० । इंद्राणी मिल मंगल गावै । तिम तुमे अगत करानाहो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत । बोधबीज उपजा नाहो । अ० । सुमतिकहै अवि पूजन करियै । मनवंछित फल दानाहो ॥ अवि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थ सिरोमणाय श्रीआदीस्वराय फलं ध्वजं अष्टमंगलं यजामहेः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥दूहाः॥वस्त्र जुगल लेईकरी। पूजो दीनदयाल॥ सुजश सुगंधी विस तरै । बोधबीज गुणमाल॥१॥ रथयात्रा प्रभुनी करो । महिमा अगत कराय ॥ लाभ अनंतो उपजै । समकित निरमल थाय ॥ २ ॥ ढाल ॥ दरशणके लोभी नैना । होदर० ॥ ए चाल ॥ हो पूजनके लोभी सैणा ॥ लोभी० हो पू० । पूजनकुं जिया नित नितचाहै । कुगुरु वचन तजदैना । हो पू० लो० ॥ १ ॥ यापूजा समकितकी करणी । सुगुरु वचन सुणलैना । हो पू० । गिरवर गढ गिरनार विराजै । नेमकुमर सुखदैना ॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्रजुगलकी पूजन करियै । तन मन उज्जल वैना ॥ हो० ॥ मिथ्यातम सब दूर निवारी । सुमति रमण संगरैना ॥ हो पू० ॥ ३ ॥ सरधा केसर रंग घोलकै । निजआतम रंगलैना । हो० । विमलगिरी अष्टापद पूजो । आदीसर सुख दैना । हो पू० ॥ ४ ॥ शिखरसमेत वमो जगमांहै । वीसप्रभू हितदैना ॥ हो पू० ॥ आबू गिरकी महिमा अद्भुत । मानो हमाराकैहना ॥ हो पू० ॥ ५ ॥ रथजात्रा जिनवरकी करकै । पाप पडल हरदैना । हो० । कुगुरु कुमतिको संगछो डकै । जिनगुणमैं दिलदैना ॥ हो पू० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहीयै । जगतारक जगसैना । हो पू० । सुमति सदा प्रभुके गुण गावत ।

बोधबीज सुखदेना ॥ हो पू० ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय तीर्थ सीरोमणाय श्री आदीस्व० वस्त्रं यजामहेः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दूहा)समकित निरमल कारणें। सुरभि सुगंधी लेह। ठिरको श्रीगिर राजकुं। भावधरी गुणगेह ॥१॥ गिरवर भावे भेटिये। दीजे वंछित दांन। गी तगान भलगाइये। ज्युंपावो बहुमान ॥ २ ॥ ढाल ॥ थारीगईरे अनादिनीं द जरा टुकजोवोतो सही ॥ जोवो० ॥ एचाल ॥ तुमकरोरे सुमतिको संग रंगीला सेवोतो सही । सेवोतो सहीरे म्हांराचेतन सेवोतो सही । तुम० ॥ मुनिवरकी वरणी हितकरणी। लेखोतो सही । मिथ्यातम करदूर हियामैं देखोतो सही ॥ दे० म्हां० तु० ॥ १ ॥ आतम करणी निजगुण धरणी देवोतो सही। तुं कह्योरे हमारो मांन सुग्यानी वेवोतो सही॥ बे० म्हां० तुम० ॥ २ ॥ समकित करणी भव भय हरणी लेवोतो सही । द्रोपदि जिम जिनराज भगतकर सेवोतो सही ॥ से० म्हां० तुम० ३ ॥ रागकतरणी जग जस भरणी जोवोतोसही। अकलंकित गुणहोय भरमसब धोवोतो सही ॥ धो० म्हां० तुम० ॥ ४ ॥ सबमन हरणी गुणमणि धरणी पावोतो सही । कूड क पट कर दूर हीयामैं लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ५ ॥ आबूगिरनी पू जन करणी ध्यावोतोसही। तन मन प्रीतलगाय जिणंदगुण गावो तो सही। गा० म्हां० तुम० ॥ ६ ॥ अनुपम करणी पापनधरणी भावोतो सही। तुम करोरे सुंगंधी पूज भविक सुख पावोतो सही ॥ पा० म्हां० तुम० ॥ ७ ॥ इम गुणवरणी पूजनकरणी गावोतो सही । सुमति रंगीला सैण हीयामैं लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरो० श्रीआदी श्वराय सुगंधि द्रव्यं यजामहेः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दूहाः)नंदी घोख बजावतां। थायै नाद अनंत । विविध प्रकारै पू जतां। बोधबीज विकसंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूज पूज जिनराज काजसारतुं का० ॥ सार सार जिनराज तार तार तुं ॥ ता० भलांहे ता० ॥ सा० ॥ जग जश धार सार जय कारतुं । सरणाई मिरदंग चंग सार सार तुं ॥

सा० न० सा० सार० ॥ तुंही है जिनंद चंद आदि कार तुं । जगत उधार सार अविकारतुं ॥ अ० न० ॥ सार० ॥ १ ॥ समकित धारसार सुक्खकारतुं । मनमथ जीतकार राग वारतुं । रा० न० । सा० । तुंहीं है मुनिंद इंद हितकारतुं । गुणको निधांन सार नरतारतुं । न०न० ॥ सारसार० ॥ २ ॥ सुर नर देव सार किरतारतुं । आबूके जिनंद चंद मुनिसारतुं । मु०न०सार० । परमआधार सार जिनतारतुं । सुमति विचार धार सुखकारतुं । सु० न० सार० ॥३॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसि० श्रीआदीश्वराय वाजित्रगुणवरणन पूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नृत्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहाः ॥ सुरसुंदर हरखेकरी । सजसोजै सिणगार । ताल मृदंगहि लेयनें । नगतकरै बहुसार ॥ १ ॥ नावधरी प्रभु आगलै । अष्टापद गिरसार । रावणनें मंदोदरी । नृत्यकरै गुणधार ॥२॥ ढाल ॥ जिनगुणगावत सुरसुंदरी रे जि० ॥ ए चाल ॥ नगतिकरे सब सुरसुंदरी रे ॥ न० ॥ सुरसुंदरी रेदेवा ॥ सु०न० ॥ हीर चीर पाटंबर पहरी । रम झम घुघर नाद करी रे । न०सु०॥१॥ चंदवदन मनमोहन गहरी । मृगनैनी शृंगारधरी रे ॥ न० ॥ बांह बाजूबंध कंचन चूरी । बेसर मोती लाल जरी रे ॥ न० सु० ॥ २ ॥ अपछरवरणी सुर मन हरणी । मोहनी रूप अनूप धरी रे ॥ न० ॥ चंपकवरणी मनवस करणी । प्रभूआगै गुणगावै खरी रे ॥ न० सु० ॥ ३ ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । थेई थेई नाचत नावधरी रे ॥ न० ॥ अशरण शरण तुंही जगदी पक । तुंहि निरंजन सुरक करी रे ॥ न० सु० ॥ ४ ॥ नविजन ध्यावत हरख नपावत । गावत गुण सुनराग करी रे ॥ न० ॥ गजगत गामनी सब मिल नामनी । ठम ठम नाचत सुर महरी रे ॥ न० सु० ॥ ५ ॥ अष्टापद गिरराव णराजा । मंदोदरि जिम नगतकरी रे ॥ न० ॥ सुमति सदा जिनके गुणगा वत । लुल २ जिनजीकै पायपरी रे ॥ न० सु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय गीतनृत्यगुणवरणन पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलश रागरेखता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदजश आजमें गायो ॥ ए चाल ॥ गिरंदजश आजमें

गायो । नेटतां हरख अतिपायो ॥ गि० ॥ आबूगिरिंद सुखदायो । सघन घन रुंखसें ढायो । खरा जिनचंद सूरिराजा । तपे जग नानज्युं ताजा गि० ॥ १ ॥ क्षमा कल्यांणके पाजा ॥ बिविध गुण ज्ञांनके नाजा ॥ धरम विशाल तसुनंदा ॥ कहै युं सुमति सुख कंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस चालीसै । प्रेमधर अधिक सुजगीसै ॥ नजो तुम देव जगदीसै । फलैसब आस निस दीसै ॥ गि० ३ ॥ देवांके देव मनभाया ॥ पूजतां संपदा पाया ॥ बीकाणें सहरमें राजै ॥ जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ४ ॥ आदि जिन पूज सुख काजै ॥ नमत प्रभु पाप सहुभाजै ॥ सकल जन नावसें ध्यावै ॥ मोहन मुनि प्रेमसें गावै ॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री आबू गिरि श्री आदीस्वर जिन गुण महिमा वर्णन सुमति मंडणजी पाठककृत पूजा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आबूजीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अईउ २ नाटक नाचे आदी सरकै आगैलो अ० ॥ एचाल ॥ पूजो पूजो तीरथ पूजो ॥ आबू तीरथ पूजोलो ॥ पूजो० ॥ इंद्र पूजै चंद्रपूजै इणसम ओरन दूजोलो ॥ पू० ॥ अध्यातम जोगीसरध्यावै ॥ दरसण लागै मीठोलो ॥ पू० आ० १ ॥ सुर जन मोहै मुनिजन मोहै ॥ लागो रंग मजीठोलो ॥ पू० ॥ तेजपाल वस्तपाल करायो ॥ मोहन मंदर दीठोलो ॥ पू० २॥ बारै कोमी मुद्रा ऊपर लागा तेपन लाखैलो ॥पू०॥ इतनो धन खरच्यौ नवि प्राणी ॥ संघ सकलनी साखेलो ॥ पू०३ ॥ च्यारसै अरुसठ सुंदर सोहै । जिन वर बिंब उदारीलो ॥ पू० ॥ सुमतिसदा जिनवर जशगावै ॥ तीरथनी बलिहारीलो ॥ पू० । आ० ४ ॥ इति आबू गिरपदं ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । नावधरी नरपूर । अनुभव गुण निरमल करी । वंदुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ नवै श्री जिनराजनी । संख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांभली । ते सुंणजो धर नेह ॥ २ ॥ सहसकूटनी थापना । करियै विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दिवस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेत्रुंजा ऊपरै । सहसकूटनो नाव । ते देखी नवि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ

जलभाव । गीतनृत्य प्रभु आगलै । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव सुहागण सुंदरी । सजसोलै सिणगार । प्रभु आगै मंगल करै । पावै हर ख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा भरी । स्नात्र करै भविसार । सहस कूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ आज आयोरे उछाह । जीवमा नाच० (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियैरे ॥ आ० ॥ पंचभरत वलि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज० ॥ दक्षिण उत्तर भरते जाण । अतीत अनागतनें वर्तमान ॥ १ ॥ आज० ॥ इणपर गिण तां जिनवर थाय । सातसै वीश अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीश चौवीशी वंदुं एह । तारण तरण भविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम परमे शर जांण । एहनी आणकरो परमांण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो देव । सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार । सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ० ॥ वारिजानं एहनी वार हजार । मुझ प्रीतम एही अवधार ॥ आ० ॥ ४ ॥ करता भूमंडल उपगार । जगनायक जिनवर जयकार ॥ आज० ॥ भावधरी वंदुं जगसार । सुमति सदा दीजै किरतार ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । श्री सहसकूट जिनेंद्राय जलं यजा महे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ वर्त्तमान जिन वंदियै । तीन चौवीसी मांह । रुष भादिक जिनपूजतो । दिन २ हरख उछाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदै । अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । भावधरी गुणमाल ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ अबतो उधार्यो मोहि चहियै जिनंदराय (ए चाल) ॥❀॥ वर्त्तमांन जिनपूजन करकै । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त्त० ॥ रुषभ अजित शंभव अभिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर्त्त० ॥ १ ॥ प दम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रभु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरोरे ॥ वर्त्त०॥ २ ॥ बारमो वाशपूज्य जिन नमनें । मिथ्यातम सब दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां ।

रुद्ध सिद्धको नंमार नरोरे ॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि जिनेसर । मुनिसुव्रत दिलध्यांन करोरे । नामि नेमी श्रीपाश जिनेसर । वीर सदा सुऊ नाथ खरोरे ॥ व० ॥ ४ ॥ ए चौवीशे जिन गुण गावत । संपद सुखकी सेज वरोरे । सुमति कहै जिन पूजन करके । लुल २ जिनके पाय परोरे ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । सहसकूट जिनेंद्राय चंदनं यजामहेः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (३) पुष्पमाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) ॥ पुष्पमाल गुंथी करी । कंठ ठवो जिनराज । सुम ति सुगंधी विसतरै । लाल अनंत समाज ॥ १ ॥ अतीत चौवीसी वंदियै । आंणी नाव प्रधान । मनवंछित पूरण सदा । परतिख कल्पप समांन ॥ २ ॥ (ढाल) ॥❀॥ श्री चंद्रप्रनु जिनवर साहिब । सुणिये० मैंवारि० (एचाल)॥

॥ ❀ ॥ केवल ज्ञांनीनै निरबांणी । सागर महा जशकारा (मैं वारि जानं सा०) के० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक । सर्वानुंनूति उदा रा ॥ (मैं० स०) के० ॥ १ ॥ श्रीधर दत्त जिनवर नपगारी । दामोदर अवि कारा ॥ में० दा० ॥ अधिक सुतेज जिनेसर सांमी । मुनि सुव्रत गुणकारा ॥ २ ॥ (में० मु०) के० ॥ २ ॥ श्री सुमती शिवगति जिनपूजो । अस्तंग नमी मुनि प्यारा ॥ (में० अ०) ॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो । किरतारध म नुहारा ॥ (में० कि०) के० ॥ ३ ॥ श्री जिनराज जिनेसर वंदो । शुनमती शिवकारा ॥ (में० सु०) ॥ स्यंदन संप्रति जिन चौवीशे । सुमति सदा गुण कारा ॥ (में० सु०) के० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय पुष्पं यजामहेः ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४) धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ नावी जिनवर वंदियै । द्रव्य नाव सुविचार । पद मनाल आदिक प्रनु । वंदूं वारं वार ॥ १ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर । अं बर तुरक लोबांन । धूप करो जिन राजनें । पावो सुख असमांन ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ संनव जिन सुखकारी रे । वाला संन (एचाल) ॥ ❀ ॥

॥❀॥ पदमनाल सुखकारी रे वाला ॥ प० ॥ (हांरे होरे वाला) वारीजाउं वार हजारी रेवाला ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंदु नावै । सुपारस ब्रह्मचारी रे ।

वा० प० ॥ १ ॥ स्वयं प्रभु जिन अंतरजामी । सर्वानुभूत उदारी । देवश्रुती जिनपर उपगारी । उदय पेढाल विचारीरे । वा० ॥ प० ॥ २ ॥ पोट्टल जिन शत कित्तीं कहिये । सुव्रत जिन हितकारी । अमम जिनेसर बारमो कहिये । निकषाय गुणधारीरे । वा० प० ॥ ३ ॥ निष्पुलाक जिन पनरमो सेवो । महिमा अधिकतुमारी । सोलम निरमम जिनवर भावै । सेवकरो इकतारीरे । वा० ॥ प० ॥ ४ ॥ चित्र गुपति चितचाह धरीनें । समाधि से वो सुविचारी । संबर जिनगुण मणिके आगर । जस्सोधर जशधारीरे । वा० ॥ प० ॥ ५ ॥ विजयमल्लि देवज जिन पूजो । अनंतवीरज शुभचारी भावकरी भद्रंकर सेवो । एहीज निजगुण धारीरे । वा० ॥ प० ॥ ६ ॥ भा वी जिनवर उत्तम कहिये । चरण कमल बलिहारी । सुमति कहै तन मन कर उजल । सेवोजिन इकतारीरे । वा० ॥ प० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस कूटजिनेंद्राय धूपं० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) दीपक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) दीपक कंचन मय करी । पूजो जग भरतार । धा तकी पूरब खंमें । भरत तणा जिनसार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिध कोन० ॥ (ए चाल)

॥ ❀ ॥ धातकी खंमै पूरब भरतै । अतीत चौवीसी वंदोरे । धा० । रतन प्रभूनें अमल प्रभूजी । असंभव जिन चंदोरे । धात० ॥ १ ॥ श्री अकलंक चंद्रा प्रभु प्रणमुं । सुभंकर सुखकंदोरे । सपत नाथ जिन सुंदर भावै । नाथ पुरंदर इंदोरे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देव दत्तजी । वासवदत्त सुनंदोरे । श्रीश्रेयांस जिनेसर वंदो । वीरस्वरूप आनंदोरे ॥ धा० ॥ ३ ॥ श्रीतप तेज दिवाकर सेवो । श्रीप्रतिबोध सुदेवोरे । श्रीसिद्धारथ जिनवर पूजो । स्यंदन जिणगुण देवोरे । धा० ॥ ४ ॥ अमल नाथ देवेंद्र सुपूजो । प्रवचन नाथ सुचंदोरे । विश्वानन जिनदेव सुवंदो । मेघ अधिक गुण वृंदोरे ॥ धा० ॥ ५ ॥ श्रीसर्वज्ञ जिनेसर वंदो । चौवीसम मुनिचंदोरे । धातकी खंमै पूरबभरते । अनागत जिनवृंदोरे ॥ धा० ॥ ६ ॥ इमहीज धातकी पूरब भरतै । वर्त्तमान सुखकंदोरे । सुमतिसदा जिनराज

कृपासैं। लहै सदा आनंदोरे ॥ धा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा०। सहसकूट जिनेंद्राय दीपं यजामहेः ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ पश्चिम धातकीखंडमैं। ऐरवै जिनवर सार। अतीत चौवीशी एकहुं। सांभलजो सुविचार ॥ १ ॥ उज्जल तंदुल लेयनैं। मंगलकर भविसार। निरमलगुण प्रगटैसही। पूजन जग भरतार ॥ २ ॥ (ढाल) पास जिणंदा प्रभू मेरे मनवसीआ ॥ पा० ॥ (एचाल) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ अतीत चौवीसी सेवो भवि रसिआ ॥ अ० । से० ॥ पश्चिम धात की भरतै सोहै। एजिनराज सकल मन वसिआ ॥ स० । अ० ॥ वृषभनाथ महाराज विराजै। श्रीप्रियमित्र अधिकगुणं रसिआ। अ० ॥ अ० ॥ १ ॥ शांति जिनेसर जग उपगारी। समुद्रनाथ सेवो भविरसिआ। से०। अजित जिनेसर जग जयकारी। श्रीअव्यक्त सकल सुख रसिया। स० ॥ अ० ॥ २ ॥ कलासित जिनजनके दीपक। सरब जीत जिन अधिक दरसिआ ॥ अ०। प्रबुध जिनेसर नवमो कहियै। दशमो प्रव्रजित अधिक उलसिआ। अ० ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रीसोधरम जिनेसर वंदो। तमोधि दीपए नांम दरसिआ। नां०। वज्रशेन श्रीबुद्ध जिनेसर। प्रबंधनाथ जगके दुख घसिआ। ज० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अजित प्रमुख पल्योपम बंदो। अकोप जिनंद सब पाप तरसिआ। स० निष्टित जिन मृगनाभ सुसेवो। देवेंद्रनाथ मुझमनमैं वसिआ। म०। अ०। ॥ ५ ॥ प्रयश्चित जिन वंदुं उपगारी। चौवीशम शिवनाथजै रसिआ। ना०। पश्चिम भरते धातकी खंडै। वर्त्तमान अनागत रसिआ। अ० ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ इण विधजो भविपूज करतहै। तसु मन वंछित मेघ वरसिआ। मे०। तीन चौवीशी एनितवंदो। सुमतिसदा ए ग्यांन दरसिआ। ग्यां०। अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस० अक्षतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) नैवेद्य, फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) ॥ सातमी पूजा साचवै। फल नैवेद्य सुखकार। उत्तम फल पूजा करो। पावो सुक्ख अविकार ॥ १ ॥ पुरकरद्वीपै वंदियै। अतीत चौवीशी जेह। शास्त्रथकी सुणजो सदा। अनुपम गुणके गेह

॥ २ ॥ (ढाल) ॥ जात्रानिनाणुं करियै विमलगिरि जा० (ए चाल) ॥ पुक्खरद्वीप सुवंदोरे । भविजन ॥ पु० ॥ पूरबभरते अतीत चौवीशी । सेव तभवि चिरनंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक । सरबा रथ सुख कंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ १ ॥ रुखीनाथ हरिभद्र सुहंकर । गणा धिप मुनि इंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ पात्रक जिनकुं भविवंदो । ब्रह्मचारी सुखकंदोरे । भ० । पु० ॥ २ ॥ दीपक जिन बलिराज रुखीसर । विशाख भभू जिनचंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ अचितरवि श्रीसोम जिनेसर । जयश्री मो हु जिनंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ ३ ॥ अशीभानुं धनुख सुवंदो । सेमांचित चि रनंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ प्रसिद्धनाथ श्रीजिनवरइंदो । वंदी पाप निकंदोरे भ० । पु० ॥ ४ ॥ इम हीज वर्त्तमांन जिनपूजो । अनागत जिन वंदोरे । भ० । पु० । सुमतिकहै जो जिनवर पूजै । तेहीज जगमणि चंदोरे । भ० । पु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । सहस कूट० नैवेद्यं, फलं यजामहे ॥ ७ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ (८) वस्त्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) वस्त्रयुगल प्रभु आगलै । ढोवो भविक उदार । जंबू ऐरवत खेत्रमें । पूजो जिनवर सार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ आज हुं ग ईथी समवसरणमें । (ए चाल) ॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवरतमें । इमहीज जिनवर छाजैरी (वारी इम०) जं० ॥ तीन चौवीशी गिणतां भविज न । बहुत्तर जिन पति राजैरी । वा० ब० ॥ जं० १ ॥ गुरुमुखथी अ वधारो भविजन । परमातम गुण साजैरी । वा० । प० ॥ जं० ॥ भाव धरी पूजन भवि करतां । कुमति कुटलता लाजैरी । वा० । कु० जं० ॥ २ ॥ इमहीज धातकी पूरब मां है । ऐरवतखेत्र सुकाजैरी । तीन चौवीशी नित २ नमियै । बोधलता गुण बाजैरी । बा० । वो० ॥ जं० ॥ ३ ॥ इमहीज धा तकी पश्चिमसोहै । ऐरवतखेत्र सुछाजैरी । बा० । ऐ० ॥ जं० ॥ ४ ॥ ज गत जंतु करुणानिध स्वांमी । अमृत वाणि सुगाजैरी । वा० । अ० । जं० ॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो । उपगारी सिरताजैरी । वा० । उ० । जं० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । सहस कूट जिनेंद्राय । वस्त्रं यजामहेः ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (९) ध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) वीशजिनेसर शास्वता । पंचविदेह मझार । सीमंधर आदै करी । प्रणसुं वारहजार ॥ १ ॥ गगन वीच अदभुतवणी । पंचवरण विकसंत । नवमीध्वज पूजा करी । लेवो लाभअनंत ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागै म्हांराराजिंदा (ए चाल०) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विहरमांन भवि ध्यावो म्हांराराजिंदा । ध्या० ॥ वि० ॥ सीमंधर जुगमंधर स्वांमी । बाहु सुबाहु सुहावै । म्हां० ॥ वि० ॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभु सेवो । रुषभानन मनभावै । म्हां० ॥ वि० ॥१॥ अनंत वीरज सिरी सूरप्रभूजी । दशमो विशाल कहावै । म्हां० ॥ वज्रधर जिन भवि सेवो जुगतै । बोधबीज उपजावै । म्हां । वि० ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्रबाहूजी । भुजंग ईशर सुखपावै । म्हां० । नेमप्रभू जिन गुण मणि दरियो । वीरसेन मुनिरावै । म्हां ॥ वि० ॥ ६ ॥ अठारम महाभद्र सुशेवो । देवजशा नित ध्यावो ॥ म्हां० ॥ अजित वीरज जिनवीशमो ध्यावो । देख्यां हरख नमावै । ह्मां० । वि० ॥ ४ ॥ पंचविदेहै एजिनसोहै । सोवन वरण सुहावै ॥ ह्मां० ॥ चौरासीलख पूरव आयु । शाशता एहिजपावै । ह्मां० । वि० ॥ ५ ॥ परमपुरुष एवीश जिनेसर । ए जगसार कहावै ॥ ह्मां० ॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो । निजगुण ज्युं भवि आवै । ह्मां० वि० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्र कूट० ध्वजं यजामहेः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमंगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा ॥ पंचविदेहै शासता । एकसो साठ जिनंद । कल्याणक जिनराजना । पूजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ सधव मिली प्रभु आग लै । मंगल आठकरंत । तन मन उज्जल भावसुं । हृदयकमल विकसंत ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ (हांहोरे देवा) बावना चंदन घस० (ए चाल)

॥ ❀ ॥ (हांहोरे देवा) पंचविदेह विराजता । उतकृष्टा सहु जिनराजए । हांहो० ॥ एकसो साठ सुहंकरा । जगबंधव जग शिरताजए ॥ हां० ॥ जनमसमें त्रिहुं लोकमें । हरखित हुवै सहु सुरराजए ॥ हां० ॥ चौसठ सुरपति भावसुं । उछव करै हित सुख काजए ॥ २ ॥ हां० ॥ च्यवन जनम

दिख्या सही। केवल मोक्ष शुभराजए ॥ हां० ॥ चौवीशे जिनराजना। क ल्याणक वलि सुसमाजए ॥ ३ ॥ हां० ॥ पंच पंच गिणती करयां। एक सौबीश शुभगाजए ॥ हां० ॥ च्यार जिनेसर शासता। रुषभानन जिनगुण राजए ॥ ४ ॥ हां० ॥ चंद्रानन बीजोनमुं। वारखेण तीजो महाराजए ॥हां०॥ वरधमांन नितवंदियै। ए च्यारे शुभगुण पाजए ॥ ५ ॥ हां० ॥ द्रव्य भाव पूजन करो। भव जलनिधि तारण झ्याजए ॥ हां० ॥ सुमति सदा जिनरा जना। पदवंदै हित सुख काजए ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहसकूट० अष्ट मंगलं० यजामहेः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गीत, नृत्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहाः) ॥ गीत नृत्य गुणगावतां। थायै लाभ अनंत। भ व्य सदा सेवन करै। हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ अरे थारीगईरे अनादिनींद जरा टुकजोवोतो सही ॥ जो० ॥ (ए चाल) ॥ तनें देवैरे सुग्यांनीसीख जिनंद पद सेवोतो सही। सेवोतो सही मेराचेतन सेवो तोसही ॥ त० ॥ जिनवरकी वरणी दुखहरणी जोवोतो सही ॥ मे० जो० ॥ रायपसेणी मांहि हीयामें पोवोतो सही ॥ पो० मे० । त० ॥ १ ॥ भवदधिकी तरणी सुखकरणी लेवोतो सही ॥ मे० ले० ॥ तुंरुठ्योरे अनंते काल अग्यांनी वेवोतो सही ॥ वे० मे० तनें० ॥ २ ॥ सम कितकी करणी मन हरणी सेवो तो सही ॥ ह्यां० से० ॥ परहरमान गुमांन जगत जश लेवो तो सही ॥ ले० । मे० ॥ तनें० ॥ ३ ॥ भविजनकी करणी जशभरणी वेवोतो सही ॥ मे० ॥ अजर अमर गुण होय करममल धोवोतो सही ॥ धो० मे० ॥ त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिन वरणी भावो तोसही ॥ मे० भा० ॥ गीत ग्यांन शुभ भाव हियामें ध्यावोतो सही ॥ ध्या० । मे० त० ॥ ५ ॥ मुनिवरकी करणी चितधरणी पावोतो सही ॥ मे० ॥ सुमति कहै गु रुग्यांन हियामें ल्यावोतो सही ॥ ल्या० मे० ॥ तनें० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं पर मा० । सहसकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥ ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वाजित्र गुणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ताल मृदंग सजी करी। प्रभू पूजो धरभाव। भ

गत करी जिन राजनी । समकित शुद्ध उपाय ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जिन गुण गावत सुरसुंदरीरे ॥ जिन० सु० ॥ (ए चाल) ॥ निरत करे मिल सुरसुंदरीरे ॥ नि० सु० ॥ थेई २ तान करे प्रभु आगे । गावत देवी सुर मधुरीरे ॥ नि० ॥ कंचू कसिया हरख उल्लसिया । ठमठम नाचत कवल करीरे ॥ नि० ॥ १ ॥ ताल कंशाल विशाल अनोपम । गावत राग छत्तीस करीरे ॥ नि० ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । पावत निजगुण हरख भरीरे ॥ नि० ॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन । धरम धुरंधर तुंजिनरीरे ॥ नि० ॥ भव दुःख भंजन जन मन रंजन । अशरण शरण आनंद करीरे ॥ नि० सु० ॥ ३ ॥ अनंत गुणाकर सब सुख सागर । सेवत आपद दूरटरीरे ॥ नि० ॥ जगदीपक जगलोचन तूंही । तुंही जगत पिया महरीरे ॥ नि० सु० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभूआगल समकित सुद्ध उपाय खरीरे ॥ नि० ॥ सुमति कहे भविजन जिन पूजो । सफल जनम ए सफल घरीरे ॥ नि० सु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस कूट जिनेंद्राय नाटक पूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ विविध सुगधं लेई करी । पूजन कर जिनराज । सुजश सुगंधी विस्तरे । प्रगटे पुन्यसमाज ॥ (चाल अंगरेजीवाजे की) ॥ आनंद कंद पूजतां जिनंद चंदहुं (ए चाल) ॥ पूज पूज जिन राज काजसारहुं । का० ॥ पू० ॥ जग जश धार सार सुःखकारहुं । अनंत ज्ञां न तूंही भांन हितकारहुं । हि० ॥ पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाब फूल चाढ सारहुं । मोगरो अबीरलाल अविकारहुं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तुंही जगमात तात भरतारहुं । अत्तर सुगंध गंध भविढारहुं ॥ भ० पू० ॥ ३ ॥ केवडो चंपेल बेल अवधारहुं । परम आनंद चंद जिनसारहुं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥ जगत उधार सार किरतारहुं । मेंतोहुं आचारहीन मुनितारहुं ॥ मु० पू० ॥ ५ ॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टारहुं । एहीहै जिनंद देव भवि धारहुं ॥ भ० पू० ॥ ६ ॥ तुंही है मुनीश ईश गुणकारहुं । सुमति आधारसार जय

कारतुं ॥ ज० पू० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय सुगंध जलं यजामहेः ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ तेजरण सुखराजैहो प्रभू० ॥ (ए चाल) ॥ तेज अधिक जगगाजैहो । प्रभु थांरो ॥ ते० ॥ सहसकूट जिनवर सब पूजत । पुन्य अनंत सुकाजै । अतिशयवंत महंत जिनेसर । सुरतरु सम प्रभू गाजै हो ॥ ते० ॥ १ ॥ रूप अनूप करी सुर मोहै । देखत दुख सहु भाजै । खरतर गछपति चंदसूरीसर । तेज अधिक गुरु गाजैहो ॥ ते० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणी सिष्य सुवाचक । अमृत धरम सुराजै । शीश क्षमा कल्यांण सुपाठक । अमृत सम गुणराजैहो ॥ ते० ॥ ३ ॥ धरमविशाल मुनि गुरुदीवो तसुनंदन हितकाजै । सुमति कहै भवि भावधरीनें । पूजो श्री जिनराजैहो ते० ॥ ४ ॥ बीकानेर नगर अतिसुंदर । संघ सदा गुण राजै । प्रेमधरी पूजन एकरियै । वंछित हितसुख काजैहो ॥ ते० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै मिगसर । सुद पंचमी शुभराजै । सुगुण निधांन मोहन मुनीगावै । निजगुण निरमल काजैहो ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति सहस कूटजी पूजा संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहसकूट स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सहियांहे नेमीसर वनमैंनें गिरना० ॥ ॥ ❀ ॥ सहियांहे सहसकूट महाराज वंदो सब भावसुंहे माय ॥ वंदो० ॥ सहि० ॥ तीस चौवीशी पूजीयै हे माय ॥ स० ॥ विहरमांन भगवांन सेवो चित चाहसुं हेमाय ॥ से० ॥ स० ॥ १ ॥ एकसो साठ जिनेसरा हे माय । स० । उत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसुं हे माय नि० । स० ॥ २ ॥ एकसो वीश जिनंदना हे माय ॥ स० ॥ कल्यांणक सब होय । सेवो भवि दावसुं हे माय ॥ से० ॥ स० ॥ ३ ॥ च्यार जिनेसर शाशता हेमाय ॥ स० ॥ जयवंता जगदीश अधिक गुण गावसां हेमाय ॥ अ० । स० । ॥ ४ ॥ बहुत दिनांरो उमाहमो हे माय । स० । ते फलियो मुझ आज जिणंद पद सेवतां हे माय ॥ जि० ॥ स० ॥ ५ ॥ उछव अधिक सुहामणा हे माय । स० । खूबथया रंगरोल अधिक मन रंगसुं हेमाय । अ० ॥ स० ॥ ६ ॥

उगणीसै चालीशमें हे माय । स० । पोश माश सुखकार ऋगत कर ज्या वसुं हे माय । ऋ० ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ सहू हरषै करी हे माय । सं० । पूज रची चितचाह वंछित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दी जीयै हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप, विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचभरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत, अनागत, वर्तमा न, तीनों कालकी अपेक्षायें ३० चौवीशी होय (अंके) ७२० हुवा । (तथा) ५ महाविदेहके एकसो आठ विजयमें १६० जिन होय (८८०) (तथा) २४ भगवानका १२० कल्याणक स्वरूप (अंके १०००) (तथा) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन (एवं सर्व १०२४ जिन स्वरूप) कों सहसकूट कहते है । सहसकूटजीको मंदर सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर, मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहरहै । (इसकी) उत्कृष्टआंगे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उछव क रना होय (तो) आठदिन अठाई महोछव करै । रोकनाणो । नालेर, सुपारी विदाम, वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चोवीश२ चढावै । इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोछव साथ पूजा विधि गुरूके मुख सें जानके करे ॥ ❀ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज रचुं भवि प्रेमसुं । सांभलजो उछरंग ॥ १ ॥ पांचज्ञांन जिनवर कह्या । म ति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल बडो । दिनकर जोत समांन ॥ २ ॥ ज्ञांनबरो संसारमें । गुरु विन ज्ञांन न होय । ज्ञांनसहित गुरु वंदियै । सु चिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ बीर जिणंद बखाणीयो । नंदीसूत्र मझार । भ व्य सदा अनुभव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक भरी । कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । भाव धरी भविसार ॥ ५ ॥ चितहरखधरी अनुभवरंगै वीश परमपदसेवियै (ए चाल) मति अ

तिह जलो शकल विमल गुण आगर जविजन सेवियै । (आंकणी) एमति ज्ञांन सदा नमियै । निजपाप सकल दूरै गमियै । मनशुद्धकरी निज गुण रमियै ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजांणो । चनजेदकरी मनमें आंणो । इमजाखै श्रीजिन जगजाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अरथेंकरी जेद जिणंद आखै । पणईंद्रिय मनकर प्रजुदाखै । मुनि मांनस ते दिलमें रा खै ॥ मति० ॥ ३ ॥ बलि षटविध जेद ईहा कहियै । षटजेद अपाय करी लहियै । षटविध धारण जवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमजेद अ ठाईस जविधारो । इमजाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधा रो ॥ मति० ॥ ४ ॥ बलिरतन जमित कंचन कलशै । जविपूजन कर तन मन उलसै । चिदरूप अनूप सदा विलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञांन दिवाक र समकहियै । इम सुमति कहै दिलमै गहियै । एज्ञांनथी अनुपम सुख ल हियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति ज्ञान धारकेभ्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । जाव धरी मनरंग । जप गारी शिरसेहरो । जावो जिन जउरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो पूजै श्रुतअंग । अनुजव सुध प्रगटे सही । पामें सुरक अजंग ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ नाजजीके नंदाजीसें लग्यामेरा नेहरा । (ना० ए चालमें) ॥ श्रुतजाकी पूजा कर सीखो जवी सेहरा । श्रु० । विनय सहित गुरुवंदन करके उलर पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । जगतिकरै जवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंमित वरसै । ज्युं पावस रुत वरसै मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशविध विनयकरै श्रुतगुरुको सेवेज्युं आलिफूलनें नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि रयण जरयो श्रुतसागर । देख दरश हरखावै मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पूजन वायन बलिर करियै । सीजै वंजित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुजगती जैसी गणधरकी । बी र कहै सुण गोतम सेहरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुजक्तीसें सीखो । ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुविन आरेन को जपगारी । गुरु देव सदा

गुण मणिके जेवरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुकी कीरत करकै । सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नितनमियै थिवर मुनीसरा नि० (एचालमें) ॥ ❀ ॥ नितन मियै श्रुतधर मुनिवरा ॥ नि० ॥ अरथै श्री जिनराज वखाणें । सुत्रै श्री गुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेघधुनी जिम भविजन सुणकै । हरखै ज्युं केकी वरा ॥ नि० ॥ अंग इग्यारै गुण मणि धारक । बारै उपांग उजागरा ॥ नि० ॥ २ ॥ जगत उधारण तुंपरमेशर । सकल विमल गुण आगरा ॥ नि० ॥ छेद पयन्ना नंदी सेवो । मूलसूत्र भवि गुण करा ॥ नि० ॥ ३ ॥ श्रुतधारी गोतम गुण दीवो । पूरब चन्द विद्याधरा ॥ नि० ॥ पहिलो आचारंग वखांणें । चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ दूजो सुयग डांग सुणीजै । भेद तिशय तेसठखरा ॥ नि० ॥ तीजो ठांणांगसूत्र विराजै । सुणतां पापमिटैपरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथोसमवायांग सुहावै । अरथ अनेक करीवरा ॥ नि० ॥ पंचमें भगवई महिमा करियै । सहसछत्तीश प्रशन धरा॥ नि० ॥ ६ ॥ छठो ज्ञाता अंग सु ध्यावो । धरमकथा कहै जिनवरा ॥ नि० ॥ सातमो अंग उपाशक कहियै । दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि० ॥ ७ ॥ आठ मअंगै जिनवरदाखै । अंतगम केवलि मुनिवरा ॥ नि० ॥ नवमें अंगै भविसु नधारो । अनुत्तरवाई शुभकरा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रष्णविचार कह्या जिन द शमें । अंगुष्टादिक शुभतरा ॥ नि० ॥ अंगइग्यारमें जिनवर दाखें । कर्मवि पाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ बारमोअंग जिणंद बखांणै । अतिशय गु ण विद्याधरा ॥ नि० अक्षरश्रुत वलिसन्नी कहियै । सम्यकभेद अधि कतरा ॥ नि० ॥ १० ॥ सादिभेद सपरजव लहियै । गम्यकभेद सुणोनरा ॥ नि० ॥ अंगप्रविष्ट कहै जिनवरजी । भेदचवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥ इमजो श्रीश्रुतज्ञांन आराधो । भाव भगत कर बहुपरा ॥ नि० ॥ सुमति कहै गुरु ज्ञांन आराधो । बंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञांनधारकेभ्यः चंदनं यजामहेस्वाहाः ॥२॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ (३) अवधिज्ञान धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ अगर सेल्हारस धूपसैं । पूजो अवधि उदार ।

बोधबीज निरमलहुवै । प्रगटै सुक्ख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीनैं सारिखो । ज्ञांनवको संसार । सुरनर पूजै भावसुं । महियल ज्ञांनउदार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ निरमल हुय भजलै प्रभुप्यारा । सबसंसार० (ए चाल) ॥❀॥

॥ अवधिज्ञांनको पूजनकरलै । ज्युं पावै भवपार सलूणा ॥ अ० ॥ ज्ञांनवनो सुखदैन जगतमें । उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥ १ ॥ भेद असंखकहै जिनवरजी । मूलभेद षट सार ॥ स० ॥ वद्धमान हीयमान वखांणें । सूत्रें श्री गणधार ॥ स० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमांणै । देखै द्रव्य उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहुआवै । थाये जग भरतार ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञांन विना नर मूढ कहावै । ढोरसमो अवतार ॥ स० ॥ ज्ञानी दीपक सम जगमांहै । पूजै सहु नर नार ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्ञांनतणीं महिमा जग मांहै । दिन २ अधिकीसार ॥ स० ॥ मूलमंत्र जग वशकर वाको । एहीज परम आधार ॥ स० ॥ ५ ॥ ज्ञांननीपूजा अहनिशि करियै । लीजै वंछित सार ॥ स० ॥ ज्ञाननें वंदी बोध उपावो । करम कलंक निवार ॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा भविसुणकै । पूजो अवधि उदार ॥ स० ॥ सुमतिकहै भवि भाव धरीनें । सेवो ज्ञान अपार । सलूणा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० । श्रीअवधिज्ञांन धारकेभ्यः । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४) मनपर्यवज्ञान पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ केतकी दमणो मालती । अवर गुलाब सुगंध । भावधरी पूजन करो । हरै कुमति दुरगंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजाक रो । विवध कुशम मनरंग । महिकै परमल चिहुं दिशै । पामें शुजश अभंग ॥ ७ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रंजानेावासीप्यारो लागै० से० ॥ (एचाल) ॥

॥❀॥ जिनजीरो ज्ञांनसुहावै । म्हांराराजिंदा । (जिनजीरो ज्ञांन०)जिन जीरो ज्ञांन अनंतो सोहै । कहतां पारन आवै । म्हांराराजिंदा ॥ जि० ॥ ॥ १ ॥ सन्नी नर मनपरयव जांणै । तेमुनि ज्ञांन कहावै ॥ म्हांरा० ॥ जिन० विपुलमतीनें रुजुमति कहियै । ए दुयभेद लहावै ॥ म्हांरा० जि० ॥ २ ॥ अंगुलअढाए ऊणो देखै । तेरुजु नांम धरावै ॥ म्हांरा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ म नगत भाव सकल ए भाखै । ते चोथो मनभावै ॥ म्हां० जि० ॥ एह

नी महिमा नित नित कीजै । तिमभवि नांमधरावै । म्हां० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । मुनिजन ए नितध्यावै ॥ म्हां० ॥ जि० ॥ दि हाले जिनवर उपगारी । चोथो ज्ञान उपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ५ ॥ मनका शंसा दूर करतहैं । सुणतां आंण मनावै ॥ म्हां० जि० ॥ तन मन शुचिकर पूजन करलै । जनम जनम सुखपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ६ ॥ विविध कुशमसें पूजा करतां । बोधलता उपजावै ॥ म्हां० जिन० ॥ सुमति कहै भवि ज्ञांन आराधो । श्री जिनदेव बतावै ॥ म्हां० जि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म० श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः पुष्पंयजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) केवल ज्ञानपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ प्रभुपूजा ए पंचमी । पंचम ज्ञांन प्रधांन । सकलभाव दीपक सदा । पूजो केवल ज्ञांन ॥ १ ॥ फल दीपक अक्षत धरी । नैवेद्य सुरभिउदार । भाव धरी पूजन करो । पावो ज्ञांन अपार ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) तुमविन दीनानाथ दयानिध तु० ॥ (ए चाल) ॥❀॥

॥❀॥ तुंचिदरूप अनूप जिनेसर । दरशणकी बलिहारीरे । तुं० । (आं०) निरमल केवल पूरण प्रगट्यो । लोका लोक विहारीरे । केवलज्ञांन अनंत विराजै । क्षायक भाव विचारीरे ॥ तुंचिद० ॥ १ ॥ जोत सरूपी जगदानंदी । अनुपम शिवसुख धारीरे । जगत भाव परकाशक भानूं । निजगुण रूप सुधारीरे ॥ तुंचि० ॥ २ ॥ सकल विमलगुण धारक जगमें । सेवत सब नरनारीरे । आतम शुद्ध सरूपी भविजन । गुण मणि रयण भंडारीरे ॥ तुंचिद० ॥ ३ ॥ केवल केवल ज्ञांन विराजै । दूजो भेदन धारीरे । आतम भावै भवि जनसेवो । जगजीवन हितकारीरे ॥ तुंचि० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञांन सब देश कहावै । केवल सरब विहारीरे । सरब प्रदेशी जिनवर भाखे । साखै श्रीगण धारीरे ॥ तुंचि० ॥ ५ ॥ भए अजोगी गुणके धारक । श्रेणचढी सुखकारीरे । अष्ट कर्म दल दूरकरीनें । परमातम पद धारीरे ॥ तुंचि० ॥ ६ ॥ ऐसें ज्ञांनवभो जगमांहै । सेवोशुद्ध आचारीरे । सुमति कहै भविजन शुभ भावै । पूजो कर इकतारीरे ॥ तुंचि० ॥ ७ ॥ फल १ अक्षत २ दीपक ३ नेवद्यसें ४ । पूजो ज्ञांन उदारीरे । पूजत अनुभव सत्ताप्रगटै । विलशै सु

स ब्रम्हचारीरे ॥ तुंचि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीकेवलज्ञांन धारकेभ्यः फलं १ अक्षतं २ दीपं ३ नैवेद्यं ४ यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केशरियानें जाजको लोक तिरायो० ॥ (ए चाल) ॥ ❀ ॥ प्रभु थांरो ग्यांन अनंत सुहायो । प्रभु अशरण शरण कहायो ॥ प्रभु० ॥ मति श्रुति अवधि अनें मनपर्यव । केवल अधिक कहायो । भव्यसकल उपगार करतहै । श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र० ॥ १ ॥ खरतरगछ पति चंद्र सूरीसर । राजत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहै । देखत दिल हुलसायो ॥ २ ॥ प्रभु० ॥ प्रीत सागरगणि शिष्य सुबाचक । अमृतधर्म सुपायो शीश क्षमाकल्यांण सुपाठक । सदगुरु नाम धरायो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमें । ज्ञांन दिवाकर ध्यायो । ज्ञांन क्रियानो मूलजे कहीयै । तत्वरमण मनभायो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ बीकानेर नगर अति सुंदर । संघ सकल सुखदायो । सुखमती जिन धर्म आराधक । भगतकरै मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै वरशै । आसूसुद वरदायो । ज्ञांन विजयकारक सब जगमें । नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासें । ज्ञांन अधिक जशगायो । तत्वदीपक मोहन मुनिभावै । ज्ञांनतणो गुणगायो ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जग सुखकारी । वारी जय शम पद धारी । आरती करूं सहु सारी ॥ जय० ॥ अष्टा विंशति भेद करीनें । मति ज्ञान राजे ॥ मति० ॥ ध्यावत पूजत भविजनकेरा । भव संकट भाजे ॥ जय० ॥ १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति । प्रवचन पति दाखे ॥ प्र० ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर । स्वमुखथी भाखे ॥ जय० ॥ २ ॥ रूपी द्रव्य विषयि मर्यादा । करि अवधी सोहै ॥ क० ॥ भेद षटक संख्याती तीवा । भविजन मनमोहे ॥ जय० ॥ ॥ ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये । भेद युगम लहिये ॥ भेद० ॥ ऋजुमति विपुलमती सरदहियें । न्यूनाधिक गहियै ॥ जय० ॥ ४ ॥ लोका लोकांतर्गत वस्तु । गुण पर्यव भासी ॥ गु० ॥ केवल एक सहाय अनंते । भए

निर्वृतिवासी ॥ जय० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां । नवआरती ढीजे न० ॥ जिम वरदत्त कुमर गुण मंजरी । तिम नक्ती कीजै ॥ जय ॥ ६ ॥ वृह त् नट्टारक खरतर पति जिन । हंससूरि राया ॥ जि० ॥ तत् पद कज मधु कर कंचन निधि ॥ आनंद वरताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगल दीवो ॥ ❀ ॥

॥❀॥ दीवो रे दीवो मंगलदीवो । नुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद्र सूर प्रनु तुम मुख केरा । लुंनण करता दै नित्यफेरा ॥ दी० ॥ ॥ २ ॥ जिन तुऊ आगल सुरनी अमरी । मंगल दीप करी दिये नमरी । दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे । तिम तिम नवनां दुरित दऊावै दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमंजली चंदन । धूप दीप फल नैवेद्य बंदन । दी० ॥ ५ ॥ इणपरै अष्ट प्रकारी कीजे । पूजा स्नात्र महोत्सव पन्नणीजै ॥ दी०॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगल आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नविजन मंगल आरती करियै ॥ जनम जनमकी आरति हरियै ॥ न० ॥ १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी । दारुण विघन निवारण नीकी ॥ न० ॥ दूजेपद श्रीसिद्ध दिणंदा । आरती करत मिटत नवफंदा न० ॥ २ ॥ तीजे पद श्रीसूरि महंता । मारग शुद्ध प्रकाश करंता ॥ न० ॥ चौथे पद पाठक गुणवंता । आरती करत हरत नव चिंता ॥ न० ॥ ३ ॥ पंचमी आरती साधुन केरी । कुगति निवारण शुनगति शेरी ॥ न० ॥ शिव सुखकारण श्री जिनवांणी । छठी आरती ज्ञान वखांनी ॥ न० ॥ ४ ॥ सा तमी आरती आनंदकारी । समकित व्रत गृहि प्रतिमा धारी । न०॥ यह विध मंगल आरती गावै । शुद्ध क्षमा कल्यांण ते पावै ॥ न० ॥ ५ ॥ इ०

॥ ❀ ॥ अथ श्रीलक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरिहंत नमो नगवंत नमो । जिनराय आदीशर नित्य नमो ॥ नमो नानि मरुदेवानंदन, आदिनाथ जगनाथ नमो ॥ अरि० १ ॥ जग हितकारक बांछितदायक ग्यान विमल गुणधार नमो ॥ नयो नमो अवि चल सुखदायक शांतिसूरत जग तातनमो ॥ अरि० २ ॥ अतिशय धारक

सुर नर पूजित, सहुगुणधार सुदेवनमो ॥ जिनगुण ग्राहक श्रीवरपावत, मुक्तिमोहन जयकार नमो ॥ अरि० ३ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ ताल पंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जबसें चेतन पावत निजगुण, आतम ध्यान लगाते हें । आतम पेखत सहुसुख लेखत, सोहं ध्यान लगाते हें ॥ सोहं सोहं सोहं जपतां सहु अरि कर्म खपाते हें। सिद्धि अचल अविनाशी वसुगुण पुरुषोत्तम पद पाते हें॥१॥ निज घरमें बैठे अक्षय सुख पाते हें । जब जगमें रहे सहुजीव ध्याते हें । कर जोगी करके जिनगुण गाते हें । सहुनवि मिलके मस्तक नमाते हें ॥ २ ॥ देव सेतेहें, इंद्र सेतेहें, सार जगतका पाते हें, जब पार जगतका आते हें॥३॥ जैनप्रकाश, करत हुलाश, शिवश्रीपाश, मोहनआश, ॥ ४ ॥ जब० ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ रागकेरवो, अेजी साहब नतीजा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे साहब जिनंदा दिलवसिया मे० ॥ सुनोरी समकितधर नर नारी, सेवो शिवश्रीनृप ॥ जिनं० टेक ॥ ध्यान दिलमें धारके सेवत बीशथा नकों, जिननाम उपायके धारे अमर निधानकों ॥ उत्तम कुलमें आयके ज्ञान त्रिकले साथकों, भोगसुख पायके लीनो चरणपद हाथकों ॥ १ ॥ करम त थाई केवल जोपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० मेरे० ॥ २ ॥ केई अमर आयके, नमन करे सुभावसें ॥ समवसरण रचनाकरी, चौमुख जिनदेखा वसें ॥ अतिशयगुण जिनधार, पर्षद बार प्रकारसें ॥ सोभित मधुर स्वरे, कहे धर्म विस्तारसें ॥ सहुनविसुनके व्रतगुणपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिन०॥३॥ पारनही लेसके, सुरगुरू पिणकथनसें ॥ अरिहंतपद आदरी अनंतसिद्धवत नसें ॥ तीनभुवन प्रभुतणा, रहा चैत्य अनादिसें ॥ श्रीवर शिवसुखपाय ध्यानगुण प्रसादसें ॥ संघ चतुर्विध प्रभु मोहनकर, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति अरिहंतपद वर्णन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर० । ताल पंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया इकसुनवात, जिनपदकों तूं ध्यायरे ॥ जी० टेक ॥ अष्ट करमके वसमें पड्यो । भमियो भवसायर मांयरे ॥ जीया० ॥ १ ॥ पुन्यसंयो गे नरभवपायो । मिलियो उत्तमकुल आयरे ॥ जीया० २ ॥ जैनधरम जिन

दर्शन पायो । फिरतुं आलस क्युंखायरे ॥ जी० ३ ॥ परउपगारी अंतरजामी । तरण तारण महा रायरे ॥ जी० ४ ॥ इकचित प्रनुको समरण करलै । ज्युं गुण परगट थायरे ॥ जी० ५ ॥ जोताहरा गुण प्रगट करै तो । शिवरमणीवरे जायरे ॥ जी० ६ ॥ तत्वदीपक प्रनु श्रीवर ध्यावे । मोहन वंछित पायरे ॥ जीया० ७ ॥ इति जिनपदस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तालपंजाबी ॥ राहचंपेली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुनोमेरे पतियां दिलधर वतियां । निजगुण दरशन नानं नानं नानं ॥ टेक ॥ जिन दरशनसें मोक्ष मिलै । इकचित प्रनुगुण गानं गानं गानं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ जंगम थावर तीर्थतणा । में तो नित सबगुण ध्यानं ध्यानं ध्यानं ॥ सुनो० ॥ जैन प्रनावक गुण प्रगटे । शिव मोहनपद पानं पानं पानं ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति जिनदर्शनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ झुकझुक पमेरे० इस में ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नितनित नमुंरे तुमजिनप्यारे । मोहि तार, अबतार, तार, तार, तार. अबतारे । नितनमुंरे० ॥ नितनित० । टेक ॥ तुमनाम जगमोहता । तुमकाम जगसोहता । तुमधर्म जगबोहता । नविजीव नवखोहता ॥ १ ॥ मनन्नावत, गुणगावत, शिवपावत, तुमकरो प्रकाशक जैन मोहन गुणसारे नित० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसे धोका देनेवाले० ताल पंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसे पूजा करनेवाले मेनें विरले देखे नाले ॥ ऐसे० टेक ॥ ऐसे जिन आग्याकों पालनवाले, विधिसंयुतसें रहनेवाले, विनयादिगुण धरनेवाले, नक्तिगुण दिखलानेवाले ॥ पूजा० ॥ १ ॥ ऐसे अपनेजीके सुखपानेंको, गुणगानेंको गुणपानेंको, इकचित जिनको ध्यातेहै सो, शिवकामें को शिवपानेंको, छोमी छोमी नवनीबाते, त्यागीहे कुमतीकीवाते, धारीहे सुमतीकीवाते, पालीहे समकितकी वाते ॥ पूजा० २ ॥ ऐसे पूजन द्रव्ये नावे, फल शिवनगरी देताहे, ऐसे निजगुण प्रगटे सुंदर सहुदिल जाणें जगजाणें, सोना सोना नारी सोना, जैसीहे सूरजकी सोना, जैसी हे चं

द्रकी सोन्ना, जिससें अधकी निजगुणसोन्ना. जिससें अधकी जिनपद सोन्ना ॥ धारो गुण सम, जेथी दूर हुवे भ्रम, सहु दूर हुवै क्रम, जैनमंगल पावे धम, अजी सुनो सीखो धारो आगम श्रीवर मोहनन्नाले ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ इति श्रीजिनपूजा विधि स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ क्या कहुं अबबेरवेर० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ या कहुं अब चेतजीव ओरे संसार सारा ॥ या० ॥ टेक ॥ बहुत करमसें ना मिले, अपनागुण एकीवखत, तबतो श्रद्धा धारके, गुण पाय दर्शन ग्यान सारा ॥ या० १ ॥ पंचकारण सब आमिले, दिलधरो संयमतरफ, संयमलीये न्नावसें. जब ओरुदे सहु कर्म प्यारा ॥ या० २ ॥ तीनरत्न जो तो मिले । दूर हुवे कुमती न्नरम, जिनमंगल गुणगाय के. शिवपाय मोहन ध्यान सारा ॥ या० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हंसारे राजा० एचाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुनोरे चेतन, ओ जगजाल असारा । तुंतो न्नमियो अनंतन्नव प्यारारे ॥ सुनो० ॥ टेक ॥ क्रोध लोन्न मोह मिथ्या कपटे । कीनोजालपसारारे ॥ सुनो० १ ॥ नवा नवारू पे चिहुंगतिमांहे । कुटुंब अनेक प्रकारारे ॥ सुनो० ॥ २ ॥ झूठी काया झूठी माया । झूठा सबपरवारारे ॥ सुनो ॥ ० ३ ॥ धन जोबन मद मतकर प्यारे । एकदिन जंगल चारारे ॥ सुनो० ४ ॥ जिनधम सार दया दान निजगुण । सेवत गुण सुख कारारे ॥ सुनो०५ ॥ जैनमंगलगुण श्रीवर पावत । मोहन ग्यान प्रकारारे ॥ सु० ६ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागचंपेली ॥ तालपंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदिजिनवरजी सुनोमेरी अरजी । न्नवजलसें अब तार तार तार ॥ आ० ॥टेक ॥ मोह मिथ्यावस काल बहु । न्नमियो न्नव वन चार चार चार ॥ आदि० १ ॥ हिवपुन्यें दरशन गुणयोग, तुमगुण सुणिया सार सार सार ॥ आ० २ ॥ जिनगुण ग्राहक न्नविजहस्ये शिव मोहनपद धार धार धार ॥ आ० ३ ॥ ❀ ॥ इतिश्री आदिजिनस्तवनं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ लावणीकी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रवण अजितजिन सहुगुण सुन कर सेवनका दिल चाहते हैं

सेवनकरना सुमतिआदरना चेतनगुण जबपाते हें ॥ टेक ॥ मोहे अबतो बोलावो सहुकुमतिकाखेल । चिहुंगतिमांहे बहुत किया ठेल । पुन्ययोगे दरशन पाया । निजगुणसुमतिमहल ॥ मोहे० अव० १ ॥ मोहे अबतो देखावो सहुनिजगुणसेल । जेथीसहुजाणुं जगतकाखेल । करजोमीनें सेवा करुं तुंही चित्रावेल ॥ मो० अ० २ ॥ प्रभुअबतो उतारो भवजलसेपार । गावे जिनमंगल गुणसुखकार । सहुसंघ श्रीबर पावे मोहन मुक्तीसार ॥ प्र० अ० ॥ ३ ॥ इतिश्री अजित जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वामबंद, ताल २ मात्रा ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजितचरण, रहतशरण, कनकवरण, तेजतरण ॥ अजि० १ ॥ दिलविचार, तत्वसार, मदप्रकार, तजगमार ॥ अ० २ ॥ भव अनंत, भय सहंत, गुणधरंत, सुख करंत ॥ अ० ३ ॥ ज्ञानराय, लक्ष्मीपाय, मुक्ति जाय, सुक्खथाय ॥ अ० ४ ॥ इतिपदं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शिरपरयेबोझ० ॥ नाटक चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संभवजिन थांरी मूरतप्यारी अंगियां सारीरे ॥ सं० ॥ अंगियां तुममनभाई, सुंदर सब रत्नजडाई, मानुंदिनकारीरे, जाउं बलिहारीरे, ॥ सेवत नित तुम सुरसारा, तुम सहुजग मोहनगारा, भविपल पल तुमगुण धारे । शिवसुखलागत सहुप्यारे । श्रीबर हितकारी, मोहनधारी, गुणसुख कारीरे ॥ सं० ॥ १ ॥ इतिश्री संभव जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आई सुंदर नार, करकर शृंगार० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल पंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनतत्वसार, सहुजग आधार, करिमोह जार, सुखशांतिसार, प्रभुगुण अपार दिलसमरणकीनो ॥ जि० १ ॥ जिनसुमति पाय दिलसुमति थाय । सहु कुमति जाय, मोह मद न साय ॥ गुण आतम पाय बंछितसुख लीनो ॥ जिन० २ ॥ भवजल प्रधान, भवहणसमान, सहुसुखनिधान, करि आतमध्यान, शिवश्री प्रधान, गुणमोहनलीनो ॥ जि० ३ ॥ इति श्री सुमति जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नजर आई मुजकों० ताल दीपचंदी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भजनकर अबतो जिनंदगुणका । सहु गेरु मिथ्यात मतकाभ रम ॥ टेक ॥ भम्यो भवजलमें अनंतोकाल । कुमतीसंगचेतन असुभ करम ॥ भ० १ ॥ किया प्यारे चिहुंगति नाटक खेल, सह्या बहु दुःख नपायो धरम ॥ पायो अब दर्शन कोई पुन्ययोग, प्रभूगुण भजकर राख सरम ॥ भ० ॥ २ ॥ मिले बासु पुज्य जिनेसर राय, फले मन वंछित काजकरम ॥ गावे जिनमंग ल जैनप्रसाद, पावे सुख श्रीवर मोहन धरम ॥ भ० ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंनकमलाजीयरवा इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुं अवतार बिमलवा ओप्रभुमोरा ॥ तुं० ॥ बिमलजिनेसर जग परमेसर । करोमहर निजरवा ॥ करो महर निजरवा ॥ करो० ओ० १ ॥ तुं जगतारण विरुद श्रवणकर । रहुं तुमरे सरणवा॥र० ओ० २ ॥ तुमगुण सुरगुरु पारन पावत, किममें करुं बरणवा ॥ कि० ओ० ३ ॥ सुमतिसंग मुझ निजगु णपावं । एती करोमहरवा । एती० ओ०४ ॥ तत्वदीपक शिव श्रीवर मोहन । गुणगायो तरणवा ॥ गुण० ओ० तुं० ५ ॥❀॥ इति श्रीबिमल जिनस्तवनम्॥

॥ ❀ ॥ कंताउंद, ताल २ मात्रा ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुनमिनाथ, जोडुंहाथ, सहुजग नाथ, शिवपुरहाथ ॥ प्रभु० ॥ प्रभुपदलीन, थिरचितकीन, जिमजलमीन, अंतरपीन ॥ प्र० २ ॥ करुणासार, दिलगुणधार, अबमुझतार, कर भवपार ॥ प्र० ३ ॥ मोह मिटाय, तत्वदीपाय निजगुणपाय, शिवसुखथाय ॥ प्र० ४ ॥ पाठक मान, लक्ष्मीप्रधान, मो हनज्ञान, आतमध्यान ॥ प्रभु० इति श्री नमिजिनपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लादचला बिणजारा इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु धर्मनाथ मुझप्यारा । जगजीवन मोहनगारा ॥ टेक ॥ तुम सेवा हितसुखकारी । सुरनर भवि दिलगुण धारीरे । निजगुण सुख मांगत सारा ॥ प्र० १॥ तुम अंगिया अजब सुहावे । भूषण सब रयण जडावैरे । दिन कर समतेज अपारा ॥ प्रभु० २ ॥ शिवश्रीवर निजगुण पावे । गुण जैन प्रभा कर गावैरे, नित मोहन सुख जयकारा ॥ प्र० ३ ॥इतिश्री धर्मजिनस्तवनम्॥

॥ ❀ ॥ दिलदारीकीनीरे० । इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिलहर नाजावोरे, मेराओप्यारे, सुखकरियां, प्रीतमवरियां, दिलधरियां नजरियां, नरियां, हठकरके फिरकर नाजावोरे ॥ दिल० टेक ॥ मन अंदर रही शिववनिताजो । जानलेईमुझ घरकोंआकर । अबतो अरजी सुनके गिरपर ना धावोरे ॥दि० १ ॥ बात नमानी यादवमुख जो । साथरहुंगी संयमपाकर । पल पल दरशन करके, शिवपुरकों पावोरे ॥ दि०२॥ जैन प्रभाकर शिवश्रीवरजो । मोहनश्रेणी जिनगुण गाकर । नव नाटक करकें प्रभुका तत्वदीपावोरे ॥ दिल० ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इतिश्री नेमि जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरासच नहिंकहनारे; इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥❀॥तोराकथन निभानारे। प्यारेनेम, धरुंप्रेम, गतियां तरसमोहे रतियां सतावै ॥ तोरा० टेक ॥ सरस दरस तोरो वहुतसुहावे, देखीनयना दिलवरसें । साम साम साम, मेरै तुमसेतीकाम ,मेरे सिरपर तुंहे स्वामी, तुंहे अंतरजामी, ॥ तोरा० ॥ रथकों फिराय पिया गिरवरचाले । शिववनिता लालचानेंकों । प्यारी प्यारी प्यारी, तोहेदिल शिवप्यारी । में पिण दिक्षा लेसुंसारी । मोहुं शिवनारी ॥ तोरा० ॥ २ ॥ नेमराजुलदोनुं मोक्षसिधाए । जिनमंगल नित गुणगावे । ध्यान ध्यान ध्यान, तोरानितकरै ध्यान, पावे शिव लक्ष्मीप्रधान, थावे मोहनज्ञान ॥ तो० ॥ ३ ॥ इतिश्री नेमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोईरसीलाछबीला० इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे रंगीला चंगीला प्रभुपासजी । जैसा संगीला साथीला हो यतासजी ॥ मेरे० टेक ॥ पलमेंरी छिनमें अहनिशिसमरुं । जिमहुय सुमता नारीहो सुंदरवानी, सहजसें पाया चेतन गुणज्ञानी । तन मन मोहन जाण सजान ॥ मेरे० १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इतिश्री पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठुमरी ॥ गोरीब्राह्मणकी, इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्यारी पारशकी प्यारी पारशकी । सूरत अति मनभावनकी ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥ मुंबईसहर चिंतामणिपारस । अंगिया अजब सुहावनकी ॥

प्यारी०१॥ सरदइंदु जिम वदन मनोहर। आसपूरै नितध्यावनकी॥प्या०२॥ अश्वशेन वामाजीकेनंदन। तीन जुवन जसगावनकी॥ प्यारी० ३॥ जव जलतारक सहुसुखकारक, नयनसुधावरसावनकी॥ प्या० ४॥ ज्ञानसुधा रस श्रीवरधारक, मुक्ति मोहन जय पावनकी॥ प्या० ५॥ ❀॥
इतिश्री चिंतामणी पार्श्वजिनस्तवनम्॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ ताल दादरा, हजूरियांगढी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरज करुं गाढो, अरज करुं गाढो, मोहेतारो॥ अर०॥ टेक॥ प्रजुजीथांको विरुद चितधारो। दुःखसहुटारो॥ मोहे० १॥ प्रजुजी तुमे तरण तारणजो। सुक्खकारण जो॥ मोहे० २॥ प्रजुजी रिखन जिनेसर साचो। मोहन गुण राचो॥ मोहे० ३॥ इतिश्री आदिजिनपदम्॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शरणमें आयो शरणमें आयो। बीरतेरे शरणमें आयो॥ बीर० टेक॥ प्रजुजी मेंतो कुमति संग रमियो। बहुत जवजमियो॥ बीर० १॥ प्रजुजी मोकुं सुमति अवदीजै। जगत जश लीजै। बी०२॥ प्रजुजी शिवसुख श्रीवर चाहुं॥ मोहनगुण पाउं॥ बी० ३॥ इति श्रीबीरजिन स्तवनम्॥❀॥

॥ ❀ ॥ राग कल्याण, मानोप्यारा२० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोहे तारो मोहे तारो कुंथुजिनंद। मो०॥ टेक॥ कुंथुजिनेसर तुं परमेशर। शांति सूरत सुखकारो॥ मो० १॥ सूरपिता श्रीदेवी माता। तुम तारक अवतारो॥ मो० २॥ अतिशय सोजित अंगआजूषण, मोहनीसूरत प्यारो॥ मो० ३॥ अविनाशी अविकारी तुं प्रजु, शिववाशी जगप्यारो॥ मो० ४॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर। चैत्यवन्यो हितकारो॥ मो० ५॥ जुग णीसे इकतीस जेष्टसुद। दशमीदिन सुजवारो॥ मो० ६॥ प्रजुथापनाकरि नूतनचैत्यें। श्रीवर संघ हजारो॥मो०७॥लक्ष्मीप्रधान मोहन नित सेवे। जय शिव पद दातारो॥ मो० ८॥ इति श्रीकुंथुजिन चैत्य प्रतिष्टा स्त०॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणोंकों धारले दिलदार हरदम। अेगुणोहे सब सुखकार हरदम

गु० टेक ॥ अपनें गुणोंकी पहचानक्याहे, वचन जिनराजका सत्यजाण हर दम ॥ गु० १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र गुणहै । रतन निजआत्मका पहचान हरदम ॥ गु० २ ॥ शाशनपति महाबीर प्रभुहै । चरण नितध्यानका चितधार हरदम ॥ गु० ३ ॥ निजगुणजो महु भविजनपावै । मोहन शिवराजका सुख पाय हरदम ॥ गु० ४ ॥ इति निजगुण वर्णन पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लावणीकीचाल ॥ ❀ ॥

॥ नितध्यावो फलपावो सदा तुमशाश्वत गिरिवरहां ॥ टेक ॥ तीरथहैओ सहुजग मंरुण, सिद्धगिरी शिवपाज । जिसकेध्यानें भवि जनपामें, अरिहंतपद शिवराज । केइध्याया, केइ पाया, केइ पावे, केइपामसी शिवसुख ज्ञानसें भविजन अनंतकाल गतियां ॥ नित० १ ॥ पूरब निनाणों आया इनगिरि, रिखभजिनंद जिनराय । नववशिचेत्यसुहामणाजी । सहु जिनबिंबसुहाय । संवआवै, प्रभुध्यावै, सुखपावै । गुणग्यानसें श्रीवर जैनप्रकाशक मोहन जय वातियां ॥ नि० २ ॥ इति सिद्धगिरी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोईहालकहोजाके० इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरी बात सुनोसारे, प्रभु कुंथुनाथ प्यारे ॥ मो० टेक ॥ सूरपिता श्रीदेवीमाता, हथनापुरभारे, तुमजगतारक जन्मलईनें, बहु भविजन तारे ॥ तुमसुनोगरीबनिवाज, रखोमेरी लाज, करो सुभकाज ॥ मो० १ ॥ सुरनर सहु भवितुझनें नमतां, सुखपायाभरपूर, ग्यानध्यानसें दर्शनसाथें, कर्मकिया चकचूर ॥ प्रभुपाया शिवसुखआप, करे सहुजाप, छूटेसहुपाप ॥ मो० २ ॥ जगदीश्वर जगतारक तुमहो, मोहतारोदिलधार, पाठक श्रीवर विक्रमपुरमें, सेवेतुमसुखकार ॥ प्रभुआनंद अधिक अपार, मोहनपद धार, करो जयसार ॥ मो० ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यारवहालखुलजावै ॥ इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निजगुण आत्मजबपावै, कुमतितिमरतबदूरहोगा । सुमतिकथन नितभायतनमनसें । त्याग त्याग दुःखत्याग, पापशोक मोहशोक । आत्म० ॥ निज० टेक ॥ प्रभुनामि भजकर निजगुणसुधकर, चेतनकर्महटावे, ज्ञानरवी

परगटहोय तनमें। सहुजगजाणहोवे इकछिनमें ॥ ज्ञान ज्ञान निजज्ञान, सुध्यान करध्यान॥ आ० नि० १ ॥ दोष अष्टादश रहित केवलयुत, भविजन धर्मसुनावे। लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन जय सु खेपाय सहुजगमें ॥ गुणगान, स्वरजान, भरतान, लहैमान॥आत्म० ।नि०॥ ३ ॥ इतिश्री नमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥सांवलिया जैसेंवनें तेसेंतारो॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजमोरी अरज शीतलजिन धारो, मेरो जनम मरण दुःख-टारो॥ आ० टेक॥ कालअनादि भम्यो भव वनमें। कुमति नार मो हभारो। नरक निगोद देवनर भवकर। बहुविध नाटककारो ॥ आ० १ ॥ पुन्यसंयोग जैनागम वचनें। दरशनगुण हितकारो। गुरु मुख तारक ईश्वर तुमकों। जाणसरण सुखकारो ॥ आ० २ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग परमेसर। परमातम जगप्यारो। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुमही। तुम प्रभु जगदाधारो ॥ आ० ३॥ दृढरथ नंदानंद जिनेश्वर। अतिशय सहुगुण प्यारो। शांतिसूरत प्रभुशीतल जिनवर। भविजन हित सुख कारो।॥ आ० ४ ॥ इंद्रभुवन जिम चैत्य मनोहर। कलिकत्तापुरसारो। श्रीवर फल वद्री प्रभुपावे। मुक्ति-मोहन जयकारो ०॥ आ० ५ ॥ इतिपदम्॥

॥❀॥मोरी राजुल राणीजी थांनें नमजी मिले इमचालमें॥❀॥

॥ ❀ ॥ मोरी सुमता राणीजी, थांनें श्रीपतिजी मिले। श्रीपतिजी० ॥ श्रीपति मिलवा कारणें सारू। दान शील तप भाव। विधिसें जिनधर्म से वतां। सहु पावे आतम दाव। हे मोरी० १ ॥ श्रीपतिप्यारी सुमता नारी। दर्शन ज्ञान सुहाय। चारित्र निजगुण साथ सें सहु। सुख संपति नितपाय ॥ हे मो० २ ॥ विक्रमपुर श्रीकुंथु जिनेशर। चंद उदय अमरेश। श्रीशशि वि जय सुहावणा। सहु सुगुण विद्या श्रीवरेस ॥ हे मो० ३ ॥ सहु सुखकारी मू रति प्यारी। मुक्ति कमल मन भाय। जिनपद पाठक सेवतां। सहुसंघ मोहन जय थाय ॥ हे मो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीकुंथुजिन पाठक सहुगुण सेवन स्तवनम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनधर्ममहिमास्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवो आवो नगरिया हमारी रे ॥ इस चालमें ॥ आवो आवो सज्जन मिल सारारे ॥ गुणगावो जिनंद सुखकारारे ॥ आ० ॥ टेक ॥ कोई हाथे वंशी धारो ॥ कोई हाथे बीणारे ॥ मृदंग वजावो गावो करी स्वरझीणा ॥ आ० ॥ १ ॥ ठम २ पायनाचो घुग्घरु वंधावोरे ॥ नर नारी सहु जोडे सुजश वधावो ॥ आवो० ॥ २ ॥ दान दया शील धारो । तप जप सारोरे ॥ भावसुद्ध धारकरो आतम निस्तारो ॥ आ० ॥ ३ ॥ पर पीडा दूर करी ॥ करो उपगारोरे । पर निंदा दूर गेमो । लेवोगुणसारो ॥ आ० ॥ ४ ॥ जीवकों वचायाचावो जिन धर्म धारोरे ॥ समकित सुद्ध धारी करोभवपारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ ज्ञान गुणीसें सोबत रखतां ॥ होवैगी वमाईरे ॥ लक्ष्मी मोहन शिव सुख पावे । जय आनंद वधाई ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौवीशजिन नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमगयो गिरनारे ॥ इस चालमें ॥ प्रभुजी मिल्या मोहे आजरे । मेरा सफल थया सहुकाजरे ॥ प्र० ॥ एतो तीन भुवन सिर ताजरे ॥ प्र० मेंतो ऋषभ अजित संभव नमुं । अभिनंदन जिनराजरे । सुमति पदम प्रभु सेवतां धारुं सुपार्श्व सुकाजरे ॥ प्र० १ ॥ चंद्रप्रभु जिनवर नमुं । सुविधि शीतल महाराजरे । श्रेयांस जिनकों नितनमुं । वासु पुज्य सुखकाजरे ॥ प्र० ॥ ॥ २ ॥ विमल, अनंत प्रभु, नमुं । धर्म शांति गुणराजरे । कुंथुनाथ, अरिनाथकों । मल्लिनाथ सुभ काजरे ॥ प्र० ३ ॥ वीशमा मुनिसुव्रत नमुं । नमि नेमी पार्श्व महाराजरे । चौवीशमा महावीरजी । शाशनपति शिरताजरे ॥ प्र० ४ ॥ नवपद सहु गणधर नमुं । पूरो मन वंछित काजरे । शिव सुख श्रीवर पद मिलै । मोहन जय गुणराजरे ॥ प्र० ५ ॥ इतिश्री महोपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानजी मुक्ति कमलगणिःकृतस्तवन संग्रह संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजीकी अष्टप्रकारी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल गुणगरिष्टान् सत्तपोनि वैरिष्टान् । शम दमय मनुष्टांश्चा रुचारित्र निष्टान् । निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुश लसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि

गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आह्वानं ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशलसूरि गुरो अत्र तिष्ट २ ठः ठः स्वाहा॥❀॥इति प्रतिष्ठापनं ॥२॥ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥ ❀ ॥ इति सन्निधी कारणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) गंगाजल तिम नृवलवलि । तीर्थोदक भरपूर । कल शन्नरी गुरु चरणपर । ढालै तस दुःखदूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ (ढाल) देशी सूर ती महीनांनी ॥ ❀ ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसु कमलें पूर । खीरो दधि वरदधि ज्यौं उज्जल जल भरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर । गुरुचरणे जे ढालै टालै दुकृतदूर ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री श्रीजिन कुशल सूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

॥ ❀ ॥ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्ना चंदन अगर । घस केसर घन सार । चरचै जे गुरु चरणनें । पांमें जै जैकार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ मलयागर तिम अगर चंदन वलिकेसर सार । कस्तूरी अतिगंधै पूरी घस घनसार । कुशल सूरि गुरुचरणे चरचै चढतै भाव । सकल रोग तन सोग हरै वलि जमता भाव ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चंदनं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥ इति चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केतकि चंपक फूलथी । पूजै जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदै हुवै । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ चंपक केतकि मरुवो दमन सेवंती फूल । जाई जूई मोगरो मालती तेम उदूल । कमल गुलाब चंपेली बेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवै होवे जश ज्यूं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण । खंमित नहीं विशाल । अक्षत गु

रुचरणे ठवै । तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सरल सुगंधित तंदुल उज्जल जल उत्पन्न । ज्यूंवर मोती आना हुंती उज्जलवन्न । जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य । स्वस्तिक कुशल वधावै पावै मंगल भव्य ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः । अक्षतं निर्व पामि ते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति अक्षतपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दीप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर । वाती मौली सूत धर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न । दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृतपूरी सस नूरी मौली वाती जोय । दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्व पामि ते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति दीपपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्ना चंदन अगर । सेल्हारस घनसार । धूपै जे गुरु धूपथी तस घर रिध विसतार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ अगर चंदन सेल्हारस लाभ लीलो मेल । कपूर काचरी वलि घनसारै मृगमद भेल । धूप अडंग करी गुरु धूपै चढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पामैं नव नव नित्त ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः धूपं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साल दाल पकवान घन । व्यंजन नव नव भांत । नेवज गुरु आगल ठवै । क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ पेना मगद सेवइया लाडू मोतीचूर । खाजा ताजा लापसी दोठानें घृतपूर । पिस्ता दाख विदाम बुहारा पिंडखजूर । गुरुचरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्व पामिते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीफल शीताफल सदा । फल पूंगीफल लेय । ढोवै जे गुरु चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम दाख । खरबूजा तरबूज जंभेरी पाखी साख । करुणा कवला केला नींबू फनस सफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामें श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यः । फलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ कलश) दूहा ॥ ❀ ॥ इम जिन कुशल सुरिंदनें । पूजै अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजै । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछै । श्रीजिन लाभसुरिंद । रत्नराजमुनि भ्रमरपर । सेवै पद अरविंद ॥ २ ॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद । श्रीसदगुरु पूजा रची । सोधोकविजन वृंद ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीजिनकुशल सुगुरूणां अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया । सकल मङ्गल वंछित दायकं । कुशल सूरि गुरोश्चरणांयजे ॥ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरिः चरण कमलेभ्यो जलं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाग्यरुजा तप हारिणा । सकल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चं०

॥ ❀ ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षद् पद वृंदकै ॥ सकल० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरि गुरुः० ॥ पुष्पं यया०॥३॥

॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरल तंदुल कैरित निर्म्मलै । प्रवर मोक्तिक पुंजवदुज्वलैः । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० अक्षतं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बहु विधै श्चरुनि वंटकेयकैः । प्रवर मोदक पुंज सु खर्जकैः । सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । नैवेद्यं यथामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दीप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अति सुदीप्त मयै खलु दीपकै । विमल कंचन भाजन संस्थिते । सकल मंगल० ॐ ह्रीं श्रीं० । दीपं यथामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै । प्रसरिता खिल दिङ्मु सुधुम्रकैः । सकल मंगल०॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । धूपं यथामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पनशमोच सदा फलकर्कटै । सुसुखदैः किल श्रीफल चिर्भटै । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । फलं यथा महे स्वाहाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंदुलै । श्चरु प्रदीपक धूप फलादिभिः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । श्रीजिन कुशल सूरि० । अर्घं० स्वाहा ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ दादा गुरु महाराज की पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पहली थापना स्थापन करके आव्हान का श्लोक पढे ॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् । शम दमय मनुष्ठांश्चारु चारित्रनिष्ठान् । निखल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुशल सूरिन् स्थापया म्यत्रपीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त श्री जिन कुशल श्री जिन चंद्रसरि गुरौ अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरिगुरौ अत्रतिष्ट २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्टापनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरौ अत्र मनसंनिहितो भव बषट् इति संनिधीकरणं ॥ ३ ॥ अथ जलका कलश लेके स्नात्रीया सुच होके खडा रहे ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी । कर परमेष्टी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना । पूजन करो सुजाण १ ॥ सौ धर्मा मुनिपति प्रगट । वीर जिनेश्वर

पाट। मिथ्या मत तम हरणकूं । भव्य दिखावण वाट ॥ २ ॥ सुस्थितसुप्रति बद्ध गुरु। सूरि मंत्र को जाप । कोटि कीयो जब ध्यान धर । कोटिकगछ सुथाप ॥ ३ ॥ दश पूर्व्वी श्रुत केवली । भये वज्र धर स्वाम । तादिन तें गुरु गछको । वज्र शाख भयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरि भये चंद्रशम। अतहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगत में । पसरयो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्ध मान के पाट पद। सूरिजिनेश्वर भाश । चैत्य वाशि कूं जीत कर। सुविहित पछ प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुर पाटण सभा । लोक मिले तिहां लछ। खरतर विरुद सुधानिधि । दुर्लभ राजसमछ ॥ ७ ॥ अभय देव सूरि भये नव अंगटीका कार । थंभण पारस प्रगट कर । कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥ श्री जिन वल्लभ सुरि गुरु । रचना शास्त्र अनेक । प्रतिबोधे श्रावक बहुत। ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥ हुंबड श्रावग वाघमी । अठारे हजार । जैन दया धर्मी किये । वरते जैजैकार ॥ १० ॥ दादा नाम विछात जस । सुर नर शेवग जाश । दत्तसूरि गुरु पूजतां । आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्ली में पतसाहनो। हुकम उठाया शीश । मणिधारी जिन चंद गुरु । पूजो विस बावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा । श्री जिन कुशल सूरिंद। अकबर कूं परचा दीआ। दादा श्री जिनचंद ॥ १३ ॥ एसे दादाच्यार कूं । पूजो चित्त लगाय । जल चंदन कुशमादि कर। ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ चाल दादा चिरंजीवो एदेशी ॥❀॥

॥ ❀ ॥ गुरुराज तणी पूजन कर भवि सुख कर मिलसी लछि घणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी । गुरु सेवगनें सानि धकारी । गुरु चरण कमलनी बलिहारी ॥ गु० १ ॥ शंवत इग्यारे वार शशी। वत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी । श्रावग कुल हुंबडनें हुलसी ॥ गु० ॥ ॥ २ ॥ जसु वाछगसा पितु नाम भणे । वाहडदे माता हर्ष घणें । इकता लीसे दिछापभणे ॥ गु० ३ ॥ गुणहत्तरे वल्लभ पाटधरी । गुरु माया बीजनो जाप करी। गुरु जग में प्रगटया तरणतरी ॥ गु० ४ ॥ मणिधारी जिन चंद उपगारी। जिन दत्त सूरिंद के पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ५ ॥ राशल पितु देल्हण दे माता । श्री माल गोत्र बोधनशाता । दिल्ली

पतसाह सु गुण गाता॥गु० ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी। जिन कुशल सूरिंद अति हर्ष भरी । तेरेसे तीसे जनम धरी ॥ गु० ७॥ जसु जिह्वा ज नक जगत्र जीयो । वर जैत सिरी शुभस्वपन लीयो । गुरु ओजेड गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ८ ॥ धन सेंतालीसे दीक्ष धरी । जिन चंदसूरीश्वर पा टवरी। गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ९ ॥ सेवा में बावन बीर खरा। जोगणीया चोसठ हुकम धरा । गुरु जगमें केइ उपगार करा ॥ गु० १० ॥ माणक सूरीश्वर पद ओजे । जिन चंदसूरि जगमें गाजे। भये दादा चोथा सुख काजे ॥ गु० ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो । अम्मावश की पूनमवालो। सब श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० १२ ॥ जिन अकबर कूं परचा दीना । काजीकी टोपी वश कीना । बकरीका भेद कह्या तीना। गु०१३॥ गंधोदक सुरभि सुकलश भरी। पक्षालन सद गुरु चरण परी। या पूजन कवि रुचिसार करी। गु० १४ ॥ श्लोक ॥ सुर नदी जल निर्म्मल धा रयः। प्रबल दुष्कृत दाघ निवारयः । सकल मंगल वंछितदायकं। कुशल सूरि गुरौश्चरणायजे ॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरषाय, परम गुरु देवाय, भगवते श्री जिनशाशनो दीपकाय, श्री जिन दत्त सूरिश्वराय । मंडित भाल स्थल श्री जिनचंद्र सूरीश्वराय । श्री जिन कुशल सूरीश्वराय । अकबर असुर भाण प्रतिबोधकाय श्री जिन चंदसूरीश्वराय। जलं निर्व्विपामिते स्वाहाः॥१॥

॥ ❀ ॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ दोहा ॥ केशर चंदन मृग मदा । कर घनसार मिलाप । परचा जिन दत्तसूरि का। पूज्यां तूटे पाप ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ चाल वीण वाजे की ॥ दीन के दयाल राज सार२ तूं। आंकणी॥आये भरु अछेनग्र धाम धूम २ धुं। वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं। ह० दी० १ ॥ मूसलमांन मुगलपूत फोज मो जमूं । फोत मोत होगया हायकार सूं ॥ हां० दी० २ ॥ सघ्न विघ्न देख आप हुकम दीन यूं । लावो मेरे पास आस जीव दान दूं ॥ जी० दी० ३ ॥ मृतक पूत मंत्र सें उठाय दीनतूं। देख के अचंभ रंग दास खासकूं ॥ दा० ४ दी० ॥ करत सेव भाव पूर पूर राजजूं। जोम के अभक्ष खाण हाजरी भरूं ॥ हा० ५ दी० ॥ बीजखीजके धनी प्रति

क्रमण के मूं । हाथसें उठाय पात्र ढांक दीन बूं ॥ ढां० ६ दी० ॥ दामनी अमोल बोल सिद्ध राज तूं । देउं वरदान ओरु बंध कीन क्यूं । बं० ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पडूंगी नांह ओरु दीनफूं ॥ ओ० ८ दी० ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं । रामरुद्धिसार दास चरण ग्राहजूं ॥ च० ९० दी० ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखिल जाडय रुजातप हारणा । शकल० । ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरी गुरो के शर चंदनं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चंपा चमेली मालती । मरुवा अरु मचकूंद । जो चाढे गुरु चरण पर । नित घर होय आनंद ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नींद तो गई वादीला मारी० । ए चाल ॥ राग मांरु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रूप सुगरु शम दूजो तो नही । दूजो तो नही रे सुमति जन दूजो तो नही । गुरु परतिख सुर तरु रूप सु गुरुनें पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोरु नगरी वज्र थंन्न मे । विद्या पोथी रहीरे ॥ सु० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या सें पूरी गुरु निज । हाथ गृही ॥ गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरनझोणी महाकाल के । मंदिर थंन्न कहीरे सुम० । हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी । विद्या सरब लहीरे सु० वि० गुरुप० ॥ २ ॥ नझोणी व्याख्यान वीच मे । श्राविका रुप गृहीरे । सु० श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां झलणे कुं आई, सब कूं खील दई । सु० गु ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ । गुरु की दाश भईरे । सु० गु० ॥ हेजीशात दीया वरदान हरख सें, पसरया सुजस मही ॥ प०गु० ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण की गूंथी । चाढो चित्त चहीरे । सु०चा० । हेजी कहे रामऋद्धिशार सुजश की बूंटी आप दई । बूं० गु० ५ । श्लोक । कमल चंपक केतकी पुष्प कैं । परि मलाऋत षट् पद वृंद के । शकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त० पुष्पं निर्व्विपामिते स्वाहाः । ३ । ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरु की । पसरे परमल पूर । जस सुगंध जगमें वधे । चढे सवाया नूर ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग सोरठ ॥ कुबजा ने जादू मारा ॥ ए चाल ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंबिका विरुद बखाणे गुरु तेरो ॥ अं० ॥ तुम युग प्रधान नही जाने॥गु० ए आंकणी ॥ गढ गिरनारपें अंबड श्रावक । एसो नियम चित ठाणे। युग प्रधान इस जुग में कोई । देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु०अं० १ ॥ कर उपवाश तीन दिन बीते । प्रगटी अंबा ज्ञाने ॥ गु० ॥ प्रगट होय कर में लिख दीना । सुवरन अक्षर दाने ॥ गु० अं० २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचै । ताकूं युग वर जाने ॥ गु० ॥ अंबड मुलक २ में फिरता । सूरि शकल पतवाने ॥ गु० ३ ॥ आया पाश तुमारे सदगुरु । कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वास क्षेप उन ऊपर मारा । चेला वांच सुणानें ॥ गु० अं० ४ ॥ सर्व देव हे दाश जिनोके । मरु धर कल्प प्रमाणे ॥ युग प्रधान जिन दत्त सूरीश्वर । अंबरु शीश झुकाने ॥ गु० ५ ॥ उद्योतन सूरीनें निज हथ । चोरासी गछ ठाने । सो शब तुमरी शेवा सारे । चौरासी गछ मानें ॥ गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमकूं न पूजे । सो नही तत्व पिछाने । भद्र बाहु स्वामी तुम कीर्त्तन । कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ७ ॥ युग प्रधान परि कीए गंडिका । गण धर पद वृत्ति म्याने । कहे रामऋषिशार गुरुकूं । पूजा धूप कराने ॥ गु० ८ ॥ श्लोक ॥ अगर चंदन धूप दशांगजैः । प्रशरिता खिल दिक्षु सु धुम्रकै ॥ शकल मं० ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रींपर० धूपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ दीप पूज कर सुगण नर । नित २ मंगल होत । उजियालो जगमें जुगत । रहे अखंमत जोत ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाल ख्याल की ॥ पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराज का ॥ हो पू० ॥ सिंधु देशमें पंच नदी पर । साधे पांचु पीर । जोई ऊपर पुरष तिराये । ऐसे गुरू सधीर ॥ पू० ॥ २ ॥ प्रगट होयके पांच पीरने । सात दीया वरदांन । सिंधु देश में खर तर श्रावग । होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधु

देश सुलतान नग्रमें । बडा महोछव देख । अंबड और गछ का श्रावग । गुरु सें कीना द्वेष ॥ पू० ॥ ३ ॥ अण हिलपुर पत्तन में आवो ॥ तो में जाणुं सच्चा । बमो महोछव आवेंगे तूं । निर्धन होगा कच्चा ॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा । सनमुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यूंरे अंबरु । अहंकार फल पाया ॥ पू० ॥ ५ ॥ मनमें कपट कीया अंबरुने । खरतर महिमा धारी । जहर दीया उन अशन पांनमें । गुरु विध जाणी सारी ॥ पू० ६ ॥ ऋण शाली मुखवर श्रावगसें । निर्विष मुद्री मंगाई । जहर उतारा तब लोकोंमें । अंबरु निंद्या पाई ॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके बिंतर हुवा वो अंबरु । रजो हरण हर लीना । ऋणसाली विंतर वचनोसें । गोत्र उतारा कीना ॥ पू० ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु औघालेके । गोत्र वचाया सारा । ऋद्धिशार महिमा सद गुरुकी । दीपकका उजयारा ॥ पू० ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ अति सुदिप्तमयै खलु दीपकैः । विमल कंचन भाजन संस्थितै ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं परः दीपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अक्षत पूजा गुरु तणी । करो महाशय रंग । कृती न होवे अंग मे । जीते रण मे जंग । १ । राग आसावरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा ॥ ए चाल ॥ रतन अमोलख पायो सु गुरु शम । रतन अमोलख पायो । गुरु शंकट सबही मिटायो । सु० ॥ ए आंकणी ॥ विक्रमपुर नगरी लोकन कूं । हेजा रोग संतायो । बहोत उपाय कीया शांतिक का । जरा फरक नही आयो । सु० र० १ । जोगी जंगम ब्रह्म शंन्यासी । देवी देव मनायो । फरक नहीं किनही ने कीना । हाहाकार मचायो । सु० र० २ ॥ रतन चिंतामणि सरिषो साहिब । विक्रमपुर में आयो । जैन संघ को कष्ट दूर कर जैजैकार वरतायो ॥ सु० र० ३ ॥ महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण । सबही शीश नमायो । जीवत दांन करो महाराजा । गुरु तब यूं फुरमायो । सु०र० ४॥ जो तुम समकित व्रत कों धारो । अबही करदूं उपायो । तहत वचन कर रोग मिटायो । आनंद हर्ष बधायो । सु० र० ५। जो कोई श्रावग व्रत नही धारयो पुत्री पुत्र चढायो । साधु पांच से दीक्षत कीना । साध वीयां समुदायो ।

। सु० र० ६ । मंत्र कला गुरु अतिशय धारी । ऐसो धर्म दीपायो ॥ रुघिसार पर किरपा कीनी । साचो इलम बतलायो ॥ सु० र० ७ ॥ श्लोक ॥ सरल तंडुल कै रति निर्मलै ॥ प्रवर मौक्तिक पुंज वदूज्वलैः सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अक्षतं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नैवद्य पूजा सातमी । करो भविक चित चाव ॥ गुरु गुण अगणित कुण गिणे । गुरु भव तारण नाव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजा वणी हे रसमे ॥ ए चाल ॥ हो गुरु किया असुर कुं वश में । ए आंकणी । वरु नगरी मे आप पधारे । सांभेला धसमस में । ब्राह्मन लोक बरु अभिमानी । मिलकर आया सुसमे ॥ हो गु० १ ॥ महिमा देख सक्या नही गुरु की भरे मिथ्यात्वी गुस में । मृतक गऊ जिन मंदिर आगे । रखदी सनमुख चसमे । हो गु० २ ॥ श्रावग देख भये आकुलता । कहे गुरु से कसमें । चिंता दूर करी हे संघ की । गउ उठ चाली रुसमे ॥ हो गुरु० ६ ॥ मरी गऊ कूं जीती कीनी । लोक रह्या सब हसमे । जाके गाय पगी रुद्रालय । संघ भया सब खुसमे । हो गु० ४ । ब्राह्मण पांव पड्या सब गुरुके । देख तमासा इसमे । हुकुम उठावेंगे शिर ऊपर । तुम शंतति की दिशमे ॥ हो गु० ५ ॥ नमस्कार हे चमत्कार कूं । कीनी पूजा रसमें । कहे राम रुघिसार गुरु की । आनंद मंगल जस में ॥ हो गु० ६ ॥ श्लोक ॥ बहु विधे श्चरुभिर्वटकैर्यकैः ॥ प्रचुरसर्प्पि पिप क्व सुखज्ज कै । शकल० । ॐ ह्रीं श्रीं प० नैवद्यंनिर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ फल पूजा सें फल मिले । प्रगटे नवे निधान ॥ चिहुंदिश कीरत विस्तरे । पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ रथ चढ जादुनंदन आवत हे ॥ ए चाल ॥ चालो संघ सब पूजनकूं । गुरु शमरयां सनमुख आवत हेरे, चा० ५ ॥ ए आंकणी ॥ आनंदपुर पट्टन को राजा । गुरु शोभा सुण पावत हेरे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान बुलानें । नृप अरदास सुणावत हेरे । चा० । लाभ जांण गुरु नगर पधारे । नृपत आय वधावत हेरे । चा० । राज कुमर को कुष्ट मिटायो । अचरज तुरत दिखावत

हेरे । चा० २ । दश हजार कुटंब संग नृप कूं । श्रावग धर्म धरावत हेरे । चा० ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की । वारे व्रत उचरावत हेरे ॥ चा० ॥ एसे च्यार राज समकित धर । खर तर संघ वणावत हेरे । चा० ४ । कुष्ट जलंधर हौण उगंदर । केइयक लोक जीवावत हेरे । चा० । ब्राह्मन क्षत्री अरु माहेश्वर । ओश वंश पसरावत हेरे । चा० ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावग । महिमा अधिक रचावत हेरे ॥ चा० ॥ कहत राम रुद्धिसार गुरु कूं । फल पूजा फल पावत हेरे ॥ चा० ६ ॥ श्लोक ॥ फनसमोचसदाफल कर्कटै । सुसुखदै किल श्रीफल चिर्भटै । शकल० ॥ ॐ ह्रीं प० फलं निर्व्वपामिते स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र सुगंधी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ वस्त्र अत्तर गुरु पूजना । चोवा चंदन चंपेल । दुस्मन सब सज्जन हुवे । करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥ मनको किमही न बाजे हो कुंथु जिन ॥ ए चाल ॥ लखमी लीला पावेरे सुंदर । लखमी लीला पावे । जे गुरु वस्त्र चढावेरे । सुं० । सुजस अत्तर महकावेरे ॥ सुं० ॥ दुरजन शीश नमावेरे । सुं० । ए आंकणी ॥ दरिया वीच जीहाज श्रावग की । डूबण खतरे आवे । साचे मन समरे सद गुरु कूं । दुख की टेर सुणावेरे ॥ सुं० । १ ॥ वाचं ताव्याख्यानसूरीश्वर । पंखी रूपे थावे । जाय समंद में ज्याज तिराई । फिर पीछा जब आवेरे ॥ सुं० २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरीया । गुरु सब बात सुणावे ॥ एसें दादा दत्त कुशल गुरु । परचा प्रगट दिखावेरे । सुं० ३ । बोथर गूजरमल श्रावग की । दादा कुशल तिरावे । सुक्खसूरि गुरु शमय सुंदर की । ज्याज अलोप दिखावेरे ॥ सुं० ४ल० ॥ वारे से इग्यारे दत्तसूरि । अजमेर अण शण ठावे । उपज्या सोधर्मा देवलोके । सीमंधर फुरमावेरे सुं० ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी । मुक्ति नगर में जावे । कुशल सूरि देराउर नगरे । जुवनपति सुरथावेरे ॥ सुं० ६ ॥ फागुण वदि अम्मा वश सीधा । पूनम दरश दिखावे । मणिधारी दिल्ली मे पूज्यां । शंकट सुपने नावेरे । सु० ७ । रथी उठी नही देख वादशा । वांही चरण पधरावे । वस्त्र अतर पूजा सद गुरु की । रुद्धिशार मन भावेरे । सुं० ।

॥ श्लोक ॥ अखिल हीर शुचि नव चीर कै। प्रवर प्रावरणै खलुगंधतः । श कल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० वस्त्रं चोवा चंदन पुष्पसारं निर्व्विपामिते स्वाहाः॥

॥ ❀ ॥ अथ धजा पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ ध्वज पूजा गुर राज की। लहके पवन प्रचार। तीन लोकके शिखर पर । पोहचे सो नर नार ॥ १ ॥ चाल । जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे । ए चाल ॥ ध्वज पूजन कर हरख भरी रे॥ ध० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां । श्री सदगुर के द्वार खरीरे । ध० । अप द्वर रूप सुतन सुक लीनी । ठम २ पग झणकार करीरे॥ ध० १ ॥ गा वत मंगल देत प्रदक्षणा। धन २ आनंद आज घरीरे। ध० ॥ निर्धन कूं लखमी वगसावत। पुत्र विना जाके पुत्र करीरे॥ ध० २ ॥ जो जो पर तिख परचा देख्या। सुणो भविक दिल वीच धरीरे। ध० ॥ फतेमल्ल भरुगतीया श्रावग। पहली शंका जोर करीरे ध० ३। परतिख देखूं जब में जाणूं। प्रग ट्या ततखिण तरण तरीरे॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका। अधर श्वेत पोशाख करीरे ॥ ध० ४ ॥ मांग २ वर बोले वाणी॥ फरक वतावो गुरु मेघ झरीरे। ध० ॥ फरक भगायो दोय लाख पर। तेरी महिमा नित्त हरीरे॥ ध० ५ ॥ गैनचंद गोलेछा कूं ते। परतिख दीना दरस फरीरे॥ ध० ॥ विक्र मपुर में थुंभ तुमारा। चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध० ६ ॥ थांनमल्ल लूणयां पर किरपा। लखमी लीला सहज वरीरे। लखमी पति दूगरु की सा हिब। हुंगी की भुगताण करीरे। ध० ७॥ जो भुपगार करया तें मेरा। दीनी सनमुख अमृत जरीरे॥ ध०। तेरी कृपा सें सिद्धी पाई। जागे जस अरु भागे भरीरे। ध० ८॥ भूखा भोजन तिसिया पाणी । भरत हाजरी देव परीरे॥ ॥ ध० ॥ विमुख वखत पर सहाय हमारे। रुद्धिसारकी गरज सरीरे। ध० ९॥ श्लोक ॥ मृदु मधुरध्वनि खिंखणी नाद कै। ध्वजविचित्रित विसृतवासकै। शकल० । शिखरो परि ध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ पूजा कलस ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ भट्टारक पदवी मिली। जीते वादी वृंद। कंठ विराजत सरस्वती। जग में श्री जिन चंद ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ राग आसावरी ॥ अथवा धन्या श्री ॥ पूजन जग सुखकारी । सुगुरु तेरी॥पूज० । तेरे चरण कमल बलिहारी । सु० । साह सलेम दिल्लीको बादस्या सुण के शोज तिहारी । ज्रट्ट हरायो चरचा करके । ज्रट्टारक पद धारी । सु०१॥ अम्मावश की पूनम कीनी । चंद उगायो ज्नारी । चढके गगन करी हे चरचा । सूरज से तप धारी । सु० ॥ चौदेसे उगणीस शाल में । लखनेउ नगर मझारी गोरा फिरंगी टोपीवाला । दिलमें यह बात विचारी । सु० ३ । जैन सितंबर देव जो सचा । पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुमारा । होवेगा इधकारी ॥ सु० ४ ॥ अंधेकी खोजी आंख सूरत में । पूजे सब नर नारी । कह लग गुण बरणूं मे तेरा । तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ५ ॥ उगणीसे संवत्सर तेपन । मिगसर माश मझारी । शुकल दूज जिन चंद सूरीशर । खर तर गछ आचारी सु० ६ कुशल सूरि के निज संतानी । क्षेम कीर्त्ति मनुहारी । प्रति बोध्या जिन क्षत्री पांचसे । जांन सहित अणगारी ॥ सु० ७ ॥ क्षेम धारु शाखा जब प्रगटी । जग में आनंदकारी । धर्मशील साधू गुण पूरे । कुशल निधान उदारी ॥ सु० ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद । अन धन लखमी सारी । कहत राम रुधिशार गुरूकी । जय २ शब्द उचारी । सु० ९ ॥ इति श्री समस्त दादा गुरु पूजा संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सद्गुरूणां आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै । दुःखदोहग सब दूर हरीजै । (जैजै सद्गुरु आरती कीजै) श्रीजिन दत्त सूरि समरीजै । (जै जै०) ॥ १ ॥ बीजी बीज पर्मती धारा । जयवारण तूंही सुखकारा (जै०) ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी । दूर हरो सब दुर्मति मेरी (जै) ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जिय दायक । सुरवर हुकम धरै ज्युं पायक ॥ (जै०) ॥ ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी । संघ सकलनो संकट वारी ॥ (जै०) ॥ ५ ॥ छठी थांनो वज्र विदारी । विद्या पोथी परगट कारी ॥ (जै०) ॥ ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी । सूरिमंत्र सुरनें आराधी ॥ (जै०) ॥ ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै । मनवंछित संपति फल लीजै ॥ (जै०)

॥ ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी । सदगुरु चरण कमल बलिहारी ॥ (जै०) ॥ ९ ॥ इति श्री दादाजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीदादाजीको वृद्ध स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विलशे रुधि समृधि मिली । शुभयोगे पुण्यदशा सफली । जिन कुशलसूरि गुरु अतुल वली । मनवंछित आपै दादो रङ्गरली ॥१॥ मङ्गल लील समें विपुला । नव नवय महोछव राजयला । सुपसायें गुरु चढतीकला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायै सबला । सद वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बहुला । किछोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ बींझै चमर निसाण घुरै । नरवै दरवार खमा पुहरै । जय जय करजोमी उचरै । सांनिध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन सदा । दुखरोग दुकाल न होय कदा । अविचल अलट अंग मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम माद्दल नाद घुमें । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमें । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमैं । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीर तनें । पहिरे वेलाउल होय रनें । ध्यावो कुसल गुरु एक मनें ।। जूंनक सुरमंदिर भरै धनें ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आवै । करि स्यामघटा मेह वरसावै । तिसियां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजग सुजस गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिमरै । बूडंता वाहण जे समरै । ते आपद निश्चै सुं उवरै ॥ ९ ॥ खरु खरु खग्ग प्रहार वहै । सोदामनि जिम सम सेल सहे । कुशल २ गुरुनाम कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचापूरै । श्री नागपूरै संकट चूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भय टालै दूरै ॥ ११ ॥ वीरमपुर वानै सुधरै । खंभाइतपुर विक्रम नयरै । जिणचंद सूरि पाटै पवरे । जसु कीरति महिमंडल पसरै ॥ ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगै । उत्तर गुरु दीपै सोभागैं । दह दिशि जन सेवा मांगे । श्रीखरतर गछनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद गामै । गाईजै कुशल नयर गामै । पूजै जे नर हितकामैं । ते चक्रवर्त्ति पदवीपामैं ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि

साखै । सेवकजननें सुखिया राखै । समरयां गुरुदरसण दाखै । श्रीसाधु कीरत पाठक भाखै ॥ विल० ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री जिन दत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिन दत्तसूरी । वंदिसु खरतर गछरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । वत्तीसै जसु जम्म । वाछिग मंत्रि पिता जणणी । बाहडि देव सुरम्म ॥ २ ॥ इकतालै जिणवइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि छठि दिन । पइ प्रणमैं सुरथाट ॥ ३ ॥ अबंभ सावय कर लिहिय । सोवन अक्षर अंब । जुगप्रधान जग पयासियोए । सिरि सोहै पडि बिंब ॥ ४ ॥ जिण चउसठि जोगिण जणिय । खित्तपाल बावन्न । साइण साइण विज्जुलिय । पुहविह नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावइ सावियलक्ख इग । पडि बोहिय जिण बिंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि भुछदल । चउविह देव निकाय । आंण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमें नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारसमें । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारस आसाढ सुदि । सगपत्तन सुह झांण ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिन दत्त सुणिंद । विघ्नहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति श्री जिनदत्त सूरि ज्यष्टकं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रिसह जिणेसर सोजयो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पय कमल । जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ ❀ ॥ (चौपाई) ॥ ❀ ॥ चंदकुलं वर पूनिम चंद । वंदो श्री जिन कुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास । जो समरै तसुपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम । धण कण कंचण अति अभिराम । जिहां बसै जिल्हागर मंत्रि । जैतसिरी तसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरसै तीसै जम्म । सैंतालै सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरै जसु पाट । निव्यासिये तसु सुरगेवाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगै पायाल । अचिराचिर जुग इण कलिकाल । प्रभु प्रताप नविमांनै सोय । मैं नविनयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन धन्न सुवन्न । पुत्रहीण पामें

बहु पुन्न । असुखी पामें सुखसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यांन ॥ ६ ॥ प्रनु समरण आपद सहु टलै । सयल सांति सुखसंपति मिलै । आधि व्याधि चिंता संताप । ते डंमी नवि मंमै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां । प्रनु दरसण उत्कंठा जिहां । सेवंतां सुरतरुनी डांहि । निश्चै दालिद्र मेटै बांहि ॥ ८ ॥ विस हर विस नर विस नरनाह । नूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह । प्रनु नामें जे नकरै पीरु । नाजै नावठ नव नय नीरु ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासै दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटी पंक्ति थाय । प्रनुपसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन नद्योत । तिहां अहै नव सायर पोत । सो सदगुरु में नेट्यौ आज । रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल) आज घर अंगण सुरतरु फलियो । चिंतामणि कर कमलै मिलियो । नदयो परमाणंद वरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धन्ने गिणियौ । जुगपव रागम जोमें थुणियौ । चंद्रगछ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी पतिसेवा । कांई मनावो देवी देवा । चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवत नणीजै । श्रीजिन कुशलसूरि समरीजै । सरै काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै । मुलक वाहणपुरमें मन हरसै ॥ अजिय जिणेसर वरनवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन हरण सहु पाप निवारण । कोई मत संसो धरो मने ॥ १७ ॥ जिम २ से वै सुर नर राया । श्रीजिन कुशल मुनीसर पाया । जयसागर नवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अनिनंदै । रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै । मन वंछित फलमुझ हुवो ए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी नत्पत्ति विचारगर्नित स्तो० ॥ ❀ ॥

॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजीस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सद्गुरु करुणानिधान राखोलाज मेरी ॥ टेर ॥ जैजै जिन कुशल सूरि । समरत हाजर हजूर । महकत जिम जसकपूर । महमाजगतेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुमहोदयाल । तिनमें करदो निहाल । संकटकों चूरदेव । दोलतकी ढेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुमहो सुरतरु समान । वंछित फल देवोदान । सेवगकों दीनजान । मेटोजनफेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ सरण आयेकी राखोलाज । बंछित सब पूरोकाज । हरखचंद सरण आए । कीरति सुण तेरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिन कुशल सूरिजीको छंद लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समरुं माता सरसती । कुमारी करजोरु । कवि माता कवियण तणा । पूरै वंछित कोरु ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु । दायक वंछित देव । अहनिसि तो जगग करैं । सुर नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर पट्टण गांमें प्रगट । जग सगलै जस वास । पुरावदी तौ पालियै । वसैसु दादो वास ॥ ६ ॥ (छंद मोतीदांम) ॥ दादो वास दियै दौलत्त । वधै छत्र छाया सेवक वित्त । वधारै मांम दिसो दिसवान । धरै इक चित्त जिके गुरुध्यान ॥ ॥ ४ ॥ पूनम पूनम पूजै पाय । नवा नवा नैवज वार निपाय । चंपावलि केतकि फूल चरच्च । अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै घरि सुंदर लछि अछेह । सझंती सोल वधंती नेह । लहै घर नारी लोयण वांण । ल है घरपूत सपूत सुजांण ॥ ६ ॥ लहै गजगांम सुठांम तुषाल । लहै ढिग मीत भला ढींचाल । लहै घर मंदिर घोडा जोमि । लहै भट सेव करै कर जोडि ॥ ७ ॥ लहै घर मेंगल मद मसत्त । लहै घर चीर अनोपम सत्त । लहै घर साजण हल्ल किलोल । लहै नितलीला छाका छोल ॥ ८ ॥ लहै घरकुरला कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर । लहै मनवंछित भोग वि शाल । लहै घर साल कचोला थाल ॥९॥ घुरै नित गीत तणा गह गट्ट । भणे नित जय २ चारण भट्ट । फलै पूत सपूतां बांझि फलंति । विछोहा वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेकानेक विरुद्द अपार । दीठो इक का ल्हां तूं दातार । जीहां सहस्स हुवै जो मुक्ख । कहुं इक जीहां केई रु

क्ख ॥ ११ ॥ वमा विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात । गुणें कर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ (दूहा) रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिजार । कहीयो जगमें कुसल गुरु खरतर गछ सिणगार ॥ १३ ॥ (छंद नाराच) सिणगार हार सोहए । सुकांमधे नु दोहए । धरंत ध्यांन जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो देराउरै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंन्न जागतो । सुदिष्ठ संघ साबतो ॥ ॥ १५ ॥ मुलतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हरैं फतै पुरै । गुरू सदा नदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थांन मूलगो । एकांत चित्त नलगो । बीकांण वांन वाधतो । सुथांन थांन साबतो ॥१७॥ प्रन्नावना रिणीपुरै । नीसा ण वाजता घुरै । नागोर नांम दीपतो । दाणव्व देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेरुतै सही । अपार लछी जां लही ॥१९॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरै । उत्तीस पवनफूलरै ॥२०॥ दादारी करंत सेव । हिंदुआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा नेर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरसरै अनेक । राखतो जु ठोमै टेक । मालपुरै मझिमान । खान खान सेवै थांन ॥ २२ ॥ ब्राहणपुरै राजरीत । जे तारणें जगत्रजीत । सोझित सुख सद्दयं । वेनातटै विरुद्दयं ॥ २३ ॥ खे जमलै खरो सदा । बाहरु मेरु संपदा । जोधाण जुग्ग जातरा । जुमंति देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैत सिंघरी । खंन्नायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आप पाटणें । सूरत सुक्ख सांघणें । अनन्त तेज अहम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर नु ज्ज सासतो । तुरत्त शत्रु त्रासतो । नदैपुरै जु ईमरै । सेत्रावे कोटले गुरै ॥२७॥ गुरू सदा नदो करै । एकांत ध्यांन जो धरै । नमंत नांण जेतली । कीरत्त कोरु तेतली ॥ २७ ॥ (दूहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समरयां होय हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारै सूर ॥ २६ ॥ (कलश) सूर तेज जिम नूर । दूर आपद नय टालै । माईतां ज्युं मयाकरी । सेवक नित प्रतिपालै । मनवंछित मायबाप । कुशल गुरु कामिता दाता । पूनिम पूजै पा

य। रहै जे ध्यानें राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुरु । अभय सोम उलग करी। प्रगटियो शुंभ पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजी वृद्धस्तवन ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सदगुरुजी थे सांभलो। श्रीजिन दत्त सूरीसहो। सेवकने सांनिध क रो। पूरो मनहजगीसहो ॥१॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो)। दौलतदो गुरु माहरा। थांहरा विरुद अनेकहो। तोसेव्यां संकट टलै। एहीज दादा ताहरी टेकहो ॥ २ ॥ दौ० ॥ जीती चौसठ जोगिणी। वसकीया बावन वीरहो। सिंध मांहै तें साधीया। पंचनदी पंच पीरहो॥३॥ दौ०॥ पमिकमणां मांहे बीजली। वलीय वली ऊब कायहो। थे मंत्री राखी तिका। तूठी वरदेजायहो ॥ ४ ॥ दौ० ॥ उच्चव करतां उचमें। मूंओ मुगलरो पूतहो। जापकरी जीवाडीयो । संघ माहै राख्यो दादै सूतहो ॥ ५ ॥ दौ० ॥ वरु नगररे ब्राह्मणें। देहरै ध री मृत्यु गायहो। पंच मरमेष्टि विद्याबलै। पिसुण लगाया दादै पायहो ॥६॥ दौ० ॥ विक्रम पुर व्यापी मरी। तै दूरकीया सहु दुखःहो। परवार पिण पोतै कीयो। सहुनें दीधौ दादै सुःखहो ॥ ७ ॥ दौ० ॥ अंबरु हाथे अख्यरै । थे प्रगट्या तत खेवहो। युग प्रधान जग तुं जयो। आखै अंबिका देवहो ॥ ॥ ८ ॥ दौ० ॥ थांभो वज्र विदारनें। पोथी परगट कीधहो। विद्या सोवन अक्षरें। उजेणी मांहै लीधहो ॥ ९ ॥ दौ० ॥ इम विरुद घणाउ ताहरा कहितां नावै पारहो। भाग संजोगै दादौ भेटीयो। अभवभीयां आधारहो ॥ ॥ १० ॥ दौ० ॥ हुंडु सेवक ताहरौ। थे आपो धनरिद्धहो। भुवन कीरति सु ष सावलै। लाभ उदै सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दौ० ॥ इति श्री दादाजी गीतं॥

॥ ❀ ॥ (पुनः) राग जैतसरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहाई मेरै श्रीजिन कुशल गुरू ॥ कुशल करण कलि मांहै प्रग ट्यो। खरतर गछवरू (स०) बावनो चंदन मृगमद मेली। पूजो प्रेमभरू ॥ (स०) ॥ १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विमारण । दालिद्र दूर हरू ॥ (स०) ॥ २ ॥ दिन दिन साहिब चढितै वानें। ध्यावो ग्यान धरू (स०) वाजै जेहना जशना वाजा । ठावी ठांमै जरू ॥ (स०) ॥ ३ ॥ संबत् अ ढार समें अडसठै । मिगसर मास थिरू (स०) संघ सहित श्री सदगुरु

नेटे। श्रीजिन हर्ष सरू॥ (स०)॥ ४॥ गांव गडालै चरण नमंता। तूठो कल्पतरु (स०) पाठक श्रीविद्याहेम गणीनैं। उदय रतन करू॥ (स०)॥ ५॥ इति दादाजी स्तवनम्॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀॥ (पुनः) देशीकी चालमें॥ ❀॥

॥ ❀॥ (दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशण सदा देवो। दादौ दीनदयाल सदा दाता। दादो समस्यां आपै सुखसाता। दादौ जगनायक जगगुरु भ्राता (दा०)॥ १॥ दादो परचा जगसगलै पूरै। दादौ सेवकना संकट चूरै। दादौ दुरित हरै सहुनी दूरै॥ (दा०)॥ २॥ दादा अलगांथी जात्री आवै। दादौ देखीनैं ते सुख पावै। ह्मांरा दादाजीनी जोमै कोई नावै (दा०)॥ ३॥ दादौ राज नगर मांहे राजै। जिहां सुजश नगारा नितवाजै। दादौ ओगालां सेहर गाजै॥४॥ (दा०) दादा घस केशर सूकम घोली। हाथे लेई सोवन कचोली। पूजो दादाजीनैं मिल २ टोली (दा०)॥ ५॥ दादौ आरतियां आरति टालै। दादौ सेवगजननैं प्रति पालै। दादौ जिनशासन नित उजवालै (दा०)॥ ६॥ दादौ महिमावंत महाराजा। दादौ राजै खरतर गछराजा। दादौ समस्यां सफल करै काजा (दा०)॥ ७॥ दादौ कुसल सुरिंद बहुगुण धारी। दादौ परतिख सुर तरु अवतारी। जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी (दा०)॥ ८॥ दादौ श्री जिन चंद सुरिंद पाटै। दादौ गाजै गुणियण गहगाटै। जसु थान सोहै जगथिर थाटै (दा०)॥ ९॥ दादा महिर निजर मुझ परिकरियै। दादा आरतिपीमा दुख हरियै। दादा जिम जग जय कमलावरियै (दा०)॥ १०॥ दादा सेवगनैं सांनिध करज्यो। दादा दुसमणनैं दूरै हरज्यो। जिणचंदना मन वंछित फलज्यो (दा०)॥ ११॥ इति दादाजी स्तवनं॥

॥ ❀॥ पुनः॥ ❀॥

॥ ❀॥ (आषाढै नेरुं आवै इस चालमें)। गाजै जिन कुशल गमालै। सेवकनां संकट टालैहो गा०॥ १॥ परतिख गुरु परचा पूरै। सेवकनी चिंता चूरै हो (गा०)॥ २॥ उतरी नितरी उविगाजै। विचमें थिर थुंभ विराजै हो (गा०)॥ ६॥ दूजरे यात्री मिल आवै। दादौ जी

दीठां सुखपावै हो (गा०) ॥ ४ ॥ केशर घस भरिय कचोली। मांहें व लि मृगमद घोली हो (गा०) ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली। गावो गुण गीत रसाली हो (गा०) ॥ ६ ॥ दादौजी दुखियां सुख देवै। निरधनियां नित धन देवै हो (गा०) ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला। गुरु नांमें पामें कमला हो (गा०) ॥ ८ ॥ सकजासुत सुंदर नारी। पामें परि कर सुखकारी हो (गा०) ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावै। गुरु पूज्यां वं छित पावै हो (गा०) ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी। तिणवेला ज लधर आणी हो (गा०) ॥ ११) ग्रहगोचर जोर जंजालै। पीडा हुवै आलै मालै हो (गा०) ॥ १२ ॥ वाजै जगजशना वाजा। राजै खरतरग ह राजा हो (गा०) ॥ १३ ॥ जसु जैत सिरी वरमाता। जिल्हागर मं त्रि विख्याता हो (गा०) ॥ १४ ॥ संवत सतरैसै इक्यासी। काती पूनि म परकासी हो (गा०) ॥ १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै। अधिके हर हेत उल्हासै हो (गा०) ॥ १६ ॥ इम यात्र करी आणंदै। जिन भक्ति जती सर वंदै हो (गा०) ॥ १७ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः (राग धन्यासरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो आयो जी समरंतां दादो जी आयो। संकट देख सेव क कुं सदगुरु। देरावरतें ध्यायो जी समरंतां (दा०) दादा वरसै मेहनें रात अंधेरी। वायपिण सबलौ वायौ। पंच नदी हम बैठे बेगी। दरीयै हो दा दा दरीयै चित्त भरायो जी ॥ (स० दा०) ॥ २ ॥ दादा उच भणी पो हचावण आयो। खरतर संघ सवायो। समय सुंदर कहै कुशल २ गुरु। प रमानन्द सुख पायो जी। समरंतां दादोजी आयो ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ (राग लहुरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भाया भक्तिसुं पूर रहोरे। दुरजन सब दूरहरोरे (भा०) मैरे मनमें भक्ति वैरागी। चित्त परणित लगनसुं लागी। मोरी भाग्यदसा अब जागी ॥ (जीया हो) ॥ (भा०) ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो। गुरु चरणे चोक पुरावो। बलि अक्षत धवल वधावो (जीया हो) ॥ (भा०) ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई। गुरु नाम सदा सुखदाई। गुरु सेव्यां पाप

पुजाई (जीया हो) ॥ (ज्ञा०) ॥ ३ ॥ घस केशर ज्ञरकै कचोली । मां है मृगमद कुंकुम घोली । गुरु पूज रचो ज्ञरझोली (जीया हो) ॥ (ज्ञा०) ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष सूरी सर राजा । वाजै जग जशना वाजा । सत्य रत्न करै सुज्ञ काजा (जीया हो) ॥ (ज्ञा०) ॥ ५ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ ❀ ॥ (राग केरवो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो ज्ञवि हितसुं (कुश०) केशर चंदन कपूर अरगजा । ज्ञाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ (कु०) ॥ १ ॥ मोगरा लालगुलाब मालती । मनसुध माल करै ज्ञवि रुचिसुं (कु०) ॥२॥ अशरण शरण परम गुरु सेवो । धरम ध्यांन धरो आतम रुचिसुं ॥ (कु०) ॥ ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगत् गुरु । आसापुरै गुरु घणु दत्तसुं ॥ (कु०) ॥ ४ ॥ ध्यान सुधारै ग्यानवधारै । रूप रंग देवै चित हित मतसुं ॥ (कु०) ॥ ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी । परतिख परचापूरै सतसुं ॥ (कु०) ॥ ६ ॥ श्री जिनहर्ष सदा सुविलासी । सत्यरतन सुख एही ज्ञतसुं ॥ (कु०) ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ (राग देवश्री चलत) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज करो रे उछाह । श्री जिनकुशल सूरिंद आगै । (आ०) आ आगी वेलानैं उ आगो दाव । इण आगी वेला क्यूं करो लाज ॥ (आ०) ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग । हिल मिल गावो साजन संग (आ०) धूप दीप करो नैवेद्य सार । फुल वारीनो नहीं जिहां पार ॥ (आ०) ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह । पुत्र कलत्र पांमैं संपदा तेह ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ सुर नर नारी ज्ञत्रा करै जोम । कौण करै ह्यांरा दादाजीनी होम ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ श्रीखरतर गछपति सिरदार । राजा राणा सेवै इकतार ॥ (आ०) ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंद गुरु गरीब निवाज (आ० (॥ ६ ॥ श्री जिन हर्ष करै उछरंग । सत्य रतन मन ग्यान उमंग ॥ (आ०) ॥ इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग वंगालो घाटो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मैं निरख्या गुरु महाराज । ज्ञतीयां हर्षनरी (मैं०) अमल अनंत गुण आगरूरे । समता रसनो धाम । परम परम परमातमारे । वंछित

दायक स्वाम ॥ (ज० में०) ॥ १ ॥ करुणा निध गुरु दोलतीरे । सेवक जन प्रतिपाल । भविजन भक्ते भावसुंरे । ल्यावै भर भर थाल ॥ (ज० में०) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकुमारे । भरीय कचोली हाथ । पदमण आवै मलपतीरे । पूजै सहीयर साथ ॥ (ज० में०) ॥ ३ ॥ कुशल सूरीसर सा हिबारे।श्रीजिनचंद सूरी पाट । बलिहारी जिन कुशलनीरे । गाजै घणुं गहि गाट ॥ (ज० में०) ॥ ४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करैरे । सुखसंपूरण सार । श्री जिन हर्ष सूरी सरूरे । सत्यरतन सुखकार (ज० में०) ॥ ५ ॥ ❀ ॥

इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग प्रभाती) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं में गुरुराय चरणकी (वा०) श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु । सफल घनी सेवा चरणकी ॥ (वा०) ॥ १ ॥ प्रथममंगल गुरुरायकी सेवा । अशुभ करम सब हरणकी ॥ (वा०) ॥ २ ॥ दालिद्रभंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी॥ (वा०) ॥ ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । शरनग्रही इन चरणकी ॥ (वा०) ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष तुम चरणां को दासा । आशापूरो सुख करणकी ॥ (वा०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ कुशलगुरु अब मोहि दरशण दीजै । (अ०) ऐसी भांति करो मेरे सदगुरु । ज्युं मन मूढपती जै (कु०) ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृत रस । श्रवण अंजलि भर पीजै । सुरतरु सम दरशण विन देख्यां । कहो नय ण किमरीझै (कु०) ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि । इतनी अरज सुणीजै । परम भगत जिनराज तुमारो । अपनो कर जाणीजै (कु०) ॥३॥

इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जन मन वंछित पूरण । समरयां होय हजूर (कु०) ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण । अशुभ हर ण भये दूर । संघ उदोकर सदगुरु मेरा । वीनवै श्रीजिन चंदसूर (कु०) ॥२॥

॥ ❀ ॥ (देशीकी चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गास्यां हे माय (स०) । श्रीफल भेट चढावस्यां । म्हेतो चरणांरी पूज रचास्यां हे माय (स०) ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता । नगर बीकांणे राजे हेमाय । गां म गमाले दीपता । ज्यांरी महीयल महिमा गाजे हे माय । (स०) ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता । कुशल करण अवतारी हे माय । सुखदायक श्रीसं घनें । खरतर गछ अधिकारी हे माय (स०) ॥ ३ ॥ दूर देशांतर थी घणा । हिल मिल यात्री आवे हे माय । झुल २ सीस नमावता । संत सुजस मिल गावे हे माय (स०) ॥ ४ ॥ सज सिणगार मनोहरू । ठम २ पाय ठम कावे हे माय (स०) तन मन प्रांण लोभावती । गौरी मंगल गावे हे माय (स०) ॥ ५) विछुड्यां साजन मेलवे । अनमी पाय नमावे हे माय । मनरा मनोरथ पूरवे । पर वल लखमी ल्यावे हे माय (स०) ॥ ६ ॥ विषमी वे ला वाटमें । समस्यां सांनिध आवे हे माय । भूखा भोजन मेलवे । तिसियां नीर मिलावे हे माय (७) यात्री आवे नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावे गुण गहगाट हे माय (स०) ॥ ८ ॥ कुशल सूरिंद गुरु आगले । भविमिल भावना भावे हे माय । चंदफते मुनि नित नमें । परमानंद सुख पावे हे माय (स०) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो सहु श्रीसंघ आसधरे । गुरु मौन गह्यां कहो केम सरे दरशण वहिलो सदगुरु दाखो । निज सेवक जांण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमी वेला आयवणी । केहवी करीये तुझ अरज घणी । अलगागो तो वेगा आवो । हिव ढील घमी भर न करावो ॥ २ ॥ तूं सदगुरु खरतर गछ साचो । कोई न जांणें तुमनें काचो । इण संकटमें आलस न करो । दा दा दुशमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक पमी सदगुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरी खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहश्चै पो तानो कर जांणो ॥ ४ ॥ आया सहु मिलकर अगां लगे । पागा किम जावां इणें पगे । इणपरि गुरु सुणीये अरज इसी । हिव सबकों मेलो क

रीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जगचावो । अपणायतकर वेगा आवो । अगला विरुद ते अजुवाजो । परघल निज ओरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम गमाजै एगायो । सुणतां सदगुरु वेगो आयो । राजी हुय सग ला रंगरली । जिनचंद्रनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरु रायजी (सदा०) खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन २ वधै सवाय जी (स०) ॥ १ ॥ स कजा सुत नर सुंदर नारी । सुन्न परिकर सुख दायजी (स०) मित्र स मागम सुजशवधारण । नित प्रति हरख उछाहजी (स०) ॥ २ ॥ राजा प रजा पायनमें सहू । गुरु समरण सुपसाय जी (स०) दोखी दुशमण नृप नय पखियां । सदगुरु करय सहाय जी (स०) ॥ ३ ॥ विषमी विरियां सं कट पडियां । समरयां आवै धायजी (स०) नूखां नोजन तिशियां पाणी । निरधनियां धनदाय जी (स०) ॥ ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुख शाता । जिम कीरत जग थाय जी (स०) । थांनक थिरता पर घल नोजन । पग पग कुशल सहाय जी (स०) ॥ ५ ॥ अन्नय महा सुखदाई सद गुरु । नवनिधि वंछित थाय जी (स०) । सुमति सवाई नितघर संपद । दान विशाल लहायजी (स०) ॥ ६ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुशल सुरिंद गुरु सदा नमो (जि०) ॥ सुख संपति रि द्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांई नमो ॥ जि० ॥ १ ॥ वाट घाट अरु विषमी विरयां । विघन वुराई दूर गमो (जि०) ॥ २ ॥ अह निशि नां म मंत्र नरधारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो (जि०) ॥ ३ ॥ इक मन ध्या वो वंछित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥ ४ ॥ अन्नय महा सुख संपति पावो । सुथिर थांनक थिति जमो जमो । (जि० ॥ ५ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नन्नपती थां रै पायनमें जी सुर नर सारे सेव । ज्योति थांरी ज

ग जागती जी । दुनियामें परतिख देव ॥ १ ॥ हुं तो मोहि रह्यो जी ह्यां रा राज । दादेरे दरबार (हुं०) केशर अंबर केवडो जी । कस्तूरी करपूर । चंपो चंदन राय चंबेली । भक्ति करूं भरपूर (हुं०) ॥ २ ॥ पांगुलियां नें पाव समापै । आंधलीयांनें आंख । रूपहीणानें रूप देवै दादो । पंख हीणानें पांख (हुं०) ॥ ३ ॥ चंदपाटोधर साहिबो जी । श्री जिनकुशल सूरिंद । आठ पोहर थांने उलगै जी । रंग घणें राजिंद (हुं०) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु जी सुणो मोरी अरजी (स०) पहिली काम कीये बहु तेरे । अपणा विरुद विचारी । पल पल चूक परी सदगुरु जी । में सुत जबका गरजी ॥ (स०) ॥ १ ॥ ध्यांन तुमारो कबहु न ध्यायो । पूजा करी नही तेरी । तोई सेवकना बंछित पूरया । आही थांरी मरजी ॥ (स०) ॥ २ ॥ निश्चै सेती तुम गुण गावै । तुरत कटत दुख वेरी । भक्त उधार कहावत जगमें । ताहै करत हुं अरजी (स०) ॥ ३ ॥ और देव कुं में नहीं ध्यानं शरण ग्रहीमें तेरी । दूर थकी में भेटण आयो । विपत दिशा सब तरजी ॥ (स०) ॥ ४ ॥ कुशल गुरूका में हूं सेवक । लोक जांणें सब कोई । हूमा रतनकी वीनती सुणकै । दरशण दीयो सदगुरु जी ॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति

॥ ❀ ॥ होरीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय २ (इस चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुके चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरु करोरे सहाय । (सद०) बावन वीर अनैं वलि चौसठ । जोगणि वसकीनी हर्ष लाय । विद्या पुस्तक सोवन अक्षर । थांनो वज्र विदार पाय (सद०) ॥ ॥ १ ॥ मुलतांनमें पंच पीर महाबल । पंच नदी सादी चित्तलाय । इत्यादिक बहु परचा पूरक । गुरु समरयां सब दुक्ख जाय (सद०) ॥ २ ॥ गुरुके नामसें अष्टसिद्धि नव निधि । गुरु गुण गावो सबही धाय । श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पर । महिर करो गुरु सुःख दाय (सद०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम श्यामसें कहियौ मोरी (इस चा०)

॥ ❀ ॥ गुरु पूज रचो रे सुग्यानी । भली हीयै भक्ति भरानी (गुरु०) श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब । खरतर गछ राजानी । देश देश मैं थानक गुरुका । सोभा जग पहिचानी । सदा रवि तेज समांनी (गु०) ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली । चरणांरी पूजरचांनी । धूप दीप वलि आगल ढोवी । बहुबिध पुष्प चढानी । भला फल भेट धरांनी । (गुरु०) ॥ २ ॥ वाट घाटमैं परचा पूरक । हाजर होत सहानी । श्री जिन सौभाग्य सूरिके साहिब । वंछित काज करानी । सदा गुरु महिर लखानी (गुरु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रभाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी । (कैसे०) मो कुं सबल भरोसा तेरा । चंदसूरि पटधारी । (कै०) ॥ १ ॥ तुम विन और न कोई मेरे । या जगमें हित कारी । मेरा जीवन हाथ तुमारै । देखो आप विचारी । (कै०) ॥ २ ॥ आगै तो केई वेर हमारी । चिंता दूर निवारी । अबकी विरियां भूल मती जावो । सदगुरु परुपगारी (कै०) ॥ ३ ॥ अबकै आप लाज गूजरकी । रखीयै गुरु जशधारी । मेरै कुशल सूरिंद गुरु तेरा । वरुा भरोसा भारी (कै०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रभाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब । तुमहो पर उपगारी (श्री जि०) । खरतर गछ नायक गुणलायक । जिन चंदसूरि पटधारी (श्री०) ॥ १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण । भ्रीम भंजन अति भारी । नाम तुमारो कुशल करण जग । वारी जाउं वार हजारी (श्री०) ॥ २ ॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु । करुणानिधि करतारी । कहै जिनचंद मेरेहो सदगुरु । हमहै शरण तुमारी (श्री०) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री गणधर गुरु कुशलसूरिंद के । चरण कमल परिवारी । (श्री०) केशर चंदन अक्षत कुंकुम । जलभर कंचन झारी । देवक आगै

मंगल दीपक। फूल धरुं फूल वारी । (श्री०) ॥ १ ॥ ऐसी भांति करूं विध पूजा। आनके चित्त इकतारी। राज कहत मेरे परम गुरूकी। बेर बेर बलिहारी (श्री०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रेखता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरू देखके दरसन। मेरा दिल होत है परसन। जग तमें या समो कोई। न देखा नयनभर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंडले गाजे फरसतां पाप सहु भाजे। पूजतां संपदा पावे । अचिंती लछि घरआवे ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहुं केता। मुझे बिज्ञान नही एता। लालचंदकी अरज सुन लीजे। चरण की सरण मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग कहरवो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु दरशण दीजे हो (कु०) खरतर गछपति कुशल सूरिंद गुरु। मुझपर महिर धरीजे हो (कु०) ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो। इतनी अरज सुणीजे हो (कु०) ॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दोखी दुशमण। ए सब दूर हरीजे हो (कु०) ॥ ३ ॥ खेम रतन सेवक कुं निस दिन। सदगुरु सानिध कीजे हो (कु०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंशी हमारी दीजे (इस चालमें) पूजो भजोरे भाई। गुरु महिमा योत सवाई (पू०) । मृगमद केशर चंदन अरचो। सुंदर पुष्प चढाई (पू०) ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरु गुण गावे। वाके सदगुरु होत सहाई। (पू०) ॥ ४ ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे निशि दिन हर्ष बधाई (पू०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ मालण ल्यावे फूलडा (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हुं तो अरज करुं करजोडनैं जी । ह्मांरी अरज सुणो महाराज। (सदगुरु) विरुद घणाछे राजराजी। सूरि सकल सिरताज (स०) (सुनिजर जोय जो साहिबा) । थांरे रावल राणा राजवीजी। थांरा पूनिम पूजे पाय (स०) ॥ १ ॥ केशर अगरज कुंकुमांजी। कांई मृगमद रही म

हिकाय (स०) (सुनिजर जोय जो साहिबा) ॥ २ ॥ थां रै घुम्मां रै आ गल घूघराजी । डुलत चमर गजढाल (स०) कारण सेवै कामनी जी । कांई निरख करै जी निहाल (स०) (सुनिजर०) ॥ ३ ॥ थांरी ठावी ठोरै थापना जी । कांई उदयापुर आंबेर (स०) महिमा भली गुरु मेरतै जी कांई सालूरै वाली सांगानेर ॥ (सदगु० सु०) ॥ ४ ॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगै जी । कांई वधती गढ वीकाण (स०) आशा पूरण आव ज्यो । थेतो देरावररा दीवांण । (स० सु०) ॥ ५ ॥ म्हांरी वीनतमी भलै मानिज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल (स०) कुशल सदा कविराजरै । कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ (स० सु०) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (लावणीकी चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुजी म्हांरा सरणें आयां की लज्या राखज्यो (स०) पतित उधारण विरुद सुणीनें । आयो तुमारै पास । अब मनवंछित पूरो माहरा । ए हीज दिलकी आश जी ॥ (स०) ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तजीनें । तज दियो सब संसार । नवपदको इक ध्यान धरीनें । पाया सहु गुण पार जी ॥ (स०) ॥ २ ॥ देश देशमें थुंभ विराजै । परचा जग विख्यात । इण कलु मां है सुरतरु सरिखा । प्रगट रह्या साख्यात जी ॥ (स०) ॥ ३ ॥ चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तुंहीज देव । आण धरुं शिर ताहरी (शिरै) करूं तुमारी सेवजी ॥ (स०) ॥ ४ ॥ मात पिता बंधव तुं जगमें । हितकारी गुरुराय । राजा राणा सहु जग मां है । सेवै तुमरा पाय जी ॥ (स०) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण पसायें । सीधा वंछित काज । लक्ष्मी प्रधान तुमारा दरशण । मोहन गुणका राजजी ॥ (स०) ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ बधाई (राग कहरवो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजकी घडी म्हां रै हरष बधाई । गुरु दरशण पायो सुखदाई (आ०) ॥ १ ॥ गुरु जग नायक बंछित दायक । गुण गण लंकृत सहु मन भाई ॥ (आ०) ॥ २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीनें । जैनी कुलकी रीत देखाई ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ गुरु परतक्ष सहु संघ सुखदायक । देश देशमें प्रगट रहाई ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै । सुर

तरु सम मिलियो फलदाई ॥ (आ०) ॥ ५ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण। सहु भवि मात पिता बरदाई ॥ (आ०) ॥ ६ ॥ कलिकत्तापुर मंगन साहिब। कुशल करो मोहन गुणदाई ॥ (आ०) ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीरजीदीयेजै देशनारे। त्रिभुवन जन हितकाज। परषद बारनें आगलेरे। जगजीवन हितकाज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभू मुख पद्म मनोहररूरे। जिहां वांणी मकरंद। भव्यमधुरतो भावथीरे। पांनकरै आनंद ॥ वी० २०२ ॥ अजर पणुं जगसंपजैरे। अमृतध्यान पसाय। प्रभू वचनामृत पांनथीरे। अजर अमर पद थाय ॥ वी० २०३ ॥ मधुर पणे मनमोहनीरे। अनुपम वांणि उदार। सांभले भव्यलहै सहीरे। जिन परभाव विचार ॥ वी० २०४ ॥ जिहां षद्द्रव्य विचारणारे। नय निक्षेप अभंग। चोविह धर्म प्ररूपणारे। सप्तभंगी अतिचंग ॥ वी० २२५ ॥ शासननायक जिन वररूरे। अनुपम अमृत धार। जलधरनी पर वरशतारे। भविचातिक हितकार॥ वी० २०६॥ श्रीजिन लाभ पसायथीरे। जिन आतम हितजाण। वाचक अमृत धर्मनोरे। शीश भणें कल्याण ॥ वी० २०७ ॥ इति देशना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः देशना लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ गुणनिधि श्री जिनचंद मुणिंदा। मुखसोहै पूनमचंदा। मोह्या सब सुरनरवृंदा ॥ १ ॥ सुगुरु ह्मांरा देशना हिवदीजै। थांरी देशना सुण मनरीझै। सु० ॥ दिनकर परकास सवायो। झूमंमल ऊपर छायो। कमलादि सकल मन भायो ॥ सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव गंधार। वलि भैरव राग मझार। गायन गावै सुखकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पंचसबद गहिर ध्वनि गाजै। जिनवर घर झालर वाजै। सहु सज्ज थया धर्म काजै ॥ सु० ॥ ४ ॥ हिव बहिला पाट पधारो। श्री संघना कारज सारो। मधुरै स्वर वचन उचारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण वीनती वचन विशेष। गुरु आपे धर्म उपदेश। टालो भविकोमि कलेश ॥ सु० ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी। उपदेश सुणो भविप्राणी। सुण तां मन अतिहि सुहाणी ॥सु०॥ ७ ॥ गुरुभतपौ ज्युं शशि सूर। दिन २ प्रति

वधतै नूर । हरो संघ सकल दुःखदूर ॥ सु० ८ ॥ गोरीमिल मंगल गावै । नर मोत्यांथाल वधावै । वा लावण्य कमल सुख पावै ॥ सु० ॥ ९ ॥ ❀ ॥
इति देशना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मृगापुत्र गोखै रतन जडावहो (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥❀॥ श्री जिनचंद सूरीसरू । सुगुरु ह्यांरा । श्री खरतर गछ रायहो । श्री जिनलाभ पाटो धरू । सुगुरुह्यांरा । दिन२ सोभ सवायहो ॥१॥ह्यांरा सहिजसो जागी । ह्यांरा सुभ गुणरागी । ह्यांराहितधरू । सुगुरु ह्यांरा देशनाद्यो मनरंग हो । संघ सहु उछक थयो ॥ सु० ॥ सुणवा अमृत वांणहो । बहिला बंछित पूरहो ॥ सुगु० ॥ थेगो अवसर जांणहो ॥२॥ह्यांरा० ॥ सूर किरण धर संचर्या सु० ॥ विकस्या कमल कलापहो । राग विलास प्रमुख तणा ॥ सुगु० ॥ हो य रह्या आलापहो ह्यांरा० ॥ ३ ॥ पंच सबद आतरतणा ॥ सु० ॥ मं गलनाद उचारहो । इम बहु विध नू मंगलै ॥ सु० ॥ वरत्या जय २ कार हो ॥ ह्यांरा ॥ ४ ॥ संघसकल जगतें करी ॥ सु० ॥ जोवे थांरी वाटहो । नीं चे पधारो गछ पति ॥ सु० ॥ द्यो दरसण गहगाटहो ॥ ह्यां ॥ ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें ॥ सु० ॥ पाव धारै उलसंतहो । जल धरज्युं गहरैस्वरै । सु० वाचै सुत्र सिद्धांतहो ॥ ह्यां० ॥ ६ ॥ बहुभवियण प्रति बूझवै ॥ सु० वयणसुधारस योग हो । उत्तम धरम प्रकाशता ॥ सु० ॥ टालै भव दुख जोग हो ॥ ह्यां० ॥ ७ ॥ तेज तरुणी जिम दिन मणी ॥ सु० ॥ गुण छत्तीस निवा सहो । मोहन मुद्रा तुम तणी ॥ सु० ॥ निरख्यांभव उल्लासहो ॥ ह्यां० ॥ ८ ॥ थे चिर जीवो गछ पति ॥ सु० ॥ राज करो इक आंणहो । इम बोलै मुनि सुखसदा ॥ सु० ॥ वांणी क्षमा कल्याणहो ॥ ह्यां० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥
इति वधावो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः देशना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जात्रा निनाणू करीये ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एहवा सदगुरु वांदीयै । भविकजन (एहवा०) आपतरै अव रनकुं तारै । शरण तिहारी गहीयै ॥ १ ॥ भवि० ॥ जिमसारथ पति साथी

जनकुं। वंछित देशै बहीयै ॥ २ ॥ भवि० तिम सदगुरु अमृत उपदेशे। लहै भविक सुख कहीये ॥ ३ ॥ भविक० ॥ गोपसमा गुरु गुण नित धारै। राखै गोजन महीये ॥भवि०॥ ४ ॥ वलिनिर्यामक उपमधारै। जिम नाविक नौ तरीयै ॥ ५ ॥ भ० ॥ एक असंजम दोयविधि बंधन। त्रिविध दंड परिहरीये ॥ भवि० ॥ ६ ॥ च्यार कषाय निवारक तारक। पंच महाव्रत धरीयै ॥ भ० ॥ ७ ॥ षट्काय रक्षक महा भय जीपक। अशरण शरण कहीजियै ॥ भ० ॥ ८ ॥ एहवा सदगुरु नी बलिहारी। शरण गृही निसतरीयै ॥ भवि० ॥ ९ ॥ गौतमस्वामि समा मुनि उत्तम। सर्व जीव सम धरियै। भवि० ॥ १० ॥ हृदयकमल नितप्रति राखीजै। आनंद शिवपद लहीयै ॥ भवि० ए० ॥ ११ ॥ इति देशना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वधावो लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भवि तुझे वंदोरे शीतल जिन पतीरे ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थ करूरे। वरधमान जिनराज। दरशण जेहनोरे दरपण ज्युं दीपैरे। शोभत तेज समाज। (भवि जन वंदोरे भावै गछ पतीरे) ॥ १ ॥ तसु पट राजैरे सुधरम गण धरूरे। ज्ञाता द्वादश अंग जंबू स्वामीरे शिष्य सोहामणोरे। चवद पूरब धरचंग ॥ २ ॥ भवि० ॥ प्रभव सज्यंभव जगमें परगमोरे। श्री जशोभद्र मुणिंद। श्री संभूतविजय भद्रबाहुजीरे। श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ ३ ॥ भवि० ॥ एम अनुक्रम दश पूरव धरूरे। हुवा वयर मुणीस। श्री जिनमत दीपायो भूतलेरे। सुर नर नामत सीस ॥ ४ ॥ भवि० ॥ तास परंपर चंद्रकुले भलोरे। श्री कोटिक गण धार। श्री उद्योतन सूरि सुहामणोरे। वयरीसाख मझार ॥ ५ ॥ भवि० ॥ वरधमांन परमुख सिख्य जेहनारे। चार अशी परमांण। गछ चौराशी प्रगट्या त्यांथकीरे। जांणे चतुर सुजांण ॥ ६ ॥ भवि० ॥ तासशीस जिनेश्वर सूरिजीरे। दुर्लभ राय समक्ष। खरतर विरुद लह्यो ते रूवमोरे। मठपति जीतप्रतक्ष ॥ ७ ॥ भवि० ॥ नवअंगी वृत्ति कारक दीपतारे। श्री अभय देव सूरि राय। श्री जिनवल्लभ जिनदत्त गछपतीरे। श्री जिन कुशल अमाय ॥ ८ ॥ भवि० ॥ परम प्रभावक इण गछमें थयारे। आचारि

ज गुणवंत। शुद्ध समाचारी जगतेहनीरे । सुणि हरखित होय संत ॥ ९ ॥ भवि० ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमेंरे । श्री जिनलाभ सूरीश । सात पटोधर जगमां परगमारे । श्री जिनचंद मुणीश ॥ १० ॥ भवि० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणीरे । सोम्यपणें द्विजपत्ति । गंभीर गुण सागरनें जीतियोरे । सुर सेवै दिन रत्ति ॥ ११ ॥ भवि० ॥ स्या दवाद जिन धर्म वखाणतारे । नय निक्षेप विचार । भंगपदारथ अति विस्तारसोंरे । भाखे भवि हितकार ॥ १२ ॥ भवि० ॥ ग्यान पूरब क्रिया साधै भलीरे । जिन वाणी अनुसार । एहनें सेवोरे क्युंभूला भमोरे । थाय सफल अवतार ॥ १३ ॥ भवि० ॥ सुरतरु भांगी बांवल आदरैरे । कोइ नर मूढ गिमार । ए वखाणो साचो मत करोरे । लहि एहवो गणधार ॥१४॥ भवि० ॥ नामधारक आचारजछे घणारे । पंचम काल मझार । पिण इण सरिखो जगमा को नहीरे । स्व पर तारण हार ॥ १५ ॥ भवि० ॥ वाचक लावण्य कमल पसायथीरे । कमल सुंदरनी एवांण । जे मांनसी ते सुख नित पांमसीरे । पातिकनी करि हांण ॥ १६ ॥ भवि० ॥ इति वधावो ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण पावस ऋतश्यो (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोतियमे मेहवरसीयो सखि । आजहुवो आणंद । पूजपधारया विहरता । नामें शौभाग्य सूरिंदरे । जिनहर्ष सूरिंदनो नंदरे । सदगुरु सुरतरुनो कंदरे । मुखसोहै पूनमचंदरे ॥ सखि मोतीडै मेह० ॥ १ ॥ क्षांति गुणें करी सोभता । सखि पंच महाव्रत धार । वर छत्तीस गुणै सदा । विचरै जे निरतीचारे । रशीया जे पर उपगारे । उपशम रसना भंडारे । पालै पंचाचारे ॥ सखी मोती० ॥ २ ॥ मेघतणी पर गाजता । सखिमीठी जेहनी वांण । आपतरै परतारता । गुण गण रतनारी खाणरे । सहु आगमना जे जाणरे । प्रतपै जिम जलहल भांणरे । जेहनो अतिशय विन्नाणरे ॥ सखिमो० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारसा । सखि इण पंचम काल । साथे जेहनें शोभता । मुनिवर जिम मोतीमालरे । केई थिवरनें केई बालरे । वंदीजै तेह त्रिकालरे । सखि मोती० ॥ ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो । सखि खरतर गछ सिणगार ।

जैन धरम दीपावता । महिमा जेहनी अणपारेरे । सहु संघतणा सिरदारेरे । सखीसुमतितणा भरतारेरे । जेहनें प्रणमें नरनारेरे ॥ सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अर थ विसतारता । सखि देता धर्मो पदेश । दान शीयल तप भावना । बारे भाव ना सुविशेषरे । द्रव्यादिक अर्थ निशेषरे । गुण अरु पर्याय प्रदेशरे ॥ सखि०॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना । सखि अमृत वचन विलास । हणमे कर्म समूह नो । सखि निश्चै होवै नाशरे । थायै निजग्यान प्रकाशरे । कहै बाल सुगुरु सहवासरे । करतां निजरूप सुभाषरे ॥ सखिमो० ॥ ७ ॥ इति वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ गुंहली लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नणदल विंदलीदे (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनशाशन जयकारी । जगगुरु गोतम गणधारीरे । सहीयांगुंह ली करो । गुंहली करो गुरुसंगे । श्रुत भगति तणै रंगेरे ॥सही०॥ विचरंतां मुनिराया । राजग्रही नगरी आयारे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी नवविध ब्रह्मव्रत धारीरे ॥ सही० ॥ च्यार कषाय कुं टाले । पंचमहाव्रत सूधा पालैरे ॥ सही० ॥ २ ॥ सेवै पंचाचार । धरै पंचसुमति मनुहारे ॥ सही० ॥ त्रिणगुप्ती बलि भाजै । इम छत्रीश गुणें गुरुराजैरे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी । शुद्धातम अनुभव रंगीरे ॥ सही० ॥ उतसर्गनें अपवादी । वहु नयगम भंग प्रवादीरे ॥ सही० ॥ ४ ॥ मोक्ष मारग उपदेशी । धरे ध रम ध्यांन शुभलेसीरे ॥ सही० ॥ २ ॥ रत्नत्रय अभ्यासी । भविजन चि तकमल विकाशीरे ॥ सही० ॥ ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै । गणधर वंदन शुभ भावैहे ॥ स० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै । मोहतिमर भरमनें चूरैरे ॥ सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरु मुख वांणी । समकित निरमल करै शाणीरे ॥ स० ॥ श्रुत सेवा जेकरस्ये । तेकीर्त्तिसागर पद वरस्यैरे ॥ सही० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगल वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहिलुंए मंगल जिनतणुं । नाम सोहामणोए । वीजुंए मंगल सिद्धनुं । ध्यानर लियामणोए ॥ त्रीजुं ए मंगल जिनवरै धर्मजेदाखियोए । जिहां सुदेव सुद गुरुतणो । मर्मवलि भाषियोए ॥ १ ॥ चौथोए मंगल साधुनो नामसंभारियैए । पंच महाव्रत पालता चित्त अवधारियैए । अति

अमोलिक गुण रयणना जेहवे आगरूए । सूरि छत्तीस गुण सोहता कामित सुरतरूए ॥ २ ॥ जाणुंए श्रीपुज्य आवैए । कुमति मद वारताए । देशना जल धर वरसता, भविक मनठारताए । सोवन रतननें फूलडे । मोतीवधाम णाए । कीजियै भगति बहु भावसुं लीजियै भामणाए ॥ ३ ॥ पाठक पंक्ति परिवर्या । शासन सोहताए । चौविह संघ गुण संघना भविक मन मोहताए । आजवहनी मुऊ आंगणें, अमीयमेह बूठडाए । सासन देवी चक्केसरी आजमुऊ तूठडीए ॥ ४ ॥ मनह मनोरथ सविफल्पा । मंगल सब मिल्याए । दुरित दोहग दुःख आपदा, दोहलिम सब टल्याए । रुधिनें सिधि नवनिधिसुं, सहजसुख आवियाए । सुरतरू सुरमणी सुरगवी अम्हघरि आवियाए ॥ ५ ॥ सेत्रुंज आबू गिरनारनें समेत शिखरवरूए । अचल अष्टापद पंचए तीरथ सुखकरूए । ग्यान विमल वरदर्शन चारित्र अनुसरोए नित२ रंगवधामणा, भवजल निधितरोए ॥ इति प्रथम मंगल वधावो ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ पूर्णकलसस्थापना मंगल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धरम उछवसमें, जैन पदकारणें । उत्तम मंगल आचरैए । भाव मंगल तिहांदेव अरिहंत प्रभु । जेहथी परम मंगल वरैए । तेहना नामनें जाउंहुं भामणें । खिण २ हर्ष समरण करैए। पंच कल्याणके जिमसुरपतिकरै। तिमजिन भक्ति भविआदरैए ॥ १ ॥ भाव मंगल तणी पुष्टता कारणें । द्रव्य मंगल भला कीजियैए । तिहांगुण पूर्णता इछता भविकजन । कुंभ थिर पूरण लीजियैए । पदम आसनठव्यो पदम छत्रैठव्यो मंत्र पवित्रथी नितजपै ए । जिनवरजीमणी दिशि हरख भरहीयमै । पूरण कलसनें थापियैए ॥ २ ॥ माहरानाथनें परम मंगल होज्यो मंगल संघ चौविह भणेंए । मंगलतीर्थनें मंगल चैत्यनें मंगल तेह करता भणीए । जैनशाशन तणो हरख मंगलकरै । तेण आनंद अति उपजैए । चवन अवसरसमें माताना गर्भमें । इंद्रनें हर्षजे संपजैए ॥ ३ ॥ तेम प्रासादनी थापना अवसरै । कुंभथापनसमें हरखियैए । जेम संसारना कारज कारणें । लोकसंसार मंगल करैए । परम आनंद धर धन्यता मानता । गीत मंगल धुरि उच्चरैए । देवता देवनें मंगल कीजिये देवचंदह पद अनुसरैए ॥ ४ ॥ इति पूर्णकलसस्थापना मंगल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चैत्यप्रतिष्टा मंगल ॥ ❀ ॥

॥ हिवें प्रतिष्टा कारणेंए । पूरव सनमुख सारतो । (वेदिका सुन्न रचीए) दोढहाथ उन्नत वलीए । पूरित वस्तु उदारतो ॥ वे १ ॥ पंचस्वस्तिक श्रीफल ठवोए । पंचरतन धूपीठतो ॥ वे० ॥ अष्टसुगंध विलेपियोए करिये धूपउकिठतो ॥ वे० २ ॥ बारे आंगुलमां ग्रंथ नहींए । उन्नत सरल उत्तंगतो ॥ वे० ॥ चउविदिसि चउवंसनेंए । थाये मन उछरंगतो ॥ वे० ३ ॥ वंशपात्रमां जुहार काए । चउवंसें सात साततो । वे० ॥ समोसरणनें प्रथम समेंए । पीठ रचे सुरराजतो ॥ वे० ४ ॥ तिम इहां सुन्न महुरत दिनेंए । नूमि सुद्ध महा काजतो ॥ वे० ॥ हिवे जलजेवा कारणेंए । थयो उजमाल पुन्यवंततो ॥ (जलजात्रा नणीए) ॥ हयवर सिणगारयावणाए । मयगल मद मल पंततो ॥ वे० ॥ देवनंदा जिमवीरनेंए । वृखन रथ कस्या सजतो । पंचम अंगे वरणव्याए । तिम इहां रथगण गजतो ॥ ज० ॥ ७ ॥ नेरि नुंगल सरणाइयोए । ढोल निसाण वाजित्रतो । ज० ॥ संघचतुर्विध बहु मिल्याए । ध्वजलहि कंत पवित्रतो ॥ ज० ॥ ८ ॥ सूहवगीत मंगल नणेंए । नरनारीना थोकतो ॥ ज० ॥ प्रसन्न करी जल देवताए । मंत्र सनाथ सलोकतो ॥ ज० ९ ॥ सोल सिणगारे सोनतीए । रुचवंती चउनारितो ॥ ज० ॥ सजल कलश सिरपर ठवीए । आवे जिन दरवारतो ॥ ज० ॥ १० ॥ प्रनुनें जीमणि दिस ठवीए । देई प्रदक्षिण मानतो ॥ ज० ॥ संघ सत्कार आमंबेरए । रतनसा हरख प्रमाणतो ॥ ज० ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ इति प्रतिष्टादिक सुन्नकार्योमें सधव स्त्रीयोंके मंगल गायन वधावा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जलयात्रा महोछव विधि ॥ ❀ ॥

॥ अठाही महोछव (तथा) प्रतिष्टा आदिकमें प्रथम दिन । पीठ, वेदिका, पूजनस्थानक साते स्मरण शांति आदि मंत्रादिकसें सुद्ध करे । दीप धूपादिक करे, चावलोंका स्वस्तिकादि अष्ट मंगल करे, श्रीफल चढावे, तोरण धजा बंधावे । स्नात्रियांकों मंत्रादिकसें पवित्र किया हुवा जलादिकसें स्नान करायके तिलक करावे । मंत्रा हुवा वस्त्र पहराके मोली कांकण डोरा

बंधाके अंग सुद्धी करावे (पीछे) ॐकल्मख दह २ स्वाहा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर गुणाके चित्त निर्मल करै। पीछे आत्म रक्षा करावै ॥ (यथा) ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौरक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्षः २॥ ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसाहूणं ब्रह्मांरं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं एसो पंचणमुक्कारो शिखां रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं सव्व पावप्पणासणो आसनं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं मंगलाणंचसव्वेसिं आत्मचक्षु रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं पढमंहवइ मंगलं परचक्षु रक्षः२॥ स्वाहा ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं० इत्यादिकसें आत्म रक्षा अपनी करै (तथा) स्नात्रीयादिककी करावै, पीछे नवग्रह, दश दिग्पालकी स्थापना करै, वलबाकुलादि चढावै, दूसरे दिन सर्व संघ अछावस्त्र आभूषण धारन करके नानाप्रकारका बाजित्र महोछव इंद्र ध्वजादि पूर्वक भगवानकों रथमें (वा) पालखी आदिकमें अछा जलाश्रयके स्थानक गायन भक्ति करता हुवा जिनशाशनकी उन्नति करता हुवा आवे अंग सुद्धी कराके जल कलशा भरावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अंग सुद्धी जल पूजन मंत्र विधि ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ह्रीं अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसे ७ वेर दातण स्नान करनेकों जल मंत्रीजे ॥ इति जल मंत्रः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं यक्षसेनाधिपतयेनमः ॥ इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके दांतण करै ॥ इति दांतण मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कामदेवाविपति ममाभीप्सितं पूरय २ स्वाहाः इस मंत्रसे ७ वेर पढके मुख धोवे ॥ इति मुख धोवण मंत्रः ॥ ॥❀॥ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पांपां वांवां अशुचि शुचिभवामि स्वाहाः ॥ इस मंत्रकों सातवेर पढके पूर्व मंत्रित जलसें स्नान करै ॥ इति स्नान मंत्रः ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रों नमः ॥ इस मंत्रसें ७वेर मंत्रा हुवा वस्त्र धोती उत्तरासण धारण करै ॥ इति वस्त्र मंत्र ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों अर्हतेनमः॥इस मंत्रसें ७ वेर केशर चंदनादिक मंत्र के तिलक करै ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वल्गु २ निवल्गु २ सुमणे सोभणसे महु महुरे ॐ कवलिकः क्षः स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें मेंढल मोली

७ वेर मंत्रके मंगल पूजामें (तथा) कलसके बांधे। आपके (तथा) स्नात्रियांके कांकणमोरा मोली इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इति कांकण मोरा मोली मंत्रः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं नृनुवः स्वधायस्वाहाः ॥ इस मंत्रसें फूल बास चूर्ण मंत्री भूमी पवित्रकरै, जल केशर पुष्पसें आह्वोटनकरै ॥ पीछे ॥ भगवंतकी स्नात्रपूजा कियेवाद जलस्थानकपर आयके मंत्र पढके अष्टद्रव्यसें पूजनकरै अथ जलपूजनमंत्रः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्षीरोदधि स्वयंभूश्च । सरे पद्म महाद्रहे । शीता शीतोदका कुंडे । जलेस्मिन् संनिधिं कुरु ॥ १ ॥ गंगे चलमुने चेव । गोदावरी सरस्वती । कावेरी नर्मदासिंधोः । जलेस्मिन् संनिधिं कुरु ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणीं अमृतं श्रावय २ सें सें । क्लीँ क्लीँ ब्लुँ ब्लूँ द्रां द्रीँ द्रावय २ ह्रीँ जलदेवी देवान अत्रागच्छ २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें अंकुश मुद्रासें जल निकालके धोवा सुद्ध किया हुवा कलस भरै । पीछे इस मंत्रसें ३वेर कूर्म्म मुद्रासें जलस्थापन करै ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ आं ह्रीँ क्रों जलदेवी पूजावलिंगृण्ह २ स्वाहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ क्लीँ ब्लुँ कहता हुवा जलं समर्प्पयामि चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवद्यं फलं, वस्त्रं समर्प्पयामि ॥ इसी तरै अष्टद्रव्य चढावै जल कलस पूजाकरै, मुख परनालेर धरके लाल हरा वस्त्र मोलीसें बांधे। फेर सधवस्त्रियांके मस्तक पर देके वाजागाजा बम्म महोछवसें जल लेनेंकों आया था उसी मुजब सर्व संघ बम्म महोछवसें अगाडी पंचामृतधारा कोरा बलवा कुल देवता हुवा मंदिरजीमें आवै ॥ भगवानके जीमणीदिशितरफ कलस थापनकरै ॥ अधिष्टायक खेत्रपालजीकी पूजा करावै । अष्टद्रव्यचढावै ॥ अथ क्षेत्रपाल मंत्रः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ क्षां क्षीँ क्षुँ क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालायनमः स्वाहाः ॥ गंधाक्षत जल पुष्प तैलसिंदूरैः दीप धूपोद्यै पूजयामि ॥ निमकलतारण आरती प्रमुखकरके चैत्यवंदन संपूर्ण करै याचकांनेंदानदेवै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥इति जलयात्रा संखेप विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परममंगल श्री दादाजीके काव्य सवईया ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दाशानुदाशा इव सर्वदेवाः । यदीय पादाब्ज तले लुठंति । मरु स्थली कल्पतरुः सजीया । ज्जुगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको । कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या । प्रसीदतः श्री जिनदत्त सूरेः । सर्वेपदा हस्ति पदे प्रविष्टाः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नोयोगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नो वेताल पिशाच राक्षसगणाः नो रोग शोगौ भयं । नो मारी नच विग्रहः प्रभू तयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः । यस्ते श्री जिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सवईया लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्न वीर कीयै अप्पणें वस, चौसठ जोगण पाय लगाई । माइण शाइण व्यन्तर खेचर भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई । वीज तरुक करु क भटक अटक रहैजु खटक न काई । कहै धर्मसीह लंघै कुणजीह दीयै जिनदत्त की एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजै थुंभ ठौर ठौर, ऐसो देवनही और, दादौ दादौ नामसें, जगत्र जस्स गायो है । आपणेंही भाव आय, पूजै लक्खलोक पाय, प्यासनकुं रांन मांझि, पांणी आन पायो है । वाट घाट शत्रु दाट, हाट पुर पाटणमें, देह गेह नेहसूं, कुशल वरतायो है । धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे साचो श्री कुशल गुरु नामयुं कहायो है ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल अंग भलरंग कुशल वणिजै व्यापारे । कुशल देव देहरै । कुशल घन राजदुवारे । पुन्य पसायें कुशल कुशल श्रीसंघ भणी जे । वाहण आवै कुशल कुशल घर घर गाईजै । श्री जिनचंद्र सूरि पुहपट्टधर । नाम मंत्र आरति टलै । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नवनिधान लक्ष्मी मिलै ॥१॥

॥ ❀ ॥ कुशल वसो संसार । कुशल सज्जन घर चाहै । कुशलै मङ्गल माल । लछिघर कुशलै आवै । कुशलै घन वरसंत । कुशल धन धन्न रुवन्नो । कुशलै घोडा थट्ट । कुशल पहिरीय सुवन्नो । ए रसो नाम सदगुरु तणो । कुशलै जगरलीया मणो । भट्टारक श्री जिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी । घरघर होत वधावणो ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ खरतर गछ शुद्ध समाचारी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो (तो) प्रतिपदा १ का, पच्च खाण व्रत । पिछली अमावास्या (३०) तिथकों करै। ८ अष्टमी कम हो (तो) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७ को करै। और (जो) १४ चौदस कम हो (तो) १४ का उपवास। अमावस (वा) पूनिम को करै (इस का कारण) यह दोनुं तिथी समान है। (जेसें) चौदस वही तिथ है। (तेसें) अमावस पूनमभी चिरंतन पक्षीका दिन है। इसी सें यह दो दिन वहे है। यह दों दिन में उत्तम भव्यजीव यथाशक्ति पोशह पमिक्कमणा दि धर्मकृत्य करै। पारणें उत्तर पारणें धर्मका उद्योत करै। (इहां बिशेष कहते है) इस समय में जैनी पत्रा प्रसिद्ध नहीं है। मिथ्यात्वी के पत्रो सें देखकै सर्व तिथी गिणनेंमें आती है। (और) इस पत्रैका कुछ प्रमाण नहीं। हर कोई तिथ कम हो जाती है। इसीसें (जो) चौदश कम हो (तो) उपवास (तथा) पक्खी पमिक्कमण (निस्संदेह) पूनम १५ (तथा) अमावसकै दिन करै (परंतु) तेरश चौदश के वितत्थैकों न करै। और जो बेला करै। तथा हरी छोडै (तो) यह दोनुं दिनमानें ॥❀॥(अब) कोई वेर संवछरी की४चोथ कम हो (तो) पंचमी५के दिन, संवछरी पमिक्कमण करै। (परंतु) तीज ३ के दिन कदापि काल न करै (और) जो चौथ ४ दो होय (तो) पहली चौथ संवछरी करै। औरभी कोई तिथ दो होय (तो) पहली तिथ मान्यनी कहै। दूसरी लूंम तिथी रही। (दूशरो यह प्रमाण है) साठ ६० घडी की अखंड तिथी छोमकै। वही अध घडीकी (दूसरी) तिथी कोण मानें (इहां कोई कहै) अपणें उदय तिथी मानें है। सूर्य ऊगै इहां तक कोई तिथी हो (तोभी) उस दिन उसी तिथ कों मानै है (इसीसें) जोदूशरी तिथ अध घडीभीहो (तो) मानणें में क्या दोष है (इसका उत्तर) हे भव्य जो पहलै दिन तीज मानी है (और) तीज३कै दिन चौथ बहुत घडी लुगतैगा। पिण उस दिन तीज मानीजैगा। (इसी तरै) चौथकै दिन सूर्य ऊगै (इहां तक) घडी अध घडी भी चौथ होगा (तो) चौथ ४ मानीजै गा। (पर) जो तिथी दो होय। उसमें तो पहली तिथ सूर्य उदय अस्त दोनुंमें रही (इसीसें)

पहली तिथ छोडकै दूशरी तिथ करणा युक्त नहीं। (और) कार्त्तिक माश वढै (तो) पहले कार्त्तिक चौमाशो करै॥ फाल्गुण वढै (तो) दूसरै फाल्गुण चौमाशो करै। आशाढ वढै (तो) दूशरै आशाढ चौमाशो करै। आशाढ चौमाशै की १४ चौदशसें। पचासे दिने चौथकों संवछरी पर्व्व करै। चौथ कम हो (तो) ५ पांचमकै दिन संवछरी करै। श्रावण। भाद्रवो। आसोज। वढै (तो) पंचमाशी चौमाशो करै (जो) श्रावण माश वढै (तो) दूशरै श्रावण शुद ४ कों संवछरी करै (पर) चौमाशै की चौदशसें पंचास दिन उल्लंघकै संबछरी पर्व कदापि कालै न हो, यह कल्पसूत्र जीकै पहली समाचारीमें प्रसिद्ध पाठ हैं, (और) चौमाशै में, श्रावण। भाद्रवो। आशोज। यह तीन माश वढै तो पंचमाशी चौमाशो करै। (और) जो माश दोहोय (उसमें) पहला माशका कृष्णपक्ष। (दूशरै माशका शुल्क पक्ष। (ऐसें) एक माश में जो कल्याणक तिथी हो। उसीका व्रत पच्चक्खाण करे। बीचका ३० दिन छुट जाणना। यह तीश दिनमें कल्याणकादिक के व्रत पच्चक्खाण न हो शकै (इसीसें) बिबेकी जीव सब तिथीका विचार समझकै व्रत पच्चक्खाण करै (तो) व्रत भंग कभी नहो॥ ❀॥

यह तिथोंका परमाण श्रीहरिभद्र सूरजी महाराजकै किया हुवा। तत्व तरंगणी ग्रंथमें प्रशिद्धहै (सो) इहां किंचित् लिखते हें॥ ❀॥

॥ ❀॥ तिहि पमुणे पुव्व तिही। कायव्वा उत्त धम्म कज्जेय। चाउद्दसी विलोवो। पुन्नमिय पक्खि पडिक्कमणं॥ १॥ तत्थेव पोसह विही। कायव्वा सव्वगेहि सुह हेऊ। नहु तेरसीइ कीरई। जह्मा नाणाइणो दोसा॥ २॥ सूरोदय पडियावि। तेरसी हुंति न पक्खियं कुज्जा। चाउम्मासिय करणे। एसविही देसिउ समणा॥ ३॥ तिहि बुद्धीए पुव्वा। गहिया परि पुन्न जोग संजुत्ता। इयरावि माणणिज्जा। परं थोवत्ति तत्तुल्ला॥ ४॥ ❀॥

॥ ❀॥ (तथा) ज्योतिषकरंड पाहुडके इदं कथितमस्ती॥ ❀॥

अठि सहिया न अठमी। तेरसि सहिया न पक्खिया होई। पडिवै सहियान कयावि। इइ भणिया वीयरागेण॥ १॥ अठमि दिनंमि पायं। कायव्वा अठमीय पाएण। कइयावि सत्तमंमि। नवमी अठी न कायव्वा॥ २॥ पनरस

म्मिय दिवसे। कायव्वं पक्खियं तु पाएण । चाउद्दसेवि कइया। नहु तेरसि सोलसमे कहवि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ (तथा) श्रावक सामायक करै (तब) प्रथम सामायक दंम ३ वेर उचरके (पीछे) इरियावही पम्किमें (क्युंकि) आत्मार्थी आचार्यों के किये हुए कितनेही ग्रंथमें प्रसिद्ध पाठ हे (और) सामायका धिकारे प्रथम इरियावही पम्किमके (पीछे करेमि भंते कहणा। ऐसा पाठ खुलासा कोई ठिकाणें देखनें में न आताहै ॥ ❀ ॥ तथा श्री महावीर स्वामी का ५ कल्याणक मान्य करणा चहिये (क्युंकि) कल्पसूत्रादि अनेक ग्रंथोमें शाखहै (और) बम्हे बडे, संबेगी गीतार्थ, खरतर गछ, तप गछादिक के, आचार्योंनें ग्रंथोमें प्रगट पणें ५ कल्याणक वर्णन कियेहै (जो) आश्चर्य कारी संबंध जाणके छठा कल्याणक नमानते हें (उनोंकों) म्हिंबरवत् मल्लिनाथ स्वामीकोंभी स्त्री पणें मानणा न चाहियें (क्युंकि) आश्चर्यकारी संबंध समानत्व है (दूशरो) न मानणें में अपनें ही गुरुवादिककी आग्या जो पन होती है ॥ ❀ ॥ (तथा) सर्वे पोषध, अष्टमी, चतुर्दशी, कल्याणकादि, पर्व तिथीकों करै (परंतु) सदैव करनेका कथन नही ॥ ❀ ॥ (तथा) कल्पसूत्र बाचनामें । नववाचनाको बंधाणनहिं । अधकीभी वाचना करै ॥ ❀ ॥ (तथा) आंबिल मां है एक अन्नद्रव्य (दूशरो) उश्न जल द्रव्य, यह दोद्रव्य ग्रहण करनेका कथन है (इससें) रसनाका जोलुपी पणासें अधिक द्रव्य ग्रहण न करणा चाहिये ॥ ❀ ॥ (तथा) तरुणी स्त्री कुं मूल नायकजीकी पूजा करनी प्रमाणीक आचार्योंनें निषेध करीहै (क्युंकी) इस कालमें प्रायें स्त्रीयोंमें अविवेकत्व पणा(तथा) अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगटहो ना दीख रहाहै॥❀॥ (तथा) श्रावकांनें, पाणस्स लेवाका पाठ कहणा युक्त नहीं। यह साधुका पाठहै॥❀॥(तथा)दिनप्रति एकउपवास पचक्खावै। जो अधिकतप की इछाहोय तो अपनें दिलमें धारना रखे। परंतु पचखाण नित्यसूर्योदये करणा चाहिये॥❀॥(तथा)जिसधान्यकी दोफाम्होय जिसमें चिकणास न होय सो सर्व विदलकी गिण तीमें है ॥ इस विदलधान्यकों गोरस दध्यादिकके साथ भक्षण नकरना चाहिये ॥ ❀ ॥ (तथा) मुंवै जायेका सूतक मानणा

चाहिये। जिसके घरमें सूतक होय। उसी घरको आहार पाणी साधुवर्जन करै (परंतु) संपूर्ण कुलगोत्रको सूतक नगिणें॥ ❀॥ (इत्यादि) इहां नाममात्र खरतर गच्छकी समाचारी लिखनेमें आई है (यद्यपि) समाचारी ग्रंथ अनेकहै (तथापि) श्रीसमयसुंदरजी महाराजकै बनाया हुवा। समाचारी शतक ग्रंथ है (जिसमें) पंचांगी सूत्रोंका आलावा प्रमाणयुक्त। समाचारीका निर्णय किया है (जो) अनेकांती विशेषज्ञ होय सो आत्मार्थी गुरूसें निश्चैकरै॥ और जे कोई मूंगांमे कोरडू जैसा। एकांती, दृष्टिरागी, अभिमानी, अपनें गच्छका पूंछडा पकम्के। धर्मसागर निन्नवकी तरै। खरतर गच्छकों मतपक्षमें कहतेहै (और)१२०४ शालमें हुवा लिखते है (सो) साफ अपनी अग्याता (तथा) द्वेष सूचन करते हैं॥ ग्रंथोंमें प्रत्यक्ष पणें साबित होताहै (कि) कोटिक गच्छ, चंद्र कुल, वयरी शाखा वाले, श्री जिनेश्वर सूरजी महाराजे, अणहल पुर पट्टणमें। सं१०८०, चैत्यवासियों कों, शास्त्र विवादसें जीते (इससें) पाटणके, दुर्लभ राजानें, खरतर विरुद दिया। तबसें खरतर गच्छ प्रशिद्ध हुवा (तथा) यही, श्री जिनेश्वर सूरजीके दो शिष्य हुए। श्रीमालगोत्र थापक, श्रीजिनचंद्र सूरी (तथा) नवांगीवृत्तिकारक श्री अभयदेवसूरिजी हुए (तथा) इनोंके शिष्य पट्टधारी जिन वल्लभ सूरजी हुए। (तत्पट्टे) युगप्रधान सवालाख श्रावक प्रतिबोधक, श्री जिनदत्त सूरिजी हुए। इस माफक बहुत ग्रंथोकी प्रशस्तियोंमें अधिकार है॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (इससेती) अहो भव्यो मूलतत्व इसकालमें इतनाही है जो तत्व नसमझो (तो) अपनी अपनी समाचारी करते जावो (परंतु) एकेक गच्छकी निंदा मतकरो। एक धर्ममें द्वेष मत रक्खो, मत करो। श्री नवकार, जिन प्रतिमा पूजक, सर्व जैनी भाई आपसमें एक्यता करके धर्मवृद्धी (तथा) उत्कृष्टसें ग्यानवृद्धी करते रहो। जिससेती अपनें धर्मकी (तथा) अपनें जैनी भाइयोंकी दिन २ वृद्धी होय सदा आनंद होय॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ किंबहुना॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शासनके नायक, श्रीमहावीर स्वामी (तत्पट्टे) २ श्रीसुधर्म्मा

स्वामी (तत्पट्टे) ३ श्रीजंबू स्वामी, (तत्पट्टे)। ४ श्रीप्रभव स्वामी,। ५ श्री सज्यंभव स्वामी,। ६ श्रीयशोभद्र स्वामी । ७ श्रीसंभूतिविजय स्वामी । ८मा श्रीभद्रबाहू स्वामी,। ९मा श्रीथूलभद्रस्वामी॥ (तत्पट्टे) १० मा। श्री आर्यमहागिरी (तत्पट्टे) ११ मा। लघुभ्राता, श्रीआर्य सुहस्ति सूरी हुए (सो) श्रीवीर भगवानसें, २३५ वरशे, संप्रति राजा (तथा) ऐवंती सुकमालकों प्रतिबोधके, धर्मका बहुत उद्योत किया॥ १॥ ❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ (तत्पट्टे)१२श्रीसुस्थित सूरी,१३क्रोध सूरी मंत्रका जापकिया, इससें कोटिक गछ प्रशिद्ध हुवा॥ इसी तरै पट्टानुक्रमें१६में पाटे॥ श्री वज्र स्वामी दश पूर्व धर, बडे प्रभावीक, विद्यागामी हुए (इहांसें) वज्र शाखा प्रवर्त्तन भई॥ (तथा १८ में पाटे) श्री जिनचंद्र सूरजी। हुए॥ (इहांसें) चंद्र कुल प्रशिद्ध हुवा। (इसीतरै पट्ट परंपरायें) भगवानसें (३८ में पाटे) श्रीउद्योतन सूरजी हुए। (सो) एक निज शिष्य (अन्य ८३) साधु शिष्योंकों आचार्य पद देके। चौराशी गछ प्रशिद्ध किये॥ ❀॥ यह ८४ गछके आचार्य बडे प्रमाणीक, प्रभावीक, धर्मोद्योतक हुए (श्रीउद्योतनसूरी) पट्टे। आबूजी तीर्थ प्रगट कारक, विमल मंत्री प्रतिबोधक, बडे प्रभावीक (३९ में पाटे) श्रीवर्द्धमान सूरी हुए॥ ❀॥ (४० में पाटे) श्रीजिनेश्वर सूरिः हुए (सो) अणहिल पुर पट्टणमें। दुर्लभ राजाकी सभामें। चैत्यवासियों कों, विवाद करके जीते (इस सेती) सं॥१०८०॥ (खरतर विरुद) पाटणके राजानेंदिया। अतिशयपणें सिद्धांत मार्गसें सच्चाहुवा(इससें)खरतरगछ प्रसिद्ध हुवा (इहांसे)कोटिक गछ। चंद्रकुल। वज्र शाखा(और)खरतर विरुदका। नवाशिष्योंकों भेद कहनें लगा॥❀॥ (४१ में पाटे) दिल्लीके बादशाहकों वरदेनें वाले। जीवहिंसा छोडानें वाले। श्रीमाल, महातियाण गोत्र, प्रतिबोधक। श्रीजिन चंद्र सूरी हुए॥❀॥(तथा)इनोंके लघु भ्राता(४२ में पाटे) स्थंभणा तीर्थ, नवांगी वृत्ति, प्रगट कर्त्ता, श्री अभयदेव सूरी हुए, (तत्पट्टे) दशहजार, वागडी श्रावक प्रतिबोधक (४३ में पाटे) श्री जिन वल्लभ सूरी हुए॥ ❀॥ ४३ (तत्पट्टे ४४ में) महाप्रभावीक, युगप्रधान, चीतोडके मंदर स्थंभसें। विद्याम्नाय पुस्तक प्रगट कारक। ५२ वीर,

६४ योगणी, आदि देवी देव्यांकों प्रतिबोधक। (सवालाख) रजपूत ब्राह्मणादिककों प्रतिबोधके। सावण सुक्खा, गोलछा, बाजेरु (आदि) अनेक गोत्र श्रावक कुल स्थापक। सवाक्रोरु ॐकारजीका जाप करनेंवाले, श्रीजिन दत्तसूरजी हुए (सो) आजतक मोटा दादाजीके नामसें। देशावरोंमें प्रशिद्ध है ॥ तत्पट्टे ४५ मा। जालस्थल मणिधारक, दिल्लीके पातसाहकों, अनेक चमत्कार देखाके। धर्म उद्योत करनेंवाले। श्रीजिनचंद्र सूरजी हुए (जिनोंका) दिल्लीके नरवजारमें दाग हुवा (और) बडा चमत्कार देखके संपूर्ण बादशाहादिक लोक पूजनें माननें लगे। (यह दूशरा दादाजीहुवा) इहांसें अनुक्रमें (५० में पाटे) महा प्रभावीक, श्रीजिन कुशल सूरिजी हुए (सो) आचार्य पद पायके, बहुत जिन धर्मका उद्योत करनेंवाले हुए (अंतमें) सं। १३८९, फागुणवद अमावश दिन, देव लोक गए (तदुपरांत) फागुण सुद १५ सोमवारनें (प्रथम) दरशण संघकों दिया (तिस पीछै) अनेक गांव,नगरोंमें,भक्ति धर संघका उपगार करनें लगे(इससेती)संघ अपना, उपगारी आचार्यकों, इष्टदेव समझके। सर्व देशगांव नगरोंमें चरण, स्तंभ, मंदर, स्थापन करके(दादाजीके नामसे) अनेक प्रकारसें। पूजन, वंदन,करनें लगे। सर्व स्थानक दादाजीका नाम प्रशिद्ध हुवा (आजतक) सर्व स्थानक, प्रत्यक्ष परचा दैनेंवाले, संघकों मालुम होरहे है (ऐसे) महा उपगारी (यह) तीशरा दादाजी हुए ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां सें अनुक्रमें ६१ में पाटे महा प्रभावीक श्री जिन चंद्र सूरजी हुए सो सं। १६१२ जेशलमेरमें आचार्य पद पायके गछमें बहुतसे साधुवोंका किया उद्धार कराके, उग्र विहार करनेंवाले, दिल्लीका अकबर बादशाहको चमत्कार देखाके, जीव हिंसा पर्व दिनोंमें छोडाके, अमारि वडहो फेराणेंवाले पंचनदी, पंचपीर, मानभद्र, खोडिया खेत्रपालकों साधन करके, जीव दया धर्म प्रवर्त्तन करनेंवाले, वमे चमत्कारी, ये चोथा दादाजीके नामसे प्रसिद्धभये॥१॥

॥ ❀ ॥ ऐसे महा प्रभावीक उत्तम आचार्योंके पाटानुपाटे (६५ में) महोपगारक, तेजश्वी, श्रीजिन चंद्र सूरजी सूरीश्वर। १७११ आचार्य पदधारक हुए ॥ इनोंके दो शिष्य हुए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ १ प्रथम आचार्यपदधारक	॥ २ उपाध्यायपदधारक

॥❀॥ पट्टश्रेणीमहाराजनामः ॥❀॥प्रवरपुज्यश्रेणीनामः॥❀॥

॥ ६६ ॥ श्रीजिन सुक्ख सूरिः	॥ ६६ ॥ पुज्य श्रीउदयतिलकजी गणिः
॥ ६७ ॥ श्रीजिन भक्तिसूरिः	॥ ६७ ॥ पुज्य श्रीअमरश्रीजी गणिः
॥ ६८ ॥ श्रीजिन लाभसूरिः	॥ ६८ ॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीचंदजी गणिः
॥ ६९ ॥ श्रीजिन चंद्रसूरिः	॥ ६९ ॥ पुज्य श्रीविजमालजी गणिः
॥ ७० ॥ श्रीजिन हर्षसूरिः	॥ ७० ॥ पुज्य श्रीसुगुणप्रमोदजी गणिः
॥ ७१ ॥ श्रीजिन सौभाग्यसूरिः	॥ ७१ ॥ पुज्य श्रीविद्याविशालजीगणिः
॥ ७२ ॥ श्रीजिन हंशसूरिः	॥ ७२ ॥ पुज्य महोपाध्याय श्रीलक्ष्मी
॥ ७३ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरजीपट्टे	प्रधानजी गणिः
॥ ७४ ॥ श्रीजिन कीर्त्तिसूरिजी	वर्त्तमान पुज्यादेशेन

॥ ❀ ॥ वर्त्तमान विजय राज्ये ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ तच्छिष्य मुख्य ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैन पाठक श्रीमोहनलाल (अपरनाम) उपाध्याय श्रीमुक्ति कमलगणीनें (अपना शिष्यगण) पं०श्रीजयचंद मुनिः पं० रावतमल्लादि तत्वदीपक मोहन मंमली (तथा) सर्व जैन पाठकगण हितार्थ, श्रीबीकानेर रांघमीका माणक चौकमध्य सतरमा श्रीकुंथुनाथस्वामीका अनुपम नवीन मंदिर सं० १९३१ में बनायके प्रतिष्टा कराइ (तथा) नवीन ज्ञानचैत्य जैन लक्ष्मी मोहन शाला नामक बनवायके अपना पूर्वजोंका संचित, सर्व पुस्तक सर्व ज्ञानोपगरणका, भंडार स्थापन किया ॥ फेर ज्ञान भंडारकी वृद्धी के निमित्त कलकत्ता बंबईमें शाखारूप जैन पाठशाला स्थापन करके, रत्नसागर दोभाग आदि सर्वधर्मकृत्य जैन आचार संग्रहका पुस्तक हजारों उपवाय के प्रशिद्ध किया ॥ श्रीसद्गुरूप्रसादात् ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ जब लग मेरु अडिग्ग है । जब लग शशि अरसूर । तब लग यहपुस्तक सदा । रह जो गुणभर पूर ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

पोथी प्यारी प्राणथी । गलहियाको हार । बहुत यतनकर राख ज्यो । पोथी सेती प्यार ॥ ऐसी मेरी आशा सफल करजो सही ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ स्वकुल प्रकाशणम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिव कही माहरो कुल प्रकासुं अहो भवियण तुम सुणो । गु रु गछ कोटिक चंद्रकुल अरु वयरि शाखा चितभणो । गुण गण जिनेसर सूरि गुजर बिरुद पायो गुणकरी । सोजयउ खरतर गछ मोहन प्रगट स हु भवि हित धरी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु गछ खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिनहंस सूरीसर तणे पद चंदसूरी जिन मही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक मोहन मन उल्लास ए । बहु रत्नसंग्रह कलिकत्ता पुर किया मुंबइ भासए ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर अंत मंगलाचरण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीन तत्वकों नमण कर । सेऊं सद्गुरु पाय । देवी भगवती सा निधै । बचन अमृत रस थाय ॥ १ ॥ चौरासी लक्ष जोनिमें । जे रह्या जीव अनन्त । मोह मिथ्यात वसे पड्या । पायो दुःख नही अन्त ॥ २ ॥ परम देव परमातमा । चिदानन्द गुणचंग । भव्य जीवके हित भणी । भेद कह्या सहु अंग ॥ ३ ॥ गणधर गौतम आदि सहु । रचिया अंग अनूप त्रिकरण हुं प्रणमुं सदा । ज्ञान आतम गुण भूप ॥ ४ ॥ आचारज उव झाय मुनि । भगवन वचन उपेत । भाष्य टीका निर्युक्ति कर । प्रगट कीया संकेत ॥ ५ ॥ भगवती सुत्र मांहे कह्या । आगमना पंच अंग । सरधै जे भवि प्राणिया । पामें नित उछरंग ॥ ६ ॥ जैवंता वरतो सदा । सहु जग थंभव ज्ञान । पिण उपगारी भव्यकों । ए श्रुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ दुष्टकर्म संयोगसें । चित वैठे नही ज्ञान । पिण जाणुं सुरतरु समो । ए हीज धर्म प्रधान ॥ ८ ॥ प्रबल भाग्य संयोगसें । पारश दरसण पाय । पारश फर स्यां लोह सहु । गुणकंचन समथाय ॥ ९ ॥ मनमोहन पारश मिल्यो । मो हन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनंद ॥ १० ॥ पारश प्रभुकेनामसे । सहु संकट मिटजाय । ईतउपद्रव भयटलै । मोहनगुण प्रगटाय ॥११॥ जिन दरशण मुझ मनवस्यो । जे प्रगटै चित आय । कर्मशत्रु दल जीपकै । शिवरमणी वरुं जाय ॥ १२ ॥ शिवपुर जोवा कारणें । समकित दृढकै हेत । बाल अङ्ग मोहन भणी । रत्नसागर गुण देत ॥ १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर, मोहनगुणमाला प्रथमभाग ॥ तृतीयवेर छपाके प्रसिद्ध करते समय, ज्ञानवृद्धी खाते, प्रथम साहाय्य करनेवाले, धर्मज्ञ ग्राहकोंकी नामावली मान्यसहित प्रकाशित करतेहैं ॥ ❀ ॥

जैन उद्योतक श्री शीतल जिनेश्वर नवीन चैत्य कारापित (तथा) श्रीशिखर गिरी तीर्थराज पर चैत्य महिमा दया धर्म विस्तारक (तथा) श्री मकशी पार्श्वनाथ तीर्थकी शोभनीक व्यवस्था कारक, उत्कृष्ट नवपद भक्ति धारक। सर्व जैन मान्य, दूसरी जैन स्वेताम्बर कोन्फ्रेन्स (बंबई) के प्रमुख, श्रीमान् बाइसरायके मुकीम जोंहरी, खरतर गछी सुश्रावक

२५	राय श्रीबद्रीदासजी बहादुर	रैवासी कलकत्ता
१५	बाबू श्रीबुधसिंहजी विजयसिंहजी दुधेल्या	अजीमगंज
१०	बाबू श्रीराय गणपतिसिंहजी बहादुर	अजीमगंज
१०	राय मेघराजजी जालमचंदजी कोठारी बहादुर	अजीमगंज
१०	राय श्री धनपति सिंहजी राजसिंहजी बहादुर	बालूचर
१०	मुकीम जोंहरी बाबू श्रीमोतीचंदजी नक्षत्र	कलकत्ता
१०	सेठ दीपचंदजी पारख	जोधपुर
९	सेठ श्रीबालचंदजी कनीरामजी आत्मज	मुंबई
५	पं० प्र। श्री पनालालजी रामरतनजी मुनिः	बीकानेर
५	सेठ श्री फूलचंदजी गोलछा	फलोधी
५	मगनीरामजी दानमलजी कोठारी	मुंबई
५	बाबू श्री भैरूंदासजी रिखभदासजी जोंहरी	कलकत्ता
५	हीरालालजी किसनचंदजी दूधज	बरधा
५	गुलाबचंदजी भोमराजजी (हस्ते) सुगनचंदजी कानूगा	मुंबई
४	बाबू श्रीशिताबचंदजी नाहर	अजीमगंज
४	बाबू श्री माधवलालजी जोंहरी	कलकत्ता
४	जेठ मलजी गांधी वस्तपालजी वरढिया	मुंबई
२१	तत्वदीपक मोहनमंडली जैनपाठशाला बुटकर	मुंबई

॥ कलकत्ता ॥ ॥ बीकानेर ॥ ॥ बम्बई ॥

॥ ❀ ॥ श्री जैन लक्ष्मी मोहनशाला ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (जाहरखबर) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सर्व जैनी सज्जन पुरषांकों मालुम रहे । जगत्में वांछित सुखदाय क, तत्वभूत, संपूर्ण प्राणियोंके (ज्ञान) उत्तम पदार्थ है (क्युंकि) सद् ज्ञानसेती, जीवकों । दर्शन, चारित्रादिक, मोक्ष गुणकी प्राप्ती होती है (और) यही, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुद्धगुण पानेसें । थोडे कालसें जीवकों, अवश्य मोहका, अक्षय सुख मिलता है (तो) जिस ज्ञानके प्रशाद, अनादि भव भ्रमण दुःख दूर होके । अंतमें मोहकूल मिले(ऐसा)उत्तम ज्ञान पदार्थका । मूर्ख, मिथ्यात्वी, अज्ञानी टाल (कोई) विवेकी, उत्तम पुरष, अनादर न क रैगा (अपितु)बुधिवान, धर्मज्ञ जीवतो । अपनी शक्ति मुजब । तन, मन, धनसें, ज्ञानवृधि, विद्यादान, करैगा, करावैगा, अनुमोदैगा (इसीकारणसें) अंतरंगमें.तिसें अपनेको (तथा) अपना शिष्यादिक (संपूर्ण) पाठक गण कों । विद्या दान मिलनें निमित्त । बीकानेर । कलकत्ता । मुंबईमें, जैन पाठ शाला, स्थापन करीहै (और) पाठशालाके उत्तेजन अर्थ, सर्वोपयोगी (यह) रत्नसागर पुस्तक तीसरी वेर छपाके प्रसिद्ध किया है।(और)पढनें वालोंके पास (कुछभी)आश खरच लेनेमें न आता है। दोनुं पाठशालायोंके खरचका निभाव (तथा) उत्तेजन होना परोपगारी । गुणग्राही । संघके हाथ है (जो) धर्मरागी संघ । तन, मन, धनसें, मदत देते रहेंगे (तो) यह तीनुं पाठशाला स्थाई चल रहेगा (और) क्रमसें विद्या वृधी होनेका, बहुतसा प्रयत्न करनेमें आवैगा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग (तथा) दूसरा भाग ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सर्वोपयोगी, बारमासी, धर्मकृत्य जैनाचार संग्रहकी पुस्तक, लेनेकी इछा होय(तो) लिखे मुजब ठिकाणें(नामदारोंके पास) रोकडी निलरावल देके भेजावे (वा) देशावरोंसें मंगावे (तथा) देशावरोंसें मंगानेवाला (जो कोई) प्रथम निलरावल न भेजैगा (और) रत्नसागर आदि पुस्तक मंगावैगा

(उसको) डाक मारफत, पुस्तक भेजनेमें आवेगा। डाक मारफत, रुपियादेके पुस्तक भेजसकेगा। लाटपेट पत्र लेनेमें न आवेगा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (तथा) इसीतरफका। मोटा, छोटा, अक्षरोंमें (जो कोई) पुस्तक छपानेंनिमत्त भेजेगा (तो) जलदी छपाकर भेजा देनेंमें आवेगा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ पुस्तक मिलनेंका ठिकाना ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ सु। बीकानेर। ठि। बडे उपाश्रै (जैन लक्ष्मीमोहनशाला) जैन महोपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी मोहनलालजी गणिः पासे॥ ❀ ॥

॥ २ ॥ सु। कलकत्ता। ठि। अफीमचौरस्ते। ६२ नं। जैन विद्या शाला, अध्यक्ष पंडित श्री जयचंद रावतमल मुनिः पासे ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ३ ॥ सु। मुंबई, । ठि । विचला भोईवाडा श्रीचिंतामणिजीके मंदिर जैन पाठशाला उ। श्री मुक्तिकमलजी मंत्री धर्मकल्याणजी पासे ॥

॥ ❀ ॥ पुस्तक नाम ॥ ❀ ॥	रु०	आ०	ट०
॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग.	५	०	१२
॥ २ ॥ रत्नसागर दूसरा भाग.	२	८	४
॥ ३ ॥ खरतरगछ तपगछ पांच प्रतिक्रमण विधिः	१	४	४
॥ ४ ॥ खरतर साई, देवसी, प्रतिक्रमण विधिः	०	६	॥
॥ ५ ॥ श्रीजिन पूजा संग्रह.	१	४	४
॥ ६ ॥ योग रत्नाकर वैद्यकसार.	०	६	॥
॥ ७ ॥ स्तवन संग्रह	०	४	॥

॥ ❀ ॥ इसपुस्तकां सिवाय। शेमशी माणकका छापाकी (तथा) पं० श्रीधर सिवलालके छापाकी पुस्तकां पण भेजनेमें आवेगा (और) हमारे पाठशालाकी पुस्तकां पण ये दो छापामें मिलसकेगा इछा होय जहांसें मंगायलेना (तथा) रत्नसागर, दोनुंभागका (१० पुस्तक) जो एकठी लेवैगा (उसकों) म्यानके मदतखाते एक पुस्तक ज्यादा मिलैगा। सही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह पुस्तक। इंग्रेजी १८६७ सालके २५ ऐक्के कायदेसें रजष्ट्र किया गया। इस पुस्तकपर मालकनें अपना हक्क रक्खाहै।